डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव की रचनाएँ 5



डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्मतिथि: 15 सितंबर 1946

जन्म स्थान: विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशित कृतियाँ

1. ट्यूबेक्टोमी एण्ड कास्टम (अंग्रेजी, 1980)
2. है प्यास अभी (गजल संग्रह)

3.सन्नाटा गहरा है, (गजल संग्रह)

4.आए न बालम (व्यंग्य संग्रह)

5.बाइज्जत बरी (व्यंग्य संग्रह)

6.हड़कंप (व्यंग्य संग्रह)

7.अखिलम, मधुरम (काव्य संग्रह)

8. प्रतिरोधक क्षमता (मेडिकल साइंस)

9. प्रति उत्तर(काव्य संग्रह)

10 मेरे सांई

11 गीता के औपनिषधिक आधार

12 देशी-विदेशी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित

सम्मान- पुरस्कार: विभिन्न शीर्ष स्तरीय संस्थाओं से पुरस्कृत एंव सम्मानित

सम्प्रति: 1.भूतपूर्व सदस्य: मानव अधिकार आयोग

2.सदस्य: किशोर न्यायपीठ,छिन्दवाडा

3. शल्य चिकित्सक,

4. सेवानिवृत्ति सीएमओ (मुख्य स्वास्थ्य एंव चिकित्सा अधिकारी)

1 संरक्षक - पत्रकारिता कोश मंच छिंदवाड़ा

2. उपाध्यक्ष - जिला रेडकास समिति सोसाइटी छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

3. आजीवन सदस्य इंडियन मेडिकल एसोसिएशन

4. मानव तंत्र मानव अधिकार आयोग
अन्य - स्वतंत्र लेखन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में,
संपर्क - 171 नोनिया करबल, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
पिन 480001

घर के चूहे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरे घर के चूहे इतने मोटे गये है जितने कि देश के भ्रष्टाचारी नेता। जिस तरह देश के भ्रष्टाचारियों को कानून नहीं फंसा पाता उसी तरह घर के चूहो को पिंजरा नहीं फंसा पाता। अलबत्ता वे ही पिंजरो को घसीट कर उनके बिलों में ले जाते हैं । उसके लोहे का वे बिलों में "पिलर" बनाते हैं इससे उनके बिल को मजबूत होते जा रहे है पर मेरे घर की दीवाले कमजोर। हालात इस हद तक खराब हो गये है कि अब जब मैं कील ठोकता हूॅं कि वह उनके बिलों में घुसती है। जिससे वे मुक्केबाजी की मुद्रा में घर के मालिक को घूरने लगते है और घर का मालिक यानि की आम आदमी यानि कि मैं डर कर कांपने लगता हॅूं।

वे दिन भर धमा चैकड़ी करते रहते हैं और मेरी ही थाली की रोटी छीन कर ले जाते है। मैं उन्हें समझाता हूॅं कि सर मंहगाई मेरी कमर तोडने लगती है पर उन्हें फर्क नहीं पड़ता वे चाहते है कि मैं मकान छोड़ कर चला जाऊं पर मैं नहीं जा सकता हालाॅंकि वे घर के अलावा कहीं भी जा सकते है। वे चाहते है कि वे पूरे नगर को वे निगल लें। हमारे मकानों को निगल कर पूरे देश को निगल लें।

मैं आम आदमी हूॅं। देश के नेता कहते है कि मेरे खाने से देश में अन्न संकट है जबकि सब लोगो की यह मान्यता है कि चूहो और भ्रष्ट नेता और भ्रष्ट कर्मचारियों के खानो से देश में अन्न संकट हैं। मैं चूहो को समझाता हूॅं कि जितने से वे स्वस्थ रहें उतना ही खाये मेरे हिस्से की चपातियाॅं बिलों में ले जाकर इकट्ठी न करें पर उनकी जबान उनकी पेंट पर शासन करती है अतः वे नहीं मानते और जमाखोरी करते है उनके कारण मेरे मिलने वाले मुझे चूहा कहते है।

वे मेरे घर की सारी चीजे कुतर गये है जैसे मेरे घर के मालिकाना हक के कागजात, भी जैसे मेरे घर के मालिकाना हक के कागजात देश का कोई संविधान हो जिसे मंत्री और सांसद लोग कुतर रहे हो। मेरे शरीर के आधे कपड़े बिलो में है और आधे मेरे और घर वालो के शरीर पर। लडकियों को फले हाल देख कर मोटे चूहे और

अधिकारी बार बालाओं के देख कर तालियां बजाते है। मजबूरियों पर कोई तरस नहीं खाता । रात को वे मेरी कुतरी रजाइयों पर धमा चैकड़ी करते है। उनके छेदो से घुस कर शरीर पर धमा चैकड़ी करते है। पहले मेरे बच्चे उन्हें शरीर पर उचकते पाकर चीखने लगते थे पर अब उन्हें हाथ से भटक कर सोने की कोशिश करते है। वे मेरे हाथ और पैरो की उंगलियां कुतर चुके है। जिससे मैं काम करने के अयोग्य होता जा रहा हॅ◌्◌ू। जब अस्पताल जाता हँ◌ू तो डाक्टर कहते है कि पागल कुत्ते के इंजेक्शन लगवाओं । मैं कहता हॅू कि वे इन्जेक्शन नेताओं और भ्रष्ट अधिकारियों को लगना चाहिये तो सब मिल कर मुझे मारने लगते है और डांटते है कि पूज्यनीयों को ऐसा मत बोलो। डाक्टर लोग फटे कपड़े देख कर भी मुझे गरीब नहीं मानते। कहते है कि तुम भूखे मरते हो यह जो हमें मालूम है पर तुम्हारे पास गरीबी के दस्तावेज नहीं है। तुम्हे रू. 32 तो प्रतिदिन मिलते है उसमें तुम्हारा परिवार अच्छी तरह चल जाना चाहिये । मैं चूहो और नेताओं को गालियां देता हुआ वापिस आ जाता हॅू।

घर में कुछ बिल्लियों को मैं आशा की नजरों से देखता हॅू पर वे चूहो की भाषा ही बोलते लगती है। वे चूहो से डरने लगती है। चूहे उनको अपनी रोटियों पर पलने लगते है। कुछ बिल्लिया◌ॅं या तो डर जाती है और घर छोड़ कर भाग जाती है या मोटे चूहो को देख कर पालतू कुत्तो की तरह पॅूछ हिलाने लगती है वे बिल्लिया◌ॅं चूहो को ही रसद देने लगती है।

चूहे छतो और दीवालो पर बिल्लियों की तरह चलने लगे है और छींके पर रखी चीजो को भी खाने लगे है। उनसे पूरे घर का वातावरण विषाक्त हो चुका है। वे फूल कर सुअर की तरह मोटे होते जा रहे है। मैं उन्हें डराने और सीख देने देवताओं की मूर्तियां लाया, तो वे देवताओं को भी घसीट कर उनके बिलों में ले गये। अब वहा◌ॅ वे उनकी पूजन करते है। उनकी वजह से उस पर नियंत्रण रखने न तो कोई बिल्ली है और न हीं कोई चेवती चूहो से निपटने के लिये । मैनें कुछ मेहमान बुलवाये थे। चूहे उनके साथ ही खाना खाने लगे और मेरे मेहमानों को बिलों में निमन्त्रित करने लगे। अब मेरे मेहमान उनके बिलो में हाथ डाल कर खाद्य सामग्री निकाल कर मजे से खाते है पर मुझे नहीं देते। घर से न चूहे जाते है और न मेहमान।

मेरे बच्चे चूहो से डर कर इधर उधर भागते रहते है। इससे चूहो को मजा आता है। वे उनके बच्चों को बिलो से मेरे बच्चों के साथ खेलने के लिये बुलाते है मेरे बच्चों के भागने पर उन्हें मजा आता है। वे मेरे बच्चों को खदेड़ देते है और यदि मेरे बच्चे हिम्मत कर के खड़े हो जाते है जो चूहो के बच्चे मेरे बच्चों के ऊपर चढ़ जाते है। इससे मेरे बच्चों दौड़ने लगते है तो उनको मजा आता है। वे बारी बारी से यह खेल

खेलते है और बाकी चूहे ताली बजा कर प्रसन्न होते है। जैसे कहते है कि भाग बच्चू मंहगाई से कहां तक बचोगे।

मैं जब घर के बाहर जाता हूॅ जो राष्ट्रीय ध्वज लगा कर जाता हूॅ जिससे यदि चूहो के बढ़ते बिलो की वजह से मेरा घर गिर जाये तो मैं उसे पहचान सकंू । मेरे देश के भ्रष्ट लोगो और मेरे घर के चूहे देख को खाकर इतना खोखला मत करो कि और घर को कि वह चरमरा कर गिर जाएॅ। तुम्हें तो भाग कर जाने के लिये विदेशो में बने घर और पड़ोस के मकान है पर हमारे पास कुछ नहीं। हमारी दयनीय हालत पर तरस खाओ और अब तो ईमानदार हो जाओ। काफी खोखला कर चुके हो देश और मेरे घर को । मैं अपने ही घर में चूहा हो गया हूॅ और चूहे शेर। चूहे अन्दर मेरे पेट में कूदते है और बाहर मेरे घर में धमा चैकड़ी करते है। रोटी मैं कमाता हूॅ और वे बिलो में भरते हैं जैसे नेता लोग स्विस बैंक में देश का पैसा।

पेट्रोल की बढ़ती कीमतो की तरह चूहे घर में बढ़ते ही जा रहे है न तो मैं अपने घर को छोड़ सकते है और न ही गाड़ी चलाने वाले गाड़ियों को। घर चूहे बिल्लियों का खेल न होकर भ्रष्ट चूहो और आम आदमियों का खेल हो गया है। नौ सौ चूहे मार बिल्ली हज को नहीं जाती वरन पुश्तैनी घरों को जबरदस्ती तोड़ कर सरकार ऊंट के मंुह में जीरा मुआवजा देती है। अब कोई वंशो वेजा कर चूहो को नदी तक नहीं ले जा सकता बल्कि चूहे ही मिल कर घर वालो को खदेड़ रहे हैं। भगवान गणेश आज चूहो पर सवारी नहीं कर सकते। चूहे असहान फरामोश हो गये है। अब चूहे नुकसान करके बिलो में नहीं भागते अब घर (और देश) ही उनके बिल हो गये है और उनके कारण हम बिलों में भागने लगे हैं। वह लोग पूरे देश में बिल बिला रहे है अब चूहे, चूहो की तरह नहीं दुबकते चूहो के कारण हम ही दुबक रहे है अब तो चूहे सिर पर दौड़ते है और हम विवश हैं।

मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं का विश्लेषण एवं सुझाव

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मध्यप्रदेश का स्वास्थ्य विभाग चंू चंू का मुरब्बा है। यहाॅ कुछ निदेशक भ्रष्टाचार के चलते सेवा से निकाल दिये गये। एक उप सचिव पर भी भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप लग चुके हैं एक स्वास्थ्य मंत्री को भी विभाग से (इन्ही आरोपो के चलते) हाथ धोना पड़ा है।

ये तो बेचारे सज्जन भ्रष्टाचारी थे। इस समय तो हर सी एम ओ और सी एम एच ओ आकंठ भ्रष्ट है। हरेक कम से कम करोड़पति हैं मध्यप्रदेश के अधिकतर मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी है। यानि, संचालक चाहे जब पद दे दे और चाहे तब निकाल दे। उदाहरण तो ऐसे भी है कि दिन के पूर्वान्ह में एक सी.एम.एच.ओ है और अपरान्ह में दूसरा सी.एम.ओ। पूर्वान्ह वाले को पुनः विशेषज्ञ बना दिया जाता है एवं और उससे कनिष्ठ को सी.एम.ओ बना दिया जाता है।

एसी अस्थिर हालत में स्वास्थ्य विभाग के जिले के शीर्ष पदो में भ्रष्टाचार एवं अनियमिताओं की सीमा नहीं है। अस्थिर सी.एम.ओ से कलेक्टर तू तड़ाक से बातें कर उन्हें अपमानित करते रहते है और राज्य शासन ने गत वर्ष परिवार कल्याण का शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने वाले जिलों के कलेक्टरों और मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को एक एक लाख रूपये के व्यक्तिगत पुरस्कार घोषित किये थे। आप को मालूम नहीं कि कुछ जिलों में ये लक्ष्य किस तरह से प्राप्त किये गये ? जिस महिला की नसबन्दी हो चुकी थी उसके पति की भी नसबन्दी कर दी गई। इस तरह शासन एवं जनता को धोखा देकर मुख्य चिकित्साधिकारी और कलेक्टर स्वयं की पीठ थपथपा रहे हैं। दूसरी ओर शासन ने भी यह जानने का कष्ट नहीं उठाया कि ये उपलब्धियाॅॅ कही गलत तरीके से तो हासिल नहीं की गई इमरजेन्सी में तो गलत तरीके से सही लक्ष्य हासिल किया गया था। आज के शासन में गलत तरीके से गलत लक्ष्य हासिल किया गया है।

कुपोषित बच्चों की संख्या बढ़ती जा रही है। महिला बाल विकास स्वयं स्वास्थ्य विभाग को नौकर समझता है। फलतः आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर स्वास्थ्य विभाग का कोई नियन्त्रण नहीं है, जो कि होना चाहिये।

स्वास्थ्य विभाग में हर ब्लाक स्तर कर कागजी यूनियन सक्रिय है जिनके पदाधिकारी सी.एम.ओ. और मुख्य चिकित्साधिकारियों को डराते धमकाते रहते है। यूनियन के ये पदाधिकारी उच्चाधिकारियों के दलाल बने हुये है। ये पुरूष बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता अन्य कार्यकर्ताओ से उनके रूके कार्य करवाने के लिये पैसे वसूलते है। वे दादागिरी भी करते है आपस में मारपीट होती रहती हैं उनकी जाॅच होती है और

बैठ जाती है। वे चतुर्थ श्रेणी या तृतीय श्रेणी कर्मचारी कारों में मीटिंग में आते है। कुछ लेखापालों के पास दो-दो तीन-तीन लक्जरी कारें है और पेट्रोल पम्प हैं ऐसे में स्वास्थ्य विभाग का काम कौन करेगा। इस विभाग में महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओ को छोड़कर पुरूष स्वास्थ्य कार्यकर्ता क्षेत्र में रंगबिरंगी पोशाक के घूमते मिल जायेंगे।

वेक्सीन उपलब्ध नहीं रहते। कभी वेक्सीन है तो कभी सिरिन्जें उपलब्ध नहीं रहती। तो कभी मीजल्स या बी.सी.जी. को घोलने वाला द्रव उपलब्ध नहीं रहता। फिर बहुउ्देशीय कार्यकर्ताओ पर दबाव डाला जाता है कि टीकाकरण की उपलब्धि शत प्रतिशत हो। वर्ष 1911-12 को टीकाकरण वर्ष घोषित किया गया है।

भारतीय जनता पार्टी के शासन में प्रशंसनीय व्यवस्था दवाईयों की है। दवाईयाॅ प्रचुर मात्रा में हैं नहीं तो दस वर्ष पूर्व स्वास्थय विभाग के कर्मचारी दवाइयों के अभाव में मरीजो से मुंह चुराते फिरते थे।

साथ ही साथ स्वास्थ्य विभाग में कई कल्याणकारी योजनायें चल रही है। वे शासन के उत्तम प्रबन्धन को दर्शाती है। इसके चलते संस्थागत प्रसवों में बढ़ोतरी हुई है। पर महिला बाल विकास पर स्वास्थ्य विभाग का नियंत्रण नहीं रहने से कुपोषित बच्चों में बढ़ोतरी हुई है।

पानी का हालाॅंकि औसत उपयोग बढ़ा है पर पी.एच.ई. विभाग के सुप्रबन्धन से जलजन्य बीमारियों में आशातीत कमी आई है। अन्यथा पश्चिम बंगाल की तरह मध्यप्रदेश में भी जल जन्य बीमारियों के "एपीडेमिक" हुआ करते थे। मगर मलेरिया के प्रकरण जल संग्रहण के कारण बड़े है हेन्डपम्प के कारण फ्लूरोसिस के प्रकरण होने लगे है। पूर्व शासनकाल में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना बेहद ही अनियमित हुई हैं जिलो के आपपास इस किलोमीटर के घेरो में दस दस प्राथमिक केन्द्र मालाओं की तरह खुल गई हैं। वहीं आदिवासी एवं दूरस्थ अंचलों में सौ से डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी तक कोई केन्द्र नहीं हैं। ऐसे में जननी सुरक्षा योजना की सफलता संदिग्ध हैं। जब तक आदिवासी क्षेत्रों में जननी एक्सप्रेस पहुंचेगी जब तक या तो प्रसव हो चुका होगा या रास्ते में हो जायेगा। ऐसी दशा में या शिशु या दोनो की मृत्यु संभावित है।

जहाॅ एक तो पुराने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो को जन आक्रोश के चलते हटाना असम्भव हैं वहीं आदिवासी अंचलों के बहाने नये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र फिर जिलों के आसपास खुल जायेंगे। डाक्टरों समेत अधिकतर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो के कर्मचारी मुख्यालयों पर नहीं रहतें। कहीं कही तो ग्रामीणों को मालूम भी नहीं है कि उनके ग्राम में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या उप स्वास्थ्य केन्द्र है।

शासन को विशेषज्ञों पर पैनी नजर रखना चाहिये क्योंकि कुछ विशेषज्ञों ने अस्पतालों को निजी नर्सिंग होम बना रखा है। वहां भरती फटेहाल मरीजो से भी जब

तक तीन सौ से पाॅच सौ रूपये नहीं मिलते का तब तक गम्भीर मरीजो को भी भरती नहीं करते। जिस तरह प्रशासनिक अधिकारियों पर सी.बी.आई या विजिलेन्स इत्यादि का शिकन्जा रहता है। उस तरह चिकित्सकों पर भी कसा जाना चाहिये। कुछ विशेषज्ञों के घर में उनकी पेथोलाॅजी प्रयोगशाला है जहाॅ वे वार्डो से सेम्पल बटोर कर ले जाते है" और पेथालाॅजी टेस्ट के बहाने भरती मरीजों से एक-एक डेढ़-डेढ़ हजार रूपये वसूलते है।

उप स्वास्थ्य केन्द्रों के रख रखाव के लिये शासन ने प्रति केन्द्र रूपये बीस हजार ए.एन.एम. को दिये है। इस वितरण एवं रख रखाव में काफी अनियमितायें हैं। प्रथम तो कई चिकित्साधिकारियों ने उन ए.एन.एम. को चेक देने के पहिले पांच हजार रूपये रखवा लिये है। इस तरह बी.एम.ओ. ने एक दिन में ही दो लाख एक मद से कमा लिये है। चंूकि यहां विनिमय सीधा बी.एम. ओ और ए.एन.एम. के बीच हुआ है। अतः प्राइमरी हेल्थ सेन्टर के चिकित्सकों को इससे दूर ही रखा गया है पी.एच.सी. के चिकित्सकों का इस घटना पर कोई नियंत्रण नहीं है। फलस्वरूप कई ए.एन.एम न तो किराये के उप स्वास्थ्य केन्द्रों में रहती है न ही उतना किराया ही देती है जितना अनुबन्धित है। फलतः अधिकतर उपस्वास्थ्य केन्दों में मकान मालिक का ही कब्जा है और उन कमरो में मकान मालिक के कंडो एवं अनाज इत्यादि के बोरे रखे हुये है।

मध्यप्रदेश शासन ने ग्रामीण अंचलों में चिकित्सक पहुंचाने के लिये एक बहुत अच्छी योजना रखी थी ग्रामीण चिकित्सको की इस योजना के तहत साइंस बायोलाजी से ग्यारहवी पास विद्यार्थियों को तीन वर्ष की ट्रेनिंग मेडिकल साइंस के चुनिन्दा विषयों को दी जावे एवं उन्हें डिप्लोमा इन मेडिकल साइंस का डिप्लोमा देकर उनसे ग्रामीण क्षेत्रों में ही प्रैक्टिस करने का अनुबंध करवा लिया जावे या वहीं नौकरी करने का अनुबन्ध करवा लिया जावे। इस प्रस्ताव का आई.एम.ए. का अत्यधिक विरोध करने का आधार था कि उनके प्यारे ग्रामीण भाइयों के स्वास्थ्य को ना समझ झोला छाप डाक्टरों के भरोसे नहीं छोड़ा जाना चाहिये। अब आई एम ए को यह तो मालूम ही होगा कि कई शल्य क्रिया विशेषज्ञों ने मरीजो के पेट में तौलिया या कैंचियाॅॅ छोड़ी है। कई अस्थि रोग विशेषज्ञों ने गलत टांगे काटी है कई आंखों के मरीज आंखो के आपरेशन के बाद अन्धे हो चुके है कई गायनेकोलाजिस्टों अनावश्यक जच्चा दानिया निकाल दी है। अनावश्यक सीजर्स किये है एवं महिलाओं की मृत्यु हो चुकी है। नसबन्दी आपरेशन में कई मरीज मर चुके है एवं आपरेशन फेल हुये हैं। कई मेडिकल स्पेशलिस्टों पर गलज इलाज के आरोप लग चुके है। उपरोक्त चिकित्सक झोलाछाप डाक्टर नहीं थे। उपरोक्त चिकित्सको के कृत्य तो आपराधिक क्षेणी में आते है।

अतः केवल मध्यप्रदेश शासन को ही नहीं देश के पूरे प्रान्तों को यह सलाह दी जाती है कि ग्रामीण डाक्टरों की स्कीम जल्द से जल्द लागू की जावे। साथ ही जिन बहुउद्देशीरय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की नौकरी पन्द्रह वर्ष से अधिक हो चुकी है। उन अनुभवी लोगो को भी कुछ और ट्रेनिंग देकर ग्रामीण चिकित्सक घोषित कर दिया जावे उन ग्रामीण चिकित्सको का स्तर उन फारेन रिटर्न चिकित्सकों से तो अच्छा रहोग जो चार पाॅच लाख रूपये खर्च कराके रूस और चीन से डिग्री तो ले आते है पर ज्ञान में डब्बा होते है।

फिर ग्रामीण चिकित्सक जिला चिकित्सालयों का रिफरल तो बढायेंगे। अभी तो मरीत देश भक्त एलोपेथिक चिकित्सको की सेवा के अभाव में निस्सहाय मर रहे है। ये शहर के एलोपेथिक चिकित्सक हल्ला तो मचाते है कि ग्रामीण भाइयों का झोला छाप डाक्टर शोषण कर रहे है पर खुद गांवों में नहीं जाते है। इनके खाने के दांत अलग है और दिखाने के अलग। ग्रामीण चिकित्सको से उन से ज्यादा लोगो की जाने बच सकेंगे जितनी कि एलोपेथिक चिकित्सक मिल कर नहीं बचा पाते। यदि ये मेरे दावे को ठुकराते है जो उनसे पूछा जावे कि कुकरपानी गांव कहाॅं है ?

साहब के खराब गुर्दे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह उसकी तरफ से मेरा अभिन्न मित्र हैं पर मैं उससे भिन्नता बनाये रखता हूॅं। एक छोटे कस्बे में मेरी सामान्य वस्तुओं के संग्रह की दुकान हैं। आते से ही बोले "यार एकाध गुर्दा हो तो दिलवाओ"

जो कुछ ग्राहक दुकान पर खड़े थे डर कर स्तम्भित हो गये। वे ग्राहक मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे। मुझे लगा कि वह वीभत्स समाचार अब शहर में फैलने ही वाला है कि मेरे संग्रहालय में मानव अंग मिलते है। मैं जनाक्रोश की मेरे विरूद्ध कल्पना करने लगा। मुझे लगा कि वह पागल आदमी हथकड़ियां लेकर ही मेरी दुकान पर आया है। मुझे लगा कि मेरा घर बिखरने ही वाला है।

मैं तैश में बोला "मेरे इस सामान्य वस्तुओं की दुकान को मानव अंगो की दुकान समझ रखा है। नीचे उतरो मूर्ख आदमी। जहाॅं तक मेरा ज्ञान है किसी दवाखाने में भी मानव अंग नहीं बिकते। गुर्दे या अन्य कोई मानव अंग सगे सम्बन्धियों के ही निकाले जाते हैं। तुम भी किसी को अपना अंग दे सकते हो"।

वह गधा बोला मेरे निकटतम उच्चाधिकारी के दोनो गुर्दे मधुमेह में खराब हो गये उन्हें एक स्वस्थ गुर्दे की आवश्यकता है। उन्होने मुझसे कहा कि जाओ कहीं से एक गुर्दा ढूॅंढ़ कर लाओ जो स्वस्थ हो।"

मैनें बीच में बात काट दी "जैसे तुम गधे हो, तुम्हारा वह अधिकारी भी गधा हैं उसे तो गधे का गुर्दा ही रास आयेगा। तुम भी तो तुम्हारे उस मूर्ख अधिकारी के गुप्त मित्र हो। तुम्हे उसके बहुत सारे गुप्त भेद मालूम है। यहाॅं तक कि कुछ गुप्त रोग तक। तुम ही क्यों नहीं उसे तुम्हारा गुर्दा दे देते। वह डर गया। खुद के पेट पर हाथ रख कर नीचे उतरने लगा। मैनें उन्हें बाॅंह पकड़ कर रोका। अन्यथा उन्हें छोड़ने बाहर तक जाता हूॅं जिससे कि वे "पीछे मुड़" न हो जायें।

मैने सुझाव दिया "तुम उसके मोटे आवारा लड़के से गुर्दा दान क्यों नहीं करवा देते। सुना है कि प्रत्यारोपण के समय रक्त समूह एवं टिशू टायपिंग की जाती है।" मैनें वह सब सुना था। उस रिश्वतखोर ने नहीं सुना था। उसको तो केवल मकड़ी की तरह लोगो को फंसाना और बेवश लोगो का खून चूसना आता था।

वह बोला "साहब को किसी ने सलाह दी थी। साहब बोले कि "बाबा" बहुत भोला है। एक बार मुझे खून चढ़ना था तो बाबा लोटा लेकर चिकित्सक के घर खून लेने पहुॅंच गया था।" "फिर गुर्दे के लिये आप लोगो ने क्या किया मैने पूछा।

साहब ने चपरासी को लिखित आदेश दिया था कि भारत सरकार को गुर्दे की आवश्यकता है। शासन के पत्र क्रमांक "क्यू" के अदिनाॅंकित पत्र के अनुसार सबको देश हित में एक-एक गुर्दा दान देना है जिस तरह कि पिछले दिनो आप लोगो ने रक्त दान दिया था। आपके इन्दौर तक आने जाने का खर्च शासन उठायेगी।

मुझे उस दिमाग हीन व्यक्ति की बातों में रस आने लगा मैनें पूछा फिर क्या हुआ ? वह बोला "फिर क्या था ? उस चपरासी ने वह पत्र चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ को दिखा दिया। बड़ी मुश्किल से हड़ताल होते होते बची।

मुझ आश्चर्य नही हुआ। शासन में ऐसे ही अधिकारी है। इसीलिये विदेशों का विनिवेश भारत में नहीं होता । विनिवेश करने वाले को शताधिक कानून बता दिये जाते है। सब का मतलब है कि रिश्वत दो। भारत में कानून का अनुवाद रिश्वत में हो गया है।

मुझे उसके साहब से सहानुभूति हो गई। मैनें बात का रूख उनके भैंसे सदृश पुत्र पर मोड़ना चाहा। वह बोला "साहब का कहना है कि बाबा कमजोर है। फिर साहब के बाबा पर देश की आशायें टिकी है। भारत में ईमानदारी से अध्ययन करने वाले चपरासी ही बन पाते है। तृतीय श्रेणी में उर्त्तीर्ण होने वाले जोड़ तोड़ करने में सक्षम अमीर व्यक्तियों के लड़के ही अधिकारी बन पाते है। अब देश के बजट में कौन घपला करेगा ? अधिकारी ही न ! चपरासी तो बजट में घपला नहीं करेगा

वह मस्तिष्क विहीन आगे बोला "अच्छा सगे व्यक्तियों में साला साली नहीं आते क्या ? वे भी तो साहब के सगे हुये।" मैनें कहा "नहीं"। रक्त सम्बन्धी होना चाहिये। फिर कानूनन मानव अंगो की खरीद फरोख्त, तस्करी बन्द कर दी गई है।

वह कांइयां बोला "फिर तो साहब को गुर्दा मिल जायेगा। जिस चीज की कानूनन खरीद फरोख्त वर्जित हो उसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। अब किसी बड़े अस्पताल के आसपास देखूॅगा, दलाल घूम रहे होंगे।"

मैनें व्यंग्य से कहा "हा यह काम तुम उनके लिये आसानी से कर सकते हो। नियमानुसार काम करने में तुम्हे परेशानी होती है। फिर तुम ही तुम्हारे उस निकटतम उच्चाधिकारी के लिये रिश्वत लेते हो। तुम उनके सगे मित्र जो हो। वह बदमाश तुनक गया बोला "तुम हमें बार बार उनका सगा क्यों कह रहे हो। कहीं तुम्हारी दृष्टि सचमुच मेरे गुर्दे पर तो नहीं। मैं बोला "अरे नहीं"। सगा वह, जो सौतेला न हो। अब क्या तुम तुम्हारे अधिकारी के सौतेले अधीनस्थ हो।"

उसकी बिजली जल गई एक दम बोला "अरे नहीं। सौतेला अधीनस्थ तो विमल कुमार है। साला ईमानदार बनता है। हालांकि कथरी के अन्दर घी पीता है। अच्छा यह बतलाओं क्या खराब गुर्दे के स्थान पर और कोई अंग नहीं लग सकता।" वह मेरे सामान्य ज्ञान से प्रभावित था।

मैनें पूछा "मसलन" "जैसे पैर का अंगूठा या एक आॅख" उसने पूछा । मैं उसकी चालाकी की प्रशंसा करने लगा। मैनें प्रति प्रश्न किया" अच्छा बतलाओं क्या तुम्हारे "किचन" में किसी को "टायलेट"

करने की अनुमति दे सकते हो। “मैं कहना तो चाहता था कि वह क्या किसी को उसके रसोई घर में पे...........................करने की अनुमति दे सकता है। पर अंग्रेजी में कुछ गन्दे शब्द भी बेशर्मी से कहे जा सकते है जैसे “गेस पास” करना इत्यादि।

वह भड़क गया चिल्लाया “तुम ऐसी बेहूदी बात कैसे कह सकते हो मैनें तुर्क-व तुर्क जवाब दिया “वैसे ही जैसे तुम एक परचूनी की दुकान पर मानव अंग खरीदने आये हो, वैसे ही जैसे वह तुम्हारा मूर्ख अधिकारी शासकीय पत्र द्वारा भृत्य का गुर्दा निकलवाने आदेश लिख सकता है, वैसे ही जैसे तुम सगे साले से जीजा के लिये मानव अंग दान करवाने का सोच सकते हो और वैसे ही जैसे तुम गुर्दे की जगह पैर का अंगूठा लगाने की बात कह सकते हो, वे हूदे आदमी।”

स्वयं के बारे में मेरे वास्तविक विचार जान कर वह बुदबुदाता हुआ नीचे उतर गया।

सच्चाई छुप नहीं सकती

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सच्चाई छुपने की कोशिश कर रही थी और उसको निकालने की कोशिश करने वाले उसकी पूँछ पकड़ कर निकालने की कोशिका कर रहे थे और गाते जा रहे थे “सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलो से। “पुलिस वाले जब सच्चाई को जेल में डालते है तो उसके चारो तरफ कानून की धाराऐं बिठाल देते है। फिर थाने में तो सत्य की ही विजय होती है। वहां लिखा ही रहता है कि “सत्यमेव जयते” जब थाने में सत्य ही की जय होती है तो फिर लोग बेकार हो हल्ला करते है कि सच सामने आकर रहेगा सच्चाई छुप नहीं सकती। मानो सच्चाई कोई नई नवेली दुल्हन हो जो घंूघट डाल कर शर्मा रही हो या सच कोई चोर हो जो चोरी करके छुप गया हो और घर वाले उसे टार्च लेकर ढंूढ रहे हो। या उस चोर को थानेदार ने थाने छिपा लिया हो और दरवाजे पर लिख दिया हो “सत्यमेव जयते“। सच को जीतना था और वह जीत गया । सच को पुलिस की जेड़ सुरक्षा मिली है। अमीर का सच बड़ा होता है और गरीब का सच छोटा।

बड़ा सच छोटे को छोबी पाट दाव से चित कर देता है। गरीब अन्त तक आशा करता रहता है कि सच सामने आ जायेगा पर अन्त में गरीब का सच मर जाता है।

संस्कृत में सच के लिये बहुत सारी कहावते है। सत्यमेव जयते का कमाल हम सब देखते ही है। एक और है। "एको सद विप्रो "बहुधा वदन्ति" यानि कि सच एक ही है पर पण्डित लोग उसे अनेक प्रकार से परिभाषित करते है। यह विद्धानो की आदत ही है वे हरेक तथ्य में घपला करते है। भई यदि सच एक ही है तो अनेक प्रकार से क्यों कहते हो या फिर सच एक नहीं है।

या तुम लोगो में एका नहीं है। फूट है तुम जोगो में । लोग बाग कहते है कि सच का बोल बाला, झूठे का मंुह काला हमें तो झूठे का बोलबाला दिखता है। और सच मंुह छिपाता फिर रहा है कि उसका मंुह काला न कर दिया जावे। कई दुकानो में लिखा रहता है कि सच परेशान हो सकता है परास्त नही। दर असल सच परेशान होकर परास्त हो जाता है आतंकवादियों के पक्ष में कई लोग खड़े हो जाते है। मरने वालों के पक्ष में कम ही लोग खड़े होते है। कानून आतंक वादियों को फांसी नहीं दे पाता। कभी दी हो तो बतलाओ। मुंबई पर 26.11.2008 को आतंकवादियों द्वारा मिनटों में हजारो लोगो को भून डाला उसमें से एक आतंकवादी कसाब को गिरफ्तार किया गया उसे आज तीन वर्ष होने के बाद भी फांसी नहीं दी गई। एक और तथ्य परक कहावत है कि "हिरण्यमयेण पात्रेण" सत्यस्यापिहितं मुखम यानि सोने के पात्र में सच का मंुह ढंका हुआ है कितनी सटीक कहावत है। लगता है सच पहिले भी सोने से बिकता था। जिसको चाहिये वह खरीद ले। सच बिकने के लिये चैराहे पर खड़ा हुआ है। सच भैंस की तरह है । जिसे लाठी हांक ले जाती है। सच है जिसकी लाठी उसकी भैंस।

कहते है कि नकली पैसा असली को चलन से बाहर कर देता है। असली पैसे से नकली पैसा ज्यादा ताकतवर होता है। उस श्लोक के आगे तत्वम् पूषण अपावणु सत्य धर्माय दृष्टये यानि कि हे पालनहार, उस ढक्कन को सच का मंुह दिखाने के लिये हटाओ। सच सोने के बर्तन में बन्द है। अब यदि ज्यादा पैसा है सच खरीद लो, नहीं तो पालतू की टेंटे मत करो।

हमारे देश में आतंकवादी दड़ेगम कहते है कि उन्होने ही सामूहिक नृशंश हत्यायें की है पर भोला कानून कहता है कि अरे नहीं तुम तो निर्दोष हो तुम्हे जबरदस्ती फंसाया जा रहा है। अच्छा यदि बेचारा सुप्रीम कोर्ट उन्हे फांसी भी सुना दे तो राष्ट्रपति जी उन्हें फांसी नहीं होने देते। निर्दोष देशवासियों की मृत्यु का दुख नहीं होता पर हत्यारे, देश द्रोही गुरू अफजल पर प्रेम उमड़ पड़ता है। हम विदेशो से आंतकवादी लाकर अपने देश में उन्हे आजाद कर देते है। यह होती है अन्त्तराष्ट्रीय सद्भावना।

अपरंच
निर्णय दिया अदालत ने वह इस
निश्चय पर आई है
सच अगर बोलता सच है तो
        सच ने भी रिश्वत खाई है
या
झूठ गले जब भी मिलता है
आगे बढ़ कर
खड़ी हकीकत रहती है तक एक
बुत बन कर
या
सच का धनुष चढ़ा देखा
सच ही तना खड़ा देखा
(सच को सच ही मारता है)

छिन पल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वक्त बादलों की छिन पल बरसात सखी,
बंूदो जैसे गिरते है दिन रात सखी।

पूनम के चन्दा सा दिलबर आता है,
लहरों से दिल में उठते जज्बात सखी।

आसमान के एक सितारे जैसा तू
नहीं हमारे छूने की औकात सखी।

पूरब से पश्चिम तक तपती रेत यहाॅं,
सुनते है कुछ होती है बरसात सखी।

उजड़ी दुनिया टूटा दिल है हाथो में
तू ही बतला क्या लाऊॅ सौगात सखी।

दरिया चमक उठा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तेरी बेरूखी का फन्दा, फसाने के लिये था ।
तेरा प्यार दिखावा था, फसाने के लिये था ।।
वो जिन्दगी तो कब्र के जानिब की दौड़ थी ।
दरिया ही समन्दर में समाने के लिये था।।
नजराना चमकीले महल का आंधिया ही थी,
जो गरीबो की बस्ती, ढ़हाने के लिये था।।
खाना तुम्हारा, खाने पे अहसान एक था ।
खाना हमारा खाना कमाने के लिये था ।।
तू चांद सा है तेरे तराने है चान्दनी ।
कानों में तेरा अक्स समाने के लिये था ।।
गम के मुसलसल सिलसिलों में एक सुख मिला,
वह सुख भी जिन्दगी को सताने के लिये था ।।
तेरे पैर डालने से वो दरिया चमक उठा,
वे सब्र चांद उसमें नहाने के लिये था ।।

पीछा छुड़ाने लगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रहने वालो को अब घर ही खाने लगे,
आग में रहनुमा ही जलाने लगे ।।
जोर से घर हिला, बढ़ती मंहगाई से,
घर के बरतन गिरे, भड़भड़ाने लगे ।।
भूखे कुनबे से घबरा के इतना डरे,
खुदखुशी करके पीछा छुड़ाने लगे ।।

पीछा ख्वाबों में करती है उनकी हंसी,
दांत उनके नुकीले डराने लगे ।।

उसके होंठो की लाली सलामत रहे,
मेरी जानिब वे पेंगे बढ़ाने लगे ।।

जब से इस घर का दरवाजा नीचे गिरा,
जानवर बेधड़क आने जाने लगे ।।

कोई रखवाला अब इस चमन का नहीं,
जंगली पेड़ भी जड़ जमाने लगे।।

निमन्त्रणोपरांत (का) भिखारी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

देवता लोग क्या उठे कि भारतवासी हड़बड़ा कर उठ गये। उन्होने अपनी कुंवारी औलादो को ध्यान से देखा। वे उदास दिखी। मानो पूछ रही हों कि आप कैसे मां बाप है जो हमारी शादी नहीं कर रहे हैं। हमारी उम्र गुजरती जा रही है। यदि आप से आपका कर्तव्य निर्वहन नहीं हो रहा हो तो हम आपका कर्तव्य निर्वहन करें। अपने मां बाप दूसरो के ऐसे ही मां बापो से मिलने निकल पड़ते है।

लड़के वाले कहते है कि बड़ा मुश्किल है लड़की ढूंढना । दिन में टार्च लेकर निकले तो भी अच्छी लड़की नहीं मिलती। अच्छी लड़की से उनका मतलब होता है “बेल्दीज फादर्स आॅनली डाटर एक्सट्रीमली ब्यूटीफुल एन्ड हाइली एजुकेटेड” तो हे गांव वालो। हम इसका मतलब बतला देते हैं। वे चाहते है कि अमीर बाप की इकलौती लड़की जो बेदह खूबसूरत हो और उच्च शिक्षा प्राप्त हो।

वे चाहते है कि लड़की के बाप का पैसा उन्हें मिल जाये और लड़का केटरीना कैफ की तरफ न भागे। हालांकि केटरीना कैफ, करीना कपूर, दीपिका पादुकोन जैसी असंख्य नायिकाओं के बालो में जुओं की तरह बच्चों, नौजवानों और अधेड़ों की असंख्य लपलपाती नजरें लटक रही होती है।

शादी तै करने के पहले या बाद में मां बाप लड़के से स्वयं की झूठी विशालता बताने के लिये पूछते है कि बेटा तू किसी और को तो भगा कर नहीं लाना चाहता ? मगर तब तक उनका आज्ञाकारी पुत्र लड़कियों के कई थापड़ खा चुका होता है। अतः श्रवण कुमार स्टाइल में सिर झुका कर कहता है “पापा आपकी पसन्द यानि मेरी पसन्द”। इसी तरह उनकी स्वीटी से वे पूछते है कि बेटी, तुम शादी तय करने के बाद किसी के साथ भाग तो नहीं जाओगी ? पर लड़की शादी के लिये जेवर बनने और उनके पैसे जोड़ने का इन्तजार कर रही होती है। अतः सिर झुका कर और “रूज से गाल लाल करके सिर इस तरह से हिलाती है कि मां बाप समझते है कि वह नहीं भागेगी पर उसका मतलब होता है कि पहले वह लड़के की हैसियत देखेगी फिर तय करेगी कि पैसे और जेवर लेकर बन्टी के साथ भागे या नहीं ? इसके बाद सिलसिला होता है कोई “सेकेण्ड हेन्ड” टेलीफोन डायरेक्टरी खोजने का । जिसके अनुसार मौखिक निमन्त्रण वाले जा सको, मत सूची देख कर निमन्त्रण नहीं बांटे जाते क्योंकि ऐसा करने पर बहुत से भुक्खड़ों के आने का भय रहता है।

तीन दिन पहले आपको तीन बार बुलाया जाता है। दो दिन पहले दो बार और बारात के “रिशेप्शन” के समय उसी दिन याद दिलाया जाता है कि आपको लिफाफा लेकर कहां पहंुचना है।

नियत स्थान के पहले नहीं मुड़ जाना। जैसे कोट फटी कमीज छिपा लेता है। वैसे ही आप घर के फटे नोट लिफाफे में रख कर रिसेप्शन में अच्छे वस्त्र पहन कर जाते है। चाहे तो खाली लिफाफे, पर भी आपके नाम द्वारा सप्रेम, लिख सकते है।

जब आप वहाॅ पहुंचते है तो "श्रीवास्तव परिवार" की जगह "सक्सेना परिवार आपका स्वागत करता है" लिखा रहता है। आप भ्रमित हो जाते है। आप अन्दर जाने वालो से पूछते है कि क्या यह श्रीवास्तव परिवार वालो का "आपका स्वागत करते है" नहीं है ? तब आपको बतलाया जाता है कि चंूकि स्वागत का खर्चा लड़की वाले उठा रहे है अतः यह वही है।

अन्दर दो जगह लिफाफे इकट्ठे किये जो रहे होते है। अतः आपको खींच कर लड़के वाले की तरफ से घसीटा जाता है। आप कहते है कि पहले आपको निमंत्रण पत्र दिया जावे फिर आप लिफाफा देंगे। स्वागत खर्च सक्सेना जी उठाते है और पैसे श्रीवास्तव जी बटोरते है। क्योंकि नगर में सक्सेना परिवार की पहचान वाला कोई नहीं होता है। फिर आप से कहा जाता है खाना खाकर जाइयेगा। आप सोचते है कि कहां से शुरू करूं ? अन्दर भीड़ देख कर आपके होश फाख्ता हो जाते है। लगभग पांच हजार आदमी औरते और बच्चे अन्दर बिलबिलाते है। जहां ऐसी भीड़ लगी है, जहां अन्दर घुसा नहीं जा सकता वहीं पूड़ी और सब्जी सम्भवतः रखी होती हैं। सब जगह खाली प्लेटे दिखती है। वहां तक पहंुचते पहुंचते आपके कपड़े फट जाते है। आप एक साथ बीस पूडियां लेकर एक दम पीछे हटते है। जीत के लिये पीछे हटने में कोई हर्ज नहीं है। मगर आप पर डाका पड़ जाता है। सब आपकी पूडियों पर झूम जाते है। जो मित्र आपको स्वयं के कपड़े बचाने के लिये पूडियों तक धकेलते है वे दुश्मन होकर आपकी पूडियां छीनने लगते है।

आप सड़के की तरफ भागते है। तब तक आपकी पूडियों से उन्नीस लोग उपकृत हो चुके होते है। वे उन्नीस लोग आप को बाहर धकेल कर फिर किसी अन्य को केन्द्र तक धकेलने लगते है। और अब आप एक पूड़ी लेकर सड़क पर खडे है। आपकी खाली पेट में कोई आपको भिखारी समझ कर पचास पैसे डाल देता है और पूछता है "श्रीवास्तव परिवार कहां स्वागत कर रहा है ?

रचना का परिवेश और परिवेश की रचना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जो सामाजिक रचना प्राप्त होती है, क्रान्तिकारी उसे बदल कर एक दूसरे परिवेश की रचना करते है जो पहिले से परिष्कृत होती है। यह एक अत्यन्त जोखिम भरा काम होता हैं इसमें हाथ में सिर रख कर चलना पड़ता है। अनेक बार मात्र पुरानी सामाजिक रचना के परिवेश को ही समाप्त कर क्रान्तिकारी यह मान लेते है कि इसके पश्चात नये एवं परिष्कृत परिवेश की रचना स्वयं हो जायेगी। यही एक भयंकर भूल हो जाती है।

राजा राम मोहन राय को सती प्रथा एक विकृत सामाजिक रचना के रूप में मिली थी। उस के अन्त हो जाने से ही नये परिवेश की रचना हो गई थी। यहां पुरानी सामाजिक रचना के परिवेश के अन्त ने नई सामाजिक रचना के परिवेश को स्वतः ही जन्म दे दिया था। पर स्वतंत्रता संग्राम में एक भयंकर भूल हो गई। आजादी मिलने के बाद क्रान्तिकारी यह समझ बैठे कि नये परिवेश का स्वतः ही जन्म हो जायेगा। गांधी के अलावा सब थक कर बैठ गये। अधिकतर, सुविधाओं को अधिकार समझ कर उनकी मांग करने लगे। जबकि होना यह चाहिये था कि वे एक नये परिवेश की रचना करते।

नये परिवेश की रचना में समाज की तीन प्रवाहमान सतहें बन जाती है। एक सतह नये परिवेश की रचना करती है। मध्य की सतह उदासीन होती है एवं तीसरी सतह सामातिक परिवेश की रचना के विरूद्ध काम करने लगती है। स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात मोहन दास करमचंद गांधी नये परिवेश की रचना में अकेले रह गये। इससे विध्वंशकारी शक्तियां बलवती हो गई और गांधी की हत्या हो गई।

उनकी हत्या के बाद सामाजिक रचना को बनाने की प्रक्रिया थम क्या गई उल्टी ही बहने लगी। राजनीतिक स्तर पर उक्त दायित्व संविधान निर्माता डा. भीम राव अम्बेडकर के कन्धों पर जा पड़ा। हमारा संविधान हरेक मानव को जाति या धर्म से उठकर बराबर के अधिकार देता है। देश के अन्दर यह गुरूतर दायित्व प्रथम गृह मंत्री वल्लभ भाई पटेल ने उठाया। जवाहर लाल नेहरू ने पंचशील का सिद्धांत अन्त्तराष्ट्रीय पहल पर रखा जो एक नव स्वतंत्र देश की मजबूरी भी था पर उसका विशेष असर नहीं पड़ा। देश को पाकिस्तान और चीन के हमले झेलने ही पड़े। जो सामाजिक और संरचना हमें मिली वह भ्रष्टाचार और अलगावाद की थी। हमारी पुलिस समानता के सिद्धांत को लागू नहीं कर पायी जो कि दुख की बात है। इसका कारण राजनैतिक ईमानदारी का अभाव रहा है। आरक्षण का सिद्धांत आदमी-आदमी में जाति के आधार पर अलगाववाद को जन्म देता है। हिन्दू - मुस्लिम, सवर्ण-दलित में झगड़े होते ही रहते है। काश्मीर की विशेष स्थिति ने वहां की घाटी में पण्डितो का सफाया कर दिया। इस तरह नये परिवेश की आदर्श स्थिति नहीं हो पायी। उपन्यास और कहानी के स्तर पर, जो कि समाज का प्रतिबिम्ब ही होती है उनका पूर्वाध रचना के परिवेश का निर्माण करता है और दूसरा भाग परिवेश की रचना करता है। पर अधिकतर कहानियां केवल एक विषमता की रचना के परिवेश का पूर्वाध में निर्माण करती है और नायक द्वारा उनकी नाटकीय समाप्ति में उनकी इतिश्री मान लेती है। परिवेश की रचना नहीं करती। यही उपन्यासों की व्यथा है पर राम राज्य का तो कहना ही क्या ? तुलसीदास ने कहा है पूरी धरती पर राम राज्य हो गया था और "दण्ड जतिन कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज, मांगे वारिध देंहि जल राम चन्द्र के राज ।।" व्यवस्था बूढ़ी, भ्रष्ट और चालाक होती है। रावण को व्यवस्था का प्रतीक लिया गया हैं। जो बूढ़ा है भ्रष्ट और चालाक है। वह सीता का अपहरण चालाकी से करता है। वह राम से आमने सामने भी लड़ कर सीता का अपहरण कर सकता था। पर उसे राम की शक्ति का आभास हो चुका था जो सुवाहु, ताड़का, कवन्ध इत्यादि को मार चुके थे। उसने सीता के अपहरण के बाद भी राम को चुनौती नहीं दी कि हिम्मत हो तो आकर लंका में लड़ लो, चुपचाप बैठ गया।

आज अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार एक परिवेश के रूप में देखा है। वे एक भ्रष्टाचार मुक्त परिवेश की रचना करना चाहते है। पर उनके जन लोकपाल बिल में बूढ़ी, भ्रष्ट, और चालाक व्यवस्था तरह तरह के अडंगे डाल रही है। आज कुछ लोग उनके साथ में है, कुछ उदासीन बैठे है और कुछ विरोध कर रहे है।

उक्त कुछ उदाहरण रचना का परिवेश और परिवेश की रचना के बारे में दिये गये है। स्वतंत्रता संग्राम के बाद आजादी मिलने पर सामाजिक क्रान्ति लाने वाले लोग चुप बैठ गये या स्वयं सुविधाओं की मांग करने लगे जो कि एक भयंकर भूल थी। उन्हें एक

नये परिवेश की रचना में कूद जाना था। यही फिल्मी अंत है। फिल्मों में दिखाया जाता है कि खलनायक को मारने के बाद नायक,नायिका से शादी कर लेता है। मदर इण्डिया जैसी कुछेक फिल्में अपवाद होती है। हम सब को मंुशी प्रेमचन्द की चर्चित कहानी, नमक का दरोगा याद है। उसमें एक ईमानदार नमक के दरोगा को नौकरी से निकाल कर एक परिवेश को खत्म कर दिया जाता है पर उसे बाद में एक दूसरी नौकरी उपलब्ध करा कर अधिक वेतन से पुरस्कृत करवा लिया जाता है। यह एक भ्रष्ट परिवेश को समाप्त कर नये परिवेश की रचना करना है जो ईमानदारी को पुरस्कृत करती है। इस कहानी में पूर्वाद्ध में एक रचना के परिवेश का निर्माण किया जाता है। बाद में उसे समाप्त कर एक दूसरे परिवेश का निर्माण किया जाता है।

अधिकतम कहानियां या उपन्यास किसी एक घटना का विस्तार होते है जिसका गवाह रचनाकार होता है। रामायण का वह मोड़ याद कीजिए जिसमें रावण सीता को हर लेता है। पति पत्नि को अलग कर दिया जाता है यह घटना वाल्मिकी द्वारा देखी गई उस घटना की पुनरावृति है जिसमें एक बहेलिया एक पक्षी युग्म में से एक पक्षी को मार देता है। इसमें बहेलिया का स्थान रावण ले लेता है। पक्षी युग्म के स्थान पर राम और सीता को रखा जाता है और वाल्मिकी राम में स्वयं को देखते है। यदि हमें लेखक तक पहंुचना है तो नायक का पीछा करना चाहिये। रामायण में एक परिवेश की समाप्ति होती है तो दूसरे बेहतर परिवेश की रचना की स्थापना की जाती है। बाली के स्थान पर सुग्रीव और रावण के स्थान पर विभीषण का राज्याभिषेक किया जाता है।

साफ सड़क

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक था दलाल। एक थी सरकार। और याद आया एक था नागरिक। सरकार को मंहगे वस्त्र और मंहगे गहने तो नागरिक दे रहा था पर वह घूंघट ओढ़े दलाल के पीछे

पीछे चल रही थी। मंत्रियों और अधिकारियो के हाथ इतने कमजोर थे कि वे बगैर दलालों की सहायता के दस्तखत करने के लिये उठते ही न थे। दलाल उनकी बैसााखियां थे। सारे दफ्तर दलाल चला रहे थे।

नागरिक के पास सरकार का पेट भरने के लिये पर्याप्त अनाज था। सरकार की इज्जत ढ़कने के लिये पर्याप्त कपास था पर दलालो की हवस भरने के लिये सारे संसाधन अपर्याप्त थे। नागरिक को सरकार ने लायसेन्सो की जंजीरो में जकड़ रखा था। नागरिक को जिन्दा रहने के लिये दफ्तरो के चक्कर लगाना पड़ते थे। नागरिक ऐसे ही एक प्लाट की रजिस्ट्री के लिए रजिस्ट्रार के कार्यालय गया। वहां के क्लर्क बड़े बड़े नाखूनो और दांतो वाले थे। उनकी हवस रूपी अग्नि में रिश्वत का लगातार हवन होता रहता था। रोता दलाल थे और यजमान था नागरिक। सरकार वहां घूंघट ओढ़े बैठी थी। दलाल उससे छेड़खानी कर रह रहे थे।

नागरिक ने सरकार से कहा “स्वामिनी मुझे रजिस्ट्री करवाना है। सरकार दलाल की तरफ इशारा कर के बोली “इनसे कहो, ये हमारे पति है। ये सरकारें है। इनके चरण छूकर भेंट चढ़ाओ तो हम रजिस्ट्री कर देंगे। नहीं तो इस गलतियां निकालेंगे और धक्का देकर बाहर निकाल देंगे।

संशोधनों के बाद बचा खुचा संविधान यह देख कर दुखी हो जाता था। मालिको के प्रति नौकरों का रूखा व्यवहार विश्व के सबसे बड़े प्रजातन्त्र में ही हो सकता था। नागरिको को बड़ी शर्म आई। जिस सरकार को उसने उसके अधिकारों की रक्षा करने के लिये चुना था वह यदि पुरूष या स्त्री होती तो उसे गर्व होता पर वह तो नपंुसक थी।

नागरिक बोला “मैं कितनी भेंट चढ़ाऊं। जितनी भेंट “कर” चुकाने के रूप में चढ़ाता हॅू उतना ही अनाज, सब्जी, ईंधन और कपड़े तुम्हारे दलाल आसमान पर चढ़ा देते है। उन्हें उचकते उचकते पकड़ना पड़ता है। मैं उचकते उचकते थक गया हॅू। अब तो अनशन करने वाले बाबा का ही भरोसा है।”

दलाल ने नागरिक को एक फोटो दिखाया जिसमें वह अनशन करने वाले बाबा के पीछे खड़ा था। फिर बोला “यही तो हम चाहते है कि तुम उचकते उचकते थक जाओ। तुम अन्ठयान्बे प्रतिशत हो और सरकारी नौकर मात्र दो प्रतिशत। ये दो प्रतिशत तुम अन्ठयान्बे प्रतिशत देश के लोगो पर, तुम सरकार बनाने वालो पर, तुम मतदाताओं पर शासने करते है। मगर सारे काम दलालों के द्वारा होते हैं। अन्तराष्ट्रीय खेलों के खेल गांव हमारी वजह से बनते है, उनमें हार जीत हमारी वजह से होती है, व्यापार हम करते है। जमीन और मकान हमारे कारण ही बिकते है। यहां तक कि शादियों और इलाज पर हमारा कब्जा है। तुम्हारी आक्सीजन हमारे पैरो तले दबी है। अच्छा, अब निकालो पैसे

तो हम तुम्हारी रजिस्ट्री करवायें। अनशन वाले बाबा की जय, गांधी जी की जय, भारत देश अमर रहे।

उस नागरिक के पास रजिस्ट्री लायक पैसे थे पर रिश्वत के लायक पैसे नहीं थे। अतः उस प्रजातन्त्र के मालिक को धक्के देकर बाहर निकाल दिश गया। फिर एक दिन रजिस्ट्री न होने के कारण उसका प्लाट कुर्क कर दिया गया। उसका समान बाहर फेंक दिया गया। दिसम्बर की रात की ठन्डी में उसे और उसके परिवार वालो को बाहर कर दिया गया। उस रात ठण्ड के कारण प्रजातन्त्र सिकुड़ कर मर गया। इस तरह दलालों, सरकारी नौकरो और मंत्रियों का मार्ग साफ हो गया।

गट्टू का अचरज

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गट्टू बार बार कुर्सी पर चढ़ रहा था और मां उसे बार बार चढ़ने से रोक रही थी। गट्टू नहीं माना तो मां ने उसे एक चांटा जड़ दिया। गट्टू रोने लगा। गट्टू के पिता के देखा कि गट्टू का गाल लाल हो गया है और गालो पर आंसू ढ़लक रहें है। उन्होंने उसे गोद में उठाया और पुचकारने हुये बाहर ले गये। वे उसे बाजार घुमाने ले गये। रंग बिरंगे बाजार और शोर करती गाड़ियों को देख कर गट्टू सुबह सुबक कर चुप हो गया। पापा उसे चाकलेट की दुकान पर ले गये। उन्होने उसे एक चाकलेट दिलवाई। वह चाकलेट पा कर खुश हो गया। फिर वह दूसरी चाकलेट के लिए मचलने लगा। पापा ने उसे दूसरी चाकलेट भी दिलवा दी। वह फिर एक और चाकलेट के लिए मचलने लगा। पापा यह कर कर कि अब दुकान की सारी चाकलेट खत्म हो चुकी है, उसे घर ले आये।

घर वापिस आने पर वह भूल चुका था कि मां ने उसे चांटा मारा था। वह मां को जेब से निकाल कर रंगीन चाकलेट दिखाने लगा। मां ने उसे गोद में लेकर चूम लिया। वह खुश होकर खेलने लगा।

ऐसा नहीं कि गट्टू बड़ों की बातें नही मानता था। एक बार वह “टेलीफोन” के लिये मचलने लगा। मां ने मना किया कि वह टूट जायेगा। वह मान गया। फिर उसकी एक गुड़िया को लेकर वह बाहर आ गया। वह गेट पर आकर खड़ा हो गया। फिर उस खिलौने को उल्टा पकड़ कर कान से लगा कर हलो हलो करने लगा। वह खुद ही बात करने लगा और खुद ही जवाब देने लगा।

एक बार उसके चाचा उसे बाहर घुमाने ले गये। वह एक कुत्ते को देख कर अचरज से भर गया। चाचा ने उसे बतलाया कि वह “भो” है। वह सड़क पर हर चलने वाले कुत्ते को देख कर भों कह कर छोटे छोटे हाथों से तालियां बजाने लगा। आगे एक गाय

दिखी। वह अचरज से भर कर चुप हो गया। फिर दोनो हाथ ऊपर करके जोर से कहा "(भों-भों)" मानो कि गाय बड़ा "भों" हो।

एक बार गट्टू ने कमरे में देखा कि मां नहीं है। उसे कमरे के बीच में एक कुर्सी दिखी कुर्सी पर चढ़ने का एक अच्छा मौका था। वह कुर्सी पर चढ़ने लगा। उसने पहले दोनो हाथ कुर्सी पर रखे। फिर लटक गया। फिर एक पैर कुर्सी पर रखा। कुछ आगे खिसका। फिर दूसरा पैर भी कुर्सी पर रख दिया। वह कुर्सी पर चढ़ने में सफल हो गया। मगर बैठने के बजाय वह कुर्सी की पीठ पकड़ कर खड़ा हो गया। कुर्सी गुस्सा हो कर उलट गई। कुर्सी शरारत करेगी यह उसने सोचा भी न था। वह गिर पड़ा। उसे ज्यादा चोट तो नहीं आई पर डर के कारण गला फाड़ कर रोने लगा।

मां रसोई घर में थी। उसनें गट्टू का रोना सुना तो ड्राइंग रूप में भागी चली आई। वहां उसने देखा कि कुर्सी उल्टी है, और गट्टू उस पर उल्टा पड़ा है। उसने गट्टू को उठा कर गोद में लिया और कुर्सी को सीधा किया। गट्टू पिटाई के डर से और जोर से रोने लगा। पर मां ने उसे डांटा तक नहीं। मां ने उसके शरीर पर हाथ फेरा। उसे रोता देख मां भी, "मेरे लाल, मेरे लाल" कह कर सुबकने लगी गट्टू मां को रोता देख कर अवाक हो कर चुप हो गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि गिरा तो वह था, शरारत उसने की थी, पर मां क्यों रो रही थी ?

आर्थिक उपनिवेशवाद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अंग्रेजो द्वारा भारत को उपनिवेश बताने का कारण आर्थिक शोषण ही था। इस ध्येय को पूरा करने के लिये उन्हें यहां धोखे से सेना भेजना पड़ी। यहां शोषण की व्यवस्था स्थापित करना पड़ी। जिसमें एक जगह तहसीलदार, कलेक्टर, कमिश्नर, वायसराय इत्यादि थे, वहीं दहशत पैदा करने के लिये सेना के कर्नल और फौजे थी।

आर्थिक शोषण के लिये अब विदेशियों को इस तरह की कोई व्यवस्था खड़ी नहीं करनी पड़ती हैं। अब तो हमारे नेता स्वयं विदेशो में हाथ जोड़ कर घूमते है कि आओ हमारे देश में निवेश करो। देश के मंत्री और अधिकारी यहां से कमाकार स्विस बैंक में जमा कर रहे है। हमारा बाजार विदेशी वस्तुओं से भरा पड़ा है। जो हमें लातें मारते है। हम उन्हीं के जूते सर पर उठा रहे है।"

उदाहरणार्थ चीन को ही देख लो। वह हमारे देश की तैतीस हजार वर्ग किलोमीटर जमीन को दबा कर बैठा है। सीमाओं पर चाहे जब हमला करता हैं। अरूणाचल को

उसकी जमीन बतला रहा हैं पर चीन के रद्दी सामानों से हमारा बाजार पटा पड़ा है। फिर हमारी कुनीति देखिये कि उत्तर पूर्व में पेट्रोल सबसे मंहगा कर रखा है। जहां उधर कश्मीर को हम एक समान्तर देश बताये हुये है और इस तरह से उनके कर्जदार बने हुये है मानो देश ने कश्मीर से कोई कर्ज लिया हो वही उत्तर पूर्व से दुश्मनी का त्यौहार कर रहे है। वह यदि किसी दिन वे विद्रोह कर बैठे तो ?

चीन हिन्द महासागर में उसको सैनिक आधार पाकिस्तान को डराने के लिये नहीं बना रहा है। वह मात्र भारत पर नजर गड़ाये हुये है। वह उत्तर दिशा में रेल लाइन उसके राष्ट्रपति की सैर के लिए नहीं बना रहा है वरन भारत को घेरने के लिये बना रहा है। उस पर भी मनमोहन सिंह कहते है कि उन्हें ऐसा लगता है कि चीन उन पर हमला नहीं करेगा। ऐसा तो हमारे प्रथम प्रधानमंत्री को भी नहीं लगता था उन्हीं का दिया नारा था कि हिन्दी चीनी भाई भाई । नतीजा क्या निकला ?हम चीन का हमला भी सहन नहीं कर पाये। वह आसानी से भारत का एक बड़ा टुकड़ा ले भागा।

हमारी विदेश नीति बिल्कुल असफल रही है। हम कश्मीर का मामला सुलझा नहीं पाये। चीन से हम दबते हैं श्रीलंका में लिट्टे को समर्थन देते है हमारे प्रधानमंत्री जहां तहां मंुह की खाते हैं। या तो मारे जाते है, या अपमानित होते हैं या डंडे खाते हैं आखिर देश की कोई अस्मिता है कि नहीं?

फिर उन्हीं देश का अपमान करने वाले देशों को हम बुलाते है कि आओ हमारे देश में मुक्त व्यापार करो। इस देश की जनता तो भेड़ है उसके बाल उतारते जाओ वह कुछ नहीं बोलेगी। हमारा पैसा हम ही स्विस बैंक में जमा कर देंगे, तुम भी आकर लूट लो।

देश में सिर में डालने के तेल, चेहरे पर लगाने के पाऊडर, साबुन, घर के मसाले, कपड़े, जूते, घड़ियां, कारें, हवाई जहाज, लड़ाकू विमान सब पर विदेशियों को कब्जा है। अब हम उन लोगो को बुला रहे है कि यहां खुदरा दुकाने भी खोल लो।

अच्छा चलो अमेरिका ने तलाशी के नाम पर यहां के कई मंत्रियों का अपमान किया है। क्या हमने उनके एक भी नेता या अधिकारी की तलाशी ली ?हमारा देश इतना कायर क्यों हो गया हैं

हमारे देश को आर्थिक उपनिवेश बनाने के लिये विदेशियों को अब कर्नर डायल नहीं भेजना। कोई सेना नहीं भेजना कोई कमिश्नर, कलेक्टर या तहसीलदार, नियुक्त नहीं करना हम खुद ही उनको चरण चुम्बन कर रहे है कि आओ हमारा आर्थिक शोषण करो।

मेरे घर आयकर वालो का छापा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरे घर एक साहब सूट और टाई में आये और बोले हम आय कर विभाग से है और तुम पर छापा मारने आये है मैं पीठ उनकी तरफ कर के बोला और कहा “मारिये हूजूर” मैं समझ गया था कि साहब लोग है। उनके कार्यालय से मेरे घर तक मेरी तारीफ करने तो नहीं आये होंगे। वे हंस कर बोले “अरे नहीं”। हम तुम्हारी सम्पति जप्त करने आये है।” मैं समझ गया। ये पट्टे वाली जमीन कभी न कभी तो छोड़नी पड़ेगी। मैने कागजात लाकर उनके सामने रख दिये। उन्होने कहा नहीं भई जो कुछ नगदी और जेवरात तुम्हारे घर में है उसको जप्त करेंगे”

मैनें सोचा क्या चोर लोग है जो दिन में भी चोरी करने आ गये। सूट और टाई में चोर पहली बार देखे थे। मैं बोला चोर साहब आप महिने की पहली तारीख को ही आ गये। उन्तीस तारीख को आते तो अहसान होता। वे चोर सम्बोधन सुन कर नाराज हो गये। उनकी भाव भंगिमा देख कर मैं डर गया। जल्दी से घर के अन्दर जिलेट के जेवर उनके सामने रख दिये हाथ जोड़ कर बोला मारिये हूजूर छापा।

उन्हें बड़ी कोफ्त आई। उन्होने कहा हम तुम्हारे घर की कीमती चीजे ले जाने आये है। मेरे घर में बीबी और बच्चे ही सबसे ज्यादा कीमती है। इतने में बीबी अन्दर से बोली अजी सुनते हो” मैनें बाहर से ही चिल्ला कर कहा जिन्दगी भर सुनता ही तो आ रहा हूॅ बोलो” रसोई घर फिर बोला साहब आये है चाय ले जाओ”

मैं घर के सबसे कम टूटे कप और डब्बे के ढक्कन में कुछ नाश्ता लेकर आ गया और हाथ जोड़ कर बोला “हूजूर चाय नाश्ता कीजिये और इन्ही को ले जाइये। मेरी बीबी और बच्चों को भी ले जाइये। वे ही मेरे कीमती नग है। मगर इन दिनों बीबी कुछ चिड़चिड़ी होती जा रही हैं और नौकरी न मिलने के कारण दोनो बच्चे अपराधी की तरह चुप रहने लगे हैं। मैं साहब के हाथ जोड़ कर बोला हूजूर उन्हें ले जाइये और कुछ छोटी मोटी नौकरी बच्चों को दिलवा दीजिये तो आपको बड़ा अहसान होगा, वे फिर नाराज हो गये बोले हमें तुम्हारी दो पैरो से चलने वाली चल सम्पति से कोई मतलब नहीं है। तुम्हारी विनिमय योग्य चल एवं अचल सम्पति का ब्यौरा चाहिए। मैनें तो साहब से कहा था कि उस मूर्ख के घर छापा डालने के लिए किसी ईमानदार अधिकारी को भेजो। उनका कहना था कि अपने विभाग में ईमानदार अधिकारी कहां से लायें ? तुम्ही न. 2 की कमाई न होने के कारण चले जाओ ।

मैं अपराधी की तरह खड़ा हो गया। उन्होने मुझे दो चांटे जड़ दिये। गरीब को पिटने की आदत हो जाना चाहिए। मुझे भी हो गई है। मेरे आंसू आ गये। साहब भी द्रवित हो गये। बोले क्या करूं ऊपर से आदेश आये है।

मैनें ऊपर देखा ऊपर टपकने वाली छत थी। वह बरसात में तो “लीक” करती थी बदमाश अब घर के भेद भी “लीक” करने लगी इसी को कहते है घर का भेदी लंका ढाये। वे साहब फिर बोले तुम्हारे घर का ये कचरा यथा स्थान रख कर आओ। छापा पेश नहीं किया जाता, डाला जाता है। छापा डालेंगे। फार्मेलिटी तो पूरी करना ही पड़ेगी।

मैनें सोचा कि छापा डालना कोई डाका डालने जैसी प्रक्रिया ही होगी ये साहब मेरी पिटाई तो कर ही चुके है अब फर्श भी खोदेंगे। मगर क्या करता मैनें भी घर का पट्टा हटा कर कहा “याहब डाका डाल लीजिये”।

वे फिर गुस्सा हो गये। मुझे गालियां देने लगे। मेरी गरीब लोगो को सलाह है कि वे सच न बोले और पिटने की आदत डाल लें। उन्होने मेरे घर का फर्श खोद दिये मेरे घर के गद्दे फाड़ दिये रजाइयां फाड दी। अब हम सर्दियों में मात्र रूई ओढ़ कर ही कांप लेंगे। फिर वे मेरे टायलेट में घुसने लगे। मैनें कहा, हूजूर वो गन्दे घर में कहां जा रहे हो उन्हें लगा कि मैनें शायद वही छत छिपा रखा हैं। उन्होने उसे भी खोद डाला। मुझे अब दिशा मैदान को पांच किलोमीटर दूर जंगल में जाना पडेगा।

उन्हें वहां गंदगी के अलावा कुछ न मिलता था तो कुछ नहीं मिला। वह थक कर फिर बाहर वाले कमरे में आ गये। अब वह रूंआसे होने की उनकी बारी थी। वह बोले अब मैं सरकार को क्या मुुंह दिखाऊंगा ? तुम्हारे घर की कुल परिसम्पतियों में से ज्यादा खर्च तो छापा डालने में हो गया। वे बोले ऐसा करो, मैं ये एक करोड़ रूपये और दो किलो सोना लाया हूॅ इसे कहीं छिपा दो। फिर हम छापा मार कर इसे बरामत कर लेंगें, और ये फोटोग्राफर फोटो ले लेगा। मेरे घर का हरेक सदस्य रोने लगा। मेरी बीबी बोली भाई साहब हम तो अब हमारी इज्जत भी नहीं छिपा सकते। अपने घर के सारे परदे फाड़ डाले जिनसे हम अपनी इज्जत छिपा सकते थे। सारे कपड़े फाड़ उाले। अब तो सरकार से ही कहें कि उसके पास छिपा ले या आप ही इसे आपके गद्दो, तकियों या टायलेट में छिपा लें।”

मैने कहा हूजूर मेरे घर में छापा डालने से सरकार की इज्जत खराब कर दी। अब प्रेस और विरोधी पार्टी कहेगी कि आयकर विभाग भिखारियों के घर भी छापा डालने लगा है।

एक मजाक सभा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुझे उनके टेलीफोन से ही मालूम पड़ा कि वे मेरे मित्र है। उन्होने मुझे सूचना दी कि गांव के प्रसिद्ध साहित्यकार की प्रसिद्ध पत्नी का निधन हो गया है। उनकी एक कहानी के प्रकाशन का जश्न मनाया था। जिसे एक दो पृष्ठीय समाचार पत्र ने चुटकुले के स्तम्भ में छाप दिया था। प्रसिद्ध साहित्यकार ने विगत दिनो ही मुझसे कहा था कि उनकी असीमित प्रसिद्धि के पीछे उनकी पत्नी का हाथ है। जो कालिदास के पीछे विधोतमा, तुलसीदास के पीछे रत्नावली और इत्यादि साहित्यकारों के पीछे इत्यादितियों का हाथ होता है। उस प्रसिद्ध महिला के दिवंगत होने पर शोक सभा का आयोजन वे मि. करने वाले थे।

मैनें शंका प्रकट की और कहा कि देखना वह शोक सभा कवि, गोष्ठी में बदल जायेगी। मुझे मालूम था कि उसमें ठोस साहित्यकारो को बुलाया गया था। उसने मुझसे कहा "साहित्यकार बन्धु, आपके बगैर वह शोक सभा सफल नहीं हो पायेगी जैसी कि पहली शोक सभायें भी आपकी अनुपस्थिति के कारण सफल नहीं हो पायी। हम आपको ही सबसे पहले उद्बोधन के लिये आमंत्रित करेंगे जिससे आधे श्रोता भाग जायेंगे।

इस गांव के साहित्यकार मेरा मूल्यांकन भीड़ भगाने के लिए करते थे। शोक सभाओं में बुलाया जाता है जन्म दिन पर नहीं। जब देलही दूर दर्शन उनके कार्यक्रमों की रिकार्डिंग को आता है तब मुझे सप्रयत्न दूर रखा जाता है।

टेलीफोन मित्र ने फिर कहा “शोक सभा को क्या कोई कवि सम्मेलन में परिवर्तित करता है। मैने कहा कवि किसी भी अवसर को कवि सम्मेलन में खींच कर बदल देता है तुम्हे नहीं मालूम।

शाम को छः बजे मैं सभागार में अकेला पहुंच गया। तब अन्य साहित्यकार, सम्भक्तः उनके वस्त्रों और जाकेट पर प्रेस करवा रहे थे। संचालक आ चुके थे।

मैनें संचालक से कहा “शोक सभा प्रारम्भ की जाये। संचालक बोला “साहित्यकारो को आ जाने दो। गोया मैं साहित्यकार नहीं था। वह तो खैर था ही नहीं। धीरे धीरे वे लोग टपकने लगे जिन्हें संचालक आइये साहित्यकार कह कर सम्बोधित कर रहा था। मुझे लगा कि यह साहित्यकार बनने का अच्छा समय है अतः मैं पीछे के दरवाजे से खिसक कर सामने के दरवाजे से आने लगा। मुझे देख कर संयोजक थोड़ी दूर ठिठका फिर कहने लगा आइये कौशल जी मुझे उसने फिर पटखनी दे दी।

खैर जब साहित्यकारो से हाल भरा दिखने लगा तब संचालक ने कहा प्रिय साहित्यकारो और कौशल जी दिवंगत भाभी जी श्री प्रसिद्ध साहित्यकार से मेरे ज्यादा करीबी थी। प्रसिद्ध साहित्यकार की मुट्ठियां भिंच गई। मुझे लगा कि अब दीवानी में फौजदारी प्रवेश करने वाली है पर संचालक ने किसी शायर को बुला लिया।

शायर ने इस शोक सभा को मुशायरा समझ लिया। वह बोले इस शोक सभा के मुबारक मौके पर मैं एक गजल सुनाना चाहता हूॅं। फिर उन्होने एक जेब से शायरी निकाली और स्वर के साथ पढ़ना चालू कर दिया। मैनें टेलीफोन मित्र को बुलाया और कहा “देखा मैनें कहा था कि यह शोक सभा एक कवि सम्मेलन में बदल जायेगी। वह बोले यह दूसरी जेब से रचना नहीं निकालेगा। पर शायर जनाब ने उन्हें निराश कर दिया।

आधा घंटा श्रोताओं के कानों में वे जब कचरा उढेल चुके तो दूसरे कवि ने उनसे माइक छीन कर प्रिय महोदयजी कहना चालू कर दिया। उन्होने बतलाया कि दिवंगत ने वे राज भी उन्हें बतलाये थे जो उनके पति देव को भी नहीं बतलाये। इतनी सज्जन थी प्रिय भाभीजी। पति साहित्यकार मुट्ठी बांध कर उठ खड़े हुये। उन्होने उस वक्त की गालियां बकना चालू कर दी। मगर तब तक वक्ता जेब से लम्बा कागज निकाल कर कविता पढ़ना चालू कर दी।

उनकी उस अगद्य अकविता को सबके कानों ने वापिस कर दिया। बाकी साहित्यकारो ने उनसे हट करके नकार दिया। इतने में किशोर जी उठ खड़े हुये उन्होने कहा कि उन्हें समय कम है। अतः वे एक छोटी रचना ही सुनायेंगे। सब लोग यह कह कर कि हां वे ही फालतू है विरोधी पार्टी की तरह बर्हिगमन करने लगे। उस शोक सभा

में दो मिनिट कर भी मौन नहीं रह पा रहा था। मगर बर्हिगमन करने वाले दूसरे दरवाजे से अन्दर आ गये।

संचालक ने इस बार एक कहानी कार को बुलवाया। वे स्टेज पर आये और रहस्योघाटन करने लगे कि "गुपचुप" कहानी तब लिखी गई थी जब वे रात को खिड़की से साहित्यकार की अनुपस्थिति में उस के घर में घुस गये थे। प्रसिद्ध साहित्यकार गुस्से में मंुह से झाग निकालता हुआ उठ खड़ा हुआ और उसने एक घंूसा कहानीकार को जड़ दिया। शोक सभा में दो मिनिट की मौन की जगह दंगल होने लगा। सारे अप्रसिद्ध साहित्यकार एक हो गये। उन्होने मिल कर उस साहित्यकार की धुनाई कर दी।

मगर चंूकि बहुत से साहित्यकार, साहित्य से वंचित हो रहे थे अतः वे सब बैठ गये। जो रचना
थूक कर चिपकाना चाह रहे थे उन पर नजर रखी जा रही थी। उन्हें बांह पकड कर दो अपठित के बीच में बिठाल दिया गया। प्रसिद्ध साहित्यकार को आने वाले साहित्यकारों ने हाथ जोड़ कर बिठाल लिया गया। संचालक ने चेतावनी दी कि कोई भी व्यक्तिगत उद्घाटन नहीं करेगा।

वह शोक सभा गोष्ठी फिर बैठ गयी। मुझे न पाकर शेष रचनाकारों ने संचालक के ऊपर पक्षपात का आरोप लगाकर अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर दिया। फिर एकमात्र समीक्षक को बुलाया गया। उन्होने बतलाया कि शोक सभायें इस तरह की नहीं होती है। उस तरह की होती है। वे जिस तरह की भी होती है, होती है। उनको किस तरह से होना चाहिये यह समाज तय करता है। व्यक्ति नदी जैसा कि यहां ही रहा है।

किसी को समझ में नहीं आया कि वे क्या कहने करना चाहते थे। एक इतिहासकार ने उद्घाटन किया कि पहले शोक सभायें कई वर्षो की होती थी उनमें कभी विलाप किया जाता तो कभी मौन रखा जाता था। फिर काली पट्टी विलाप का प्रतीक बन गया। वह फिर पांच मिनट से दो मिनट तक सिकुड़ गई। आगे हो सकता है कि लेपटाप में शोक सभा की चिप की तरह है तो दिल चांदी की तरह उठते है दिल में भी जज्बात एक आंधी की तरह। जावे या रोबोट आदमियों के मरने की शोक सभा करें।

रचना

खुद की नीलामी हमें करना नहीं आता
सच के बिना क्या करें चलना नहीं आता ।।
बोझ रखता है सुबह मगरिन को सौंपने
कन्धो को कोई बहाना गढ़ना नहीं आता ।।
चोटी पे चले आये हम नीचे से ही चढ़ के
आकाश से चोटी में उतरना नहीं आता ।।
उनकी जुवां है पसीने चेहरे पे झलकता
मेहनत कशो को और कुछ कहना नहीं आता ।।
छेड़ती रातें रहीं सोने नहीं दिया
सपनों को मेरे पास ठहरना नहीं आता ।।
सुबह की अरगल खुली सूरज निकल गया
रात के आगोश को सहना नहीं आता ।।

रचना

जमीं और हवा की आकाश जैसी कीमत है
तुम्हारे शहर में जिन्दा रहे, गनीमत है ।।
फसल तो लड़की है कटती है दूसरो के लिये
किसान लुट गया वालिद सा एक हकीकत है।।
तले जूतो के है आंखो में मगर गड़ते है
हमारा होना ही उनके लिये मुसीबत है।।
आदमी फलों को खाते है शहर जंगल को
आदमी हो गया पेड़ो को एक फजीहत है।।
अमीर शख्स में दिल गुर्दे जिगर खुद के नहीं
और शैतान की फिर जिस्म पर तबीयत है ।।
मय की चोरी में हाथ काट दिये मैकश के
गुनाह दो घटे वाइज ने दी नसीहत है ।।

अध्र्य पुष्प उद्यान के

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भुवन भास्कर को देते है
अध्र्य पुष्प उद्यान के
बट पल्लव कीर्तन रत होकर
करते मधु स्वर गान के ।।

कल कल झरने विरूदावली है
खग स्वर ढ़ोल मन्जीरे
साथ दे रहे है वन पल्लव
हिल कर धीरे धीरे ।।
चार दिशायें सुदृड़ खम्ब है
मोहक सृष्टि वितान के
भुवन भास्कर को देते है
अध्र्य पुष्प उद्यान के ।।

अनल अनिल बन कर ले जाता
हवि रवि तक सादर
प्रमुदित रवि किरणें करती हैं
प्रातः का आदर
वृक्ष लुटाते फल के दोने
मुक्त हस्त से दान के
भुवन भास्कर को देते है
अध्र्य पुष्प उद्यान के ।

भ्रमर गान पर नर्तन रत है
पुष्प पुष्प तितली ।
झूम रहे हैं ताल मुग्ध हो
वृक्ष वृक्ष कदली ।।
भूमा वन आकाश चक्षु
उन्मूलित करता ज्ञान के

भुवन भास्कर को देते है

अध्र्य पुष्प उद्यान के ।।

हिम झरनों से प्रसवित नदियां
दौड़ी यौवन को ।
प्रसवित होकर कुछ झरनों से
मैदानी बन को ।।
कर कुसमित फूलों के कंगन
भुजा उठाती मान के
भुवन भास्कर को देते है
अध्र्य पुष्प उद्यान के ।।

तबीयत हो गई हिन्दुस्तान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चना नहीं है घर में खानें
बापू है बीमार
बीबी रोती अनुशासन को
करते सभी विहार
नही जरूरत फिर भी
घर से चेता दिया अलाव
हवा दें रहे घर के दुश्मन
भूल गये पंजाब
घर में बजते खाली बरतन
नदीं नहीं है पास
गर्मी के दिन कैसे काटे
चिन्तित है मद्रास
गोली जैसे शब्द छूटते
घर है या आसाम
कोई गरदन न उतार दे
रक्षा करना राम
करते हस्तेक्षप पड़ोसी
घर है या कश्मीर

बटवारा फिर से न होवे
रक्षा करना पीर
टूट रहा है अंग अंग
और आफत में है जान
जूड़ी ताप चड़ा क्या
तबीयत हो गई हिन्दुस्तान ।।

लिखा गया कोलाहल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लिखा गया कोलाहल
लिखने वाले से सरगम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
लिखते लिखते स्वर्ण भूमिका
सब स्याही चुक गई
अब उधार शर्तो पर मिलती
साख कहां खो गई
हरेक शब्द के क्लान्त
कर्ज के नीचे हरेक कलम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
टनो स्याही शहर भेज दी
गांव पड़े सूखे
गांव शहर के नौकर हो गये
रह रहके भूखे

गांव गुलामी करते करते
खो बैठे दम खम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
शहरो के सस्क रबा निकाले
गांव हांसिये हुये
नकल छपी रंगीन पेज में
मूल रहे अनछुये
कैसी पुस्तक लिखी
शब्द है बहुत
अर्थ है कम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
हरेक तिजोरी के
इसमें अधिकार सुरक्षित है
हरेक अंक के
अपने अपने/अनुक्रम अंकित है
धनियों को यह वेद समर्पित
पड़ा हुआ वेद में
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
इसीकी तारीखो में अंकित
नृप के अत्याचार
मथुरा पड़ी केस के नीचे
रो रो करे पुकार
भीष्म पितामह बिके हुये
चुप बैठे है आश्रम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
खाकर पन्ने जिल्द
सुनहरी चमकीली हो गई
पक्षी उड़े विदेश

रोपणी सब पीली हो गई
नदियां महलों में जा बैठी
नहरों के माध्यम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
गांवों को दो काम
स्वच्छता नगर हवाओं को
शहरों का कम करो बजट
दो ज्यादा गांवों को
गांव न सुविधाहीन रहें
न घुटे शहर का दम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम
व्यास लिखो ऐसा भारत
जो सदियों सुरभित रहे
जनसंख्या श्रम और
भूमिका वितरण उचित रहे
देर हो चुकी बहुत
उठाओं अब तो सही कलम
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम

शब्द है उस पुस्तक के हम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लिखी राष्ट्र के नाम शब्द है उस पुस्तक के हम
लिखा गया कोलाहल लिखने वाले थे सरगम

लिखते लिखते स्वर्ण भूमिका सब स्याही चुक गई
अब उधार शर्तो पर मिलती साख कहां खो गई
हरेक शब्द के क्लांत कर्ज के नीचे हरेक कलम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द है उस पुस्तक के हम

टनो स्याही शहर भेज दी गांव पड़े सूखे
गांव शहर के नौकर हो गये रह रह के भूखे
गांव गुलामी करते करते खो बैठे दमखम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द है उस पुस्तक के हम

धनिकों के है कई संस्करण विज्ञ हाशिये हुये
नकल छपी रंगीन पेज में मूल रह गये अनछुये
कैसी पुस्तक लिखी शब्द है बहुत अर्थ है कम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

हरेक तिजोरी के इसमें अधिकार सुरक्षित है
भेदभाव करने वालो के अनुक्रम अंकित है
काले धन वालो के आगे वेद पड़ा बेदम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

बाहुबलो के अंकित हर निर्बल पर अतिचार
मंहगाई के तले दबे है निर्धन कई हजार
पटा आत्महत्याओं से ये रोता है हर दम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

खाकर पन्ने जिल्द सुनहरी चमकीली हो गई
पक्षी उड़े विदेश रोपणी सब पीली हो गई
नदियां महलों में जा बैठी नहरों के माध्यम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

गांवों को दो काम स्वच्छता नगर हवाओं को
शहरों का कम करो बजट दो ज्यादा गांवों को
गांव न सुविधाहीन रहे न घुटे शहर का दम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

व्यास लिखो ऐसा भारत जो सदियों सुरभित रहे
भेदभाव का दंश मिटे धन वितरण उचित रहे
देर हो चुकी बहुत उठाओं अब तो सही कलम
लिखी राष्ट्र के नाम शब्द हैं उस पुस्तक के हम

गिरफ्तारी वारन्ट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं चाहे जब दुर्घटना से घायल मरीजो को सड़क से बीन कर अस्पताल में आहिस्ता से भरती करवा देता हूॅ। मेरी बैलगाड़ी को वहां के वार्ड ब्वाय बैलगाड़ी एक्सप्रेस कहते है। आजकल दुर्घटनायें बहुत बढ़ गई है। मुझे चाहे जब सब्जी या गल्ला, मन्डी में लाना होता है। इसी सिलसिले में गांव से शहर में आता हूॅ। धर्म का ये काम भी कर देता हूॅ । उनके नाम पते लिख लेता हूॅ जिससे यमराज जी को बता सकूॅ कि मैनें कितने पुण्य के काम किये थे और जिससे कि मुझे नर्क में न डाला जावे। घायलों को जब अस्पताल भरती करते है तब डाक्टर साहबान लाने वाले का नाम, पंजी में लिख लेते है। केवल नये डाक्टर साहब ही मेरा नाम पता नहीं जानते। वे उसकी सूचना हवलदार को भिजवा देते है। फिर पुलिस वाले मुझसे पूछताछ करते है। उन्हें कुछ पैसे देकर यह लिखना पड़ता है कि घायल बैलगाड़ी से घायल नहीं हुआ। अच्छे काम के लिये थोड़ा बुरा काम भी करना पड़ता है।

इसके बाद प्रकरण अदालत में जाते है। वहां गवाही के लिये मुझे बुलाया जाता है। अदालत के निमंत्रण पत्र को “समन” कहते है। यदि एक दो बार वहां न जा पाये तो वे जमानती “वारंट” से बुलाते है। यदि जमानती “वारंट” पर भी नहीं पहुंच पाये तो जमानत वसूल की जाती हैं। पुण्य के लिये थोड़ा दान और सही।

एक बार जमानती वारंट पर नहीं पहुंच पाया। मेरे चाचा की मिट्टी में गया था। तो जज साहब ने गिरफ्तारी वारन्ट निकाल दिया। घर में रोंवा रेंट मच गया। उसमें लिखा था कि साक्षी को बगैर हथकड़ी अदालत में पेश किया जावे। बीबी का भी रो रोकर बुरा हाल हो गया। बच्चे सहम गये। मैनें जज साहब का अहसान माना कि मुझे बगैर हथकड़ी के अदालत में पेश करने का आदेश दिया गया था। मेरे भाई लोग कुड़कुडाने लगे। उन्होने पहले ही कहा था कि जिसने की दया, वह काम से गया। मैनें उन्हें समझाया कि धर्म के रास्ते पर दधीचि ने हड्डियां दान में दे दी थी महाराज शिवि ने अपना मांस काट काट कर कबूतर को तौला था रंति देव ने अपने बच्चे को आरे से आधा काट दिया था और सत्य की रक्षा के लिये महाराज हरिशचन्द्र दर दर भटके।

उन्होने मुझे गधा कहा और दो थप्पड़ जड़ दिये। फिर कहा जाओ मेरो तुम भी दर दर भटको। आज तुम्हारी वजह से घर में पुलिस आई है। अदालत और पुलिस के चक्कर खराब होते है। अब हम न्यारे न्यारे हो जायेंगे। तुम्हारे पीछे कौन, अपनी मिट्टी खराब करे। मैं चुप चाप सुनता रहा। हमारे दुश्मन घर के आसपास चक्कर लगाकार आवाजें करने लगे और कहने लगे कि उन्हें मारपीट नहीं करनी पड़ती। अब जेलर जी पिटाई लगायेंगे तब हमें मजा आयेगा।

सिपाही जी ने कहा कि वह सुबह मुझे थाने ले जायेंगे। आज यही पिटाई लगायेंगे। उनके खाने और ठहरने का इन्तजाम हमें ही करना पड़ेगा। मेरा गिरफ्तारी वारंट शनिवार को निकला था। सिपाही ने कहा कि या तो सोमवार तक उसके ठहरने का इंतजाम हमें ही करना पड़ेगा या थाने में मेरे खाने पीने का इंतजाम के लिये एक हजार रूपये देना पडेंगे। सरकार के पास तुम्हें खिलाने हराम का पैसा नहीं है।

खैर उन्हें घर पर ही रोका गया। उन्हें सुबह शाम शुद्ध घी की बाटियां और उसके लड्डू खिलाये जाने लगे। वह आधा किलो रबड़ी सुबह शाम खाते थे। इससे मेरे बीबी बच्चों को मेरे साथ रहने मिल गया।

मुझे रात को बुरे-बुरे सपने आते रहे। मुझे वह घायल, डाक्टर साहब, जेलर जी और जज साहब बड़े-बड़े दांत निकाल कर पीटते थे। मैं बुरी तरह डर गया। पूरे दिन मेरा दिल धड़कता रहा। मैं जाग कर पसीने पसीने हो गया।

सोमवार की सुबह सिपाही जी ने मुझे गिरफ्तार किया और गांव की गलियों में घुमाते हुये अदालत ले जाने लगे। मेरी बैलगाड़ी को भैय्या हांक करे थे । जैसे ही गांव की गडबैल निकल कर हम शहर की सड़क पर आये एक दुर्घटना से घायल आदमी पड़ा मिला । वह कराह रहा था। उसको बहुत सारा खून निकल रहा था। उसकी कोई कार वाला, मोटर वाला या ट्रक वाला सहायता नहीं कर रहा था। लगता था कि उन लोगो को पहले ही बगैर हथकड़ी के दो गिरफ्तारी वारंट निकल चुके थे। मैनें भैय्या से कहा कि उसकी सहायता कर दें। हम शहर तो जा ही रहे है उसे भी उठा लेते है। भैय्या ने एक थप्पड़ मुझे मारा और दूसरी तरफ मंुह फेर कर गाड़ी हांक दी।

(मेरा नगरपालिका को सुझाव है कि साक्ष्य जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के लिये गिरफ्तारी वारंट शब्द के स्थान पर मात्र साक्ष्य प्रत्यक्षीकरण शब्द ही उपयोग में लाये तो अधिक गरिमामाय रहेगा)

जागने से सोने तक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं और वीणा सुबह सात बजे बिस्तर छोड़ देते है । आधा घण्टे में हमें नित्य क्रियाओं से फारिग होना पड़ता है। क्योंकि साढ़ेसात बजे निधि जाग जाती है। निधि हमारी छोटी सी, सुन्दर सी, प्यारी सी बिटिया है, दोनो नन्हीं बाहें पसारे मुट्ठी बंद किये एवं नन्हें पैर फैलाये वह सुबह बिस्तर पर तिरछी सोती हुई मिलती है। या तो वह बिल्कुल सिरहाने आड़ी सोती हुई मिलेगी, या बिल्कुल पैताने पहुंच जाती है। वह उसको बिछाये गये गद्दे रबर पर कभी नहीं मिलेगी।

सुबह उसकी पांखुरी सी पलकें बन्द ही बन्द ऊपर नीचे होने लगती है। उसके नेत्र गोलक घूमने लगते है और फिर वह धीरे से आॅख खोल देती है। कुछ देर आॅख खोलकर फिर बन्द कर लेती हैं फिर कुछ देर बाद आॅख खोल देती है। यह क्रिया दो-तीन आर दुहराकर वह पूरी आॅखे खोल देती है।

शुरू में उसने उनीदें ही सब वस्तुओं को देखा फिर हमें देखकर हौले से मुस्कुरा-मुस्कुरा कर उसने छत पर घूमते पंखे की तरफ नन्हा हाथ उठाकर गोल-गोल घुमाया है जिसका मतलब होता है, कि पंखा घूम रहा है।

मैनें समर्थन किया कि हाॅॅं बिटिया पंखा घूम रहा है। उसने भी सिर ऊपर नीचे हिलाया, जिसका मतलब था, कि वह मुझसे सहमत है। इसके बाइ उसने खिलौने की ओर इंगित कर के "जे" कहा । मैनें जवाब दिया कि हाॅ ये खिलौने हैं। फिर उसने कमरे की हर वस्तु की ओर घूम कर देखा, नन्हा हाथ उसकी ओर फैलाया और "जे" कहा। इस तरह हर वस्तु की स्मृति प्राप्त कराते हुये मैं उसे उठाकर "सू" करवाने बाथरूम ले गया। रास्ते में हर वस्तु की तरफ वह नन्हा हाथ दिखाकर "जे" "जे" करती रही। मुझे हर चीज का उसे नाम बतलाना पड़ा और वह सिर हिला कर हाॅॅं में हाॅ मिलाती रही।

"सू" करने के बाद उसने रसोई घर की तरफ तिरछा देखकर जोर से "निनि" कहा। वह अभी वीणा को मम्मी के स्थान पर निनी कहती है। वीणा ने रसोई घर में दूध गर्म करते हुये आवाज लगाई "हाॅ बिटिया"। वीणा की आवाज सुनकर उसने किलकारी लगाई और कहा "आऊ" वीणा ने वहीं से जवाब दिया मैं आ रही हॅू गुड़िया। और वीणा गुड़िया का दूध एक कटोरी में ले कर आ गई।

गुड़िया को फिर शयन कक्ष में ले जाया गया। उसके बाद आरम्भ हुआ गुड़िया के दुग्ध पान का श्रम साध्य कार्य। वीणा ने गुड़िया के नन्हे पैरो को स्वयं के पैरो के नीचे दबाया। फिर कुछ झुन झुने बजाये। इसके बाद गले एवं सीने पर पतला तौलिया डाला। अब तक बिटिया समझ चुकी थी, कि उसे दूध पिलाया जा रहा है। उसने पहले मंुह बनाया। रोनी सूरत बनाई उसकी ढोडी सिकुड गई और निचला होठ पकड़ने लगा। वह छूटकर भागने लगी। वीणा ने उसका निचला जबड़ा उंगली डालकर खोला और एक चम्मच दूध उडेल दिया। गुड़िया ने दूध कुछ देर मंुह में रहने दिया और फिर बेमन से निगल लिया। उसने ऐसा चेहरा बनाया जैसे किसी बच्चे को जबरदस्ती स्कूल भेजा जा रहा हो।

दूसरी चम्मच भी उसने बेमन से जाने दी। और तब जबकि हम समझ रहे थे, कि उसने दूध निगल लिया है गुड़िया ने फुरकी मारकर वीणा के चेहरे पर दूध फूंक दिया। ऐसे मौके पर वीणा परेशानी में पड़ जाती है। अब खुद का चेहरा साफ किया जाये या गुड़िया को पोंछकर दुबारा दूध पिलाया जाये। जरा सी असावधानी पर गुड़िया पैर मारकर दूध की कटोरी उलट देती है। दूध पिलाते समय मुझे भी या तो झुनझुना बजाते रहने पड़ता है, या तरह तरह की आवाजें निकालना पड़ती है या नाचते रहना पड़ता है। दुग्धानुपान समाप्त होते ही गुड़िया छूट कर भागती है। कुछ दूर जाकर मुड़ती है और हंसकर किलकारी मारने लगती है। वह डगमग चलती है। ऐसा लगता है जैसे कोई

"पेन्गुइन" चल रहा है। चलते चलते वह "धम्म" से गिर जाती है। फिर उठ जाती है। वह दिन भर ढम्मक-ढुम्मक रसोई घर से शयनकक्ष तक डगमगाती रहती है। उसे गोद में बैठना पसन्द नहीं। यदि कोई कोई तिनका मिल जाता है, तो बैठकर उसे उठा लेती है, फिर उसे हाथ में घुमा कर उसकी तरह घुमती रहती है, जैसे हिन्दी फिल्मो का सलीम गुलाब की टहनी उंगलियों घुमाता रहता है। बीच में यदि कोई मिल जाता है, तो उसकी तरफ वह तिनका बढ़ाकर "वो" कहती है। जिसका मतलब होता है "लो" यदि हम लोग वह दौलत नहीं लेते तो वह उसे फेंक कर आगे बढ़ जाती है।

लगभग नौ बजे सुबह मुझे नाशता दिया गया। मैनें गुड़िया को डायनिंग टेबिल पर बिठा लिया कि हम साथ-साथ नाश्ता करेंगे। उसने हमेशा की तरह नाश्ता तो नहीं किया पर प्लेट में से एक एक दाना उठाकर नीचे फेंकने लगी। फिर नीचे से बिखरे दाने बीन कर दुबारा प्लेट में रखने लगी। जब मैनें उसके इस अनुचित कदम का प्रतिरोध किया जो वह विसूरने लगी। इस कारण मैं खड़े होकर प्लेट हाथ में लेकर नाश्ता करने लगा। उसनें कहीं से एक चम्मच उठाई और डायनिंग टेबल ठोकने लगी।

मेरे नाश्ता करने के बाद उसे टेबिल पर से उठाकर नीचे रख दिया गया जो वह एक दम बैठ गई। उसे कहीं एक चींटी दिख गई। उसकी आॅखे चमकने लगी। वह चींटी की तरफ तर्जनी बढ़ाकर टी टी है, टी टी है कहने लगी। वीणा ने कहा हाॅ वह चींटी है। पर उसे पकड़ना नहीं। मगर तब तक गुड़िया ने चींटी को पकड़ कर मसल दिया।

वैसे तो वह कोई पड़ी हुई वस्तु को उठाकर खाती नहीं है। पर यदि हम नजर चूक जाते है तो छोटा सा कंकड़ उठाकर मंुह में डाल लेती है।

यदि कोई चिड़िया बोलती है, तो वह खुश होकर उस ओर हाथ उठाकर कंू कंू की आवाज निकालती है, जिसका मतलब होता है, कि चिड़िया चंू चंू कर रही है। वह कुत्ते को भो कहती है, एक बार हाथी दिखने पर उसने दोनो बाहें सिर के ऊपर ले जाकर खींच कर "भो" कहा जिससे उसका मतलब था, कि हाथी बड़ा "भो" होता है। हमारे नौकर का नाम सुन्दर है। सुन्दर के घर पर आने पर वह बहुत खुश होती है, उसे "गुन्दा" "गुन्दा" कह कर उसके पीछे घूमती रहती है। कभी बुदबुदा कर मुन्दा कहती है, तो कभी जोर से।

निधि जब बड़ी होकर स्थिर दृष्टि से क्षितिज की ओर देख कर जोर लगाती है, तो हम समझ जाते है, कि वह "छी" करने वाली है। कुछ देर बाद वह आगे बढ़ जायेगी फिर पूक घूमकर "छी" को हैरानी से देखती है। फिर हम दोनो की ओर देखकर तर्जनी से इशारा करके "छी" कहेगी। वह एक बार में पूरी "छी" नहीं करती वरन घूमती घूमती तीन

चार बार छी करती है। हमने सुना है कि, कुछ बच्चे "छी" को उदरस्थ कर लेते है, अतः हम यथा संभव निधि एवं "छी" में दूरी बनाये रखते है।

सुबह नौ बजे मालिश का कार्यक्रम शुरू होता है, वह बड़े आनन्द से मालिश करवाती है। फिर उसके नहाने का कार्यक्रम चालू होता है, वह एक बार नहाने बैठ गई तो उठाना मुश्किल हो जाता है, उसे नन्हे हाथों से पानी छपछपाना बहुत पसन्द है। उसको जबरदस्ती टब से निकाल कर तौलिये से लपेट कर पोछा जाता है, फिर पाउडर भुरक कर कपड़े पहनाये जाते है, कंघा करवाने से उसे तकनीफ होती है पर यदि एक बार उसके हाथ में कंघा आ जाये तो नन्हे हाथो से उल्टा कंघा सिर पर दिन भर फेरती रहती है।

वीणा उसे काजल लगाकर फ्राक पहना कर जब तैयार कर चुकी होती है, तो हमारी गुड़िया दुनिया की सर्वोत्तम कृति लगती है।

ग्यारह बजे रविवार को "प्रोजेक्ट टाइगर" नाम का कार्यक्रम दूरदर्शन पर आ रहा था, उस कार्यक्रम में हिरण को देखकर उसने "रहा महा" कहा। पहले वह गाय को देखकर "म्हा म्हा" कहती थी, अब हर सींग वाले जानवर को देखकर म्हां कहती है । "म्हा" कहकर वह बहुत खुश हुई उसके बाद गुड्डू को देखकर दूरदर्शन की ओर इशारा करके म्हां "म्हां" कहा। उसने पैरो पर सिर रखकर अहा अहाहा" कहा फिर सिर उठा लिया। फिर पैरो पर सिर रखकर "अहा अहा" कहा इस क्रिया को उसने तीन चार बार दुहराया। फिर "चिमप" "चिमप" कहती रही। चिमप चिमप कहती हुई वह सो गई तो मैनें उसे पलंग पर सुला दिया।

बारह बजने से दस मिनट पर उसके रोने की आवाज मेरे कानों में पड़ी। जाकर देखा तो वह आंख बंद करके रो रही थी। मैनें उसे बेटा बेटा कहकर पुकारा तब भी न तो उसने रोना बंद किया और न ही आंखे खोली। जब मैनें उसे उठाया तो पाया कि उसकी अण्डरवीयर गीली थी। मैनें उसे एक हाथ पर लटकाया और दूसरे से उसकी अण्डरवीयर उतारी। उसका निचला हिस्सा सावधानी से पोंछा जो विगत दिनों दस्त लगने के कारण लाल हो गया था, और सावधानी से लिटा दिया उसने दांयी करवट ली। दोनो बांहे सीधी रखी और एक पैर मेरे ऊपर रखकर सो गई। मैं उसे थपथपाने लगा। जब भी मैं थपथपाना बंद करता वह धीरे से आंखे खोल लेती। मैं फिर थपथपाने लगता। कुछ देर बाद वह सो गई।

बारह बजे वीणा दाल का पानी लेकर आ गई और पुकारा "गुड़िया"। वह थोड़ा कुनमुनाई। फिर हम दोनो ने तय किया कि उसे सोने दिया जाये । पत्नि ने उसका निचला हिस्सा देखा और कहा कितना लाल हो रहा है देखा आपने। मैनें कहा यह "नेपकिन रैश" कहलाता है, उस में केलेड्रिन लोशन लगा दो। पत्नि लोशन लेकर आई

और सावधानी से लगा दिया। गुड़िया के कान में तेल डालना या कहीं दवा लगाना हमें नींद में ही करते है। गुड़िया की नींद लगने पर हमनें उसकी गृहस्थी सम्भाली। उसके खिलौने बेहरतीप पड़े हुये थे। झुनझुना बजाने वाला गुड्डा चित पड़ा हुआ था। एक गुड्डे का सिर कहीं और धड़ कहीं और पड़ा था। फायरब्रिगेड वाली मोटर आड़ी पड़ी हुई थी और हाथ का पंखा तुड़ा पड़ा था।

गुड़िया अब दो घण्टे की नींद लेगी। इतने समय में पत्नि को खाना बना लेना चाहिये और हम दोनो को खाना खाकर निपट लेना चाहिये।

लाइन के नीचे वाली भाषा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अंग्रेजी स्कर्ट पहने हुए सोफे पर पसरी थी और हिन्दी हाथ जोड़कर उसके सामने दीनता से खड़ी थी। हिन्दी ने दीनता से पूछा “बहिन मैं क्या अब तुम्हारे बाजू में बैठ सकती हूॅ ?” अंग्रेजी ने झिड़का “व्हाट बहिन ? तुम जैसी साठ साल से मेरे सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो वैसे ही खड़ी रहो। बल्कि जरा झुक जाओ। साड़ी पहननेवाली थोड़ी झुकी रहे तो और संुदर लगती है।

हिन्दी में मिमिया कर प्रतिवाद किया, “मैडम संविधान ने हमें बाजार का दर्जा दिया है।” अंग्रेजी हँसी और बोली, “हाॅ मुझे बराबर बैठे रहने का और बराबर खड़े रहने का दर्जा दिया है। तुम लाइन के नीचे रहनेवाली भाषा। तुम मेरी बराबरी कैसे कर सकती हो ? मैं लाइन के ऊपर लिखी जाती हूॅ। इससे तो उर्दू अच्छी है। उसकी कोई लाइन ही नहीं और वह उल्टी चलती है, परम्परा से हटकर।

उर्दू का जिक्र सुनकर हिन्दी का सीना गर्व से फूल गया। वह गर्व से बोली "हाॅ वह मेरी बहिन है। अब मैं आपके बाजू में बैठू ?" अंग्रेजी ने डांटकर कहा, "नहीं, तुम मेरे सामने हाथ जोड़कर खड़ी हुई ही अच्छी लगती हो। लाइन के नीचे रहने का मतलब होता है गरीब, जैसे गरीबी रेखा के नीचे रहनेवाला गरीब। तुम उन्हीं लोगो के साथ गांव में और झोपड़पट्टियों में रहो। बड़े बंगले और मंहगे होटलो में मेरे साथ नहीं। तुम राजभवनों और सुप्रीम कोर्ट में लोगो को शर्मिन्दा कर देती हो। गुलामो के बीच में ही रहो। भारत में रहो, इंडिया में घुसने की कोशिश मत करो, नहीं हो इंडियंस तुम पर हसेंगे। जहाॅ तक तुम्हारा और तुम्हारी उस बहिन उर्दू का या तमिल का सवाल है, मेरी कोशिश रहेगी कि तुम लोगो में झगड़ा बना रहे। मैनें इसी तरह तुम पर सदियों राज किया है और संविधान में घुसकर तुम्हारे सिर पर बैठ गई। अब तुम संविधान को ढोती रहो और मैं उस में घुसी हुई तुम पर राज करती रहंूगी।

हिन्दी शर्म से लाल हो गई पर बोली, "मत भूलो मेम साब कि हमने ही विश्व को शून्य दिया है।" अंग्रेजी फिर हंस दी, "काश डंडे भी दिये होते। बगैर डंडो के गोलाइयां असुरक्षित रहती है। डंडे ही शून्य का मूल्य बढ़ाते है गोलाइयोंवाली महिला। तुम्हारे पास डंडे होते तो तुम उसे उखाड़ फेंकती। इसलिए तुम्हारी किस्मत में खड़े रहना है गरीब महिला।"

हिन्दी तिलमिला गई उसने थूक कर कहा, "हमारी फिल्में विश्व में सर्वाधिक प्रसारित है एवं सर्वाधिक निर्मित है। अंग्रेजी ने पूछा, "क्या है ?" हिन्दी बोली, सबसे ज्यादा बनती है एवं सबसे ज्यादा देखी जाती है।"

अंग्रेजी बोली, "तुम्हारी फिल्मों पर तो हमें भी गर्व है। हम जहाॅ स्कर्ट पर ही रह गये वहाॅ तुम्हारी हीरोइन्स पेन्टीज पर आ गई। तुम्हारे हीरो ऊपर के कपड़े उतार देते है और हीरोइन नीचे के। अब तुम्हारी फिल्मों में विदेशी हीरोन्स का ही राज है। तुम्हारी वो साड़ी और सलवार कुर्तेवाली हीरोइन्स ने तो विधुरो से शादी कर ली।"

हिन्दी बोली, "ठीक है हमारे सपूत अन्ना हजारे, बाबा रामदेव, स्वामी अग्निवेश और लड़की किरण बेदी है वे तुम्हें देख लेंगे।" अंग्रेजी सोफे पर पसर कर बोली "तुझे नींद आ रही है। तुम्हारे देश में भ्रष्टाचार की इतनी आंधियां बह रही है कि मुझे शक है कि ये तिनके उनको सह भी पायेंगे या नहीं। ये आपस में लड़ने लगेंगे। अच्छा अब मुझे सोने दो।"

मटक्कली

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सज धज कर होली में आई
मेरे मन की मटक्कली
मैनें सोचा कि अब शायद
फटका देगी फटक्कली
चलो मायके इस होली पर
बोली मेरी मटक्कली
मैनें उसको जब झिड़का तो
गले लटक गई लटक्कली
मैं बोला कि खर्चे से बच
सुन तू मेरी मटक्कली
होटल में चलते है खानें
मेरी लटकन लटक्कली
गुस्सा होकर रूठ गई वह
पैर पटकती पटक्कली
जाने कब वह बाहर निकली
और सटक गई सटक्कली
मेरे मन में चिन्ता जागी
कहाॅ अटक गई अटक्कली
थाने पहुंचा रपट लिखाई
भटक गई है भटक्कली
दस हजार दो दिन में फुक गये
भटका दे गई भटक्कली
पर दो दिन में वापिस आ गई
फटकारा री फटक्कली
वह बोली रोकर तुमको मैं
रही खटकती खटक्कली
मैं तो रही मायके दो दिन
चाहे कह दो सटक्कली
मैं ने सुन कर माफी मांगी
भूल गटक मेरी गटक्कली

दवा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नजर साकी की मीठा जहर है,
तो दवा मय खाना ।
नजर में होश खो बैठू
जगाने जाम ले आना ।।
हुआ बीमार जो मैं कश
जुड़ गये झूम कर मैं कश
हुआ बीमार जो बाइज
हुआ घर उससे बेगाना ।।
हमारे इश्क का सौदा
खरा सच्चा तभी होता
हुआ तय था कि तुम
फूलो की जगह जाम ले आना
नजर का नशा ढ़ल जाता है
उसकी उम्र ढलने पर
मजा लेना हो जो मय का
तो ढ़लती उम्र में लाना
कर दिया बन्द मय खाना
गिरा कर पल भटके से
खड़े के खड़े रह गये हम
लिये आंखो का पैमाना

पाषाणों ने निगला वसन्त

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पाषाणों ने निगला बसन्त
निगला जंगल के वृक्षो को,
निगला सिंहो और ऋृक्षों को,
निगला भौंरो और फूलो को,
निगला नदिया के कूलो को,
पत्थर ने निगले दिग्दिगंत ।
पाषाणों ने निगला वसन्त ।।
गांवों को पत्थर निगल गये
पक्षी न जाने किधर गये
पत्थर अब नहीं रहे काबू
होते जाते हैं वे काबू
लालच होता जाता अनन्त
पाषाणों ने निगला वसन्त
वे अनावृष्टि का कारण है
अति हिम वृष्टि का कारण है
ओजोन परत में छेद हुये
धरती में अगनित छेद हुये
ये दोहन अब रोको तुरन्त
पाषाणों ने निगला वसन्त
धरती जल वायु प्रदूषित है
और अन्तरिक्ष भी दूषित है
हम प्रकृति पर हो वे रहम गये
उसने छेड़ा तो सहम गये
ना समझी का अब करो अन्त
पाषाणों ने निगला वसन्त
तब कृष्ण रूप कुसमाकार था
यह कहा स्वयं माधव ने था
वह सरस्वती वन लुप्त हुआ

पत्थर में कहीं विलुप्त हुआ मुश्किल
मिल पाना मुश्किल हुआ कन्त
पाषाणों ने निगला वसन्त
क्यों हम सबके मन अश्म हुये
क्यों सब सवेदन भस्म हुये
प्रकृति रोंदी बेरहमी से
मन के पत्थर की गर्मी से
ये कदम हुये है आत्म हन्त ।
पाषाणों ने निगला वसन्त ।
नृप हीन प्रकृति उच्छृंखल है
ऋतु राज रहित वह चंचल है
हम मित्र प्रकृति के हो जायें
आसन्त नाश से बच जायें
न वने प्रकृति के हम महन्त
हम सब ने निगला है वसन्त

बसन्त

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो विषम बाण से सज्जित है
मकरध्वज रथ को साथ लिये
मन पर शासन करने आया
ऋतुराज मदन को साथ लिये ।
स्वागत में पुष्पित पूर्ण धरा
कल कल झरना विरूदावलि है
मदमस्त पवन है अस्त्र शस्त्र
सेना उसकी भ्रमरावलि है
उच्छंखल बहली चलती थी
सकुचाकर लज्जावनत हुई
किसका स्पर्श हुआ उसको
मर्यादित चंचल नदी हुई
वृक्षों ने वस्त्र नये पहिने
सर मुकुट बना कर देख रहे

कब लता उठे वे झुके जरा
कब से उसका रूख देख रहे
तन बोराये मन बोराये
बौराये आम, बगीचे में
पदत्राण रहित वे नाच रहे
जो चलते सदा गलीचो में
पक्षी पेड़ो पर नाच रहे
नर्तन रत पुष्प हुये सारे
ऋतु राज नचाता तितली दल
नर्तन रत जग को करता रे
हिम ऋतु में सोये सिकुड़े ये
हिम खण्ड पिघलने लगते है
नदियों में अपने को खोकर
सागर तक चलने लगते है
वन श्री कर जागृत पुष्प खिला
केशरिया भाव जगाता रे
फिर वन निःसंग क्यों सौंप उसे
वह प्रखर ग्रीवम को जाता रे
उदयाचल शिशिर ग्रीष्म पश्चिम
है ग्रीष्म पूर्व और पृष्ठ शिशिर
है ऋतु बसन्त जलता दीपक
और शिशिर पिघलता एकतिमिर

कार्डो में फंसा आदमी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आम आदमी जब सिर उठाने लगा तो सरकार ने एक कार्ड और उसे फंसाने के लिए फेंक दिया। वह पहले से ही कई कार्डो से जकड़ा हुआ था। इस नये कार्ड में नया कुछ नहीं था। नाम, पता पहले से ही राशन कार्ड में रहते है। पुतलियों का रंग वोटर आई डी में देख लो। उंगलियों की छाप ड्राइविंग लायसेन्स में ली ही जाती है। हालांकि उसमें भी रंगीन फोटो होता है जिसमें पुतलियों का रंग देखा जा सकता है। उंगलियों की छापे जैल में भी ली जाती है अब यहाॅ भी ली जा रही है मानो हर भारतीय अपराधी हो। तो भाई जान, मैं वर्णन आधार कार्ड का कर रहा था।

मेरे मित्र है पाण्डे जी । तब उनका वक्त नहीं कटता तो वे मेरा वक्त खाने आ जाते है। वक्त ही वक्त को खाता है। उन्होने एक बुद्धिमता पूर्ण प्रश्न मुझसे किया "भाई साहब आधार कार्ड कहां बन रहे है। इस प्रश्न का उत्तर पांचवीं में पढ़ रहे बालक से पूछा जाना चाहिये था वे मुझे ही पांचवी में पढ़ रहा बच्चा ही समझते है हालांकि मैं पैंसठ वर्ष का युवा हूँ और एम.ए. पास हूँ। अतः मैनें उनके प्रश्न का बुरा नहीं माना। मैनें जवाब दिया "भाई साहब जहां भीड़ लगी हो वहां खड़े हो जाइये।"

यह हमारी राष्ट्रीय विशेषता है। जहाॅ भी हमें भीड़ लगी दिखती है, हम अपना आवश्यक कार्य छोड़ कर उसमें खड़े हो जाते है। और आगे वाले से पूछते है कि भाई साहब यहाॅ क्या हो रहा है उसका जवाब होता है कि जब उसका नम्बर आयेगा उसे मालूम पड़ जायेगा या पीछे हट कर कहता है आप ही आगे लग जाइये और मालूम पड़ने पर मुझे बता दीजिये। यानि कि किसी को नहीं मालूम रहता कि भीड़ क्यों लगी है। हमारे मित्र ने फिर पूछा अगर वहाॅ झगड़ा हो रहा हो तो ?

झगड़ा एक मिठाई है जो सब चखना चाहते है पर जिसके परिणाम से सब बचना चाहते हैं मैनें हंस कर जवाब दिया एकाध थप्पड़ या डंडा ही तो खाओगे। कुछ खाने को मिलेगा थप्पड़ खाओगे तो शरद पवार हो जाओगे और डण्डा खाओगे तो महात्मा गांधी दोनो ही परिस्थितियों में महान आदमी बनता है और अगर कपड़े फट गये तो प्रशान्त भूषण बन जाओगे। मैनें तीसरी सम्भावना भी बतला दी। यदि आधार कार्ड बन रहे हो तो वह बनवा लेना। भीड़ में शामिल होने में हर हाल में फायदा होता है बशर्ते कि व्यक्ति बीच में रहे।

ये कार्ड भीड़ में फेंकना एक बदले का कार्यक्रम है। सरकार को भीड़ बिलबिलाती देख कर हिंसक आनन्द आता है। सरकार सोचती है कि बेटा लो, हर पांच साल में हमें झुकाती है अब भुगत।

कीड़ो की तरह बिलबिला और भीड़ है कि जहां कुछ भी मुफ्त में मिला, ढिकल पड़ती है। कार्डो की घर में भीड़ लग जाती है। जन्म होते ही कार्ड, फिर वोटर आई डी, ड्राइविंग लायसेन्स, प्लाट की रजिस्ट्री, अगर ब्रम्हचर्य सहन नहीं हुआ तो मेरिज सर्टिफिकेट, गाड़ी हो तो गाड़ी की रजिस्ट्री, ए.टी.एम, पेन कार्ड, गाडी का इन्श्योरेन्स नौकरी ढूंढने वालो को पास पोर्ट, शिक्षा की डिग्री (यदि सागर विश्वविद्यालय है तो आपकी किस्मत अच्छी है क्योंकि वह नहीं मिलती) गिनो तो कितनी हो गई ? यदि भ्रष्टाचार से परेशान किसी ने मंत्री को जूता मार दिया तो फिर एक बेकार सा कार्ड जनता के सिर पर सरकार पटक देती है। सरकार की नजर में जनता काम पर लगी रहना चाहिये। जनता सरकार की नौकर जो है।

अब हर आदमी एक कार्ड हो गया है। मकान एक मकान नम्बर और आदमी एक कार्ड नम्बर।

यदि बगैर कार्ड के कोई ए.सी. होटल में जगह चाहता है तो पहले आई.डी. कार्ड पूछा जाता है नहीं है तो बाहर निकलो यानि कि जगह कार्ड को मिलना है आदमी को नहीं। कार्ड को पलंग पर लिटाइये और रजाई उडाइये।

सभाओ में जूते चप्पल इतने चलने लगे है कि अब जूते डिटेक्टर से जूतो की तलाशी ली जानी चाहिये। मेटल की नहीं। जेब में आई.डी. कार्ड देखे जाने चाहिये। मीटिंग में आज कल सरकारी नेताओं का सुरक्षा घेरा इतना बड़ा होता है कि वहां तक हाथ से फेंकने वाला जूता जा ही नहीं सकता। अतः जेबो में गुलेल या गोफन देखे जाने चाहिये क्योंकि गुलेल के ऊपर जूता चढ़ा कर ही सराकरी नेता तक जूता जा सकता है। या आसपास की छतो पर जूता लान्चर की खोज की जानी चाहिए।

मैं भी कहाॅं से कहाॅ आ गया। कार्डो से चला तो भीड़ पर भीड़ से चला जो नेता की भीड़ पर नेता की भीड़ से जूता और जूता से गोफन और जूता लान्चर पर आ गया। मगर भीड़ क्या करें। वह कार्डो के पीछे पड़ी है कार्ड जान बचा कर भाग रहे है। तो भीड़ आपस में लड़ने लगती है। मिश्रा जी रोज दचक जाते है।

भाषा में हम बहुत से ऐसे शब्दों का उपयोग करते है जिनका शाब्दिक अर्थ नहीं मालूम होता है जैसे दचकना तो मिश्रा जी चाहे जब मेंरी कुर्सियों पर दचक जाते है और नई समस्या मेरे कानों में फेंक देते है। कहने लगे सरकार अब कोई बायोमीट्रिक कार्ड लाने वाली है। मैनें स्पष्ट किया कि सरकार ने उन्हीं कार्डो का अनुवाद आधार कार्ड रखा हैं पर मेरे स्पष्ट करने पर वे उठ थोड़ी जायेंगे। दचके रहेंगे जब तक कि कप और ओठो का अन्तर न मिटा दिया जाये। बल्कि पहले मेरे घर का दाल चूड़ा उनके दांतो में पिया जाये फिर मेरे घर की चाय और उनके ओठों का अन्तर न मिट जाये। मैं तरस गया हॅू उनके घर की चाय पीने।

अथ वेलेन्टाइन स्वामी की जय

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वेलेन्टाइन भगवान के आगे भारतीय षोडशी और षोड़षा खड़े थे, क्योंकि ग्रामीण भारत सरकार ने पुत्रो और पुत्रियों के स्कूल अलग-अलग कर दिये थे वहीं इंडियन शहरी भारत सरकार ने स्टुडेन्टनियों और स्टुडेन्टो के स्कूल अलग अलग नहीं किये थे। दोनो साथ साथ पड़ते थे। यहाॅं तक कि लड़के और लड़कियों साथ-साथ बैठ सकते थे और लड़को के चियंूटी काटने पर लड़कियों को ऊई मां कहने की आजादी थी।

तो गांव के विद्यार्थी विद्यार्थिनियों को पीछे किये हाथ में नारियल और अगरबत्ती लिये धोती कुर्ता पहिने बेलेन्टाइन, महाराज के आगे साष्टांग हो गये। आचार्य वेलेन्टाइन इस उपहार पर भड़क गये। उनके पी.ए. ने बतलाया कि सर को पिज्जा, नूडल्स, केक स्प्रे इत्यादि पसन्द है। तुम्हारे इस प्रसाद पर तो वे भड़क जायेंगे। और तुम लोग भी इस आदिवासी पोशाक में मत आओ। इस मन्दिर की ड्रेस कोड, जीन्स और टाप लेस है। जब प्रापर ड्रस कोड में आओगे तभी हिज हाइनेस खुश होंगे। वे गाॅंव के बच्चे बच्चियां वापिस हो गये। एक दो दिन बाद वे प्रापर ड्रेस और नाश्ता कोड़ में वापिस आये और वह पिज्जा और केक वेलेन्टाइन प्रभु के आगे रख दी तब उन्होने आंखे खोल दी। वह पूरा नाश्ता अकेले भकोसा और माउथ पीस से बोले "तुम दुखी दुखनियों का दर्द हमें मालूम बताओ।

एक लड़का कांपता हुआ बोला "मास्साब, गांव में हमारे स्कूल अलग अलग है। यहाॅं तक कि हमारे पूज्य पिताजी हमें स्कूल तक छोड़ने आते है यहां तक कि लड़किनियो को डांटने के लिए गुरूआनी रखी हुई है। कोई गुरूजी होते तो लड़किनियों को उनसे प्रेम करने मिल सकता था। और हम भी व्हाया गुरू जी उन तक पहुंच सकते थे। फिर शाम को पिताजी लोग ही हमें रिसीव करने आ जाते है। हम लोग नजर

मिलाने का सुख भी नहीं उठा सकते। हमें बस धार्मिक पिच्चर ही दिखाये जाते है और जल्दी हमारी शादी कर दी जाती है । यानि प्रेम करने के पहले शादी उन बच्चे बच्चनियों का दुख सुन कर ईश वेलेन्टाइन को रोना आ गया उन्होने आंसुओं से उनका चेहरा धोया और बोले गांव वाले और गांव वालनियों का दुख सुन कर हम द्रवित हुये।

तुम लोगो और लोगनियों ने खुद हमारे चेहरे पर आंखो का दुख गिरते देखा। तुम्हारे ऊपर पुरूष, और पुरूषनियों का अत्याचार सुना । तुम्हारे दुख का अन्त अब हुआ ही चाहता है। तुम ये ताबीज लो। इसे वेलेन्टाइन स्ट्रिप या रिबिन कहते है। इसे तुम एक दूसरे के पिछवाड़े डाल देना । यह एक साथ एक ही दिन करना। यह वेलेन्टाइन रिवन कहलाता है दूसरे दिन यदि तुम एक दूसरे की बांह में बंधा देखो तो समझ लेना कि तुम्हे एक दूसरे की मूर्खता पसन्द है। इस तरह तुम एक दूसरे के मर्द और मर्दनि हो जाओगे। यदि तुम्हारे बाप-बापनियां पूछे तो बता देना कि वेलेन्टाइन बाबा ने यह तावीज सपने में तुम्हे बांधा है।

शिव राज जी को फोन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुझे जब फोन आते है तब मैं अपने आपको एक महत्वपूर्ण व्यक्ति समझने लगता हूॅ जो कि मैं हूॅ ही। ये बात अलग है कि श्रीमती पत्नि की नजरों में महत्वपूर्ण के पहले गैर लग जाता है। मैं चाहता हूॅ कि फोन मेरे दोस्तों के बीच में आये। तो एक बार एसा सुअवसर आया। मैं खान साहब के सामने स्वयं की तारीफ कर रहा था कि फोन की घण्टी बजी। मैनें उसे कुछ देर बजने दिया मगर इसके पहले कि वह बन्द हो उसे उठा लिया। मैनें पूछा हलो ? उधर से प्रश्न आया हलो शिवराज जी नमस्ते । (शिव राज सिंह चैहान मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री है) मैनें कहा जहे किस्मत मगर मैं उस के काबिल नहीं हूॅ।" वहां से पेशान सी आवाज आई मगर मुझे तो यही नम्बर दिया गया था।

मैनें कहा वह बड़े आदमी है वे कुछ भी कर सकते है। मगर चंूकि वे बड़े आदमी है अतः उनका नम्बर बीस डिजिट का होना चाहिये हमारा तो मात्र दस डिजिड का ही है। वह आदमी बोला "आपके राज्य में क्या भर्रा शाही है। मैं इतना महम्वपूर्ण व्यक्ति हॅू और सिटी बस के कन्डक्टर ने मुझे टिकिट खरीदने को कहा"? उसने शिवराज सिंह चैहान पर अहसान जताया" मैनें आपकी मीटिंग में सबसे ऊंचा हाथ उठा कर सबसे ऊंची आवाज में जय बोला था"।

शिवराज जी उसके अहसान से दब गये। बोले तो वोट भी हमी को डालना" उसने कहा मैं मतदाता नहीं हॅू," शिवराज जी भौचक्के हो गये पूछा क्यों भैय्या ? उसने कहा मतदाता कार्ड बनाने के लिये पैसे मांगो जाते है ? शिवराज जी ने पूछा क्यों क्या राशन कार्ड नहीं है ? उधर से आवाज आई "उसके लिये भी पैसे मांगे जाते है"

शिवराज जी आश्चर्य चकित नहीं हुये। इस प्रान्त में आश्चर्य करने के लिये कुछ बचा ही नहीं था। मंत्री आदिवासियों से जूते के फीते बन्धवाता है लोगो पर बुलडोजर चलवाता है। मीटिंग में जान से मारने की धमकी देता है नौकर मालिक को नौकर समझते है क्या बचा है। आश्चर्य करने को। मंत्री मतदाताओं को पिटवा सकता है पर सरकारी नौकरो से जनता के काम नहीं करवा सकता है। उन्होने सहानुभूति से पूछा फिर तुम केरोसिन कैसे खरीदते हो ? वह आदमी बोला "हमने जिन्दा रहने के लिये एक समानान्तर व्यवस्था बना रखी है जिसे कान्टेक्ट कहते है। हमे राशन दुकान वाले से दोस्ती करता पड़ती है तो वह हमे सरकारी रेट से भी सस्ते में सारी चीजे दे देता है।

शिवराज जी ने सोचा इसलिये कुपोषण यहाॅ सबसे ज्यादा हैं उन्होने फिर बासा ज्ञान प्राप्त किया। क्या गरीबी रेखा से नीचे का प्रमाण पत्र नहीं है। "नहीं है वह कार्ड बनाने वाला पैसे मांगता है" "बहुत खूब" श्रीमान जी वह बोला अधिकार प्राप्त करने के लिये रिश्वत देनी पड़ती है कर्तव्य पूरा करने के लिये भी रिश्वत देनी पड़ती है। सरकारी व्यवस्थायें क्या रिश्वत के लिये ही बनी है। यहाॅ के अन्त्तविभागीय रिश्चत भी चलती है। नीचे वाला ऊपर वाले को घूस देता है, ऊपर वाला और ऊपर वाले को और ऊपर वाला मंत्री को, मंत्री पार्टी को, क्या चक्कर है ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री ने अप्रधान मंत्रियों की आपात बैठक बुलाई। सभी अ.प्रधान मंत्री सकपका गये। उन्हे लगा कि मालूम नहीं वह किसको फिर से संसद सदस्य बना देगा हालांकि वे सब (1) पार्टी प्रमुख को नियमित चंदा भिजवाते रहते थे। (2) प्रधानमंत्री के माली को नियमित रिश्वत देते रहते थे जिससे वह उनकी अतिरंजित प्रशंसा प्रधानमंत्री से करता रहे और (3) उनको विश्वास दिलाता रहे कि बाजू वाला मंत्री उनकी पीठ पीछे छुरा भौंकता रहता है। हालांकि वे सब यही कह रहे होते है तो सब सीने में डर और चेहरे पर निडरता लिये प्र.म. बंगला सह कार्यालय पहुंच गये।

प्र.म. ने बतलाया कि जनता का खजाना हम सब मिल कर खाली कर चुके है। उस पुण्य कार्य में भा.प्र. से का भी मुक्त हस्त से योगदान प्राप्त हुआ है। यहां तक कि तिजोरी के पल्ले भी बेच दिये गये है। अब आगे खर्च करने के लिये हमें दबे हुए मतदाताओं की पीठ पर और वजन रखना पड़ेगा। हमें उन चूहो पर पूरा विश्वास है कि और अधिक वजन रखने पर भी वे मर नहीं जायेंगे। बस हमें उन चूहो के ऊपर गणेश जी के बराबर वजन रखने का कोई बहाना चाहिये। वह कैसे करेंगे यह भा.प्र. से के मालिको से पूछो।

सबने अपने अपने मालिको के फोन टनटनाये। जब भी प्र.म. के कार्यालय में मीटिंगे बुलाई जाती है उनके हाथी जैसे कान खड़े हो जाते है। उन्होने जवाब दिया, "सर फिर हमें केवल मंत्रालयों की संख्या बढ़ाना पड़ेगी।" सर ने जवाब दिया अब कहां गुन्जाइश बची है। लगभग 150 मंत्रालय हो चुके है हमें भी उनके नाम नहीं मालूम । उनके काम तो बिल्कुल नहीं। हम सबका केवल तीन काम है (1) पैसे खाना (2) सैर सपाटे करना और (3) विरोधी पार्टियों को कोसना।

सरकार के गैर उत्पादन कर्ताओ ने जवाब दिया "देखिये मालिको, देश तो प्राथमिक उत्पादन कर्ता ही चला रहे है। हम तो उन पर बैठ कर चल रहे है। कर, तो उन्हीं के करो से छीनना पडेंगे। तो खजाना भरने के लिए उन्हीं को चरखे की तरह पीसना पडेंगा। आपको मंत्रीमंडलो का विस्तार तो करना ही पडेगा। मंत्री परिषद बोला "तो करो भई ! उनके बहुमूल्य सुझाव निम्नानुसार है-

(1) पृष्ठ क्रमांक एक से पांच हजार पेज तक प्रस्तावना जिसमें मूर्ख बनाया गया था कि देश के स्वाभिमान के लिये लगभग एक हजार मंत्री विभागो का होना आवश्यक हैं इससे देश का नाम उस गौरवमयी पुस्तक (कचरा पुस्तक) में भी आ जायेगा जिसे गि. वर्ल्ड रिकार्ड कहते है। उसमें मुंह फाड़ने में तो हमारे मा. मंत्रियों और भा.प्र. से का नाम तो आ ही चुका है। इसके लिये जनता मानइस हजारे को श्रेय जाता है, बधाई।

(2) जन्म मंत्रालय: मंत्रियों ने जवाब दिया वह जो पहले से ही है जिसे जन्म एवं मृज्यु पंजीयन विभाग कहते है । (2) अन्न प्राशन मंत्रालय (वह पहले से ही है जिसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय कहते हैं) महिला स-शक्ति मंत्रालय। "ठीक है मंत्री मण्डल ने जवाब दिया (3) लड़का-लड़की स-शक्तिकरण (4) प्रेम मंत्रालय (5) पैदल चलने वालो से मार्ग कर लेने के लिये घर के बाहर निकल मंत्रालय। (ठीक है पर लोग बाग घर में ही घुसे रहे तो) उसके लिये घर घुसा रहे तो ?) उसके लिये घर घुसा मंत्रालय यह मंत्रालय जो घर में घुसे रहते है उन्हें घर में घुसे रहने का लायसेन्स लेना पड़ेगा नहीं तो जुर्माना देना पड़ेगा। अधिक से अधिक लोग सड़को पर आयेंगे। सामाजिकता बढ़ेगी। मगर मंत्री मंडल ने यह प्रस्ताव खारिज कर दिया। कारण: दूसरे लोगो में फूट डालना असम्भव हो जायेगा। (6) मत हंसो मंत्रालय (7) चुप रहो मंत्रालय । दोनो का उल्लंघन करने पर जुर्माना लगाया जायेगा। लायसेन्स हंसने और बोलने का लेना पड़ेगा। परिणाम आय (8) खर्च टेक्स मंत्रालय टीप-अभी आय कर विभाग है अब खर्च करने पर भी क्रेता को कर देना पड़ेगा। अभी तक स्थानीय कर ही लगता है अब केन्द्रीय कर भी क्रेमा को देना पड़ेगा। अनुमान से कम खर्च करने पर कर देना पड़ेगा। (9) रोना मंत्रालय टीप - दुखी होने पर रोने के लिये कर देना पड़ेगा बगैर लायसेन्स के कोई रो भी नहीं पायेगा (10) शयन मंत्रालय - अभी भारत के लोग आलसियो की तरह पड़े रहते है। अब छः घंटे से ज्यादा सोने के लिये लायसेन्स लेना पडेगा इससे शासन की आय बढ़ेगी। (11) कुआंरापन मंत्रालय: यह मंत्रालय कुंआरे लोगो पर कठोर नजर रखेगा। उन्हें कुंवारे पन के लिये लायसेन्य लेना पडेगा। यह मनोरंजन कर के स्तर का होगा। शादी शुदा तो पहली बार शादी के समय और आखिरी बार जन्नत नशी होने पर हंसता है। बीच में खुद के ऊपर भी नहीं हंस पाता। मरने पर जन्नत नशी होना इसलिये कहते है कि जहन्नुम भी शादी शुदा जिन्दगी के बाद जन्नत जैसा लगता है। (12) शादी शुदा कर-इसे माफ कर दिया जाये। हमारी सरकार मूर्ख लोगो से टेक्स नहीं वसूलेगी। (13) अनपढ़ टेक्स - अनपढ़ लोगो पर भारी अर्थदण्ड लगाया जायेगा। वे ही सबसे ज्यादा सुखी है।

इस तरह लगभग एक हजार मंत्रालयों का प्रस्ताव प्रशासनिक सेवा ट्रेनिंग केन्द्र से प्र.म.का. को प्राप्त हुये है जिस पर वही मन्थन करेंगे और उस मन्थन में जनता पीसी जायेगी।

आखिरी हंसी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह आदमी शरीर छोड़ते समय आखिरी बार हंसा था। लोगो का कहना है कि वह आखिरी बार तब हंसा था जब उसकी शादी हुई थी। शादी के पहले उसकी हंसी रूकती ही न थी। वह गधा रेंकने पर हंसता था, कुत्ते के लड़ने पर भी हंसता था, गोया हर सामान्य घटना में से वह हंसी का कारण ढ़ूढ निकाल लेता था। शादी के बाद किसी ने उसे हंसते नहीं देखा।

शादी शुदा जिन्दगी में गधे उसके ऊपर हंसने लगे थे। लड़ते कुत्ते, लड़ना छोड़ कर पहले उस पर हंसते फिर लड़ना, वहीं से चालू करते जहाॅ उन्होने लड़ना छोड़ा था। उसे देख कर बैल गाड़ी, में जुते बैल भी हंसने लगते थे। वह उन्हें हंसते देख कर भी चुप रहता। उसमें लड़ने का माद्दा भी खत्म हो गया था।

वह एक अच्छा कवि बनता अगर उसकी शादी न होती। जब उसकी कविताओं में माधुर्य और गहराई आई तभी उसने एक गलत निर्णय ले लिया। उसने शादी कर ली

उसे हर बार ये पंक्यितां याद आती। एक कदम जो गलत पड़ा राहे शौक में । शादी के बाद उसकी पीठ साहित्य की तरफ कर दी गई थी साहित्य उसके घर में नहीं घुस सकता था। साहित्य का सामना हर दरवाजा खटखटाने वाले की तरह झाड़ू हाथ में लिये उसकी धर्म पत्नी से होता था ।वह उस झाड़ू से साहित्य को बाहर ही झाड़ देती थी। पत्नी का भी दोष नहीें था। दोनो के बीच में एक गुरूत्वाकर्षण केन्द्र बन गया था जिसके चारो तरफ उन्हें जिन्दगी भर घूमना था। उस गुरूत्वाकर्षण का केन्द्र पैसा था इसके कारण दोनो की हंसी गायब हो गई थी। उनका साहित्य पैसा नहीं बना सकता था इसलिये उसे झाड़ू के बाहर निकाल दिया जाता था। जो गृहस्थी में पैसा न बनाये वह कचरा होता है यहां तक कि कचरा भी बिक जाता है। साहित्य नहीं तो लोगो में बहस होने लगी वह नर्क जायेगा या स्वर्ग। उसे हर
हाल में स्वर्ग ही जाना था क्योंकि नरक भी गृहस्थो को मरने के बाद स्वर्ग के समान ही प्रतीत होता है (पुराना चुटकुला) लोगो का कहना है कि मरते समय उसे इस तरह नहीं हंसना चाहिये था क्या वह बचे हुये लोगो की बेबसी पर हंस रहा था। यह एक अच्छी बात नहीं थी। हमारे भी दिन जायेंगे हम भी मरेंगे। पर इसकी तरह ऐसी बेहूदा हरकत नहीं करेंगे शराफत, संस्कार भी कोई चीज होती है क्या उसके मां बाप ने इतना भी नहीं सिखाया था कि मरने का भी एक ढंग होता है। मरते समय दूसरो की बेबसी पर इस तरह की बेहुदगी नहीं करनी चाहिये।

दूसरा रेला वृद्ध आदमियों का जो आया तो उस मुर्दे को ध्यान से देखने लगा। उनमें से एक लाश के चारो तरफ घूमा फिर लाश की पत्नि से पूछने लगा "विधवा बिटिया, इनके प्राण कहां से निकले।" वह महिला तमक गई। बोली मुझे क्या मालूम उन्हीं से पूछो। मुझसे कह कर थोड़ी जाते थे कि कहां जा रहे है। मुझे नही मालूम कि ये कौन सी खिड़की खोल कर भाग गये। तब आप ऊपर जायें तो उन्हीं से पूछ लेना कि कौन सी खिड़की खोल कर भाग गये। पूछने वाला वृद्ध सकपका गया। दूसरे ने पहले को मल्हम लगाते हुए कहा । जरूर अपान वायु से निकले होंगे। तभी इतने खुश दिख रहे है। पेट हल्का जो हो गया। मैनें तो अभी से प्राणायम का अभ्यास चालू कर दिया है जिससे कि मेरे प्राण ऊपर से निकले।

मुर्दे के लड़के ने उन कब्र के लिये पंक्ति वृद्धो को बाहर धकेल कर कहा "दादाजी बाहर निकलो हमें कुछ गुप्त बातें करनी है।" वृद्ध लोग समझ गये कि उनका अपमान किया जा रहा है। वे लोग यह कहते हुये बाहर निकल गये कि अच्छा तुम लोग गुप्त बातें करो। वैसे भी आज हमारे घुटने में ज्यादा दर्द है। हम मरघट तक नहीं जा पायेंगे। हमें माफ करना।

लड़के ने उन बाल की खाल निकालने वालो को माफ कर दिया। कुछ मौलवी वहां खड़े थे। उन्होने उस हंसते हुये उस मुर्दे को देख कर आश्चर्य किया। उन्होने बाजू वाले पण्डित से कहा "हमने कहा था कि हमारी जन्नत में हुर्रे होती है। इस मिट्टी ने मरते समय हुर्रे देख ली होगी इसलिये हंस रहा है। हमें ताज्जुबग इस बात का है कि इसने मरने के पहले हुर्रे किस तरह से देख ली। पण्डित ने जवाब दिया "सब साइन्स" का कमाल है भई। साइन्स की बात सुन कर लोग वहां उपस्थित एक मात्र डाक्टर के पास पहुंच गये। पूछने लगे डाक्टर साहब ये मुर्दा मरते समय भी हंस रहा है इसमें तुम्हारी साइन्स क्या कहती है।"

एकमात्र डाक्टर कुछ देर चुप रहा फिर बोला आदमी मरते समय जिस मुद्रा में रहता है वही मुद्रा आखिरी दम पर बनी रहती है यह लेकिन तीव्र आवेगो में रहता है इसे "इन्स्टेनटेनुअस राइगर" कहते है अभी देखना इसकी जुबान भी बाहर आ जायेगी तब यह आपको चिड़ाने लगेगा। इसको दफनाने या मरघट ले जाकर जलाने की जल्दी करो नहीं तो यह अकड़ जायेगा। हो सकता है कि इसका एकाध मुक्का तुम लोगो को लग जाये। तो तुम लोग कहोगे कि भूत को ही भूत लग गये। मरने पर उसकी हंसी, मोनालिसा की हंसी हो गई जिसका विश्लेषण कठिन था। एक कोण से वह एक कारण से दिखती थी और दूसरे कोण से दूसरे कारण से। गोया हर कोण से उसकी मुस्कुराहट शुद्ध मुस्कुराहट थी बगैर मिलावट के। ऐसा नहीं लगता था कि वह दिखाने के लिये मुस्कुरा रहा था। क्योंकि जब वह मरा तो कमरे में वह अकेला ही था वह तो इसलिए मुस्कुरा रहा था कि जन्नत या जहन्नुम में उसकी शादी नही होगी और उसे पेट के चारो तरफ चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा

शव परीक्षण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिकित्सकों द्वारा शव परीक्षण, सामान्य लोगो में उत्सुकता, भय और खीज उत्पन्न करता रहा है। रिश्तेदार उनके प्रिय व्यक्ति की, जो लाश में परिवर्तित हो चुका है मिट्टी खराब नहीं करवाना चाहते है। उनका कहना होता है कि जब मृत्यु का कारण ज्ञात है तब शव परीक्षण क्यों किया जावे। चिकित्सक स्वयं के विवेक पर शव परीक्षण करने के लिये अधिकृत नहीं है। उन्हें शव परीक्षण का प्रतिवेदन पुलिस विभाग से प्राप्त होता है। वे तो मात्र कानून का पालन करते है गृह विभाग इस कार्य के लिये मानदेय भी देता है। बहुत कम प्रकरणों में अपराधी भी शव परीक्षण का प्रतिरोध करते है जिससे अपराध का सही कारण ज्ञात न हो। वे घटनाओं को विकृत भी कर देते है जैसे किसी का गला घोंट कर मारने के बाद लाश को पानी में डूबा देना या जला देना। ऐसे प्रकरणों में चिकित्सक को यह ज्ञात करना होता है कि मृत्यु का कारण क्या था। शव परीक्षण से चिकित्सक को निम्न मुख्य तथ्य ज्ञात करना होते है।

(1) मृत्यु का सही कारण
(2) किस मूल अपराध को छिपाते मृत्यु कारित की गई है और
(3) मृत्यु, शव परीक्षण के कितनी देर पहले हुई है।

मृत्यु का सही कारण

मृत्यु के चार मूल कारण होते है

(1) दम घुटना (2) सदमा और (सिनकोप) (3) निश्चेतना या (कोमा) (4) उनका संयुक्त प्रभाव

दम घुटना

श्वसावरोध के कारण आक्सीजन फेफड़ो तक नहीं पहुंचती है। हम कह सकते है कि श्वसावरोध (1) आक्सीजन का श्वसन मार्ग में अवरोध से हो सकता है (2) फेफड़े की मूल इकाई के काम न करने के कारण हो सकता है या (3) श्वसन मांस पेशियों के काम न करने के कारण हो सकता है। जब कोई विजातीय तत्व यथा ठोस, द्रव या गैस, श्वसन नलियों में अवरोध उत्पन्न करता है तो श्वासवरोध हो जाता है। इसके मुख्य कारण पानी का श्वसन नलियों में अत्यधिक मात्रा में प्रवेश करना, किसी ठोस वस्तु जैसे खाने का ग्रास या सांप सीड़ी की गोट या सीटी का श्वास नही में चला जाना (बच्चो में) उत्तेजक गैसो का श्वसन तंत्र में प्रवेश (उदाहरण भोपाल गैस त्रासदी या गैस चेम्बर) या श्वसन तंत्र के स्त्राव जेसे बलगम, म्यूकस या द्रव इत्यादि द्वारा श्वसवरोध पैदा करना है। गला घोटने से भी श्वसवरोध होता है। आक्सीजन की रक्त में कमी, या तो फेफड़ो की कार्यक्षमता में कमी या ह्नदय के काम न करने से हो सकती है।

तीसरा मुख्य कारण मांस पेशियों का कार्य न करना हैं। आपराधिक प्रकरणों में दाइयो द्वारा नवजात शिशुओ के ऊपर वजन रख देना या किसी व्यक्ति के ऊपर बैठ जाना या सीने और पीठ पर बास रख कर उन्हें बांध देना (वंश डोल) इत्यादि है। फांसी लगाना या रस्सी से गला घोटना श्वास नली पर बाहर से अवरोध डालता है। फांसी से रस्सी का निशान गरदन से तिरछा कानो के पीछे जाता है, जबकि रस्सी से गला घोंटने पर वह गरदन के सीधे पीछे जाता है गरदन कस कर बा ँधने से रस्सी का निशान गहरा होता है। फांसी लगाने के अधिकतर प्रकरणों में गरदन की हड्डी जो खोपड़ी के अन्दर जाती है (ओडोन्टाइन प्रोसेस) टूट जाती है तब मृत्यु निश्चेतना से होती है।

सदमा (सिनकोप)

जब मस्तिष्क में पहुंचने वाली आक्सीजन की मात्रा अपर्याप्त होती है तब सदमें से मृत्यु होती है इसके तीन मुख्य कारण होते है

(1) ह्नदय का काम न करना (2) रक्त में आक्सीजन की अपर्याप्त मात्रा या
(3) रक्त वाहिकाओ का असमानुपातिक चैड़ा होना

ह्नदयघात प्रथम श्रेणी में मुख्य कारण है कई बार रक्त की अधिक मांग या रक्त वाहिकाओ का प्रतिरोध ह्नदय को थका देता है। ह्नदय धमनियों में रक्तावरोध हो

सकता है। सदमें का एक कारण रक्त वाहिकाओ का असमानुपातिक रूप से चैड़ा होना है जिससे सारा रक्त उनमें समा जाता है और दिमाग तक खून नहीं पहुंचता। रक्त में अपर्याप्त आक्सीजन का कारण ख्ूान बहना, एनीमिया कार्बन मोनोक्साइड या अन्य गैसो की पायजनिंग, सर्प दंश (थक्के जम जाना, खून पतला होकर अत्याधिक रक्तस्त्राव, रक्तवाहिकाओ का अत्यधिक चैड़ा होना), फेफड़ो का पर्याप्त काम न करना आदि है। दुर्घटनाओ में रक्त प्रवाह सदमें का मुख्य कारण है। दूसरा मुख्य कारण जहर खुरानी है और तीसरा मुख्य कारण गैस पायजनिंग है।

निश्चेतना (कोमा)

जब दिमाग प्राथमिक रूप से काम करना बंद कर देता है तब निश्चेतना हो जाती है इसके कई कारण हो सकते है। सिर की चोट आपराधिक प्रकरणों में मुख्य कारण है। फांसी लगाने के बारे में पहले ही बतलाया जा चुका है । यह एक वायोलेन्ट डेथ होती है। इसमें पूरा शरीर एक दम अकड़ जाता है सिर, गठान लगने के दूसरी ओर लटक जाता है। लार बहने लगती है। विष्टा एवं वीर्य निकल जाता है हाथ कुहनी पर मुड़ सकते है पन्जे और सीधे हो जाते है।

विभिन्न क्रियाओ के चिन्हन

एकदम यदि दम घुटती है तो शरीर एवं नाखून सफेद पड़ सकते है पर अमूमन नाखून जवान एवं त्वचा नीली पड़ जाती है। गरदन की शिराये फूल सकती है। ह्नदय का दाहिना हिस्सा भरा रह सकता है। डूबने पर नाक और मंुह से झाग आ सकते है। पायजनिंग में भी मंुह से झाग आ सकते है। सेल्फास खाना आत्महत्या का गांवो में एक सामान्य कारण है। उसमें भी शरीर नीला पड़ जाता है मंुह से झाग आते है एवं एक तेज तीखी गन्ध मंुह से निकलती है। यदि आर्गेतोफास्फोरस आमाशय में पहंुच गया है तो मृत्यु रोकना कठिन हो जाता है। सदमे में शरीर एवं नाखून सफेद पड़ जाते है। ह्नदय के दोनो भाग रिक्त रहते है। निश्चेतना में भी शरीर एवं नाखून सफेद रह सकते हैं। पर निश्चेतना के चिन्हन, प्राथमिक कारणों पर अधिक निर्भर रहते है।

शव परीक्षण और मृत्यु के बीच का समय

यह समय ज्ञात करने पर मृत्यु के समय का लगभग अनुमान लग सकता है। इससे अपराध किस समय घटा होगा इसका अनुमान लग सकता है। मृत्यु के पश्चात शरीर एक दम ढीला पड़ जाता है। फिर तीन घंटे के पश्चात शरीर अकड़ना प्रारम्भ हो

जाता है। यह अकड़न अठारह घंटे से 3 दिन तक रह सकती है। यह घटना "राइगर मार्टिस" कहलाती है इसमें जवान दांतो के बीच में आकर कट जाती है बांहे सिकुड़ सकती है पन्जे सीधे हो जाते हैं।

फिर शरीर ढीला पड़ना चालू हो जाता है और तीन दिन में पूरा ढीला हो जाता है पर इस समय तक पेट फूलना चालू हो जाता है। विष्टा और वीर्य बाहर निकल जाते हैं। मक्खियों के अंडे शरीर पर दे दिये जाते है उनमें इल्लियां बनना चालू हो जाता है और छोटी मक्खियां उड़ने लगती है लाश से बदबू आने लगती है। बर्फ में या ठण्डे मुल्को में यह क्रिया अनुपस्थित रह सकती है एक दम गर्म प्रदेशो में लाशे ममी बन सकती है। पानी में भी लाश कम सड़ती हैं पर बाहर निकलने के बाद उनका सड़ना तेजी से आरम्भ हो जाता है पानी में मछलियां लाश को खा सकती है। सात दिन के पश्चात शरीर के अंग गलने लगते है। दिमाग द्रव होने लगता है यह क्रिया आंतो में पहले चालू हो जाती है अधिक दिन बीतने पर ह्नदय, यकृत, फेफडे, गुर्दे एवं आमाशय-आंत गल जाते है एवं एक चाकलेटी रंग के द्रव में बदलने लगते है।

दुर्घटना, हत्या एवं आत्म हत्या ?

यह एक यक्ष प्रश्न रहता है। यदि व्यक्ति को मार कर पानी में फेंका है तो पानी, श्वसन तंत्र या आमाश्य में नहीं जायेगा क्योंकि श्वांस लेना या निगलना मृत्युपूर्व क्रियायें हैं। इसी तरह पानी में डूबने पर पानी मध्य कर्ण ओर डायकोटोम हड्डियों में भी पाये जाते है नाक एवं मुंह से बारीके झाग निकल सकते है। यदि किसी को जहर देकर (या खा कर) मृत्यु कारित कीे गई है तो उसके प्राथमिक चिन्ह्न दिखेंगे। गला घोंट कर मारने के बाद शव को लटकाया जा सकता है जिससे मृत्यु का कारण आत्म हत्या मालूम पड़े। तब जो रस्सी के निशान (दम घोटने पर मृत्यु पूर्व के) और फांसी के मृत्यु पश्चात के होंगे। इसी तरह सिर में चोट पहुंचा कर मृत्यु कारित करने के बाद शव को पानी में डुबोया जा सकता है तब भी डूबने के उपरोक्त चिन्ह्नो के साथ हाथ पैरो की त्वचा की सिकुड़न अनुपस्थित रहेगी। सम्भावित जहर के पश्चात मृत्यु को निश्चित रूप से ज्ञात करने के लिए अन्दर के अंग एफ.एस.एल. भेजे जाते है। हमारे देश में (सरलता से उपलब्घ कारणें का पहले उपयोग किया जाता है।

अपराधिक मृत्यु के कुछ प्रचलित तरीको के चिन्ह्न:

जलना:- (महिलायें अक्सर) जल कर मरती है। बच्चों में दस प्रतिशत और वयस्को में तीस प्रतिशत से अधिक जलना खतरनाक हो सकता है। जलने पर धुंआ मंुह में जा

कर श्वसावरोध करता है। शरीर का द्रव कम होने पर सिनकोप हो जाता है बाद में संक्रमण और शरीर के अंग आपस में चिपकने पर जटिलतायें हो जाती है। जलने पर तत्काल मृत्यु श्वासवरोध व शारीरिक द्रवो के अत्यधिक कम होने पर और विलम्बित काल में मृत्यु संक्रमण से होती है।

केरोसिन या पेट्रोल से जलने पर उसकी दुर्गन्ध उपस्थित रहती है। शरीर की धोवन भी प्रयोग शाला भिजवाई जा सकती हैं मृत्यु पूर्व जलने पर शरीर लाल पड़ सकता हैं शरीर पर फफोले आ सकते है। त्वचा के नीचे इन्फ्लेमेशन के चिन्ह रहते है जबकि मृत्यु के पश्चात जलने पर चारिंग (जैसे लकड़ी जलती है) उसके चिन्हन रहते है।

(2) डूबना:- चिन्हन पहले बतलाये जा चुके।

(3) जहर खाना - चिन्हन पहले बतलाये जा चुके है।

(4) सर्प दंश - इन दुर्घटनाओं में सर्प दंश के चिन्हन रहते है जहर दो तरह से काम करता है।

(अ) रक्त संबंधी क्रिस्टतायें - इनमें या तो जगह जगह खून के थक्के जम जाते है या खून पतला हो जाता है जिससे रक्त प्रवाह होने लगता है।

(ब) न्यूरोपेरेलिटिक - इसमें शरीर की मांस पेशियों का पेरेलिसिस हो जाता है जिससे पहले हाथ पैर काम करना बन्द कर देते है फिर दम घुट जाता है।

(5) फायर आर्म इन्जरी - बन्दूक या विस्टल की गोली चलने पर निम्न तथ्य निश्चित करना पड़ते है।

(अ) गोली का प्रकार - गोली भरमा बन्दूक से दागी गई है या पिस्टल से चलाई गई है या रायफल से। गोली के प्रकार से पिस्टल या बन्दूक का प्रकार जाना जाता है।

(ब) दिशा - जहां से गोली शरीर में प्रवेश करती है वहां का घाव छोटा होता है एवं त्वचा अंदर प्रवेश कर जाती है। घाव के चारो तरफ टेटूईंग" के निशान हो सकते है। गोली बाहर निकलने का निशान बड़ा होता है और अनियमित होता है। दोनो घावो के बीच में रेखा खींचने पर दिशा (किस दिशा से गोली आई है) मालूम पड़ सकती है। कभी कभी गोली हड्डी से टकरा कर वापिस लौट सकती है। ऐसे में एक ही घाव होगा। यदि एक ही घाव है इसका मतलब कि गोली शरीर के अन्दर ही रह गई है।

(स) दूरी - यह प्रवेश घाव को देख कर निश्चित की जाती है। यदि त्वचा जली है तो अत्यंत निकट से गोली चलाई गई है। फिर "टेटूडिंग" (कोयला की जले बारूद की प्रविष्टि (प्रवेश) घाव) आसपास है तो पास से गोली चलाई गई है और यदि "टेटूडिंग" चारो ओर दूर तक फैला है जो दूर से गोली चलाई गई है।

(6) वाहन दुर्घटना सड़क दुर्घटनाओं में किसी युद्‌ध से अधिक मृत्यु होती है यह स्वयं सिद्‌ध होती है।

(7) बम फटना - इस दुर्घटना में कई लहरें निकलती है जो अपनी अपनी तरह से नुकसान करती है उनमें से कुछ निम्नानुसार है

(अ) ध्वनि लहरें - बहरापन करती है

(ब) दबाव - वायु की दबाव की लहरों से त्वचा फट जाती है या कांॅच टूट कर शरीर में चुभ जाते है। भवन गिर जाते है।

(स) आणविक लहरें - इनके दूरगामी परिणाम भी होते है। जैसे हीरोशिमा और नागासाकी में हुये

एफ.एस.एल. क्या है

यह एक बड़ी प्रयोगशाला होती है जिसमें आमाशय आंते यकृत, प्लीहा, गुर्दे ह्नदय फेफड़े और मस्तिष्क इत्यादि जांच के लिए भेजे जाते है। जब मृत्यु का कारण अज्ञात रहता है तब जहर इत्यादि के प्रकरणों का, बलात्कार, गुदा, मैथुन इत्यादि के प्रकरणों में वीर्य की जांच के लिये स्त्राव भेजे जाते है। इसे फारेंसिंक लेब कहते है चूंकि प्रदेशो में इस तरह की संख्या कम होती है अतः उनका निर्णय आने में देर लग सकती है।

अन्त में शव परीक्षण कैसे ?

(अ) बाह्‌ना परीक्षण - शव परीक्षण के लिये हर चिकित्सालय में "मारचुरी" होती है। जहां शव रखे जाते है। अच्छे चिकित्सालयों में मारचुरी कोल्ड स्टोरेज की तरह ठण्डे रहते है जिन्हें प्रशीतक उपकरणों से ठण्डा रखा जाता है। शव की चीर फाड़ के लिये अलग स्थान होता है। पहले शव का सामान्य परीक्षण किया जाता है शव की अकड़न देखी जाती है नाखून देखे जाते है। मंुह में झाग इत्यादि देखे जाते है। गरदन पर रस्सी कसने के निशान देखे जाते है शरीर के जलने पर उनका प्रतिशत देखा जाता है। महिलाओं की योनि मार्ग में बलात्कार के चिन्ह्‌न देखे जाते है। पुस्षों में वीर्य स्खलन दोनो लिंगो में देखते है। शरीर में बन्दूक के गोली के निकलने को खोजा जाता है। शरीर के ऊपर रेंगने वाली इल्लियाॅं, शरीर की दुर्गन्ध इत्यादि को लिखा जाता हैं । शरीर के बाह्‌ना परीक्षण से मृत्यु के कारण एवं शव परीक्षण और मृत्यु के बीच का समय ज्ञात किया जाता है।

(ब) आन्तरिक परीक्षण - पचास प्रतिशत से अधिक जलने पर त्वचा के नीचे बहुत सा द्रव इकट्ठा हो जाता है यहां तक कि चाकू से त्वचा काटने पर वह बहने लगता है। सर्प दंश या गोली के निशान या जलने पर उतना हिस्सा काट कर एफ.एस. एल भेजा जाता है।

आन्तरिक परीक्षण के लिये शरीर की तीनो गुहाओं यथा मस्तिष्क, सीना और उदर में प्रकरणों में जलने पर अत्यधिक रक्त का सग्रह देखा जाता है। आमाशय एवं आंतो की झिल्लियां रक्तिम हो जाती है (गर्भाशय सहित) शव परीक्षण में पहले खोपड़ी छेनी, हथोड़ी से खोली जाती है। फिर सीना खोल कर फेफड़े और ह्नदय को देखा जाता है अन्त में उदर गुहा को खोला जाता है।

(स) विसरा इत्यादि की जाॅच, सर्प देश, जलने के प्रकरणों या बन्दूक की गोली इत्यादि में त्वचा और अन्दर के छर्रे इत्यादि) एफ.एस. एल भेजे जाते है। फिर मस्तिष्क, फेफड़े, ह्नदय, आमाशय, आंत, यकृत, गुर्दा एवं प्लीहा के अंश निकल कर अलग अलग बोतलों में नमक के घोल में रख कर भेजे जाते है।

(द) वस्त्र इत्यादि - वस्त्र इत्यादि का रंग पहले ही लिख लिया जाता है फिर संदिग्ध अवस्था में उन्हें भी प्रयोगशाला में परीक्षण के लिये भेजा जाता है। वस्त्रो इत्यादि पर चिकित्सक हस्ताक्षर करता है जिससे न्यायालय में उन्हें पहचाना जा सके। फिर उन्हें सील कर साथ में आये सिपाही को दे दिया जाता है।

सारांश एवं मत - इस तरह हम देखते है कि शव परीक्षण अपराध अन्वेषण का एक महत्वपूर्ण अंश है संदिग्ध परिस्थितियों में इसे बलात् रोकना एक अपराध की श्रेणी में आता है। सभी परीक्षणों के आधार पर किसी भी निर्णय पर पहुंचने के लिए न्यायालय स्वतंत्र होता है।

रात में क्यों नहीं होते पोस्टमार्टम ? चंकि पुलिस की जाॅच पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर आधारित होती है इसलिए रात में शव परीक्षण अमूमन नहीं किया जाता है। क्योंकि चोटो के रंग परिवर्तन रात को या तो स्पष्ट नहीं दिखते है या परिवर्तित दिखते है। हाॅं, यदि कार्यपालिका आदेश दे तो कृत्रिम प्रकाश में शव परीक्षण किया जाता है।

गहन शून्य में प्रश्न उठा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गहन शून्य में प्रश्न उठा।
प्रश्नों के उत्तर उठ बैठे,
प्रति उत्तर फिर प्रश्न उठा।

उत्तर में है, प्रश्न कई।
शंका सें गर्भित उत्तर,
प्रश्न कई और उत्तर कई।

प्रश्न अलग उत्तर से है।
उत्तर, असम्बद्ध पर है,
मतलब प्रश्नोत्तर से है।

प्रश्न सुबह उत्तर सन्धया।
प्रातः की पाती सूरज,
उस पर पता लिखा सन्धया।

प्रश्न शान्त तो उत्तर ध्वनि।
प्रश्न मुखर तो उत्तर चुप,
दोनो चुप और दोनो ध्वनि

प्रश्न गरीबी उत्तर धन।
एक प्यास है एक सलिल,
एक भूख और एक भोजन

प्रश्न शून्य उत्तर संख्या ।
संख्या प्रश्न शून्य उत्तर,
बहन्म शून्य माया संख्या ।

प्रश्न प्रलय उत्तर सृष्टि।
प्रश्न स्वयं तू उत्तर तू,
तू समषिट तू ही व्यष्टि।

एक प्रश्न मैं, तू उत्तर
दोनो हैं मेरे अन्दर,
मैं हूॅ दोनो के अन्दर।

पुरूष प्रश्न उत्तर माया।
माया में से प्रकट पुरूष,
पुरूष निषेचित है माया।

मैं अणु वह अनुशासन है।
प्रश्न गरीबों की रोटी,
उत्तर मौन प्रशासन है

प्रश्न चिरन्तन उत्तर क्षण।
प्रश्न तुम्हारी चितवन है,
उत्तर मेरा आकर्षण।

प्रश्न कहीं पैदा होता।
उत्तर वहाॅ नहीं मिलता,
उत्तर कहीं और होता।

लिखा गया कोलाहल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लिखा गया कोलाहल,
लिखने वाले थे सरगम।
लिखी राष्ट्र के नाम,
शब्द है उस पुस्तक के हम।

लिखते लिखते स्वर्ण भूमिका,
पृष्ट खर्च हो गये।
अब तो संशोधन है इतने,
मूल कहीं खो गये।

हरेक शब्द है क्लान्त,
स्वार्थ के नीचे हरेक कलम।
लिखा गया कोलाहल,
लिखने वाले थे सरगम।

टनों स्याही शहर भेज दी,
गांव पड़े सूखे।
गांव शहर के नौकर हो गये,
रह रह के भूखे।

गांव गुलामी करते करते
खो बैठे दम खम।
लिखा गया कोलाहल,
लिखने वाले थे सारगम।

शहरो के संस्करण निकाले
गांव हांसिये हुये।
नकल छपी रंगीन पेज में
मूल रहे अनछुये।

कैसी पुस्तक लिखी
शब्द है बहुत अर्थ है कम।
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम।

हरेक तिजोरी के इसमें
अधिकार सुरक्षित हैं।
हरेक स्वर्ण अक्षर के
इसमें अनुक्रम अंकित है।

धनिको को यह वेद समर्पित
पड़ा हुआ बेदम।
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम।

इस की तारीखो में अंकित
नृप के अत्याचार।
मथुरा पड़ी कंस के नीचे
रो रो करे पुकार।

भीष्म पितामह बिके हुये,
चुप बैठे है आश्रम।
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम।

खाकर पन्ने जिन्द
सुनहरी चमकीली हो गई।
पक्षी उड़े विदेश
रोपणी सब पीली हो गई।

नदियां महलों में जा बैठी
नहरो के माध्यम।
लिखी राष्ट्र के नाम
शब्द है उस पुस्तक के हम।

गांवों को दो काम
स्वच्छता नगर हवाओं को।
शहरो का कम करो बजट
दो ज्यादा गांवो को।

गांव न सुविधा हीन रहें,
न छुटे शहर का दम।
लिखी राष्ट्र के नाम,
शब्द है उस पुस्तक के हम।

व्यास लिखो ऐसा भारत जो सदियों सुरभित रहे।
जन संख्या, जल और जंगल का,
वितरण उचित रहे।
देर हो चुकी बहुत, उठाओ अब तो सही करना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नीरवता में

नुपुर किंकिण

क्यों आता है ?

कोलाहल मय महानगरो को,

सरगम के मधुमय सागर को,

तार मप्द ध्वनि की गागर को,

छोड़ विजन में,

ध्वनि निमंत्रण

क्यों आता है ?

नीरवता में

नुपुर किंकिण, क्यों आता है ।

शीतलता तज

चन्द्र किरण की।

इन्द्रधनुष मय भरे गगन की,

सत रंगे मन मोह भवन की,

चमक भुला कर

किरण निमंत्रण

क्यों आता है ?

नीरवता में,

नुपुर किंकिण,

क्यों आता है ?

छोड़ समय की तीव्र गति का,े

वायु वेग सी मन की मति को,

जन्म मरन से परे यति को

तद्रूपा में

क्षणिक निमंत्रण

क्यों आता है ?

नीरवता में

नुपुर किंकिण

क्यों आता है ?

तथ्यों की पत्थर जड़ता में

निवकामी की निस्पृष्ट्ता में

योगी की निश्चल दृढ़ता में
भाव शून्य में
मधु सम्बोधन
क्यों आता है
नीरवता में
नुपूर किंकिण
क्यों आता है

मेरेे अन्दर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरे अन्दर न जाने क्यों
अंगारे जलते रहते है ?
ये जिस्म दहकता रहता है
दिन रात सुलगते रहते है।
मेरी जलती आंखो से नित ही
धुंआ निकलता रहता है
बाहर अन्दर की लपटों से
डर दिन चेहरा झुलसा रहता है।
चन्दा तारे मेरे अन्दर
हर दिन डरते से रहते है
कुछ रक्त उबलता रहता है
कुछ जंगल जलते रहते है।
मेरे अन्दर रिश्ते नाते
हर दम थर्राते रहते है।
दिल में तूफान मचलता है
पत्थर सन्नाते रहते है।
कुछ धुआं और कुछ धूल भरे
दिल में सब धुंधले दिखते है
आंखे पथराई रहती है
और आंसू बहते रहते है।
करूणा को कुचला हिंसा ने
हिंसा के अन्धड़ चलते हैं।
चेहरे पर चाहे स्मित हो
षड़यन्त्र मचलते रहते है।

न वृक्ष हरे न कंलख है
लावा फैला मीलो तक है।
गरमी से तिड़की धरती है
और तपती रेत क्षितिज तक है
क्या सपना देखा याद नहीं
सपने में क्या था भूल गया
घर में घन चलते रहते है
मन्दिर तक जाना भूल गया।
कुछ हंसते चेहरे लाश हुये
जो बचे सहम कर ठिठक गये।
खग वृन्दो ने उपवन छोड़ा
सत कलशें जल के तिड़क गये।
दावानल में वन फंूक दिया
लावा में हिम कण मत ढंूडो
हूॅ एक लाश चलती फिरती
तुम मुझमें हिम कण मत ढंूढो।

चिड़िया चहकी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिड़िया चहकी
भोर हुआ चिड़िया चहकी
जैसे कोई कली चटकी, बगिया महकी।
चिड़िया चहकी
जैसे सांझ ढले चमका पहला तारा
या सरसिज में पहला पहला खिला कमल
सुबह सुबह ज्यो गाता जाये बंजारा
यौवन की देहली पर प्रथम दृष्टि बहकी
जैसे कोई कली चटकी बगिया महकी।
चिड़िया चहकी
जैसे यति को प्रथम ब्रहम आभास हुआ
गहन तिमिर में मन्दिर का जलता दीपक
उहापोह में निर्णय ज्यों अवतरित हुआ,

जैसे किसी खेत में हो चंचल लड़की।
जैसे कोई कली चटकी बगिया महकी।
चिड़िया चहकी।

जैसे कोरे कागच पर एक फूल बना
जैसे किसी शिशु ने पहला कदम रखा
जंगल में जैसे बहता कल कल झरना
घने बादलों में जैसे बिजली चमकी
जैसे कोई कली चटकी बगिया महकी
चिड़िया चहकी ।

सांझ हुये मस्तिद में एक अजान हुई,
या मंदिर में जैसे घन्ट निनाद हुआ,
गुरू ग्रन्थ साहब की ज्यों अरदास हुई,
भोर हुये पूरब में ज्यो ऊषा झलकी।
जैसे कोई कली चटकी बगिया महकी।
चिड़िया चहकी।

डन्डे के ऊपर झंडा है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

डंडे के ऊपर झण्डा है
झण्डे के नीचे डंडा है
जो डंडा है वह झण्डा है
झंडा दर असल में डंडा है

पैसा झण्डा और डंडा है
झण्डे के कारण अंडा है
नेता संसद में झण्डा है
संसद के बाहर डंडा है

झण्डे की जड़ में पैसा है
डंडे की जड़ में पैसा है

नेता की जड़ में पैसा है
पैसे की जड़ में पैसा है
झण्डा पैसे से आता है
डन्डा पैसे से आता है
अंडा पैसे से आता है
कंडा पैसे से आता है
चूल्हा जलता कंडे से है
अच्छी सेहत अंडे से है
डंडा मोटा झण्डे से है
झण्डा ऊँचा डंडे से है
कुर्सी के पीछे झण्डा है
कुर्सी के नीचे डंडा है
ये कुर्सी क्या है डंडा है
उस पर गोबर का कंडा है
पंछी का पिंजरा डंडा है
भैंसो का रस्सा डंडा है
गर डंडा न हो, दूध नहीं
मेहनत का कारण डंडा है
ये भूख पेट में डंडा है
गुर्वत का कारण डंडा है
ये महल खड़े डंडे से है
जिल्लत का कारण डंडा है

अफसर का रूतबा डंडा है
बचपन में शाला डंडा है
कानून खड़े डंडे से है
ये चमक तरक्की डंडा है
हंसने के पीछे डंडा है
रोने का कारण डंडा है
मेरे अन्दर पिटने वाला
तेरे हाथो में डंडा है
धर्मो का कारण डंडा है

भक्ति का कारण डंडा है
मन्दिर मस्जिद डंडे से है
ऊपर वाला एक डंडा है
डंडा डंडो में जाता है
डंडा डंडो को लाता है
डन्डम डन्डा करवाता है
डंडा मरघट ले जाता है
तुम न्याय पालिका से डरना
तुम कार्य पालिका से डरना
तुम मंत्री नेता से डरना
कर्तव्य हरेक का है डरना

कमरे की सर्वोत्तम सत्ता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इस बदददूदार सीलन भरे कमरे की
सर्वोच्च सत्ता छिपकली है।
यंू तो इस कमरे में जरा से दबाव से
चटख कर मर जाने वाले तिल चट्टे भी हैं।
जब वे शरीर के ऊपर रेंगते है,
तो अजीब सी लिज लिजाहट देते है।

उनके पिच जाने से, एक सिरे से
घिन पैदा करने वाला गूदा निकल जाता है
बहुत सारे झिंगुर भी है
जो अकारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर
उचकते रहते है।
मच्छर इस कमरे में भिनभिनाते ही रहते हैं।
उनके द्वारा खून चूसे जाने पर मलाल नहीं होता,
पर वे खुजली और जलन बहुत देते है।
जिससे रात भर नींद नहीं आती
जो कि, छत पर रेंगती छिपकली के नीचे सोने वाले
यात्री को बहुत आवश्यक है।
भिनकने वाली मक्खियाॅ है।
जो शरीर को खाना समझती है, और खाने को शरीर।
एक होड़ सी लगी रहती है कि खाने को
कौन पहले जूठा करें न वे खाने ही देती है,
और न सोने ही देती है। वरन भिनकती ही रहती है।
मकड़ी के जाले, हालांकि इस कमरे में जगह जगह है
पर उनके इतने अधिक होने पर भी
इतने सारे कीड़े कैसे बचे रहते है ?
वह बदबूदार कीड़ा, तब कौर के साथ मंेुह में चला जाता है,
तब कैसा कैसा खराब सा लगने लगता है।
तुम्ही को जिन्दा रहने का हक है, ए कीडे।
उन कीड़ो की लाशो को खींचती हुई चीटियां और चींटे है,
जो कमरे की छत को फोड़ कर फैल जाते है।
लाशो के टुकड़े ही उनका भोजन हैं।
इस कमरे में दिया जलाना भी अपराध है।
जब भी दिया जलता है, तो असंख्या कीड़े जाने कहाॅ से,
आकर उसकी लौ ढ़क देते है रोशनी उन्हें प्रकाशित कर
देती है, जो उन्हें पसन्द नहीं। अतः उसे बुझाने वे
खुद की जान देने तक पर आमदा हो जाते हैं।
रोशनी उन्हें प्रकाशित कर देती है, जो उन्हें पसन्द नहीं।
अतः उसे बुझाने, वे स्वयं की जान देने तक पर,

आमदा हो जाते है।
एक नन्ही सी तितली। इस कमरे में आ गई है।
वह दीवार दीवार/ नाचती है। इन तमाम
कंटीली झाड़ियो को फूलो में बदलने के लिये।
वह जरूर उस सर्वोच्च सत्ता/छिपकली के/
जबड़े मं आ जावेगी।
छिपकली/जो कीड़ो की आहट पाकर/धीरे धीरे/
उनकी तरह बढ़ती है/और झपट कर/उस बेखबर कीड़े को/
जबड़े में ले लेती है/फिर कीड़े फड़फड़ाने पर भी नहीं छूटते
छिपकली/जो दीवार के सहारे/ऊपर ही ऊपर
रहती है/वह कीड़ा भी नहीं है।

सर्व भक्षी भूख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चन्द्रमा पर नील आम्र्स स्ट्रांग नहीं उतरा था।
भूख उतरी थी।
भूख ही "स्पेस शटल" के रूप में पृथ्वी का चक्कर लगाती है।
भूख मजदूर को कारखाने से, और शिशु को मां से
चिपकाये रखती है।
भूख ही खेत और देश का बजट है।

भूख ही झोपड़ी और अट्टालिका है।
सैनिक और देश है भूख।
वही दर्शन है, महात्मा है और उपदेश है।
भूख ईमानदारी और भ्रष्टाचार है विपन्नता और सम्पन्नता हैं।
ऊंचे उठने के विचार भूख में पैदा होते है।
वहीं अहं और साहित्य है, ग्राहक और बाजार है।
खाना शाश्वत और आक्रामण भूख से प्राणी को अलग रखने का तरीका है।
भूख ही हन्टर और प्रताड़ित है।
वही माया और ईश्वर है।
अन्नौ वै ब्रहम।
अग्नि की लपटे भूख की लहरें है।
काल के भक्षण से बचने के लिए ही अग्नि जलती है, पृथ्वी
सूर्य के चक्कर लगाती है, और सूर्य जलता हुआ
स्वयं की धुरी पर घूमता रहता है
नक्षत्रो और ग्रहो समेत यह सारा ब्रह्नांड काल की
भूख से बचने, तेजी के साथ घूम रहा है
यहा काल की भूख काल तक को खा जाती है।
भूख स्वयं भूख को निगलती जाती है

वृहन्नला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वृहन्नला एक आश्चर्य का विषय है।

कि प्रजनन की क्षमता न होने पर भी वृहन्नलाओं की संख्या किस तरह बढ़ती है।

उनके बारे में कई किवदंतियाॅ समाज में फैली हैं, जैसे दाइयाॅ, जो प्रसव करवाने का आवश्यक घटक है किसी उभयलिंगी शिशु के जन्म लेने पर वृहन्नलाओं को सूचना दे देती है तब वे उस शिशु को मांग कर ले जाते है।

फिर उस शिशु की वृहन्नलाओं की तरह परवरिश की जाती है।

कुछ स्वयं ही वृहन्नला बन जाते है।

क्योंकि वृहन्नला बनना भूख से न मरने की गारंटी है।

बीमार पड़ने पर उनके चिकित्सक भी होते है।

तो व्यक्ति वृहन्नला होने पर मानव जाति के तीन दुश्मनों से तो बचा ही रहता है जैसे भूख, बीमारी और गरीबी।

उनका एक ही परिवार होता है।

अतः: वे अपने आपको असुरक्षित महसूस नहीं करते।

उनके परिवार के आन्तरिक बंधन बहुत दृढ़ होते है।

उनके परिवार के मुखिया को वे गुरू कहते है ।

जो कि उनके समाज में सर्वोच्च स्थान रखता है।

उनको व्यक्तिगत प्राण से भी ऊंचा ।

मुझमें वृहन्नला उत्सुकता भी उत्पन्न करते है और भय भी भय इसलिए कि वे घर में ही मेरे स्वाभिमान को तारतार कर देते है।

जैसे घर के सामने ढोलक की थाप और तालियों की उन्मुक्त आवाज के साथ साथ सज

रही गली मोरी अम्मा, सुनहरा सुनहरे गोटे में का स्वर सुनाई देता है तो मैं अन्दर तक काॅप जाता हूॅ।

वे दुआयें जरूर देते है पर अपमान के साथ वे कहते है ए बाबू तेरा बच्चा जुग जुग जिये। फिर रूपये मांगते है कुछ हजारो में, जबकि मैं रूपये दो सौ पचास से अधिक नहीं दे पाता। तब वे अपमान करने पर उतर आते है।

कभी कभी शरीरिक स्पर्श भी कर देते है हालांकि वे वर्ष में एक या दो ही काम आते है।

तब मैं सोचता हॅू कि काश मैं अत्यन्त उच्च अधिकारी या मंत्री होता जिनका चपरासी उन्हें बाहर की रोक सकता ।

या उनके समाज को आर्थिक सहायता दे सकता।

सुना है कि सागर और कटनी में वृहन्नला चुनाव लड़ कर मेयर भी बन गये थे पर वे जोड़ तोड़ कर हटा दिये गये ।

राजनीति आपके लिये नहीं है वृहन्नलाओ।

आपको केवल मोहरा ही बनाया जाता है महावीर शिखण्डी की तरह।

कवि गोष्ठी में लघु कथा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लघु कथायें मधुर होती है यदि वे सादृश्य होती है पर भण्डार कर जी का क्या करें। उन्हें कवि सम्मेलनों में कैसे चुप करें एक वार मेरे घर आ गये और मेरी मधुर स्मृति में कांटे बन कर छा गये। उनके वाक्य में बोले और गन्दी बात बोले "श्रीवस्तव जी तू कवि गोष्ठी में जायेगा तो कृपा कर हमें भी ले जायेगा।" मैनें उनका अपनामन जनक अनुरोध मान लिया और जेैसे पालतू कुत्ते के मालिक का साथ ले लिया।

एक कवि बोले कहाॅ कवि गोष्ठी में उपन्यास कार ले कर आते हो और कवि गोष्ठी का सत्यानाश करवाते हो। गायो के बीच में सांड को घुसवाते हो। "इनकी लघुत्तम कथायें भी बड़े उपन्यास की तरह होती है और वे भी बिना और धार के होती है।"

उनमें घटना क्रम और सार नहीं होता है सुनने वाली हिचक हिचक कर रोती है । पर उनका प्रस्ताव ध्वनि मत से गिर गया और कवि गोष्ठी में उस कहानीकार का प्रवेश हो गया । मैं संचाजन कर रहा था और कठपुतलियों के सारे सूत्र अपने हाथ में रख रहा था।

इसलिये मैंनें उन्हें सभापति बना दिया और कुछ कवियों से समर्थन करवा दिया। वे मित्र वहीं लड़ने लगे और संचालक का ही विरोध करने लगे। नाराज होकर बोले हे "संचालक भोले हम से कब का बदला निकाल रहे हो । मैं तो वन डाउन पर आऊंगा और आखिरी तक नाट आउट रहूॅगा इस क्रिकेट में क्रीज पर एक ही बेटस में न रहता है और फील्डर भागता रहता है।

मैनें कहा "इसी का तो डर है और स्टेडियम हिलता थर थर है तुम आखिरी तक रहोगे और स्लो वेटिंक करोग, मैच हरवा दोगे और चल दोगे तुम पड़ना चालू करते हो तो क्रमशः ही होता है। बाकी कवि या तो पाठ करने से रह जायेंगे या सो जायेंगे या हाल छोड़ कर चले जायेंगे। मगर वे कवियों के चेहरे का भूगोल बिगाडद्यने के लिये इतिहास रचपे वाले गुण्डो के साथ ले आये थे जो दिमाग घुटने में रख कर लाये थे।

वे गुण्डे दरवाजे खिड़की बन्द करने लगे और भण्डार कर न खत्म होने वाले उपन्यास का वाचन करने लगे। वैसे ही कवि में छोटी इ की मात्रा होती है और कहानी में बड़ी ई की। इसलिए कहानी कविता से बड़ी होती है। हालांकि आज कल कविता कहानी का मुकाबला करने लगी है और बाल कटा कर और जीन्स पहन कर कहानी को धक्का देने लगी है। मित्र ने जो उपन्यास चालू और गोष्ठी को किया था काले पानी में बदल दिया । उन्होने उपन्यास विलोम गति से चालू किया जो इक्कीसवीं सदी से चाल

हुआ और ईसा पूर्व पाँचवीं सदी तक जाने लगा। उपन्यास के पात्र कथानक से स्वतंत्र थे पर उसके श्रोता परतन्त्र थे। उसमें पेरा नहीं बदले जाते थे पर पन्ने बदले जाते थे किसी को न तो सोने दिया जा रहा था और नहीं रोने दिया जा रहा था वे चार घन्टे तक वह लघु कथा पडते रहे और उसकी हर पंक्ति का अर्थ समझाते रहे। उस दुरूह रचना के वे ही उपन्यासकार थे और व ही टीकाकार थे। हम सब बाहर से शांत और अन्दर से अशांत थे।

हम प्रार्थना करने लगे कि हे भगवान हम पर दया क्यों नहीं करते हो और इस अप्राकृतिक स्थिति में प्राकृतिक विपदा क्यों नहीं भेजते हो। धरती मां ने हमारी प्रार्थना सुन ली और भूकम्प भेज दिया। और आंसुओं से भी वजनदार उस क्रिया को भेज दिया । मगर मित्र पड़ते रहे और बोले वह रचना ही क्या जो धरती न हिला दे। शायद बगैर कानो वाले शेष जी ने भी यह रचना सुन ली थी अतः धरती माता को निराधार छोड़ कर जाग गये। मित्र तो वह उपन्यास पड़ते रहे पर उनके पहलवान दरवाजा खोल कर भाग गये पर वे बदमाश बाहर से दरवाजा बन्द कर गये। पर हम लोगो को खिड़की से बाहर कूद कर निकल गये। मालूम नहीं उस उपन्यास कार ने उपन्यास वाचन कब बन्द किया।

मोहल्ले में सनसनी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दद्दू को बड़ा दुख रहता है कि उनके वार्ड में चुनावन के बाद से सनसनी नहीं फैली। आखिर वे कब तक सब्र करते। एक दिन चार चमचो को लेकर वार्ड मेम्बर के घर दनदनाते हुए पहुँच गये। वार्ड मेम्बर उन्हें देख कर खडा हो गया। दद्दू आखिर मोहल्ले के दंबत मतदाता थे। वार्ड मेम्बर को सिर के बल खड़ा होना नहीं आता था अन्यथा द्ददू के स्वागम में वह भी कर लेता।

वह दद्दू की क्या जो एकदम अपनी पहेली बतला दे। वे पहले उत्तर की चिनार बतलाते है फिर विजयी भाव से पहेली का उत्तर बतलाते है। चाय की सुड़की लेते हुए बोले "अपने वार्ड में कुछ ठीक नहीं चल रहा है। "वार्ड मेम्बर की समझ में नहीं आया कि क्या ठीक नहीं चल रहा था। उसने भाग दौड और जोड़ तोड करके दद्दू के घर के सामने सीमेन्ट रोड बनवा दी थी बिजली का खम्बा एन उनके घर के सामने गड़वाया था, उन्हें के कहने पर फिर दूर दूर तक दूसरा खम्बा नहीे गढ़वाया था। हेन्ड पम्प उनके आंगन में लगवा दिया अब क्या ठीक नहीं चल रहा था सब तो ठीक चल रहा

था। अतः उसने पूछा अब ठीक होने को क्या बचा दद्द । तू बता भला किसे ठीक करवाना है। फिर दद्दू ही सबको ठीक कर सकते है।

दद्दू विजयी भाव से बोले ये गधा क्या बतलायेगा। हम बतलाते है। अपने वार्ड में बहुत दिनो से सनसनी नहीं फैली। वार्ड मेम्बर बोला दद्दू वो तो पास के वार्ड में एक लाश मिली थी इसलिये सनसनी फैली थीर्। आप आज्ञा दे मैं किसको सुलटा दॅू।

दद्दू ने प्रेम से अपने डन्डे को देखा फिर वार्ड मेम्बर का मजाक उड़ाते हुये कहा उसके लिये तो मेरा यह डन्डा ही काफी है। हमने क्या तुम्हे इसीलिये जिताया था कि अपने वार्ड में सनसनी फैलने के लिये हमें दूसरे चुनाव का इन्तजार करना पड़े। लानत है तुम पर। थू । वह काम में विश्वास करने वाला वार्ड मेम्बर अपमान के कारण शर्म से गड़ गया। बोला "तो दद्दू बाजू के वार्ड से कोई लाश घसीट कर ले आऊॅ।"

दद्दू को उस पर दया आ गई। "अब मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। हमें किसी की नकल करके पास नहीं होना। क्या तुम बिल्कुल ही दिमाग से खाली हो इतनी धमकी देकर दद्दू चले गये। वार्ड मेम्बर का दिल धड़कने लगा। वार्ड की शान्ति भंग करने के लिये मालूम नहीं ये सांड अब क्या करने वाला है। धड़कते, धड़कते कुछ दिन शान्ति से निकल गये। एक दिन एक समूह के आदमी ने दूसरे समूह के आमदी के भरे पूरे खेत में अपनी गायें पेड़ दी। दोनो समूहो के बीच तू तू मैं मैं हुई। इससे काम नहीं बना। वार्ड मेम्बर समझ गया बिन यह पुण्य का कार्य दद्दू का ही है। दूसरे दिन एक दूसरे के भगवानों को गाली दी जाने लगी। अब भगवान तो आदमी की तरह सहनशील नहीं होंते। सर फुटौवल हो गई। खून बहता देख कर भगवान प्रसन्न हो गये। तहसील दार शांति करवाने के लिये आया। पर सनसनी परसने के लिये बेचैन थी। किसी ने उस शान्तिदूत को पत्थर मार दिया। प्रशासन ने आॅख बन्द करके गोली चला दी। लोगो ने तोड़ फोड़ चाल कर दी। प्रशासन ने कफ्र्यू लगा दिया। सनसनी पसर गई।

वार्ड मेम्बर दुखी हो गया। समाचार पत्रों में खबरो का तांता लग गया। कफ्र्यू के समाचार

टी.व्ही. में आने लगे। कफ्र्यू में ढील के समय दद्दू वार्ड मेम्बर के घर आये। वहाॅ तहसील दार बैठा हुआ था। दद्दू को देख कर खड़ा हो गया। शांति स्थापित करने में दद्दू ने प्रशासन को बहुत मदद की थी। प्रशासन के जाने के बाद दद्दू बोले "बेटा यह होती है सनसनी बाजू के वार्ड में तो टुच्ची सनसनी आई थी। हमने उसकी माॅ को फैला लिया। मजा आया कि नहीं ? यह देख कर वार्ड मेम्बर के मन में सनसनी पसर गई।

एक डाकूॣ मानसिंह था

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक डाकू मानसिंह था।

डाकू मानसिंह पचासवें दशक का प्रसिद्ध डाकू था।

वह चम्बल के बीहड़ों का एक छत्र राजा था।

गरीब लोग भी उसे राजा कहते थे।

वह गरीबो के लिये राजा मान सिंह था।

वह अमीरो को लूटता था और गरीबो की लड़कियों की शादी करवाता था।

वह गरीबो की आर्थिक सहायता करता था।

इसीलिए गरीब लोग उसे राजा कहते थे।

उन्हें प्रसन्न्ता होती थी।

जब वह अमीरो को लूटता था, आखिर गरीबो को लूटने वालो को भी लूटने वाला कोई था।

वह राजा मानसिंह था।

मगर सरकार उसे डाकू कहती थी।

यह गरीबो की लड़कियों कीे इज्जत करता था।

वह अमीरो की लड़कियों की भी इज्जत करता था।

वह सम्पूर्ण नारी जाति की इज्जत करता था।

कहते है इसीलिये उसे देवी मां का इष्ट था।

इसीलिये सरकार की पुलिस उसे नहीं पकड़ पाती थी।

गरीब उसकी रक्षा करते थे ।

और वह गरीबो की ।

गरीब लोग उसे पुलिस की स्थिति की सूचना देते थे।

वे उसके मुखबिर थे । ऐसा था डाकू मानसिंह।

टेक्स तो सरकार भी लगाती है।

सरकार सब पर कर लगाती है उसे अप्रत्यक्ष कर कहते है।

प्रत्यक्ष कर कुछ व्यक्तियों पर लगाया जाता है जैसे आयकर, विक्रय कर या सम्पति कर। फिर उस कर से गरीबो को राशन सस्ते में दिया जाता है और बिजली मुफ्त ।

पर वह सहायता गरीबो को नहीं मिल पाती।

गरीबो के वेश में अमीरो को मिल जाती है।

सरकार के अपने अप्रत्यक्ष कर से सभी चीजें मंहगी हो जाती है जैसे साबुन, तेल, सब्जी, ईंधन आदि।

यह सबको चुकाना पड़ता हैं।

मानसिंह गरीबो की सहायता करता था।

सरकार गरीबो से भी कर लेती है।

इसीलिये गरीब लोग सरकार को कोसते थे और मानसिंह की पूजा करते थे।

मानसिंह गरीबो के लिये जरूरी था।

एक दिन मानसिंह पुलिस के द्वारा मारा गया।

उस दिन गरीब लोग फूट फूट कर रोने लगे। उनका मसीह मारा गया था।

सन् 2020 के दशक में स्पष्टतः सन् 2012 में सरकार ने खूब कर लगाये।

उनके मंत्रियों ने जनता के खजाने पर खूब डाका डाला।

एन आर एच के रूप में, दो जी स्पेक्ट्रम घोटाला के रूप में, एशिया गेम के रूप में, आदर्श सोसाइटी के घपले के रूप में, सेना के उपकरण खरदी के रूप में।

यह कह कर कि यह परम्परा है।

देश की सुरक्षा की कीमत पर यानि चारा घोटाला और बोफोसर् घोटाला पीछे छूट गये। देश का पहला घोटाला, टाट पट्टी घोटाला भी।

जनता असहयाय सी देखती रह जाती है।

ये डाकू मानसिंह से भी गिरे हुये लोग हैं इसीलिये इनके मरने पर जनता खुशी मनाती है । रोती नहीं ।

क्योंकि सरकार गरीबो को लूटती है और अमीरो की सहायता करती है।

भारत को आस्तीन में सांप पालने का शौक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भारत की आस्तीनें बहुत लम्बी और बहुत चैड़ी है। वह जहां भी सांप रेंगते देखता है, शीघ्रता से उठा कर आस्तीन के अन्दर रख लेता हैं इस आशा के साथ कि जब सांप बहुत से इकट्ठे हो जायेंगे तो एक दूसरे को काटने लगेंगे पर वे भारत को ही काटते है और एक दूसरे से मित्रता कर लेते है। अब भारत माता का चेहरा मेरे सामने है तो उनके दाहिने हाथ की तरफ पाकिस्तान है। मगर वह देश भारत का दाहिना हाथ नहीं है वरन दाहिनी आस्तीन के अन्दर काटता है। देश का विभाजन कोई दो धर्मो के प्रेम के कारण नहीं हुआ था वरन नफरत और एक दूसरे से डर के कारण हुआ था। हमारा यह बार बार कहना कि दोनो मुल्को की आवाम तो एक दूसरे से मिलना चाहती है पर नेता नहीं मिलने देते, एक हवा का किला है नेता उसी देश की जनता का ही प्रतिनिधित्व करते है। जब भारत में काश्मीर में ही दोनो धर्म के लोग साथ साथ नहीं रह पाये तो कैसे यह आशा की जाती है कि पाकिस्तान में दूसरे कौम को साथ में रहने दिया जायेगा।

ये शिगूफा कि दोनो देश के लोग तो भाई चारा चाहते है पाकिस्तान के उन कलाकारो द्वारा छोड़ा गया है जो भारत से मोटी रकम वसूलते है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री भारत में मित्रता का हाथ बढ़ाने नहीं आते बल्कि जियारत करने या ताजमहल देखेने आते है। यहां के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री उनके लिये रेड कारपेट की जगह पलकंे बिछाये रहते है वहां के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री उनकी बातों में हाॅ-हूॅ करते हैं और मन में सोचते है कि काश अजमेर शरीफ और ताजमहल भी पाकिस्तान में होते। वे वापिस लौट कर तत्काल बाद ही उनकी सही मंशा जाहिर कर देते है। या तो कोई आतंकवादी घटना को अन्जाम देते है या छोटा मोटा (उनकी औकात के अनुसार) हमला कर देते है।

अच्छा मान भी लें कि दोनो देश की सीमायें खोल भी दी गई तो क्या गारन्टी कि दुबारा वही लूटपाट और मारकाट नहीं होगी जो सन् 1947 में हुई थी। तो एक ही भाई क्या कम था कि जवाहरलाल जी एक और भाई को जन्म दे गये। हिन्दी-चीनी

भाई-भाई। हमने इन नागदेव की पूजा की नहीं कि वे भी आस्तीन में घुस गये। अब नील कण्ठ की तरह हम इन को भी आस्तीन से बाहर नहीं निकाल पाते। चीन धीरे धीरे भारत के सिर को मुन्डन कर रहा है। पहले तिब्बत को निगला फिर भारत का 33 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र ही निगल गया। जो लोग श्री बद्रीधाम जी जाते है वे वहां यह जानकर दुखी हो जाते है कि चीन वहां से मात्र 15 किलोमीटर दूर है।

चीन को पाकिस्तान की मित्रता इसलिये अच्छी लगती थी कि दोनो भारत को छीन कर बांट रहे थे। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि भारत की दो संसद की सीटे हमेशा रिक्त रहती है क्योंकि दोनो पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर में है। चीन को पाकिस्तान की हकीकत तब उजागर हुई जब चीन में भी पाकिस्तान रचित आतंकवाद की घटनायें होने लगी।

पाकिस्तान के हुक्मरानो का आइ.क्यू. वहां की जनता की तरह 250ः से कम न होगा। उसे चीन नामक मोहरे की आवश्यकता इसलिये पड़ी कि एक तरफ तो वह अमेरिका को ब्लेक मेल कर सके और दूसरी तरफ भारत को ब्लेक मेल कर सके पर भेड़िया भेड़ की खाल में कब तक अपने को छुपा सकता है ?

पाकिस्तान को जब गेहंू की जरूरत पड़ी तो भारत (माइनस, जम्मू और कशमीर) एक "मोस्ट फेवर्ड" देश हो गया। मगर भारत को याद करना चाहिये कि सांप जब काटता है तो झुक कर ही काटता है फिर एक और चमत्कार जवाहर लाल जी की पुत्री ने किया। उन्होने एक पाकिस्तान के रक्तबीज की तरह दो पाकिस्तान कर दिये। अब तीन भाई हो गये और तीनो तरफ से भारत को काट रहे है। आपको याद होगा कि आजाइ होने के तत्काल बाद की बांग्लादेशी हमारे देश के पचास सैनिको को उनकी सीमा में घसीट कर ले गये थे, वहां उनकी गरदन काटी थी, और सिर भारत की सीमा में फेंक दिये थे।

दरअसल जब भारत का विभाजन ही धर्म के आधार पर हुआ था तो भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बनाने की मूर्खता क्यों की गई। इसे भी हिन्दू राष्ट्र घोषित करना था। भारत हिन्दू राष्ट्र हो जाने पर भी यहां के अन्य धर्मालम्बी नागरिको को उससे अच्छी तरह से रखता जितना कि पाकिस्तान उसके हिन्दु नागरिको या ईसाई नागरिको को नहीं रख रहा है।

भारत नेपाल से अच्छे सम्बन्ध बना कर नहीं रख पाया। जिससे वह माओवादियों की गोद में चला गया। यानि एक और चीन आपकी मूर्खता से उत्तर में खड़ा हो गया। जहां भारत काश्मीर में मुद्रा की नदियां बहा रहा है वहां उतनी ही उदारता पूर्वोत्तर राज्यों में क्यों नहीं दिखा रहा। वहां एक लिटर पेट्रोल रू. 100 से अधिक कीमत में मिल रहा है। इन्हीं कमजोरियों के कारण अब चीन वहां खुद का दावा ठोक रहा है। मेरा फिर

कहना है कि बहुत हो चुका, अब काश्मीर का एक विशेष राज्य का दर्जा खत्म होना चाहिये। या फिर जितने भी सीमा प्रान्त है उन सबको विशेष राज्य का दर्जा दिया जाना चाहिये।

भारत के सम्बन्ध म्यामार एवं श्रीलंका से भी भाई चारे के नहीं है। श्रीलंका में तो भारत के प्रधानमंत्री पिट भी चुके है। यहां भ्रष्टाचार इतना है कि मंत्रियों से लेकर चपरासी तक भ्रष्ट है और अराजकता इतनी कि विदेशियों और विधायको तक को अगुवा किया जा रहा है। कानून व्यवस्था चिन्दी चिन्दी हो गई है। सांसद मंत्री और एम.एल.ए. तक हत्याओं, बलात्कार, अपहरण संसद और विधान सभाओं में ब्लू फिल्म देखने में मशहूर है

ये सब आस्तीन के सांप है मगर नीलकण्ठ की तरह से विष उगलते नहीं बन रहा है। कारण है केन्द्र की भ्रष्ट और इसीलिये लचर सरकार। जितनी क्रूरता से अव्यौहारिक बजट और खाद्य सुरक्षा कानून लागू किये जा रहे है उतनी ही मजबूती से आन्तरिक भ्रष्टाचार से निपटा होता है तो नक्सलवाद जैसे नासूर न पननते। इस समय तो शक होता है कि संविधान की कोई उपयोगिता भी है क्या ?

ट्राइजेमीनल न्यूरेल्जिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ट्राइजेमिनल नर्व मस्तिष्क की पांचवी तंत्रिका है। यह तंत्रिका सम्पूर्ण चेहरे की संवेदनायें दिमाग को ले जाती है। इसकी तीन शाखायें होती है। प्रथम शाखा आंखो और उसके ऊपर की संवेदनायें दिमाग तक पहुंचाती है। मध्य की शाखा आंखो और मंुह के बीच के क्षेत्र की संवेदनायें दिमाग तक पहंुचाती है और तीसरी शाखा मंुह के नीचे के भाग की संवेदनायें दिमाग तक पहुंचाती है।

हम मस्तिष्क की तंत्रिकाओं का बहुत संक्षिप्त परिचय यहां प्राप्त कर लें पहली ओलफेक्टरी कहलतीा है जो सूंघने के काम आती है। दूसरी आप्टिक कहलतीा है जो देखने का काम करती है तीसरी ओक्यूला मोटर है तो आंखो को घूमाती है। चैथी ट्रोक्लीयर है यह भी आंखो को घुमाती है पांचवी ट्रायजेमीनल है जिसका परिचय दिया जा चुका है। छटवीं एवड्यूसेन्ट है जो आंखो को घुमाने में सहायता करती है सातवीं फेशियल है जो चेहरे की मांसपेशियों को नियंत्रित करती है। आठवीं "स्टेटो एक्यूस्टिक" जो सुनने और "बैलेन्स" रखने में सहायता करती है नवी ग्लोसो फेरिन्जियल है जो जीभ और तालू इत्यादि की संवेदनायें दिमाग तक ले जाती है एवं उनकी मांस पेशियों को नियंत्रित करती है दसवीं वेगस है जो दिल की छड़कनों, सांस एवं आंतो को नियंत्रित करती है। ग्यारवीं "हायपोग्लासल" जो निगलने में सहायता करती है और बारहवीं स्पाइनल एक्सेसरी है जो गरदन की तंत्रिका है।

यह बीमारी उस समय भारत में प्रकाश में आई तब सलमान खान इस बीमारी के आपरेशन के लिये अमेरिका गये। इस बीमारी को ट्रायजेमिनल नर्व की मिर्गी कह सकते है। यह ट्रायजेमिनल नर्व की संवेदनाओं की मिर्गी है और दरअसल ट्रायजेनिमल न्यूरेलजिया ये मिर्गी की दवायें ही कारगर होती है।

न्यूरल का मतलब है नर्व सम्बन्धी और एलजिया का मतलब है दर्द ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया मस्तिष्क की पांचवी तंत्रिका का विकार्थ है। इस तीव्रता के कुछ और दर्द पाये जाते है यथा हरपीज जोस्टर सा सियेटिक (सिथेटिका) या ब्रेकियल दर्द। पर उनके कारण दिखते है एवं उनका निदान है।

सिम्पटम्स:- यह दर्द बहुत कम तीव्रता से चालू होता है। कभी किसी एक दांत से चालू हो सकता है कभी किसी आंख में लगातार, महिनो दर्द हो सकता है या कान में दर्द हो सकता है। एक आंख का दर्द लगातार पड़ने या यात्रा करने या जागने से हो सकता है। आंख का दर्द नींद के ठीक बाद हो सकता है। दांत का दर्द डेन्टिस्ट को दिखाने पर काई खराबी नहीं निकलती। यदि वह दांत निकाल देता है तो दर्द ठीक हो जाता है पर कुछ ही दिनों में दूसरे दांत में होने लगता है।

फिर किसी दिन ही अचानक एक असहनीय दर्द का झटका लगता है। जो ट्रायजेमिनल नर्व की एक शाखा की सीमा में हो सकता है। दो की सीमा में हो सकता है। यह दर्द चेहरे की दूसरी तरफ नहीं होता। दर्द ऐसा लगता है जैसे बिजली का झटका लगा हो उस दर्द के दौरान व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता न तो बोल सकता है और न ही खा सकता है। ये झटके बार बार आ सकते है, दिन में कई बार दर्द के कारण व्यक्ति चल भी नहीं पाता बीच में व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो जाता है, मानो कुछ हुआ ही न हो।

कोई भी स्पर्श यहां तक कि हवा का स्पर्श भी दर्द को उठा देता है। खाना पीना तक छूट जाता है। मंुह धोना या ब्रश करना तक मुहाल हो जाता है। व्यक्ति इतना डिप्रेस हो जाता है कि आत्महत्या करने की सोचने लगता है।

चिन्हनः - ट्रायजेमिनल न्यूरेल्जिया का कोई विशेष चिन्हन नहीं होता। उसकी पुनरावृति ठण्डे पानी के स्पर्श से की जा सकती है। दर्द के समय वह आंख लाल हो जाती है। उसमें आंसू बहने लगते है, कीचड़ जमा हो जाता है उस तरफ की नाक बहने लगती है। चेहरे की मांस पेशियों में तनाव होता है अन्य कोई चिन्हन नहीं होते।

विशेष जांचे:- खोपड़ी के सी.टी. के जांच एवं एम.आर.आई. की जांच की सलाह दी जाती है। पर उनके निष्कर्ष ऋणात्मक रहते है। यदि न्यूरेल्जिमा चालीस वर्ष से कम की उम्र में है जब ब्रेन ट्यूमर इत्यादि के बारे में सोचा जा सकता है। कभी कभी एक धमनी नर्व को छू कर चलती है और उसे क्षति पहंुचाती है तब वह एम.आर.आई. में खोजा जा सकता है।

ट्रायजेमिनल न्यूरेल्जिया के कारण अधिकतम प्रकरणों में कोई कारण नहीं होता। चालीस वर्ष से ऊपर के प्रकरणों में अधिकांश प्रकरणों में कोई कारण नहीं होता है। पर उम्र यदि चालीस वर्ष से कम है तो आठवीं नर्व का ट्यूमर, ब्रेन ट्यूमर या अन्य कारण हो सकते है। कुछ प्रकरणों में हरजीज वायरस न्यूरेल्जिया का कारण बतलाया गया है।

इलाज:- इस बीमारी को "ट्रिगर" से बचना चाहिये। अधिक सर्दी, गर्मी हवा से झटके ला सकते है। इसी तरह कठोर खाना झटके ला सकता हैं। दाढ़ी बनाने से झटके आ सकते है। आइसक्रीम एवं ठण्डा पेय झटके दे सकता है। कुछ लोग "स्ट्रा" से पानी पीने लगते है काफी एवं चाय छोड़ देना चाहिये। अदरक, पोदीना, दर्द चालू कर सकते है। कपूर की गन्ध तक झटके दे सकती है। पिपरमेन्ट, इलाचयी कुछ लोगो को नुकसान दे सकती हैं। ठण्डे पानी से नहाना दर्द दे सकता है। ज्यादा गर्म पानी भी दर्द देता है। तंग गले के कपड़े दर्द दे सकते है चश्में के कान की डन्डी दर्द दे सकती हैं खुले वाहन में सैर करना दर्द देता है।

दवाइयां:- होम्योपेथी से ठीक होना शंकास्पद है आयुर्वेद की कुछ गोलियां दर्द गायब कर देती है। रेकी का कोई उपयोग नहीं है। हिप्नोटिज्म का कोई योगदान नहीं देखा गया। एलोपेथिक दवाइयों में "कारवासेजापिन" सबसे अधिक उपयोगी एवं सुरक्षित देखी गई है। हालांकि मिर्गी में दी जाने वाली कोई भी दवा इस दर्द में कारगर होती है। एन्टीडिप्रेसेन्ट दवाइयां सहयोगी होती है पर उनका प्रभाव खत्म होने पर दर्द एक दम उखड़ जाता है। दवाइयां चिकित्सक की देख रेख में ही लेना चाहिये। उनके साइड इफेक्ट भी होते है।

आपरेशन:- (1) माइक्रो वेस्कुलर सरजरी कारगर होती है इससे सिर के पीछे से खोपड़ी खोली जाती है और धमनी और तंत्रिका के बीच में टेफ्लान रख देते है। मृत्युदर एक प्रतिशत है पेरेलिसिस भी हो सकता है।

(2) नर्व के गेन्गिलियों में एव्सोल्यूट अल्कोहल या ग्लेसराल के इन्जेक्शन एक पुराना इलाज है।

(3) सेलेक्टिव न्यूरोटोमी की जाती है। यह सुरक्षित प्रक्रिया है।

न्यूरेल्जिया क्लब एवं चेटिंग

विदेशो में हर न्यूरेल्जिक व्यकित अपने अनुभव एक दूसरे को इन्टरनेट के जरिये बांटता रहता है।

दौड़ का नशा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह दौड़ रहा था।
फूली हुई सफेद सुन्दर चपाती ने
उसे हाथ पकड़ कर रोका
और कहा
मैं मीठी और नरम हूॅ
मेरा स्वाद लेकर चबा कर खाना।
पर वह नहीं रूका ।
चपाती को दौड़ते दौड़ते खाया
और चल दिया दौड़ने।
उसकी सुघड़ सुन्दर ससौष्ठव
पत्नि ने मुस्करा कर पूछा
मेरे पास बैठो और बताओ
मैं हीरो के नये गहने और
सोने की जरी वाली नई साड़ी में

कैसी लगती हूॅं
उसने मुस्कुराती हुई पत्नि के
गालों को छूकर कहा, सुन्दर
और फिर निकल पड़ा दौड़ने
वह उन लोगो पर हंसता था
जिनकी केवल एक ही मंजिल थी
जो धीरे धीरे आराम से चलते थे
मंजिल की तरफ
जो डाकखाने में चिट्ठियों को डालते थे
हालांकि वे चिट्ठियां कभी भी
नहीं पहुचंती थी पाने वाले के पास
ई मेल और फैक्स
का उपयोग नहीं जानते थे
एयरोप्लेन से नहीं जाते थे
एक मंजिल से दूसरी
मंजिल तक
जिनके पास तीन आयाम वाले
सत्तर इंच से बड़े
टी व्ही नहीं थे। होम थियेटर के साथ
जो निचली मंजिल पर ही रहते थे धूल खाते हुये।
लिफ्ट से ऊपरी मंजिल पर नहीं जाते थे
वह ध्यान का 3 मिनिट
वाला पैकेज इस्तेमाल करता था
इलेक्ट्रांनिक बाबाओं का सिखाया हुआ
जब वह पूजा करने बैठता
तो दौड़ता ही रहता था
मंदिर से मंदिर तक
वह दौड़ता ही रहता था
शायद चपातियां इकट्ठी करने
या हीरे जवाहरात इकट्ठे करने
पत्नि के लिये, या
मन्दिरो में दान देने या

और नई नई फैक्टरियां खड़ी करने।
बहरहाल
वह दौड़ते दौड़ते
स्वर्गवासी हो गया उसके
टुकड़ों पर पलने वालों के शब्दों में
उसे शान्त लोग
धीरे धीरे चलते हुये कब्रिस्तान
ले जाने लगे तो उसे
गुस्सा आने लगा कि कैसे आलसी लोग है
जो उस जैसे कर्मठ व्यक्ति को
धीरे धीरे श्मशान तक ले जा रहें है
क्योंकि कब्रिस्तान में भी उसे दौड़ना है
एक कब्र से दूसरी कब्र तक

दो दिन पूर्व

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पाकिस्तान का हवाई जहाज पाकिस्तान से उड़ा और पाकिस्तान में ही गिर गया। घर की चीज थी घर में ही रह गयी। घी कहां गया ? खिचड़ी में । भारत के प्रधामंत्री के संवेदना विभाग ने देर नहीं की। वहां विमान गिरा नहीं कि यहां से संवेदना दौड़ गई। कभी-कभी तो बगैर घटना के ही दे दी जाती है, जैसे लोक नायक जयप्रकाश के दिवंगत होने के पूर्व ही संवेदना भेज दी गई थी। घटना बाद में दुर्घटना पहले। मगर सुश्री ममता बनर्जी में भी अलग से संवेदना भेद दी। महिलाण्ें अलग-अलग ही चलती हंै। वे भूल गई कि वे पश्चिमी बंगाल की प्रधानमंत्री नहीं। बेकार कागज खराब कर

दिये। इन कामों के लिये पी.एम. का संवेदना विभाग जो है। और किसी मुख्य मंत्री ने तो संवेदना नहीं भेजी, अन्यथा भारत से ही बाइस संवेदनायें भेज दी जाती।

प्रधानमंत्री के हर विभाग अलग-अलग हैं। संवेदना विभाग अलग, बधाई संदेश विभाग अलग। इन विभागो के अलावा कुछ करो विभाग अलग और कुछ न करो विभाग अलग। वैसे तो सभी विभाग कुछ न करो विभाग है बल्कि उल्टा करो विभाग है। एक और विभाग है, विभाग बगैर पोर्टफोलियो । वह इसी इन्तजार में रहता है कि कोई विभाग छुट्टी पर जाये और उसे काम मिले।

संवेदना इन्होने भेजी और पाकिस्तान चिढ़ गया। विभान जले पर भारत ने नमक छिड़क दिया। दूसरे और दो अषाडद्य जिस पर पड़ गये तीन तुषार। भारत के प्रधानमंत्री खाना खा रहे थे। आपको मालूम है कि बड़ा आदमी सोता नहीं है, वह आराम करता है, खाना नहीं खाता, पौष्टिक तत्व ग्रहण करता है। तो प्रधानमंत्री ने मंत्री मण्डल के अन्य सदस्यों को भी दोपहर के पौष्टिक तत्व ग्रहण करने के लिये आमंत्रित कर लिया। जिससे कि पाकिस्तान के विमान की दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचना दी जा सके। आज कल तेरहवंी भी मंगल कार्यालय में होती है। भारत में कोई आदमी भूख के कारण मर जाये तो भी प्रधानमंत्री को दुख नहीं होता पर पाकिस्तान में किसी के पैर में भी मोच आ जाये तो उनके दिल में मोच आ जाती है।

उधर पाकिस्तान के मंत्रिमंडल ने निर्णय लिया कि देखो हमारे एक सौ सत्ताइस आदमी मरने पर पड़ोस में कैसे मलाई उड़ाई जा रही है होने दो वहां दुर्घटना, हम संवेदना संदेश के साथ एक हवाई जहाज और उतने ही आदमी भी वहां भिजवा देंगें जिससे कि आदमियों के मरने का दुख कम हो सके। हातांकि पाकिस्तान में आदमियों के जलने से ज्यादा हवाई जहाज के जलने का दुख मनाया जा रहा था। एक मंत्री ने तो सलाह डे डाली कि भारत में तो रोज, संवेदना संदेश भेजे जा सकते है क्योंकि वहां तो रोज दुर्घटनायें होती रहती है।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति ओबामा के पास पहुंच गये। वे ओसामा को खिलाने के लिये ओबामा से रकम लेते रहे थे। पहले खबर उड़ी थी कि ओसामा टायफाइड से मर गया है तो ओबामा ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति को बहुत डांटा था। कहा था कि ओसामा मरेगा तो अमेरिका की गोली से ही। उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति को वह गोली भी दिखाई थी जिस पर ओसामा का नाम लिखा था। अभी तक रहस्य है कि ओसामा बिन लोदन टी.बी. से मरा था या अमेरिका की गोली से। तो पाकिस्तान के राष्ट्रपति गिड़गिड़ाये "हूजूर अमेरिका, हमारा पांच हजार करोड डालर का नुकसान हो गया है। वैसे रकम देना जरूरी नहीं है क्योंकि जो आपका दुश्मन है न चीन, वह सात हजार करोड़ देने तैयार है।

ओबामा चैंके "उस कम्युनिस्ट से तुमने ले तो नहीं लिये। कम्युनिज्म एक गलत अर्थ व्यवस्था है। सही तो पूंजीवादी व्यवस्था है।" पाकिस्तान के राष्ट्रपति बोले "हूजूर उससे रकम लेने में पंूजीवाद को ही फायदा हैं उसके सात हजार करोड़ खर्च होंगे और पूंजीवाद के सात हजार करोड़ बचेंगे।" पर पूंजीवाद अपनी रकम बचाना नहीं चाहता था। उन्होने तत्काल एक जूं निकाला और उनको दे दिया। इधर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री चीन गये और उनसे सात हजार करोड़ ले आये। पाकिस्तान लौट कर दोनो ने एक सौ सत्ताइए शहीदो को श्रद्धांजली दी जिन्होने देश हित में जान दे दी थी। अब दोनो इन्तजार कर रहे है "कि देश हित में कुछ और लोग फिर शहीद हो" और फिर देश का हित हो।

एक आवश्यक बुराई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेताजी बोले (वे चुप कम रहते थे) “मेरे बेटो, मैं तुम्हारे लिये एक आवश्यक बुराई हंू। तुम चाहते हो कि मैं न रहूॅ। पर मैं चाहता हूॅ कि तुम लोग रहो और मुझे वोट और नोट देते रहो। जितने लोग चाहेंगे कि मैं न रहूॅ उतना ही मेरा जनाधार बढ़ेगा। समझ लो कि हमारा एक परिवार है। परिवार में बेटा चाहता है कि बाप न रहे, बाप चाहता है कि बेटी न रहे, सब चाहते है कि उसके अलावा कोई न रहे पर पैसा भरपूर रहे कल्लू ने सोचा कि आज नेता कहां माक्र्स के सिद्धांत झाड़ रहा है। उसके अन्दर कहीं माक्र्स तो नहीं घुस गया है। उसने नेतानी जी से कहा “बाई साहब कोई झाड़ने वाला ले आऊं। इसके अन्दर लिन्डन वी जानसन घुसेला है। यह अभी माओवादी हो जायेगा”। उच्छ्वास लेकर मेडमनी ने कहा “भैया तुम लोगो का ही सहारा है। अच्छा देख परख कर झाडूलाल लाना। आजकल वहां भी मिलावट चल रही है। सब जगह “मेड इन चाइना” आत्माओं का भण्डार है। कहते लिन्डन वी जानसन की आत्मा है और घुसा देते है महात्मा गांधी की आत्मा। ऐसा हुआ तो हम सब बरबाद हो जायेंगे। वे सब बच्चो को लंगोटी पहना देंगे। इससे तो यह “फाॅरेन” की आत्मा ठीक है।”

उधर नेता जी बोले जा रहे थे। “कुछ आदमी जिसमें मेरे घर वाले भी शामिल है झाडूलाल को लाने का सोच रहे है”। हालांकि झाडूलाल भी एक असफल नेता है। तभी वह भीड़ के बजाय एक परिवार को ही मूर्ख बना पाता है हमें देखो, हम पूरे देश को मूर्ख बना रहे है।

“अब देखो सचिन खेलने से सन्यास नहीं ले रहे। हम उन्हें राज्य सभा का सदस्य बना कर उनका बल्ला रखवा देंगे उधर। अमिताभ बच्चन के स्टार बहुत ऊॅचे थे, हमने उन्हें बदनाम कर दिया। एक दांव में ही टें हो गये है। कि नहीं हम एक आवश्यक बुराई ?

“मान लो, भगवान तुम्हारी इच्छा पूरी भी कर देता है और मेरा हेलीकाफ्टर दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है, तो मेरे प्यारे बच्चो, तुम अनाथ हो जावोगे। रिश्वत देने के लिये भटकते फिरोगे। कोई तुमसे रिश्वत नहीं लेगा। फिर क्या करोगे ? दूसरा बाप ढूंढते फिरोगे। परेशान हो जाओगे। तो फिर क्यों सोचते हो कि मैं मर जाऊॅ। तुम जिस तरह से समाज के लिये आवश्यक बुराई हो उसी तरह से मैं तुम्हारे लिये। मेरे दलालो, मैं मर जाऊंगा तो तुम किसके नाम से रिश्वत लोगे। जनता नाम की नहर दूसरे का बन्जर खेत सींचने लगेगी। तो चमचों, क्यों न हम “मा विद्धेशामहे” (एक दूसरे से द्धेष न करें) सह वीर्य “करवा वहे (एक दूसरे को समृद्ध करें शिष्यों, समाज में जहां अच्छाइयां होना चाहिये वहां बुराइयां भी होना चाहिये। अच्छाइयां, बुराइयों पर पलती है। अच्छाइयां, बुराइयों की आइना है। बुराइयों के बेडरूम में अच्छाइयां ड्रेसिंग टेबिल है। बुराइयों के

ड्राइंगरूम में अच्छाइयां टंगी हुई पेटिंग है बुराइयों के आटे में नमक बराबर अच्छाइयां भी होना चाहिये। तभी बुराइयों का स्वाद निखरता है।

"बच्चो, मेरा यह कहना नहीं है कि तुम लोग अच्छे हो जाओ, फिर तो धरम रसातल में चला जायेगा। बुराइयों पर ही ये धरम और दुनिया टिकी है। इस दुनिया को टिका कर रखना है। रामायण रावण पर टिकी है और महाभारत धृतराष्ट्र पर। धर्म ग्रन्थों में जहां देखा बुराइयों को बोलबाला है, सारी दुनियां अच्छी होती तो अच्छाइयों की क्या जरूरत थी ? बुराइयां है तो जनता है। जनता है तो हम है। हम हैं तो राजनीति है। बुराइयां है तो राजतंत्र, प्रजातंत्र, सोशालिज्म, कम्यूनिज्म, पंूजीवाद, तानाशाही, पंचायत, पुलिस, न्यायपालिका, साधुलोग, दार्शनिक यानि समाज का हर ताना बना बुराइयों पर आधारित है। तुम अच्छे होकर क्या समाज को तोड़ना चाहते हो। मेरे चमचे बने रह कर समाज पर इतनी कृपा तो करो कि वह बचा रहे। जनता आशा भरी नजरो से तुम्हे देख रही है। उसका दिल मत तोड़ो।"

तो कल्लू, झाडूलाल को मत ढूंूढो, मुझमें से माओत्से तंुग या किसी और की आत्मा को बाहर निकालने के लिये, मैं खालिस भारतीय हूॅ। मुझसे भाषण देना सीखो, जिससे मेरे उत्तराधिकारी बन सको, हे नई पीढ़ी के बेइमानो, जनता की ईमानदारी की गाढ़ी कमाई पर गुलछर्रे उड़ाओ। तुम देश के भविष्य हो। कभी खुद को ईमानदार मत कहो, जैसे हो वैसे ही रहो। यही ईमानदारी है। खुद को ईमानदार कहने वाले सबसे ज्यादा बेईमान है। उनसे दूर रहो। उन्हें छेड़ो मत वे खुद की मौत ही मरेंगे। खुद के ही वजन से पिच जायेंगे। आपस में लड़ मरेंगे। बस, तुम लोग एक दूसरे से मत लड़ो। एक दूसरे को बचाते रहो। तभी देश जिन्दा रहेगा। तुम हो तो देश है।

निराधार कार्ड

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आधार कार्ड के सूचना वाले हिस्से में लिखा है कि आधार कार्ड पहचान का प्रमाण पत्र है नागरिकता का नहीं। यह एक भारतीय नागरिक का अपमान है। यदि आधार कार्ड भारतीय नागरिकता की पहचान नहीं है तो इसे बनवाया ही क्यों जाता है ? क्यों भारत के अरबों रूपये इसमें फूंक डाले।

आधार कार्ड बनने के पहले संसद में जोरदार बहस चली थी। अधिकतर सांसदों ने इसकी उपयोगिता पर उंगली उठाई थी। पर भारत शासन उसकी हठ पर अड़ा रहा। और जनता की गाढ़ी कमाई को एक निरर्थक ही कागज पर फूंक दिया गया।

आधार कार्ड यदि नागरिकता की पहचान नहीं है तो इसके आधार पर मतदान नहीं किया जा सकता। आधार कार्ड धारक को कानूनन रूप से मतदान का अधिकार नहीं हैं क्योंकि मतदान का अधिकार केवल भारतीय नागरिक को है। आधार कार्ड धारक को पीठासीन अधिकारी मतदान से रोक सकते है। वही क्यों ? कोई भी भारतीय नागरिक उसे मतदान करने से रोक सकता है। यदि आधार कार्ड नागरिकता की पहचान नहीं है तो सरकार यह स्वीकार कर रही है कि ये कार्ड विदेशियों को भी दिये जा रहे है। यह एक भयानक बात है क्योंकि आधार कार्ड के ऊपर भारत सरकार का चिन्ह्न है। यह वही पवित्र चिन्ह्न है जो भारतीय ध्वज के ऊपर भी है। फिर यदि ये पहचान पत्र विदेशियों को भी दिये जो रहे है तो सरकार यह स्वीकार कर रही है कि उसकी व्यवस्थायें नियंत्रण के बाहर तक भ्रष्ट है।

कहा गया था कि आधार कार्ड आने पर अन्य किसी कार्ड की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, न तो वोटर आई डी की और न ही राशन कार्ड की भी। इस कार्ड में सारे कार्डो का समावेश होगा। पर यह तो कुछ भी न निकला। और भारत सरकार ने न कुछ के लिये अरबों रूपये जनता के फंूक दिये।

इस कार्ड को बनवाने के लिये मालूम नहीं कितने कार्य दिवसो का नुकसान हुआ है। कार्ड बनवाने के केन्द्रो में सुबह से शाम तक पंक्ति लगी रहती है। भारत की जनता

को व्यवस्था ने इतना डरा दिया है कि सरकार के कहने पर वह कुछ भी करने के लिये डर कर तैयार हो जाती है। परिचय में यह भी लिखा गया है कि आधार भविष्य में सरकारी और गैर सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने में उपयोगी होगा। इसका मतलब है कि इस कार्ड के आधार पर विदेशी लोग भी सरकारी सेवाओं का लाभ उठा सकते है। इस घोषणा से भारतीय नागरिकों के अधिकार विदेशियों द्वारा छीना जा सकेगा। और ऐसा होगा भी।

हर पोस्ट आफिस में हजारों से लाखों आधार कार्ड वितरण के लिये पड़े है। जहां पोस्ट आफिस ने स्टाफ कम कर दिया है वहीं एक अनावश्यक बोझ पोस्ट आफिस पर डाल दिया है। इन कार्डो के क्लियरेन्सों के लिये ही कई महीने लग जायेंगे।

एक मनोरंजक वाक्य लिफाफे पर लिखा है आधार के लिये आपको एक बार ही नामांकन दर्ज कराने की आवश्यकता है। पुनः नामांकन करना समय ही बरबादी है। जब यह कार्ड नागरिकता की पहचान नहीं है, तब इस कार्ड में यथाप्रतिज्ञ अन्य कार्डो का प्रतिनिधित्व नहीं है तो इन कार्डो में देश का समय एवं खजाना बर्बाद नहीं किया जाना चाहिये था। ऐसा लगता है जैसे किसी इलेक्ट्रांनिक घराने को लाभ पहुंचाने के लिये यह योजना देश वासियों के कन्धो पर पटकी गई है।

जहां तानाशाही-शासन को सैन्य तानाशाह चलाते है वहीं प्रजातन्त्र को बाबू लोग चलाते है। यह देश बाबूओं के भरोसे चल रहा है उन्हें देश के अरबो रूपये और लाखो कार्यदिवसों के नुकसान से कोई मतलब नहीं रहता है। हल्ला होने पर इससे कोई बड़े घाटे की योजना पटक देते है। बस उनकी मूर्खता को संतुष्टि मिलना चाहिये ये कार्ड। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने बनाये है। इस आम आदमी के पहचान पत्र में केवल जन्म का वर्ष एवं पता लिखा रहता है। इस आम आदमी के पहचान पत्र में केवल जन्म का वर्ष एवं पता लिखा रहता है। इसमें विशिष्ट पहचान, यथा, धन्धा, कार्यक्षेत्र, औसत आस मकान के कमरे, उसमें रहने वाले सदस्यों (राशन कार्ड का समावेश, वोटर आई. डी. के समावेश, पेन कार्ड का समावेश यदि ड्राइविंग लाइसेन्स है या पासपोर्ट है तो उसका समावेश, परिवार कल्याण आपरेशन का समावेश, शिक्षा इत्यादि का समावेश भी) इत्यादि के समावेश के बारे में सोचा जा सकता था। उपरोक्त प्रमाण पत्रों के समावेश में विदेशियों द्वारा आधार कार्ड प्राप्त करने की सम्भावना न्यून हो जाती है। ये मात्र पहचान पत्र है एवं नागरिकता का प्रमाण पत्र है ही नहीं तो ये नगर पालिका एवं ग्राम पंचायत से भी दिये जा सकते है।

बल्कि नगर पालिका या ग्राम पंचायत द्वारा दिये गये प्रमाण पत्र प्रामाणिक भी होते। और यदि बाबुओं को प्रजातन्त्र की चुनी हुई संस्थाओं पर भरोसा नहीं तो ये पहचान पत्र कलेक्ट्रेट के इलेक्शन कमीशन विभाग द्वारा वोटर लिस्ट देख कर दिये जा

सकते थे। इन प्रमाण पत्रों को बनाने में यह सावधानी भी नहीं बरती जा रही। हर केन्द्र को उस वार्ड की वोटर लिस्ट दी जा सकती थी। उसी शख्स का आधार कार्ड बनाया जाना चाहिये था जिसका वोटर लिस्ट में नाम होता।

हिस्टरेक्टामी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मालती, डाॅ शर्मा के पास पहुंची। उस समय डाॅ. शर्मा मरीजो की एक एक शिकायते सुन रहे थे। डा. शर्मा ने उसे इंतजार करने को कहा। वह बाहर बेंच पर बैठ गई। बाहर बेंच पर चार पांच मरीज और बैठे हुए थे। वे सब अलग अलग वार्डो से आये हुये थे। उन सबके हाथो में उनकी केस शीट्स थी।

मालती एक चालीस पैतालीस साल की सुन्दर महिला थी। उसका रंग दमकता गोरा नाक नक्श तीखे और शरीर सुगठित था किसी भी पुरूष की नजर उस पर टिक सकती थी। उसे आस पास के छोरे, नवयुवक और अधेड़ घूरते हुए निकल रहे थे। वह मर्दो की आंखो के घिनौने तीरो की आदी हो चुकी थी। उसका नम्बर आया तो वह कमरे में सटक गई।

डाॅ. शर्मा उस जिला अस्पताल में सिविल सर्जन थे। उन्होनंे मालती से कुछ प्रभावित होकर पूछा बोलिये “मेडम”, आपकी क्या समस्या है। मालती तनाव में थी।

कुछ आवेश में बोली “सर”, मेरी “हिस्टेरेक्टामी” होना है पर कोई डाक्टर करने को तैयार नहीं है। मेरी जच्चादानी से पिछले छः माह से खून जा रहा है।

डाॅ. शर्मा ने उसकी “केस हिस्ट्री” देखी उसमें किसी स्थानीय नेता की रिकमंन्डेशन लगी थी। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि नेताओं की रिकमन्डेशन से डाक्टरों के अहं को चोट पहुंची है। डाॅ. शर्मा ने पूछा “फिर भी “लेडी डाक्टर” क्या कहती है।” मालती ने जवाब दिया “वे कहती है कि जिसकी चिट्ठी लगी है उसी से “आप्रेशन करवा लो”।

ये अस्पताल की आये दिन की शिकायते थी। डाॅ. शर्मा ने उसकी “केस शीट” पर डाॅ. श्रीमती अवस्थी लिख दिया। केस शीट को लेकर मालती “वार्ड” में पहुंची। वह केस शीट उसने डाॅ. अवस्थी को दिखाई डाॅ. अवस्थी “केस शीट” का ध्यान से अध्ययन करने लगी। फिर एक जगह अटक गई उन्होने कहा” लेकिन तुमने “सोनोग्राफी” जो मिसेस बनर्जी की क्लीनिक में करवाई है। न बाबा न, वह बहुत बद्तमीज है वह भरे “वार्ड” में मेरी इज्जत उतार देगी।”

मालती फिर चैराहे पर खड़ी हो गई। वह अपनी गरीबी को कोसने लगी। उसकी आंखो में आंसू आ गये। फिर वह सिसक सिसक कर रोने लगी। इतने में डाॅ. नायडू वहां से गुजरे। डाॅ. नायडू जिला चिकित्सालय में “एनेस्थेटिस्ट” थे लम्बे बाल, साॅवला चेहरा, एक बिन्दास आदमी। उन्होने रोते हुए मालती को देखा। पूछा “बाई क्यों रो रही हो ? मालती ने डबडबाई आंखो से उन्हें देखा और केस शीट उनकी तरफ बढ़ा दी। डा. नायडू ने उस केस शीट को देखा और मामला समझ गये। सारी लेडी डाक्टरो के साथ चाय पीते हुये उन्होने डाॅ. बनर्जी से पूछा “डाक्टर बनर्जी मालती का आप्रेशन क्यों नहीं कर देती।

डाॅ. बनर्जी एक दम उखड़ गई। चिल्लाने लगी। वह हरामजादी, डाॅ. शर्मा के पास चली गई। वह हीजड़ा मेरा क्या बिगाड़ लेगा। देखजी हूॅ कौन कमीनी उसका आप्रेशन करती है। बाकी लेड़ी डाक्टरों ने मुस्कुराते हुये कान पर हाथ रख लिये। जब आप कुछ कर नहीं पाते तो मुस्कुराते हुए चुप रह जाते है। पर डाॅ. नायडू शान्ति से बोले देखो डाॅ. बनर्जी आपको भविष्य में मुझसे आपरेशन करवाना हो तो उस गरीब महिला का आप्रेशन कल के लिये रख लो।

डाॅ. बनर्जी विवश हो गई। डाॅ. नायडू यदि असहयोग करते है तो उनका कम से कम पाॅच हजार रूपये प्रतिदिन का नुकसान हो जायेगा। अब वह मुस्कुरा दी। दूसरे दिन डाॅ. बनर्जी का आप्रेशन का दिन था। उन्होने पाॅच आप्रेशन रखे थे। मालती का आप्रेशन पहला था। आप्रेशन थियेटर में दो मरीज एक साथ ले लिये गये। एक “सीजर”

था और एक "हिस्टेरेक्टामी"। "सीजर" का मतलब होता है आप्रेशन से बच्चे की डिलीवरी और "हिस्टेरेक्टामी" का मतलब होता है बच्चादानी को आप्रेशन से बाहर निकालना।

लेकिन आप्रेशन थियेटर में प्रसव वाली महिला की हालत खराब होने लगी इसलिये पहले उसे करने का निर्णय लिया गया। पर मालती को भी आप्रेशन थियेटर के बाहर नहीं निकाला गया न ही उसके और सीजर वाले केस के बीच में परदा डाला गया। सरकारी अस्पतालो में ये छोटी छोटी सावधानियां है जो बरती जा सकती है। पर जो मरीज घर जा कर भेंट नहीं चढ़ाते उनका इस तरह से या अन्य कई तरीको से अपमानित करने का मौका अस्पताल के कर्मचारी नहीं छोड़ते।

मालती ने देखा कि जो महिला प्रसव पीड़ा से तड़फ रही थी। परिस्थितियां ही आदमी की नफरत और प्रेम तय करती है। आदमी की मानसिकता नहीं, मालती ने सोचा। उसने सोचा, चंूकि वह गरीब है अतः डाक्टर ने फिक्र नहीं की कि वह बाजू का आप्रेशन और उसका बहता खून देख कर कैसा खराब सा महसूस करेगी। बाहर सीजर वाले मरीज के रिश्तेदारो से दाइयां एक हजार रूपये बच्चा देने का मांगने लगी। नहीं तो उन निम्न श्रेणी कर्मचारियों का कहना था कि वह बच्चा नहीं देगी। अखबार और टी. व्ही. आदमियों की खरीद फरोख्त तो बहुत हल्ला मचाते है पर बच्चो की खरीद फरोख्त तो पैदा होते ही चालू हो जाती है।

इसके बाद मालती को बिठाला गया। उसकी पीठ में डा. नायडू ने कोई इन्जेक्शन लगाया और उसे जल्दी लिटा दिया। मालती के नाभि के नीचे का हिस्सा बिल्कुल चेतना विहीन हो गया। इसके बाद उसे नहीं मालूम कि डाक्टर लोग डेढ़ घंटे तक क्या करते रहे।

डेढ़ घंटे बाद डाॅ. बनर्जी ने पसीना पसीना होकर उसे उसकी जच्चादानी बतलाई जो लगभग बड़े बेंगन के आकार की थी। उसमें जगह-जगह से गठाने अलग से थी। उसने डाक्टर बनर्जी और डाक्टर नायडू को अत्यन्त कृतज्ञता से देखा। एक गरीब रूपये देकर कृतज्ञता का ज्ञापन नहीं कर सकता बस शरीर की भाषा से ही कर सकता है।

हिन्दी की आर्थिक सेवा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एन. डी. मेरी दुकान पर हर माह आ धमकते है और मुझसे हिन्दी की सेवा करवाते रहते है। वे हिन्दी साहित्य के कारखाने है वे किसी एक विधा के ही होने में विश्वास नहीं करते। वे पहले चुटकुले लिखते लिखते व्यंग्य लिखने लगे। मुक्तक लिखते लिखते महाकाव्य पर उतर गये और लघु कथाओं से उपन्यास पर चढ़ गये। किसी पत्रिका ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे उस पत्रिका के दस ग्राहक बनायेंगे तो उनके कचरे को वह झेल लेगी। बस उन्होने हिन्दी सेवा की दुहाई देकर मुझे उस ना समझ में आने वाले साहित्य का ग्राहक बना दिया।

वे मुझसे हिन्दी की सेवा करवाते रहे पर उस पत्रिका ने उनकी कहानी नहीं छापी। इसी बीच वे भोपाल चले गये। भोपाल में शताधिक हिन्दी संस्थायें है। वे उनमें से किसी एक के जाल में फंसना चाहते थे। पर जाल उन्हें देख कर सुकड़ जाते थे । फिर भी किसी जाल को उन्होने फंसा लिया। उन्हें उस संस्था के क्षेत्रीय अध्यक्ष की नौकरी मिल गयी। वह संस्था यदा कदा बडी पार्टियां आयोजित कर हिन्दी की सेवा करती थी। उसी पार्टी के लिये उनसे भी चन्दा उगाहने का काम लिया जाता था।

वे एक दिन दुकान पर आये और पांच सौ रूपये में मुझसे हिन्दी की सेवा करवाने लगे। मैं इस तरह की हिन्दी सेवा से कांपने लगा था। मैनें हिन्दी के उस प्रतिनिधि के हाथ जोड़े। वे मुझे डांटने लगे, बोले हिन्दी राष्ट्र भाषा है। उसकी सेवा को मना करना राष्ट्र द्रोह है। मुझे तुझसे ऐसी आशा नहीं थी। तू रजनीकांत को देख। वह हिन्दी की सेवा करने के लिये हिन्दी फिल्मों तक में काम करने लगा है और एक तू है कि महज पाॅच सौ रूपये के कारण देश सेवा से मुकर रहा है।

मैने जवाब दिया "आप हिन्दी सेवा करवाते करवाते मुझसे अब तक पांच हजार रूपये झटक चुके है। "यह सेवा कब तक चलेगी। आप मुझसे तो मुझसे, मेरे ग्राहको तक से हिन्दी सेवा करवाने लगे है। आपके कारण मेरी ग्राहकी कम होती जा रही है। मुझे तो शक है कि उस हिन्दी का कोई अस्तित्व भी है जिसकी सेवा आप मुझसे करवाते है।"

उन्होने मुझे उनकी कार में बिठाला और एक मकान के सामने ले गये। उस भव्य मकान का नाम हिन्दी कुटीर था। वह उन्हीें का मकान था। उसमें रहने वाले उनके

पविवार के लोग हिन्दी सदस्य थे। उस भवन के आगे हिन्दी सेवा की मूल्य दर लिखी हुई थी। साधारण सेवा सौ रूपये में, रजत सेवा एक हजार रूपये में और कनक सेवा दस हजार रूपये में।

वे जबरदस्ती लोगो से हिन्दी की सेवा करवाते थे। मैनें व्यंग्य से कहा आप अपने को हिन्दी सेवक कहते है पर खुद का नाम एन. डी. लिखते है। नारायण दास क्यों नहीं लिखते ? वे बोले "यह हमारा और हिन्दी का व्यक्तिगत मामला है। तुम हमारे और हिन्दी के बीच में आने वाले कौन होते हो ? मैनें कहा "नहीं आऊंगा। पर यदि मैं आपको पांच सौ रूपये नहीं दूंगा तो क्या हिन्दी मुझसे सेवा नहीं करवायेगी ?

मेरे घर में उस दिन पैसे नहीं थे। हिन्दी के उस कर नुमाइन्दे ने मेरी जेब में हाथ डाला और पांच सौ रूपये निकाल लिये। मैनें कहा "मेरे घर में गेहूॅ नहीं है। ये रूपये मैं गेहूॅ खरीदने के लिये रखे हुये हूॅ।" उन्होने बेशर्मी से जवाब दिया "देश में एक तिहाई लोग भूखे मरते है पर हिन्दी बोलना नहीं छोड़ते। एक तुम हो जो हिन्दी के लिये पाॅच सौ रूपये नहीं दे सकते "नाऊ गेट लास्ट"। राजधानी के हिन्दी के बरगदो से मेरा अनुरोध है कि वे कार्यक्रमों के लिये क्षेत्रीय प्रतिनिधियों से चंदा इकट्ठा करवाना बंद कर दें अन्यथा हिन्दी के लिये यू ही लूटामारी चलती रहेगी। वे हिन्दी के नाम पर गुलछर्रे उड़ाना कृपया बन्द कर दे

भारत की शताब्दी की समीक्षा
(सितारो भरा आकाश)

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कृति से कर्ता तक पहुंचा जा सकता है और उसे देखा जा सकता है। यही है समीक्षा का उद्देश्य। ईक्षण का तात्पर्य होता है देखना। समीक्षा का मतलब है सम्यक पूर्वक देखना। आलोचना का मतलब है सही प्रकार से न देखना पर समालोचना का तात्पर्य होता है सम्यक प्रकार से देखना।

जब हम "भारत की शताब्दी नामक" पुस्तक का गहराई से अध्ययन करते है तो कुछ तथ्य लेखक के बारे में स्पष्ट रूप से उभर कर आ जाते है। वे यह हैं कि कमलनाथ उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ होने के साथ एक उच्चकोटि के अर्थशास्त्री भी है। केवल अर्थशास्त्री ही नहीं बहुविद है, एक इतिहसज्ञ है, एक भविष्य दृष्टा है, एक विश्लेषक है, एक कवि हृनदय है, विनम्र व्यक्ति है और सच्चे देश भक्त है। वे एक दार्शनिक राननीतिज्ञ है।

"भारत की शताब्दी" एक पद्यात्मक अर्थशास्त्र है। उसे पड़ने पर कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर की "गीतान्जलि" की याद आ जाती है। मैने डाम मारिस की "आन्सर्ड

बाई फ्लूट" पढ़ी है वह भी "भारत की शताब्दी" के आगे कुछ नहीं है। यह एक एतिहासिक दस्तावेज है।

लेखक ने समृद्ध एवं चतुर इन्डिया की, ईमानदारी से पसीना बहाने वाले भारत के साथ सुन्दर तुलना की है। उस समृद्ध इंडिया का "रा मटेरियल" वंचित भारत है। उस भारत के ऊपर इंडिया का भवन खड़ा है। इस तरह भारत इतिहास है और "इंडिया" भविष्य। क्योंकि भारत को समृद्ध होना ही है पर तब वह समृद्ध भारत होगा जो कि वह था ही। भारत की समृद्धि श्री की लेखक में सुन्दर विवेचना की है कि बुद्धकाल से लेकर आज से तीन सौ वर्ष पूर्व तक एशिया विशेषकर भारत से विश्व का पच्चीस प्रतिशत व्यापार संचालित होता था। भारत रत्न जे.आर.डी.टाटा ने भारत को एशिया का सोया हुआ व्याघ्र कहा है। (उपरोक्त एवं आने वाले समस्त कथन इसी पुस्तक से लिये गये है) इससे स्पष्ट होता है कि समृद्धि केवल व्यापार के माध्यम से ही अर्जित की जा सकती है। और व्यावार मात्र पारस्परिक विनिमय से ही बढ़ाया जा सकता है। व्यापार एक तरफा नहीं होता, वह लूट हो जाती है। इस तरह लेखक की "अर्थशास्त्रिक इतिहास" पर पकड़ का आभास होता है।

लेखक ने भारत के अर्थशास्त्रिक इतिहास के तीन परिवर्तन बिन्दु बतलाये हैं पहला मोड अंग्रेजों के द्वारा भारत को उपनिवेष बनाने पर है। इस अन्धकार समय में भारत का शक्ति के बल पर बलात् शोषण हुआ। यहां का "रा मटेरियल" ले जाया जाकर, फिनिश्ड प्रोडक्ट में बदल कर, पूरे विश्व में बेचा गया। यहां तक कि यहां के "मेन पावर" का भी दोहन किया गया। उसका उपयोग भी "रा मटेरियल" की तरह किया गया। यहां के ज्ञान का दोहन भी। जैसे जगदीश चन्द्र बसु के कई अविष्कार चुरा कर उस पर "मेड इन इग्लैड" का ठप्पा लगा दिया गया।

दूसरा महत्वपूर्ण मोड़ "फ्रीडम एट मिड नाइट" यानि 15 अगस्त सन् 1947 को आया। उस समय यह व्याघ्र पिन्जरे में अपने ही दम पर छूटा। उस समय भारत का खजाना खाली था। पंडित जवाहर लाल नेहरू के पास सेना, कार्यपालिका एवं देशवासियों को खिलाने में पसीना आ गया होगा, साथ में लाखो शरणार्थियों को ठहराने एवं दो जून की रोटियां जुटाने की कोशिश। तो 15 अगस्त सन् 1947 से सन् 1991 तक का समय पैरों पर खड़े होने का समय था। ऐसे समय में भी "बुद्धा स्माइलिंग" एवं दूसरा आणविक परीक्षण कर भारत ने बतला दिया कि वह बगैर किसी वैशाखी के खड़ा होने और दौड़ लगाने में सक्षम है। वह विश्व का सफलतम प्रजातंत्र है। सही शब्दो में सफलतम धर्म निरपेक्ष प्रजातंत्र।

तीसरा महत्वपूर्ण मोड़ सन् 1991 की दोपहरी का समय था तब तत्कालीन वित्तमंत्री मनमोहनसिंन ने बजट प्रस्तुत करते समय क्रांतिकारी सुधारों को लागू किया।

उन्होने "मुक्त व्यापार" को देश में लागू किया, क्योंकि व्याार "लें और दें" के सिद्धांत से चलता है। उसी से देश में समृद्धि आती है, जीवन स्तर ऊपर उठता है, आम आदमी जाग कर व्यापार की नई विधियां अपनाता है, व्यापारी प्रतिस्पर्धा का सामना कर उत्पादों की गुणवत्ता सुधारता है, उत्तम आधुनिक तरीके अपनाता है और "आर एण्ड डी" विभागो को सुदृढ़ करता है, नये एवं आधुनिक शैक्षणिक विषय पाठ्यक्रमों में लागू होते है, विशेषज्ञों का आदान प्रदान होता है (बौद्धिक सम्पदा का विनिमय) समृद्धि शहरो से गांवो में और शीर्ष से आखिरी व्यक्ति तक पहुंचती है। इन्हें आर्थिक सुधार का नाम दिया गया है। इन्हें लागू करना एक दुधारी तलवार पर नट की तरह रस्सी पर चलना था।

प्रस्तावना में भारत के गौरवमय अतीत का वर्णन है एवं भारतीयों की ज्ञान पिपासा का वर्णन दिया गया है। पाणिनी के व्याकरण और आर्यभट्ट के द्वारा द्विपदी समीकरणों, पाई का मूल्य और यह सिद्ध करना है कि ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है, का वर्णन ऐतिहासिक भारत के तर्कोन्मुख ज्ञान का वर्णन है। उन्होनें स्वयं स्कूल के अध्ययन के समय देखा कि किस तरह बैलगाड़ी को मोटर कार बनाया गया था, भारतीयों में मितव्ययीता का वर्णन किया और कहा कि जिसे पश्चिम, धीमी चाल कहती है वह दरअसल संभल कर चलना है।

(पुस्तक में वर्णित वैज्ञानिको के अलावा चरक, सुश्रुत, वराहमिहिर, वाणभट्ट, भास्कराचार्य आदि अनेक और भी वैज्ञानिक एतिहासिक काल में हुये है जिनका सन्दर्भ पाश्चात्य साहित्य में हुआ है पर इन सबका समावेश सम्भवतः न तो सम्भव था और न ही आवश्यक।)

प्रथम अध्याय में छिन्दवाड़ा जिले की भौतिक उन्नति का प्रक्षेपण भारत की उन्नति में किया गया है। छिन्दवाड़ा एक आदिवासी बहुल इलाका है, लोकसभा में जिसका प्रतिनिधित्व कमलनाथ 32 वर्षो से निरन्तर करते आ रहे है। इसमें शक नहीं कि छिन्दवाड़ा जिले की भौतिक प्रगति में कमलनाथ का सम्पूर्ण योगदान रहा। उनका मतदाताओं से लगातार जीवन्त सम्पर्क रहता है। छिन्दवाड़ा जिले की प्रगति के बारे में कई किंवदंतियां है, कि उनके कम्प्यूटर में पूरे बीस लाख छिन्दवाड़ा वासियों का वृतान्त है, कि वे आदिवासियों की गुमी हुई मुर्गियों, बकरियों तक की ढंूढने में सहायता करते है। व्यक्तिगत सहायता तो वे खैर करते ही है। शादियों और बीमारियों में वे आगे बढ़कर आर्थिक सहायता करते है। आर्थिक सहायता में एक सेवा का भाव रहता है। वे यथा सम्भव लोगो के दुख-सुख में शामिल होते है।

लेकिन जिस तरह कमलनाथ छिन्दवाड़ा में आर्थिक क्रांति लाये है (रिन, रेमण्ड, बजाज आदि अनेक कम्पनियां इसकी गवाह है) उसी तरह कमलनाथ भारत के

स्थायित्व, प्रगति और कानून के शासन में कांग्रेस का योगदान मानते है। लेखक यहां प्रहलाद की "वेस्ट सेलर द फारच्यून एंड द बाटम आॅफ द पिरामिड" का उदाहरण देते हुए कहता है कि क्रय शक्ति ऊपर से अधिक निचले आधार पर आ गई है। लेखक मोबाइल फोन और एयर ट्रेवल्स का उदाहरण देते है। यह सही है कि मोबाइल निचले स्तर पर आवश्यक हो गया है पर हवाई जहाज यात्रा नहीं क्योंकि मोबाइल एक चलित फोन, एक फोन, एक फोन बुक, एक रजिस्टर, एक केलेन्डर, एक गेम, एक ग्रामोफोन, इत्यादि है पर हवाई जहाज यात्रा उतनी लोकप्रिय नहीं हुई है लेखक का यह कहना सही है कि संसाधनो का उत्पादन नहीं, उनका व्यापार, समृद्धि लाता है। यह सही है कि अवसर का लाभ उठाने की त्वरित बुद्धि, उद्यमशीलता और जिजीविशा भारत वंशियों का जन्म जात गुण है। जो कल तक शरणार्थी थे वे भी आज भारत के विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं। यह गर्व की बात है कि मुम्बई के डब्बावालो की दक्षता जनरल इलेक्ट्रिक और मोटोरोला कम्पनी के बराबर है (यह "फोब्स" का कथन है)

दूसरे अध्याय में भारत के औद्योगीकरण के युग के बारे में चर्चा की गई है। उसमें जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी और विश्वैश्वरैया को याद किया गया है जिनका प्रभाव आज भी और भविष्य में भी भारत के विकास पर पड़ता रहेगा। मगर 1947 से 1991 का समय लायसेन्स राज का समय था।

अध्याय तीन को "आज का समय" के नाम से याद किया है। भारत को 1991 में तीन बार सोना ब्रिटेन में बेचना पड़ा अन्यथा दीवालिया होने की नौबत आ गई थी। भारत के औद्योगीकरण की नींव युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा डाल दी गई थी। इस समय तक भारत कई अनुभव अर्जित कर चुका था। वह चीन से युद्ध में हार गया था। हालांकि लाला बहादुर शास्त्री एवं श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत को आत्म विश्वास से भर दिया था। (यहां यह तथ्य आश्चर्यजनक है कि कमलनाथ जैसे स्पष्ट वक्ता ने लालबहादुर शास्त्री और अटलबिहारी वाजपेयी को उनका श्रेय देने में कंजूसी क्यों की ?) यह सही है कि 1991 के बजट प्रस्तुतीकरण और नीतियों पर मुहर लगने के बाद ही भारत ने व्यापारिक दौड़ चालू की। मन्दी के दौर में पश्चिमी भेडिये इस व्याघ्र के मरने की आशा में दांत नुकीले कर रहे थे।

अध्याय 4 को "इसी बीच" का नाम दिया गया है। भारत में प्रधानमंत्री "आयाराम गयाराम" हो गये थे। श्रीमती इंदिरा गांधी के अतिरिक्त गुलजारी लाला नंदा, मुरार जी देसाई, चैधरी चरणसिंह, चन्द्रशेखर पी. नरसिंहराव, देवगौड़ा एवं अटल जी (2 बार) प्रधानमंत्री बने। तीसरी बार अटल जी ने सत्र पूरा किया था। इन परिवर्तिनों के बीच प्रजातंत्र स्थायी रहा। इन अध्यायो में आंकड़ो द्वारा समझाया गया है कि उदारीकरण

आवश्यक था। मेरे विचार में पी नरसिंह राव ने हवाला जैसा जोकर पना करके कांग्रेस को सबसे ज्यादा नुकसान पहंुचाया।

अध्याय पांच सृजनशीलता के “ये आयाम” के नाम से है। यह सही है कि भारत के वर्तमान रूप को देने में कमलनाथ का महत्वपूर्ण योगदान है (ऐसे समय में जबकि गठबन्धन सरकार हो, भारत को आगे ले जाना कितना मुश्किल होगा ?) कमलनाथ उद्योग एवं व्यापार मंत्री रहे हैं 2007 में उन्होनें “दोहा” सन्धि में भाग लिया है। भारत आज विश्व के लिये जो चुनौती बना है वह उन्हीं के मंत्रित्व काल में हुआ है। आज भारत में पत्ता गिरता है तो विश्व में अन्धड़ आने लगता है। इसीलिये यह पुस्तक संग्रहणीय है कि इसमें उन तथ्यों को दिया गया है जिनसे भारत को यह गौरव प्राप्त हुआ है।

अध्याय 6 में फैक्ट्रियों की गहमागहमी के बारे में बतलाया गया है। कई फैक्ट्रियां उदारीकरण के बाद भारत की तरफ दौड़ पड़ी। उसका कारण भारत का राजनैतिक स्थायित्व ही है। जबकि सारे देश धड़ाधड़ दीवालिया हो रहे थे, कई अन्त्तराष्ट्रीय बैंक बंद हो चुके थे, अमेरिका भी बेरोजगारपन को झेल रहा था, भारत का स्थायित्व दुनिया को चकित करने वाला था। कई अन्त्तराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत नें ही जिन्दा रखा। (भारत का आध्यात्म भी एक बहुत बड़ा उद्योग है।)

अध्याय 7 से 10 तक उद्योग क्षेत्र में कमलनाथ के योगदान के बारे में है। उनकी यह स्वीकारोक्ति एक विनम्र स्वीकारोक्ति है जो कि एक दस्तावेज भी है। इसमें कमलनाथ ने सुझाव दिये है वे ध्यान देने योग्य है। भारत अभी भी कृषि प्रधान देश है। ऐसे में कृषि उत्पादो के प्रसंस्करण की कमी बेहद अखरती है। पहले अध्यायो मेंें कहा जा चुका है कि “रा मेटेरियल” नहीं बल्कि “फिनिसड प्रोडक्ट” ही व्यावार में समृद्धि दिलाता है। इस और कृषको का ध्यान जाना चाहिये। पारम्परिक खेती के स्थान पर परिष्कृत खेती अपनाना चाहिये। आज भी चीन के मुकाबले में हम पीछे है। जहां मित्तल, बी.एच.ई.एल., भिलाई, कुद्रेमुख, एल्युमिनियम उद्योग आदि भारत को भारी उद्योग में वर्चस्व दिलाये हुये है। आटोमोबाइल के तैयार माल पर और ध्यान दिया जाना चाहिये। इन्हीं अध्यायों में लेखक ने भारत के धीमे चलने को लेखक ने संभलकर चलने की संज्ञा दी है। इन्हीं अध्यायों में लेखक ने भारत की बौद्धिक सम्पदा की प्रशंसा भी है। अम्बानी, बिड़ला, बजाज आदि के भारत निर्माण में योगदान को स्मरण किया गया है। भारत में विश्व के सर्वाधिक अरबपति है। भारत का मध्यम वर्ग एक झटका सहने वाला वर्ग है। यही सबसे बड़ा बाजार है। भारत के फिल्म उद्योग ने हिन्दी को पूरे विश्व में फैला दिया है। आज अन्त्तराष्ट्रीय कम्पनियों को हिन्दी में उनका प्रचार करना मजबूरी है। रजनीकांत को भी स्मरण किया गया है। हिन्दी के महत्व को इसी

तथ्य से समझना चाहिये कि जो स्टार न्यूज, स्टार प्लस शुरू में मात्र एक घंटे का कार्यक्रम देते थे अब उन्हें चैबीस घंटे का कार्यक्रम देना पड़ रहे है। आज हिन्दी सीरियल कम्पनियों को बढ़ावा देते है और कम्पनियां इन "सीरियल्स" को । आज की प्रगति को सन् 2020 में प्रस्थापित किया गया है। जिसमें बतलाया गया है कि सन् 2020 तक भारत एक सबसे शक्तिशाली राष्ट्र होगा। आमीन !

अध्याय 12 उपलब्धि और पूर्णता के नाम से है। यह अध्याय किसी अन्य लेखक से लिखवाना चाहिये था। इसमें कमलनाथ के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं भारत की व्यापारिक उन्न्ति के बारे में उनके योगदान के बारे में होना चाहिए था। सचमुच में जिसका जन्म कोलकत्ता में हुआ हो, शिक्षा देहरादून में हुई हो और कर्मस्थली छिन्दवाड़ा हो वह देश के आकाश पर छा गया। ऐसे कर्मयोगी को यह अध्याय समर्पित होना चाहिये। आज छिन्दवाड़ा और कमलनाथ "सिनोनिम" हो गये है। मैं सन् 2000 में लगभग डाॅ. विष्णुधर द्विवेदी के साथ श्री केदारनाथ जा रहा था तो ऋषिकेश के आगे एक छोटे से गांव में एक होटल में कुछ लोगो ने मुझसे पूछा कि मैं कहां से आया हॅू। जब मैनें छिन्दवाड़ा कहा तो एकदम वे बोले "अच्छा कमलनाथ का छिन्दवाड़ा"।

इतिहास लिखने में साहस की कमी एवं पक्षपात कहीं कहीं अखरती है। फिर भी समीक्षित पुस्तक एक नीले आकाश की तरह है जिसमें उद्धरणों के नक्षत्र चमक रहे है। यह पुस्तक कल कल करती हुई एक बहती हुई नदियां है। एक क्रमशः विकसित होता हुआ फूल है जिसमें से ज्ञान के भंवरे निकलते है, छः ऋतुओं के बारह महीने है जो 12 अध्यायों में समाहित है। यह पुस्तक राजकमल प्रेस से प्रकाशित है। कागज और छपाई दोनो उत्तम है। मूल्य 600 है। इसके बाद भी पुस्तक क्रयणीय है। यह एक सन्दर्भ पुस्तक के रूप में हर पुस्तकालय एवं हर बुद्धिजीवी के पास होना चाहिये। यह एक एतिहासिक दस्तावेज है।

स्तन का कैंसर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जीव जंतुओं को दो भागो में बांटा गया है।

(1) मेरू दंड रहित: जिनमें रीड़ की हड्डी नहीं है।

(2) मेरू दंड सहित: जिनमें रीढ़ की हड्डी है।

जिनमें रीढ़ की हड्डी नहीं है उस वर्ग में अमीबा, केंचुये, गोंच, कोरल्स, सीपी, मच्छर, मक्खी, मकड़ी, बिच्छु, वहूटी, पटारें, तिलचट्टे इत्यादि आते है।

रीढ़ की हड्डी वाले जानवरो में मनुष्य, चैपाये, व्हेल, चमगादड़, मछलियां, मेंढ़क, छिपकली, सर्प, मगर, पक्षी इत्यादि आते हैं। रीड ही हड्डी वाले जानवर भी दो वर्गो में बांटे गये है। स्तनधारी और स्तन रहित।

स्तन धारियों में व्हेल, चमगादड़, जानवर और मानव आते है। प्रकृति ने प्रति प्रसवित प्राणी के लिये एक जोड़ी स्तन दिये है। जैसे मानवों में दो स्तन, एवं सुअर इत्यादि में बारह स्तन होते हैं। इसी तरह गायों में दो, स्तन होते है।

मानवों में स्तन

स्तन "सीवेसीयस ग्लेन्ड" का परिवर्तित रूप है इनकी उपस्थिति डेढ़ माह के भ्रूण में हो जाती है। नवजातों में मां के द्वारा प्रदत्त हारमोन्स के कारण दुग्ध स्त्राव हो सकता है जो कि प्राकृतिक है और ये स्वतः बन्द हो जाता है। लड़कियों में दस वर्ष की उम्र में ही स्तन बढ़ना चालू हो जाते है जो माहवारी के पश्चात वयस्को के बराबर होने लगते है। पुरूषों में किशोर अवस्था में कभी-कभी स्तन कुछ बढ़ जाते है। यदि परीक्षण में शेष अवस्थायें सामान्य मिलती है जो चिंता की कोई बात नहीं। हां यदि पुरूषों या महिलाओं के स्तन असमान्य रूप से बड़े होते है तो उनकी शल्य क्रिया की जा सकती है।

कभी-कभी ब्रेस्ट लाइन में (जो बगलो से उदर के निचले भाग तक होती है) अतिरिक्त स्तन होते है। इन्हें मसे के रूप में लिया जा सकता है। उन्हें निकाला जा सकता है।

केंसर के कारण:

महिलाओं में स्तन के केंसर का तीस वर्ष से पचास वर्ष की उम्र तक स्थिर प्रतिशत होता है। पचास वर्ष की उम्र के बाद इनका प्रतिशत तेजी से बढ़ता है पुरूषों में भी स्तन के केंसर होते है पर उनका प्रतिशत बहुत कम होता है।

मुझे दो ऐसी लड़कियों का आप्रेशन करना पड़ा जो अधिक मोटी थी और जिनकी उम्र पन्द्रह वर्ष के आसपास थी । परीक्षण में वे गठाने कैंसर निकली। स्तन निकालने के पश्चात एवं डीप एक्सरे इलाज के बाद भी छह माह के अन्दर वे दोनो सुन्दर लड़कियां मर गई। स्तन के कैंसर के कई अलग-अलग कारण होते है। किन्ही प्रकरणों में वायरस का संक्रमण कारण होता है तो लगभग पांच प्रतिशत प्रकरणों में मां से पुत्री को कैंसर मिल सकता है। मोटी महिलाओं में कैंसर की संभावना अधिक होती है उनमें मृत्युदर भी अधिक होती है जिन महिलाओं के बच्चे नहीं होते या जो महिलायें बच्चो को दूध नहीं पिलाती उन्हें स्तन के कैंसर की सम्भावनायें अधिक होती है। मांसाहारी महिलाओं में जो पशु चर्बी का सेवन अधिक करती है स्तर कैंसर की सम्भावनायें अधिक रहती है। कुछ प्रकरणों में तंग "ब्रेसियरयों" पर दोषारोपण किया जाता है।

अधिकतर प्रकरणों में स्तन कैंसर के कारण अज्ञात रहते है। ओरल पिल्स से कैंसर नहीं होते है।

पहचान:- तीस वर्ष की उम्र के आसपास कोई भी गठान शंकास्पद होती है। महिलाओं को स्वयं उनके स्तन की जांच करते रहना चाहिये। यदि किसी निपल का अन्दर की तरफ खिंचाव हो जाता है या एक निपल दूसरे "निपल" से ऊपर उठ जाता है तो कैंसर के लिये परीक्षण करवा लेना चाहिये। यदि निपल से रक्त स्त्रावण होता है तो कैंसर की संभावना होती है। स्तन की त्वचा यदि संतरे के छिलके की तरह हो जाती है तो कैंसर की संभावना रहती है। बगल में गठानें, बांह में सूजन कैंसर की द्योतक होती है। इसी तरह "क्लेविकिल" की हड्डी के ऊपर की गठान भी कैंसर की ओर इंगित करती है।

कैंसर होने के अन्य लक्षण है, खून की कमी, भूख न लगना वजन कम होना इत्यादि। कुछ प्रकरणों में एक साथ दोनो स्तनों के कैंसर हो सकते है। अमेरिका में हर नौ महिलाओं मे एक को स्तन का कैंसर होता है। महिलाओं के सौ स्तन कैंसर प्रकरणों में एक पुरूष के स्तन का कैंसर हो सकता है। पुरूषों में कैंसर महिलाओं के मुकाबले में तेजी से फैलता है।

फैलाव: स्तन का कैंसर स्तन के अंदर तो फैलता ही है बगल की लसिका ग्रन्थियों में भी फैलता है। दूसरे स्तन में फैल जाता है। सीने के अंदर फैल सकता है। रीढ़ की हड्डियों में फैल जाता है। डिंब में पहंुच सकता है। उदर, गुहा, यकृत एवं दिमाग में फैल जाता है।

विशेष जांचे:- ऐसी कई गठानें होती है जो उतनी हानिकारक नहीं होती अतः जांचो में दो घटक महत्वपूर्ण होते है

(अ) स्तन के कैंसर को उसकी प्रारम्भिक अवस्था में पहचानना

(ब) हानिरहित गठानों से स्तन के कैंसर की अलग पहचान

कुछ विशेष जांचे निम्नानुसार है-

(क) मेमोग्राफी:- मेमोग्राफी में क्ष किरण का उपयोग किया जाता है यह जांच तीस वर्ष की उम्र के बाद उपयोगी होती हैं

(ख) झीनोग्राफी:- चंूकि इस जांच में क्ष किरणों की अधिक मात्रा उपयोग में लाई जाती है अतः इसका उपयोग केन्सर जनित भी हो सकता है।

(ग) थर्मोग्राफी:- केंसर और संक्रमण अधिक तापक्रम उत्पन्न करते है अतः उन्हें हानि रहित गठानों से अलग पहचाना जा सकता है।

(घ) अल्ट्रासोनोग्राफी:- सिस्ट को ठोस गठानों से अलग पहचान करने में सहायक होती है

(ड) सी.ए.टी.

(च) एम.आर.आई. प्रयोगिक अवस्था में है।

(छ) डक्टोग्राफी:- यदि निपल से रक्त स्त्राव होता है तो इसका उपयोग किया जाता है।

(ज) एफ.एन.ए.सी.:- एक सुई द्वारा स्तन की गठान से द्रव निकाला जाता है। यह तरीका सिस्ट को ठोस गठानों से अलग तो करता ही है साथ साथ केंसर कोषो को भी दर्शा सकता है।

एक्सरे हड्डियों में फैले हुये केंसर को और अल्ट्रा सोनोग्राफी उदर में फैले हुये केंसर को खोजने में भी सहायक होती है।

रोकथाम:-

चंूकि कुछ प्रकरणों में स्तन केंसर के कारण मालूम कर लिये गये है अतः उनकी रोकथाम भी की जा सकती है। शिशुओं को स्तनपान कराना स्तन केंसर से बचने का एक सरल उपाय है अतः शिशु जन्म के पश्चात महिलाओं को "फिगर" के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। दूसरी तरफ जिन महिलाओं के अधिक बच्चे होते है उन्हें गर्भाशय के निचले भाग में केंसर की अधिक सम्भावना होती है।

महिलाओं को सलाह दी जाती है कि वे मोटापे से बचें। क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है कि अधिक मोटी महिलाओं में केंसर की सम्भावना अधिक होती है। मांसाहार खाने से स्तन केंसर की सम्भावना बढ़ जाती है। पशु चर्बी का सेवन इस सम्भावना को बढ़ावा देता है।

तंग "ब्रेसरी" पहनने से कोई अधिक लाभ नहीं दिखता। उससे सांस लेने में कठिनाई हो सकती है। इसी तरह पुरूष यदि स्ट्रेप वाले पेन्ट पहनते है तो उन्हें केंसर की सम्भावना बढ़ जाती है।

जिन माओं को स्तन का केंसर होता है उनकी लड़कियों को तीस वर्ष की उम्र से ही मेमोग्राफी करवाते रहना चाहिये।

इलाज:-

स्तन के कैंसर का इलाज शल्य क्रिया के द्वारा किया जाता है। या तो गठान निकाल कर दवाइयां (कीमोथिरेपी) दी जाती है या पूरा स्तन सीने की मांस पेशियां, बगल की गठानों सहित निकाल दिया जाता है। बाद में (कीमोथिरेपी) दी जाती है।

कुछ प्रकरणों में आप्रेशन के पहले और बाद में एक्सरे भी दी जाती है। आप्रेशन के पूर्व एवं बाद में आवश्यकतानुसार मानसिक चिकित्सक की सलाह ली जाती है। मरीज के पुर्नवास के प्रबन्ध भी किये जाते है।

टेमोक्सीफेन स्तन के केंसर की घटनाओं को कम कर देता है पर उसके नुकसान के कारण एक्स एंमेस्टेन (एरोमेनिन) अधिक कारगर पाई गई है।

हिन्दी की आर्थिक सेवा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एन. डी. मेरी दुकान पर हर माह आ धमकते है और मुझसे हिन्दी की सेवा करवाते रहते है। वे हिन्दी साहित्य के कारखाने है वे किसी एक विधा के ही होने में विश्वास नहीं करते। वे पहले चुटकुले लिखते लिखते व्यंग्य लिखने लगे। मुक्तक लिखते लिखते महाकाव्य पर उतर गये और लघु कथाओं से उपन्यास पर चढ़ गये। किसी पत्रिका ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे उस पत्रिका के दस ग्राहक बनायेंगे तो उनके

कचरे को वह झेल लेगी। बस उन्होने हिन्दी सेवा की दुहाई देकर मुझे उस ना समझ में आने वाले साहित्य का ग्राहक बना दिया।

वे मुझसे हिन्दी की सेवा करवाते रहे पर उस पत्रिका ने उनकी कहानी नहीं छापी। इसी बीच वे भोपाल चले गये। भोपाल में शताधिक हिन्दी संस्थायें है। वे उनमें से किसी एक के जाल में फंसना चाहते थे। पर जाल उन्हें देख कर सुकड़ जाते थे । फिर भी किसी जाल को उन्होने फंसा लिया। उन्हें उस संस्था के क्षेत्रीय अध्यक्ष की नौकरी मिल गयी। वह संस्था यदा कदा बडी पार्टियां आयोजित कर हिन्दी की सेवा करती थी। उसी पार्टी के लिये उनसे भी चन्दा उगाहने का काम लिया जाता था।

वे एक दिन दुकान पर आये और पांच सौ रूपये में मुझसे हिन्दी की सेवा करवाने लगे। मैं इस तरह की हिन्दी सेवा से कांपने लगा था। मैनें हिन्दी के उस प्रतिनिधि के हाथ जोड़े। वे मुझे डांटने लगे, बोले हिन्दी राष्ट्र भाषा है। उसकी सेवा को मना करना राष्ट्र द्रोह है। मुझे तुझसे ऐसी आशा नहीं थी। तू रजनीकांत को देख। वह हिन्दी की सेवा करने के लिये हिन्दी फिल्मों तक में काम करने लगा है और एक तू है कि महज पाॅच सौ रूपये के कारण देश सेवा से मुकर रहा है।

मैने जवाब दिया "आप हिन्दी सेवा करवाते करवाते मुझसे अब तक पांच हजार रूपये झटक चुके है। "यह सेवा कब तक चलेगी। आप मुझसे तो मुझसे, मेरे ग्राहको तक से हिन्दी सेवा करवाने लगे है। आपके कारण मेरी ग्राहकी कम होती जा रही है। मुझे तो शक है कि उस हिन्दी का कोई अस्तित्व भी है जिसकी सेवा आप मुझसे करवाते है।"

उन्होने मुझे उनकी कार में बिठाला और एक मकान के सामने ले गये। उस भव्य मकान का नाम हिन्दी कुटीर था। वह उन्हीेें का मकान था। उसमें रहने वाले उनके पविवार के लोग हिन्दी सदस्य थे। उस भवन के आगे हिन्दी सेवा की मूल्य दर लिखी हुई थी। साधारण सेवा सौ रूपये में, रजत सेवा एक हजार रूपये में और कनक सेवा दस हजार रूपये में।

वे जबरदस्ती लोगो से हिन्दी की सेवा करवाते थे। मैनें व्यंग्य से कहा आप अपने को हिन्दी सेवक कहते है पर खुद का नाम एन. डी. लिखते है। नारायण दास क्यों नहीं लिखते ? वे बोले "यह हमारा और हिन्दी का व्यक्तिगत मामला है। तुम हमारे और हिन्दी के बीच में आने वाले कौन होते हो ? मैनें कहा "नहीं आऊंगा। पर यदि मैं आपको पांच सौ रूपये नहीं दंूगा तो क्या हिन्दी मुझसे सेवा नहीं करवायेगी ?

मेरे घर में उस दिन पैसे नहीं थे। हिन्दी के उस कर नुमाइन्दे ने मेरी जेब में हाथ डाला और पांच सौ रूपये निकाल लिये। मैनें कहा "मेरे घर में गेहॅू नहीं है। ये रूपये मैं गेहॅू खरीदने के लिये रखे हुये हॅू।" उन्होने बेशर्मी से जवाब दिया "देश में एक

तिहाई लोग भूखे मरते है पर हिन्दी बोलना नहीं छोड़ते। एक तुम हो जो हिन्दी के लिये पाॅच सौ रूपये नहीं दे सकते "नाऊ गेट लास्ट"। राजधानी के हिन्दी के बरगदो से मेरा अनुरोध है कि वे कार्यक्रमों के लिये क्षेत्रीय प्रतिनिधियों से चंदा इकट्ठा करवाना बंद कर दें अन्यथा हिन्दी के लिये यू ही लूटामारी चलती रहेगी। वे हिन्दी के नाम पर गुलछर्रे उड़ाना कृपया बन्द कर दें।

भारत की शताब्दी की समीक्षा

(सितारो भरा आकाश)

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कृति से कर्ता तक पहुंचा जा सकता है और उसे देखा जा सकता है। यही है समीक्षा का उद्देश्य। ईक्षण का तात्पर्य होता है देखना। समीक्षा का मतलब है सम्यक पूर्वक देखना। आलोचना का मतलब है सही प्रकार से न देखना पर समालोचना का तात्पर्य होता है सम्यक प्रकार से देखना।

जब हम "भारत की शताब्दी नामक" पुस्तक का गहराई से अध्ययन करते है तो कुछ तथ्य लेखक के बारे में स्पष्ट रूप से उभर कर आ जाते है। वे यह हैं कि कमलनाथ उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ होने के साथ एक उच्चकोटि के अर्थशास्त्री भी है। केवल अर्थशास्त्री ही नहीं बहुविद है, एक इतिहसज्ञ है, एक भविष्य दृष्टा है, एक विश्लेषक है, एक कवि ह्नदय है, विनम्र व्यक्ति है और सच्चे देश भक्त है। वे एक दार्शनिक राननीतिज्ञ है।

"भारत की शताब्दी" एक पद्यात्मक अर्थशास्त्र है। उसे पड़ने पर कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर की "गीतान्जलि" की याद आ जाती है। मैने डाम मारिस की "आन्सर्ड बाई फ्लूट" पढ़ी है वह भी "भारत की शताब्दी" के आगे कुछ नहीं है। यह एक एतिहासिक दस्तावेज है।

लेखक ने समृद्ध एवं चतुर इन्डिया की, ईमानदारी से पसीना बहाने वाले भारत के साथ सुन्दर तुलना की है। उस समृद्ध इंडिया का "रा मटेरियल" वंचित भारत है। उस भारत के ऊपर इंडिया का भवन खड़ा है। इस तरह भारत इतिहास है और "इंडिया" भविष्य। क्योंकि भारत को समृद्ध होना ही है पर तब वह समृद्ध भारत होगा जो कि वह था ही। भारत की समृद्धि श्री की लेखक में सुन्दर विवेचना की है कि बुद्धकाल से लेकर आज से तीन सौ वर्ष पूर्व तक एशिया विशेषकर भारत से विश्व का पच्चीस प्रतिशत व्यापार संचालित होता था। भारत रत्न जे.आर.डी.टाटा ने भारत को एशिया का सोया हुआ व्याघ्र कहा है। (उपरोक्त एवं आने वाले समस्त कथन इसी पुस्तक से लिये गये है) इससे स्पष्ट होता है कि समृद्धि केवल व्यापार के माध्यम से ही अर्जित की

जा सकती है। और व्यावार मात्र पारस्परिक विनिमय से ही बढ़ाया जा सकता है। व्यापार एक तरफा नहीं होता, वह लूट हो जाती है। इस तरह लेखक की "अर्थशास्त्रिक इतिहास" पर पकड़ का आभास होता है।

लेखक ने भारत के अर्थशास्त्रिक इतिहास के तीन परिवर्तन बिन्दु बतलाये हैं पहला मोड अंग्रेजों के द्वारा भारत को उपनिवेष बनाने पर है। इस अन्धकार समय में भारत का शक्ति के बल पर बलात् शोषण हुआ। यहां का "रा मटेरियल" ले जाया जाकर, फिनिश्ड प्रोडक्ट में बदल कर, पूरे विश्व में बेचा गया। यहां तक कि यहां के "मेन पावर" का भी दोहन किया गया। उसका उपयोग भी "रा मटेरियल" की तरह किया गया। यहां के ज्ञान का दोहन भी। जैसे जगदीश चन्द्र बसु के कई अविष्कार चुरा कर उस पर "मेड इन इग्लैंड" का ठप्पा लगा दिया गया।

दूसरा महत्वपूर्ण मोड़ "फ्रीडम एट मिड नाइट" यानि 15 अगस्त सन् 1947 को आया। उस समय यह व्याघ्र पिन्जरे में अपने ही दम पर छूटा। उस समय भारत का खजाना खाली था। पंडित जवाहर लाल नेहरू के पास सेना, कार्यपालिका एवं देशवासियों को खिलाने में पसीना आ गया होगा, साथ में लाखो शरणार्थियों को ठहराने एवं दो जून की रोटियां जुटाने की कोशिश। तो 15 अगस्त सन् 1947 से सन् 1991 तक का समय पैरों पर खड़े होने का समय था। ऐसे समय में भी "बुद्धा स्माइलिंग" एवं दूसरा आणविक परीक्षण कर भारत ने बतला दिया कि वह बगैर किसी वैशाखी के खड़ा होने और दौड़ लगाने में सक्षम है। वह विश्व का सफलतम प्रजातंत्र है। सही शब्दो में सफलतम धर्म निरपेक्ष प्रजातंत्र।

तीसरा महत्वपूर्ण मोड़ सन् 1991 की दोपहरी का समय था तब तत्कालीन वित्तमंत्री मनमोहनसिंन ने बजट प्रस्तुत करते समय क्रांतिकारी सुधारों को लागू किया। उन्होने "मुक्त व्यापार" को देश में लागू किया, क्योंकि व्याार "लें और दें" के सिद्धांत से चलता है। उसी से देश में समृद्धि आती है, जीवन स्तर ऊपर उठता है, आम आदमी जाग कर व्यापार की नई विधियां अपनाता है, व्यापारी प्रतिस्पर्धा का सामना कर उत्पादों की गुणवत्ता सुधारता है, उत्तम आधुनिक तरीके अपनाता है और "आर एण्ड डी" विभागो को सुदृढ़ करता है, नये एवं आधुनिक शैक्षणिक विषय पाठ्यक्रमों में लागू होते है, विशेषज्ञों का आदान प्रदान होता है (बौद्धिक सम्पदा का विनिमय) समृद्धि शहरो से गांवो में और शीर्ष से आखिरी व्यक्ति तक पहुंचती है। इन्हें आर्थिक सुधार का नाम दिया गया है। इन्हें लागू करना एक दुधारी तलवार पर नट की तरह रस्सी पर चलना था।

प्रस्तावना में भारत के गौरवमय अतीत का वर्णन है एवं भारतीयों की ज्ञान पिपासा का वर्णन दिया गया है। पाणिनी के व्याकरण और आर्यभट्ट के द्वारा द्विपदी

समीकरणों, पाई का मूल्य और यह सिद्ध करना है कि ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है, का वर्णन ऐतिहासिक भारत के तर्कोन्मुख ज्ञान का वर्णन है। उन्होनें स्वयं स्कूल के अध्ययन के समय देखा कि किस तरह बैलगाड़ी को मोटर कार बनाया गया था, भारतीयों में मितव्ययीता का वर्णन किया और कहा कि जिसे पश्चिम, धीमी चाल कहती है वह दरअसल संभल कर चलना है।

(पुस्तक में वर्णित वैज्ञानिको के अलावा चरक, सुश्रुत, वराहमिहिर, वाणभट्ट, भास्कराचार्य आदि अनेक और भी वैज्ञानिक एतिहासिक काल में हुये है जिनका सन्दर्भ पाश्चात्य साहित्य में हुआ है पर इन सबका समावेश सम्भवतः न तो सम्भव था और न ही आवश्यक।)

प्रथम अध्याय में छिन्दवाड़ा जिले की भौतिक उन्नति का प्रक्षेपण भारत की उन्नति में किया गया है। छिन्दवाड़ा एक आदिवासी बहुल इलाका है, लोकसभा में जिसका प्रतिनिधित्व कमलनाथ 32 वर्षो से निरन्तर करते आ रहे है। इसमें शक नहीं कि छिन्दवाड़ा जिले की भौतिक प्रगति में कमलनाथ का सम्पूर्ण योगदान रहा। उनका मतदाताओं से लगातार जीवन्त सम्पर्क रहता है। छिन्दवाड़ा जिले की प्रगति के बारे में कई किंवदंतियां है, कि उनके कम्प्यूटर में पूरे बीस लाख छिन्दवाड़ा वासियों का वृतान्त है, कि वे आदिवासियों की गुमी हुई मुर्गियों, बकरियों तक की ढ्ूढने में सहायता करते है। व्यक्तिगत सहायता तो वे खैर करते ही है। शादियों और बीमारियों में वे आगे बढ़कर आर्थिक सहायता करते है। आर्थिक सहायता में एक सेवा का भाव रहता है। वे यथा सम्भव लोगो के दुख-सुख में शामिल होते है।

लेकिन जिस तरह कमलनाथ छिन्दवाड़ा में आर्थिक क्रांति लाये है (रिन, रेमण्ड, बजाज आदि अनेक कम्पनियां इसकी गवाह है) उसी तरह कमलनाथ भारत के स्थायित्व, प्रगति और कानून के शासन में कांग्रेस का योगदान मानते है। लेखक यहां प्रहलाद की "वेस्ट सेलर द फारच्यून एंड द बाटम आॅफ द पिरामिड" का उदाहरण देते हुए कहता है कि क्रय शक्ति ऊपर से अधिक निचले आधार पर आ गई है। लेखक मोबाइल फोन और एयर ट्रेवल्स का उदाहरण देते है। यह सही है कि मोबाइल निचले स्तर पर आवश्यक हो गया है पर हवाई जहाज यात्रा नहीं क्योंकि मोबाइल एक चलित फोन, एक फोन, एक फोन बुक, एक रजिस्टर, एक केलेन्डर, एक गेम, एक ग्रामोफोन, इत्यादि है पर हवाई जहाज यात्रा उतनी लोकप्रिय नहीं हुई है लेखक का यह कहना सही है कि संसाधनो का उत्पादन नहीं, उनका व्यापार, समृद्धि लाता है। यह सही है कि अवसर का लाभ उठाने की त्वरित बुद्धि, उद्यमशीलता और जिजीविशा भारत वंशियों का जन्म जात गुण है। जो कल तक शरणार्थी थे वे भी आज भारत के विकास

के महत्वपूर्ण घटक हैं। यह गर्व की बात है कि मुम्बई के डब्बावालो की दक्षता जनरल इलेक्ट्रिक और मोटोरोला कम्पनी के बराबर है (यह “फोब्स” का कथन है)

दूसरे अध्याय में भारत के औद्योगीकरण के युग के बारे में चर्चा की गई है। उसमें जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी और विश्वैश्वरैया को याद किया गया है जिनका प्रभाव आज भी और भविष्य में भी भारत के विकास पर पड़ता रहेगा। मगर 1947 से 1991 का समय लायसेन्स राज का समय था।

अध्याय तीन को “आज का समय” के नाम से याद किया है। भारत को 1991 में तीन बार सोना ब्रिटेन में बेचना पड़ा अन्यथा दीवालिया होने की नौबत आ गई थी। भारत के औद्योगीकरण की नींव युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा डाल दी गई थी। इस समय तक भारत कई अनुभव अर्जित कर चुका था। वह चीन से युद्ध में हार गया था। हालांकि लाला बहादुर शास्त्री एवं श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत को आत्म विश्वास से भर दिया था। (यहां यह तथ्य आश्चर्यजनक है कि कमलनाथ जैसे स्पष्ट वक्ता ने लालबहादुर शास्त्री और अटलबिहारी वाजपेयी को उनका श्रेय देने में कंजूसी क्यों की ?) यह सही है कि 1991 के बजट प्रस्तुतीकरण और नीतियों पर मुहर लगने के बाद ही भारत ने व्यापारिक दौड़ चालू की। मन्दी के दौर में पश्चिमी भेडिये इस व्याघ्र के मरने की आशा में दांत नुकीले कर रहे थे।

अध्याय 4 को “इसी बीच” का नाम दिया गया है। भारत में प्रधानमंत्री “आयाराम गयाराम” हो गये थे। श्रीमती इंदिरा गांधी के अतिरिक्त गुलजारी लाला नंदा, मुरार जी देसाई, चैधरी चरणसिंह, चन्द्रशेखर पी. नरसिंहराव, देवगौड़ा एवं अटल जी (2 बार) प्रधानमंत्री बने। तीसरी बार अटल जी ने सत्र पूरा किया था। इन परिवर्तिनों के बीच प्रजातंत्र स्थायी रहा। इन अध्यायो में आंकड़ो द्वारा समझाया गया है कि उदारीकरण आवश्यक था। मेरे विचार में पी नरसिंह राव ने हवाला जैसा जोकर पना करके कांग्रेस को सबसे ज्यादा नुकसान पहंुचाया।

अध्याय पांच सृजनशीलता के “ये आयाम” के नाम से है। यह सही है कि भारत के वर्तमान रूप को देने में कमलनाथ का महत्वपूर्ण योगदान है (ऐसे समय में जबकि गठबन्धन सरकार हो, भारत को आगे ले जाना कितना मुश्किल होगा ?) कमलनाथ उद्योग एवं व्यापार मंत्री रहे हैं 2007 में उन्होनें “दोहा” सन्धि में भाग लिया है। भारत आज विश्व के लिये जो चुनौती बना है वह उन्हीं के मंत्रित्व काल में हुआ है। आज भारत में पत्ता गिरता है तो विश्व में अन्धड़ आने लगता है। इसीलिये यह पुस्तक संग्रहणीय है कि इसमें उन तथ्यों को दिया गया है जिनसे भारत को यह गौरव प्राप्त हुआ है।

अध्याय 6 में फैक्ट्रियों की गहमागहमी के बारे में बतलाया गया है। कई फैक्ट्रियां उदारीकरण के बाद भारत की तरफ दौड़ पड़ी। उसका कारण भारत का राजनैतिक स्थायित्व ही है। जबकि सारे देश धड़ाधड़ दीवालिया हो रहे थे, कई अन्त्तराष्ट्रीय बैंक बंद हो चुके थे, अमेरिका भी बेरोजगारपन को झेल रहा था, भारत का स्थायित्व दुनिया को चकित करने वाला था। कई अन्त्तराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत नें ही जिन्दा रखा। (भारत का आध्यात्म भी एक बहुत बड़ा उद्योग है।)

अध्याय 7 से 10 तक उद्योग क्षेत्र में कमलनाथ के योगदान के बारे में है। उनकी यह स्वीकारोक्ति एक विनम्र स्वीकारोक्ति है जो कि एक दस्तावेज भी है। इसमें कमलनाथ ने सुझाव दिये है वे ध्यान देने योग्य है। भारत अभी भी कृषि प्रधान देश है। ऐसे में कृषि उत्पादो के प्रसंस्करण की कमी बेहद अखरती है। पहले अध्यायो मेें कहा जा चुका है कि “रा मेटेरियल” नहीं बल्कि “फिनिसड प्रोडक्ट” ही व्यावार में समृद्धि दिलाता है। इस और कृषको का ध्यान जाना चाहिये। पारम्परिक खेती के स्थान पर परिष्कृत खेती अपनाना चाहिये। आज भी चीन के मुकाबले में हम पीछे है। जहां मित्तल, बी.एच.ई.एल., भिलाई, कुद्रेमुख, एल्युमिनियम उद्योग आदि भारत को भारी उद्योग में वर्चस्व दिलाये हुये है। आटोमोबाइल के तैयार माल पर और ध्यान दिया जाना चाहिये। इन्हीं अध्यायों में लेखक ने भारत के धीमे चलने को लेखक ने संभलकर चलने की संज्ञा दी है। इन्हीं अध्यायों में लेखक ने भारत की बौद्धिक सम्पदा की प्रशंसा भी है। अम्बानी, बिड़ला, बजाज आदि के भारत निर्माण में योगदान को स्मरण किया गया है। भारत में विश्व के सर्वाधिक अरबपति है। भारत का मध्यम वर्ग एक झटका सहने वाला वर्ग है। यही सबसे बड़ा बाजार है। भारत के फिल्म उद्योग ने हिन्दी को पूरे विश्व में फैला दिया है। आज अन्त्तराष्ट्रीय कम्पनियों को हिन्दी में उनका प्रचार करना मजबूरी है। रजनीकांत को भी स्मरण किया गया है। हिन्दी के महत्व को इसी तथ्य से समझना चाहिये कि जो स्टार न्यूज, स्टार प्लस शुरू में मात्र एक घंटे का कार्यक्रम देते थे अब उन्हें चैबीस घंटे का कार्यक्रम देना पड़ रहे है। आज हिन्दी सीरियल कम्पनियों को बढ़ावा देते है और कम्पनियां इन “सीरियल्स” को । आज की प्रगति को सन् 2020 में प्रस्थापित किया गया है। जिसमें बतलाया गया है कि सन् 2020 तक भारत एक सबसे शक्तिशाली राष्ट्र होगा। आमीन !

अध्याय 12 उपलब्धि और पूर्णता के नाम से है। यह अध्याय किसी अन्य लेखक से लिखवाना चाहिये था। इसमें कमलनाथ के सम्पूर्ण व्यक्तितत्व एवं भारत की व्यापारिक उन्न्ति के बारे में उनके योगदान के बारे में होना चाहिए था। सचमुच में जिसका जन्म कोलकत्ता में हुआ हो, शिक्षा देहरादून में हुई हो और कर्मस्थली छिन्दवाड़ा हो वह देश के आकाश पर छा गया। ऐसे कर्मयोगी को यह अध्याय समर्पित होना

चाहिये। आज छिन्दवाड़ा और कमलनाथ "सिनोनिम" हो गये है। मैं सन् 2000 में लगभग डाॅ. विष्णुधर द्विवेदी के साथ श्री केदारनाथ जा रहा था तो ऋषिकेश के आगे एक छोटे से गांव में एक होटल में कुछ लोगो ने मुझसे पूछा कि मैं कहां से आया हूॅ। जब मैनें छिन्दवाड़ा कहा तो एकदम वे बोले "अच्छा कमलनाथ का छिन्दवाड़ा"।

इतिहास लिखने में साहस की कमी एवं पक्षपात कहीं कहीं अखरती है। फिर भी समीक्षित पुस्तक एक नीले आकाश की तरह है जिसमें उद्धरणों के नक्षत्र चमक रहे है। यह पुस्तक कल कल करती हुई एक बहती हुई नदियां है। एक क्रमशः विकसित होता हुआ फूल है जिसमें से ज्ञान के भंवरे निकलते है, छः ऋतुओं के बारह महीने है जो 12 अध्यायों में समाहित है। यह पुस्तक राजकमल प्रेस से प्रकाशित है। कागज और छपाई दोनो उत्तम है। मूल्य 600 है। इसके बाद भी पुस्तक क्रयणीय है। यह एक सन्दर्भ पुस्तक के रूप में हर पुस्तकालय एवं हर बुद्धिजीवी के पास होना चाहिये। यह एक एतिहासिक दस्तावेज है।

स्तन का कैंसर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जीव जंतुओं को दो भागो में बांटा गया है।

(1) मेरू दंड रहित: जिनमें रीड़ की हड्डी नहीं है।

(2) मेरू दंड सहित: जिनमें रीढ़ की हड्डी है।

जिनमें रीढ़ की हड्डी नहीं है उस वर्ग में अमीबा, केंचुये, गोंच, कोरल्स, सीपी, मच्छर, मक्खी, मकड़ी, बिच्छु, वहूटी, पटारें, तिलचट्टे इत्यादि आते है।

रीढ़ की हड्डी वाले जानवरो में मनुष्य, चैपाये, व्हेल, चमगादड़, मछलियां, मेंढ़क, छिपकली, सर्प, मगर, पक्षी इत्यादि आते हैं। रीड ही हड्डी वाले जानवर भी दो वर्गो में बांटे गये है। स्तनधारी और स्तन रहित।

स्तन धारियों में व्हेल, चमगादड़, जानवर और मानव आते है। प्रकृति ने प्रति प्रसवित प्राणी के लिये एक जोड़ी स्तन दिये है। जैसे मानवों में दो स्तन, एवं सुअर इत्यादि में बारह स्तन होते हैं। इसी तरह गायों में दो, स्तन होते है।

मानवों में स्तन

स्तन “सीवेसीयस ग्लेन्ड” का परिवर्तित रूप है इनकी उपस्थिति डेढ़ माह के भ्रूण में हो जाती है। नवजातों में मां के द्वारा प्रदत्त हारमोन्स के कारण दुग्ध स्त्राव हो सकता है जो कि प्राकृतिक है और ये स्वतः बन्द हो जाता है। लड़कियों में दस वर्ष की उम्र में ही स्तन बढ़ना चालू हो जाते है जो माहवारी के पश्चात वयस्को के बराबर होने लगते है। पुरूषों में किशोर अवस्था में कभी-कभी स्तन कुछ बढ़ जाते है। यदि परीक्षण में शेष अवस्थायें सामान्य मिलती है जो चिंता की कोई बात नहीं। हां यदि पुरूषों या महिलाओं के स्तन असमान्य रूप से बड़े होते है तो उनकी शल्य क्रिया की जा सकती है।

कभी-कभी ब्रेस्ट लाइन में (जो बगलो से उदर के निचले भाग तक होती है) अतिरिक्त स्तन होते है। इन्हें मसे के रूप में लिया जा सकता है। उन्हें निकाला जा सकता है।

केंसर के कारण:

महिलाओं में स्तन के केंसर का तीस वर्ष से पचास वर्ष की उम्र तक स्थिर प्रतिशत होता है। पचास वर्ष की उम्र के बाद इनका प्रतिशत तेजी से बढ़ता है पुरूषों में भी स्तन के केंसर होते है पर उनका प्रतिशत बहुत कम होता है।

मुझे दो ऐसी लड़कियों का आप्रेशन करना पड़ा जो अधिक मोटी थी और जिनकी उम्र पन्द्रह वर्ष के आसपास थी । परीक्षण में वे गठाने केंसर निकली। स्तन निकालने के पश्चात एवं डीप एक्सरे इलाज के बाद भी छह माह के अन्दर वे दोनो सुन्दर लड़कियां मर गई। स्तन के केंसर के कई अलग-अलग कारण होते है। किन्ही प्रकरणों में वायरस का संक्रमण कारण होता है तो लगभग पांच प्रतिशत प्रकरणों में मां से पुत्री को केंसर मिल सकता है। मोटी महिलाओं में केंसर की संभावना अधिक होती है उनमें मृत्युदर भी अधिक होती है जिन महिलाओं के बच्चे नहीं होते या जो महिलायें बच्चो को दूध नहीं पिलाती उन्हें स्तन के केंसर की सम्भावनायें अधिक होती है। मांसाहारी

महिलाओं में जो पशु चर्बी का सेवन अधिक करती है स्तर कैंसर की सम्भावनायें अधिक रहती है। कुछ प्रकरणों में तंग "ब्रेसियरयों" पर दोषारोपण किया जाता है।

अधिकतर प्रकरणों में स्तन कैंसर के कारण अज्ञात रहते है। ओरल पिल्स से कैंसर नहीं होते है।

पहचान:- तीस वर्ष की उम्र के आसपास कोई भी गठान शंकास्पद होती है। महिलाओं को स्वयं उनके स्तन की जांच करते रहना चाहिये। यदि किसी निपल का अन्दर की तरफ खिंचाव हो जाता है या एक निपल दूसरे "निपल" से ऊपर उठ जाता है तो कैंसर के लिये परीक्षण करवा लेना चाहिये। यदि निपल से रक्त स्त्रावण होता है तो कैंसर की संभावना होती है। स्तन की त्वचा यदि संतरे के छिलके की तरह हो जाती है तो कैंसर की संभावना रहती है। बगल में गठानें, बांह में सूजन कैंसर की द्योतक होती है। इसी तरह "क्लेविकिल" की हड्डी के ऊपर की गठान भी कैंसर की ओर इंगित करती है।

कैंसर होने के अन्य लक्षण है, खून की कमी, भूख न लगना वजन कम होना इत्यादि। कुछ प्रकरणों में एक साथ दोनो स्तनों के कैंसर हो सकते है। अमेरिका में हर नौ महिलाओं मे एक को स्तन का कैंसर होता है। महिलाओं के सौ स्तन कैंसर प्रकरणों में एक पुरूष के स्तन का कैंसर हो सकता है। पुरूषों में कैंसर महिलाओं के मुकाबले में तेजी से फैलता है।

फैलाव: स्तन का कैंसर स्तन के अंदर तो फैलता ही है बगल की लसिका ग्रन्थियों में भी फैलता है। दूसरे स्तन में फैल जाता है। सीने के अंदर फैल सकता है। रीढ़ की हड्डियों में फैल जाता है। डिंब में पहंुच सकता है। उदर, गुहा, यकृत एवं दिमाग में फैल जाता है।

विशेष जांचे:- ऐसी कई गठानें होती है जो उतनी हानिकारक नहीं होती अतः जांचो में दो घटक महत्वपूर्ण होते है

(अ) स्तन के कैंसर को उसकी प्रारम्भिक अवस्था में पहचानना

(ब) हानिरहित गठानों से स्तन के कैंसर की अलग पहचान

कुछ विशेष जांचे निम्नानुसार है-

(क) मेमोग्राफी:- मेमोग्राफी में क्ष किरण का उपयोग किया जाता है यह जांच तीस वर्ष की उम्र के बाद उपयोगी होती हैं

(ख) झीनोग्राफी:- चंूकि इस जांच में क्ष किरणों की अधिक मात्रा उपयोग में लाई जाती है अतः इसका उपयोग केन्सर जनित भी हो सकता है।

(ग) थर्मोग्राफी:- कैंसर और संक्रमण अधिक तापक्रम उत्पन्न करते है अतः उन्हें हानि रहित गठानों से अलग पहचाना जा सकता है।

(घ) अल्ट्रासोनोग्राफी:- सिस्ट को ठोस गठानों से अलग पहचान करने में सहायक होती है

(ड) सी.ए.टी.

(च) एम.आर.आई. प्रयोगिक अवस्था में है।

(छ) डक्टोग्राफी:- यदि निपल से रक्त स्त्राव होता है तो इसका उपयोग किया जाता है।

(ज) एफ.एन.ए.सी.:- एक सुई द्वारा स्तन की गठान से द्रव निकाला जाता है। यह तरीका सिस्ट को ठोस गठानों से अलग तो करता ही है साथ साथ केंसर कोषो को भी दर्शा सकता है।

एक्सरे हड्डियों में फैले हुये केंसर को और अल्ट्रा सोनोग्राफी उदर में फैले हुये केंसर को खोजने में भी सहायक होती है।

रोकथाम:-

चंूकि कुछ प्रकरणों में स्तन केंसर के कारण मालूम कर लिये गये है अतः उनकी रोकथाम भी की जा सकती है। शिशुओं को स्तनपान कराना स्तन केंसर से बचने का एक सरल उपाय है अतः शिशु जन्म के पश्चात महिलाओं को "फिगर" के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। दूसरी तरफ जिन महिलाओं के अधिक बच्चे होते है उन्हें गर्भाशय के निचले भाग में केंसर की अधिक सम्भावना होती है।

महिलाओं को सलाह दी जाती है कि वे मोटापे से बचें। क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है कि अधिक मोटी महिलाओं में केंसर की सम्भावना अधिक होती है। मांसाहार खाने से स्तन केंसर की सम्भावना बढ़ जाती है। पशु चर्बी का सेवन इस सम्भावना को बढ़ावा देता है।

तंग "ब्रेसरी" पहनने से कोई अधिक लाभ नहीं दिखता। उससे सांस लेने में कठिनाई हो सकती है। इसी तरह पुरूष यदि स्ट्रेप वाले पेन्ट पहनते है तो उन्हें केंसर की सम्भावना बढ़ जाती है।

जिन माओं को स्तन का केंसर होता है उनकी लड़कियों को तीस वर्ष की उम्र से ही मेमोग्राफी करवाते रहना चाहिये।

इलाज:-

स्तन के कैंसर का इलाज शल्य क्रिया के द्वारा किया जाता है। या तो गठान निकाल कर दवाइयां (कीमोथिरेपी) दी जाती है या पूरा स्तन सीने की मांस पेशियां, बगल की गठानों सहित निकाल दिया जाता है। बाद में (कीमोथिरेपी) दी जाती है।

कुछ प्रकरणों में आप्रेशन के पहले और बाद में एक्सरे भी दी जाती है। आप्रेशन के पूर्व एवं बाद में आवश्यकतानुसार मानसिक चिकित्सक की सलाह ली जाती है। मरीज के पुर्नवास के प्रबन्ध भी किये जाते है।

टेमोक्सीफेन स्तन के कैंसर की घटनाओं को कम कर देता है पर उसके नुकसान के कारण एक्स एंमेस्टेन (एरोमेनिन) अधिक कारगर पाई गई है।

विशेष पैकेज

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दद्दू बैठे रबड़ी चाट रहे थे और उनके सामने उनके नाती पोते टुकुर टुकुर देखते हुये लार टपका रहे थे। बिल्कुल वैसे ही जैसे भारत सरकार के सांसद चिकिन खाते है और हिन्दुस्तान का आखिरी आदमी भूखो मरता है। उनमें जो सबसे छोटा पोता था वह लार टपकाते हुए बोला "दद्दू थोड़ी सी हमें भी दो न" बिल्कुल वैसे ही जैसे ममता बनर्जी ने भारत के वित्तमंत्री से सन् दो हजार बारह में पश्चिमी बंगाल के लिए दो हजार करोड का विशेष पैकेज मांगा था।

उम्र में कुछ बड़े पोतो ने उसकी चेंटी पर चपत लगाते हुये कहा "क्यों भीख मांग कर नंगे भूखों के स्वाभिमान से नीचे गिरता है। मांगना वहीं उचित है जहां कुछ मिलने की आशा हो। "मगर दद्दू बोले "क्यों छोटे को मारते हो ? मांगने का हक सबको है।" फिर छोटे को पुचकारते हुये बोले "जाओ बेटा अपनी दादी के पास जाओ और उनसे छाछ मांग कर पीना।" फिर सब नाती पोतों को ललकारते हुये बोले "जाओं सब लोग, स्कूल का "होम वर्क" करो। यहां बैठे बैठे लार लपटा रहे हो। केवल लार टपकाने से कोई चीज नहीं मिल जाती।" फिर उन्होनें अपनी छड़ी उठाई। छड़ी देख कर सब पिल्लों की तरह भाग गये।

दरअसल दद्दू ने सारी सुविधाओं को केन्द्रीकृत करना भारत सरकार से ही सीखा था। वे उनके बेटो के हाथो में घेला तक नहीं रखते थे। और न ही सड़ी हुई पुरानी

परम्परा की तरह खत्म होते थे न-न पाठक ऐसा न सोचे कि मैं ऐसा चाहता हूॅ। कुछ लोगो ने उनके लड़को को फुसफसाते हुए सुना था।

एक बार लड़को ने हिम्मत करके दद्दू से कहा "दद्दू नौकर लोग हमारी इज्जत ही नहीं करते" दद्दू अंग्रेजी में बोले "माय सन्स, रिस्पेक्ट इज कमान्डेड" जो बगैर पढ़े लिखे थे, सोचने लगे कि सही में रबड़ी खाने का हक उसी को है जो पढ़ा लिखा हो या जिसे अंग्रेजी आती हो। मगर उनके जिन लड़को को अंग्रेजी आती थी उनमें से एक बोला "डेड्डू, रिस्पेक्ट कम्स आउट फ्राम द वोलेट!

बगैर पढ़े लिखे फिर सोचने लगे कि नहीं, पैसे, अंग्रेजी से नही, मक्कारी से आते हैं। एक बार उनकी एक लड़की उनके पास आई और बोली दद्दू कुछ पैसे ढीले करो न, एक शिफान की साड़ी लाना है। ये राशन की दुकान की साड़ियां पहनते पहनते मेरी चमड़ी छिलने लगी।"

दद्दू बोले "सादा जीवन उच्च विचार"। लड़की तुनक कर बोली "काहे के सादा जीवन उच्च विचार ? आप तो कोसे का कुर्ता और रेशम की धोती पहनते हो और मुझे सादा जीवन उच्च विचार का उपदेश देते हो। राशन की दुकान की साड़ी में मुझे लड़के भी नहीं छेड़ते। वे मुझे भारत वहिन कहते है। कोई आपको सड़क पर नमस्ते न करे तो आपको कितना बुरा लगेगा ?"

दद्दू जम्हाई लेकर बोले" अच्छा बेटा आपका सुझाव विचारणीय है। मैं तुम्हें छेड़ने के लिये खेत से एक नौकर बुला लूंगा। "लड़की ने ऐसा बेशरम बाप नहीं देखा था। वह गुस्सा होकर पैर पटकते हुये चली गई।

मगर बिल्ली के भाग में कभी-कभी छींके भी टूट जाते है। सरकार ने पंचायतो के चुनाव की घोषणा कर दी। दद्दू की सारी संतानों ने नाती पोतों को बाहर निकाला और बन्द कमरे की सभा में तै यह किया गया कि दद्दू को किसी तरह सरपंच के पद के लिये खड़ा करवा दिया जाये। नाती पोते किवाड़ो की सन्दों में सुनने की कोशिश करने लगे। मगर उन्हें सुनाई न दिया। वे खेलने चल दिये। दद्दू को मालूम नहीं पड़ा कि उनके विरूद्ध क्या षडयंत्र रचा जा रहा है।

गांव वालो का एक प्रतिनिधि मण्डल दद्दू के पास भेजा गया। उन्होने दद्दू ने नेतृत्व की प्रशंसा करना चालू कर दी। स्तुति से पत्थर भी भगवान बन कर पिघल जाता है। दद्दू ने उनके आने का कारण पूछा तो वे बोले "दद्दू हमारा गांव बगैर कप्तान का जहाज हो गया है। अब आप ही इसे कप्तान बन कर डूबने से बचा सकते हो ?"

हालांकि दद्दू के पास और कोई नहीं आया था पर वे बोले "हां और भी कई मुझसे सरपंच के पद के लिये आग्रह कर चुके है। आप भी आग्रह करते है तो मैं खड़ा

हो जाता हॅंू। "मगर नामांकन भरवाने के बाद गांव वाले गायब हो गये एक परिंदा भी पर मारने नहीं आया। दद्दू को ऐसा लगा जैसे उन्हें गैस का गुब्बारा बना कर हवा में छोड़ दिया गया हो। उनके हाथ पैर फूल गये। अब उन्होंने उनके लड़के, लड़कियों, दामादों कलेजों में पड़ने वाले नाती पोतो, पोतियों को बुलवाया। उन्होंने खुद ही उन लोगो को रबड़ी बांटना शुरू कर दिया। उन्हें मालूम था कि माला गले में पहनने के लिये गरदन झुकाना पड़ती है और तब तक झुकाये रखना पड़ती है जब तक माला गले में न पड़ जाये।

वे सब के साथ बैठ कर बोले "प्रिय परिवार जनों, तुम्हे मालूम है कि तुम्हारे दद्दू की नाक दांव पर लगी है। अब हम सबको मिल कर नाव को किनारे पर लगाना है। चैथे नंबर का मंझला बोला "दद्दू आपकी बहू को सिल्क की साड़ी और सोने का हार चाहिये न तभी नाक बच पायेगी नहीं तो नाव में छेद हो जायेगा। एक नें मांग क्या रखी गई कि मांगो का सिलसिला बगर गया।

अब उन्हें ममता बनर्जी का पश्चिमी बंगाल का विशेष पैकेज मांगने का राज मालूम पड़ा। ममता बनर्जी ने पैकेज पश्चिमी बंगाल की भूखी जनता को नहीं मांगा था वहां के मंत्रियों और नौकर शाहो को मांगा था। जब तब मंुह में टुकड़ा डालो तभी तक कुत्ता पूछ हिलाता है। नहीं तो भोंकने लगता है। कुत्ते का स्वामी भक्त बनने का राज उनका स्वामी नहीं बल्कि डाले गये टुकड़े होते हैं। वे डाले गये टुकड़े ही कुत्ते के मालिक होते है, आदमी नहीं फिर आसन्न चुनाव के लिये भी पार्टी को खर्चा चाहिये था।

तो विशेष पैकेज मिलेगा, तो मंत्रियों को विशेष बजट मिलेगा। तब वे घपले कर सकेंगे तो नौकर शाहो को घपला करने मिलेगा, तो पार्टी को चन्दा मिलेगा तो स्विस बैंक का मोटापा बढ़ेगा तो ये होगा तो वो होगा तो सब कुछ होगा। सब शायद पैसो से ही होता है।

प्रणव मुखर्जी का राष्ट्रपति पद के लिये नामांकन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मनमोहन सिंह राष्ट्रपति पद के लिये उपयुक्त व्यक्ति होते। वे अब्दुल कलाम के समकक्ष विद्धान है कुशल प्रशासनिक अधिकारी है अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करते एवं उनके ऊपर कोई आरोप नहीं है। वे उनके संवर्गो का नियंत्रण खूब जानते है।

दूसरी तरफ प्रणव मुखर्जी उनके संवेगो के कारण कांग्रेस छोड़ चुके है हालांकि उनका यह व्यवहार उन्हें एक साहसिक व्यक्ति के रूप में भी निरूपित करता है। पर सही निर्णय क्या लेना चाहिए इस बारे में वे एक संदिग्ध व्यक्ति है। मनमोहन जैसे वे विद्धान नहीं हैं उनके कार्यकाल में आम आदमी मंहगाई तले पिसा ही है। इस तरह वे एक असफल वित्त मंत्री रहे। उन्हें प्रधानमंत्री के हो सकने वाले रिक्त पद के लिये नामांकित किया जा सकता था।

मगर सुश्री ममता बनर्जी के अलावा यू.पी.ए. के सभी घटको ने श्रीमति गांधी के अलावा चुपचाप सिर झुका दिया। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि भारत वर्ष में सामन्तवादी प्रजातंत्र है। एन.डी.ए. में कोई घटक भी अधर है या नहीं ऐसा लगता है। खुद को जे.पी. के कई घटक लगते है। श्रीमती सुषमा स्वराज ने मनमोहन सिंह के आगे सिर झुका दिया। यह उनकी पार्टी के प्रति निष्ठा को संदिग्ध बनाता है उनका यह कहना कि वे पार्टी को प्रणव के पक्ष में तैयार करेगी ऐसा लगता है कि उन्होने हथियार उठाने के पहले ही समर्थन कर दिया जबकि जनता उनसे विरोध की अपेक्षा कर रही थी। ऐसा लगा जैसे वे कांग्रेस की सदस्य हो।

विरोध को एक हारने से न डरने वाला बहादुर व्यक्ति चाहिये था जिसके लिये पी.ए.संगमा और राम जेठमलानी खुद को प्रस्तुत कर चुके है। पी.ए. संगमा पहले भी लोकसभा अध्यक्ष रह चुके है। राम जेठमलानी इस पद के नामांकन के अनुपयुक्त है। राष्ट्रपति पद के लिये एक एडवोकेट के दृष्टिकोण की आवश्यकता नहीं जो केवल उसके पक्षकार के बारे में सोचता हो बल्कि एक जज के दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो दोनो पक्षो के बारे में पक्षपात रहित होकर सोचता हो। हो सकता है कि राम जेठमलानी यदि राष्ट्रपति बन जाते तो वे एक जज के दृष्टिकोण से निर्णय दे सकते।

श्रीमति सोनिया गांधी ने राष्ट्रपति पद के लिये प्रणब मुखर्जी का नामांकन कर भारतीय राजनीति का पोलापन उजागर कर दिया। इससे न केवल यू.पी.ए. में फूट पड़ गई बल्कि एन.डी.ए. बिखरने के कगार पर है।

पुरातत्व वेता की जेब में फोटोन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वे पुरातत्व विश्वविद्यालय में प्राध्यापक है। तथा कल्लू के खेत में डायनासोर के अस्तित्व ढंूढ रहे है। पुरातत्व विभाग में आजकल डायनोसोर का ही फैशन चल रहा है। जब जिसका फैशन होता है तब प्राध्यापक उसी पर खोज करने लगते है। अचानक उन्हें एक कुत्ते की हड्डी मिल जाती हैं वे डायनोसोर से कुत्ते पर उतर आये। अब वे डायनोसोर और नर्मदा की घाटी में कुत्ते का सम्बन्ध सोचने लगे क्योंकि डायनोसारे के अस्तित्व इधर नर्मदा घाटी में अधिक मिल रहे हैं। उन्हें लेख का एक उम्दा विषय मिल गया। डयानोसोर के पालतू कुत्ते उन्होने इधर उधर देखा और वह कुत्ते की हड्डी पेन्ट की जेब में सरका ली।

उन्हें उस बंजर जमीन में पुरातात्विक महत्व के कई शोध प्रबन्ध पड़े दिख रहे थे। उन्हें दुख हुआ कि इतने कीमती लेख उस बंजर जमीन में धाराशायी है। उन्हें उस जमीन में कोयले के टुकड़े रंगबिरंगी पत्थर, लोहे के जंग लगे टुकड़े लकड़ी के जले टुकड़े पक्षियों और पशुओं की बांट और लेंडिया पक्षियों के पंख और न जाने क्या क्या दिखा। उन्होने सोचा कि क्यों न उस अमूल्य खेत को कौडियों के भाव खरीद लिया जावे ?

वे किसान के पास पहुंचे। वह आदमी का सूखा-साखा काला-कलूटा, गरीब संस्करण था।

वे बोले "मिस्टर किसान मैं तुम्हारा कौड़ियों का खेत लाखों में खरीदना चाहता हूॅ वे उस आदमी के चलते फिरते ढांचे को भी डायनोसोर से जोड़ना चाह रहे थे पर उससे तो उन्हें खेत खरीदना था "किसान ने दांत निपोरते हुये नमस्ते का गरीबी संस्करण (हाथ जोड़ कर) दर्शा कर कहा "हुजूर जो खेत में नई बेचोगे।"

प्राध्यापक ने लालच देकर उस ढांचे से कहा "मैं तुम्हें पुरातात्विक जगत में अमर कर दंूगा। तुम्हारा नाम गिरीज बुक आफ बल्र्ड रिकार्ड में आ जायेगा कि वह वही किसान था जिसके खेत में इतने पुरातात्विक नमूने मिले थे। तुम्हारे सारे पूर्वजो का नाम अमर हो जायेगा कि वह जमीन बाबा आदम से चल कर तुम तक कैसे पहुंची। टी.व्ही. वालो की पंक्ति तुम्हारा साक्षात्कार लेने के लिये खड़ी रहेगी।

कल्लू किसान कांपते हुये बोला "हुजूर हमें पहले की तारीख में अमर नहीं होना, आज की तारीख में जिन्दा रहनें है। फिर कुछ रूक कर बोला "हुजूर मैनें समझी के आप तहसील दार हो सो डर के छुप गो थो मानो आप तो कोनऊ और साब हो। मानो आप खेत में घूम सको हो। वैसे भी हमारे खेत में ऊंट लीद करत देवें है और भेड़े लेंडियां करत देखे है। ओसे खेत उपजाऊ होत है आप भी हग सको हो। मैं मंुह फेर लऊंगो। छोरा के हाथ पानी भिजवा दऊंगो।

प्रोफेसर को उसकी तुलना ऊंट और भेड़ो से करने पर कोफ्त हुई। यह जानकर और भी दुख हुआ कि केवल पटवारी, तहसीलदार और कलेक्टर को ही आदमी समझा जाता है। वे यह कह कर कि जब जरूरत होगी बता दंूगा। फिर खेत में घूमने लगे। उस नासमझ के थप्पड़ ने उन्हें आध्यात्म में धकेल दिया। इसी थप्पड़ के कारण ही आध्यात्म का जन्म एवं विकास हुआ है ऐसा उन्हें लगा पर उनका वह दिन बहुत अच्छा था। कुछ दूर चलकर उन्हें चकमक पत्थर मिल गया। वह सोचने लगे कि किसी चमकीले पत्थर का ग्रह इस किसान की जमीन से टकराया होगा या कोई उल्टा पात हुआ होगा। आसमान में चमकीले पत्थरो के ग्रह होंगे अन्यथा प्रकाश कैसे परावर्तित होता होगा। या किसी चमकलीे ग्रह का कोई टुकड़ा अत्यधिक ताप पाकर फोटोन में बदला होगा फिर ठंडा होकर इस चमकीले पत्थर में बदल गया होगा।

उन्हें वह टुकड़ा कई अरब प्रकाश वर्ष पहले का लगा। उन्हें लगा कि उस क्रिस्टल के चारो तरफ धरती जम गई होगी। कालान्तर में वह अति मूल्यवान पत्थर धरती की सतह पर आ गया और उन्हें मिल गया। उन्होंनें फिर चारो तरफ देखा और वह चकमक पत्थर उठा कर वेटरो में खिसका लिया। कुत्ते की बदबूदार हड्डी तो उनके पेंट की जेब में थी ही।

उन्हें उनके पर्स में धरती के उद्गम रखा हुआ महसूस हुआ। उन्हें चकमक पत्थर का वजन बढ़ता हुआ महसूस होने लगा। उन्हें लगा कि सारे टी.व्ही. चेनल उन्हें घेरे हुये है। "टाइम पत्रिका का सम्पादक उनका साक्षात्कार ले रहा है।

उन्होने विभाग में आकर वह कुत्ते की हड्डी उस खेत की मिट्टी का नमूना और चकमक पत्थर अलग अलग कांच के जारो में शब्दांकित करके रख लिया। कुछ देर बाद उस विश्वविद्यालय के अधिस्ढाता निरीक्षण पर निकले उन्होनें मिट्टी के ढेले, कुत्ते की हड्डी और चकमक पत्थर को ध्यान से देखा फिर प्रोफेसर की तरह मुड कर बोले "प्रोफेसर यह विश्वविद्यालय है कोई कचरा घर नहीं। फेंको इस कचरे को बाहर"।

नशा मुक्ति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बाह्‌य पदार्थो से शरीर में प्रवेश के उपरान्त असमान्य मानसिक अवस्था को नशा कह सकते हैं। ऐसे कई पदार्थ है जो नशा उत्पन्न करते है। भारत में मुख्यतः तम्बाकू, शराब, अफीम, भांग, हेरोईन, कोडीन जुकाम की दवाइयां, कोकेन दर्द की दवायें पेन्टस नशा पैदा करने के लिये काम में लाई जाती है। इन पदार्थो को स‌ूंघ कर घ‌ूम्रपान द्‌वारा खाकर पीकर तालू के नीचे रख कर जबान के नीचे रख कर त्वचा से इन्जेक्शन से लिया जा सकता है। जूते के पालिश, तारपीन का तेल और न जाने किन-किन चीजो से भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न तरह के नशे किये जाते है। पूर्वोत्तर राज्यों में हेराईन ली जाती है। उत्तर और मध्य भारत में अफीम और भांग का सेवन किया जाता है। बीड़ी और गुटखे का भी बहुत सेवन होता है। पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र में शराब बहुतायत से पी जाती है।

नशे की आदतो के कारण:- नशे की आदत कई कारणें से पड़ जाती है। माफिया ने ऐसा जाल सा पूरे विश्व में बिछा रखा है जो बचपन से ही इस जाल में फंसा लेते है। एक माध्यमिक शाला में एक सर्वेक्षण किया गया तो पचास प्रतिशत बालकों और पच्चीस प्रतिशत बालिकाओं की जेब में गुटखा पाया गया। विखण्डित परिवार के बच्चे नशे की तरफ जल्दी आकर्षित होते है। इसी तरह ड्राइवर, घर से दूर व्यक्ति, होस्टल में रहने वाले बच्चे, मजदूर, उच्च वर्ग के परिवार, चिकित्सा सेवा में लगे व्यक्ति, उच्च प्रशासनिक

अधिकारी, नशीली वस्तुओं का अधिक सेवन करते है। कमजोर इच्छा शक्ति और असफलतायें व्यक्ति को नशे में ढकेल देती है। कुछ लोग शौक के कारण नशा प्रारम्भ करते है। बुरी संगत भी लोगो को नशे में धकेल देती है। आखिर नशा करने में क्या हानियां होती है जो नशा छोड़ने के लिये कहा जाता है नशा करने से व्यक्तिगत, सामजिक और कानून व्यवस्था संबंधी भयंकर हानियां होती है।

नशा करने से व्यक्तिगत हानियां

(नशा इच्छायें बड़ा देता है पर कार्यक्षमता कम कर देता है) नशा करने से मानसिक एवं शरीरिक हानियां होती है। मानसिक हानियों के तहत शारीरिक इच्छा शक्ति बेहद कमजोर हो जाती है। व्यक्ति झूठ बोलने का आदी हो जाता है। निर्णय लेने की क्षमता नष्ट होने लगती है, व्यक्ति कृत्रिम सपनीली अवस्था में जाने का आदी हो जाता है उसे डरावने दृश्य दिखने लगते है। हाथ पैर कांपने लगते है, होंठ मंुह, ग्रास नली फेफड़े अमाशय, यकृत गुर्दे इत्यादि सहित अन्य अंगो के भी कैंसर हो जाते है। खून की नलियां सकरी होने से पेरेलिसिस कई अंगो का सड़ना प्रारम्भ हो जाता है, अंधा हो जाता है। उच्च रक्त चाप हो जाता है। हार्ट अटैक हो सकता है। व्यक्ति खाना पीना छोड़ देता है अतः प्रोटीन कार्बोहाइडेट्स फेट और विटामिन की कमी हो जाती है। वह आत्महत्या तक कर लेता है। उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। पेट दर्द होने लगता है। वह न्यूमोनिया से ग्रस्त हो जाता है, दस्त लगने लगते है। चेहरे पर और पैरो पर सूजन एवं नेत्रों का लाल होना इत्यादि इतनी व्यक्तिगत हानियां होती है जिनको गिनना मुश्किल है।

सामाजिक हानियां

ऐसे व्यक्ति समाज के लिये खतरा एवं भार बन जाते है। गाली गलौच करना इनके लिये आम बात है। ये हत्या या बलात्कार तक से नहीं चूकते। इनके द्वारा वाहन चलाना खतरनाक होता है। कई सड़क दुर्घटनायें, बस दुर्घटनाऐं, रेल दुर्घटनाऐं नशे में धुत व्यक्तियों द्वारा ही होती है। नशे में धुत रहने से एक काबिल व्यक्ति की कार्य क्षमता नष्ट हो जाती है जिससे सामाजिक हानि से होती ही है। वे परिवार पर एक भार बन जाते है। वे परिवार का सारा पैसा अपने ऊपर खर्च कर देता है। जिससे उनके बच्चों का भविष्य चैपट हो जाता है और वे भी नशे के अंधकार में धकेल दिये जाते है। उनके परिवार के सदस्यों विशेष कर बच्चों को उपहास का पात्र बनना पड़ता है। उनकी स्वयं की आय कम होते होते खत्म हो जाती है। कई बार उनके बच्चे अनैतिक कार्य करने लगते है।

कानून व्यवस्था को नुकसान

दुर्घटनायें, बलात्कार, हत्यायें, दंगे, चोरियां अक्सर नशे में धुत व्यक्तियों द्वारा ही होते है। शासन को ऐसे अपराध रोकने के लिये बहुत परेशानी उठाना पड़ती है।

नशे की रोकथाम एवं इलाज

(नशा दिल दिमाग और शरीर को उसका गुलाम बना देता है) वह ड्रेकुला की तरह सबको चूसता है, समाज में दहशत फैलाता है और विप्लव मचाता है अतः व्यक्ति समाज शासन के लिये उसकी रोकथाम आवश्यक है ध्येय तो यह होना चाहिये कि समाज में एक भी नशा करने वाला न हो। शासन उस के स्तर पर बहुत कर रही है। पर बहुत कुछ उल्टा भी कर रही है।

मेरे एक मित्र है मिश्रा जी ! उनका कहना है कि शासकीय शराब की दुकान या शासकीय अफीम और भांग की दुकान पर से शासकीय शब्द हटाना चाहिये। इस शब्द से समाज में गलत संदेश जाता है। भोले भाले लोग यह मानते है की सरकार ही उनसे शराब पीने का आग्रह कर रही है। वहां लाइसेंस प्राप्त या ऐसा कुछ लिखा जा सकता है। एन जी. ओ. इस दिशा में काम कर रहे है पर वह अपर्याप्त है।

अभी भी हर जिले में नशामुक्ति अस्पताल नहीं है। अतः जो आदमी नशा छोड़ना भी चाहे तो उसे नहीं मालूम कि कहां जाना है। नशा छोड़ने के लिये दृढ़ इच्छा शक्ति आवश्यक है ऐसे व्यक्ति को समाज से सहयोग मिलना चाहिये। उसका मजाक न उड़ाया जाय। नशे को भी एक बीमारी के रूप में लिया जाना चाहिये। परिवार की दृढ़ इच्छा शक्ति भी होना चाहिये। जो व्यक्ति नशा छोड़ना चाहे उसको अपनी मित्र मंडली बदल देना चाहिये। उसे दृढ़ता पूर्वक "न" कहना आना चाहिये। नशे का पहला आफर और हर "आफर" को दृढ़ता पूर्वक मना कर देना चाहिये।

परिवार को उसका परिवेष बदलना चाहिये। पहले कहा जा चुका है कि टूटते परिवारो में नशा जल्दी पैर जमाता है। नशा छोड़ने वाले व्यक्ति की सुरक्षा आवश्यक है क्योंकि वह खुद को चोट पहुंचा सकता है या आत्म हत्या कर सकता है परिवार वालो को चिकित्सक से सहयोग करना चाहिये। मरीज का पोषण आवश्यक है जो कभी-कभी अन्तः शिरा द्वारा दिया जाता है।

नशा छुड़ाने के लिये नशे की मात्रा धीरे-धीरे कम की जाती है फिर उसे छुड़ा दिया जाता है। नशा छुड़ाने के लिये नशा विस्थापित भी किया जाता है कि उससे कम नुकसान वाली दवाओं पर रखा जाता है। फिर उसे भी बंद कर दिया जाता है यानि एक कांटा निकालने के लिये दूसरे कांटे का इस्तेमाल किया जाता है फिर दोनो को फेंक देते है। कुछ प्रकरणों में ऐसी दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है जो उस नशे से वितृष्णा पैदा कर देती है। नशे की आदत छूटने के बाद मरीज का पुर्नस्थापन किया जाना चाहिये।

मोदी और प्रधानमंत्री का मुद्दा बनाम संघ और बी.जे.पी.

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नरेन्द्र मोदी को सम्भावित प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत करके संघ भारतीय जनता पार्टी के पैरो पर कुल्हाड़ी मार रही है। यह मुद्उा उठना ही नहीं चाहिए था। "डिप्लोमेसी" तो यह कहती है कि पहले बी.जे.पी. शिव सेना गठबंधन को लोकसभा में बहुमत लाने का प्रयत्न करना चाहिए

फिर मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का सपना देखा जाता। यह दिवास्वप्न सबके सामने हाजिर करके संघ ने स्वयं के भार से चरमराते यू.पी.ए. संगठन को मजबूत कर दिया।

माना कि नरेन्द्र मोदी दो बार गुजरात विधानसभा में बी.जे.पी. का बहुमत लाये है तो शिवराज सिंह चैहान और रमन अग्रवाल भी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में ऐसा ही कर चुके है। तो क्यों न उनको भी भावी प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत किया जाये ? वे मोदी के मुकाबले ज्यादा सुलझे हुये और गभीर राजनेता है। वे बड़बोले नहीं है जो कि प्रधानमंत्री पद के लिये एक अवगुण माना जायेगा। फिर लाल कृष्ण आडवानी ही क्यों नहीं या सुषमा स्वराज ही क्यों नहीं वे केन्द्रीय राजनीति में काफी अरसे से सक्रिय है। सुषमा स्वराज की छबि एक धर्म निरपेक्ष बी.जे.पी. नेता की है एक महिला को प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत कर बी.जे.पी. स्वयं की छवि ही सुधारेगी।

भारत वर्ष गुजराज नहीं है। उसमें जम्मू कश्मीर है तो अरूणाचल प्रदेश और मिजोरम भी है । उसमें तमिलनाडु और केरल भी हैं। क्या आप समझते है कि नरेन्द मोदी इन प्रान्तो का भी नेतृत्व कर पायेंगे ?

मालूम नहीं कि बी.जे.पी. संघ से इतना क्यों दबती है। यह सही है कि संघ का हर कार्यकर्ता बी.जे.पी. का मतदाता है पर संघ को भी बी.जे.पी. की आवश्यकता है। संघ ने एक गलत समय में मोदी और प्रधानमंत्री का मुद्दा उठा कर शरद यादव जैसे सांसदो को कांग्रेस की तरफ झुका दिया।

स्वयं बी.जे.पी. में भी कई सांसद नरेन्द्र मोदी को नहीं चाहते। ऐसे मौके पर व्हिप जारी करने के बाद भी क्रास वोटिंग की सम्भावना है। जो आडवानी या सुषमा स्वराज के प्रकरणों में नहीं होती। भारत मात्र गुजराज नहीं है और भारत केवल हिन्दु

राज्य नहीं है। अटल बिहारी के समय तो जम्मू काश्मीर भी एन.डी.ए. के साथ था। अतः मोदी का मुद्दा उछालने के पहले संघ को प्रधानमंत्री पद की प्रकृति के बारे में सोचना था। जिस व्यक्ति को बिहार में घुसने न दिया जा रहा हो जिसकी यू.पी. में ऋणात्मक मूल्य हो, कई प्रान्तो में घुसने में सीमाऐं बंद कर दी जावे वह भारत का प्रधानमंत्री के काबिल हो ही नहीं सकता।

कांग्रेस को बी.जे.पी. से ज्यादा हिन्दुओ के वोट मिलते है। कांग्रेस के अधिकतर नेता हिंदू हैं। नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के लिये प्रस्तुत करने पर सभी उदारवादी हिंदू कांग्रेस से चिपक जायेंगे। सम्भव है कि बी.जे.पी. मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी बहुमत खो दे। भारत में बेकरी कांड से अल्प संख्यको नहीं दबाया जा सकता। वे भी भारत राष्ट्र के मुख्य घटक है। मोदी को प्रधानमंत्री बनाने से हो सकता है कि "सिविल वार" हो जाये। भारत एक भयानक आग में झोंक दिया जायेगा।

यह सही है कि मोदी को बहुत बदनाम किया गया है। वह एक अच्छे प्रशासक है पर उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिये बलात प्रस्तुत करना राजनैतिक अपरिपक्वता होगी। इस समय तो स्वयं मोदी के द्वारा इस पद के लिये जाहिर अनिच्छा जाहिर कर देना चाहिये। मोदी के प्रधानमंत्री पद का समर्थन तो ममता बनर्जी या जयललिता भी नहीं करेगी हां सुषमा स्वराज की बात और है।

गुजराज से मोदी हटाने का मतलब गुजरात में बी.जे.पी. को अल्पमत में लाना हो जायेगा। मोदी को प्रधानमंत्री बनाने की अफवाह से वैसे भी बी.जे.पी. के दो फाड़ होने का आ गये है। हां मोदी बी.जे.पी. प्रधानमंत्री के मंत्री मंडल में जरूर शामिल हो सकते है। जिससे के कट्टर पंथी की पहले राष्ट्रीय छवि को सुधारे फिर प्रधानमंत्री पद का दावा करें।

बी.जे.पी. की गलतफहमी है कि संघ उसे जितवाता है। संघ उस समय भी था जब बी.जे.पी. की लोकसभा में मात्र तीन सीट थी। तीनो अपने अपने प्रभाव से लोकसभा में गये थे। अटलबिहारी अपने व्यक्तित्व से, लालकृष्ण अड़वानी अपने प्रभाव से और महन्त उनके स्वयं के प्रभाव से। उस समय संघ के लोगो ने कांग्रेस को वोट दिया था। पर जब संघ के कारण कांग्रेस सेवा दल का प्रभाव खतेरे में दिखा तो कांग्रेस ने आर.एस.एस. पर बंदिशे लगाना चालू कर दी। इसीलिये संघ फिर बी.जे.पी. की तरफ झुका। मगर जहां संघ की शाखायें मजबूत है वहीं बी.जे.पी. हारी है जैसे ग्वालियर।

बी.जे.पी. ने जब कट्टरवादी चोला उतार कर फेंका एवं उदारवादी दृष्टिकोण अपनाया तभी उसका प्रधानमंत्री बन पाया। भारत में प्रधानमंत्री पद के लिये पार्टी का उदारवादी होना आवश्यक शर्त है। जब कांग्रेस में पी.वी. नरहसिंहाराव प्रधानमंत्री बने

तब कांग्रेस ने मुंह की खाई। जहां संघ की शाखायें कमजोर है वहीं बी.जे.पी. ने परचम लहराया है।

चींटें का पोस्टर्माटम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ददद्‌ू के दाहिने पैर के अंगूठे के नीचे एक चींटा दब गया। ददद्‌ू ने एक दम पैर हटा लिया। चींटे की जान तो बच गई, अलबत्ता वह लंगडा होकर गोल गोल घूमने लगा। लगता है उसे सदमा लग गया था। अमीर आदमी किसी को जान से नहीं मारते अलबत्ता विकलांग कर देते है । ददद्‌ू ने छोटू से कहा "छोटू जा तो सरकारी अस्पताल वहां इस चींटे के इलाज करवा कर लो।

अमीर आदमी चाहें तो गरीबो पर अत्याचार करे, चाहे तो कीड़े मकोड़ो पर दया करें, उनकी मर्जी, कोई उनका क्या बिगाड़ लेगा। छोटू ने बुद्दे को आवाज लगाई। बुद्दे अंगोछे से खाना पोंछता आ गया। छोटू ने बुद्दे को आज्ञा दी। "चल इस चींटे को उठा, सरकारी अस्पताल ले जाना है ददद्‌ू ने कहा है।" बड़े आदमी बगैर बैशाखिरों के नहीं चल पाते। बुद्दे ने अंगोछे के एक काने में चींटे को पकड़ा और वे दोनो अस्पताल पहंुच गये।

डाक्टर दो तरह के होते है। सरकारी और असरकारी, सरकारी डाक्टर गांवों में रहने के लिये मजबूर है और असरकारी शहरों में आराम फरमाते है। सरकारी डाक्टर हालांकि दद्दू को हफ्ता देता था पर उनसे डरता भी था। डाक्टर ने चींटा देखा और कहा "मैं आदमियों का इलाज करता हूँ चीट चीटिंया तो वैसे ही मर जाते है उन्हेें मारने के लिये डाक्टर की जरूरत नहीं होती।

छोटू ने दद्दू से कहा कि डाक्टर आदमियों का ही इलाज करता है कीड़े मकोड़े का नहीं।" दद्दू चीखे "जो छोटे से चींटे का इलाज नहीं कर सकता वह आदमियों का इलाज कैसे करेगा वह कोई साधारण चींटा नहीं है। दद्दू के पैर के अंगूठे के नीचे आया है। "डा. सहम गया। उसने बुद्दे से कहा" एक कागज पर लिख कर दो कि तुम तुम्हारी मर्जी से इस चींटे का इलाज करवाने के लिये तैय्यार हो और उसकी सारी जिम्मेदारी तुम्हारी है।"

दद्दू के पैर के अंगूठे के नीचे दबे बुद्ध को हाथ का अंगूठा लगाने की आदत थी। सो उसने लगा दिया। यह हाथ का अंगूठा उसे उसकी जमीन से वेदखल कर चुका है अब क्या करवा लेगा, सो उसने अंगूठा लगा दिया। डाक्टर ने एक चिमटी से चींटे को उठाया और उसके पेट में एक इंजेक्शन ठंूस दिया । उसका पेट फट गया और वह मर गया ।

दद्दू उस चींटे की मौत से नाराज हो गये। उन्होने कहा कि वह उस चींटे का पोस्ट मार्टम करवायेंगे। चींटो की सुरक्षा के लिये न तो कोई विभाग था और न ही कोई एन.जी.ओ. पोस्ट मार्टम की व्यवस्था उस छोटे से अस्पताल में नहीं थी। सो चींटे को जिला अस्पताल लाया गया।

चींटे की मौत की खबर जिला कोतवाली में दी गई। जिला दरोगा ने ऊधम के डर से जिला चिकिस्सालय उस चींटे की लाश को पी.एम. के लिये भिजवा दिया।

कुछ मेडिकल कालेजो एवं जिला अस्पतालों में लाशो की जो बेइज्जती होती है उसे केवल लाशें की वरदास्त कर सकती है। एक हाल में बारह या तेरह लाशें पड़ी रहती है कई बार तो एक के ऊपर एक लाश पड़ी रहती है। मर्दो और औरतो की लाशे उसी कमरे में शर्मिन्दगी से ऊपर उठ कर पड़ी रहती हैं। उस हाल में हालांकि एक प्लेटफार्म भी रहता है पोस्ट मार्टम करने के लिये। पर मात्र एक डाक्टर और एक स्वीपर के वश में नहीं होता कि हर एक लाश को चीर फाड़ के लिये उस प्लेटफार्म रखे और फिर नीचे उतारे। उस कमरे में कुछ लाशों के पेट फूले रहते है एवं कुछ पर इल्लियां बिलबिलाती रहती है डाक्टर और स्वीपर मास्क पहन कर और दस्ताने पहन कर उनका पोस्टमार्टम करते रहते है। वे बेचारे उस उवकाई पैदा करने वाले अत्यन्त बदबूदार कमरे में कार्य

करने के लिये बाध्य रहते है जिसकी बदबूदार संघ का गंदा सुअर भी भाग जाये क्योंकि वह भागने के लिये स्वतंत्र रहता है, सरकार डाक्टर और स्वीपर नहीं।

लाशो के सिर पर हथोड़ा और छेनी से प्रहार किया जाता है। फिर भेजा निकाल कर एक नमक के पानी वाली शीशी में रख देते है। इसके बाद सीना फाड़ा जाता है। उस घाव से हाथ डाल कर हनदय निकाला जाता है। उसके दोनो चेम्बर देखे जाते है और एक टुकड़ा निकाल कर नमक के पानी वाली बोतल में रख देते है। फिर हाथ डाल कर फेफड़ा बाहर निकाला जाता है। उसमें चीरा लगाया जाता है और एक टुकड़ा निकाल कर बोतल में रख देते हैं। फिर चाकू से पेट के ऊपर से नीचे तक चीरा लगाया जाता है और आतों और आमाशय का टुकड़ा निकाल कर अलग शीशी में रखते है। महिला की जच्चादानी देखी जाती है। गुर्दे, यकृत प्लीहा का टुकड़ा निकाल कर नमक वाली बोतल में रखते है। यदि लाश पर मक्खियां भिनकती है तो डाक्टर और स्वीपर को उन्हीं के बीच में काम करना पड़ता है। इल्लियों के गुच्छे निकाल कर हटाना पड़ते है फिर पोस्टमार्टम करते है।

अधिकतर प्रकरणों में निश्चित मत नहीं दिया जाता । वही इस चीेटे के शव के साथ किया गया।

1ण्   पुरस्कार का नाम

हिन्दी में चिकित्सा विज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तको के लिये आइ.सी.एम.आर पुरस्कार वर्ष 2010.11

2ण् वर्षः- 2010.11

3ण् लेखक/लेखको का पूरा नाम और पदनाम (कुल नाम रेखांकित करें)

1. डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पदनामः सेवानिवृत मुख्य चिकित्साधिकारी छिन्दवाड़ा

2. कु. निधि श्रीवास्तव

पदनामः एम.बी.ए. बेंगलुरू (क्राइस्ट कालेज) में अध्य्यनरत

4ण् जन्म तिथि एवं स्थान

1. डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्मतिथिः 15 सितम्बर सन् 1946

जन्मस्थानः विदिशा (म.प्र.)

2. कु. निधि श्रीवास्तव

जन्मतिथिः 5 अप्रैल सन् 1987

जन्मस्थानः जबलपुर (म.प्र.)

5ण् पुरूष/महिला

1. डा. कौशल किशोर श्रीवास्तवः पुरूष

2. कु. निधि श्रीवास्तवः महिला

6ण् वर्तमान डाक पता

1ण् डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

171 नोनिया करबल छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

म्उंपस . ज्ञ्ौतपअंेजंअं/लंीववण्बवउ

2ण् कु. निधि श्रीवास्तव

श्री साॅई जी.जी. नम्बर 42 ध् 52

सेकन्ड मेशन फस्र्ट क्रास

सी.एल. ले आऊट, होटल लिब्रा के पीछे

प्रसाद आई हास्पीटल के सामने बेंगलुरू (कर्नाटक)

म्उंपस . छपकीपैीतप / हउंपसण्बवउ

7ण् टेलीफोन नं. (मोबाईल नं.)

1. डा. कौशल श्रीवास्तव

09424636145

2. कु. निधि श्रीवास्तव

09742484897

8ण् शैक्षणिक योग्यताऐं (स्नातक से लेकर आगे तक) (तालिकाबद्ध रूप में)

(अ) डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

क्रम.संख्या	डिग्री	संस्थान	वर्ष
1	एम.बी.बी.एस.	विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन	1968
2	एम.एस. (जनरल सर्जरी)	भोपाल विश्वविद्यालय	1972

(ब) कु. निधि श्रीवास्तव

क्रम. संख्या	डिग्री	संस्थान	वर्ष
1	बी.एस.सी. (बायोटेक्नालाजी)	जबलपुर विश्वविद्यालय	2008
2	एम.एस.सी. (बायोटेक्नालाजी)	संत गाडगे विद्यापीठ अमरावती महाराष्ट्र	2010

9ण् कोई अन्य संबंद्ध सूचना (कार्य अनुभव, प्रकाशन, प्राप्त किये पुरस्कार आदि)

कार्य अनुभव: डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

क्रमांक		कार्य अनुभव	विषय
1		रिसर्च फेलो आई.सी.एम.आर 1971 से 1972	इनवर्जन एण्ड ईवर्जन टेक्नीक आफ वावल एनास्टामसिस इन ड्रग्स एण्ड देयर रिजल्ट
2		शोध पत्र	लायगेशन आफ पोस्टीरियर वेना केना इन ड्रग्स विलो एण्ड एवाम द रीनल वेन्स)
3	1	मेडिकल आॅफीसर चिकित्साधिकारी	प्रशासनिक, शल्य क्रिया, लेप्रोस्कोपिक टी.टी.
	2	शल्य क्रिया विशेषज्ञ	लगभग 7000 मेजर आप्रेशन
	3	मुख्य चिकित्साधिकारी	और 50ए000 एल.टी.टी.

प्रकाशन

क्रमांक	विषय	संख्या
1	पुस्तकें मेडिकल साइंस	2
	हिन्दी साहित्य	6

8

2 लेख (वैज्ञानिक)

मेडिकल साइंस

जनरल आफ इंडियन मेडिकल एसोशियेशन 4

इन्टरनेशनल सरजरी 2

एन्टीसेप्टिक 26

वल्ड हेल्थ आरगेनाइजेशन की पुस्तक 1

स्वस्थ्य हिन्द (इंग्लिश) 1

क्लीनिशियन 1

देलही जनरल आफ सर्जरी 1

फाइटो मेडिसिन 1

37

3 प्रसारण आल इंडिया रेडिया मेडिकल 100 से ऊपर

साइंस एवं अन्य

4 लेख कादम्बिनी धर्मयुग, नवनीत शताधिक

दैनिक भास्कर, वीर अर्जुन, जागरण

एवं अन्य पत्र पत्रिकायें

5 पुरस्कार

मेडिकल साइंस में योगदान 6

हिन्दी साहित्य की पुस्तको पर 6

12

निधि के प्रकाशन

क्रमांक	विषय
1	16 अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रेंस क्रोसिया 2 ए ग्रेव साउथ अफ्रीका में एव्सट्रेक्स 2011
2	अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रेंस के आई.आई.टी. यूनिवर्सिटी में एव्सट्रेक्स प्रकाशित

10ण् इस प्रकार के लिये प्रेषित लोकप्रिय पुस्तक का विवरण:

पण् शीर्षक: प्रतिरोधक क्षमता

पपण् प्रकाशन वर्ष: 2010

पपपण् प्रकाशक: समय प्रकाशन

आई 1/16 शांतिमोहन हाउस,

अन्सारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली - 110002

पअण् इस पुस्तक को लिखने का विशिष्ट उद्देश्य:

हिन्दी में मेडिकल साइंस की उच्च स्तरीय पुस्तकें नगण्य है। इसका मुख्य कारण एम.वी.वी.एस. एवं स्नातकोत्तर स्तरों की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी में होना है। जबकि अन्य देशो में मेडिकल साइंस की पढ़ाई उनकी राष्ट्रभाषा में ही होना है।

यही हाल बी.एस.सी. (बायोटेक्नालाजी) इत्यादि कक्षाओं का है। इसीलिये भारत के लेखक भी इन कक्षाओं की पुस्तकें अंग्रेजी में लिखते है क्योंकि वे पुस्तकों की विक्रय योग्यता को ध्यान में रखकर पुस्तकें लिखने लगे है जो कि विदेशो अंग्रेजी का अनुवाद मात्र होती है। यहां के योग्य वैज्ञानिक भी अपनी मौलिक खोजो को अंग्रेजी में ही विदेशी पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाते है जिससे कि उनके प्रयत्नों से अंगे्जी साहित्य ही समृद्ध होता है।

अब दूसरे मगर कठिन विकल्प यह है कि हिन्दी में ही उच्च स्तरीय पुस्तकें लिखी जावें जिससे कि शिक्षक एवं वैज्ञानिक उन्हें पढ़ने के लिये विवश हो जावें एवं हिन्दी की उन पुस्तको का अनुवाद अंग्रेजी में करें। यह रास्ता बहुत कठिन है पर इन प्रयत्नों से एवं इनकी सफलता से ही राष्ट्र का नाम ऊंचा होगा।

यही इस पुस्तक को लिखने का विशिष्ट उदद्ेश्य है।

अण् इससे इस विषय क्षेत्र हिन्दी साहित्य के अन्तराल को किस तरह दूर किया जा सकेगा।

इस विषय क्षेत्र में हिन्दी साहित्य के अन्तराल को दूर करने के लिये यह आवश्यक है कि विश्व में जितनी भी खोजें इस विषय क्षेत्र में हो रही है उनका अनुवाद हिन्दी में किया जावे साथ ही साथ भारत के इम्यूनोलोजिस्ट जो भी नई खोजे है उनका प्रकाशन भी हिन्दी में करें।

प्रतिरोधक क्षमता के क्षेत्र में प्रकाशन के लिये एक पत्रिका भी हिन्दी में निकाली जानी चाहिये जो कि फिलहाल सम्भव नहीं दिखता है। इसके लिये आई.सी.एम.आर. को ही आना पड़ेगा क्योंकि प्रायवेट सेक्टर में उस पत्रिका की विक्रय क्षमता को ध्यान में रखकर ही ऐसे प्रयत्न किये जायेंगे जो कि निकट भविष्य में तो सम्भव नहीं दिखते है।

अपण् प्रकाशन की चार प्रतियां: संलग्न है।

11. इस पुस्तक के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये एक संक्षिप्त विवरण:

पुस्तक में प्रतिरोधक क्षमता के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। यह स्पष्ट किया गया है कि हर प्राणी उसकी विशिष्ट प्रतिरोधक क्षमता के कारण अस्तित्व में है। प्रतिरोधक क्षमता का क्रमिक विकास हुआ है।

प्रतिरोधक क्षमता का एक तेजी से विकसित होने वाला विषय है और इस क्षमता ने मेडिकल साइंस के हर पहलू को प्रभावित किया है। लगभग हर बीमारी प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने पर उत्पन्न होती है।

जो पदार्थ प्रतिरोधक क्षमता को उद्धेलित करते है वे एन्टीजेन कहलाते है। प्रतिफल में एन्टीवाडी उत्पन्न होती है दोनो की रासायनिक आकृति क्लिष्ट है। साथ ही प्रतिरोधक एन्टीक्षमता के महत्वपूर्ण घटक रक्त कोष स्थानीय कोष एवं लसिका कोष है।

अभी प्रतिरोधक क्षमता के मुख्य विषय संक्रमयण, आटो इम्युनिटी, एलर्जी, केंसर, डायबिटीज, एड्स, अंगप्रत्यारोपण, दवाइयां, वेक्सीन निर्माण बीमारियों को प्रयोगशाला में पहचान प्रतिरोधक क्षमता विहीन बीमारियां प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना इत्यादि है इस शाला में प्रतिदिन नये विषय जुड़ते जा रहे है। यह विषय मेडिकल साइंस की हर शाखा यथा फिजियोलोजी, पेथालाजी, फार्माकेलोजी, सरजरी, मेडिसिन, एनाटामी इत्यादि का विकास कर रहा है। इन सभी पहलुओं को इस पुस्तक में समावेश किया गया है।

12. लेखक/लेखको के नाम, पदनाम और पुस्तकों के प्रकाशन में उनका विशिष्ट योगदान

नाम

1. डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

2. कु. निधि श्रीवास्तव

पदनाम

1. डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

(अ) सेवा निवृत मुख्य चिकित्साधिकारी

(ब) सेवा निवृत सदस्य किशोर न्यायालय, छिन्दवाड़ा

(स) सदस्य मानव मित्र, मानव अधिकार आयोग, छिन्दवाड़ा

(द) उपाध्यक्ष रेड क्रास समिति, छिन्दवाड़ा

2. कु. निधि श्रीवास्तव

अध्ययनरत: एम.बी.ए. क्राइस्ट विश्वविद्यालय बेंगलुरू

पुस्तक के प्रकाशन में योगदान:

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव का क्लिनिकल इत्युनिटी में मूल प्रकाशन है (पुस्तक में संदर्भ क्रमांक 8 एवं 9) इसके बाद भी वे लगातार आज तक इस विषय पर कार्य करते है। इस विषय में उनकी अगली पुस्तक जो कि घावों को भरने के संबंध में है सहयोगी लेखक कु. निधि के साथ शीघ्र आने वाली है। इस पुस्तक को लिखने में उन्होनें कु. निधि श्रीवास्तव के साथ कई अंग्रेजी के कई पेपर्स एवं पुस्तकों का अध्ययन किया है। डा. चन्देलकर ने इस पुस्तक के टंकण में बहुत योगदान दिया है।

13. क्या इस पुस्तक को कियी अन्य पुरस्कार/सम्मान के लिये प्रेषित किया गया है
नहीं

14. क्या इस पुस्तक के लेखन/मुद्रण हेतु किसी अन्य स्त्रोत से किसी प्रकार की
वित्तीय सहायता प्राप्त की गई है: नहीं

15. लेखक/लेखकों द्वारा यह प्रमाण पत्र कि यह पुस्तक मूलतः उनके द्वारा लिखी गई है।

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि यह पुस्तक मूलतः मैं डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव एवं कु. निधि श्रीवास्तव द्वारा ही लिखी गई है।

दिनांक हस्ताक्षर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कु. निधि श्रीवास्तव

जनता की मांग पर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हमारा जिला छिन्दवाड़ा मध्यप्रदेश के दक्षिण में महाराष्ट्र से लगा हुआ है। यहां जनता की मांग पर विचित्र घटनायें घटा करती है। अभी उस दिन माइक पर एक साहब रिक्शे पर बैठ कर जोर से दहाड़ रहे थे कि जनता की मांग पर आपके शहर में कलकत्ता की साड़ियों की सेल होटल क, ख, ग, में लगी हुई है। उसमें हर डिजाइन की रू. 1500 की साड़ी मात्र रू. 150 में मिल रही है। कृपश अवश्य लाभ उठायें। लाभ का सौदा था। मैनें पत्नि से कहा “चलो इस मौके का लाभ जरूर उठाये।”

पत्नि में जवाब दिया जिस जनता की मांग पर यह प्रदर्शनी लगी हुई है वही जाये न। हम ने तो मांग नहीं की थी। न तो हम कलकत्ता गये हुये थे न ही हम इन लोगो के पास गये थे और न ही हमने मांग की थी कि भैय्या चलो और छिन्दवाड़ा में आकर तुम्हारी साड़ियों की “सेल” लगाना। सेल में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधार कर कम्पनी को लूटने की कृपा करें। साडियों की इस कम्पनी पर मुझे आश्चर्य हुआ। कोलकाटा से यहां छिन्दवाड़ा लुटने के लिये इतने खर्च करके आए और लूटे जाने का आग्रह कर रही है। मैने पत्नी से कहा कि जब कम्पनी खुद लुटने का आग्रह कर रही है तो क्यों न चल कर उसे लूटा जाये।

पत्नि ने किंचित रूष्ट होकर जवाब दिया “किस किस को लूटोगे ? इन कम्पनियों को लूटने हम तो कंगाल हो गये। अब किसी को लूटने की हिम्मत हमारे अंदर नहीं है। फिर जिस जनता की मांग पर ये लोग यहा आये है उसी का दायित्व है कि वे लूटें। वह कौन आदमी है जो कोलकाटा गया था और इनसे मांग की थी कि ए भैय्या छिन्दवाड़ा चलो और सेल लगाओ, हम वहीं तुम्हारी साड़ियां खरीदेंगे। जब वह मांग करने कोलकाटा गया ही था तो वहीं क्यों न साड़ियां खरीदली ?

मैनें उसका समर्थन किया तो उसकी छठीं इन्द्रिय सावधान हो गई। वह बोली "मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि तुम वहां जरूर जाओगे ?"मैनें कहा "अरे नहीं जब तुम मना कर रही हो तो मैं वहां नहीं जाऊंगा। तुम बेफिक्र रहो।"

मगर महिलायें यदि पुरूषो पर विश्वास करती तो ये दुनियां ही नहीं चलती। उसने मेरी जेब से उस दिन सारे पैसे निकाल लिये। मैं उससे यही आशा कर रहा था। घर के सौदों से बचाये हुये पैसे मेरे इसी तरह के आडे वक्त में काम में आते है। पैसो के मामले में दोनो एक दूसरे को धोखे देते रहे है। में उस कोलकाता वाले साड़ी सेल्स में पहुंच गया। मैं यह देख कर हतप्रभ रह गया कि वहां पहंुचने वाला मैं अकेला था। मुझे देख कर उन्होने कोई गाना बजाना चालू कर दिया। सारे सेल्समेन मुझे देख कर इकट्ठे हो गये। प्रदशर्नी काफी लम्बी थी। मैं घूमने लगा। घूमते घूमते मैं वापिस "काउन्टर" पर पहुंच गया। वहां चार मोटे मोटे गार्ड खडे हुए थे मुझे खाली हाथ देखकर वे बोले "साहब बगैर दुकान लूटे तो हम आपको निकलने नहीं देंगे।"

मैनें कहा "मोर्ट गार्ड साहब, मैं तो बस यूं ही देखने चला आया।" उनमें से एक बोला "साहब उत्सुकता ही तो आदमी को जाल में उलझा देती है। अब आप तो एक सौ पचास रूपये खर्च करें और एक साड़ी तो लूट कर जायें। मैनें कहा "मैं ने मांग नहीं की थी आपसे आने की"

उन्होने कहा "उत्सुकता ही मांग होती है। कृष्ण जी ने कहा है ध्यायते विषयान पुंस। संगस्तेप, उपजाये, संगात सन्जायते कामः यह उत्सुकता ही मांग होती है आप सीधे सीधे अन्दर जाइये वरना हमारे लठ सुसंकृत नहीं है।" मुझे साड़ियां लूटने के लिये धमकी दी जा रही थी।

मैं अन्दर धकेल दिया गया। मैं साडियां देखने अन्दर चला गया। सारी साड़ियां सेकण्डस की थी। उनमें कुछ न कुछ जरा सी खामी जरूर थी। उधर बाहर उनका माइक उद्घोषणा करने लगा, जल्दी कीजिये। आपके अपने प्यारे साड़ी सेल्स में बहुत भीड़ आ रही है। ऐसा न हो कि आपको देर से आपके पसंद की साडियां बिक जावें।

मैनें गुस्से में एक सेल्समेन से कहा "कहां है वह विशाल भीड़ ? वह बोला "आप ही वह विशाल भीड़ हैं। आप में पूरा हिन्दोस्तान बसता है।" मजबूरन मैनें उनमें से एक साड़ी छांट ली। साडी दफ्तर में जाकर मैनें सरकारी अल्मारी में छिपाली और उसमें से गोपनीय फाइल निकाल कर टेबिल पर रख ली। वैसे भी भारतवर्ष में गोपनीय है ही क्या ? जो गोपनीय फाइल मैनें टेबिल पर रखी थी उसकी फोटो कापी पहले ही संबंधित के पास पहंुच चुकी थी।

घर आकर मैं भोला बनकर बैठ गया। पत्नि ने मुझे बड़े प्रेम से चाय दी। मैं हाथ मंुह धोंने चला गया। वापिस आया तो पत्नि ने प्रेम से पूछा "कौन सी डिजाइन की

साड़ी खरीदी। ?मैं चैक गया मगर मासूम बन कर बोला “कोई तो नहीं”। भला तुम मना करो और मैं सेल में चला जाऊ। मैं तो आज सेल वाले रास्ते से गया ही नहीं।”

पत्नि ने फिर प्यार से कहा “तब भी”। मैं तैश में आ गया। मैनें नाराज होकर कहा “तुम बेकार मुझ पर शक कर रही हो। मुझे चाय नहीं पीनी। बेकार शाम खराब कर दी।” पत्नियां “ब्लाइन्ड” पर “कवर” तब ही लगाती है जब उन्हें “ब्लाइन्ड” के पत्ते मालूम हो। पत्नि, हाथ पकड़ कर मुझे बैठाते हुये बोली “अच्छा माफ कर दो बाबा। मैनें तो यह कह रही कि तुम्हारी कमीज की तलाशी में यह सेल वाली रसीद मिली थी जिसमें आज की तारीख डली है और तुम्हारा नाम लिखा है। “शर्म से मैं पानी पानी हो गया मगर पत्नि ने कहना जारी रखा। “देखो यहां होटल में हाथकरघा प्रदर्शनी लगी है, एक हाल में हैदराबादी मोतियों की प्रदर्शनी लगी है तीसरे हाल में आर्टीफिशियल ज्वेलरी की प्रदर्शनी लगी है, “चैथे मैदान में झूले और काले जादू का खेल चल रहा है। बतलाओं इन सबके लिये किजने बजट का प्रावधान कर दूॅं?”

अधिक से अधिक यही होगा कि गुड़िया की अगले महिने की फीस नहीं फरेंगे वैसे भी लड़कियों को अधिक पड़ा कर क्या करना है जैसे मैं आपकी गृहस्थी चला रही हूॅं वैसे उसे भी शादी करके किसी की सेवा में लगा देंगे। उसके बाद मेरी हालत तो निम्नलिखित दोहे की तरह हो गई

किधो सूर को सर लगो, किधो सूर की पीर।
किधो सूर को पद लगो, रह रह धुनत शरीर।”

एक जिन्दगी, एक जिन्दगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पकती फसल को देख कर,
बदली मचल गई,
बहती हुई ठण्डी हवा,

लू में बदल गई।।
रोटियों से भूख का
रिश्ता नहीं रहा।
लाशे जमी पे देख,
कजा भी दहल गई।।
डूबने नदियां लगीं
नालों की बाढ़ में
गेहूॅ की फसल ईंट की
आगी में जल गई।।
कीचड़ को कमल खाने लगें
इसके पेश्तर,
रोको उन्हें नहीं तो,
कमल की फसल गई।।
कोसों तक घूमने पे भी
जब जंगल नहीं मिलें,
बन्जर में फूल देख कर
तबीयत बहल गई।।
एक जिन्दगी इन्साफ
पाने में चली गई।
एक जिन्दगी ये देख
गुनाहों में ढ़ल गई ।।

अन्ना टीम की हार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

टीम अन्ना सत्याग्रह का सहारा लेकर विकृत राजनीति को बदलने का संकल्प लेकर चली थी। वह गाॅंधी के रास्ते से भटक कर नेहरू के रास्ते पर आ गई।

प्रजातंत्र दरअसल पूंजीपतियों के द्वारा गरीबो और असहायों के अधिकारों का स्वयं के लिये अनन्त काल तक सुविधा जुटाने का मार्ग है। राजनीति उपनिषदो द्वारा वर्णित उस कीड़े की तरह है जो विरोधी कीड़ो को फॅसा कर अपने जैसा बना लेता है। यही लालू यादव, शरद यादव इत्यादि के साथ हुआ था। यही अन्ना के साथ हुआ। यह कोई आश्चर्य नहीं है। टीम अन्ना की ओर जो मजलूम आशा लगा कर देख रहे थे वे ठगे गये। वे हमेशा ठगे जायेंगे।

टीम अन्ना को सत्याग्रह और आमरण अनशन के क्रमो ने तोड़ दिया। उनका लोकपाल बिल कहां गया ? अब वे एक नाटकीय ढंग से राजनीति में उतर रहे है। टीम अन्ना को राजनीति का मतलब मालूम होगा। प्रजातंत्र संख्या का खेल है उसके रास्ते का नहीं। रास्ता कोई भी हो संख्या बढ़ना चाहिये। उसके लिये चाहे भगवे कपड़े पहने जाये, चाहे हरे कपड़े पहने जाये, चाहे अन्दर से काले मगर ऊपर से सफेद कपड़े पहने जाये, चाहे चाहे तिरंगे कपड़े पहने जाये, चाहे लाल टोपी लगाई जाये, चाहे, चाहे भगवा टोपी लगाई जाये खादी की सफेद टोपी लगाई जाये, झंडे पर चाहे कमल हो, चाहे पंजा हो, चाहे हंसिया हो, चाहे साइकिल हो, चाहे नीला हाथी हो मगर संख्या होना चाहिये। चाहे दलितो को उनकी भावनायें भड़का कर वोट लिया जाये चाहे हिन्दुओ को मुसलमानों को डर दिखाया जाये, मुसलमानों को हिन्दुओ का डर दिखाया जाये संख्या बढ़नी चाहिए। अब टीम अन्ना भी इन्ही हथकंडो को अपनाने पर विवश हो जायेगी। वह जनता को भ्रष्टाचार का भय दिखलायेगी। यह भी एक भयादोहन ही होगा। जनता को डरा कर ही मतपेटी तक लाना होगा।

जिन लोगो ने एस.एम.एस. द्वारा जी.टी.व्ही. को मत भेजे है वे खेतो में काम करने वाले लोग नहीं है पत्थर ढ़ोने वाले मजदूर नहीं है झोपड़ी में रहने वाले लोग नहीं है सड़को पर सोने वाले लोग नहीं है, रिक्शा खींचने वाले लोग नहीं है जंगलो में रहने वाले आदिवासी नहीं है वरन वे लोग है जिनके पास मोबाइल है, रहने को घर है, चलाने को मोटर साइकिल या कारे है, ऐसे लोग है। ये चाहते है कि टीम अन्ना राजनीति में उतरे। टीम अन्ना के लोग मृत्यु से डर गये, बाबा रामदेव भी मौत के डर से लड़कियो के कपड़े पहन कर अंधेरे में छिप कर भागे थे, लालू यादव भी गरीबी से डर कर राजनीति में उतरे थे तो ये सब डरे लोग है डरे लोग ही सक्रिय राजनीति में उतरते है।

भगवान कृष्ण गीता में इच्छा और द्वेष शब्दो का साथ साथ उपयोग करते है। जैसे इच्छा द्वेष समुत्थेन यानि इच्छा और द्वेष एक ही चीजे है द्वेष इच्छा से भी ले सकते है कि भ्रष्टाचार मिटाना भ्रष्टाचार का ही छिपा हुआ रूप है। यह एक चैंकाने वाला तथ्य हो सकता है मगर है। ईमानदारी की वकालत करने वाले लोगो से बेईमानों को भी सावधान रहने की जरूरत है। नौकरी में आते समय मेरे श्वसुर साहब ने सीख

दी थी कि देखो दामादजी, ईमानदार बने रहना पर बेईमान लोगो को ईमानदार बनाने पर विवश मत करना। तुम ईमानदार बने रहोगे तो कोई एक तुम्हे आदर्श मान कर उस पर चलने लगेगा पर यदि बेईमानों को तुम्हारे रास्ते पर चलने पर बलात, विवश करोगे तो वे तुम्हे तोड़ देंगे। तुम तुम्हारे रास्ते पर भी नहीं चल पाओगे। यही टीम अन्ना के साथ भी हुआ। राजनीति उन्हें सत्याग्रह रास्ते से हटाकर राजनीति में ले आई। वे हार गये। टीम अन्ना का मुद्दा ईमानदारी नहीं है, जन लोकपाल बिल हैं जिसके बारे में जनता कुछ नहीं जानती।

चुनाव भारत वर्ष में जन लोकपाल बिल नहीं, अपितु भ्रष्टाचार के लिये जीते जाते है। भारत का प्रजातंत्र, भ्रष्टाचार के द्वारा भ्रष्टाचार के लिये ही है। यहां चुनावों में भ्रष्टाचार की नदी ऊपर से बहती है शराब, साड़ीयाॅ और रूपया चोरी, छिपे गरीगो में बांटे जाते है। बेचारे भूख और इच्छाओं के मारे यह सोचते है कि यह प्रत्याशी केवल अभी झुक रहा है कि यह प्रत्याक्षी केवल अभी झुक रहा है बाद में तो साल भर उन्हें ही झुकना है। चुनाव गरीबो की अहं तुष्टि और बाद में नेताओं की अहं तुष्टि का साधन है।

दूसरा नम्बर जातिवाद को भड़का कर वोट लेना है, नहीं तो क्या कारण है कि उत्तरप्रदेश में पिछले बीस साल से केवल दलित या यादव ही सत्ता पर काबिज हो रहे है ? और कौन वहां भ्रष्टाचार नहीं अपनाता। सुश्री मायावती तो खुले आम केवल सत्ता के साधन से मध्यम वर्गीय से अरबपति बन गई ? इलेक्शन कमीशन को चुनावों के समय समाप्ति का ब्यौरा दिया जाता है पहले तो उस पर ही आयकर ढुकना चाहिए। उनके प्रमाण पत्र के बाद ही चुनाव का टिकिट मिलना चाहिए। इन लोगो के घर कभी आय या विभाग के छापे नहीं पड़ते। तीसरा नम्बर गुंडागर्दी का है यह सर्वविदित है कि चुनावों के समय अपराध एकदम बढ़ जाते है। प्रताड़ितो के आंसुओ के बाद ही गुंडो के विरोध में केस रजिस्टर होते है। फिर भारत की न्यायिक प्रक्रिया ! अहा हा हा क्या कहने। जवापी में सुखराम के विरूद्व केस रजिस्टर होता है और उसके मरनासन्न होने पर ही निर्णय आता है।

भाषा के नाम पर भड़काना चुनाव जीतना चैथा साधन है। क्षेत्रीयता भड़काना चुनाव जीतने का पांचवा साधन है। भ्रष्टाचार चुनाव जीतने का छठवां साधन है। ऐसे अन्य कोई और पवित्र साधन है, जिनके बल पर चुनाव जीता जाता है। अब इन्हीं प्रकाश पुंजो के परिप्रेक्ष्य में टीम अन्ना से पूछा जाये कि वे लोकसभा में पहंुचने का कौन सा साधन अपनायेंगे।

एस.एम.एस. द्वारा जी.टी.व्ही. को जो उत्तर प्राप्त हुये है क्या वे क्षेत्रीयता के आधार पर नहीं मिले। और क्या टीम अन्ना उन चार लाख कुछ हजार मतो के द्वारा

ही जन लोकपाल बिल लोकसभा में पारित करवाने के लिये बहुमत लायेगी ? सामान्य जनता में इस आंदोलन के प्रति एक ओर यदि टीम अन्ना उपरोक्त पवित्र साधनों की सहायता के बगैर चुनाव जीतने का मुद्दा रखती है तो वह गलतफहमी में है।

एक तो उन्हें ईमानदार केन्डीडेट्स ही नहीं मिलते, क्योंकि ईमानदार लोग आगे नहीं आने वाले। बेईमान लोग ही ईमानदारी के नाम पर चुनाव लड़ते है। टीम अन्ना की जगह जगह ब्रिगेट बन गई है। पहले तो उनकी ही स्कूटनी टीम अन्ना करे। टीम अन्ना को उनके लिये दिल्ली में इकट्ठी भीड़ से नहीं कहा कि जो लोग ट्रेन से बगैर टिकिट आये है वे कृपाया वाजिस चल जावें तो जंतर-मंतर दशहरा मैदान या कहीं भी उनके लिये इकट्ठी टीम आधी हो जाती। समाज में ईमानदार लोग बहुत कम है। अतः जिन मुट्ठी भर लोगो ने टीम अन्ना से कहा है कि वे चुनाव न लड़े सम्भवतः वे ही लोग सही है।

भ्रष्टाचार व्यवस्था के बजाय, समाज से ही मिटाना चाहिये। जे.पी. ने समाज से व्यवस्था मिटाने की पहल की थी, अतः वे लोग सफल रहे। संत कबीर ने अकबर से नहीं कहा कि पहले तुम बदलो, फिर हम बदलेंगे। अन्ना हजारे ने शासन से कहा कि पहले तुम बदलो, फिर हम बदलेंगे। ऐसा नहीं होता। लगातार के चार आमरण अनशन अनशनों के बाद टीम अन्ना हजारे को क्या मिला ? उन्हें अनशन तोड़ने का गरिमामय रास्ता खोजना पड़ा और टेन्ट टाउस का सामान उठवाना पड़ा। उन्होने देखा कि अनशन तोड़ने के बाद वहां फेंके गये प्लास्टिक के गिलास, प्लेट्स किसने साफ किये। बस यही बेईमानी है। आपकी वजह से गंदगी फैली है तो आप ही साफ करें। कोई स्वयं को गांधी कहलवाने से गाॅधी नहीं हो जाता। ऐसे गाॅधी तो गाॅव-गाॅव बिखरे पड़े है।

अनशन के बाद टीम अन्ना को क्या मिला ? न खुदा खादी ही मिला न विसाले सनम हम इधर के रहे न उधर के रहे। उनका जन लोकपाल बिल पास नहीं हो पाया। उनके लोकपाल बिल से गैर सरकारी स्वयं सेवी संगठनों को क्यों मुक्त रखा गया। एक साहित्यकार गोपाल श्रीवास्तव का ही कहना है कि वह इसलिये कि टीम अन्ना के ही कई सदस्य सैकड़ो एन.जी.ओ. के अध्यक्ष है।

चुनावों में हालांकि एक दो को छोड़ कर टीम अन्ना के कई प्रत्याशियों की जमानत जब्त होने वाली है। अधिकतमर ईमानदार विरोधी पार्टी से रिश्वत लेकर बैठ जायेंगे। हां टीम अन्ना को एक ब्लेकमेलिंग की ताकत जरूर मिल जायेगी।

अंत में मैं यह पूछना चाहता हॅू कि आमरण अनशनों में टीम अन्ना के स्वयं के सदस्यों ने कितना आर्थिक सहयोग दिया ? यदि अनशनों में चंदे के खर्चे से खाने पीने, ठहरने, प्रकाश, माइक इत्यादि की व्यवस्था की गई थी तो वह पैसा मध्यम वर्गीयों ने अपनी जेब से या सरकारी नौकरों ने खुद ही तनखा में से नहीं दिया होगा। वह पैसा

निश्चय ही अमीर आदमियों के चन्दे से आया होगा। जो कि निश्चय ही हराम की कमाई का होगा। गलत रास्ते से सही मंजिल पर नहीं पहुंचा जा सकता।

अन्त में अन्ना हजारे ने टीम अन्ना से अपने आपको अलग कर लिये। उन्होंने दुखी मन से उनके आन्दोलन की असफलता स्वीकार कर ली। उनके आन्दोलन ने सरकार को हिला कर रख दिया। यह कम महत्व की बात नहीं कि केवल उनके नैतिक शिखर के कारण ही इतना बड़ा आन्दोलन अहिंसक रहा। उन्होंने उनके ब्लाग में दुखी मन से स्वीकारा कि उनका आन्दोलन असफल रहा पर उससे जन जागृति अवश्य हुई। अब जनता मत पेटी के द्वारा व्यवस्था बदलेगी। (दिनांक 6.8.12)

नेतृत्व का संकट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अन्ना हजारे और बाबा रामदेव को अब यह तो मालूम पड़ ही गया होगा कि व्यवस्था एक निश्चत पिण्ड की तरह होती है, जिस पर न्यूटन का "ला आफ इनर्सिया" लागू होता है कि एक निश्चल पिण्ड को बगैर पर्याप्त बाहनय शक्ति लगाये हिलाया नहीं जा सकता। उन्होने जो शक्ति प्रदर्शन किया वह अपर्याप्त था।

अन्ना हजारे के पहले प्रदर्शन से तो सरकार फिर भी हिली थी मगर अंतिम प्रदर्शन में तो सरकार समझ गई थी कि भारत वर्ष में शांत प्रदर्शनों से तो फिलहाल कुछ नहीं होने वाला। इसीलिये बाबा रामदेव का प्रदर्शन कोई असर नहीं छोड़ पाया फिर

दोनो जनता के मुद्दे पर भी एक नहीं हो पाये। अंतिम प्रदर्शन में अन्ना टीम की आन्तरिक असहमति स्पष्ट हो गई थी।

इन प्रदर्शनों से एक तथ्य स्पष्ट हो गया कि भारत की जनता भ्रष्टाचार, मंहगाई और कुशासन से अत्यन्त त्रस्त है। वह इन मुद्दो के ऊपर किसी के भी पीछे होने को तैयार हो जाती है। ये प्रदर्शन यह भी दर्शाते हंै कि भारत में इस समय उचित नेतृत्व का संक्रमण है। अब देखना यह है कि प्रदर्शन कांग्रेस के विरूद्ध कितना प्रभाव डाल पाते है।

जनता यह भी देख चुकी कि संसद में उसका नेतृत्व कितने धोखेबाज लोग कर रहे है। उन्हें जनता के संकटो से कोई मतलब नहीं है। वे बढ़ती मंहगाई और भ्रष्टाचार से निपटने में अक्षम सरकार की सहायता करने के लिये पूंछ हिला कर खड़े हो जाते है", बल्कि बगैर आमंत्रण के ही संसद में उसे गिरने से रोकने के लिये तैयार हो जाते हैं। उनको मिलने वाला तात्कालिक रोटी का टुकड़ा भारतीय गणतंत्र और स्वयं उन्हें कितना नुकसान आने वाले समय में पहंुचाने वाला है यह समझे बगैर।

बाबा रामदेव का प्रदर्शन बालकृष्ण के प्रकरण में कांग्रेस के ऊपर दबाव नहीं डाल सका। उन्होने सोचा होगा कि उनके प्रदर्शन से सरकार बालकृष्ण के प्रकरण में झुक जायेगी, मगर नहीं झुकी। उनका अनशन तीन दिन का था। पहले तीन दिनों में सरकार नहीं हिली तो उन्होने अनशन एक दिन और बढ़ा दिया। अनशन के पहले दिन उन्होने कहा था कि उनका अनशन किसी व्यक्ति या पार्टी के विरूद्ध नहीं है वरन काले धन, विदेशो में जमा भ्रष्ट लोगो का कालाधन वापिस लाने और भ्रष्टाचार के विरूद्ध है, पर अन्त में इस नारे के साथ समाप्त हो गया कि कांग्रेस हटाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ।

अन्ना हजारे तो हार मान कर वापिस चले गये। उन्हें मालूम है कि राजनैतिक पार्टी बनाना मतलब भ्रष्टाचार को न्यौता देना ही है। उन्होंने यह स्पष्ट कह दिया था कि उनके पास इतना पैसा नहीं है कि वे एक राजनैतिक पार्टी बना सके पर केसरीवाल ने "स्वराज" पार्टी बना ही डाली और ठीकरा अन्ना हजारे के सिर पर फोड़ दिया। केजरीवाल कह रहे है कि यदि अन्ना कहे तो वे पार्टी नहीं बनायेंगे यानि वे भी राजनैति में आने से डर गये। किसी पार्टी को उसके विरूद्ध जन जागृति करके हराना अत्यन्त सरल है बजाय एक राजनैतिक पार्टी बना कर टक्कर देने से। उन्हें हिन्दु महासभा, प्रजा सोस्लिष्ट पार्टी, महर्षि महेश योगी इत्यादि पार्टियों का हश्र याद नहीं है। इसीलिये अन्ना हजारे ने यह कहा है कि वे मात्र कांग्रेस के विरूद्ध जगह जगह प्रचार करने आ सकते है।

उधर कांग्रेस ने एक तोता रटन्त ही सीखी है यदि कोई जनता के हित में बात करता है तो उसके पीछे आर.एस.एस. का हाथ है। उन्हें तो पाकिस्तान के द्वारा

नियोजित आतंकवादी गतिविधियों में भी आर.एस.एस. का हाथ दिखने लगता है। कोई भ्रष्टाचार हटाने की बात करता है तो कांग्रेस को उसके पीछे आर.एस.एस. का हाथ दिखता है, यदि जनता को त्रस्त करने वाली मंहगाई बढ़ती है तो आर.एस.एस. के कारण, यदि कोई भूखे मरता है तो आर.एस.एस. के कारण।
यह देखना छोड़ कर कि मंहगाई कम करने का प्रयत्न करना चाहिये।

गुड गवर्नेस का क्या मतलब होता है ? आप भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा कर मंहगाई कम करें, आप काले धन पर अंकुश लगा कर मंहगाई कम करें पर उनसे यह सब नहीं हो पा रहा । बहुत बढ़ा कर और थोड़े से पेट्रोल के दाम कर करके यदि शासन सोचता है कि जनता खुश हो जायेगी तो इसमें शक है। तेल, दालें अनाज और सब्जियों के दाम अब तो आसमान के ऊपर निकल चुके है।

बाबा रामदेव ने अच्छा किया कि चैदह अगस्त सन् 2012 में उनका अनशन समाप्त कर दिया अन्यथा उनकी भीड़ से पन्द्रह अगस्त का राष्ट्रीय पर्व मनाने में रोड़े अटकते। इस पर्व पर विदेशी कैमरे भी लगे रहते है। राष्ट्रद्रोह का आरोप लगाकार गोली चलाने पर भी सरकार नहीं हिचकती और बेकार में बालकृष्ण के पीछे निर्दोष लोग मारे जाते है।

अब दिनांक 16.08.12 को न्यायालय ने बालकृष्ण को जमानत दे दी पर बाबा रामदेव की फैक्ट्रियों के उत्पादो का मानक स्तर देखने छापे मारना चालू कर दिये। इन सबका मतलब केवल बाबा रामदेव को तोड़ना है जिसके कि वे भ्रष्ट मंत्रियों और अधिकारियों के काले धन के बारे में सार्वजनिक रूप से शोर मचाना बन्द कर दें।

ददद्दू का बैल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ददद्दू ने उनके हरेक बैल पर लिख रखा था “ददद्दू का बैल”। उनका वश चलता तो उनके लड़को के हाथ पर भी लिखवा लेते ददद्दू का लड़का। ददद्दू लड़को को भी उनका बैल ही समझते थे पर नहीं लिखा पाये। वे तो चाहते थे कि जिस तरह बर्तन पर लिखा लेते थे ददद्दू का बर्तन, उसी तरह बीबी के हाथ पर भी लिखा लेते “ददद्दू की बीबी”।

उनका बैल नम्बर-9 रात को नहीं आया। वे समझे कि किसी बैलनी के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा होगा पर वह सुबह भी नहीं आया तो उनका माथा ठनका। उन्होंने बढ़कू से इस चिंता पर विचार विमर्श किया। उन्होंने बढ़कू से कहा “बैल तुझे ही पहचानता है। तू ही बैलो को बैल जैसा दिखता है। तू पड़ोस के गांवो में जा और हे-हें चिल्ला-चिल्ला कर वहां की गलियों में घूम। यदि बैल किसी घर में बंधा होगा तो रम्भाने लगेगा। बस, उस घर में हमारे गांव वाले डंडो से हमला कर देंगे। यदि समस्या हम से नहीं सुलझी तो हम थाने में रिपोर्ट कर देंगे।

बढ़कू, पास के गांवो की गलियों में है-है चिल्लाता रहा पर बैल नहीं रम्भाया। मजबूरन उन्हें थाने में शिकायत करना पड़ी। ददद्दू सुबह से शाम तक दूरदर्शन से चिपके रहते हैं, उन्हें सी.आई.डी. और चन्द्रमुखी चैटाला सीरियल बहुत पसन्द आते है, क्योंकि वही रिश्वत के दलइल में डूबे बगैर देश में ईमानदारी से सी.आई.डी. गिरी करते है अतः उन्होंने अपने मंझले लड़के को बुलाया और आदेश दिया मंझले तू मंुबई जा और बड़े सी.आई.डी. साहब और चन्द्रमुखी चैटालन से सम्पर्क कर। उन्हें अपना बैल ढंूढने के लिये तैयार कर। उनसे कहना कि उन्हें मोहगांव हवेली के ददद्दू ने बैल ढंूढने के लिये बुलाया है। वे मुझे पहचानते होंगें क्योंकि उनके सीरियल में नियमित रूप से देखता हॅू।

मंझले को मुंबई घूमने का अच्छा मौका मिल गया। मंुबई पहुंच कर उसने चन्द्रमुखी के स्टुडियो में सम्पर्क किया। स्टूडियो के दरबान ने उन्हें रोक दिया। मंझला बोला “मेरे ददद्दू चैटालिनी को जानते है।” दरबान ने मैडम से जाकर कहा “कोई ददद्दू का नाती आपसे मिलना चाहता है”। मेडम ने सोचा कि हरियाणा के हर गांव में दो चार ददद्दू रहते है फिर कुछ सोच कर कहा “अच्छा” भेज दो।

चन्द्रमुखी चैटाला से मिलने एक ऊंचा पूरा सुदर्शन युवक चटख लाल रंग का पेंट, नीले रंग की कमीज और सफेद रंग की टाई में मिलने आया। चन्द्रमुखी चैंक कर मुस्कुरा दी। बदले में वह नवयुवक भी एक आॅख दबा कर मुस्कुरा दिया। चैटाला के

तेवर चढ़ गये। अनपढ़ लोगो की देह की भाषा प्राकृत होती है। उन्हें शिष्टता पूर्वक किसी लड़की के मुस्कुराने का मतलब दैहिक आमंत्रण होता है। कुछ पीली पुस्तके और कुछ सस्ती या महेश भट्ट की फिल्में भी उनकी चेतना में कचरा इकट्ठा कर देती है।

चैटाला ने सोचा कि यह प्राकृत व्यक्ति शिष्टता की भाषा को अन्यथा ले रहा है। अतः रूखेपन से पूछा "क्या बात है ? मंझला सकपका कर बोला "जी हमारा बैल गुम गया है। उस पर
दद्दू का बैल लिखा हुआ है। आप समस्या को गुलगुले को मारते पीटते ही हल कर लेते है। वहां गांव में आप मुझे मारते पीटते रहियेगा और दद्दू का बैल ढंूढ दीजियेगा।

पहले तो चैटाला समझी थी कि यह डायरेक्टर के लिबास वाला शख्श कोई "दद्दू के बैल" नामक सीरियल बनाना चाहता है अतः तारीख देने के लिये तैयार हो गई थी पर जब सुना कि उन्हें सचमुच का बैल ढंूढ़ना है तो उसका दिमाग उलट गया। उन्होने एक सचमुच का थप्पड़ उस रंगीन देहाती को जड़ दिया। मंझले थप्पड़ को सह नहीं पाया और बैठ गया। पूरी यूनिट मंझले को स्पाट बाय समझती थी। उसको बेहोश होते देख शूटिंग बंद कर दी गई। उसके चेहरे पर पानी छिड़का। जब उसकी आंखे खुली तो चैटाला ने उसे कुछ दूर बिठा कर समझाया। "देख दद्दू के नाती, हम यहां खुद कुछ नहीं करते। लेखक जो लिखता है वही डायलाग बोल देते है। यहां स्टुडियो में बैल गुमाये जाते है और यहीं हम उसे ढूंढने की एक्टिंग करते हंै। हां सी.आई.डी. जरूर कुछ आउटडोर शूटिंग करते हैं वही कुछ तुम्हारी हेल्प कर सकते है।

जब मंझले बाहर जाने लगा तो चैटाला ने चैकीदार को बुला कर समझाया "देखो इस दद्दू के नाती को इगतपुरी के जंगल में छोड़ आओ। इगतपुरी का जंगल उस वक्त सुनसान था। फिर एक दम चिड़ियो के चहचहाने, हाथी के चिंघाड़ने और शेर के दहाड़ने की आवाजें आने लगीं। गांव के उस सुविधा भोगी जीव ने कभी जंगल नहीं देखे थे। केवल सुना था कि हाथी चिंघाड़ते है और शेर दहाड़ते हंै। अलबत्ता सर्कस में भी हाथियों को चिंघाड़ते हुये और शेर को दहाड़ते हुये सुना था। पर यह तो जंगल था और मंझला अकेला था। इतने में उसे विचित्र प्रकार का भालू दिखा तो मंझले की जोर से चीख निकल गई।

उस जोर की चीख को सुन कर वह भालू डर गया और डर कर भाग गया। मगर चहचहाना चिंघाडे और चीखे यथावत आती रही। मंझले ने कुछ देर बाद क्या देखा कि स्वयं सी.आई.डी. जी उस भालू को घसीट कर ला रहे है। सी.आई.डी. जी ने नाराज होकर मंझले से पूछा कि वह उस प्रतिबंधित क्षेत्र में कैसे आ गया। मंझले ने दद्दू का बैल गुमने से लेकर यहां तक की पूरी कहानी कांपते हुये सुना दी। यह सुन कर सी.आई.डी. जी हंस दिये। तीन कुर्सियां और टेबिल मंगवाई गंइ और आदेश दिया कि

चिड़ियों की चहचहाट का सी.डी. बंद कर दी जावे। फिर भालू की ड्रेस उतरवा दी तो अंदर से एक नौजवान निकल गया। यह देख कर मंझला हक्का बक्का रह गया। सी. आई.डी. ने मंझले से कहा कि पहले बैल छुपा कर उन्हें बैल के छुपने की जगह बतला दी जावे तभी वह उसे ढूंढ पायेंगे अन्यथा नहीं। हाॅ उन्हें मंझले की चीख अच्छी लगी तो उसे भी रिकार्ड कर लिया गया।

निराश होकर मंझला गांव लौट आया। उसने दद्दू को आप बीती सुनाई तो दद्दू चन्द्रमुखी चैटाला और सी.आई.डी. पर बहुत नाराज हुये। कुछ दिनो बाद निराश दद्दू को कोटवार ने खबर दी कि एक बैल जिस पर दद्दू का बैल लिखा हुआ है सरकारी कांजी हाउस में बंद है और उसे शिनाख्त के लिये कांजी हाउस बुलवाया गया है। कांजी हाउस में दरोगाजी और हर गांव के दो तीन दद्दू आये हुये थे। छिन्दवाड़ा के दो हजार गांवों के छः हजार दद्दू इकट्ठे हो गये थे। हर दद्दू मुफ्त का वह बैल हथियाना चाहता था। हालांकि, मोहगांव के कोटवार ने गवाही दी कि मोहगांव के दद्दू ने बैल तो बैल उनकी बकरियों तक पर दद्दू की बकरी लिखवा रखा था।

दरोगा जी ने किसी पर विश्वास नहीं किया और शिनाख्ती परेड में बैल की आंखो पर पट्टी बंधवा कर उसे बुलवाया। हर दद्दू के सामने बैल के आंखो की पट्टी खोली गई। वह बैल भड़क गया था। वह हर गांव के दद्दू को झूठ बोलने की सजा उसके सींगो पर उठा कर देने लगा तीन चैथाई दद्दू लोग यह देख कर बगैर शिनाख्त करवाये खिसक लिये।

असली दद्दू के पास आकर वह भटका हुआ बैल शांत हो गया और दद्दू से अपनी थूथनी लपेटने लगा और जब तक कि दरोगा जी सीधे तरीके से सुपुर्दनामा दे ही रहे थे दद्दू ने फिर दद्दूपना कर दिया। दद्दू ने दरोगा जी से एक कोने में चलने का निवेदन किया। दरोगा जी समझे कि दद्दू उनके मतलब की बात करने वाले है। दद्दू बोले "दरोगा जी हम आपको आधा किलो खोवे की जलेबी देना चाहते है। आप कृपया मना मत कीजिये।" दरोग जी भड़क गये। उन्होंने दद्दू को भी जलेबी की रिश्वत देने के आरोप में हथकड़ी लगा दी।

अब उनके लड़को को बैल को छुड़ाने के बाद दद्दू को छुड़ाने की मुश्किल आ पड़ी। छुटका बोला "कुछ दिन दद्दू को जैल में ही रहने दो तो हमें कुछ दिन चैन मिले।" बड़के ने उसे डांट दिया।

बड़के ने सुना थ कि अधिकारी की कीमत उसकी ताकत देख कर लगाना चाहिये। उसे इतनी रिश्वत देना चाहिये कि वह मना न कर सके। और कहा दद्दू दरोगा जी की कीमत आधा किलो खोवे की जलेबी में लगा रहे थे। वह दरोगा जी के पास पहंुचा और बोला "यह जो दद्दूपना बतला रहे थे यह हम सब के पिताजी है। उन्हें कृपया छोड़

दीजिये। दरोगा नाराज होकर बोला "आप लोग बैल ले जा सकते है पर मैं उन्हें नहीं छोड़ सकता। यह मेरी कीमत आधा किलो खोवे की जलेबी बतला रहे थे।

छुटका बोला "हां सर उन्हें चार पांच महिने जैल में बैल बना कर रखिये।" बड़के ने उसे फिर घूरा तो वह बोला "मेरा मतलब है इन्हें कुछ दिन तो आराम करना चाहिये।" बड़कू ने कहा "सर आप ही दोनो की कीमत लगा दीजिये।" दरोगा बोला इस समझदार बैल की कीमत तो दस हजार रूपये और इस दो पैरो के बैल की कीमत पचास पैसे क्योंकि उससे नीचे की रेजगार बंद हो गई है।

इस तरह पचास पैसे में बाप और दस हजार रूपये में वह उनके बैल को छुड़ा लाया। फिर उसने कोटवार से पूछा कि वह बैल सरकारी कांजी हाउस कैसे पहंुचा। कोटवार ने जवाब दिया "एक ट्रक" में कुछ बैल कटने के लिये नागपुर ले जाये जा रहे थे कि बिछुआ गांव के पास किसी रंगबदल के कुछ कार्यकर्ताओं को इसकी भनक लग गई। उन्होने ट्रक रूकवा लिया। ट्रक में सवार लोगो ने उनकी पिटाई लगाना चालू कर दी की बिछुआ की पुलिस आ गई। उन्होंने रंग दल के कार्यकर्ताओं को बचाया और ट्रक जब्त कर लिया।"

संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम	ः	डाॅ. कौशल किशोर श्रीवास्तव
जन्म तारीख	ः	15 सितंबर, 1946
जन्म स्थान	ः	विदिशा म.प्र.

शिक्षा ः एम.बी.बी.एस., एम.एस. (सर्जरी)

प्रकाशित कृतियां ः (1) "ट्यूवेक्टामी एण्ड काॅसेक्टामी" (अंग्रेजी, 1980), "है

(2) प्यास अभी"

(3) सन्नाटा गहरा है, (गजल संग्रह),

(4) "आए न बालम",

(5) "बाइज्जतबरी" (व्यंग्य संग्रह)

(6) "मधुरादिप" (काव्य -संग्रह),

(7) अखिलम, मधुरम (काव्य संग्रह),

(8) प्रतिरोधक क्षमता (मेडिकल साइंस) आई सी एम आर अवार्ड हेतु नामांकित/देशी-विदेशी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित।

प्रकाश्य कृतियां ः (1) "चढ़ते सूरज की सवारी" (गजल संग्रह),

(2) हडकम्प (ंव्यंग्य संग्रह)

सम्मान-पुरस्कार ः विभिन्न शीर्ष स्तरीय संस्थाओं से पुरस्कृत एवं सम्मानित

सोसायटी, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

भूतपूर्व ः (1) सदस्य: मानव अधिकार आयोग

(2) भूतपूर्व सदस्य: किशोर न्यायपीठ छिन्दवाड़ा

(3) शल्य चिकित्सक, सेवानिवृत्त सीएमओ, मुख्य स्वास्थ एवं चिकित्सा अधिकारी

सम्प्रति ः (1) अध्यक्ष: राजभाषा संघर्ष समिति (दिल्ली), जिला इकाई, छिन्दवाड़ा

(2) उपाध्यक्ष जिला रेड क्रास समिति

(3) अजीवन सदस्य इंडियन मेडिकल एसोसियेशन

(4) मानव मित्र मानव अधिकार आयोग

संरक्षक ः (1) पत्रकारिता कोश मंच जिला, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

(2) म.प्र. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति जिला, छिन्दवाड़ा(म.प्र)

स्वतंत्र लेखन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में ।

संपर्क ः 171, विष्णु नगर परासिया मार्ग,

छिन्दवाड़ा 480001 (म.प्र.)

मोबाइल ः 9424636145

ज्वए

ज्ीम म्कपजवत पद ब्ीपम

ि प्दकपंद श्रवनतंस व िडमकपबंस त्मेमंतबी

प्प्ब्डण्त्ण्

।देंतप छंहंतए छमू क्मसीप

ैनइरमबज रू . म्दबसवेमक ंतजपबसम मदजपजसमक ृृब्सपदपबंस ेजनकल वद ज्वचपबंस ।चचसपबंजपवद व ि अपजंउपद ठण् ब्वउचसमग ूपजी अपजंउपद ृब्श् पद बीतवदपब ूवनदकेण्

ैपतए

च्समंेम पिदक ीमतम ूपजी मदबसवेमक जीम वतपहपदंस तमेमंतबी ूवता व िजीम क्नवण् ंनजीवतेण् ज्ीम पितेज ंनजीवत य पण्मण् क्तण् ज्ञंर्नोंस ज्ञपेीवतम ैीतपअंेजंअ ीेक इममद मनहंहमक पद जीपे ेजनकल वित जीम संेज 32 लमंते रवपदमक इल जीम ेमबवदक ंनजीवत पण्मण् ज्ञनण् छपकीप ैीतपअंेजंअ कनतपदह जीम संेज पिअम लमंतेण्

ज्ीम पितेज ंनजीवत पे ं तमजपतमक ब्ीपम िडमकपबंस विपिबमत व िब्ीीपदकूंतं कपेजतपबज व िडण्च्ण् ैजंजमण् भ्म ीें ंसेव ूवतामक ंे त्मेमंतबी मिससवूण् प्प्ब्डण्त्ण् पद 1971.72ण् भ्म ीेंक वइजंपदमक जीम कमहतमम व िडण्ैण् ;ैनतहद्ध पद जीम लमंत 1972ण् ज्ीम ेमबवदक ंनजीवत ीें कवदम वित डण्ैब पद जीम लमंत 2010ण् तिवउ ।उतंअंजप नदपअमतेपजल डीेंतेीजतं ंदक जवचचमक जीम ंिबनसजलण्

प् ीवचम जींज जीम ंतजपबसम ूपसस पिदक चसंबम पद जीम मेजममउमक रवनतदंसण्

ज्ींदापदह लवनत ेपत

ैपदबमतमसमल

क्तण् ज्ञंर्नोंस ज्ञपेीवतम ैीतपअंेजंअ

71ए छवदपं ज्ञंतूंस

ब्ीीपदकूंतं ;डण्च्ण्द्ध 480001

डवइपसम छवण् 9424636145

एस.पी. का साक्षातकार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नये कप्तान साहब इस जिले में पदस्थ हुये तो उन्होने पी.ए. से पूछा "परम्परा क्या कहती है ? पी.ए. ने परम्परा के पन्ने पलटे और कहा "सर प्रथम पृष्ठ पर लिखा है कि आपको पत्रकार वार्ता आयोजित करना चाहिये। एस.पी. साहब ने फिर पूछा पत्रकार मुझसे क्या पूछेंगे ? पी.ए. ने परम्परा का अगला पृष्ठ पलटा और पढ़ा "जी इस पृष्ठ पर लिखा है कि पत्रकार कहेंगे कि सर आपका मध्यप्रदेश के इस सबसे अच्छे शहर में आपका स्वागत है।

कप्तान साहब ने स्मृति पर जोर डाल कर कहा "एक मिनट जहां तक मेरी स्मृति में है पिछले शहर के पत्रकारों में उनके शहर को भी कहा था कि मध्यप्रदेश के इस सबसे अच्छे शहर में आपका स्वागत है आप बतायें पी.ए. साहब कि वह शहर अच्छा था कि यह शहर अच्छा है। पी.ए. ने चश्मा ठीक करते हुए कहा "हर मेंढ़क को उसका कुआं सबसे अच्छा लगता है। हर शहर में नालियां बजबजाती रहती है। सड़को में गड्ढे रहते है, सड़क पर जानवर यहां वहां भीख मांगते रहते है। जहां झूठा खाना मिलता है बेचारे मंुह मार देते है अन्यथा, सड़को को ट्रेफिक जाम करते है। नालियों का कचरा जाम करता है और सड़को को अवारा पशु। लड़के, लड़कियां आंखे बंद करके बाइक चलाते है। उनकी आंखे एक्सीडेन्ट पर ही खुलती है।

ठीक है मैं समझ गया आगे बढ़ो "पी.ए. ने आगे कहा "जी पत्रकार फिर पूछेंगे कि आपकी प्राथमिकताऐं क्या रहेगी। कप्तान साहब बोले "हां यही पिछले शहर के पत्रकारो ने पूछा था। फिर बोले तो ठीक है पी.ए. साहब आप पत्रकार वार्ता की व्यवस्था कर दें। साथ में सारे टाऊन इन्सपेक्टरस को बुलवा लीजिये।

पत्रकारो को यह आमंत्रण मिल गया जिसकी वह अपेक्षा कर रहे थे। जिले के उच्चाधिकारियों के स्थानान्तरण से उन्हें सामाजिक सम्पर्क का अवसर प्राप्त हो जाता है। कप्तान साहब के कमरे में चहल पहल होने लगी। सारे दरोगाओं को पीछे बिठाल दिया गया जब भिनकना बंद हुआ, पत्रकार लोग बैठ गये तो एक पत्रकार ने कहा "सर,

मध्यप्रदेश के इस सबसे सुन्दर शहर में आपका स्वागत है। एस.पी. साहब ने हालांकि शहर देखा ही नहीं था पर बोले “इतना सुन्दर शहर मध्यप्रदेश में कोई दूसरा नहीं हैं।

इससे पत्रकारों का अहं तुष्ट हो गया। उन्होने प्रसन्न होकर प्रश्नों की धार बोथरी कर ली। जैसी की परम्परा थी एक प्रश्न एक पत्रकार ने उछाला “एस.पी. साहब आपकी प्राथमिकतायें से क्या रहेंगी ? यह प्रश्न पूछकर उसने सगर्व अन्य पत्रकारो को देखा। साहब कप्तान ने माइक ठीक किया। उसे दो बार तर्जनी से ठोका और उत्तर दिया “मेरी प्राथमिकतायें अवैध जुआ, सट्टा और शराब पकड़ना रहेगी।

सब पत्रकार इस उत्तर से संतुष्ट हो गये क्योंकि यही परम्परा थी पर एक पत्रकार ने पूद ही लिया “एस.पी.साहब ये अवैध शराब और जुआ तो समझ में आता है अवैध सट्टा क्या होता है सारे पत्रकार इस प्रश्न से खुश हो गये।

एस.पी. साहब किंचित मुस्कुराये और बोले “लाटरी वैध सट्टा होती है जो एम.पी. में वैध नहीं है। एक टी.आई. बीच में बोल पड़ा सर सट्टे तो तभी लगेंगे जब कोई क्रिकेट मैच होगा या किसी अभिनेता के बच्चा पैदा होगा।” एस.पी. साहब नाराज जो गये। सारे पत्रकार हंस दिये। उन्होनें पी.ए. से कहा “इस टी.आई को लाइन अटैच करवा दो।” एक पत्रकार बोला “कोशिश कर लीजिये।

टी. आई. खड़ा हुआ उसने जोरदार सेल्यूट मारा और बाहर जाने लगा। एस.पी. समझ गये की ये कोई बहुत कीमती नग है। पूछा “कहा जा रहे हो ? वह टी.आई बोला “जी, लाइन अटैच होने” सब हंस दिये। एस.पी. साहब ने पी.ए. से कहा पी.ए. साहब सारे टी. आईज को आदेश निकाल दीजिये कि जिले के अवैध सट्टे, शराब और जुआ बन्द करवा दें।

पी.ए. कुछ नोट करने लगा आजादी का चैथा स्तम्भ स्थानीय से राष्ट्रीय फिर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो पर आ गया। एक ने एस.पी. साहब से पूछा “सर, बराक ओबामा की पत्नि भारत कब आयेगी ? जब कि अमेरिका के हर प्रेसीडेन्ट की पत्नि भारत आ चुकी है। एस.पी. साहब बोले उनका कार्यक्रम तो बना रहा है। जब पत्रकार लोग अन्त्तघरेलू मुद्दो पर आ गये तब वह पत्रकार वार्ता भंग हो गई।

एस.पी. ने तब टी.आई. साहबान की मीटिंग ली। उन्होने कहा “देखो पत्रकारो को” कल से ही मालूम हो जाना चाहिये कि मैनें जो कहा उसका क्रियान्वयन चालू हो गया है। एक टी.आई ने खड़े होकर पूछा “श्रीमान 24 घंटे तो कोई जुआ नहीं खेलता कि हम गये और पकड़ लिया।” कप्तान साहब ने कहा “तुम कैसे ही टी.आई. हो ? अरे किसी सेठ से कहो कि उसके नौकरो को खेत में जुआ खिलाने लगे। सेठ ही पचास हजार रूपये वहां रख देगा। उनको पकड़ लो। सेठ के पैसे जप्त कर लेना। नौकरो को थाने लाकर भगा देना। सेठ के पैसे वापिस मत करना । पकड़ लिया न जुआ और कर लिये न पैसे

जप्त। अखबारों में जितने जुआ सट्टा है अगर सब के सब न्यायालय जाने लगे तो सरकार को अलग से विशेष जुआ, सट्टा और शराब न्यायालय की स्थापना करना पड़े।

पिच गये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दौड़ में कुछ पिच गये
तो होड़ में कुछ पिच गये
थेगड़े इतने लगे
कि जोड़ में कुछ पिच गये
रास्ते इतने मुड़े
हर मोड़ में कुछ पिच गये
चुप रहे रहे तो पेट की
मरोड़ में कुछ पिच गये
माना दहेज कोढ़ है
उस कोड़ में कुछ पिच गये
करोड़ो से कुछ बच गये

करोड़ में कुछ पिच गये

बदलती है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इमारत ख्वाब की है नींद में हर पल बदलती है
कभी है संगमरमर की, कभी धू धू के जलती है
तुमको देखा था मैनें कहां, इतना भूल गया ?
अब वही भूल है जो साथ साथ चलती है
ये दुनिया जाम कैसी है कभी कड़वी कभी मीठी
सुराही एक है पर मैंकशो को दिल सी लगती है
घर दी दीवार है जो कांपती है परदे सी
नंीव को दीवार अब गिरती हुई सी लगती है
ये कुदरत है हरेक अन्जाम का आगाज लिये
हरेक आगाज को अन्जाम में बदलती है

एक शिक्षक की सेवा निवृति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आज वह ककहरा और बारह खड़ी की ज्योति सेवा निवृत हो रही है जो असंख्य वैज्ञानिको अर्थशास्त्रियों चिकित्सकों अध्यात्म गुरूओ में इच्छा से या बलात् जलती रहेगी। वह छोटा "अ" जो असंख्य अनहद् नाद होकर कर निनादित हो रहा है, सेवा निवृत हो रहा है।

यह "अ" एवं एक ही वे किनारे है जिन्होने एक झरने को समुद्र बताया अन्यथा तो मां ने उन्हें दूध पिला कर पाठशाला में छोड़ दिया था। मां और बाप का बनाया वह मांस का लोथड़ा शिक्षक ने ही रवीन्द्रनाथ टैगोर, सर सी.वी.रमण और मोहनदास करमचन्द गांधी में तब्दील किया। वह शिक्षक ही सुनीता विलियम्स बन कर अन्तरिक्ष में घूम रहा है। शिक्षक का सिखाया हुआ वह "अ" ही है जो असंख्य अर्थशास्त्रो, वैज्ञानिक पुस्तको, कला की पुस्तको में जिन्दा हैं। कितने वैज्ञानिको, चिकित्सको या कलाकारो को याद होगा कि वह शिक्षक सेवा निवृत हो रहा है या उस शिक्षक की संतान भी थी जिसकी शादी में वे लोग नहीं आ पाये ?

व्यवस्था ने उस शिक्षक के सर्वोत्तम वर्षो एवं काविलियत को साल दर साल वैज्ञानिको, कलाकारो एवं अर्थशास्त्रियों में ढ़ाला है। वह शिक्षक ही दवाइयां बन कर रोगों को ठीक कर रहा है और गणित के नये सूत्र बन कर और नये सूत्रो में ढ़ल रहा है। वही दर्शन शास्त्र के सिद्धांतो में ढ़ल रहा है। योगीराज भगवान कृष्ण, काश आपने गीता के सूत्रो में एक सूत्र भी गुरू सान्दीपनी को समर्पित किया हो तो ! भगवान राम

के रूप में हम गुरू विश्वामित्र एवं गुरू वशिष्ठ की आराधना करते हैं। एवं भगवान कृष्ण के रूप में गुरू सान्दीपनी की । हालांकि आप स्वयं विश्व गुरू बन गये मेरा सिखाया "अ" भूलने पर अल्लाह रहता तो है पर तुम पर प्रकाशित नहीं होता। अच्युत, च्युत हो जाता है। ओम तुम पर प्रकाशित नहीं होता। हर गणना "एक" की ही पुनरावृति है। ये भाषा, ये गणित जो आकाश में तैर रहे है, मेरे ही सिखलाये हुये हैं। इन्हीं के कारण तुम्हारा नाम है, व इन्हीं के कारण विश्व की हर वस्तु का नाम है। "अ" के हटने पर हर अक्षर अपूर्ण हो जाता है।

ये अक्षर और संख्या अनन्त काल से ऐसे चले आ रहे है। बस तुम इन्हे जानते नहीं थे। मैनें तुम्हारी इस लिखित रूप में इनसे पहचान करवाई। मुझे भी तुमसे पहलें इन्हें सीखना पड़ा है। तुम्हारे मां बाप ने जाकर कुछ शब्दों का ज्ञान तुम्हे करवाया था, पर तुम्हे जानते नहीं थे। तुम सब ने पाठशाला में आकर इन्हे पहचाना। ये कागज, ये कलम और ये कम्प्यूटर इन्हीं अक्षरो के कारण है।

तुम नहीं जानते कि मैं ही तुम्हारे अन्दर उपस्थित हॅू। मेरे द्वारा पढ़ाये गये हर विद्यार्थी में मैं ही बीज रूप स्थापित हुआ और पल्लवित हो रहा हॅू। तुम सब मिट्टी हो और मैं बीज हॅू, जो तुम्हारे द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी जिन्दा रहॅूगा।

वह अनन्त "अ" तुम्हारे अन्दर उपस्थित था पर तुम उसे जानते नहीं थे। शिक्षक ने ही तुम्हारा उससे परिचय करवाया। शिक्षक ने ब्रम्ह्ना बनकर तुम्हारे अन्दर ज्ञान की सृष्टि की, विष्णु बन कर उस ज्ञान की रक्षा की एवं महेश्वर बन कर तुम्हारे अज्ञान को नष्ट करते रहे। संस्कृत में सही ही कहा है

गुरो्बृम्हा, गुरोर,विष्णु, गुरोर, देवो महेश्वर।
गुरोर् साक्षात पर ब्रह्नम, तस्मै श्री गुरवे नमः।

तुम तुम्हारे अन्दर के गुरू को जिन्दा रखना। जब तक तुम तुम्हारे अन्दर के गुरू को जिन्दा रखते हो तब तक तुम राम बने रहते हो। जब तुम उन्हें मार देते हो तब रावण बन जाते हो। तुम्हारे अन्दर उपस्थित तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा गुरू है। उसे जिन्दा रखो। उसी के प्रकाश में चलते रहो। अपने अन्दर की आत्मा में से "अ" को मत मरने देना। वही आत्मा है, वही गुरू है, वही तुम हो। "तात्वम्असि। अनन्त का "अ" हटाओगे तो उसका अन्त हो जायेगा। सबसे पहले सिखाये हुये उस एक को जिन्दा रखना। अगर उसे हटा दिय तो सारी संख्यायें मर जायेंगी। एक है तो अनेक है। वह एक ही तुम्हारा गुरू है।

साहित्य बनाम अद्र्धागिनी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब मैं दफ्तर से घर लौटा तो पत्नि ने जेब तलाशते हुये पूछा "कवि गोष्ठी कब है ?" चैंक कर मैने कहा "तुम जो मुझ पर हमेशा शक करती हो, मैं किसी कवि गोष्ठी में नहीं जा रहा। मुस्कुरा कर बोली "जा तो रहे हो। आज तुम्हारे चेहरे से प्रसन्नता जो झलक रही है। आज कवियों जैसी मनहूसियत तुम्हारे चहरे पर नहीं है।"

मैनें जोर देकर कहा "कल का दिन पूरा तुम्हारे नाम" वह बोली "शुक्ला जी का फोन आया था" मैं कुछ बुदबुदाया "शुक्ला जी से कहा था घर के टेलीफोन पर फोन न किया करें। पत्नि ने हंस कर कहा "यही तो मैं भी कह रहीं हूॅं। चलो कल तुम्हारी तीन बजे से छः बजे तक की छुट्टी। बस, "मुझे करटेन" का कपड़ा खरीदना है उतनी सी शापिंग करवा देना।"

मैनें सोचा अब छिपाने से कोई फायदा नहीं है। प्रगट में बोला “ठीक है दोपहर दो बजे से तीन बजे तक तुम्हारी खरीददारी कर लेना। तीन बजे मुझे गोष्ठी में जाने की आज्ञा दे देना।”

वह हंस दी, जैसे कह रही हो मैं जाने दंूगी तब न जा पाओगे। मैं दूसरे दिन पौन दो बजे मैं तैयार हो गया और बोला “मैं तैयार हो गया चलो शापिंग को।“ उन्होने पूछा “कौन सी शापिंग ?” मैं समझ गया कि मेरी हार का सिलसिला चालू हो गया है। फिर भी मैनें कहा “तुम्हे परदे के कपड़ा लेना है न । “वह बोली अरे हां तुम्हें कवि गोष्ठी में जाना है। मैं जल्दी तैय्यार होती हूॅ तुम तब तक स्कूटर निकालो।

मैं समझ गया कि मार्केटिंग छः बजे तक चलेगी। दरअसल उन्हें मार्केटिंग नहीं करना थी। छः बजे तक का समय बरकाना था। मैनें सोचा कि शुक्ला जी को ही फोन कर लेता हूॅ कि मैं कुछ देर से आऊंगा। मैनें उनका फोन टनटनाया तो उधर से आवाज आई “हाॅ मियां, तुम कुछ लेट आओगे।”

मैं चैंक गया भी मैनें पूछा “आपने कैसे जाना”। वे बोले “मियां जैसे भाभी जी मुहरा चलने में तेज है वैसे ही हमने कच्ची गोलियां नहीं खेली है मैनें कहा मियां, साल दो साल कविता करना क्यों नहीं छोड़ देते। ये साहित्य वाहित्य अब तुम्हारे वश में नहीं है। ये तो वह शौक है कि जो जलाये न जले और बुझाये न बने।

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने तमाचा मार दिया हो। मैनें कहा “ऐसा नहीं है मैं जल्दी ही आ जाऊंगा। “वे गहरी सांस लेकर बोले” ठीक है। छः बजे भी आये तो मैं तुम्हे कविता पढ़वा दंूगा।” फिर उधर नाराजगी में फोन बंद कर दिया गया। पत्नि ने तैयार होने में तीन बजा दिये। मैं चिल्ला कर बोला “मैं जा रहा हूॅ। वे बोली “तुम नहीं जा सकते। बस, मैं बिन्दी भर लगा लॅू।

मैं दो नावों पर सवार होने की निरर्थक कोशिश कर रहा था। दो “स्टूलो” के बीच में जमीन ही होती है। इस बार पत्नि जी ने बिंदी लगाने में ही आधा घंटा लगा दिया। लेकिन जब इत्र की तीखी गंध आने लगी तो मैं समझ गया कि पत्नि तैयार हो चुकी है। ”आकर बोली “चलो।”

मैनें रोष में पूछा “बिंदी लगाने में कोई क्या आधा घंटा लगाता है। वे बोली “मैं तुम्हारी तरह नहीं हूॅ कि बदन को “हेंगर” समझने लगंू। कुछ भी लटकाया और चल दिये। बिन्दी की भी मैचिंग करना पड़ती है। “मुझे मालूम था कि जब उनका काम होता है तो तैयार होने पांच मिनट भी नहीं लगते। पर आज तो काम बनाना नहीं बिगाड़ना था।

मैं “स्कूटर” को “किक” लगाने के लिये स्टैण्ड पर खड़ा करने लगा तो बोली “अब तुम्ही देर कर रहे हो। फिर मत कहना कि मैनें देर लगा दी।

मैनें कहा गलती मेरी ही है जो कल जरा सा खुश होलिया था। उन्होने मुझे पुचकारा “ऐसा नहीं है। अब चलो बहस तो रास्ते भर कर लेंगे। हम स्कूटर पर सवार हो गये। स्कूटर भी उनका ही साथ दे रहा था। बीच रास्ते में रूक गया। पत्नि जी को मौका मिल गया आराम से कार्बोरेटर साफ कर लो।

मैनें एंजिन खोला, कार्बोरेटर निकाल उसमें सचमुच में कार्बन जम गया था। अपने रूमाल से कार्बोरेटर साफ किया और गाड़ी आगे बढ़ा दी। चार बज गये। हम आगे बढ़े। स्कूटर काबरा की दुकान पर रोका। वह मुस्कुरा कर बोला आईये।

मुझे तीन बजे के बाद हर मुस्कुराहट जहर लग रही थी। उसने हाथ जोड़ कर पूछा क्या सेवा कर सकता हूॅ। मैं झल्लाया हुआ था। मैनें भी हाथ जोड़ कर कहा “हमें परदें चाहिये”। वह बोला “भाभी जी नया स्टाक आया है। प्रथम तल पर चले जायें। में चिड़ कर बोला पिया अपनी सेज सूली पर ही क्यों बनाता है”। वह हंस कर बोला “सेज पर जाना ही क्यों बाबूजी ? मैं कुड़ कर चुप हो गया। पत्नि जी जो हमेशा जल्दी में रहती है, “केट वाक” करती हुई सीढ़ियां चढ़ने लगी।

जब वे परदे पसन्द करने लगी तो मेरी बड़ी बेटी का फोन आ गया। “मम्मी ब्राउन करटन पसन्द मत करना। गजब, मैनें सोचा। मम्मी और बेटी में क्या आप सी समझ है। हमने बेटी को बताया भी नहीं था कि हम परदे लेने जा रहे है और उसका फोन आ गया।

पत्नि परदे पसन्द करने लगी। परदे क्या पसन्द कर रही थी मानो लड़की के लिये लड़का
पसंद कर रही हो। परदों का पहाड़ लगा था पर उन्हें पसन्द नहीं आया। उन्हें पसंद करना होता तब न।

मैं सोचने लगा कि व्योम जी कविता पढ़ चुके होंगे और नयन जी पढ़ रहे होंगे। पत्नि ताड़ गई। उन्हें विचारो में भी उस दिन मेरा कवि सम्मेलन में जाना पसंद नहीं था। उन्होने पूछा “तुम्हे कौन सा परदा पसन्द आया ?

मैनें परदे देखे होते जो पसन्द करता। एक परदे पर हाथ रख कर बोला “ये अच्छा है। पत्नि हंस दी, कहने लगी ये अच्छा तो है पर उससे अच्छा ये है। मैनें झूठी प्रशंसा कर कहा “क्या पसंद है वाह!

हमारे बीच में चूहे बिल्ली का खेल चल रहा था जिसमें बिल्ली को आनन्द आ रहा था। पत्नि बोली “यहां अच्छी “वेराइटी” नहीं है “गुरू कृपा” पर चलते है। मैं बुरी तरह से पराजित हो चुका था। मैनें हथियार डालते हुये कहा चलो” इतने में जले पर नमक छिड़कते हुए नौकर पीछे से बोला “तो आपको कौन से परदे पसन्द हैं “मैं भड़क गया, बोला तुमसे मतलब । “पसन्द नहीं आये तो नहीं आये।

पत्नि जी नौकर से सहानुभूति जताते हुये बोली "उस बेचारे पर नाराज क्यों होते हो वह तो नौकर है" मैं भी मालिक नहीं हूँ "मैनें दबी जुबान से कहा। पत्नि जी को जहां मौका मिलता है मेरी चेतना को घायल करती रहती है उन्हें भी नौकर से सहानुभूति नहीं थी।

"गुरू कृपा" पर भी परदे पसन्द नहीं आने थे तो नहीं आये। परदे पसन्द करने गये होते तो आते। ये काम शाम को पांच बजे ही खत्म हो गये। मैनें सोचा चलो छूटे पर छः बजे के पहले कैसे छूटते। पत्नि ने कहा "तुम्हें तुम्हारी बहिन को राखी की बिदाई के लिये साड़ी नहीं लेना है क्या ?

मैनें जलभुन कर जवाब दिया "यदि तुम्हें पसन्द आ जाये तो ? पत्नि ने जवाब दिया "यदि सस्ती होगी तो पसन्द कर लेंगे। हां मेरी भाभी आ रही है एकाध मंहगी साड़ी उन्हें पसन्द कर लेंगें। बेचारी तीन महिने बाद आ रही है।" मैनें सोचा कि मेरी बहिन तो डर के कारण आती ही नहीं है।

साड़ी भी केवल मंहगी वाली ही पसन्द आई। साढ़े पांच बजे ही निपट गये मैनें उत्सुकता वश पूछा "चलें चलते है "जल्दी क्या है पहले कुछ खा लेते है। "पत्नि ने प्रस्ताव रखा। मालिक का प्रस्ताव मतलब आदेश होता है। सत्कार होटल में पहुंचे। बैरे ने मेनू पढ़ने दे दिया और कुछ देर बाद एक डोसा और एक कटलेट स्वयं ही ला दिया। बगैर आर्डर। हम अक्सर यही खाते थे पत्नि डोसा और मैं कटलेट।

लौटते में सब्जी की दुकान मिल गई। पत्नि को याद आया कि घर में सब्जी बिल्कुल खत्म हो गई है। नब्बे रूपये की थोड़ी सी सब्जी लेकर हम घर आ गये। ये आधा घंटा पत्नि ने एतिहात के लिये खर्च कर दिये।

घर पहुंचने पर मैं मानसिक तौर पर बिल्कुल थक गया था। इतने में शुक्ला जी का फोन आ गया। बोले "कविता पढ़ना हो तो अब भी आ सकते हो। "मैनें कहा" मैं बिल्कुल ही थक गया हूँ"। वे बोले बिल्कुल ऐसा ही होता है जब आप परदे खरीदने जाते है और सब्जी लेकर वापिस आ जाते है। ठीक है आराम कर लो। अगली गोष्ठी अगले इतवार को है।"

पेन्शनरो के मूल वेतन पर इन्क्रीमेंट क्यों नहीं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सभी पेन्शनर, रिटायरमेन्ट के समय मूल वेतन से आधी राशि पर पेन्शन एवं उसके ऊपर मंहगाई भत्ता पाकर संतुष्ट हो जाते है। उनके रिटायरमेन्ट के बाद वे किसी पेन्शनर्स एशोसियेशन के सदस्य बन जाते है।

पेन्शनर्स एशोसियेशन का कत्र्तव्य, वर्ष में एक बार सेवानिवृत कर्मचारियों को खाना खिलाना, दवाइयों के कोटे में वृद्धि करवाना या किसी मंत्री का अभिनंदन करना मात्र रह गया है।

वर्ष में एक बार खाना खिलाते समय मात्र एक चैथाई पेन्शनर ही इकट्ठे होते है। वे भी, वे पेन्शनी जिन्हें सामाजिक सम्पर्क में रूचि रहती है। उसमें भी दूरस्थ तहसीलों के सेवा निवृत कर्मचारी इकट्ठे नहीे हो पाते जो कि संख्या में अधिक होते है। सेवा निवृति के साथ जो वेतन होता है एक सेवा समय के आधार पर पेन्शन का निर्धारण होता हैं। जब शासकीय कर्मचारी तैतीस वर्ष की सेवा पूर्ण कर लेता है तब तत्कालीन वेतन के आधे वेतन पर पेन्शन निश्चित की जाती हैं। उस पर मंहगाई भत्ता शासन की कृपा पर निर्भर करता है। अधिकतम इकाईयां मंहगाई भत्ते के लिये गिडगिडाकर उनके कत्र्तव्य का इतिश्री समझ लेती हैं। शासकीय सेवक की बढ़ती जिम्मेदारियों के समय सेवा निवृति पर पेन्शन एकदम कट कर आधे से कम हो जाती है। लेखक का सुझाव है कि पेन्शन की मूल राशि के ऊपर "पे वेण्ड" का भी निर्धारण होना चाहिये जो उस समय वेतन के इन्क्रीमेंट का आधा हो सकता है। इस तरह पेन्शनर को एक सीमित वित्तीय सहायता मिल जायेगा। इस तरह उन वृद्ध लोगो का समाज के द्वारा ऋण चुकाना भी हो जायेगा।

सेवा निवृत्ति के समय तक कुछ प्रतिशत लोगो का देहावसान हो जाता है। जो पेन्शनर्स बचते है उनमें कुछ प्रतिशत एक वर्ष के अंदर चले जाते है। चढ़ती उम्र के साथ पेन्शनर्स तेजी के साथ मरने लगते है। इस तरह यदि शासन के द्वारा उनके इन्क्रीमेन्ट की "कृपा" भी करती है तो शासन पर गुजरते समय के साथ अधिक भार कम होता जाता है। शासन यंूही वृद्धावस्था पेंशन" के नाम पर जाने कितने नाटक करता है पर उन जागरूक मृत मतदाताओं को उनकी सेवा के बदले "लालीपाप" पकड़ा देता है। यह सच है कि पेन्शनर्स लगभग शत प्रतिशत मत डालते है "इस तरह प्रजातंत्र के एक जागरूक घटक होते है" क्योंकि शासकीय सेवा के रहते मतदान की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि आधे से ज्यादा मतदाता अपने कीमती मत का सदुपयोग नहीं कर पाते। वे अपनी इस शक्ति का उपयोग उनके हित में नहीं कर पाते।

यह सही है कि प्रजातंत्र बनता सभी के मत से है पर चलता शासकीय सेवाओं की सहायता से है। शासकीय सेवा के रहते शासकीय सेवकों के कीमती वर्ष एवं योग्यता को शासन निचोड़ लेता है। उनकी सेवा के प्रतिफल स्वरूप यदि शासन उन्हें पेन्शन पर उसे "पे वेन्ड का आधा" इन्क्रीमेेन्ट भी देती है तो अहसान नहीं करेगी। विशेषकर यह समझते हुये कि यह वर्ग शत प्रतिशत मतदान करता है। इस तरह प्रजातंत्र का एक जागरूक घटक है।

पेन्शनर्स जो कि अधिकतर विद्वान एवं परिपक्व होते है अपने हित में इस पहलू को नजरअंदाज कर देते है। अधिकतम गरीब पेन्शनर्स शारीरिक रूप से अधिक कमजोर होते है। उन पर जिम्मेदारियाॅ भी अधिक होती है। फिर उन्हें "पे वेण्ड" पर "इन्क्रीमेंट" भी अत्यन्त कम मिलने की संभावना रहती है। वृद्धो के नाम पर नाटक करने वाली सरकारे इस पहलू से छिड़कती है। वहां पेन्शनर्स एसोशिएशन के दशको से जमे हुए पदाधिकारी केवल मंत्रियों के बाजू में बैठनें पर ही उनके दायित्वों की इतिश्री समझ लेते है।

इस दिशा में पेन्शनर्स एसोशिएशन की प्रारंभिक फोरम विचार कर सकती है फिर उसकी रिर्पोर्ट शासन को दे सकती है। शासन इस पर एक कमीशन बिठाल सकता है जो फोरम की रिपोर्ट पर विवेचना कर अनुशंसा शासन को दे सकता है पर इससे पहले कदम तो पेन्शनर्स एसोशियेशन को ही उठाना पड़ेगी।

अथ अध्यक्ष पुराण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक अध्यक्ष पुराण में यह किस्सा लिखा हुआ है भारत में तब जनपद हुआ करते थे। जननदों में जनपद अध्यक्ष के चुनाव के तरीके भी थे। चुनाव जीतने के बाद प्रजातांत्रिक मतदाताओं के नलों में सोमरस आता था और विपक्षी मतदाताओं के घरो में नल ही नहीं आता था। मतदान के दिन विपक्ष के मतदाता पानी का इन्तजाम करने में लगे रहते और पक्ष के मतदाता उनके भी मत डाल देता। कई केन्द्रों में तो तीन सौ मतदाता होते और छः सौ मत पड़ जाते थे। उन लोगो ने आधुनिक भारत से भी ज्ञान प्राप्त किया हुआ था। इस तरह मतदाता दो सौ प्रतिशत जागरूक हो जाते थे।

एकदा एक जनपद अध्यक्ष का मुकुट लाया गया। मुकुट देख कर वह जनपद अध्यक्ष भड़क गया। उसने मुकुट साज को बुलवाया। जनपद अध्यक्ष मुकुट साज से बोला "क्या गाॅधी वादी मुकुट लाये हो बिल्कुल गाॅधी टोपी दिखती है। मुकुट साज बोला "हुजूर अभी तक तो यही पारम्परिक मुकुट चलता था। जनपद अध्यक्ष ने कहा इन्द्र बन जाने पहले के अध्यक्ष किस तरह शासन करते थे। ऐसा मुकुट लाओ जिससे कान ढके रहें। अध्यक्ष शासन करेगा कि जनता की आवाज सुनेगा"। लिहाजा ऐसा मुकुट बनवाया गया जिससे कान ढकें रहे। मुकुट पहनने का मतलब है कि जनता का

मत लो, जनता का मत सुनो। जनपद अध्यक्ष ने वित्त मंत्री को बुलाया और कहा "वित्त मंत्री खजाने की चाबी हमें दे दो। हम घोटाले करेंगे। वित्त मंत्री बदजमीज होते है। उसने कहा "मैं महारानी साहिबा से पूछ कर ही आपको चाबी दूँगा।

जनपद अध्यक्ष महारानी साहिब से डरता था। मगर उसे घोटाले तो करना ही थे। लिहाजा उसने कीमती पत्थरो को जमीन नीलाम करना चालू कर दी। भरपाई करारोपण से की गई। जनता भड़कने लगी। जनता भड़क कर उसका कर्तव्य पूरा कर रही थी। जनता को डर था कि अगर वह नहीं भड़केगी तो इतिहास क्या कहेगा ? जनता तो मेन चैक पर इकट्ठी हो गई एक प्रजातंत्र वादी नेता के नेतृत्व में।

मुख्य सचिव भागता हुआ जनपद अध्यक्ष के पास गया। इसके पहले की वह कुछ कहता जनपद अध्यक्ष बोला "अब आयेगा खेल का मजा। जनता अगर मंहगाई से ग्रस्त है तो और करारोपण कर दो। जनता ईंधन लेने के लिये भाग जायेगी। आंदोलन ठप्प हो जायेगा। आंदोलन जनता के मनोरंजन के साधन है। खाना खाने के बाद क्या करें आंदोलन करें। हुआ यह कि यहाँ जनता आंदोलन करती और वहाँ और अधिक कर लग जाते। लिहाजा आंदोलन बिखर गया। गुप्तचर प्रमुख बोला "महोदय अगले चुनाव में क्या होगा आप कर पर कर लगाये जा रहे हैं।

अध्यक्ष बोला "हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे है। प्रजा आंदोलन करके उसका कर्तव्य पूरा कर रही है। तो हम भी कर पर कर लगा कर अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। नहीं तो इतिहास कहेगा कि मैं एक "नकारा" शासक शासिक था। "अध्यक्ष ने पाॅचो बलों पर कर लगा दिया उसने प्रकाश जल, अग्नि वायु और अंतरिक्ष पर भी करारोपण का आदेश दिया।

मुख्य सचिव बोला "अंतरिक्ष पर कर कैसे लगेगा ? अध्यक्ष चुन कर नहीं आया था। "बोला सोचनें तक पर चिंतन कर, लगा दिया जाये। चिंतन के लिये शासन से अनुमति ली जावे। वही सोचने की अनुमति हो जो शासन चाहे अन्यथा देश द्रोह का आरोप लगा कर कैद में डाल दिया जाये।"

प्रजा उसके बोेलने से डरने लगी। वह जब बोलता था तो नया कर लग जाता था। प्रजा उसके पास पहुंची। कहा "स्वामी आप बोलना मत। हम तो आपके करारोपण से दुखी है। अध्यक्ष बोला "इसका एक ही रास्ता है। आप आंदोलन न करें। बहुत जान है इन हाथों में (करो में)। अध्यक्ष दूर देश से पढ़ कर आया था अतः नहीं मालूम था कि कर यानि कर के और क्या मतलब होते है वह तो सोचता था कि वह प्रजा के हाथ मजबूत कर रहा है। वह फिर आगे बोला "मैं एक आदमी तुम करोंड़ो का अगला जन्म सुधार रहा हूँ। माया महा ठगिनी हम जानी यानी मैं ही जानता हूँ कि माया बहुत ठगती है तुम नहीं जानते। अतः मैं हम सब लोगो को माया से दूर करके तुम्हारा

अगला जन्म सुधार रहा हूँ। उसके दरबारी बोले “जय हो। “जो जना के नायक गरीब जनता के बारे में सोचते थे वे अध्यक्ष के साथ हो गये। जनता ठगा पर ठगा गई।

वह अध्यक्ष केवल अर्थशास्त्र का ज्ञाता था। उसे इतना ही मालूम था कि राष्ट्र की स्थिति खजाने से सुदृढ़ होती है। प्रजा की खुशहाली से नहीं। उसे शासन का एक ही तरीका मालूम था कि फूट डालो और कूट डालो। उस समय भी नीरज श्री की उपाधियाॅ बांटी जाती थी कुछ ऐसे लोगो को भी उपाधियाॅ दे दी गई। जिन्होनें अपनी पत्नि को त्यागने के अलावा कोई उल्लेखनीय काम नहीं किया था।

दैनिक वस्तु और पैसो के लिये मुखिया एवं प्रजा में लुका छिपी का खेल चल रहा था। मुखिया पैसे और आवश्यक वस्तुयें छिपा देता था और प्रजा उन्हें तोड़ती थी। प्रजा की उचित सम्पति जैसे जमीन और मकान भागते भूत की लंगोटी (मुद्रा) देकर अलग-अलग वाहनों जैसे बाँध, खदान, फैक्ट्री के रूप में बना कर छीने जा रहे थे और अपनो को दिये जा रहे थे। प्रजा के बच्चों की सम्पति अपनो के बच्चों का दी जा रही थी और प्रजा को हर दिन रूप बदलने वाली मुद्रा सुन्दरी दी जा रही थी।
जो घूम फिर कर फिर मुखिया के खजाने में जा रही थी। प्रजा को नंगा किया जा रहा था और मंुह का निवाला छीना जा रहा था। इस करारोपण या जमीन छीन कर प्रजा को मारा जा रहा था। (इसके बाद व्यास जी की टीप थी कि बाकी पृष्ठ प्रजा लिखेगी।)

इति श्री भारत खण्डे अध्यक्ष पुराणे तत् सम्बंधी प्रजातंत्र पुराण, आने बाली नंगी भूखी पीढ़ी को पूर्ण करने हेतु समर्पित। फिर आगम पृष्ठ रिक्त थे)

तरीका घूस देने का

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैनें बड़े बाबू के कानों में फुसफुसा कर कहा साहब “आपका हाथ टेबिल के नीचे कीजिये।” उन्होने पूछा “क्यों ?” मैनें कहा “मैं आपको रिश्वत देना चाहता हूँ“ उनका चेहरा लाल हो गया। सारा कार्यालय हँसने लगा। बड़े बाबू नाराज होकर बोले “तुम आदि मानव, तुम्हें रिश्वत देना भी नहीं आता। तुम कोई गुनाह कर रहे हो, जो छिप पर रिश्वत दे रहे हो। टेबिल के नीचे से रिश्वत देने में तुम्हें शर्म आना चाहिये।”

अब मेरा चेहरा लाल होने की बारी थी। मैनें पूछा “सर मैं क्या आपके घर आ सकता हॅू रिश्वत देने ” “नहीं” उन्होनें कहा मैं कार्यालय के काम कार्यालय में ही करता हँू। फिर घर में मेरा घुटनों के बल चलता हुआ बच्चा है। मै स्कूल के पाठ उसे अभी नहीं पढ़ाना चाहता। घर में सुन्दर पत्नी हैं जो मेरी जेब खाली करती रहती है। यहाँ कार्यालय में मैं कुछ पैसे बचा लेता हूँ। घर में उसे मालूम पड़ जायेगा कि मुझे रिश्वत ज्यादा मिलती है और घर कम ले जाता हॅू। तुम ईमानदार आदमी तुम मेरा आलीशान बंगला देख लोगे। मुझे फिर सी.बी.आई या सर्तकता आयोग में फंसवा दोगे। बंगले पर टंगा छोटा काला मटका तुम्हारी ईष्र्या भी नजरे सहन नहीं कर पायेगा। “उन्होनें रिश्वत न लेने के कारण गिना दिये।

“ठीक है “मैनें कहा ”मैं टेबिल के ऊपर से आपका हक दे देता हूँ आप हाथ नीचे करें “नही तुम मुझे रिश्वत नहीं दोगे” उन्होने कहा मैं अपना हक छीनता हॅॅू। तुम रिश्वत वाला हाथ नीचे रखो मैं ऊपर से रिश्वत छीनूँगा मेरा हाथ हमेशा ऊपर रहता है। तुम्हें रिश्वत देने का शऊर भी नहीं आता।

मुझे नहीं आता था। वे मेरा छोटा सा काम तीन साल से लटकाये हुये था और मैं उसे लपक नहीं पा रहा था। जब भी मेरा लक्ष्य पहुॅच के अन्दर दिखता वे हाथ और ऊपर कर लेते। अब मैं एडियों के बल खड़ा था और उनके चरण कमल तक दिखना बन्द हो गये थे। तब मेरी पत्नि ने कहा कि “वह सुअर बगैर रिश्चत लिये नहीं मानेगा। पर कार्यालय में तुम उसे सुअर मत कह देना। सर, कहना।”

इस तरह मैनें उन्हें यथा वांछित रिश्वत यथा शऊर तरीके से दे दी। रिश्वत का शऊर सिखाने वाले उसे सुअर से पूछा “सर” मेरा कम कब हो जायेगा।” “कल” उनका उत्तर संक्षिप्त था। मैनें आग्रह किया “आज ही हो जाता तो अच्छा था। उन्होने ज्ञान बगराया “यह कलयुग है भैय्या। इस युग में हर काम कल किया जाता है। सतयुग में कहने की जरूरत नहीं पड़ती थी। त्रेता में कहने पर तत्काल हो जाता था। द्वापर असली में द्वापल” था। ये कलयुग है जाओं कल आना।

मैं जब रिश्वत देते देते एक विभागाध्यक्ष बना तब मुझे मालूम पड़ा कि प्रजातंत्र को भी रिश्वत देना पढ़ती है। प्रजातंत्र को बहुत बड़ी रिश्वत देना मेरी औकात के बाहर

था। दरअसल, रिश्वत की राशि मंत्री जी एक लाख से कम करने तैय्यार नहीं थे। पहले भी मेरे पैरो के तने जमीन नहीं थी। अब तो हवा भी खिसकने लगी।

मैं भागा भागा संचालक के पास पहंुचा। मैनें जिन्दंगी में पहली बार करबद्ध किये और गिडगिड़ाया "सर, मेरी पदावनति कर दीजिये।" डा. बजाज (एक काल्पनिक नाम) बोले "दस हजार रूपये लगेंगे" सारा कार्यालय इकट्ठा हो गया। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि कोई "डिमोशन के लिये रिश्वत दे रहा था। मैनें हाथ जोड़े जोड़े ही पूछा "सर, (अब तक मैं हर सुअर को सर कहना, सीख गया था) वे रूपये आपको किय रूप में दूँ)

उन्होने मुझसे कहा "शायद तुम्हारा प्रमोशन कच्चे में ही हो गया। अब तुम हमारे ही केडर के आदमी हो तो सिखला देता हूॅ। पहले एक लिफाफे में रूपये रखो। उसके ऊपर रिश्वत का एमाउंट लिखो। फिर उसे एक दूसरे बड़े लिफाफे में रखो जिसके ऊपर मेरा काल्पनिक नाम। उस पर गोपनीय लिखा हो। फिर वह मुझे देना। हाँ यह तरकीब सिखाने के सौ रूपये अभी दो मैनें रूपये उन्हें दिये और सोचा कि समोसो से ही काम चला लूँगा। ऐसा कीमती गुर जो हाथ में लग गया था।

उन्होने ईमानदारी से मेरा डिमोशन कर दिया। मैं उन्हें रिश्वत न भिजवा सका। मगर कुछ दिनों में वह काल्पनिक नाम मेरे कत्र्तव्य स्थल पर खुद ही आ गया। कहने लगा "तुमने मुझे मेरी रिश्वत नहीं भिजवाई अब उस पर ब्याज लगेगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि बजाज रिश्वत पर भी ब्याज मांग रहा था।

मैनें उन्हें मेरी कुर्सी पर आसीन किया और पाँच हजार रूपये देकर हिा सर, अगली किश्त शीघ्र ही भिजवा दॅूगा। कुर्सी पीछे से एक दम गीली हो गई, उन्होने पूछा "यह कुर्सी गीली क्यों हो गई है मैं तो सभी क्रियायें सरकिट हाउस में ही कर के आया हॅॅू।

"सर" मैनें कहा इस कुर्सी पर पहली बार रिश्वत ली गई है अतः यह रो रही है। "ठीक है अब से मैं रिश्वत नहीं लॅूगा कुर्सी को असंतुष्ट नहीं होना चाहिए। तुम ऐसा करो मुझे एक ड्रेसिंग टेबिल बनवा दो जिसका मुख रंग सुनहरे रंग का हो। उस पर राजा रवि राय की पेंटिंग हो। उसका काॅच छः फिट का हो। उसके दोनो बाजुओं में "ड्राअर" (खींचक) लगे हों समझ गये। मैं कांप गया मैनें कहा "सर वह तो पचास हजार रूपये का चक्कर है। "तो ठीक है एक चालीस गुणित साठ का भूखण्ड खरीद दो मुख्य मार्ग से लगा हुआ वह बोले "सर वह कम से कम अठारह लाख रूपये का आयेगा" मैं गिडगिड़ाया।

"तो ठीक है चैड़े पायचें का पेन्ट पहनने वाले अधिकारी तुम पुनः पदोन्नति के लिय तैयार रहो।" यह धमकी देकर वह चले गये। सीखः यथा वांछित उत्कोच यथा समय दे देना चाहिये।

फसल किसान की लाभ डाकू का

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अस्पताल में जहाँ जोर लगा के, जोर से, थोड़ा और की आवाज आ रही है, वहाँ किसी भवन का निर्माण नहीं हो रहा है, वरन सृष्टि का निर्माण हो रहा है। वह अस्पताल का प्रसूति वार्ड है। वहाँ और करीब जाने पर आया द्वारा प्रसवमान महिला पर शारीरिक उत्पीड़न की भी आवाजें आती है। इस तरह प्रसूति के स्थान पर उस नवीन सृष्टि का स्वागत होता है जो कभी देश का प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति भी बन सकता है। वह होने वाला बच्चा हो सकता है किसी गीतान्जलि का रचियता कोई रविन्द्रनाथ टैगोर कोई रमन, कोई राजनीतिज्ञ जैसे जवाहर लाल नेहरू, कोई दार्शनिक जैसे महर्षि अरविन्द इत्यादि बने। ऐसे महान पुरूष को जन्म देने के लिये उसकी माँ को जोर लगा देने की आज्ञा दी जा रही है या कभी-कभी पिटाई भी लगा दी जाती है वह किसी महा पुरूष को क्या मेरे जैसे बाबू, को भी जन्म दे सकती है।

वहाँ की लेडी डाक्टर स्वयं "लेडी" होती है और लेडियो का इलाज करती है। इसलिये उन्हें लेडी डाक्टर कहा जाता है। एक महान सृष्टि के जन्म के समय वे चाय की चुस्कियाँ लेती रहती है। वे गर्भाशय के चैड़ा करने और खुरचन (डी.एन्ड.सी.) में माहिर होती हैं। उन्हें बच्चे को प्राकृतिक रास्ते से जन्म के पहले की शल्य क्रिया करके प्रसव कराने में भी महारत हासिल होती है। इस आप्रेशन की "सीजेरियन" कहते है जिससे उनकी नींद में व्यवधान न हो। आज कल बच्चे प्राकृतिक रूप से कम और सीजेरियन से ज्यादा जन्म ले रहे है।

दो स्थानों पर खून की गंध जरूर आती है, जहाँ किसी आदमी का गला काटा जा रहा हो या जहाँ आदमी जन्म ले रहा हो। डाक्टर कहते है कि गर्भस्थ शिशु माँ में का विजातीय तत्व है, वह माँ पर परजीवी है। उनका कहना है कि यह सृष्टि माँ पर अमर बेल है। ऐसा नहीं होता तो माँए बच्चो को हमेशा ही उनके शरीर में रखती, बाहर नहीं फेंकती, पर माँ जिस ममतामयी दृष्टि से सद्य जात बच्चे को देखती है वह वर्णानाहीत है। माँ को लगता है कि गर्भ जैसे सुरक्षित स्थान से निकलकर वह फूल जिन्दा रहने के लिये संसार से कैसे संघर्ष करेगा। माँ की दर्द भरी चीख से ही किलकारी पैदा होती है।

कभी-कभी वहाँ लड़के चुराये जाते हैं। (मुर्गी तो मेहनत करे अंडा खाये फकीर) लड़कियाँ चुराई नहीं जाती दी जाती है, मुफ्त में। कभी-कभी तो दो। लड़की को बला मानते है, अबला नहीं। फिर माँ के सास ससुर आरोप लगाते है कि उनकी बहू का लड़का चुरा लिया गया। साँस ने तो बहू के पेट में लड़का देख लिया होता है। एक "लास्ट एण्ड फाउण्ड" फिल्म बन जाती है। किन्ही किन्ही दयालु
माँओं से तो लड़की को ही खतरा होता है। लड़की कसे तो माँ से गर्भ से ही बचना पड़ता है। माँ की सास के कारण यह खतरा अनुलोमानुपाती हो जाता है। गर्भस्थ कन्या विमर्श एक शादी से ले कर खुरचन तक लम्बा विषय है।

माँ के द्वारा बच्चा पैदा करने पर भी बच्चा माँ का नहीं होता, आया बाई का हो जाता है। फिर वही बच्चा माँ को आया बाई से खरीदना होता है। बच्चा तो माँ रूपी आसमान से गिरता है और आया कोई रूपी खजूर पर अटक जाता है। बच्चे का भाव ताव होता है। कौन कहता है कि आदमी को गुलाम बना कर बेचा नहीं जाता ! आदमी की खरीद फरोख्त तो प्रसूति गृह मुफ्त में ही चालू हो जाती है। जिस बच्चे को माँ जन्म देती है उसे माँ को खरीदना पड़ता है माँ का बच्चा माँ को ही बेचा जाता है। बच्चा माँ को मैसे दे कर मिलता है और बच्चे को माँ मुफ्त में। मुफ्त की चीज की कौन इज्जत करता है। इसीलिए बड़े होकर बच्चे माँ बाप की इज्जत नहीं करते पर बच्चा चूँकि कीमती होता है अतः माँ बाप को प्यारा होता है।

सायनी वार्ड में सद्यजात उस फूल को फूल के पौधे के पास रखने के लिये वहाँ के कर्मचारियों को हर कदम पर मुद्रा देनी पड़ती है। नहीं तो डर लगता है कि कब माँ का बच्चा माँ का न रहे अस्पताल का हो जाये। बच्चा मुस्कुराया तो कर्मचारियों को भयानक खुशी होती है। उन्हें सामान्य बनाने के लिये पैसा दो। माँ तो बेचारी बच्चे के मुस्कुराने पर खुश हो ही नहीे पाती बच्चे ने डायपर गंदा किया तो वहाँ के कर्मचारी प्रसन्न हो जाते है। इससे उन्हें पैसे मिलते है। बच्चा जब डायपर गंदा करे ये लोग घेर लेंगे। चिल्लायेंगे अलैले अलैले भैय्या को छी छी हो गई। कोई बात नहीं मम्मी साफ कर देगी। लाओ बाई सौ रूपये।

माँ पूछेगी "काहे के पैसे"? लल्ला ने छी की तो पैसे किस बात के ? साफ में कर रही हँू। तुम्हे काहे के पैसे ? कर्मचारी जवाब देंगे भैय्या के छी छी करने का नेग।" लो छी-छी नेग तो यहीं सुना होगा। लल्ला के पलक झपकने का नेग, हाथ पैर हिलाने का नेग, छी-छी करने नेग, उस किलकारी का नेग, जो माँ नहीं सुन पाई पर वहाँ के कर्मचारियों ने सुन ली। यहाँ तक कि माँ अपने बच्चे से डरने लगती है। उसकी शादी होने तक और बहू से भी।

बच्चा जब भर्ती हो तो पैसे, बच्चा जन्म ले तब पैसे, साँस ले तब पैसे, और बच्चे के छीने के डर से माँ के टेम्पो पर वापिस घर जाने तक के पैसे देने पड़ते है बख्शीश के नाम पर।

वृद्धावस्था की समस्यायें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

(1) परिभाषा

वृद्धावस्था की परिभाषा:- वृद्धावस्था सारे अंगो की कार्य क्षमता की क्रमशः हानि है जिससे वे आयु वृद्धि से जुड़ी बीमारयिों से ग्रस्त होकर मृत्यु की संभावना को वृक्ष देते है वृद्धावस्था क्रमशः कैसे आती है जो आयु विशेष पर सक्रिय हो जाती है। हर कोष में उसे समाप्त करने की जीन्स भी रहती है। लगाजार कार्य करते करते अंग परिवर्तन का सामना नहीं कर सकते। उनमें विषैले पदार्थ जैसे लाइपोफ्लुसिन या कोली स्टीराल आदि

इकट्ठे हो जाते है। कोषो में फ्रीरेडिकल इकट्ठे होते जाते है। फ्री रेडिकल्स वे पदार्थ है जो हानिकारक होते है और एक दम ही नष्ट हो जाते है। डी.एन.ए. की टूट फूट ठीक नहीं हो पाती है। शोथ हारमोन कम हो जाते है। मेटाबोलिज्म के तमाम विष कोष में एकत्रित हो जाते है। जो स्वयं एन्टीजेन का कार्य करते है। व्यक्ति यदि दृढ़ न हो जो जनसंख्या इतनी अधिक हो जायेगी की योग्य ही जीवित रहेगा, के आधार पर नवयुवको द्वारा शायद उन्हें मार दिया जावे। उनकी आवश्यकता इसलिये भी नहीं रहती है उनकी प्रजनन क्षमता खत्म हो जाती है अतः उन्हें जगह खाली करना चाहिये।

जीवन यात्रा की संध्या होती है वृद्धावस्था। यह अवस्था जीवन का चतुर्थ आश्रम होती है। धवल केश राशि चाँदनी की तरह बिखरने लगती है। इस परिपक्व अवस्था की आयु विशिष्ट समस्यायें होती है जिन्हें हम मुख्यतः तीन वर्गो में समझ सकते है।

(2) समस्यायें

1. मानसिक समस्यायें
2. शरीरिक समस्यायें और
3. सामाजिक समस्यायें

(3) उनकी मानसिक समस्यायें

विचारो की परिपक्वता एवं विशाल अनुभव क्षेत्र इस अवस्था की धनात्मक उपलब्धि होती हैं इस समय तक व्यक्ति उसके लक्ष्य को पा चुका होता है। बावजूद बहुत सी मानसिक एवं सामाजिक उपलब्धियों के कुछ व्यक्तियों में कुछ मानसिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है कुछ निम्नानुसार है-

(क) स्मृति हानि:- यह एक सामान्य प्रक्रिया है यह हरेक वृद्ध व्यक्ति में नहीं होती है। स्मृति हानि या जो तात्कालिक घटनायें के लिये होती है या दूरस्थ घटनाओं के लिये या दोनो के लिये

(ख) स्मृति भ्रम:- इसमें एक घटना को दूसरी घटना से जोड़ा जा है।

(ग) पार्किन्सोनिज्म:- इस बीमारी में कम्पन तो होते है व्यक्ति को ऐसा लगता है कि चलते कोई उसे आगे की ओर धक्का लगा रहा है। ऐसा लगता है कि वह उसके गुरूत्वाकर्षण केन्द्र को पकड़ने के लिये दौड़ रहा है। स्मृति हानि साथ में हो सकती है। लार बनना कम हो जाती है।

(घ) एल्जीमरस, बीमारी:- यह बीमारी एक समस्या मूलक बीमारी है जिसमें क्रमशः स्मृति हानि होती जाती है। कई मानसिक समस्यायें उत्पन्न होती है।

(ड) अवसाद:- यह एक सामाजिक समस्या से उत्पन्न घटना भी हो सकती है। इस समस्या से निपटने के लिये बुजुर्गो को बर्हिमुखी बनाना चाहिये। उन्हें मनोरंजन के भरपूर साधन उपलब्ध होने चाहिये और उनका सामाजिक सम्पर्क बढ़ाना चाहिये।

(च) नींद कम आना:- नींद दो तीन घंटो में पूरी हो जाती है। फिर व्यक्तियों को रात भर जागना पड़ता है। नींद दुबारा लाने के लिये कोई सद्साहित्य पढ़े, एक गिलास कम शक्कर का दूध पिये।

कम नींद आना वृद्धावस्था के लिये उपयुक्त भी हो सकता है।

(छ) दर्द एवं मानसिक आघात सहने की क्षमता बढ़ जाती है जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण आ जाता है।

(4) शारीरिक समस्यायें

बहुत सारी शारीरिक समस्यायें इस उम्र में उत्पन्न हो जाती है। दूसरी ओर कुछ व्यक्ति पूर्व स्वस्थ भी रह सकते है।

(क) बालो का झड़ना (ख) बालो का सफेद होना

(ग) मोतिया बिंद:- आँखो का "लेंस" अपारदर्शी होता जाता है जिससे नजर धुंधली होती जाती है इसका आप्रेशन करवाकर उचित लेंस दे देने चाहिये। आज कल लेंस आँखो के अंदर ही लगा दिये जाते है। फेको आप्रेशन अति लोकप्रिय है।

(घ) दाँतो का झड़ना:- दाँत झड़ने से खाना चबाने में तकलीफ होती है और लार ठीक तरह से न मिलने से खाना पचाने में तकलीफ होती है। बोलने में भी अस्पष्ट वाक्य निकलने लगते है। मँुह पोपला हो जाता है। ऐसी अवस्था में नकली डेंचर लगाया जा सकता है। गरीब लोगो को इस समस्या को सुलझाने के लिये सरकार को आगे आना चाहिये।

(ड) विभिन्न प्रकार के कैंसर:- कैंसर की जल्दी खोज से जल्दी आप्रेशन किया जा सकता है।

(च) झुर्रियां पड़ना:- यह समस्या सुलझाने के लिये फेस लिफ्ट, जैसे कई आप्रेशन किये जा सकते है डर्म ब्रेजस भी किया जाता है।

(छ) घाव धीमे भरना:- रक्त प्रवाह कम होने से यह समस्या उत्पन्न होती है। उचित एंट्रीबायोटिक्स विटामिन्स, आराम इत्यादि से इस समस्या से निपटा जा सकता है। लेखक ने विटामिन बी काम्पलेक्स सह विटामिन सी के द्वारा दीर्घ घावों की ड्रेसिंग के अच्छे परिणाम देखे है।

(झ) सेक्स की कमी:- हारमोन्स की कमी के कारण सेक्स की क्षमता में कमी हो जाती है।

(ड) मेनुपाज:- महिलाओं में माहवारी रूकने के पूर्व एवं पश्चात हार्मोन्स में परिवर्तन के कारण माहवारी रूक जाती है फिर उनमें हड्डियाँ कमजोर होने लगती है वे बीमारियाँ होने लगती है जो पुरूषो में होती है। एच आर डी (हारमोन रिप्लेसमेंट थेरेपी) से कुछ पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

(त) प्रोस्टेस्ट ग्रंथि से प्रोस्टेट का बढ़ना:- इससे पेशाब क्रमशः रूकने लगती है एवं मूत्राशय में एकत्रित होकर गुर्दा खराब करने लगती है। नींद में व्यवधान व बार-बार पेशाब आने के कारण होने लगता है। अब टी.यू.आर.पी. जैसे छोटे आप्रेशन से इसे ठीक किया जा सकता है।

(थ) हड्डियों का फ्रेक्चर:- हड्डियों के कमजोर होने के कारण एवं ठीक से कदम रखने के कारण की हड्डी का फ्रेक्चर हो जाता है। इलाज सरजरी है।

(द) जोड़ो का दर्द:- जोड़ो का दीर्घ उपयोग एवं तोड़ फोड़ से जोड़ो के दर्द या आस्टीयों आर्थोइटिस होता है। सामान्य आराम एवं दर्द निवारक दवाइयाँ या जोड़ो का बदलना इसका इलाज है।

(घ) मधुमेह:- यह टाइप दो डायबिटीज या नान इन्सुलिन डिपेन्डेन्ट डायबिटीज या एनआई डी.डी. कहलाता है। दवाईयों से इसे नियंत्रित किया जा सकता है। कम केलोरी का खाना एवं उचित व्यायाम आवश्यक है।

(न) उच्च रक्त चाप:- खून की नलियाँ के सकरी होने से क्या हारमोनल इम्बेलेंस ढोने से उच्च रक्त चाप होता है। उचित दवाइयाँ से इसे नियंत्रण में रखना चाहिये। कम चर्बी का खाना एवं उपयुक्त व्यायाम आवश्यक है।

(ट) ह्नदय घात:- ह्नदय की धमनियाँ सकरी होने या रक्त का अधिक भाग होने से ह्नदयघात हो जाता है। दवाईयाँ या आप्रेशन से इसे नियंत्रित रखती है। इसका बचाव चिंता कम करने से कम चर्बी का खाना एवं उचित व्यायाम के किया जा सकता है।

(ठ) मस्तिष्क आघात (पेरालिसिस):- खून की नलियाँ के संकरी होने के कारण मस्तिष्क के कुछ हिस्से में रक्त प्रवाह बंद हो जाता है। परिणाम स्वरूप पेरेलिसिस हो जाता है। उच्च रक्त चाप सामान्य रख कर मधुमेह पर नियंत्रण रख कर कम चर्बी युक्त खाने की आदत से इसे रोका जा सकता है मस्तिष्क ज्ञात होने पर दवाइयों के साथ अवशेष तक ठीक हो जाते है। मालिश से ठीक नहीं होते है उसमें शरीरिक कसरत जरूरी होती है।

(ड) हर्निया:- पेडू के हर्निया मांस पेशियों की कमी के कारण होते है।

(ध) न्यूजोनिया:- फेफड़ो के संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। इलाज, आवश्यक है।

(5) सामाजिक समस्यायें

व्यक्ति अवसाद में जाकर स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। वे असम्बन्ध हो जाते हैं समाज से कटने लगते है। उनकी समस्याओं के कारण उनकी तरफ अधिक ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। उन्हें वर्दिमुखी हो जाना चाहिये। उनकी तरफ कुछ ध्यान युवाओं को देना चाहिये। मनोरंजनों के साधनों का उपयोग करना चाहिये। कोई लक्ष्य बना लेना चाहिये वृद्धो को उनके क्लब बना लेना चाहिए।

(6) वृद्ध लोग क्या न करें

(क) उन्हें धूम्र पान नहीं करना चाहिये। धूम्र पान करने से फेफड़ो के कैंसर, ब्रोन्फाइटिस, दमा इत्यादि फेफड़ो की बीमारियाँ होती है। साथ ही होठों, अंग नली, आमाशय एवं यकृत के कैंसर हो सकते है।

(ख) शराब हो सके तो कम कर देना चाहिए। शराब के नशे, में गिरना एवं फेक्चर की सम्भावना रहती है।

(ग) नाखून ब्लेड से न काटे बल्कि नेलकटर से काटे।

(घ) आलस:- अपने आपको सीमित रखना

(ड) एक दम उठना:- इससे रक्तचाप एक दम कम हो सकता है। इससे हनदयघात या कब्जियत की संभावना बढ़ जाती है।

(द) कब्जियत का इलाज करवायें

क्या न खाये:-

(1) जल्दी पचने वाले कार्बोहाइड्रेट जैसे शक्कर, ग्लूकोज, मिठाई, नशे की चीजे

(2) केवक एक दाल (कई दालें मिला कर खाये)

(3) अधिक "फेट" जैसे घी, तेल, माँस, (टीन फिश छोड़ कर) (4) अधिक नमक

(7) क्या खाये

(1) काम्फ्रेक्स कार्बोहाइड्रेट जैसे स्टार्च (2) अधिक फाइबर:- गाजर, शकरकंद

(3) कुछ कैल्सियम जैसे- दूध, गाजर, टमाटर, छिलके रहित फल, मिली छोले

(8) क्या करें

(1) हल्की कसरत जैसे तेज चलना

(2) माँस पेशियाँ खीचने वाली कसरतें समय 20-30 मिनट सप्ताह में पाँॅच दिन

(3) घर में जल्दी सहारा मिल सके ऐसा घर (4) सामाजिक सम्पर्क

मद्यपान निषेध क्यों

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कोई भी पाठक यह पूछ सकता है कि मद्यपान निषेध क्यो ? कई शराब पीने वाले यह तर्क देते है कि वे उनके पैसो से शराब पीते है, स्वास्थ्य उनका खराब होता है, फिर न पीने वालो को आपत्ति क्यो ?

ये तर्क तो ऐसे हुये जैसे आत्महत्या करने वाला कहे कि वह उसका स्वयं का जीवन समाप्त करता है तो सरकार को आपत्ति क्यों होती है ? या जुआ खेलने वाला कहे कि वह उसके स्वयं के पैसो से जुआँ खेलता है तो पुलिस क्यो पकड़ती है।

जो भी पैसे हम खर्च करते है वह राष्ट्र की सम्पति है, हम उसके ट्रस्टी भर है। वह पैसे हमें दूसरो ने दिये है। चाहे तरख्वाह के रूप में सरकार दे तो वह सरकार ने जनता का पैसा दिया है या व्यापार का लाभ हमने जनता से लिया है। यह तर्क हालाँकि अति आदर्शवादी लगता है पर है तो सच।

मद्यपान के दुष्प्रभाव हम स्वास्थ्य पर, परिवार पर, समाज पर और कानून व्यवस्था के शीर्षको पर अध्ययन कर सकते है।

स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

स्वास्थ्य पर शराब के जो दुष्प्रभाव पड़ते है वे जब हम गिनते है तो भयाकान्त हो जाते है। शरीर का ओर चेतना का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीेें बचता जो इस द्रव के दुष्प्रभावो से अछूता रह जाता हो। हम उनमें से कुछ चुनने का प्रयत्न करते है।

1. चेतना पर:- शराब इच्छाये बढ़ा देती है और कार्यक्षमता छीन लेती हैं। व्यक्ति पहले उत्तेजित हो जाता है फिर शिथिल हो जाता है। प्रथम अवस्था में अनावश्यक हस्तक्षेप करता है। आवाज तेज हो जाती है। जल्दी क्रोधित हो जाता है आलोचना सहन नहीं करता। झूठ बोलने लगता है। लड़ने, झगड़ने मारने पीटने पर उतारू हो जाता है। एक ही बात को पकड़ लेता है फिर अन्त तक नहीं छोड़ता।

दूसरी अवस्था में जो पहली अवस्था के बाद आती है मद्यपान करने वाले की आवाज और कदम लड़खड़ाने लगते हैं फिर वह बैठ जाता है और कोई जवाब नहीं देता। इसके बाद सो जाता है । इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह बिस्तर पर सो रहा है या नाली में पड़ा है या सड़क पर पड़ा है। नशे में व्यक्ति को डरावने दृष्य जैसे डरावने कीड़े मकोड़े दिखते है।

2. मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव:- जवान, हाथ पैर लड़खड़ाने लगते है। हाथो का कम्पन्न लगातार शराब पीने वालो में देखा जाता है। ताकत कम हो जाती है। वरनिक्स एनसिफैलोपेथी में पास की और दूर की याददास्त कम हो जाती है। इस कमी को व्यक्ति कल्पना से भरने लगता है। आँखे स्थिर नहीं रहती। तंत्रिका तंत्र पर अन्य न्यूरोपेथी उस अवस्था को कहते है जिससे शरीर के किसी भी हिस्से में असहनीय दर्द होता है उपरोक्त असर शराब के द्वारा तंत्रिकाओं पर दीर्घ असर पर होता है। शराब पीने से थायमीन एवं फोलेट की कमी हो जाती है। मस्तिष्क के कोष व अन्य “नर्व सेल्स” शराब पर निर्भर हो जाते है व इसके आदी हो जाते हैं। अंत में मृत्यु हो जाती है।

पाचन तंत्र पर दुष्प्रभाव

1. ग्रास नली (क):- इस का संक्रमण हो जाता है और खाने में जलन होती है।

(ख):- खून की उल्टियाँ होती है जो रक्त की नलियों के चैड़े हो जाने होती है ये वेरीसेस फट जाती है इनको बाँधना पड़ता है।

2. आमाशय (क):- आमाशय का संक्रमण हो जाता है।

(ख):- व्रण:- आमाशय का अल्सर हो जाता है इसे पेप्टिक अल्सर कहते है। यह फूट भी सकता है जिससे प्राण घातक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पेट में दर्द होता है।

(ग) उल्टियाँ:- यह एक सामान्य घटना है जो हम सबने देखी है सुबह सुबह उल्टियाँ होने लगती है।

(घ):- कैंसर:- आमाशय का कैंसर हो सकता है।

3. यकृत (क):- यकृत पर शराब पीने से प्राण घातक दुष्परिणाम होते है। ये निम्नानुसार हो सकते है।

(क):- हिपेटाइटिस:- लिवर का संक्रमण हो जाता है भूख कम लगती है पीलिया हो सकता है।

(ख):- सिरोसिस:- यकृत सिकुड़ने लगता है इससे यकृत की खून की नलियाँ दब जाती है और "एसाइटिस" (जलोदर) होने लगता है पेट में पानी भर जाता है।

(ग) प्रोटीन की कमी:- यह ज्ञात है कि प्रोटीन यकृत में ही बनती है। इससे संक्रमण से लड़ने की शक्ति कम हो जाती है और हाथ पैरी और पेट में सूजन आ जाती है।

(घ) लिवर का कैंसर:- एक प्राण घातक अवस्था होती है।

4. फेफड़े (क):- फेफड़ो का कैंसर हो सकता है।

(ख):- न्यूमोनिया अक्सर होने लगता है।

(ग):- क्षय रोग की संभावना बढ़ जाती है।

5. खून की नलियाँ:- सकरी होकर उच्च रक्त चाप हो जाता है।

6. ह्नदय:- (क) ह्नदय का संक्रमण और (ख) ह्नदयघात हो सकता है।

7. रक्त:- रक्त में कई हानिकारक परिवर्तन हो जाते हैं जैसे (क) एनीमिया:- यह "मेकोसिटिक एनीमिया" होता है जो "फोलेट की" कमी के कारण होता है। साथ ही पोषण की कमी के कारण लोह की कमी से आयरन डेकीसीयेन्सी एनीमिया हो जाता है।

(ख) प्रोटीन्स की कमी

(ग) प्लेलेट की कमी:- प्लेटलेट की कमी के कारण रक्त स्त्राव बढ़ जाता है।

(घ) श्वेत रक्त कणिकायें:- कम हो जाती है जिससे संक्रमण में लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। बार-बार न्यूमोनिया होने लगता है। क्षय की संभावना बढ़ जाती है।

8. माँस पेशियाँ:- कमजोर हो जाती है अतः खड़े होने या काम करने में कमजोरी हो जाती है।

9. हड्डियाँ:- (क) कमजोर हो जाती है बार-बार फ्रेक्चर होने लगते है।

(ख) नेकोसिस:- हड्डियों की संक्रमण रहित मृत्यु होने लगती है।

10. आँखंे:- (क) लाल रहती है (ख) दृष्टि कमजोर हो जाती है।

(ग) आँखे स्थिर नहीं रहतीं।

10. त्वचा:- (क) आँखो के नीचे सूजन होने लगती है।

(ख) झुर्रियाँ पड़ने लगती है।

(ग) चमक जाती रहती है।

11. चर्बी (क):- कुछ लोगो में चर्बी बढ़ जाती है।

(ख):- त्वचा के नीचे की चर्बी कम हो जाती है। आदमी कंकाल होने लगता है।

12. पोषण (क):- व्यक्ति खाना छोड़ देता है अतः कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन कम हो जाती है।

(ख) भूख कम हो जाती है।

(ग) माँस पेशियाँ घुलने से आदमी एक ढांचा बन कर रह जाता है।

13. जनन तंत्र (क) टेस्टीज घुलने लगती है।

(ख) स्तन बढ़ने लगते है।

(ग) नपंुसकता आने लगती है।

(घ) इनफर्टिलिटी: व्यक्ति बच्चों को जन्म देने के काबिल नहीं रहता।

(च) महिलाऐं शराब पीने से बच्चा पैदा नहीं कर सकती। जल्दी-जल्दी गर्भपात होने लगता है।

शराब के परिवार पर दुष्प्रभाव

चूँकि आदमी झगडालू स्वभाव का हो जाता है अतः घर में अशांति बना कर रखता है ड्यूटी पर काम न करने या अनुनस्थित रहने से घर की आय खत्म हो जाती है। चूँकि वह झूठ बोलने लगता है अतः कोई उस पर विश्वास नहीं करता। उसे उधार मिलना बंद हो जाता है।

आय कम होने और क्रूर होने के कारण परिवार टूट जाता है। बच्चो का भविष्य खराब हो जाता है वे बचपन में ही पढ़ाई छोड़ कर मजदूरी करने लगते या अपराधी हो जाते है।

समाज पर दुष्प्रभाव

व्यक्ति से ही परिवार और समाज बनता है शराबी व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के भी शराब पीने के लिये विवश करते है। जो समाज ही शराब पीने का आदी हो जाता है वह अपराधी व्यक्तियों या सेक्स वर्करो को जन्म देता है समाज भी टूटने लगता है।

कानून व्यवस्था पर दुष्प्रभाव

हत्यायें, दुर्घटनायें, आत्मा हत्यायें, दंगे, चोरियाँ, शराबी लोग ज्यादा करते है। ड्राइवर शराब पीने पर अनियंत्रित हो जाते है। चूँकि व्यक्ति क्रूर हो जाता है अतः परिवार के बच्चों महिलाओं और अन्य सदस्यों की भी हत्या करने से नहीं झिझकता। मलिलाओं और बच्चों से मारपीट तो आम बात हो जाती है।

शराब पीने के कारण

व्यक्ति को शराबी बनाने के पीछे कई कारण हो सकते है जैसैः-

(1) जीन्सः- कुछ जीन्स शराब की आदत के कारण हो सकते है।

(2) सांस्कृतिकः- कुछ संस्कृतियों में शराब पीना आम आत होती है कभी बच्चे के जन्म होने पर, शादी के अवसर पर जन्मदिन आदि पर व्यक्ति जम कर शराब पीते है फिर यही आदत बन जाती है कुछ अमीरो में एवं गरीब मजदूर वर्ग में भी शराब पीना आम बात है।

(3) सामाजिकः- कुछ समाज जैसे पारधी एवं आदिवासियों में समाज में शराब पीना आम बात है।

शराब छुड़ाना

एकदम शराब छुड़ाना एक बहुत मुश्किल बात है। शराब छुड़ानें के आठ से चैबीस घंटे के अन्दर हाथ पैर कांपने लगते है। चैबीस से अड़तालीस घंटे के अन्दर ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। गुस्सा आने लगता है, डरावने दृष्य दिखने लगते है। अड़तालीस घंटे के बाद आदमी बेहोश होने लगता है फिर मर भी सकता है।

शराब छुड़ाने के लिये डि-एडिक्शन हास्पिटल होने चाहिये। व्यक्ति का पोषण अन्तःशिरा मार्ग (आइ.वी.) से ठीक किया जाता है। उत्तेजना ठीक करने के लिये कम्पोज इत्यादि दी जाती है। ध्यान रखा जाता है कि उत्तेजित व्यक्ति स्वयं को चोट न पहुँचा ले।

“एन्टाब्यूज” नामक औषधि देने से व्यक्ति को शराब देखकर ही उबकाई आने लगती है। उल्टियाँ आने लगती हैं। लेकिन इसका उपयोग कम हो गया है उसकी लगह “नेल्ट्रेक्सान” एवं “एलेम्प्रोसेट” उपयोग में लाई जाती है।

पुर्नस्थापना

यह आवश्यक है कि शराब छूटने पर व्यक्तियों से सहानुभूति पूर्वक व्यौहार किया जाये। उन्हें पुनः धन्धे पर लगाया जाये। जिन्होने शराब छोड दी है ऐसे व्यक्तियों की इच्छा शक्ति द्रड़ की जावे जिससे वे पुनः शराब पीना प्रारम्भ न कर दें।

अल्कोहल टाक्सीसिटी

एकदम से अत्यधिक शराब पीने पर व्यक्ति बेहोश हो जाता है। पर घटरायें नहीं। शराब सांस से बाहर निकालती है। बेहोश आदमी को मंुह से कुछ नहीं दिया जाता नहीं तो वह श्वास के साथ फेंफड़ो में चला जाता है एवं दमघुट जाती है। उसका सिर नीचे रखा जाता है उल्टियां साफ (मंुह के अन्दर से) करते रहते है। जिससे उल्टी फेंफडो में न पहंुचे। उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाने का प्रबन्ध करते है जहां आमाशय में नली डाल कर शराब साफ कर दी जाती है। शिराओं के माध्यम से ग्लूकोज एवं अन्य दवाइयां दी जाती है। मिथाइल अल्कोहल पीने से व्यक्ति अंधे हो जाते है। नकली शराब पीने से व्यक्ति मर भी सकते है।

मंत्री जी के हाथ में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेता का उल्टा ताने होता है प्रोफेसर नेता को ताने मारता था और नेता प्रोफेसर को ताने मारता था, प्रोफसर को विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनना था। यही प्रोफेसर को मंत्री की जरूरत महसूस हुई। उपकुलपति का पद मंत्री की पीछे की जेब में था अतः प्रोफेसर को नीचे उतरना पड़ा। वह नीचे उतर तो गया पर मंत्री को चढ़ने के लिए उसे फिर सीढ़ियों की आवश्यकता महसूस हुई। उसने एक भूतपूर्व शिष्य को फोन किया मिश्रा मैं प्रोफेसर सक्सेना बोल रहा हँू।

मिश्रा ने पूछा “मैं आपको नहीं जानता हालाँकि वह प्रोफेसर सक्सेना को जानता था। सक्सेना को ग्यारह हजार वोल्ट का करंट लगा। वे अतीत से भविष्य संवारने का प्रयत्न कर रहे थे जबकि वर्तमान ने अतीत को झटका दिया। प्रोफेसर की पत्नि सुन रही थी उसने कहा प्रोफेसर तुम गलत चल रहे हो। कांटा लग जायेगा। तुम वर्तमान से

भविष्य संवारने तुम तिनके के सहारे पार लगने की कोशिश कर रहे हो। तुम ने जो उपहार लाते हो शिष्यों से छीने है उन्हें पी.एच.डी. कराने के लिये उनमें से एक महंगा वाला उस अजनबी का दोगे तो वह दुबारा तुम्हारा शिष्य बन जायेगा।

सक्सेना ने एक मंहगा वाला उपहार उनके संग्रह से दुखी मन से निकाला और मिश्रा से बोले "शैतान बच्चे में एक दस हजार रूपये वाली घड़ी ला रहा है। हम एक अन्तराल के बाद मिल रहे है। इस बार मिश्रा जी का स्वर बदल गया। तिनका पाव बन गई। उसने कहा सर मैं आपको कहाँ मिलू।

प्रोफेसर ने प्रशंसा से पत्नि को देखा जो किसी काम में लग गई थी और एक महँगा उपहार लेकर छिन्दवाड़ा आ गये।

छिन्दवाड़ा में मिश्रा स्टेशन पर ही मिल गया। वह प्रोफेसर को नहीं उस महँगी वाली घड़ी को रिसीव करने आया था। प्रोफेसर ने वह घड़ी स्टेशन पर ही मिश्रा जी को दी दी तो मिश्रा ने सक्सेना के चरण छुये थे। मिश्रा ने उस घड़ी को नजरो से तोला। फिर घड़ी को जेब से अच्छी तरह रख कर बोला सर इसकी क्या जरूरत थी। सक्सेना ने सोची कि अगर उसकी जरूरत नहीं थी तो मिश्रा की जेब में क्यों सरकती।

मिश्रा ने कार में बैठे एक अन्य नेता से प्रोफेसर का परिचय करवाया। परतेती ये प्रोफेसर सक्सेना है। नेता ने उदासीन मन से नमस्ते कह कर प्रोफेसर सक्सेना का अभिवादन किया। असल में जिस दुनिया में नेता लोगा रहते थे उसमें असल में प्रोफेसर नाम का सिक्का नहीं चलता था। वहाँ तो असली सिक्के ही चलते थे।

प्रोफेसर ने कहा तुम्हे तो मालूम है कि मैं कितना ईमानदार था मिश्रा को याद था कि उसकी छद्म ईमानदारी की वजह से ही वह इस पंक्ति में उतरा था। उसके प्रश्न पत्र सबसे अच्छे जाने के बावजूद भी इस ईमानदार प्रोफेसर ने उसे फेल कर दिया था। प्रकट में बोला सर आपकी ईमानदारी के चर्चे से मालूम नहीं कितने नेता बयान करते है अब बतलाइये कि आपका इस आदिवासी बहुल इलाके में कैसे पदार्पण हुआ ?

सक्सेना बोले "तुम तो जानते हो कि आजकल बेईमानी के बगैर ईमानदारी जिन्दा नहीं रह सकती । मिश्रा को लगा कि इस मूर्ख आदमी ने सरे आम उसे चांटा मार दिया। फिर भी वह मालूम नहीं ऐसे कितने चांटे पचा चुका था। बोला "सर मतलब की बात आपकी ईमानदारी की भीड़ में गुम जायेगी।

सक्सेना समझ गये कि उन्हें पटरी पर आने के लिये कहा जा रहा है वह बोले "मिश्राजी, अभी जो व्ही.सी. है मैं उनसे कई साल वरिष्ठ हूँ पर मुझे उनके अधीन काम करना पड़ रहा है। अब पड़ोस के विश्वविद्यालय में व्ही.सी. का पर रिक्त हुआ है मैं चाहता हूँ कि मंत्री जी का फेवर मिल जाता।

मिश्रा बोला सर जिस यूनिवर्सिटी में आप काम कर रहे है वहाँ के व्ही.सी. ने मंत्री जी को पचास लाख दिखाये। इतना कह कर मिश्रा चुप हो गया। सक्सेना समझ गये कि व्ही.सी. बनने के लिये उनसे क्या करने के लिय कहा जा रहा है। फिर भी वह बोले “मुझे एक बार मंत्री जी से मिलवा दिया जाता” “यह तो हो जायेगा “मिश्रा ने घड़ी टटोलते हुये कहा।

गिड़गिड़ाते आदमियों की एक दीवार मंत्री जी के बंगले के चारो तरफ खड़ी थी मिश्रा को सब जानते थे। मिश्रा भी कई आर मंत्री जी के लिये वोटो की भीख मांगने के लिये उन लोगो के दरवाजे खटखटा चुका था। उनमें से कुछ लोग लड़की की शादी के लिये मंत्री जी से आर्थिक सहायता की भीख मांगने के लिये खड़े थे तो कुछ लोग उनके बीमार रिश्तेदार के लिये मंत्री जी से भीख मांगने के लिये खड़े थे। कुछ साहित्यकार कोई पुस्तक छपवाने के लिये आर्थिक सहायता चाहते थे। इन साहित्यिक भिखारियों को सीधे ही मंत्री जी से मिलवाया जा रहा था। कुछ शैतान लोग उपरोक्त बहानो के जरिए ही मुफ्त में मंत्री जी से पैसे भटकाना चाहते थे।

एक आदमी ने प्रोफेसर को रोक लिया कहने लगा “हम सुबह से खड़े है। पहले हमारा नम्बर लगना चाहिए। तुम किस लिये जा रहे हो। प्रोफेसर शर्म से गढ़ गये। यह मानते हुये भी कि इस मूर्ख को व्ही.सी. का मतलब नहीं मालूम होगा बोले “हमारे साथ बेईमानी हुई है। हमें व्ही.सी. बनना हैं

वह आदमी बोला “बेईमानी तो हमारे साथ हो रही है जो चुनावों में हमें भिखारी बना दिया है। मुल्क का मालिक मुल्क के सेवको से भीख के लिये गिड़गिड़ाने पर मजबूर कर दिया गया है और वर्षो से केवल यही नहीं हो रहा है पूरे मुल्को में होता है। तुम्हे दो जून खाने को मिल जाता है तन तो इज्जत से ढक लेते हो । हमारी भी इज्जत ही कपड़ो के बाहर निकली जा रही है। मगर स्वार्थ ने सक्सेना की चेतना को घेर रखा था। मिश्रा एक पुलिस मेन से बोला इल्हें अन्दर आने दिया जाये पुलिसमेन रास्ता बनाता हुआ कुछ को उन्हें फटकारता उन्हें अंदर ले गया।

सक्सेना ने देखा कि अन्दर एक अन्य प्रोफेसर एक ब्रीफकेस मंत्री जी को दे रहा था। मंत्री ने वह ब्रीफकेस को मंत्री जी के प्रशन वाचक मुद्रा में सक्सेना से पूछा कि उन्हें क्या चाहिए। सक्सेना ने फिर वही किस्सा बयान कर दिया।

मंत्री जी ने कहा देखिये ये मेरे हाथ में कुछ नहीं है। फिर भी आपका रिप्रेजेन्टेशन बाहर पी.ए. को दे दीजिये मैं देखँूगा कि मैं आपके लिये क्या कर सकता हँू। सक्सेना ने सोचा कि मंत्रीजी कह जरूर रहे है कि उनके हाथ में कुछ नहीं है पर “कुछ” उनके हाथ में पहँुच चुका था।

थोवड़ा कितावम्

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आप यह मत समझिये के मैं एक छोटा व्यंग्यकार बड़े व्यंग्यकारो की तरह शब्दो को विकृत कर फिर उनका मजाक उड़ा की छापे खाने में बने रहने की कोशिश कर रहा हँू। किसी की क्या औकात कि वह शब्दों का मजाक उड़ाये। दरअसल इस आलेख का शीर्षक हमारे वस्त्रों कीे मिली जुली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह संस्कृति, सरकारी संस्कृति नहीं है कि जिलाध्यक्ष ने पंडित मौलवी, फादर और ग्रंथी साहिब जैसे महापुरूषो को हांका, शांति समिति की बैठक करवाई बेमन से भारतमाता की जय बोली, और इतिश्री भी हो गई। बस्ती में सरकारी शांति हो गई। स्थिति तनाव पूर्ण पर नियंत्रण में है।

हुआ यों कि एक फेस बुक चेनल ने सेमिनार बस्ती में आयोजित किया। कहा तो यह गया कि चेनल यह देखना चाहती है कि कितने लोग फेस बुक का मतलब जानते है पर यथार्थ में वह अपना प्रचार चाहती थी। सबको एक एक सुन्दर फाइल एक सुन्दर सी कलम और एक दैनन्दिनी दी गई जिनमें हरेक पर उस चेनल की नाम लिखा हुआ था। कमरे केवल उन नामें पर ही केन्द्रित रहे लोगबाग भी उन सुन्दर सी मुफ्त की वस्तुओं को पाकर प्रसन्न हो गये।

उनके परिणाम भी उन्हीं प्रतिभागियों से पड़ बाये गये। सबसे पहले बस्ती के प्रसिद्ध पंडित जी को बुलवाया गया जो लीलाबती चालबती की कथा में हर शब्द के अन्त में लगा देते फिर उसे संस्कृत बनाते थे। जैसे लीलाबतीम् कलाबतीम, सेमबोलीम, केम, हेम, माम् मुझे अपनेम् स्वर्णिम् सेम मिलमेम जातीम् हुम। तुम इससे पहले से ही म् लगा हुआ है। वादम् मेम प्रसादम् लेकरम् चलीम् आनाम्।

उनसे कोई तर्क नहीं कर सकता था। उनका तेज आवाज का कोई प्रतिवाद नहीं कर सकता था। नहीं तो उनके हाथ भी चल जाते थे। वे ही उपरोक्त कारणों से प्रकाण्ड विद्धान माने जाते थे। उन्होने सतयुग में हर घटनाओं के अविष्कार कर रखे थे। जैसे हवाई जहात, वरमूदा त्रिकोण राकेट लान्चर, एटमबम आदि। उन चीजो के भी जो अभी

अविष्कृत नहीं हुई है पर वेदो से लिखी हुई हैं फेस बुक का मतलब उनकी दृष्टि में मुख पुस्तकम था। इस विद्धान से चेहरे का आकर मस्तिष्क की रेखायें आदि पड़ कर जातक का भविष्य बतलाया जा सकता था।

फिर मौलवी साहब तशरीफ लाये। वे बस्ती के फतवा थे। उन्हें उस्ताद शायर न मानने वाला मूर्ख और जाहिल था। यानि कि वे मुकम्मल शायरी करते थे और दूसरो के अच्छे शेरो पर भी नाक भौ सिकोड़ सकते थे। इसका मतलब यह नहीं कि उनकी नाक भौहों के ऊपर थी। नाक भौ सिकोड़ना तो एक कहावत है जिसमें नाक पहले आ जाती है।

उनके नजरो में "फेस बुक" किताबे-ए-रूख या चेहरे पर किताब था। यह लैला का रूख था जिसे माजनू पड़ता रहता था। इस किताब में भौंहें कमान थी और शराब के पैमाने थे। गुलाम लैला के होंठों के सामने मुरझा जाते थे। झुकी गरदन गुलाब की डाली था जो चेहरे के वजन के कारण झुक जाती थी। गेशू बादल और रात होते थे। चेहरा दिन होता था। इस तरह दिन के पीछे रात आती थी।

फिर बीच में ही एक पहलवान टपक पड़े। वे जबरदस्ती स्टेज पर आ गये। वे हर किसी का थोबड़ा मुक्के मार कर खराब करते रहते थे। वे प्रतिदिन चार सौ दण्ड पेलते थे। दो लीटर दूध पीते थे और काजू, बादाम, किशमिश, अखरोट प्रत्येक का एक किलो प्रतिदिन खाते थे। जिसका इंतजाम सेठ लक्ष्मी चंद करते थे। वे चाहें जिसको लतियाते रहते थे।

उनके अनुसार फैस बुक यानि थोबड़ा किताब थी। थोबड़ा खराब करते की चीज नहीं है और वे करते भी रहते थे और उनके सामने हें हें करते रहते थेक जिसका मतलब कू-कू होता था।

तत्पश्चात विषयान्तर हेतु मार्तण्ड प्रसाद को आमंत्रित किया गया। मात्र वे ही हिन्दी में पी.एच.डी. थे और विद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक थे। शासन उनको स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस पद शासकी कार्यक्रमो के संचालन हेतु आमंत्रित करता था और इन्हीं दिवसों के आशय से विगत कुछ वर्षो से बस्ती में लटके हुये थे। हिन्दी दिवस पर उनका सूचकांक बहुत बढ़ जाता था।

फेस बुक का तात्पर्य उनके मत से मुख कमल पुस्तक था। कमल इसलिये कि वे बगैर उपमा के वार्तालाप नहीं करते थे। उनकी दृष्टि में चेहरा एक कमल था। फिर उस मुख कमल में कई और कमल भी थे और नेत्र कमल, कपोल कमल ओष्ठ कमल इत्यादि। केश राशि उनकी दृष्टि में मेघ, सर निशा इत्यादि थी। अस्तु अब पादरी जी को बुलाया गया। वे चर्च में प्रत्येक रविवार को उपस्थित होते थे और पवित्र बाइबिल के वाक्यांशो का अर्थ समझाते इसे शादी भी करवाते थे सफेद कपड़ों और सीने पर सामने

ही लटकता हुआ क्रास। वे अभी तक नहीं समझ पाये कि आदमी जाती क्यों है शीला आता क्यों है।

उन्होनें कहा कि फेस मतलब शरीर के ऊपरी भाग का सामने का हिस्सा जिसमें भाव आते है और "बुक" यानि जिन्द बंधे वे कागज जिन पर कुछ लिखा हो। सिर पर पगड़ी और फिर ग्रन्थी जी आये ? दाड़ी खुली और लम्बी। सफेद वस्त्रों में शांति कबूतर, जो शाँति फैलाने के लिश्े उड़ना ही चाहता है। मंदिर में शबद कीर्तन करते थे। गुरूग्रन्थ साहिब को पंखा झलते उन्हें उठाते और सुलाते, बीच में पाठ करते।

उन्होनें बतलाया कि फेस यानि रूख या चेहरा जिस पर स्व का नूर टपकता हो और बुक यानि किताब या ग्रन्थ।

तो आप समझ गये होंगे कि इस आलेख का अन्दर कितावम क्यों रखा गया। हमारी बस्ती में शरीफ भी रहते है और ऊपर शरीफ भी पहलवान भी पहलवान भी रहते है और कमजोर नहीं गुण्डे भी रहते है और अगुण्डे भी । पढ़े लिखे रहते है और शिक्षित अंगूठे छाप भी (सरकारी आंकड़ो के अनुसार कोई भी अशिद्वित नहीं बचा)

तो हमारी बस्ती है समन्वित संस्कृति की प्रतीक, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई केवल त्यौहारो के आने पर ही एक दूसरे से लड़ते है अन्यथा शांति से रहते है।

कुछ जमीन को गीला रख
        खुद को कुछ शर्मीला रख
मैं बरका कर खुद को तू
        बिन मैं जरा नशीला रख
नाम बच्चियों के घर में
        शीला और जमीला रख
रिश्तो में हो तना तनी
        खुद को ही तू ढीला रख

चेहरा चेहरे पर हो गुलदस्ता
दिल को जरा नुकीला रख
जहाँ मुल्क की बात उठे
खुद को तू जोशीला रख
हो आजान कुलन्दी से
मन्दिर भी गर्वीला रख
अगर मेढ़ कुछ नीचीं हो
ऊपर तार कटीला रख
ऊँची ले तालीम मगर
मत लिबास भड़कीला रख
दिखा गरीबी बच्चों को
मत तू छैल छबीला रख
घास फँूस का छप्पर हो
अन्दर से चमकीला रख
डर गुनाह से बेहद तू
पर ईमान हठीला रख
टूट टूट कर बिखर नहीं
घरों में वहीं कबीला रख
हो फकीर सा दिल तेरा
और फिर बदन गठीला रख
दिल से शेर निकलते हो तो
सुर भी तो दर्दीला रख
दिल से शेर निकलते हो तो
सुर भी तो दर्दीला रख
दुनिया दारी में रह कर
मन को कुछ सपनीला रख
अगर लाल पीला होता हो,
लहजा जरा चुटीला रख
हो जबान में शहद भरी
एक दाँत जहरीला रख

राम एक अच्छे पति थे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

राम जेठमलानी का यह निर्णय कि राम एक अच्छे पति नहीं थे तर्को पर आधारित नहीं है। यह उनका व्यक्तिगत मत प्रतीत होता है। आश्चर्य है कि ऐसा व्यक्ति सुप्रीम कोर्ट में पैरवी कैसे करता होगा। कोई भी समझदार आदमी इस तरह के निर्णय पर नहीं पहुँच सकता। आश्चर्य एवं दुख भारतीय जनता पार्टी पर भी होता है कि उसने राम जेठमलानी को पार्टी से निष्कासित क्यों नहीं किया।

राम एक अच्छे पति थे और यह निर्णय उन घटनाओं पर आधारित है जो उस दम्पति के जीवन में घटी। वाल्मिकी रामायण की उन घटनाओं के विश्लेषण पर आधारित यह तथ्य है। राम का विवाह सीता के साथ उनके पौरूष के कारण हुआ था। जो धनुष कोई हिला नहीं पाया था उसे राम ने क्षण भर में उठाया, प्रत्यंचा खींची और तोड़ दिया था। राम वीर के साथ एक सुन्दर पुरूष भी थे। सीता ने उनको वरमाला

प्रसन्न्ता पूर्वक डाली थी। राम को धनुष तोड़ने का कभी भी अभिमान नहीं हुआ। अतः उन्होने सीता को हमेशा पत्नि माना, एक दासी नहीं । नहीं तो वे कई और शादियाँ भी कर सकते थे।

जनक की सभा में जब परूष राम आये तब सभी मृत्यु के भय से काँपने लगे थे। राम झूठ बोल सकते थे कि वह धनुष उन्होने भी नहीं तोड़ा । बल्कि वीरता पूर्वक कहा कि वह धनुष उन्होनें तोड़ा है और परिणाम का वह वीरता पूर्वक सामना करने को तैयार है। उन्होने परूष राम का धनुष चढ़ा कर यह बतलाया कि वह उस समय धरती पर सर्वाधिक वीर पुरूष थे। असली परूष राम नहीं थे।

राम सीता को अपने साथ अयोध्या लेकर आये। शादी की तमाम रस्मों को उन्होने उत्साह पूर्वक पूरा किया दिये गये उपहारो की कभी आलोचना नहीं की। उन्होने सीता का कहना प्रेम पूर्वक माना। जीत कर लाने के बाद भी ऐसा कहीं नहीं आता कि उन्होंने कोई इच्छा सीता पर कभी भी थोपी हो।

दशरथ के द्वारा कैकई को दिये गये वरदानों के फलस्वरूप राम वन में जाने तैयार हो गये। उस समय सीता ने राम का साथ देने का हठ किया। यदि उस समय राम को किंचित भी विजेता होने का भाव आता तो बलपूर्वक सीता को वहीं छोड़ सकते थे। मगर उन्हें अपनी भुजाओं पर विश्वास था कि वह जंगलों में भी सीता की रक्षा कर सकते थे। उन्होनें पूरे समय सीता की सुविधाओं का ख्याल रखा।

सीता ने उनसे स्वर्णमृग लाने का आग्रह किया। राम ने यह नहीं कहा कि चुप रहो, ऐसा दूसरा मृग जब निकलेगा तब उसका शिकार वह कर देगें, कि जंगल में ऐसे मृग आते ही रहते है। जब कपट पूर्वक रावण सीता को हर ले गया तब राम ने विलाप किया। उनके मन में कभी भी यह भाव नहीं आया कि वे वापिस जाकर दूसरी शादी कर लेंगे। वे सीता तो अपनी शक्ति मानते थे।

(घन, घमण्ड नभ गरजत घोरा,
प्रिया हीन डरपत मन मोरा)

उन्होंने अकेले होते हुये भी सीता को ढँूढने का पूरा उद्यम किया। यदि रावण को केवल स्वाभिमान के लिये मारा होता तो सीता को रावण वध के पश्चात वहीं छोड़ कर वापिस आ सकते थे पर उन्होने ऐसा नहीं किया। वह सीता से निश्चित पूर्वक अदम्य प्रेम करते थे। उनके एक निष्ठ प्रेम का उदाहरण यह भी है कि लंका विजय के पश्चात वह मात्र सीता के साथ ही वापिस आये, हजार दो हजार और सुन्दरियों को साथ में नहीं लाये।

पुष्पक विमान पर वह सीता को प्रेमपूर्वक उन स्थानों को दिखलाते हुये आये जो उन्होने सीता के बिरह में बिताये थे। सीताहरण और लंका विजय के बीच वे लगातार

सीता से अदम्य प्रेम करते रहे। विरह ने उनके प्रेम को कम नहीं होने दिया। हनुमान जब सीता का पता लगा कर चूड़ामणि लेकर आये तो राम ने उसे सीने से लगा कर उनका प्रेम प्रदर्शन किया। पूरे विरह के समय वे सीता को बिलख बिलख कर याद करते रहे। जो उनका सीता के प्रति अनन्य प्रेम दर्शाता है। ऐसा नहीं हुआ कि बीच में कहीं भी उनके मन में किंचित भी विचार आया हो कि सीता को कोई जानवर खा गया होगा, कि चलो सीता विहीन वे वापिस लौट जायेंगे और दूसरी शादी कर लेंगे।

रावण के निकट रहने पर भी उन्होने सीता पर कभी भी अविश्वास नहीं किया। उन्हें विश्वास था कि सीता हरण सीता की इच्छा के विरूद्ध हुआ होगा। यह एक उत्कृष्ट विश्वास का उदाहरण है। सीता ने राम से आग्रह किया था कि उनकी इच्छा दुबारा वन दर्शन की है। कहीं भी यह नहीं लिखा गया कि राम ने रूष्ट होकर लक्ष्मण को यह आदेश दिया हो कि सीता को जंगल में कहीं छोड़ कर वापिस आ जाना। बल्कि उन्होनें महर्षि बाल्मीकि का पता दिया जो कि उनके परिचित थे और कहा कि सीता को उनके पास छोड़ देना। उन्हें कभी भी दूसरी शादी का ख्याल नहीं आया अश्वमेघ यज्ञ के दौरान भी, जो बगैर पत्नि के नहीं किया जाता । उस समय भी वे दूसरी शादी कर सकते थे और सपत्नीक यज्ञ पूरा कर सकते थे।

उनके प्रेम का परिचय इस तथ्य से भी मिलता है कि उन्होने सीता की किसी अन्य धातु की मूर्ति नहीं बनवाई, स्वर्ग मूर्ति बनवाई। सीता ने स्वर्गारोहण के पश्चात कभी भी उन्होने लवकुश को नहीं त्यागा। जैसा कि आजकल पत्नि पर शक करने वाले पति करते है।

अंत में हम उस विवादास्पद मुद्दे पर आते है जिस पर कई महिला संगठन कई, छुद्रा बुद्धि वादी हो हल्ला मचाते है। वह मुद्दा है सीता के अग्नि परीक्षण का। अभी तक इस लेख को पढ़ने वाले सोच रहे होंगे कि लेखक ने उसे जान बूझ कर बचने के लिये छोड़ दिया है। पर ऐसा नहीं हैं।

इस प्रकरण का बिन्दुवार अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि रावण वध के पश्चात राम ने लक्ष्मण और विभीषण को सीता को साधारण कपड़े में ही लाने के लिये भेजा था। वह इसलिये कि सीताहरण उन्हीं वस्त्रों में हुआ था। और राम और सीता को यह महसूस न हो कि सीता एक विजेता की पत्नि है। श्रंृगारित वस्त्रों में आती तो सेना को उनके मृत भाइयो की भी याद आती। फिर लिखित साहित्य के अनुसार राम ने अग्नि परीक्षा के लिये चिता तैयार करने का कहा। यहां से काव्य कल्पना तैयार होती है। यहाँ पर अधिकांश मनीषी उनकी तर्क क्षमता को तिलांजली देते है। सीता उस चिता पर लेटती है, खड़ी रहती है या बैठती है ? वह चिंता स्वय ही जल उठती है। आज क्या

कोई कल्पना कर सकता है कि बगैर आस लगाये कोई वस्तु स्वयं जल उठे। या तो चिता का स्वयं जलना काल्पनिक है या वह घटना। फिर उसके जलने पर अग्निदेव स्वयं सीता को प्रज्जवलित अग्नि से लेकर आये। क्या आज कोई मानेगा कि अग्नि का एक पुरूष रूप भी यही होता है। फिर इतनी अग्नि के बाद भी सीता दमकती हुई बाहर आई। आज यदि ऐसा हो तो व्यक्ति बिल्कुल ही जल भुन जायेगा, काला कोयला हो जायेगा सीता कैसे दमकती हुई बाहर आयी ? यह प्रसंग निरी कविता की कल्पना है।

जैसे कहा जाये कि एक व्यक्ति का समूल नाश हो गया। अब व्यक्ति कोई पेड़ तो नहीं होता जो उसकी जड़ हो या कहा जाये कि चन्द्रमुखी । अब मानवीय शरीर के घड़ का ऊपर कोई चन्द्रमा नहीं देखा। अग्नि परीक्षा की कल्पना उसी तरह काल्पनिक है जैसे राम का वाण के द्वारा नागपाश में बंधना और गरूड़ का उस पाश को तोड़ना। इस वाद पर राम जेठमलानी ने उसका प्रतिवाद नहीं किया। यहां उनकी तर्क शक्ति की तीखी धार मोथरी हो गयी थी, न्यायालय में तो वे बड़े तर्क देते है। भारतीय जनता पार्टी ने यह दूसरी बड़ी गलती की हैं पहली तो सुषमा स्वराज का राष्ट्रपति के पद के लिये प्रणब मुखर्जी के नाम का समर्थन देना और दूसरा इस व्यक्तव्य पर कि राम एक आदर्श पति नहीं थे, राम जेठमलानी को तत्काल भारतीय जनता पार्टी से निकाल बाहर न करना। राम जेठमलानी भारतीय जनता पार्टी को केवल कुछ लाख वोट दी दिलवा पायेंगे बल्कि राम के नाम पर वे करोड़ो वोट झटकते है।

अरविन्द केसरीवाल का भारत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कल्पना करें कि भारत में कोई बड़ा व्यापारिक प्रतिष्ठान नहीं है या कोई विदेशी संस्था नहीं है तब भारत कैसा होगा। बड़े व्यापारिक संस्थाओं के बंद होने पर लाखो लोग बेरोजगार हो जायेंगे और करोड़ो लोग भूखे मरने लगेंगे। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बेरोजगार लोग लूटपाट करने लगेंगे। यदि विदेशी व्यापारिक लेन देने बन्द होता है तो भारत में तन ढकने को भी कपड़े नहीं होगे। न मोबाइल होंगे और न रसोई गैस। ईंधन के लिये लोग बाग जंगलो का दोहन करेंगे। लोग बाग यही नारा लगायेंगे कि केजरीवाल की यही पहचान, नंगा, भूखा हिन्दुस्तान।

यदि विदेशी संस्थान और आयात बन्द कर देंगे तो खेतों को खाद भी नहीं मिलेगी अनाज का उत्पादन ठप्प हो जायेगा। भारत फिर दुर्भिक्ष की चपेट में आ जायेगा । केजरीवाल फिर नरमुण्डो पर शासन करेंगे। व्यापार हमेशा आपसी समझौतो पर आधारित होता है। आप विदेशी सामान मंगाना बंद कर देंगे तो आपका निर्यात भी

ठप्प हो जायेगा। खदाने बंद हो जायेगी। फसल सड़ने लगेंगी। रेनबेक्सी, डाबर, केडिला, सिपला जैसी स्वदेशी दवाइयों की कम्पनियाँ यहाँ से डेरा डंगर उठा कर विदेशो में स्थानांतरित हो जायेंगी जीवन स्तर अत्यन्त नीचे आ जायेगा। राशन की दुकान पर भी कपड़ा मिलना बंद हो जायेगी।

पेट्रोल के आयात में कमी होने से पहिये रूक जायेंगे। रेल के इंजिन खड़े हो जायेंगे। ट्रांसपोर्ट ठप्प हो जायेगा। चीजो के दाम जो वैसे भी आसमान पर है जनता को आसमान पर पहुँचा देंगे। अम्बानी आफ्रीका चले जायेगे। सिन्थेटिक कपड़े मुश्किल से मिलेंगे। अमीरो और गरीबो की खाई जो पटती सी दिखाई पड़ती है मध्यम वर्ग के खत्म होने से और चैड़ी हो जायेगी।

देश में निर्धनता बढ़ने से लोग पेट भरने के लिये गुलाम बनने के लिये तैयार हो जायेगे। बच्चे और महिलायें बिकने लगेंगें। आत्म हत्यायें डेनमार्क को काफी पीछे छोड़ देंगी। अफ्रीकी देश हम पर दया करने लगेंगे पर सहायता न कर सकेंगे क्योंकि हर नाके पर केजरीवाल बैठे होंगे।

जब आदमी कमायेगा तो बैंकों में ही जमा करेगा न। भारतीय बैंको में नौकर शाही इतनी है कि उनमें खाता खोलने में पसीना आ जाता है, जमा करना तो दूर रहा। सेवायें इतनी खराब कि पैसा निकालना मुश्किल। भ्रष्टाचार इतना कि कर्ज लेना मुश्किल तब विदेशी एच.एस.बी.सी. या कोई अन्य बैंक क्यों नहीं ? डाबर जैसी स्वदेशी कम्पनी परेशान होकर और सुरक्षा की दृष्टि से स्विस बैंक में पैसा जमा करेंगी तो उसके लिये यहाँ का कानून दोषी है। विदेशी बैंक तो यह प्रार्थना करते होंगे कि यहाँ के कानून ऐसे ही बनें रहे।

स्विस बैंक में तो श्रीमती इन्दिरा गांधी जैसे देश भक्त के भी खाते थे। यदि केजरीवाल को नहीं मालूम तो संजय गाँधी की मृत्यु के बाद के अखबार पढ़ लें। हमारे देश के बैंको में क्यों नहीं विदेशी लोग खाते खोलते ?

जो भीड़ केजरीवाल के चारो तरफ जमा होती है वह तमाशा देखने वाली भीड़ है। यदि समर्थन में जुटती है तो एक बार इस लेख के विश्लेषण पढ़ लें। केजरीवाल और अन्ना हजारे का मूल आंदोलन जन लोकपाल का आन्दोलन था। उसमें स्वेदशी विदेशी मुद्दे तो थे ही नहीं। अव आन्दोलन भटकता हुआ प्रतीत होता है। बाबा रामदेव यह मुद्दा कभी का छोड़ चुके है। यदि नहीं छोड़ा है तो विदेशी वस्तुओं का आयात एवं विदेशी फर्म को एक दम बंद करके देखें।

विदेशी वस्तुओं का उपयोग तो रविशंकर और आशाराम बापू भी करते है। हाँ आशाराम बापू विदेशी वस्तुओं का उपयोग करके खुद का घी जरूर बनाते है। यही भारतीयों की दोहरी मानसिकता है जो हमें पीछे धकेलती है।

भारत में राजनीति अब मुद्दो से हट कर व्यक्तिगत आलोचनाओं पर उतर आई हैं। यदि आप बड़ोदा के जमीन घोआले पर उंगली उठाते है तो आपके पीछे सी.बी.आई लग जाती है अन्यथा आपके अपराधो को नजर अंदाज करती है। दिग्विजय आपके ऊपर अनर्गल आरोप लगाते है और आप उनको दिमाग दुरूस्त करने की बात कहते है हालाँकि दोनो सही है।

किसी ने सही कहा है कि केजरीवाल की पार्टी का वही हश्र होना है जो महर्षि महेश योगी की पार्टी या जय गुरूदेव की पार्टी का हुआ। केजरीवाल की पार्टी के कार्यकर्ता खुद हफ्ता वसूल करने लगेंगे केजरीवाल नें उन्हें हटाया तो नये खड़े हो जायेंगे। भ्रष्टाचार हटाने वाली पार्टी को भ्रष्टाचार ही खा जायेगा।

ये जो आइ. ए. एस. आई. पी. एस. आदि। भारत की जनता उनसे स्नेह नहीं करती। उनसे नफरत करती है। एक तो इनका आई क्यू सामान्य से कम ही होता है। दूसरे भारत के भ्रष्टाचार में इनका भी योगदान है। इनका जो आदर दिखता है वह दण्डाधिकारी होने के कारण दिखता है।

दिग्विजय सिंह का यह कहना कि केजरीवाल को कैसे आई आर एस मिल गई, सही है। केवल कुछ प्रश्न पत्र करके ही ये डिग्रीयाँ (?) दे दी जाती है। फिर इन्हें जानबूझ कर गरीबो से दूर रखा जाता है। कुछ कलेक्टरो के बंगले जो बीस-बीस, तीस-तीस एकड़ जमीन पर बने हुये है जबकि कुछ सौ स्कवायर मीटर में काम चल जाता ।

बाबा रामदेव, केजरीवाल और स्क्वेड को दूर दृष्टि का काम लेना चाहिए। अम्बानी, डाबर या भारत में कार्यरत विदेशी संस्थाओं को बंद करने से भारत की बेरोजगारी का क्या करेंगे ? जनता के भूखे पेट का इंतजाम कैसे करेंगें ? दुर्भिक्षो और पेन्डेमिक्स रोकने की उनके पास क्या योजना है।

द्विपक्षीय व्यापार रोके नहीं जाते उन्हें सन्तुलित किया जाता है। उन्हें अपने देश के अधिकाधिक पक्ष में कैसे किया जाता है ऐसी ही कुछ ठोस योजना लेकर इन महानुभावों को जनता के सामने जाना चाहिये।

गाँव की खूबसूरत लड़कियाँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेताजी का कहना है कि गाँवों में खूबसूरत लड़कियाँ नहीं है। हम गाँवों की खूबसूरत लड़कियाँ इस सार्वजनिक कथन का प्रतिवाद नहीं करती। आप गाँवों में भाषण देने जाते है या खूबसूरत लड़कियाँ देखने ? आपकी यह पुनरूक्ति है। यह इन रक्तियों पर आधारित आपके चमचे आप से शिकायत करते है। वे आपसे यह शिकायत करते है कि वे गाँचों में जाकर क्या करेंगे ? वहाँ अब शिकार करने को खूबसूरत लड़कियाँ बची ही नहीं। वे किस को भगा कर लायेंगे।

हम आपकी यह शिकायत मान लेते है। प्रतिवाद भी नहीं कर सकते। अन्यथा आपके चमचे आप के साथ फिर हम लोगो का शिकार करने लगेंगे। आप लोगों को हमारे गाँव, जंगल और हम शिकार नजर आते है।

नेताजी ! आप गाँवों का कल्याण करने आते है या हमें देखने ! क्या आप गाँवों का कल्याण तभी करेंगे जब वहाँ खूबसूरत लड़कियाँ होंगी ? आप गाँवों का कज्याण वहाँ पर रहने वाली लड़कियों के प्रतिशत के हिसाब से करते है। जहाँ पचास प्रतिशत लड़कियाँ उस गाँव का कल्याण पचास प्रतिशत।

गाँवों में हम खूबसूरत लड़कियाँ शहरो से ज्यादा है। पर आपको देख कर छुप जाती है। आपकी नजरें गाँवों में हमें खोजती रहती है कि जहाँ कोई खूबसूरत लड़की दिखी कि धर दबोची। वैसे भी अब गाँव बचे ही कहाँ ? सब शहर गाँवों को खा गये। गाँच अब शहरो के मोहल्ले हो गये। उनके खेत और जंगल, शहर की हाइ वे और कालोनी। गाँचों को आप लोगो ने शहर की गन्दी बस्तियाँ बना डाला।

आप गाँवों में पानी लाने के बहाने नहरें बनाते है। जो गाँवों का ही पानी खींच कर शहर ले जाती है। गाँवों की सोने की बालियाँ आप लोगो के कल्याण के बहाने लुट जाती है। नहरें गाँवों का पानी खींच कर आपकी तिजोरियों में समा जाती है। गाँव की चाँदी सी नदी सूख गई तो गेहँू की बाली सोना कैसे बनाये ? गाँवों के हालात इतने बदतर है कि गाँवों की खूबसूरत लड़कियों को अब भगा कर शहर लाने की जरूरत नहीं है। वे खुद भाग कर शहर आ जाती है। उन्हें शहरों की तरफ भगाने में उनके माँ बाप ही मदद करते हैं। गाँवों के खूबसूरत जंगली फूल अब शहरों के गमलों में आ गये है। किसी ने क्या खूब कहा है कि

चूनरी उड़ गई, दिल मचलने लगा

गाँवों में आने जाने लगा है, शहर।
खुन गुर्दे जिगर तक लगा बचने
कैसे पैसे कमाने लगा है शहर

ऐसा नहीं है कि मात्रा खूबसूरत लड़कियों का ही ऊँचे पदो पर चयन होता है। आपका यह कथन विचित्र हैं कि अच्छे पदो पर मात्र खूबसूरत लड़कियों का चयन होता है। ऐसा कह कर आप चयन करने वाली संस्थाओं पर थूक रहे हैं । आप गुटका जो ज्यादा खाते हैं ऐसा होता तो सभी आइ.एस.एस. आइ.पी.एस. या डाक्टर लड़कियाँ खूबसूरत होती पर अफसोस, चयन रूप, कुरूप तदूप विसप, स्वरूप, प्रारूप, अपरूप, विरूप देख कर नहीं होता, वरन शिक्षा देख कर होता है।

शिक्षा सुन्दरी को आपने शहरों में कैद करके रखी है। गाँवों में मात्र एच.एस.सी ही है, डिग्री काँलेज नहीं है मीलो तक।

आप आपके पैरो को जरा कष्ट देकर दक्षिण भारत जायें। हर पाँच गाँवों में संकुल है। वहाँ एक डिग्री काँलेज का पौधा लटकता रहा है। काश मंत्रियों का दिमाग घुटनों से ऊपर होता। कूल्हे तक ही होता।

खूबसूरत लड़कियों को छेड़ने की आपकी पुरानी आदत दिखती है कि दिखी और उन्हें छोड़ दिया। सही कहा है कि बन्दर कभी बूढ़ा नहीं होता। आपने यह कह कर कि चूँकि गांवों में खूबसूरत लड़कियाँ नहीं होती इसलिये उनका चयन उच्च पदों पर नहीं होता कई प्रश्न खड़े कर दिये। कई व्यक्तियों का अपमान एक साथ कर दिया। आपने खूबसूरत लड़कियों को गाली दे दी कि उनके दिमाग नहीं होता। गाँवों पर लघुशंका कर दी और चयन कर्ताओं पर थूक दिया। आप एक साथ कई विसर्जन कैसे कर लेते है ?

आपकी प्रजनन क्षमता के क्या कहने ? आप जो बेरोजगारों की भीड़ इकट्ठी करते हैं फिर उन्हें बेरोजगार भत्ता देने लगते है। सरकारी खर्चे पर गुलामों की भीड़ इकट्ठी कर रहे है। यदि उन्हें पढ़ा लिखा देंगे तो उनकी आँखें न खुल जायेंगी। वे आपसे छिटकने लगेंगे। इसीलिये आप बीमार स्टेट्स के ऊ है जबकि वि बाहर निकल रहा है।

गाँवों की लड़कियों के हाथ खेतों में काम करते करते काले हो जाते है अतः माँ बाप का सपना रहता है कि वे उनके हाथ पीले देख सकते या किस्मत अच्छी हुई तों उन्हें आंगन वाडी कार्यकर्ता वन देतें यह आप राजनीतिज्ञों का षड़यन्त्र है कि घी खिचड़ी में ही रहे।

बे हद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मीनार खुश है मेरे घर की छाँव पर बेहद
शहरो के जबड़े मेहरबाँ हैं गाँव पर बेहद
सपनों की एक गजल ने इतना दर्द दिया है
हँू परेशा उस दर्द के खिचाव पर बेहद
तुम फेंकते हो खाना तुम नाराज उस पर हो
नाराज मैं हँू भूख से लगाव पर बेहद
मेरा बदन और लफ्ज दिल की खिड़कियाँ ही है
होती है बहस उनसे मेरे भाव पर बेहद
है तलहटी में छेद कोई रोकता नहीं
और भीड़ भी चढ़ गई उसी नाव पर बेहद
तेरी है बंद आँखे जूते वजनदार है
हम टूट उसके न जायें न दबाव पर बेहद
हल्ला है इतना घाव पर और घाव भी नहीं
जाते हो तुम लगाये मलहम घाव पर बेहद
आगे है खाई रखना कदम आँख खोल कर
नाराज क्यों होता है इस सुझाव पर बेहद
तू देखते ही देखते गमन पे चढ़ गया
मैं परेशाँ हँू धरती से झुकाव पर बेहद

लूटा है तुमनें हमें बेहद पाँच सालों में
कर जाते हो जो खर्च हर चुनाव पर बेहद
दो भाइयो के बीच में दीवार उठ गई
रोते है बालिदैन इस अलगाव पर बेहद
ठन्डी है राख नीचे क्या अंगार मिलेगा
वाजिब है गुस्सा आपका अलाव पर बेहद
शैतान क्यों खुदा की इबादत में लगा है
हैरान हूँ मैं उनके इस बर्ताव पर बेहद
मजलूम कैसे आ गये जुल्मों के सामने
अजरज है मुझे है उनके इस टकराव पर बेहद

सूरज के उगते ही

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सूरज के उगते ही तन ढकने लगते है।
परत दर परत चिपकाने छिलके लगते है।।
ये घर नहीं मजारें है कई मंजिल वाली,।
जिनमें मुर्दे बदहवास लड़ते रहते है ।।
यहाँ हवायें सामूहिक हत्या करती है।
सूखे पत्ते से जीवन हर पल झड़ते है।।
आफताब काला जादू करने आता है,
एक दूसरे के चेहरे से सब डरते है।।
दिन भर अंधियारे गुनाह के गश्त लगाते,।
जुल्मों के गहरे दरिया हरसूँ बहते है।।

गरीब के फांको में देख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेमने की तू जल्लाद की आँखों को देख ।
या कुल्हाड़ी और उससे कटी हुई शाखों को देख।।
मुल्क की खुशहाली फकत अमीरो में नहीं।
भूख और बेबसी से रोते हुये लाखो को देख।।
हश्र क्या हुआ होगा देख उस परिन्दे का।
नीचे जमीन पर बिखरे हुये पखो को देख।।
धका तो दिया वे रह उस से अदन से आदम।
अब इबादत को उस गरीब के फांको में देख।।
जरहूरियत की जड़े वोटों के वूथो में घंसी है।
चन्द पैसो के लिये गाँव में हांको को देख।।

विधि विरूद्ध और बलात्कार की उम्र

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किशोर न्यायालय में अठारह वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों को अवयस्क माना जाता हैं अठारह वर्ष से कम उम्र की विधि विरूद्ध बच्चों की सुनवाई और सजा का निर्धारण किशोर न्यायालय में होता है। अठारह वर्ष की सीमा रेखा अन्त्तराष्ट्रीय माप दण्ड के अनुसार रखी गई है। मगर क्या यह अन्त्तराष्ट्रीय माप दण्ड हमें भी आँख बंद करके स्वीकारना चाहिये या सन् 2001 के पूर्व का सोलह साल की सीमा रेखा रखनी चाहिए?

फिर एक प्रश्न यह भी है कि किशोर किसी अन्त्तराष्ट्रीय षडयन्त्र के मोहरे तो नहीं बन रहे। देहली के बलात्कार एवं हत्या प्रकरण ने ये प्रश्न बड़ी शिक्षित के साथ उठा दिये है। विशेष कर पाँच दरिन्दो में से किशोर न्यायालय ने एक युवक को जिसे क्ररतम बतलाया गया है किशारे मान लिया है। अब वह अधिक से अधिक तीन वर्ष के सुधारालय में उसे भेजा जायेगा जहाँ वह हीरोईज्म के किस्से शेष किशोरो को सुना कर उन्हें भी दुष्कृत्य के लिये प्रेरित करेगा।

संस्कृत का बांग्मय में बलात्कार का पहला प्रकरण हमें वाल्मीकि रामायण में मिलता है जहाँ रावण ने रम्भा से बलात्कार किया था। उसके बाद भी श्रुतियों और स्मृतियों में ऐसे अनेक प्रकरण आते है। नारियों के शीलहरण का प्रकरण हमें महाभारत में देखने में मिलता है। जब कौरवों की सभा में द्रोपदी का चीरहरण किया गया था। इसी तरह इन्द्र ने ऋषि गौतम का रूप रखकर धोखे से उनकी पत्नी अहल्या के साथ दुष्कर्म किया था।

बलात्कार की परिभाषा बहुत विस्तृत है। किसी महिला की मर्जी के विस्द्ध यौन सम्बन्ध तो बलात्कार की श्रेणी में आता ही है, किसी युवकी को उसके साथ धोखा देकर यौन सम्बन्ध भी बलात्कार कहा जाता है किसी महिला की नशे की हालत में यौन सम्बन्ध भी बलात्कार होता है,ं किसी अवयस्क (अठारह वर्ष से कम) लड़की से यौन सम्बन्ध भी बलात्कार होता है (चाहे वह पत्नि ही क्यों न हो) किसी विक्षिप्त महिला से यौन संबंध भी बलात्कार की श्रेणी में आता है। अभी यह स्पष्ट होना शेष है कि किन विशेष परिस्थितियों में भी उसकी मर्जी के विरूद्ध हिंसक (या हिसंक) यौन सम्बन्ध भी

बलात्कार होता है या यह पत्नि का अलिखित दायित्व है कि वह पति को यौन संतुष्टि दें।

ये जो अठारह वर्ष की सीमा है यह बड़ी विचित्र है। यदि पुरूष की उम्र अपराध करते समय अठारह वर्ष से एक दिन भी कम है तो वह किशोर माना जायेगा और वह अठारह वर्ष एक दिन का है तो वह वयस्क हो जायेगा। यानि एक दिन में वह मानसिक एवं शारीरिक रूप से कानून की नजरों में बलात्कार के लिए आजीवन कारावास का भागी हो जायेगा अन्यथा एक दिन पूर्व वह बलात्कार करके मात्र 3 वर्ष सुधार गृह जैसी हल्की सजा पायेगा। इस पर भी किशोर न्यायालय पर यह बाध्यता है कि यदि किशोर के स्कूल का प्रमाण पत्र उसे अठारह वर्ष से कम का बतला रहा है तो न्यायालय अधिक पूछताछ न करे। इस सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता कि स्कूल का आयु संबंधी प्रमाणपत्र नकली हो। फिर अलग-अलग मुल्कों में किशोरावस्था अलग-अलग समय पर आती है। यह वहाँ के वातावरण पर निर्भर रहता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय माप दण्ड को आंख बंद करके मानने के बजाय स्थानीय परस्थितियों को ध्यान में रखकर और किशोरावस्था के प्रारम्भ के समय का अध्ययन करके ही विधि विरूद्ध बालकों की न्यूनतम उम्र तय करना चाहिये।

लेखक किशोर न्यायालय में सलाहकार रहा है। उस समय एक प्रकरण प्रस्तुत हुआ कि किशोर नकली नोट बना रहा है। उसे ज्ञात था कि उसे तीन वर्ष बाद छोड़ दिया जायेगा। क्या इस बात की सम्भावना नहीं थी कि वह लड़का किसी अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह का मोहरा न रहा हो ?

अब इस तथ्य पर गम्भीरता पूर्वक विचार होना चाहिये कि एक सत्रह से अठारह वर्ष का बच्चा बलात्कार करने में अक्षम है या वह उस अपराध की गम्भीरता न जानता हो ? और कैसे एक दिन बाद उसे गम्भीरता ज्ञात हो गई हो ?

शासन ने भले ही नये प्रावधानों के तहत बलात्कारियों के विरूद्ध सजा के कड़े प्रावधान कर दिये हो (हालांकि ये प्रावधान पहले भी थे) पर जब तक किशोर बालकों के अभिभावको को भी बुलाकर न्यायालयों में बुलाकर प्रताड़ना नहीं दी जाती जब तक शक है कि किशारो पर कोई नैतिक बंधन रहेगा। (उन पर जिनसे बलात्कार की सम्भावना रहती है। सामूहिक बलात्कार के अधिकतर प्रकरणों में अल्प शिक्षित व्यक्ति पाये जाते है। ऐसे लोग जो गाँवों से शहरों में आ गये हैं और वाहन चालक या कंडक्टर आदि बन गये हो। उच्च श्रेणियों के प्रकरणों में महिलाओं को पदोन्नति का लालच देकर या आर्थिक लालच देकर (धोखा देकर) यौन संबंध स्थापित किये जाते है। अतः क्रूर बलात्कार के प्रकरणों में धारा 376-356 और 307 आदि की अन्य धारायें भी लगना चाहिये।

श्रीवास्तव की सरल समस्या और उसका कठिन समाधान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

श्रीवास्तव को दुनिया का हर आदमी मांगीलाल ही लगता है। मगर हर आदमी उनका भला करने पर तुला रहता हैं। मिलते से ही हर आदमी उनको भला करने लगता हैं पर जब वापिस जाता है जो कुछ न कुछ उनका नोच कर चला जाता है। इसका सबसे अच्छा उदहारण श्रीवास्तव का एक पुस्तक और खाली अलमारियों वाला पुस्तकालय है।

हर मांगीलाल श्रीवास्तव से तपाक से मिलता है और पूछता है, और श्रीवास्तव जी क्या हाल है ? श्रीवास्तव जी समझ जाते है कि यह हितचिन्तक उन्हें श्री हीन करने आया है। श्रीवास्तव जी को उसी तपाक से जवाब देना पड़ता है। उन्हें कहना पड़ता है श्रीवास्तव जी वास्तव में अच्छे हंै।

सामने वाला जो कि सचमुच में पीछे होता है छुरी घोंपता है पूछता है, "आपका पुस्तकालय तो बहुत अच्छा है आपके पास दास केपिटल तो होगी। श्रीवास्तव जी उनके उपनाम के अनुसार फूल कर कुप्पा हो जाते है। कहते है "दास केपिटल" के साथ साम्यवाद के ऊपर सारी उपलब्ध पुस्तके है। "तो उन्होने अपना भविष्य भी खराब कर लिया । बाहर नौकरी पर गये बच्चों की तरह धीरे धीरे उनकी सारी पुस्तकें उनका साथ

छोड़ती जाती है और पैरो पर खड़े बच्चों की तरह वापिस नहीं आती। घर की तरह उनकी अलमारियां भी खाली होती जाती हैं। अब मात्र एक पुस्तक वाला पुस्तकालय उनके पास बचता है। किसी दिन फिर कोई अहित चिन्तक के वेष में हित विन्तक मिलता है। पूछता है "और श्रीवास्तव जी क्या हाल है ? श्रीवास्तव जी सिकुड़ कर कहते है "अच्छे है" उनका जवाब अच्छे और खराब की मुद्रा वाला अच्छे से होता है। सामने वाला पीछे से जाल बुनता है अच्छे तो नहीं लगते।

श्रीवास्तव जी टालने के स्वर में कहते है "हाॅ कुछ दिनों से अच्छा नहीं लग रहा। उनको अच्छा नहीं रहने पर सामने वाला खुश हो जाता है। वह नहीं चाहता कि उसके सिवाय और कोई अच्छा रहे।

उसके पास अब दुधारी तीन प्रस्ताव आते है अच्छा डाक्टर, अच्छा नुस्खा या अच्छा गुरू जो कि वास्तव में अच्छें नहीं रहते। वह द्वितीय पुरूष के उनसे आग्रह करता है कि आप अमुक डाक्टर के पास चलो । अच्छा न लगने का वह अच्छा इलाज करता है। तो लीजिए श्रीवास्तव जी, कहां तो आप उसे टाल रहे थे और कहां वह आपसे चिपकने लगा।

आप फिर टालते है। "भई अच्छा नहीं लगने का इलाज तो एक बुरा डाक्टर ही कर सकता है। "हाँ तो मैनें कब कहा है कि वह एक अच्छा डाक्टर है। वह जो शहर का एक सबसे बुरा डाक्टर है। "सामने से त्वरित उत्तर तीर की तरह सीने में घंसता है।

अच्छे नुस्खे वाले उनसे अधिक खराब होते है। श्रीवास्तव जी का सिर दुख रहा है वह अपने दुश्मन रूपी अंतरग मित्रों को मालूम पड़ जाता हैं । वे एक नुस्खे के साथ दौड़े चले आते है। पहले तो वे आपको स्वानुभूत सिद्ध नुस्खा के पदार्थ बताते है फिर जेब से वह कड़ा नुस्खा निकालते है और जब आप पीछे हटते हुए मना करते है तो वे साथ के हट्ट और कट्टे (वाले) अमित्रों के साथ आपके हाथ पैर जकड़ कर मंुह में उस कड़वे द्रव को उंडेल देते है।

शिक्षक की उत्सुकता से घूरते हुये वे इस तरह बैठ जाते है जैसे परीक्षा परिणाम वह विद्यार्थी देने वाला हो। यदि सच बोलते हुये कहते है कि उनका सिर दर्द बढ़ गया है तो वे हठ करते हुये कहते है कि उक्त रामबाण औषणि की तीन खुराब और लेनी पड़ेगी। पहली खुराब में तो दर्द बढ़ता ही है ऐसा होम्योपेथी में कहा है।

उन्होनें आयुर्वेद में होम्योपेथी घोल दी। बीच में सभी बहिने यथा आयुर्वेद, रेकी, होम्योपेथी यूनानी, सिद्ध, मेग्नेटोथेरेपी, रंग चिकित्सा, भोग इत्यादि एलोपेथी को पानी पी पी का गालियां देती रहती है। कि एलोपेथी से तत्काल लाभ जरूर होता है पर वह केंसर, भगन्दर और टी.वी. जैसे रोगो को ठीक नहीं कर सकता, कि वह सिस्टम खराब कर देता है कि आदि आदि।

दरअसल उन्हें न तो आयुर्वेद से मतलब है और न ही एलोपेथी से दरअसल उनके लड़के का सिर दर्द ठीक नहीं हो रहा था और वे दूसरे पर वह नुस्खा पहले आजमाना चाहते थे । पर दूसरे दिन उन्हें यह जान कर निराशा होती है कि जब वे दूसरी खुराब अन्दर ठंूसना चाहते है तो उनके डर के कारण श्रीवास्त शहर छोड़ चुके होते है।

उनसे अधिक खतरनाक अच्छे गुरू के खराब शिवय होते है। वे ऐसे ही घूमते हुये आ रहे होते है। कुछ के तो स्थानीय गुरू होते है जो सिर दर्द के लिये नींबू और लोंग जेब में रखे हुए होते हैं। ऐसे शहर में इतने गुरू उनके पास आते है कि घर के पिछवाड़े नींबूओ और लौंग का ढेर लग जाता है। वे उन्हीं लोगो की निस्वार्थ सेवा करते है जो उनकी सेवा कर सकता है।

कुछ शिवय आते से ही पूछते हंै कि श्रीवास्तव श्री श्री की या फलों बाबा की योग की दीक्षा ली कि नहीं। यानि की सभी पेथीयों की तरह आपके सिर दर्द का सौदा होने लगता है। कुछ गुरू कहते है कि आज पहले उनकी परीक्षा ले ले फिर उनके शिष्य बनें। मगर आप उनकी परीक्षा लें ही क्यों

एक साहब आते है और पूछते है कि आपका गुरू कौन है ? जब देखा जाता है कि कोई नहीं तब श्रीवास्तव का ऐसे देखा जाता है कि एक स्वस्थय कुत्ता एक सड़ियल कुत्ते को देखता है। प्ूछा जाता है कि क्या निगुरै मरने का इरादा है ?

जब आप कहते है कि आपका विश्वास गुरू घंटालों में नहीं है तो सीधे आपसे यह कह कर गाली दी जाती है कि अगले जन्म में कुत्ता या सुअर बनेंगे। जब आप कहते है कि उन जैसे मित्रों के साथ से तो कुत्ता बिल्ली बनना अच्छा है तब वे कहते है हमें बुरा नहीं लगा पर हमें स्वर्ग में देख कर यह दुख होगा कि उनका अभिन्न मित्र सुअर बन कर गंदी नाली में घूम रहा है।

यानि उनके गुरू ने पैसे लेकर उन्हें आश्वस्त दे दिया है कि स्वर्ग में उनका स्थान सुनिश्चित हो चुका है। श्रीवास्तव ने ठण्डे स्वर में जवाब दिया तो मित्र तुम मित्रता निभाने के लिये अपने गुरू से प्रार्थना करना कि वे तुम्हें भी कुत्ता या सुअर बना दें अगले जन्म में।"

मगर प्रिय मित्र का गुरू में विश्वास देखिये कि जाते जाते कह गये "श्रीवास्तव तुम्हें बनना जो पड़ेगा हमारे गुरू का ही चेला। इस जन्म में नहीं तो चार पांच जन्म बाद। मेरा भाग्य अच्छा है कि इसी जन्म में ही इतने पहुंचे हुए गुरू की शरण प्राप्त हो गई।

श्रीवास्तव जी ने भी उन्हें बिदा करते समय कहा "जब आपने मुझ निगुरे के अगले जन्म देख ही लिये है कि मैं कुत्ता, बिल्ली या सुअर इत्यादि बनूंगा तब आपके गुरू को भी मुझे मुक्ति देने इन्हीं में से कोई बनना पड़ेगा कि नहीं ?

वे फिर रूक गये, पलटे और एक थप्पड़ श्रीवास्तव के गालो में जड़ दिया। फिर गालियाँ देते हुए मोटर साइकिल पर चढ़ कर भाग गये।

फिल्मी गानों का शब्द कोष

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

फिल्म का निर्देशन एक बहुत टेढ़ी खीर है। फायनेन्सर पैसा लगाकर अलग हो जाता है उसे तो जनता रूपी जमीन से पैसे की फसल मय ब्याज के वापिस चाहिये। प्रोड्यूसर हीरो हीरोइन रूपी पत्थर डायरेक्टर के सिर पर पटक देता है। अब हीरो को जो एक्टिंग करना है वही करेगा। समझ में नहीं आता कि हीरो फिल्म को डायरेक्ट कर है या डायरेक्टर। एक प्राग्एतिहाहसिक युग का गाना था एक टांग चल रही अलग-अलग और दूसरी किसी के साथ है । हीरोइन उसकी मम्मी रूपी भैंस के साथ समझ में नहीं आता कि क्या ये हिरणी इस भैंस ने पैदा की है ? वह भैंस भी डायरेक्टर को ब्लेक मेल करती है कि उससे भी साइड हीरोइन का ही काम दिया जाये।

यही सोचते साचते विमल कमल नाम के निर्देशक की नींद लगी थी कि एक किर्र ने उसकी नींद को उनसे छीन लिया। देखा तो सुबह के पांच बजना चाह रहे थे। वे झल्ला गये। हीरो ही उन्हें इस बेढव समय में उठाने की हिम्मत कर सकता है। बरखुरदार की मर्जी हुई होगी कि चलो शूटिंग की जाये। फिल्म में कोई भी सीन सुबह का नहीं था पर उस गाडमास्टर की मर्जी। अब पूरी यूनिट को बुलाना था। सेट जमाना था। फिर उस गधे से कहते कि भैय्या उछल कूद करले। हीरोदन तो आने से रही। बेबी अभी अभी बिस्तर पर गई होगी। मां नामक जल्लाद को एक लाख ऊपर का लालच देना होगा तभी वह उसकी बकरी को लायेगा।

दिन में एक्टिंग करते करते हीरो को फियेन्स ने आंख मार दी थी तो वह पारे की तरह फिसल गया था। अब वह एक्टिंग नामक उछल कूद करने आ गया।

यही सोचते सोचते उस डायरेक्टर ने नींद से दरवाजा खोला तो सामने एक काक्रोज खड़ा था। माथे पर तिलक बाजू में डायरी और पैरो में चप्प्ल। लगता है कि चैकीदार नींद की गोद में चला गया होग तभी यह कीड़ा अन्दर गा गया।

दरवाजा बन्द करने से पहले ही वह भावी गीतकार अन्दर घुस गया। बोला "साहब जी एक गाने का मौका दे दें। आप देखना मैं सारे गीतकारो की छुट्टी कर दूंगा। वी.सी. बोले "मूर्ख उनकी छुट्टी तू क्या करेगा। वे सब एक दूसरे की छुट्टी करते रहते है। और यदि उनकी छुट्टी करने के लिये इतनी सारी लार टपक रही है जो दिन के

एक बजे “झम झमा झम” के सेट पर आ जाना। यहां सुबह पांच बजे तो वही आता है जिसको अपनी छुट्टी करवाना होती है। जो उन्हीें के सामने उनकी छुट्टी करना, वह गीतकार शहर का होता तो उसको समझ में आता। उसने डायरेक्टर के पैर पकड़ लिये। डायरेक्टर बोला अच्छा “गीतकार तू बराण्डे के फर्श पर सो जा मुझे भी सोने दे तू तो चार बजे उठने का आदी है जबकि हम लोग भूल चुके है की सूरज कहां से उगता है।” वह गीतकार तपाक से बोला मैं बताऊं सूरज पूरब से उगता है।

डायरेक्टर ने तुलसी” ने कहा आपके इस अहसान से मैं दब गया। अब आप नीचे जाकर फर्श पर सोते है या आपको ऊपर कुत्ते छोडे जायें। यहां के कुत्ते भी अहसान फरामोश हो गये है। खुद कुछ काम नहीं करते। उन्हें काम बतलाना पड़ता है।”

भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार का वह भावी विजेता बाहर जाकर फर्श पर खर्राटे भरने लगा। डायरेक्टर की नींद उस के खर्राटे से उड़ गई।

झल्ला कर उस निर्देशक उसे खम्भे का सामान टटोला तो उसमें फिल्मी गीतो का एक शब्द कोष मिला जो मैं उस निर्दशेक से प्राप्त कर पाठको के ज्ञानार्थ प्रस्तुत कर रहा हॅू। उस शब्द कोष के प्रथम पृष्ठ पर लिखा था फिल्मी गानों का शब्द कोष अन्दर के ये शब्दार्थ एवं भावार्थ:

भावार्थ हीरो - इसी व्यक्ति से असली फिल्म चालू होती है इसीलिए चालू दर्शक इसे देखकर ताली बजाते है। इसका अधेड़ का कर्तव्य कालेज में पड़ना, नायिका से प्रेम करना और विलेन से बदला लेना होता है। पुलिस की तरह यह भी एन मौके पर प्रकट होता है। शब्दार्थ: सैय्या, प्रीमत, राजा, प्यारे, जानू, देवता, स्वामी, इत्यादि।

प्रेमिका - शब्दार्थ - दिलरूबा, शमा, कश्मीर की कली (चाहे किसी भी गांव की हो) सजनी, रानी, गुलाबी, चन्दनी, साहिब, श्यामा, गोरी कुड़ी इत्यादि।

भावार्थ - इस का काम फिल्म में नायक को रिझाना, विलेन द्वारा पकड़े जाना हीरो के प्रकट होने पर मार बिरजू (या राजू) मार कहना है।

भैय्या - शब्दार्थ - वीरा, आंखो का तारा इत्यादि। यह भी हीरो ही होता है और पुलिस की निगरानी पर भी रक्षा बंधन पर प्रकट होना है।

बहिन - शब्दार्थ - बहिन बहिन ही रहती है। इसका कर्तव्या रक्षा बंधन पर जो हीरो के प्रकट होने पर कभी भी होता है एक गाना (इसके हिस्से में भी एकाध गाना टपका दिया जाता है) और राखी बांधना होता है।

मां-भैय्या - यह कुम्भ में हीरो से बिछुड़ जाती है एकाध गाना मारती है हीरो के वाह के गिसूल से उसे पहचानती है। विलेन द्वारा बांधी जाती है कभी कभी बीच में मर भी जाती है।

बाप-बापू, पिताजी इसके हिस्से कोई गाता नहीं आता।

विलेन - शैतान, राक्षस कमीने रावण, कुत्ते इत्यादि। इसका काम रावण की तरह हंसना (मालूम नहीं रावण कैसे हंसता होगा) बुरे इरादे से हीरोइन के कपड़े उतारना एवं आखिरी में मारा जाना होता है।

साइड हीरो एवं हीरोदन: ये हीरो एवं हीरोदन को उटपटांग हरकतो द्वारा प्रेम करने में सहायता प्रदान करते है। एकाध नौकर या नौकरानी का पार्ट इनके हिस्से में भी आ जाते है। कुछ और शब्द भी स्मरणीय है जैसे हिया, जिया, हिवड़ा छाया, खाया कश्मीर, खण्डाला दुनिया के रखबोर देख भगवान देख, परवाज, राम, श्याम, लक्ष्मण, भरत, कली, गली, खिली, गाली, आला, गले बजाना, तू कहां मैं यहां छाया, पायल, नथनी, बिछुआ, नौलखा हार, आंख मारना, नयन, सारेगाना, सून प्यार की धुन ऊपर वाले, चंदा, चांदनी, हवा, तूफान, पानी बरखा, कंगन/चूड़िया, रब, अल्ला, छल्ला, नथनी, रोटी, जमाना, जुदां कमर, मटकाना, धड़कन, दैय्या, झटक-झटक, मटक अटक झटक, चटक, एजी, ओजी भोजी, मौजी, लोजी, पपीहा, चकवा, चकवी, चुन, फंसी, नाग दिया, दीवाली, होली, चुनरी, रंग, बसन्ती गुलाबो, डाक्टर, थानेदार पुलिस कमिश्नर राजा साहब आदि। बस उपरोक्त शब्दों से ही निरर्थक गाने बनाये जा सकते है एवं उपरोक्त पात्रों से ही पिक्चर बनते है।

किसी निर्धारित मार्ग पर मत चल

आराध्य ने कहा था कि वह बगैर आवरण के ही उससे मिलेगा। वह आराध्य के पास चला तो बगैर आवरण के ही था। पर एक मोड़ पर लंगर चल रहा था। उन्होने उसे पकड़ लिया और पूछा "तुम इस सभ्य मार्ग से निर्वस्त्र कैसे चल रहे हो ? चलो कुर्ता पायजामा पहनो और कुछ खा पी लो। सेब फल स्वादिष्ट है उन्हें जरूर खाना। "फिर हरा कुर्ता और सफेद पायजामा उसे पहना दिया उस सीधे आदमी ने सोचा कि जब वह आराध्य से मिलेगा तो निर्वस्त हो जायेगा चूकि आराध्य ने कहा था बगैर आवरण के मिल।

आगे मोड़ पर कुछ और लोग मिले और उन्होने उसे रोक लिया। पकड़ कर कहने लगे "कुरता पायजामा ठीक है पर पायजामा जरा नीचे है। पायजामा घुटनो और टखनों के बीच होना चाहिए।" यह कह कर उन्होने पायजामा घुटनों और टखनों के बीच से काट

दिया। और कहा “प्रियतम से मिलने जा रहे हो और तन कर जा रहे हो। झुक कर जाओ। वह घमण्डियों से नहीं मिलता। ऐसे झुको कि सिर नीचे और नीचे का हिस्सा ऊपर रहे।”

“फिर मैं चलूंगा कैसे”? उसने भोलेपन से पूछा ? “देखो तुम जरा झुको तो पश्चिम की तरफ। हम एक ठेला मंगवाये देते है वह तुम्हे अगले मोड़ तक ले जायेगा। वैसे कयामत के दिन सब ऊपर वाले से मिलने ही वाले है तुम भी मिल लेना। “ऐसा कह कर उन्होने उसी दशा में उसे अगले मोड़ पर छोड़ दिया।

वहां से रास्ता धोती कुर्ता और दण्डवत करने वालो का था। उसका सिर नीचे और पीछे का सिरा ऊपर देख कर किसी ने उसकी टांगे खींच दी। वह दण्डवत हो गया। भीड़ ने कहा “अब ठीक है। देखो तो इस बेचारे का पायजामा काटा डाला। इसे धोती पहना दो, और यह पश्चिम की तरह मंुह किये है, जब कि सारे देवता पूर्व की तरफ रहते है। इसे ऐसे ही दण्डवत मुद्रा में पूर्व की तरफ कर दो। इसका हरा कुर्ता उतार कर केसरिया कुर्ता पहना दो।”

उसे दण्डवत स्थिति से फिर खड़ा किया गया। माथे पर एक तिलक लगाया गया और पूछा बन्धु कहां जा रहे हो ? उसने कहा “मैं अपने आराध्य से मिलने जा रहा था तुम लोगो ने रास्ता भटका दिया। आराध्य ने कहा था कि मैं उनसे निर्वस्त्र मिलूं पर तुम लोगो ने मुझे हरे केसिरया और पूरब पश्चिम के जंगल में भटका दिया। अब मैं क्या करूँ ? भीड़ बोली तुम्हे कुछ नहीं करना । वह तुम्ही हो। तुम पूद्मासन लगा कर इस बैल गाड़ी में बैठ जाओ। यह तुम्हेें ऊध्र्व स्थिति में ले जायेगी।

वह पद्मासन लगा कर बैलगाड़ी में बैठ गया। बैलगाड़ी ने अगले मोड़ पर ले जाकर उसे पद्मासन में ही बिठाल दिया। वहां फिर एक रेला आया और बोला ! यह भटक गया है। दुनिया के सारे भटके लोगो हम तुम्हें राह दिखायेंगे। यह कह कर उन्होने उसे खड़ा कर दिया। फिर सफेद कमीज और पेंट पहना दिया।

पूछा गया “तुम कौन हो और कहां जाना चाहते हो ?“ वह बोला “मुझे मेरे पालन हार प्रियतम से मिलना है। “भीड़ बोली “तुम झुके रहोगे तो उस से कैसे मिलोगे ? वह तुम्हें पहचान नहीं पायेगा। सफेद पेन्ट और शर्ट पहनों। टाई भी लगाओ। हम तुम्हे आगे का रास्ता दिखायेंगे। “उस श्रृद्धान्वित ने पूछा “मैं इस रास्ते से अपने श्रेय एवं प्रिय तक तो पहंुच जाऊंगा न”

सफेद भीड़ ने जवाब दिया “जरूर हम तुम्हें राकेट से पहंुचा देेंगे” उन्होने उसे कार में बिठाला और आगे के मोड़ पर छोड़ दिया। आगे के मोड़ पर फिर एक भीड़ मिल गई। उसने उसे एक सफेद टोपी पहना दी।

भीड़ ने हाथ में तिरंगा पकड़ा दिया और कहा तीनों रंग हमारे है। गांधीजी हमारे है, पर उन्होनें चुरा लिये। अब यह टोपी तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगी। सर पर छत जरूरी है । बस तुम हर कदम पर हमारे नेता की जय बोलते जाओ। "कुछ कदम आगे चल कर एक अन्य भीड़ ने उसे चुरा लिया और भगवा टोपी पहना दी। गांधी जी उस टोपी पर भी बने हुये थे।

वह उनके नेता जी की जय और सफेद टोपी वालो की हा.हा कार करने लगा। फिर उसे लाल टोपी वालो ने चुरा लिया। वह सफेद और भगवा टोपी वालों, दोनो की हा-हा कार करने लगा। कभी वह अकेले में सोचता कि वह कहां भटक गया है, कभी कुर्ते कमीजो में तो कभी टोपियों में। उसने सब कुछ उतार दिया और दूसरो की इज्जत ढकने के लिए एक चड्डी भर धारण कर ली।

तो उसे आगे पुलिस ने पकड़ लिया। उस पर मुकद्मा चला। न्यायालय ने अंग प्रदर्शन के अपराध में जेल में डाल दिया, और खुद एक फिल्म देखने चला गया जिसमें हीरो का सिक्स पैक शरीर दिखाया गया था और हीरोइन नग्नाधिक कपड़ो में थी।

उसे समाज में रहने का गुर जेल में सिखाया जाने लगा जैसे झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, वहां मत जाओं, यहां मत आओ आदि वहां पर सभी विचाराधीन कैदियों ने न तो डाका डाला था, न बलात्कार किया था, न ही जुआ खेला था और न ही चोरी की थी। चैदह साल बाद न्यायालय इस निर्णय पर पहंुचा कि न तो उस आदमी ने डाका डाला था और न ही चोरी ही की थी। वह तो ईमानदारी और गरीबी के कारण एक चड्डी पहने था। बस, वह एक चड्डी पहन कर ही शहर के चमकदार बाजार में घूम रहा था। किसी सम्भ्रान्त महिला के कहने पर अंग प्रदर्शन के अपराध में उसे जेल में डाल दिया गया था। उसके पास अंग ढकने लायक कपड़े ही न था। सड़को पर चलने लायक उसके पास कोई कपड़े नहीं थे। यथा कोई रंगीन कुर्ता या रंगीन टोपी। उस निरपराध को सफेद बुशर्ट और सफेद पायजामा में फिर जेल से बाहर कर दिया।

बाहर उसे एक आकर्षक भीड़ ने रोक दिया । उसने पूछा "ये भीड़ क्या है। एक आदमी ने कहा "यह श्री श्री एक हजार आठ, श्री मन्दिर-मस्जिद चर्च वाले बाबा जी हैं" भूले भटके आदमी ने पूछा "यह दो बार श्री क्यों ? क्यों कि उसके पास एक हजार आठ श्री श्री कहने का समय नहीं है।" उस जुलूस के आगे आकर्षक बैण्ड था। पंक्तिबद्ध सजे हुए घोडे शराफत से चल रहे थे। फिर डी.जे था जिस पर सस्ते फिल्मी गाने बज रहे थे। पीछे कुछ वृद्ध-नौजवान, आकर्षक महिलायें उन फिल्मी धुनों पर भोंडेपन से नाच रहे थे। फिर शहर की सम्भ्रात महिलायें गहनों और मंहगी साड़ियों से ढंकी हुई फैशन के बाजार और फिल्मों के बारे में बातचीत करती हुई ततैयों की तरह भिनभिनाती हुई

चल रही थी। अन्त में शहर के मोटे थुल थुल अमीर सफेदी को शर्माती हुई सफेदी में कुछ धवल वस्त्र धारी, साधुओं को कन्धे पर लादे चल रहे थे । अन्त में एक अन्यन्त मंहगी कार में आंख बंद कर मुख्य साधु धीमे-धीमे चल रहा था। उस कार के चारो तरफ कुछ नारे लिखे हुये थे।

सबसे आगे एक नारा था जिस पर लिखा था कोई भी सड़क अंधो की भीड़ से खाली नहीं है। एक बाजू में लिखा था भटके लोगो की उस भीड़ से बचने के लिये भटके हुए लोगो की इस भीड़ में शामिल हो जा, दूसरे बाजू में लिखा था अंधे को ही आवरण की जरूरत होती है की उन भीड़ो से बचने के लिए अन्धो की और सबसे पीछे लिखा था अपने प्रियतम से मिलने के लिये किसी भी निर्धारित मार्ग पर मत चल।

बेहद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मीनार खुश है मेरे घर की छांव पर बेहद।
और खुश है धरा तटों के कटाव पर बेहद ।।
सपनों की एक गजल ने इतना दर्द दिया है
हँू परेशां उस दर्द के खिंचाव पर बेहद।।
तुम फेंकते हो खाना तुम नाराज उस पर हो
नाराज मैं हँू भूख से लगाव पर बेहद
मेरा बदन और लफ्ज दिल की खिडकियां ही है
होती है बहस उनमें मेरे भाव पर बेहद
है तलहटी में छेद कोई रोकता नहीं,
और भीड़ चढ़ गई है उसी नाव पर बेहद
तेरी है बन्द आंखे जूते वजनदार है।।
हम टूट न जायें कहीं दबाव पर बेहद।
हल्ला है इतना घाव पर और घाव भी नहीं,
जाते हो तुम लगाये मल्हम घाव पर बेहद।।

आगे है रवाई रखना कदम आंख खोल कर
नाराज क्यों होते हो इस सुझाव पर बेहद
तुम देखते ही देखते गगन पे चढ़ गये
मैं परेशा हँू धरती से झुकाव पर बेहद
लूटा है तुमने हमें बेहद पांच सालो में
कर जाते हो जो खर्च हर चुनाव पर बेहद।।

जुल्मों के दरिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सूरज के उगते ही तन ढकने लगते है
पतर दर परत चिपकाने छिलके लगते है
ये घर नहीं मजारें है कई मंजिल वाली
जिनमें हम तुम बदहवास घूमा करते है
यहां हवायें सामूहिक हत्या करती है
मुर्दे आपस में खालें नोचा करते है
आफताब काला जादू करने आता है
एक दूसरे के चेहरे से सब डरते है
गश्त लगाती है गुनाह की काली रातें
जुल्मों के गहरे दरिया हरसूं बहते है

दोपहर के तेवर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दोपहर ओहदे पे जो आने लगी,
धूप भी अपने तेवर दिखाने लगी ।।
चाँद ऊपर से निगरानी करने लगा,
चान्दनी झील में जो नहाने लगी।।
एक भंवरे को छू के चमली खिली
दूसरी अपनी पेंगे बढ़ाने लगी।।
मोगरा खिल गया, गंध उसकी लिये
ड्योडी, ड्योडी हवा ये बताने लगी
कुछ सहारे को लेकर उठी जिन्दगी
दो कदम ही चली लड़खड़ाने लगी।।
झूठ की इतनी आदत हमें हो गई
सच के पहले जुवां लड़खडाने लगी।।
मेघ आने को है फिक्र उसकी करो,
सोंधी-सोंधी हवा ये बताने लगी"

मछलियां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गुण्डे जब सरे राह छेडते है लड़कियां
दरवाजे बन्द होते है खुलती है खिडकियां
घर में एक शक्श है भिड़कतें हैं सब उसे
वे गाने भी आआ के घर लेते है झिड़कियां
बेगार लेने का उन्हें हक है, झुके है हम
जल जाते है घर वाली की लेते है चुटकियां
कहते है कुछ न करके मुकरते है बात से
गाने से कुछ ज्यादा ही वे लेते है मुरकियां
बेरोक टोक कमरे में फिरती है छिपकली
कीड़ो को फंसा लेती है जालों में मकड़ियां
कांटा है आसपास फंसाने तलाब में
इतनी सी बात काश समझ लेती ये मछलियां
तांगो की तरह फ्रिज के जमाने में देखिये
मिट्टी के मोल बिकते को बैठी है मटकियां

झांकने मत आ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तू देने के बहाने मांगने मत आ
तू अपना वजन मुझ पर टांगने मत आ
जिन्दगी रोशनी भी है अंधेरा भी
फरिस्ता बन के उसे जांचने मत आ
मैं दरिया प्रेम का बहता हुआ गहरा
तू उसमें डूब उसको नापने मत आ
खिड़की से लगा कर कान कुछ मत सुन
दर से दिल में आ तू भांपने मत आ
गुनाह कर दिये तो कर दिये मुझ पर
उन्हें अब वहानो से ढांकने मत आ
हमारी गरीगी को बाहर निकालने दे
फटे कपड़ों से अन्दर झांकने मत आ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ना ही गानों में ना ही रागो में
हम तो उलझे थे गुना भागो में
साफ अक्षर भी के गये धुधले
या कि कम रोशनी चरागो में
भागते थे गुनाह से हम
मगर लिपटे भी रहे दांगो में
जिन्दगी नागफनी का जंगल
दिल रहा गुलाबों के बागो में
भले ही ऊपरी मंजिल पे रहे
बिनती होती रही अभागो में
वक्त पे खिल नहीं पाया कपड़ा
लड़ाई छिड़ती रही तागो में
आह ठण्डी भी हम रहे भरते
और जलते भी रहे आगो में
जहर कानो में पिया है हमने
जिन्दगी भर घिरे थे नागो में

क्या सामूहिक बलात्कार पुरूषों की एक नेचुरल इन्सक्टि है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तेईस दिसम्बर 2012 की रात को दिल्ली में बस में एक लड़की के साथ कुछ पुरूषों ने सामूहिक बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। इस घटना ने पूरे राष्ट्र को झकझोर दिया महिलाओं ने पुरूषों और प्रशासन को रोशनी दिखाने के लिए जगह जगह कैंिन्डल मार्च निकाले। जगह जगह नुक्कड़ सभाये और आम सभायें हुई। शासन ने जनता को आश्वासन दिया कि वह आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवायेगी।

पूरे देश में प्रगति वादी और पुरातन पंथी सोचो में बहस छिड़ गई। प्रगतिवादी सोच रखनें वाले पुरूषो की सोच बदलने वादी बातें करने लगे वहीं पुरातन पंथी फडामेन्टलिश्ट लोगो ने कहा कि सामूहिक बलात्कार के प्रकरणों में महिलायें ही दोषी है। उन्हें उत्तेतक कपड़े पहन कर नहीं निकलना चाहिये।

शासन ने तत्काल पुलिस कर्मियों पर प्रशासनिक कदम उठायें। ये वही पुराने कदम थे। कुछ का निलम्बन एवं विभागीय जांच और उच्चाधिकारियों के स्थानान्तरण। इसी बीच दिल्ली के आई.जी. को स्टेटमेंट आया कि घर चार दीवारियों में बलात्कार सामूहिक प्रकरणों से ज्यादा होते है। यानि कि सामूहिक बलात्कार के प्रकरणों में पुलिस की कोई गल्ती नहीं होता।

उस लड़की को देश का आन्दोलन दबाने के लिए लड़की को इलाज के लिये सिंगापुर भिजवा दिया गया जहाँ उसकी मौत हो गई। प्रश्न यह है कि सामूहिक बलात्कार होते क्यों है ? यदि बलात्कार के कारणों पर गौर किया जाए जो सबसे मुख्य कारण काम वासना की प्रबलता और उसकी पूर्ति के लिए शक्ति प्रयोग के माध्यम से ऐसा अवसर जब अपराध करने के बाद स्वयं को दण्ड से बचाया जा सके यही करण है कि घटना के बाद महिलाओं की हत्या अधिकतर उपकरणों से हुई है जिससे गवाह न रह जाए।

शायद यह इन्सटिक्ट पुरूषों की जीन्स में पाई जाती है। वे महिला को एक शिकार समझते है और जहाँ महिला अकेली दिखी तो समूह बना कर उस पर झपटते है। या जहाँ वे परिस्थितियों को स्वयं के पक्ष में समझते है वहीं महिला के जिस्म एवं जेहन को घायल करके छोड़ देते है।

सामाजिक परस्थिति में उनकी यह "स्टिंक्ट" दबी रहती है पर महिला पर आक्रमण कर दबोचने की सोचते जरूर रहते है। अकेले जाने पर सारे थोपे गये रिश्ते झड़ा वे आक्रमण कर देते है। भेड़ियों की तरह समूह में आक्रमण करने की वे योजना जरूर बनाते रहते है। चाहे वे प्रेमी के रूप में उसे फुसलाने या पति के रूप में या "कंजिन्स" के रूप में। पुरूष के लिये महिला शिकार ही है। रिश्ते ऊपर से थोप दिये गये है।

सामूहिक बलात्कार में पुरूषों का समूह महिला पर हावी होने के लिये पहिले अशक्त करता है फिर उससे बारी बारी से बलात्कार करता है या करते हुओ को देख सेड्रिस्टिक सुख महसूस करता है। पुरूष सम्भवतः महिला को स्वयं से अधिक ताकतवर महसूस करता है इसलिये उस पर समूह बना कर आक्रमण करता है। या महिला की देहदृष्टि उसे प्राकृतिक रूप से आक्रमण करने के लिये उत्तेजित करती है। मगर समाज में यह उत्तेजना उन्हें विवरात पूर्वक दबाये रखना पड़ती है। समाज के बन्धन सम्भवतः महिला के पक्ष में रहते है। सामाजिक मर्यादायें क्यों महिलाओं के पक्ष में रहती है। यह सोचने का विषय है। पर जहाँ समाज हटा हो पुरूष बलात्कार के लिये विवश हो जाता है। एकान्त में यदि पुरूष के दिमाग में समाज जिन्दा रहता है तो वह बलात्कार नहीं करता।

बलात्कार का सबसे पहला प्रकरण वाल्मीकी रामायण में देखने मिलता है जहां रावण रम्भा को अकेले में पाकर उससे बलात्कार करता है। महाभारत में द्रोपदी का चीरहरण एक सामूहिक बलात्कार का ही प्रयास है।

दिल्ली वाले प्रकरण में राष्ट्रवादी के पुत्र का व्यक्तव्य आया था कि उस प्रकरण में लड़की की ही गलती थी। फिर दिल्ली के आई. जी का स्टेटमेंट पुलिस वालो के पक्ष में आया। एक साक्षात्कार में उनसे पूछा गया था कि उस प्रकरण में दुनिया से गलती क्यों हुई ? तो उन्होने साक्षात्कार की दिशा घरेलू बलात्कार की तरफ मोड़ दी। फिर साधु संतो, मुल्लाओं नेताओं के वक्तव्य प्रकाशित हुये कि इन प्रकरणों में लड़कियों की ही गलतियां रहती है कि वे उत्तेजक वस्त्र पहनती है। इस तरह से सबका अलग अलग स्टेटमेन्ट एक ही दिशा में क्यों है। क्यों सब सामूहिक रूप से सामूहिक बलात्कार के प्रकरणों में पुरूषों के पक्ष में प्रतीत होते है ?

बलात्कार से बचाव

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव
विशाल शुक्ला ऊँ

परिभाषा

बलात्कार

किसी पुरूष या पुरूषों द्वारा महिला की मर्जी के विरूद्ध यौन संबंध बलात्कार ही कहा जाता है। चाहे सहमति महिला को धोखे मे रख कर ली गई हो या नशे की हालत में ली गई है। यदि महिला मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तब भी यौन संबंध बलात्कार की श्रेणी में आता है। यदि महिला सोलह वर्ष के कम की है तब उसकी स्वीकृति के साथ यौन संबंध भी बलात्कार की श्रेणी में आता है। यदि लड़की सोलह वर्ष से कम की है तो उसके पति द्वारा सम्भोग भी बलात्कार होता है। यदि सहमति प्रलोभन देकर भी प्राप्त की गई है जैसे शादी का प्रलोभन देकर या प्रमोशन या पैसो का या अन्य किसी तरह का प्रलोभन देकर भी प्राप्त की गई हो तब भी सम्भोग बलात्कार की श्रेणी में आता है।

बलात्कार भारत के क्रिमीनल प्रोसीडर कोड की धारा 376 के अन्त्तगत दण्डनीय अपराध है। बलात्कार की परिभाषा के अनुसार शिश्न का योनि में प्रवेश सिद्ध करना आवश्यक हैं अन्यथा वह मात्र शीलभंग की श्रेणी में आयेगा जो धारा 356 के अन्त्तगत दण्डनीय अपराध है।

प्रकार

यदि देहली वाले प्रकरण में उस बेसहारा लड़की के पास पिस्टल या छुरी होती तो शायद वह खुद को बचा सकती थी। विदेशो में अन्य कारणों के साथ बलात्कार की घटनाओं में कमी अस्त्र शास्त्रों के लायसेन्स सुविधापूर्वक मिलना भी हो सकता हैं। बलात्कार को हम मुख्यतः तीन भागों में बांट सकते है।

1. घरेलू बलात्कार
2. सामूहिक बलात्कार
3. बाहर के बलात्कार

घरेलू बलात्कार

ये बलात्कार लड़की के रिश्तेदार द्वारा होते है। ये बलात्कार लड़की का बाप, भाई, सौतेला बाप, मामा, फूफा घर का नौकर या कोई भी पुरूष रिश्तेदार कर सकता है। बलात्कार करनें के बाद लड़की पर दबाव डाला जाता है कि वह बलात्कार की घटना किसी को ना बतलाये अन्यथा उसे मार डाला जायेगा, उसकी चुगली कर दी जायेगी या किसी अन्य अपराध में फंसा दिया जायेगा।

ये बलात्कार शारीरिक शोषण की श्रेणी में आते है और दीर्घकाल तक चलते है। लढ़की के द्वारा गर्भधारण करने पर दोष किसी और पर लगा दिया जाता है या उसे कुलटा कह कर घर से बाहर निकाल दिया जाता है या उसकी आनन फानन में शादी कर दी जाती है। कुल बलात्कार के नब्बे प्रतिशत घरेलू बलात्कार होते है। यह प्रकाश में आने पर लड़कियां आत्महत्या तक कर लेती है या पागल हो जाती है।

संयुक्त परिवार और उसकी मर्यादायें इसके लिये काफी हद तक जिम्मेदार होती है। अशिक्षा और गरीबी भी इसके कारण है। छोटे मकान में एक ही कमरे में लड़के लड़कियों को सुलाना भी इसके लिये जिम्मेदार होते है। इसलिये भी बाल विवाह कर दिये जाते है।

रोकथाम

लड़के और लड़कियों के कमरे अलग अलग होने चाहिये। परिवार नियोजन भी कुछ हद तक रोकथाम में सहायक रहा है। लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य है। लड़कियों की बातों पर मां को विश्वास करना चाहिये। उन्हें निडर और स्वाभिमानी बनाना चाहिये लड़कियों को सिखाना चाहिये कि घर के मर्दो से भी एक निश्चित दूरी बनाये रखें। लड़कियों के एक दम ब्यौहार परिवर्तन पर कारण सोंचना चाहिए। ऐसे प्रकरणों को भी पुलिस में देने पर हिचक नहीं करना चाहिए।

सामूहिक बलात्कार

ऐसे बलात्कार अपहरण, अकेली लड़की को पाकर एकदम या योजना बना कर किये जाते है।

कारण: आदमी की लोलुपता ही इनका कारण होती है। सार्वजनिक मार्गो पर लड़कियों का अकेलापन और कई पुरूषों का समूह में होना (दो या दो से अधिक), तात्कालिक या दीर्घकालीन योजना, लड़की के मां बाप से बदला लेना अन्य अनेक कारण हो सकते है। कुल बलात्कारों का यह एक से पांच प्रतिशत तक होते है।

रोकथाम

1. लड़कियों को आत्म विश्वास सिखाना चाहिये

2. उन्हें जूड़ो कराटे का प्रशिक्षण देना चाहिये।

3. जब भी लड़की, घर से बाहर निकले तो ऐसे कपड़े पहने जो भागने में व्यवधान भी न बनें। जैसे साडी के स्थान पर जीन्स पहनें।

4. लड़की सम्भव हो जो कार में जाये।

5. टू व्हीलर में किसी साथ की लड़की के साथ जाये।

6. घर से वोलेट में मिर्ची का पाएडर रखे तो बेहतर। उसे बलात्कारी की आंखो में झोंका जा सकता है।

7. रात को सेकण्ड शो न जाये तो बेहतर सम्भव हो तो समूह में बाहर निकले। (जब पुरूष समहों में रहते है जो लड़कियाँ क्यों नहीं ?)

8. बालों को खुला न रखें।

9. पुरूष मित्रो को लाभ का मौका न दें।

10. सार्वजनिक भीड़ भाड़ वाले मार्ग को चुने।

11. किसी बस में यदि अकेले चढ़ गई हो तो उतर कर अपने परिचित को फोन कर दें।

12. घर से बाहर जाते समय सहेलियों (यदि होस्टलर हो) या अभिभावको को बता कर जायें।

13. फास्ट फोन का इस्तेमाल करें।

14. सहासता नम्बरः, यदि पुलिस सहायता नम्बर पास में रखें और तत्काल फोन कर दें। यदि घिर जायें तो

15. घेरे से बाहर रहने का प्रयत्न करें।

16. प्रतिरोध बलात्कारियों को जानवर बना देता है फिर भी यथा सम्भव घेरे से बाहर निकल कर सार्वजनिक स्थल पर की ओर भागे।

17. चीखने से बलात्कारी डर भी सकते है मंुह दबाने पर उन्हें काट लिया जाये।

19. यदि एक बलात्कारी को ओवर पाकर किया जा सकता है तो करें

20. पुरूषों के अण्डकोष बहुत ही नाजुक हिस्सा है। उस पर घुटनों की ठोकर लगायें या बलात्कार की दशा में एक दम मुट्ठी में लेकर मसल दें वह बेहाशे हो जायेगा।

21. बलात्कारी, बलात्कार करने के बाद जान से मारने का प्रयत्न करते है जिनसे कोई गवाह ने रहे या उन्हें पहचाना न सके ऐसा न होने दें चाहे गिडगिड़ाना ही क्यों न पड़े।

आउट डोर बलात्कार

ऐसे बलात्कारों में लड़की को फुसला कर घर से बाहर लाया जाता है फिर उसे अन्यंत्र कैद कर उससे कई दिन तक बलात्कार किया जाता है। यह दुष्कृत्य या तो

लड़की को शादी का प्रलोभन देकर किया जाता है या कोई रिश्तेदार उसे फुसला कर बाहर ले जाता है। यह भी सामूहिक बलात्कार हो सकता है। कभी-कभी लड़की की सहेली भी उसे फुसला कर बाहर ले जाती है। यदि लड़की सड़क पर जा रही है तो कार या टेम्पों में भी उसका अपहरण कर लिया जाता है। कभी-कभी उसे किसी खण्डहर, जंगल में ले जाकर भी बलात्कार करके छोड़ दिया जाता है।

कारण:-

1. यदि लड़की के पुरूष मित्र हो तो वे ऐसा कर सकते है।
2. अच्छी संगत न हो।
3. लड़की का अत्यधिक खुला व्यवहार

रोकथाम

किसी पुरूष मित्र को बेवहज लाभ न लेने दें। उस के साथ किसी निर्जन स्थान में न जायें। इसी तरह किसी सहेली के साथ भी निर्जन स्थान में न जावें। मित्रता उन से करें जिनका चरित्र अच्छा हो। सेलर सा डिस्कोथीक में जाने से इन घटनाओं की आवृति हो सकती है।

यदि अपहरण हो रहा तो सड़क चलते लोगो का ध्यानाकर्षण करें। "मोबाइल" हमेशा चार्ज रखें और उसमें पर्याप्त बेलेन्स हो ऐसे मोबाइल रखें जो आपकी लोकेशन बतला सके।

कैद हो जाने पर भागने के मौके लगातार देखते रहें।

बलात्कार का महिला पर मानसिक परिणाम और उनका निदान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बलात्कार से महिला के ऊपर अपूर्णीय शरीरिक और मानसिक आघात पहुँचती है। मानसिक परिवर्तनों को साम्य अवस्था में ले लाने के लिये काफी मानसिक प्रशिक्षण की आवश्यकता रहती है। वह हर पुरूष से डरने लगती है और कामोबेश नफरत करने लगती है। शादी होने पर वह सामान्य तरीके से शारीरिक सम्पर्क नहीं बना सकता। हो सकता है कि पति के साथ शारीरिक सम्पर्क करते समय उसे बलात्कार की याद आ जाये। हो सकता है कि वह शारीरिक सम्पर्क के समय पति को हटा दे।

बलात्कार के बाद न्यायालय की एक लम्बी और शर्मनाक प्रक्रिया चलती है। आवश्यक है कि कानून में बदलाव लाकर कानूनी प्रक्रिया को छोटा कर बलात्कारी को कड़े से कड़ा दण्ड दिया जाये। न्यायालय को महिला के शारीरिक आघात के साथ साथ मानसिक आघात का भी ध्यान रखना चाहिए।

लड़की जिसके साथ बलात्कार हुआ है समाज में बदनाम हो जाती हैं। एक सामाजिक बदलाव के बाद भी लड़की को बलात्कारी की पुलिस में रिपोर्ट करने से नहीं डरना चाहिये, किसी भी परिस्थिति में नहीं उसका उद्देश्य अब बलात्कारी को कड़ा दण्ड दिलाना होना चाहिये। यदि वह निचले कोर्ट में हार जाती है तो उसे ऊपर के कोर्ट में जाना चाहिए। यदि पुलिस वाले या समाज वाले उसका मजाक उड़ाते है तब तो उसका निश्चय इन गन्दे मानसिकता वाले पुरूषो के कारण और भी दृढ़ हो जाना चाहिये। यदि पुलिस वाले रिपोर्ट लिखने से मना कर रहे हों तो उसे सीधे पुलिस अधीक्षक से मिलना चाहिये। पुलिस अधीक्षक को दिये गये अपराध का रजिस्टर्ड पत्र द्वारा दिया गया विवरण भी एफ.आई.आर माना जाता हैे।

यदि लड़की को लगता है कि बलात्कार के पश्चात कोई उससे शादी नहीं करेगा तो नहीं सही। आजकल कितनी लड़कियां बगैर शादी के रह रही है। उसे कोशिश करनी चाहिये कि वह स्वयं के पैरो पर खड़ी हो जाये।

ऐसे समय में मां बाप का दायित्व हो जाता है कि लड़की के साथ सहानुभूमि पूर्वक ब्यौहर करें और अपराधी को सजा दिलाने के लिये उसकी सहायता करे। ऐसे मौके पर लड़की को मानसिक सम्बल की आवश्यकता रहती है। यदि आवश्यक हो तो मानसिक चिकित्यक से सहायता लेने में झिझके नहीं। ल्रड़की की मानसिक दृढ़ता उसके वर्तमान एवं भावी जीवन के लिये आवश्यक है। यदि डिप्रेशन हो जाता है जब भी घर वालो का धैर्य और मानसिक चिकित्सक की सलाह आवश्यक है।

यदि यह जानते हुए भी कि लड़की के साथ बलात्कार हुआ है कोई लड़का उससे शादी के लिये राजी होता है तो उसे देख परख लिया जाये। उससे आश्वासन लिया जाये कि वह भी बलात्कारियों को दण्ड दिलाने में लड़की की सहायता करेगा। शादी के बाद भी मां बाप को लड़की का सम्बल बने रहना चाहिए।

यदि कोई रिश्तेदार यथा भाई, चाचा, मामा या किसी और ने बलात्कार किया हो तो उसकी सामाजिक भत्र्सना और लगातार सामाजिक बहिष्कार आवश्यक है। केवल उसके माफी मांगने से काम नहीं चलेगा उसने तो अपेक्षाकृत बड़ा पाप किया है।

बलात्कार के महिला पर शारीरिक परिणाम

बलात्कार के महिला पर मुख्य रूप से दो तरह के परिणाम हो सकते है

(1) गर्भधारण (2) यौन रोग

गर्भधारण

गर्भधारण यदि बलात्कार के पश्चात होता है तब वही पुरूष रिश्तेदार जो अपराधी है या तो गर्भपात पर जोर देता है या तरह-तरह के अपराध लगा कर लड़की को बदनाम करने का प्रयत्न करता है। उधर जान जाने के डर से लड़की गर्भपात के लिये मना कर देती है। वह अत्यधिक डर जाती है। बदनामी के डर से लड़की के मां बाप पहले लड़की कि बेरहमी से पिटाई करते है फिर स्वयं ही दादी के नुस्खे से गर्भपात का प्रयत्न करते है। या फिर अप्रशिक्षित दाइयो से गर्भपात करा कर लड़की की जान जोखिम में डाल देते है, जो कि सम्भवतः वे चाहते भी हैं फिर मगरमच्छी आँसू बहा कर चुप हो जाते है पर अपराधी से रिश्ता नहीं तोड़ सकते।

लक्षण - गर्भधारण के लक्षण लड़की की मां भी जानती है। प्रथम तीन माह में उल्टी होना, भूख कम लगना चेहरे पर तितली के आकार का गहरा धब्बा, बार बार पेशाब लगना, भूख कम लगना आदि है। स्तन बढ़ सकते है। “एरीगोला” का रंग गहरा हो जाता है।

सरबिक्स नीले से रंग की हो जाती है। गर्भाशय उदर के निचले भाग तक आ सकता है।

जाँचे- पेशाब की जाँच में गर्भधारण की जाँच धनात्मक हो जाती है।

क्या करें- यदि लड़की इच्छा से बच्चे को जन्म देना चाहती है जो मां बाप को उस रिश्तेदार के विरूद्ध या वैसे भी रिपोर्ट लिखा कर सजा दिलवाना चाहिये और लड़की को नैतिक सम्बल देना चाहिये। नहीं तो लड़की की इच्छानुसार चिकित्सकीय गर्भपात करवा देना चाहिए।

यौन जनित बीमारियाँ

यौन जनित बीमारियों की एक लम्बी लिस्ट है इनमें कुछ निम्नानुसार है

वायरल

(1) हरपीज सिम्प्रेक्स

(2) एडस

(3) लिरफी ग्रेनुलोमा इन्ग्वाइनेल

(4) पेपेलियो वायरस
(5) हिपेटाइटिस बी
(6) साइटो मेगेलो वाइरस
(7) मालस्कम कन्टेजिओसम

बेक्टीरियल यौन जनित रोग

(1) गोनोरिया
(2) क्लेमाइडिया ट्रेकोमेटिस
(3) सिफिलिस
(4) सेन्काइड
(5) ग्रेनुलोमा इन्ग्वाइनेल

फन्गल

टीनिया प्यूबिस

परजीवी

(1) ट्राइकोमोना बेजाइनेलिस (2) जुये

अष्टावक्र गीता दोहानुवाद की समीक्षा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

श्रीमद भागवत गीता के अलावा भी कुछ कम प्रचलित गीतायें है जैसे उद्धव गीता, भीष्म गीता, अष्टावक्र गीता आदि। गीता का मतलब गाया जा सकने वाला काव्य है।

अष्टावक्र गीता उन्हीं में से एक है। ये उपदेश महर्षि अष्टावक्र, ऋषि कहोड़ और सुजाता के पुत्र थे।" कहोड़ ऋषि महर्षि उद्धालक के आश्रम में शिक्षक थे और सुजाता महिर्ष उद्धालक की सुपुत्री थी। जब "महर्षि" अष्टावक्र गर्भ में थे तब उन्होने कहोड़ ऋषि के शिक्षण में कुछ गलतियाँ निकाली। इस पर कहोड़ ऋषि के अंह को चोट लग गई। उन्होने अपने ही गर्भस्थ शिशु को आठ स्थानों से टेड़े होने का श्राप दे डाला। अतः वे आठ स्थानों से टेड़े हो गये और उन्हें अष्टावक्र कहा जाने लगा।

एक समय विदेह जनक ने स्वर्णश्रंग जड़ित गायें, जो उन्हें उतनें समय में ही आत्मज्ञान दे सके जितने समय में एक घोड़े की एक टांग में नाल लगाई जाती है दी जायेगी अन्यथा उन्हें पानी में डुबो दिया जायेगा।

कहोड़ उस प्रतियोगिता में हार गये तो वरूण पुत्र वंश पे उन्हें कैद कर लिया। जन्म के पश्चात महर्षि अष्टावक्र ने माता सुजाता से पूछा कि उनके पिता कहाँ है तो उन्होने बतलाया कि कहोड़ विदेह जनक की कैद में है। तब अष्टावक्र राजा जनक के दरबार में पहुँचे और उन्होने जनक को आत्म ज्ञान उनके द्वारा घोषित समय में प्रदान किया। यह ज्ञान ही अष्टावक्र गीता है।

डा. चैरसिया ने उन श्लोकों का दोहानुवाद किया है। दोहानुवाद भाव प्रवण है। ऐसा कम ही हो पाता है कि कोई मूल काव्य का वैसा का वैसा काव्यानुवाद कर सके पर डा. चैरसिया ने वैसा का वैसा दोहानुवाद कर यह सिद्ध कर दिया कि उनकी हिन्दी में पकड़ उत्तम है हालांकि डा. नन्दकिशोर चैरसिया ई.एन.टी. में एम.एस. है।

वैसे भी श्रीमद भागवत गीता के अलावा अन्य गीतायें सरलता से उपलब्ध नहीं हैं। अतः उसका दोहानुवाद प्रस्तुति प्रशंसा के योग्य है।

यह पुस्तक न्यू पवार प्रिन्टर्स से मुद्रित एवं विश्व गीता प्रतिष्ठानम उज्जैन की जिला शाखा छिन्दवाड़ा से प्रकाशित है। पुस्तक का मूल्य मात्र रू. 100 है जो कि सर्वथा उचित है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

बलात्कार के महिला पर शरीरिक परिणाम और उसका निदान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

महिला पर मुख्य रूप से दो परिणाम हो सकते है

(1) गर्भधारण (2) यौन रोग

गर्भधारण

गर्भधारण यदि बलात्कार के पश्चात होता है तब वही पुरूष रिश्तेदार जो अपराधी है या तो गर्भपात पर जोर देता है या तरह-तरह के अपराध लगा कर लड़की को बदनाम करने का प्रयत्न करता है।

उधर जान जाने के डर से लड़की गर्भपाज के लिये माना कर देती है ? वह अत्याधिक डर जाती है। बदनामी के डर से लड़की के मां बाप, पहले तो लड़की की बेरहमी से पिटाई करते है। फिर स्वयं ही दादी के नुस्खे से गर्भपात का प्रयत्न करते है या फिर अप्रशिक्षित दाइयों से गर्भपात करा कर लड़की की जान जोखिम में डाल देते है। लड़की की यदि मृत्यु हो जाती है, जो कि सम्भवतः वे चाहते भी है तो मगरमच्छी आँसू बहा कर चुप हो जाते हैं। पर अपराधी से रिश्ता नहीं तोड़ सकते।

लक्षण:- गर्भधारण के लक्षण लड़की की मां भी जानती है प्रथम तीन माह में उल्टी होना, भूख कम लगना, चेहरे पर तितली के आकार का गहरा धब्बा होना, बार-बार पेशाब लगना, भूख कम लगना आदि है। स्तन बड़ सकते है, "एरीगोला" का रंग गहरा हो जाता है। "सरविक्स नीले" से रंग की हो जाती है। गर्भाशय उदर के निचले भाग तक आ सकता है।

जाँचे: पेशाब की जाँच गर्भधारण में जो धनात्मक हो जाती है। यह एक सामान्य एवं सरल जाँच है।

क्या करें: यदि लड़की इच्छा से बच्चे को जन्म देना चाहती है तो माँ बाप को उस रिश्तेदार के विरूद्ध या वैसे भी रिपोर्ट लिखा कर सजा दिलवाना चाहिये और लड़की को नैतिक सम्बल देना चाहिये। नहीं तो लड़की की इच्छानुसार चिकित्सीय गर्भपात करवा देना चाहिये।

यौन जनित बीमारियाँ

यौन जनित बीमारियों की एक लम्बी लिस्ट है इनमें कुछ निम्नानुसार है-

वायरल

(1) हरपीज सिम्पलेक्स

(2) एड्स

(3) लिरफी ग्रेनुलोमा इनर््ग्वाइनेल

(4) पेपीलोमा वायरस

(5) हिपेटाइटिस बी

(6) साइटोमेगेलोवायरस

(7) मार्लस्कम कन्टेजिओसम

बेक्टीरियल यौन जनित रोग

(1) गोनोरिया

(2) क्लेमाइडिया ट्रेकोमेटिस
(3) सिफिलिस
(4) सेन्फ्राइड
(5) ग्रेनुलोमा इन्ग्वाइनेल
फन्गल
टीनिया - प्यूबिस
परजीवी
(1) ट्राइकोझेना बेजाइनेलिस
(2) जुये

यौन जनित रोगो में यह बिन्दु ध्यान देने योग्य है कि महिलाओं में चिन्हन शीघ्र नहीं दिखते क्योंकि उनके जननांग अन्दर होते है। पर वे अधिक प्रतिशत में प्रभावित होती है यौन जनित रोगो का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है-

यौन जनित हरपीज सिम्प्लेक्स

यह एक वायरल संक्रमण है जिसमें जननागों में दर्दनाक फफोल उठ जाते है। जाँघ की गठाने बढ़ जाती है। बुखार रहता है। 50-90 प्रतिशत महिलाओं में योनि में छाले हो जाते हैं । दर्द के साथ योनि में स्त्राव होता है पेशाब में जलन होती है।

एड्स

यह बीमारी एच.आई.वी. बन, एवं टू नामक वायरस से होती है। अमेरिका में इस बीमारी से चार लाख बीस हजार व्यक्ति सन् दो हजार तक मारे जा चुके है। यह 25 वर्ष से 44 वर्ष की उम्र के व्यक्तियों में ज्यादा होती है।

इस बीमारी के फैलने के चार स्त्रोत है

अनस्टराइल

(1) यौन सम्पर्क (2) अनस्टेराइल इंजेक्शन (3) असुरक्षित रक्त दान (4) माँ से शिशु में जिस व्यक्ति के एक से अधिक यौन सहयोगी रहते है उपनें यह बीमारी अधिक फैलती है। अतः यह ज्ञात नहीं होता है कि अनजान पुरूष (महिला) इसे बीमारी से ग्रस्त है या नहीं। यह बीमारी कैदियों, ट्रक ड्राइवरो सैनिको और “होस्टलरस” में अधिक पाई जाती है।

इस बीमारी में प्रथम स्थिति में तेज बुखार गठानों का बढ़ना, गले में दर्द, जोड़ो एवं मांस पेशियों मे दर्द एवं चकत्ते उठ सकते है। संक्रमण के तीन माह बाद रक्त जांच से इसे जाना जा सकता है। संक्रमण से तीन माह का समय विडो पिरीयड कहलाता हैं

लगभग 5 वर्ष से बीस वर्ष बाद इसके लक्षण दिखते है यह स्वतंत्र रूप से बीमारी नहीं है पर प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर बीमारियों का एक समूह है इस बीमारी में मंुह में सफेद छाले हरपीज सिम्पलेक्स, न्यूमोनिया, सारकोमाज (केन्सर) हो सकते है।

इस बीमारी में क्षय रोग बढ़ जाता है। इस बीमारी में ठीक न होने दस्त, विम्मरण, मेनिन्जाइटिस ठीक न होने वाली खाँसी गहाने बढ़ना भी हो सकता है। यह बीमारी जान लेवा है। हाँ इसके लक्षण दबायें जा सकते है। अभी-अभी दो व्यक्तियों को अमेरिका में रोग मुक्त करने में सफलता मिली है। (दै.भा) (दै. भा)

इस तरह बलात्कार करने वाले, महिला की गलती न होने पर भी जान लेवा बीमारियां दे सकते है। भारत में सन् 2011 में यह 57 तक कम हो गई है। (दैनिक भास्कर 5.3.13)

लम्फो ग्रेनलोमा इन्ग्वाइनेल

इस बीमारी में जाँच की जड़ो की गढ़ाने बढ़ जाती है फिर फूट कर छाले बन जाते है।

पेपीलोमा वायरस

इस बीमारी में जननांगो और गुदा के आस पास कई तरह के मसे हो जाते है जो कैंसर में भी बदल जाते है।

हिपेटाइटिस बी

बुखार, उल्टी आना, पेट के ऊपरी भाग में दर्द और पीलिया इस के मुख्य लक्षण है। यह बीमारी असुरक्षित इन्जेक्शन एवं असुरक्षित रक्त दान से भी फैलती है।

गोनोरिया

यह बीमारी नाइजीरिया, गोनोकाकाई नामक बैक्टीरिया से होती है। इस बीमारी में पीप युक्त योनि स्त्राव होता है। हर योन जनित संक्रमण की तरह बुखार जांघो की गढ़ाने बढ़ सकती है पेशाब करने में जलन होती है। पुरूषो की पेशाब में पीप आता है औश्र पेशाब रूक सकती है।

गले में दर्द आंखो का आना (कन्जाटिवाइटिर) जोड़ो में सूजन एवं दर्द हो सकते है। महिलाओं में फेलोपियन ट्यूबूरस के अवरूद्ध हो जाने पर पेट में दर्द एवं इन्फर्टिलिटी हो जाती है।

क्लेमाइडिया ट्रेकोमेटिस

"नान गोनो काकल" या गोनोरिया के पश्चात यह बीमारी होती है। महिलाओं में आंखो का आना पेशाब में जलन एवं जोड़ो में सूजन हो सकती है।

सिफिलिस

यौन संसर्ग के 10 दिन से 90 दिन में शिश्न या योनि में दर्द रहित छाला होता है जो ठीक हो जाता है पर इस छाले के साथ ही बीमारी पूरे शरीर में फैल चुकी होती है।

द्वितीय अवस्था में गठाने, शरीर के दोनो तरफ बगैर खुजली के चकते हो जाते है। जहाँ झिल्ली और त्वचा मिलती है (मंुह, योनि, गुदा) वहां गीले "कान्डाइलोमेटा" हो जाते है।

तृतीय अवस्था में मेनिन्जाइटिस, पेरेलिसिस टेक्यू, (खडे होने में मुश्किल, दिमाग कमजोर होना स्पर्शादि कम होना जोड़ो, का विकृत होना एन्यूरिज्म (बड़ी धमनी का कुछ भागो में फूलना), अस्थियों मंुह, त्वचा भागो में फूलना), अस्थियों मंुह त्वचा इत्यादि में गठाने (गमा) हो जाते है।

सेन्ठायड

जननांगो में एक दर्दनाक छाला होता है और जांघ की जड़ो में सूजन हो जाती है।

ग्रेनुलोमा इन्युवायनेल

एक मांसाकर का छाला जो रक्त स्त्राव करता है हो जाता है जांघो की जड़ में त्वचा की सूजन हो जाती है।

फंगल इन्फेक्शन

यह खुजली का रोग पेट के निचले भाग में कई गोलाई लिये हो जाता है। बाल झड़ जाते है।

परजीवी

(1) ट्राइकोमोनास वेजाइनेलिस

(2) जुये

यह ध्यान रखना चाहिये कि यौन जनित संक्रमण दवाइयों से ठीक किये जा सकते है।

समस्या की गम्भीरता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

महिलायें लगभग हर दिन वहशी पुरूष दरिन्दो का शिकार होती है। हर दिन हरेक समाचार पत्र पुरूषो की इस पाश्विकता में रंगे रहते है। दिसम्बर 2012 में दामिनी कहें या निर्भया कहे या बाजी जिस तरह से पुरूषो की इस बर्बरता की शिकार हुई है वह रोंगेटे खड़े कर देने वाली घटना थी।

नवीत्थान लेख सेवा (30 जनवकरी सन् 2013) की माने तो अकेली दिल्ली में सन् 2011 में 580 महिलाओं के साथ घिनोनी हरकत हुई। मुम्बई में 239 चेन्नई में 76 कोलकाता में 47 और बेंगलुरू में 96 महिलायें पुरूष की हवस का शिकार बनी। दिल्ली

और हरियाणा में तो हर दिन कोई न कोई महिलाओं के प्रति वीभत्स घटना हो ही जाती है (नवोत्थान लेख सेवा)

एक दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर भारत में ये घृणास्पद घटनायें अधिक होती है या वहां निर्मत घटनायें अधिक होती है जहाँ संस्कृति के ऊपर हमले अधिक होते है। महिलाओं पर ऐसे यौन संबंधी हमलें महिला शिशु को लेकर वृद्ध महिलाओ तक पर होते रहते है।

फरवरी के अंक "सागर" 2013 में "सावधान आ रही है" मासूम बलत्कारियों की टोलियांे नामक शीर्षक से बलात्कारी के परिप्रेक्ष्य में कानून की मासूम परिभाषा का मजाक उड़ाया गया हैं। लिखा है "कि दिल्ली गैंग रेप के एक दोषी को नाबालिक के सर्टिफिकेट के हिसाब से इस आरोपी कि उम्र 17.5 साल है। किसी भी नाबालिक अपराधी को केवल और केवल 3 वर्ष की सजा हो सकती है। सजा पूरी होने के पहले अगर अपराधी 18 वर्ष का हो जाता है तो सजा खत्म हो जाती है। इसका मतलब हुआ कि ये अपराधी जून के बाद फिर किसी का रेप करने के लिये खुला छोड़ दिया जायेगा क्योंकि ये असम्भव है कि इसकी ओवर हिलिंग करके इसे पशु से इंसान बना दिया जायेगा। इस बलात्कारी ने लड़की के गुप्तांग में लोहे की छड़ डाली थी फिर उसकी आंते इस छड़ से बाहर निकाली। इस घिनोने काम से बेहोश हो चुकी लड़की के साथ फिर बलात्कार किया। जूते से अंगो को मसला। इसके बाद फिर उस लड़की को ले मर साली कहा। फिर उस के साथियों के साथ उस लड़की के कपड़े उतार कर उसके मित्र के साथ सड़क पर फेंका। क्या आपको लगता है कि ये सब काम अगर एक बच्चा भी करें तो वे माफी के काबिल है। एक तरह तो हम बाल विवाह को अपराध मानते है तो दूसरी तरफ इस अपराधी को नाबालिक मानते है।"

चाणक्य ने अपराध करने वाला, अपराध करवाने वाला और अपराध की सहमति देने वाला इन तीनों को अपराध के बराबर का भागीदार माना है। देहली की उस वीभत्स घटना में उस लड़की की हत्या में इस तरह सभी बलात्कारी हत्या के दोषी है। उन सभी पर धारा 302 लगाई जानी चाहिये। वह हत्या न तो बलात्कारियों नें आत्मरक्षा के लिये की थी न ही लालच में ही की थी, न वे विक्षिप्त थें। और वे उस हत्या का परिणाम भी जानते थे। अतः भले ही कहा जा रहा हो कि हत्या का दोषी वह नाबालिक था पर सारे बलात्कारी उस भयंकर अपराध के बराबर से दोषी थे। यह भी सम्भावना है कि अपराध किसी बालिग ने किया हो और सजा की गम्भीरता कम करने के लिये उस तथाकथित नाबालिक से यह स्वीकार करवा लिया गया हो
कि पीड़िता के गुप्तांगो में उसने "राड" घुसाई थी।

"समाज प्रवाह" मासिक ने बलात्कारी और फाँसी नामक शीर्षक से 15 फरवरी 2013 को इस समस्या का उत्तरदायी सामाजिक प्रदूषण को माना है और मुख्यतः सिंधी/पंजाबियों द्वारा निर्मित फिल्मों को माना गया है। इसी पत्र में मुजफ्फर हुसैन द्वारा बलात्कार संबंधी भयावह आंकड़ो को प्रस्तुत किया गया है। उस लेख के अनुसार वर्ष 2011 में भारत में बलात्कार के सात हजार एक सौ बाहर प्रकरण पंजीबद्ध हुये थे मगर ये आंकड़े समुद्र में बहते बर्फ की चट्टान की दिखती हुई चोटी की भांति अत्यंत छोटे है।

महिलाओं पर पुरूषो के अत्याचार प्रागऐतिहासिक काल से होते आ रहे है। पुत्रियों को तथा कथित ब्रहन ज्ञान तक के बदले पुरूषो को दिया जाता रहा है ! दरअसल महिलायें या तो विनिमय की वस्तु समझी जाती रहीं है या भोग की। उन्हें मानव कभी नहीं समझा गया। वे मनुष्यों पर एक बोझ ही समझी जाती रही है। राजाओं ने उनके विजय पर खजाने के साथ महिलाओं को प्राप्त किया है। कई बार विजित ने स्वयं की जान बचाने के लिये स्वयं की पुत्रियों, बहनों यहा तक की पत्नियों तक को विजेता को सौंपा है। पत्नियां ही सती होती रही कभी कोई पुरूष सता नहीं हुआ।

महिलाओं को भ्रूण के समय से ही मारा जाता रहा है। जिन्दगी के हर पड़ाव पर उन पर पुरूषो द्वारा अत्याचार हुये है। यहाँ तक कि भिखारी तक सम्पन्न और सम्भ्रात महिलाओं को "माल" समझते हैं। गालियाँ भी माँ और बहिन को इंगित करके दी जाती है पिता या भाई को इंगित करके नहीं।

पुत्री को शिक्षा न दिलवाना उन पर अत्याचार का ही रूप है। उन्हें पुत्र की अपेक्षा कम पौष्टिक खाना देना एक उन्हें धीमी मौत देने जैसा ही है। निम्न माध्यम वर्गीय परिवार में उन्हें अच्छे वस्त्र नसीब से ही मिलते है। शादी के समय वर पक्ष को पैसा देकर लड़कियों को टाला जाता है। उन्हें दहेज तो दे दिया जाता है पर बाप उन्हें स्थायी संपति में भागीदार नही बनाता। उन पर ये सब अत्याचार बलात्कार की श्रेणी में ही रखे जाने चाहिए।

सड़को पर उन्हें चलने नहीं दिया जाता। उन पर फब्तियां कसी जाती हैं। यह घाटंय क्रिया इसी स्तर पर रोक देनी चाहिये। मगर उन्हें रोका जाता है तो उन गुण्डो के चाकू निकल पड़ते है। दिल्ली की सराय काले खां की घटना लोग भूले न होंगे जब एक महिला को अगुआ किया जा रहा था और उसके विरोध करने पर उसे गोली मार दी गई।

समस्या की जड़ में हमारे वे संस्कार है जिनके कारण महिला को गुलाम समझा जाता है यहां तक कि लड़कियों की खरीद फरोख्य होती है जैसे पैरो के जूते खरीदे जाते है। फिर पालतू बैलो की तरह उन्हें वैश्या बना दिया जाता है। उन्हें शरीर बेच कर

कमाई का एक बड़ा हिस्सा एक संगठित समूह को देना पड़ता है। यह कितने शर्म की बात है कि उन्हें उनका शरीर बेचना पड़ता है। यह भी संगठित पुरूष समूह का विवश महिलाओं पर सामूहिक बलात्कार ही है। मासूम बच्चियाॅ बेची जाती है युवतियां बेची जाती है और अन्त में अनुपयोगी होने पर उन्हें तीर्थो पर भीख मांगने के लिये छोड़ दिया जाता है।

कोई कानून बलात्कार की घटनाओं को नहीं रोक सकता। दहेज प्रथा को रोकने के लिये कानून है पर दहेज लेना या दहेज हत्यायें रूकी क्या ? सब को मालूम है कि हत्या करने पर फांसी होती है पर हत्या करना रूका क्या ? क्या चोरी जुआं, सट्टा रूक गये ?

महिलाओं के बारे में क्या अनपढ़ और क्या प्रबुद्ध सभी घटिया राय रखते है। देहली वाली घटना के बाद, संत आशाराम, सर संघ चालक भागवत महामहिम प्रवण मुखर्जी के चिरंजीव जो कि लोकसभा के सदस्य है एवं मध्य प्रदेश के मंत्री विजय वर्गीय एवं ऐसे कई आदरणीयों ने उसी को दोषी टहराया है जिस अबला पर बलात्कार हुआ है। संतो से लेकर मंत्रियों तक के विचार महिलाओं के बारे में घटिया दिखे।

संयुक्त परिवार में महिलाओं की दशा और शर्मनाक होती है। एक ही कमरे में पिता संभोग कर रहा होता है और भाई बहिन एक ही बिस्तर पर सो रहे होते है। लड़कियों के साथ भाई, मामा, फूफा, सौतेले भाई यहां तक कि बाप के द्वारा बलात्कार के प्रकरण प्रकाशित हुये है। उन्हें डरा कर चुप रहने को विवश कर दिया जाता है। विधवाओं के हाल और भी ज्यादा खराब रहते है। उनके जेठ, देवर या कोई और रिश्तेदारों के नीचे उन्हें सोना पड़ता है और गर्भवती हो गई तो कुलटा कर हर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाता है।

इस समस्या के समाधान के लिये पुरूषो की मानसिकता बदलनी चाहिये। महिलाओं को पुरूषो के बराबर समझना चाहिये। स्थायी सम्पति में उन्हें बराबर का हिस्सा मिलना चाहिये। बदचलन पुरूषो का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिये। दण्ड कठोर होना चाहिए और सजा सार्वजनिक दी जानी चाहिये जैसे अरब देशो में चैराहो पर खड़े करके उन्हें आमृत्यु पत्थर या हन्टर मारे जाते है। प्रकरणों का निराकरण त्वरित होना चाहिये। देहली में फास्ट ट्रेक कोर्ट का गठन एक अच्छी पहल है पर बलात्कार की राजधानी में हालात किंचित भी नहीं सुधरे है।

अधिकतर बलात्कार कम शिक्षित लोगो ने किये है जहां शिक्षा का स्तर अधिक है वहां बलात्कार के प्रकरण कम हुये है जैसे चेन्नई, बेंगलुरू इत्यादि। अतः शिक्षा का स्तर सुधारने पर बलात्कार के प्रकरणों और महिलाओं पर अत्याचार के प्रकरणों में कमी की आशा कर सकते है।

वह कंकाल किस का था ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सल्लो बाई को रमेश पुजारी पत्नि कहता था, और उसके पड़ोसी सल्लो को रमेश पुजारी की रखैल कहते थे। सल्लो चंूकि बांछड़ा जाति की थी, अतः वह रमेश की पत्नि तो कतई नहीं थी। बांछड़ा जाति की लड़कियां किसी से शादी नहीं करती। वे नाच गाना करके घर को पालती है और मर्द नशे में धुत पड़े रहते है। वे शराब पीने के अलावा और कोई काम नहीं करते।

चूँकि सल्लो बाई बांछड़ा जाति की औरत थी अतः वह एक मर्द से संतुष्ट नहीं रहती थी। उससे कई मर्द मिलने आते थे जो रमेश पुजारी को पसंद नहीं था। रमेश पुजारी रेल्वे लाइन के किनारे देवी जी के एक मंदिर में पूजा अर्चना करता था। खुरई तहसील के उस मंदिर की जमीन और उसका निवास उसकी खुद की जमीन पर न था। वह किसी जैन की जमीन थी। मगर धार्मिक हठधर्मिता से तो भगवान भी डरते है। उस अतिक्रमण के आगे वह जैन भी चुप रहता था।

खुरई सागर जिले की एक समृद्ध तहसील है। वहां उत्तम नस्ल की गेहँू की एक प्रसिद्ध मंडी है। उसकी मंडी देखते ही बनती है। इधर कुछ दिनों से रमेश पुजारी के अनुसार सल्लो बाई उसके मायके छत्तीसगढ़ गई थी। गई होगी। मगर सल्लो बाई के

गायब होने के साथ ही कल्लू पागल हो गया था। वह कहता फिरता था कि सल्लो बाई को उसने नहीं मारा था।

कल्लू चलती ट्रेन पर चढ़ कर कोयला चुराता था। वह सोलह साल का एक सुदर्शन लड़का था। चलती ट्रेन के ऊपर चढ़ना भी किसी सर्कस के करतब से कम जोखिम भरा काम नहीं है। बल्कि अत्यंत खतरनाक काम है। वह चलती माल गाड़ी के कपलिंग पर उल्टा लटक जाता था। फिर ट्रेन के चलते घूम कर सीधा हो जाता था। उसके बाद ट्रेन की एक रैक पकड़ कर उचकर कर कोयले भरी रेक पर चढ़ता था। इसके बाद वह कोयले से भरे पत्थर नीचे फेंकता था। बहुत से पत्थर नीचे फेंकनेके बाद वह उसी क्रम से नीचे उतरता जैसे चढ़ता था। और पत्थर के कोयले रेल लाइन के किनारे बनी होटलो और बंगले वालों को बेच कर परिवार का जीवन यापन करता था। ये होटले और बंगले खुरई रेल्वे स्टेशन के पास ही बनें थे।

उसके पागल होने पर उसकी मां ने उसे झड़वाया, फबकाया मगर वह अच्छी नहीं हुआ। तब उसे किसी ने सलाह दी कि वह खुरई क्षेत्र के पुलिस उपअधीक्षक श्री पराशर के पास ले जाये । उसकी मां उसे पराशर जी के पास ले गई। पराशर जी आशा के विरूद्ध एक विनम्र एवं ईमानदार पुलिस अधिकारी हैं। वे उस समय उनके बंगले के सामने बैठे हुये थे। उन्होने कल्लू को पुचकार कर पूछा "क्या हुबा बेटे ? उसने वही रटा हुआ वाक्य कहा सल्लो बाई को मैनें नहीं मारा।

पराशर जी ने उन गर्मियों के दिनों में उस लड़के को फ्रिज से निकलवाकर ठण्डा शरबत पिलाया और पुचकार कर पूछा" अगर तुमने नहीं मारा तो सल्लो बाई को किसने मारा। कल्लू बोला मास्साब सल्लो बाई को रमेश पुजारी ने मारा था। मैनें तो बस उसे गढ़ाने के में मदद की थी। पराशर के कान खड़े हो गये। यहां तक कि उनके बंगले के कुत्ते के भी कान खड़े हो गये। रमेश पुजारी उनके बंगले के पास वाले मंदिर में ही पूजा करता था। वे भी देवी जी को कई बार प्रणाम कर चुके थे। अतः उन्हें झटका लगा कि क्यों इन दिनो रमेश कुछ ज्यादा ही विनम्र हो गया था और देवी जी का चबूतरा क्यों इन दिनो अपेक्षाकृत नया सा दिखता था ?

पराशर ने लड़के की पीठ थपथपा कर सांत्वना दी कि वे बेफिक्र रहे, उसका कुछ नहीं होगा। छोटे कस्बो में पुलिस ही सरकार होती है। लड़का खुश हो गया। पराशर ने लड़के से कहा कि वह रोज उनके साथ रहेगा। पराशर को यह अपेक्षा थी कि यह जानकर कि कल्लू ने पराशर को राज खोल दिया है रमेश पुजारी फरार हो सकता है। अतः उसे धर दबोचा। इसके बाद की घटनायें तेजी से घटने लगी।

पराशर ने आनन फानन एक प्रेस कान्फ्रेंस बुलवाई और कल्लू का स्टेटमेंट प्रकाशित करवा दिया जिससे कि देवी जी का चबूतरा उखाड़ने में उन्हें जनता के विरोध

का सामना न करना पड़े। जनता देवी के मंदिर के सामने इकट्ठा होने लगी। पुलिस और प्रशासन के विरोध में नारे लगाने लगी कि जैन के दबाव में आकर पुलिस ने झूठा प्रकरण बनाया है, कि मंदिर को तोड़ा जा सके और वह जमीन जैन को लौटाई जा सके।

इधर पराशर ने मंदिर पर पुलिस का पहरा बिठा दिया कि साक्ष्य मिटाये न जा सके। अब ऐसे आदमियों की खोज की जाने लगी जो मंदिर के गर्भगृह की खुदाई कर सके। हिन्दू इसलिये पीछे हट गये कि देवी जी का कहर उन पर न टूट पड़े और मुसलमान इसलिये पीछे हट गये कि (खु)दा (रा)म और (ई)शा की उस शांत नगरी में साम्प्रदायिक दंगे न हो जायें।

ऐसे समय में बेचारे सिपाहियो से ही काम लिया जाता है। वे ही सड़ी लाशे उठाने और सेम्पल फारेन्सिक लेब ले जाने का काम करते हैं। गांव का कोई आदमी सड़ी लाशे पोस्टमार्टम रूम तक ले लाने अपनी अपनी बैलगाड़ी नहीं देता। यहाँ तक कि बैल भी डर कर बिदकने लगते है। तब सिपाही उन लाशो को कंधो पर उठा कर पी.एम., रूम तक लाते है। डाक्टरों को तो खैर पोस्टमार्टम करना ही होता है।

मंदिर के बाहर काला झंडा लिये हुये पुलिस प्रशासन ने विरूद्ध हाय, हाय के नारे लग रह रहे थेै। उस समूह में सभी जाति के लोग थे। हिन्दू तो थे ही, कुछ मुसलमान भी थे और कुछ ईसाई भी थे। पराशर खुदाई करने वाले सिपाहियों को एवं पर्याप्त पुलिस दल को लेकर मंदिर पहंुच गये। खुदाई के पहले उन्होने पुलिस अधीक्षक एवं सामान्य प्रशासन विभाग से लिखित आदेश प्राप्त कर लिया था।

भीड़ उन्हें मंदिर में घुसने से रोकने लगी। तब पराशर को विवश होकर माइक से घोषणा करना पड़ी "देखो भाइयो मैं भी ब्राम्हण हँू । क्या आप लोग पसंद करेंगे कि आप उस मूर्ति की पूजा करें जिसको किसी ने नीचे लाश गढ़वा कर अपवित्र कर दिया हो। उस कस्बे के हिन्दू धर्म के अध्यक्ष ने कहा "और यदि देवी जी की मूर्ति के नीचे लाश नहीं निकली तो हम आपको मंदिर नहीं गिराने देंगे। आप मूर्ति का अभिषेक कर स्वयं प्रतिष्ठा करेंगे। रमेश पुजारी जो कि पुलिस कस्टडी में ही था भीड़ देख कर गरजा।

पुलिस उसको लाश की शिनाख्ती के लिये लाई थी। भीड़ देखकर वह गरजा। उसने सोचा कि पुलिस उसके आत्म विश्वास से डर जावेगी। पराशर, कोई और मौका होता तो उसे झापड़ मार देते इस बार अतिरिक्त विनम्रता से बोले "मंजूर है।" पहले आदर पूर्वक मूर्ति को हटा कर एक लकड़ी की चैकी पर रखा गया। फिर उस जगह को खोदना चालू किया गया। जहाँ मूर्ति की स्थापना की गई थी। सारे क्रिया कलाप की फोटोग्राफी की जा रही थी। सनाका खिंचा हुआ था।

कैमरा कभी खुदाई की जगह, कभी भीड़ तो कभी हवाइयाँ उड़ते पराशर के चेहरे को चित्रांकित कर रहा था जिन्होनें एक कोयला चोर लड़के के पागलपन पर देवी मंदिर जैसे पवित्र उवं महत्वपूर्ण स्थल की खुदाई का आदेश दे दिया था।

कुछ देर की खुदाई के बाद बड़े-बड़े चींटे नजर आने लगे। पाराशर कुछ आश्वस्त हुये। लाशो के गढ़ाने के स्थल पर काटने वाले लाल चींटे नजर आते है। अब उन्होने खुदाई करने वाले सिपाहियों से मोटे दस्ताने पहनने को कहा जिससे कि वे लाल चींटे उन्हें काट न सके। धीरे धीरे नीचे जाने पर कुछ लाल नायलोन की साड़ी के सिरे नजर आने लगे अब रमेश पुजारी के चेहरे की हवाइयां उड़ने लगी। वह भागने की कोशिश करने लगा पुलिस की गिरफ्त उस पर सख्त हो गई।

अब भीड़ के चेहरे की भी हवाइयां भी उड़ने लगी। दुर्गन्ध का एक झोंका खुदाई की जगह से आने लगा। सभी ने नाक पर रूमाल रख लिये। नीचे इल्लियों के गुच्छे नजर आने लगे। पाराशर के चेहरे की चिन्तायें खत्म हो गई। उन्होने अब एक कुर्सी मंगवाई, नाक पर रूमाल रख कर वे बैठ गये और खोदने वाले दल को शाबाशी देकर उन्हें मार्ग दर्शन देने लगे। अब भीड़ रमेश पुजारी को मारने के लिये उद्यत होने लगी। भीड़ में से आवाजें आने लगी "मारो साले कों।" अब पुलिस का दायित्व हो गया कि वह रमेश पुजारी को भीड़ के क्रोध से बचाये और खुदाई जारी रखे।

फिर कंकाल का एक हाथ दिखाई दिया। उसी का सहारा लेकर पुलिस ने धीरे-धीरे पूरा कंकाल निकाल लिया। कहीं-कहीं वह कुछ टूट भी गया था। उन टूटी हड्डिशें को भी एकत्रित किया गया। उस कंकाल ने एक ढीली ढाली लाल रंग की साड़ी पहन रखी थी। उसके गले में एक नीले रंग का स्कार्फ बंधा हुआ था। कंकाल में कोई त्वचा या अंदर के अंग नहीं बचे थे।

लाश मिलने के बाद पुलिस को उसका पोस्टमार्टम करवाना पड़ता है। उस कंकाल का पोस्टमार्टम करवाने के लिये शासकीय चिकित्सालय के चिकित्सक को वहीं बुलवा लिया गया। उस चिकित्सक ने कंकाल का ध्यान से निरीक्षण किया। उसके अनुसार वह कंकाल किसी महिला का ही था। इसके बाद मृत्यु का समय और कारण ज्ञात करन करने के लिये उसने वह कंकाल भोपाल मेडिकल कालेज की फोरेन्सिक प्रयोगशाला में ले जाने की सलाह दी।

कंकाल देख कर रमेश पुजारी टूट गया और उसने कबूल किया कि वह सल्लोबाई का ही कंकाल था। उसे सल्लोबाई का दूसरे मर्दो के साथ मिलना जुलना पसंद नहीं था पर वह मानती ही न थी अतः उसने कंकाल के गले में बंधे कपड़ो से उसका गला घोंट दिया। फिर उसने कल्लू को बुलवाया और उसे धमकी दी कि अगर उसने लाश गढ़ाने

में उसकी मदद नहीं की तो वह पुलिस में रिपोर्ट कर देगा कि कल्लू सरकारी कोयला चुराता था।

रमेश पुजारी कोई सचमुच का पुजारी न था। वह राज मिस्त्री था। बाद में जमीन के लालच में वह पुजारी बन गया था। न्यायालय में रमेश पुजारी सारे आरोपो से मुकर गया। वही पुरानी कहानी दुहराई गई कि पुलिस ने दबाव डाल कर उससे बयान लिये थे।

भोपाल मेडिकल कॉलेज से 10 दिन में ही रिपोर्ट आ गई वह लाश कम से कम 3 माह पुरानी थी और जो कपड़ा उसके गले में बंधा था उसी से उसका गला घोंटा गया था। क्योंकि उस कपड़े में कुछ चमड़ी के चिन्ह्न पाये गये थे।

पूर्ण कड़ियो को जोड़ने के बाद रमेश पुजारी पर हत्या करने और साक्ष्य को छुपाने के आरोप में प्रकरण को खुरई के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के कोर्ट में दाखिल कर दिया गया। प्रकरण लगभग 3 वर्ष चला पर माननीय न्यायाधीश ने संदेह का लाभ देते हुये रमेश पुजारी को बरी कर दिया। इसके बाद भी दो प्रश्न अनुत्तरित रह जाते है। (1) सल्लो बाई कहां गई ? और (2) वह कंकाल किस का था ?

माँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दरियादिली एक सीप की मोती में देखिए ।
मोती का रोना बच्ची जब रोती है देखिए ।।
एक खिलखिलाता फूल है बच्ची का खेलना ।
फूलो का सोना बच्ची जब सोती है देखिए।।
एक पेड़ सिसकते हुए तुमने नहीं देखा ।
लड़की की विदाई में मां रोती है देखिए ।।
ममता की चांदनी को अगर देखना चाहो।
बच्चों के कपड़े तब भी मां धोती है देखिए ।।
कुदरत जब बदहवास हो तो होती है कैसी
मेले में जब बच्चों की मां खोती है देखिए ।।
मोती को समुद्रों में कहां देखोगी जाकर।

शिशु मोती और सीप मां होती है देखिए।।

हीरे की कनी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हीरे की जो खिंची कनी।
फिर हम तुम में नहीे बनीं ।।
मैं जब तक महफिल में था,
उसकी भोंहे रही, तनी
कत्ल किसी को होना है
बैठी है वह बनी ठनी
किस्मत की बदली मुझ पर,
कभी नहीं, तो कभी धनी
धो-धो कर तारीख लिखी,
पर लोहू से रही सनी।।

सन्नाटा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिल्लाते हम आटे पर,
शासन है सन्नाटे पर।।
राजा और प्रजा श्व के,
सभी बराबर कांटे पर।।
दूर हुये रिश्ते नाते।
हुई तिजारत घाटे पर।।
पिट कर भाषण क्या देना ?
जूडो और कराटे पर।।
मौत हसीना आगे है।
रोक लगा फर्राटे पर ।।
लेकर साथ कभी गहने,
मत जा सैर सपाटे पर।।

बेहद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मंझधार खुश है तटों के कटाव पर बेहद।
मीनार खुश है मेरे घर पर छांव पर बेहद ।।
सपनो में एक गजल थी जब जागा तो खो गई।
दिन भर रहा मैं दर्द के खिंचाव पर बेहद ।।
लखते जिगर ने काट, जिगर को हटा दिया।
ये हो रहा है पैसे से लगाव पर बेहद ।।
उनका बदन और लफ्ज दिल की खिड़कियां नहीं,
होती है बहस उनके दिल के भाव पर बेहद ।।
है तलहटी में छेद कोई रोकता नहीं।
और चढ़ रही है भीड़ उसी नाव पर बेहद।।
तेरी है बंद आंख जूते वजनदार है,
हम टूट रहे है उसी दबाव पर बेहद।।
हल्ला है इतना घाव पर और घाव भी नहीं।
जाते हो तुम लगाये मल्हम घाव पर बेहद।।
आगे है खाई रखना कदम देख भाल कर,
नाराज क्यों होते हो इस सुझाव पर बेहद।।
तुम देखते ही देखते गगन पे चढ़ गये।
नीचे रहा मैं धरती से झुकाव पर बेहद ।।
दो भाइयो के बीच में दीवार उठ गई।
अफसोस बालिदैन को अलगाव पर बेहद।।
ठण्डी है राख नीचे क्या अंगार मिलेगी ?
वाजिब है गुस्सा आपका अलाव पर बेहद।।
शैतान रब की इबादत में आज लगा है
हैरान हँू मैं उसके इस बर्ताव पर बेहद ।।

मजलूम कैसे आ गये जुल्मो के सामने ?
अजरज है देख दोनो के टकराव पर बेहद।।
लूटा है हमें आपने उन पांच सालो में।
जो कर रहे हो खर्च इस चुनाव पर बेहद।।

सफर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तय किया सब सफर भागते भागते ।
देखे सपने सभी जागते जागते ।।
देखते रह गये बच्चे बाजार को।
और बड़े हो गये ताकते ताकते।।
जिंदगी क्या, कि जिन्दा दिली ही नहीं ।
फालतू मत बिता नापते नापते।।
जुल्म बस्ती के नेता जी करते नहीं।
पिट गये हम नहीं छापते छापते।।
जंगलो को उजाड़ा महल तो बने।
जंगली हो गये काटते काटते ।।

इज्जत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुछ मिलेगा नहीं कांपते कांपते ।
वक्त बीतेगा बस मांगते मांगते।।
एक मरा लाभ हानि पे रोते हुये ।
खुश रहा एक हल हांकते-हांकते।।
बात करते रहे गुटखा खाते रहे।
तय सफर को किया फांकते-फांकते।।
झूठी इज्जत में मीनार तन तो गई।
बीता जीवन उसे ढांकते ढांकते।।
भार होते हुये जिंदगी ढल गयी।
अब घिटसने लगे हांफते-हांफते।।

जंजीर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कैद परिन्दा शाखाओं पर नजर गढ़ाता रहता है।
उड़ने की हसरत में पिंजडे से टकराता रहता है।।
हसरत से पैदा होती है कई जंजीरे हसरत की।
रेशम का कीड़ा अपनी ही कब्र बनाता रहता है।।
जगह जगह जालो में मेरी कमजोरी के दाने रख ।
खुद की भूख मिटाने को वह मुझे फंसाता रहता है।ं
मैं खुद का ही मोहरा हँू मैं दोष खिलाड़ी को क्या दूँ ।
मैं बिसात मेरा पांसा मुझको पिटवाता रहता है।।
मैं ही शमा पतिंगा मैं ही कैसे जलता बरकाऊँ ।
कोई दोनो को जल जाने मुझे जलाता रहता है।।

हक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सामने फूलो भरे मैदान हैं।
पीठ पर मरते हुये इन्सान हैं।।
नींद में उड़ती हुई थी तितलियां ।
दिन में हन्टर को लिये शैतान है।।

कर्ज में लिपटे हुये सपने मिले।
नीचे तपती रेत रेगिस्तान है।।
अंधेरा फैलाते दीपक हाथ में ।
और सोने से ढंके भगवान हैं।।
तिजोरी के हक में ही कानून हैं।
महल के हक में खड़े इंमान हैं।।

कयामत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिल उछलता है तुम्हारे महफिल में आने से।
दिल बैठता है तुम्हारे महफिल में जाने से।।
दूर से ही तारा लगता खूबसूरत है ।
जलता है कायनात उसके पास आने से।।
हर पल नफा नुकसान को अब याद क्या करना ।
कह देंगे सब फरिश्ते कयामत के आने से।।
पिछले कदम पर अगले का मीजान जमा ले।
गिर जायेगा तू बीच में ही लड़खडाने से।।
बेकार सांसे थी तुम्हारे आने के पहले।
जीने को मिली है जिंदगी अब मुस्कुराने से।।

कड़ी सजा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मंत्री जी हर घूस खोर हत्यारे और लड़कियों की इज्जत लूटने वाले को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने की दिलासा हमें देते रहते थे और उन्हीं लोगो के साथ पाँच सितारा होटल में डिनर करते थे। खुदा जाने वह कड़ी से कड़ी सजा क्या होती थी। अगर कड़ी से कड़ी सजा ऐसी होती है तो वह मुझे हर दिन मिले जैसी उन अपराधियों को मंत्री जी प्रतिदिन पाँच सितारा होटल में दिलवाते थे। आमीन।

मगर हम टुच्चे लोगो को कड़ी से कड़ी सजा कैसे मिल सकती है वह तो बड़े देश द्रोहियों, हत्यारो को मिलती है। एक बार मैं अपने ह्नदय सम्राट, सबके प्यारे, सच्चे देश भक्त मंत्री जी के पास एक टुच्चा काम लेकर गया। एक टुच्चा मतदाता देशद्रोह के माफी माफी नामे के लिये ही जायेगा।

किसी बेटे के स्थानान्तरण के लिये ही जायेगा। मंत्री जी जिस आदमी के गले में हाथ डाल कर घूम रहे थे उसे उसे टी.व्ही बार बार फरार बतला रहा था। उस देश द्रोही की रिपोर्ट पुलिस में देने पर एक करोड़ रूपये का इनाम घोषित किया था। मंत्री जीे की सुरक्षा में टी.आई स्तर की पुलिस भी लगी हुई थी और मंत्री जी उस करोड फरारी के गले में हाथ डाले घूम रहे थे। वह फरारी हमें कैसे दिखता जिनकी आँखे कमजोर और आतें भूखी रहती है।

मैरी खैरियत इसी में थी कि टी.आई साहब की तरह मुझे भी वह न दिखे। मैनें वह स्थानांतरण आवेदन बढ़ाया तो मंत्री जी हंस कर बोले "प्यारे मतदाता, तुम इन्हें जानते हो ? मैनें हाथ जोड़ कर उस ए.के एक हजार सेवन को देख कर कहा "हुजूर कोई बड़े आदमी होंगे जैसे स्विस बैंक के कोई मेनेजर।

मंत्री जी बोले "मूर्ख ये पुलिस की फरारी में है। कल मैं इन्हें गिरफ्तार करवाऊँगा और परसो से ये पुलिस कस्टडी में यही रहेंगे। मेरे मित्र है न! मैनें उन फरारी जी के चरण छुये और कहा "हुजूर मुझे माफ कर दें कि मैं आपको पहचानता था पर अब नहीं पहचानूँगा।"

"समझदार हो ! "मंत्री जी बोले और उन्होने मेरा काम कर दिया और चेतावनी दी "भविष्य में यदि पहचानने की कोशिश की तो तुम एक शरीफ आदमी को हत्यारा बम ब्लास्टर बताने के घृणित आरोप में पुलिस कस्टडी में चले जाओगे।"

मैं भला उन्हें कैसे पहचान सकता था ? मगर एक मतदाता सब जानता है। सब जानते हुये भी मजबूरन उसे उन्हीं अपराधियों को अपना अमूल्य मत कौड़ियों की तरह फेंकना पड़ता है। कुछ समझदार काँच के टुकड़े बन कर उस सब अपराधी की आभा में चमकने लगते है। एक मतदाता का कानून का ज्ञान उसे कानून की धाराओं रूपी रस्सियों में फँसाये रखता है और अपराधियों को आजाद रखता है।

मेरा स्वार्थ साधने के बाद अब मैं देश प्रेमी बन गया। जो नेता जितनी ज्यादा कमाई कर लेता है। उतना ही देश प्रेमी हो जाता है। उसी तर्ज पर मैं बोला "मंत्री जी मँहगाई तो बढ़ती हीे जाती है मंत्री जी ने रटा रटाया जवाब दिया "कड़ी से कड़ी सजा दिलवायेंगे।

मैं जानता था कि कड़ी से कड़ी सजा ये किसको दिलवायेंगे। इनके हाथ में कुछ नहीं है सिवा कहने के। जिसको ये कड़ी से कड़ी सजा दिलावाने का वादा करते है उन्हें न्यायालय संदेह के लाभ में बरी कर देता है। अब तो गरीबी में आटा भी गीला नहीं कर सकते। आटा हीं नहीं है तो गीला किसका आटा होगा ? मुझमें उस दिन विरोधी पार्टी के नेता पत्रकार और आम आदमी जाग गये जो खुद का नुकसान करने पर उतारू रहते है।

यदि अतिवृष्टि होती है तो नेता जी बादलो को कड़ी सजा दिलवाने का वादा करते है। यदि सूखा पड़ता है तो नेता जी सूरज को कड़ी सजा दिलवाते है। यदि भूकम्प आता है जो नेता जी की धरती को कड़ी सजा दिलवाते है, हालाँकि नेता जी स्वयं दिल से चाहते है कि प्राकृतिक प्रकोप आते रहें इन प्रकोपो के लिये नेता जी अनुष्ठान भी करवाते रहते है, ऐसा सुना है। यदि जनता विद्रोह करती है तो नेता जी संसद को और जनता के सामने संसद को कड़ी सजा दिलवाते है। बगैर पेंदी का लोटा भी इतना न लुढ़कता होगा, जितने कि नेता जी लुढ़कते है।

नेता जी के अनैतिक संबंधो की चर्चा एक पत्रकार ने उठाई। नेता जी बोले" मैं पचास साल के ऊपर हो गया हँू। मैनें तो नैतिक संबंध बनाना भी छोड़ दिये। अनैतिक संबंध तो मेरे लिये एक सपना है। फिर भी एक कमीशन बिठाये देता हूँ। दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

पत्रकार ने पूछा दूध का दूध किसका और पानी का पानी किसका। नेता जी दूध किसका और पानी किसका। ? नेता जी को पत्रकारो की बातें कुछ कम ही समझ में आती है। जब कुछ समझ में नहीं आता तो कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने लगते है। इस बार भी बोले "यदि अपराध सिद्ध हो गया तो चाहे मेरा पी.ए. ही क्यों न हो उसे जेल भिजवाने से नहीं झिझकूंगा।

यानि अनैतिक संबंध नेता जी के और जेल जायेगा बिचारा पी.ए.।

एक मुर्गे की आत्मकथा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुर्गा कटने के लिये ही होता है। उसका कोई हितैषी नहीं होता। यहाँ तक कि मुर्गा ही मुर्गे के दुश्मन होते है। मुर्गियां तो खैर मतलब निकालने के बाद ही मुर्गे की दड़वे से बाहर निकाल देती है। दफ्तर के छोटे बाबू को मुर्गा फंसाना खूब आता है। छोटे बाबू ही दफ्तर के बड़े बाबू हैै। मजाल है कि उनकी मर्जी के बगैर कोई फाइल ऊपर

चढ़ जावे। कहते है कि उनकी नोट शीट को जिस अफसर ने बदलने की जुर्रत की वही जिला बदर हो गया। छोटे बाबू ने छोटे बाबू बने रहने के लिये कई प्रमोशन ठुकरा दिये। जिस मुर्गे को उन्होने फंसाया उसकी हड्डियां ही फिर उनके घर के बाहर पड़ी मिली है। पंख तो पहले की नुच जाते है। मगर जो मुर्गा उसकी छत पर उड़ गया था उसका अफसोस उन्हें जिंदगी भर रहेगा।

हुआ यंू कि वह एक मुर्गा फंसा कर लाये। मुर्गे को उन्होने दो दिनो तक भूखा रखने के लिये एक टांग से बांध कर रख दिया। मुर्गे की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। वह बांग देना भूल गया। वह जिस मुर्गे को फंसा कर लाते थे उससे पहले ही कह देते थे कि बेटा बांग देना न भूला दूँ तो मैं शरीफुद्दीन का बेटा नहीं। हलाल करने से पहले मुर्गे को दो दिन भूखा रखा जाता है जैसे सरकार जनता को भूखा रखती है। सरकार भूख रूपी चाकू से जनता को हलाल करती है फिर मंत्री लोग उसका मांस चटखारे लेकर खाते है। कुछ मंत्री भविष्य में खाने के लिये स्विस बैंक रूपी रेफ्रीजरेटर में जमा कर देते है।

छोटे बाबू का बड़ा लड़का आजाद ख्यालो का था। उसे आजाद मुर्गो को काटने में थ्रिल आता था। इसी ख्याल से उसने मुर्गे की डोरी कैंची से काट दी फिर चाकू लेकर मुर्गे के पीछे भागा। इधर मुर्गा स्वयं को आजाद पाकर उड़ गया। उड़ कर वह बाबू जी के घर की छत पर बैठ गया। छोटे बाबू ले जब बड़े लड़के को थप्पड़ मारा तभी मुर्गा समझ गया कि वह उसके "मिशन" में सफल हो गया है। बाबू जी दबें पांव छत पर मुर्गे को पकड़ने चले। वे ओ ओ करके मुर्गे के पीछे भागने लगे। अब मुर्गे को भी बदला निकालने का मौका मिल गया। वह रूक रूक कर भागने लगा।

छोटे बाबू जब हाँफने लगे तो मुर्गे को दया आ गई। वह रूक गया। जैसे ही छोटे बाबू उसे पकड़ने को थे वह उड़ कर एक पेड़ पर जा बैठा। ऊपर बैठ कर वह जोर से बांग देने लगा। हार कर बड़े बाबू नीचे आये और लड़के के कान उमेठ पर बोले "किसी मुर्गे को आजाद करोगे तो वह सिर पर चढ़ कर बांग देने लगेगा।

लड़का चिल्ला कर बोला "बाबू मुझे परेशान करोगे तो मैं भी उड़ जाऊंगा। फिर सुनते रहना बांग। छोटे बाबू ने लड़के के कान छोड़ दिये। फिर मोहल्ले वाले इकट्ठे हो गये और मुर्गे को नीचे उतारने की सर्व दलीय मीटिंग होने लगी। किसी ने कहा एक छोटी सी डलिया में दाने डाल कर बांस के सहारे ऊपर चढ़ाओ। लालच में मुर्गा नीचे आ जायेगा।

छोटे बाबू बोले "कर के देख लेते हैं। पर एक बार जो लालच से मुक्त हुआ वह शायद ही दुबारा लालच में फंसे। इधर मैनें मुर्गे से कहा प्यारे मुर्गे, तुम नीचे आ जाओ। छोटे बाबू कुछ नहीं कहेंगे। तुम्हे काजू, किश्मिश खिलायेंगे। "मुर्गे ने मुझे अविश्वास से

देखा और बोला तुम भाषा तो हमारी बोलते हो, पर पक्ष सरकार का लेते हो। तुम दुधमंुहे नहीं, पर दुमंुहे सांप हो। सरकारी आंकड़ो की तरह गरीबी दूर कर रहे हो।"

मैं सही गाली सुन कर चुप हो गया। मोहल्ले का हर आदमी आशा करने लगा कि मुर्गो उनकी झोली में गिरेगा। पर मुर्गा एक अंधे कुएं में कूद गया। मैं फिर बोला "प्यारे मुर्गे मुम ऊपर से नीचे नहीं आये तो नीचे से ऊपर ही आ जाओ। हर आदमी का कर्तव्य है कि वह आत्मिक उन्नति करे।"

मुर्गा बोला "मैं कूप मण्डूक ही ठीक हँू। मैं जब तक कुऐं में हँू तब तक ही आजाद हँू। आत्मिक उन्नति मुझे पराधीन कर देगी। अब तुम ऊपरी लोग फूटो। "हम चुप चाप फूट लिये। पर ऐसा लगता था कि उस मुर्गे का छूटना छोटे बाबू के दिल में कांटे की तरह चुभ रहा था। वे कुछ देर बाद फिर कुएं के पास आकर खड़े हो गये। इन्हें देख कर मोहल्ले वाले कुऐं को घेरकर इकट्ठे हो गये।

वह कुआं नाम मात्र कुआं था। गहरा जरूर था पर उसमें पानी नहीं था कचरा ही कचरा था। अतः उस मुर्गे के लिये तो वह स्वर्ग था। कुछ लोगो ने एक डलिया में दाना डाल कर रस्सी के सहारे उसे नीचे उतारा पर मुर्गे ने वहां देखा तक नहीं। छोटे बाबू ने पड़ोस की छोटी लड़की से कहा "बेटा तुम एक डलिया के सहारे नीचे उतर जाओ। हम तुम्हें रू. 100 देगें। मगर उसकी मां को मुर्गे से ज्यादा अपनी बच्ची प्यारी थी अतः बच्ची के पीठ पर घोल जमा कर बोली "चल पड़िया यहां क्यों आ गई ? जहां भीड़ देखती है वहीं घुस जाती हैं ऐसे में कोई उठा ही ले जायेगा। बाबू खुद तो नीचे जायेगा नहीं, आस पड़ोस के बच्चो को नीचे उतारेगा। कहीं रस्सी टूट जायेगी तो मुर्गा बाजू का उड़ा और कुऐं में जाय पड़ोस की लड़की बा-रे-बा।

थोड़ी देर में छोटे बाबू की बीबी आ गई। उसने कहा "प्राण प्यारे, मुर्गे दानो से नहीं फंसते। मुर्गियों से फंसते है। एक मुर्गी कुयें की मेढ़ पर ले आओ। मुर्गे की आज्ञा की उन्नति खुद ब खुद हो जायेगी।

नीचे से मुर्गा बोला "हां ऐसा ही करो। चुनांचे एक मुर्गी कुऐं के मेठ के पास लाई गई। दोनो में मालूम नहीं क्या बात हुई कि मुर्गी खुद उड़ के नीचे चली गई। अब मुर्गी का मातम भी मनने लगा। तब नीचे से मुर्गा बोला "तुम लोग एक मुर्गी के नुकसान पर छाती क्यों पीटते हो हमारे जो चूजे होंगे तुम उन्हें साल दर साल लेते रहना।

मुर्गी की मालकिन बोली "छाती पीटने की बात ही है। मुर्गी का फेमिली प्लालिंग का आपरेशन हो चुका है। वह तो केवल तुम्हें फंसाने के लिये लाई गई थी। "छोटे बाबू को वह मुर्गा सपने में भी डराता रहता है। वे सपनें में भी देखते है कि वह मुर्गा बहुत बड़ा हो गया है और उनकी तरफ झपट रहा है। सुबह उठते है तो कुऐं के अंदी से मुर्गे की बांग उन्हें रोज चिढ़ाती है।

कर्नाटक में बी.जे.पी. की हार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी की हार ने देश में न केवल उसकी जड़ो को हिला दिया बल्कि कांग्रेस की हिलती जड़ो को मजबूत कर दिया। इस हार के दूरगामी परिणाम होंगें। मैनें लगभग दो वर्ष पूर्व जन प्रवाह में लिखा है कि बी.जे.पी. नरेन्द्र मोदी को, बी.जे.पी. के प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में प्रस्तुत कर स्वयं के पैरो में कुल्हाड़ी मार रही है। भारत वर्ष गुजरात राज्य नहीं हैं। एन.डी.ए. के एक प्रमुख घटक के नेता नीतिश तक की चेतावनियाँ इन्हें सतर्क नहीं कर सकी। राजनाथ को पंक्तियों के बीच तो क्या पक्तियां तक पढ़ना नहीं आती।

राजनाथ को स्वर्गीय बाल ठाकरे के वे शब्द ध्यान में रखने चाहिये थे जिसमें उन्होनें सुश्री सुषमा स्वराज को बी.जे.पी. के प्रधानमंत्री के पद के दावेदार के लिए उपयुक्त बतलाया था। स्वर्गीय बाल ठाकरे एक अनुभवी राजनीतिज्ञ थे। उन्हांेने कुछ नहीं की स्थिति से शिव सेना को खड़ा किया था। वे एन.डी.ए. के प्रमुख नेता भी थे। राजनाथ बी.जे.पी. खड़ा करने वाले लालकृष्ण आडवानी की शारीरिक भाषा भी नहीं पढ़ पाये। उनके और सुषमा स्वराज की राजनीतिक आभा के समक्ष तो स्वयं राजनाथ भी कहीं नहीं लगते। कर्नाटक में बी.जे.पी. की करारी हार स्वयं राजनाथ एवं नरेन्द्र मोदी की हार है। राजनीतिक क्षेत्र में एक गलत कदम भी सौ कदम पीछे धकेल देता है। राजनाथ और मोदी की युगलबंदी के लिये तो निम्न पंक्तियां तक उपयुक्त बैठती है।

एक कदम जो गलत पड़ा राहे शौक में,
मंजिल तमाम उम्र मुझे ढूंढती रही।

मोदी को प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में प्रस्तुत करने पर राजनाथ ने मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ तक में बी.जे.पी. की स्थिति को कमजोर कर दिया है। गुजरात में तो

स्थिति खैर कमजोर हो ही जायेगी। यह हार अन्य राज्यो में भी बी.जे.पी. की स्थिति को हिला देगी। मोदी के मामले में उन्हें थोपने के बजाय एक सर्वसम्मति से निर्णय लेना चाहिए था।

राजनाथ को एल.के.आडवानी के योदान को नहीं भूलना चाहिए था जब कांग्रेस की आंधी ने बी.जे.पी. को उखाड़ ही दिया था तब बी.जे.पी. की तीन सीटो में अटल बिहारी के साथ एल.के. आडवानी ही लोकसभा में जा सके थे। प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में मोदी को तमिलनाडु, केरल, आंध्रा, कर्नाटक, बिहार, पश्चिमी बंगाल, आसाम के साथ सभी पूर्वोत्तर राज्य उत्तरप्रदेश आदि अनेक राज्य परले सिरे से नकार रहे थे। सम्भवतः शिवसेना भी उन्हें पसंद न करती। अल्प संख्यको का एक बड़ा समुदाय उन्हें नफरत की नजरो से देखता ही है। फिर किस आधार पर उन्हें पी.एम.पद के दावेदार माना जा रहा था।

जो राजनीतिक दल प्रजातंत्र में लचीलापन नहीं रखता वह जीवित नहीं रह पाता। हिन्दूमहासभा इसका एक उदाहरण है। मुस्लिम लीग दूसरा उदाहरण है। हिन्दु महासभा तो सन् 1951 में प्रमुख विरोधी पार्टी थी।

यह लचीलापन कांग्रेस में है। इसका मतलब यह नहीं कि कांग्रेस दूध की धुली है। पर वह जन आकांक्षाओं के अनुरूप खुद को बदल लेती है। उसके एक कोई कठोर सिद्धांत नहीं है। यही प्रजातंत्र के सफल राजनीतिक दल की पहचान है।

मोदी बी.जे.पी. की हारोपरान्त विश्लेषण मीटिंग में नहीं गये। बताया जाता है कि उनके दांत में दर्द हो रहा था। यह एक बहादुर राजनेता की निशानी नहीं है। दांत दर्द की दवाईयां भी आती हैं। एक बाहदुर राजनेता में गलतियां स्वीकार करने का साहस होना चाहिये जो कि श्रीमती इंदिरा गांधी में था। यह हिम्मत अटल बिहारी बाजपेयी और एल.के. आडवानी में है। मोदी में नहीं। मंत्री येदुरप्पा का मुख्य मंत्री पद छीनना भी हार का एक कारण हो सकता है। पहले न्यायालय से अपराध तो सिद्ध हो जाने देते। न्याय इतना भी साफ न हो कि शरीर के कपड़े ही उतर जायें। ठीक है पर मध्यप्रदेश की मुख्य मंत्री सुश्री उमा भारती तो भ्रष्ट नहीं थी। उन्हें भी हटा दिया गया था।

दैनिक भास्कर के दिनांक 12.5.13 एवं हरिभूमि के दिनांक 13.5.13 के अंक में लालकृष्ठ अडवानी का वक्तव्य प्रकाशित हुआ है पर आश्चर्य नहीं। राजनाथ को पुनः इन पंक्तियों का आशय समझना चाहिये। आडवानी के इस वक्तव्य पर उन्हें पार्टी से निकालने पर बी.जे.पी. को कुछ नहीं मिलने वाला। हरिभूमि दिनांक 13.5.13 में राजनाथ का दिलचस्प बयान छपा है कि कर्नाटक, उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश की विधानसभा में बी.जे.पी. की हार दरअसल लोकसभा में बहुमत लाने के लिये पीछे हटना है।

भ्रष्टाचार भारत में चुनाव हारने या जीतने का मुद्दा कभी नहीं रहा। कांग्रेस की चुनाव जीतने की शैली ने कमोवेश हर आदमी को भ्रष्ट बना दिया है। आजकल पार्टीयां चुनाव भ्रष्टाचार से ही जीत पाती है। अतः राजनीतिक पण्डितो का यह विश्लेषण कि कर्नाटक में बी.जे.पी. केन्द्रीय भ्रष्टाचार के कारण नहीं बल्कि स्थानीय भ्रष्टाचार के कारण हारी है गले नहीं उतरता। बी.जे.पी. द्वारा भ्रष्टाचार का मुद्दा आवश्यकता से इतना अधिक फुला दिया गया है कि वह फूट गया है। भारत में ऐसा कौन या बाबू, पटवारी, तहसीलदार, कलेक्टर, इंजीनियर या डाक्टर है जो भ्रष्ट नहीं है ? या ऐसा कौन सा आर.टी.ओ. रजिस्ट्रार, पोलूशन अधिकारी एक्साइज इंस्पेक्टर ड्रग इंस्पेक्टर फूड इंस्पेक्टर, पुलिसमेन इत्यादि है जो भ्रष्ट नहीं है ? यदि नहीं है तो उसे राष्ट्रपति पुरस्कार क्यों नहीं मिलता है ?

अथ अध्याय आत्मा की मुक्ति का

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरी भतीजी ने मेरे कान में कहा “चाचा अब मर भी जाओ। सब कुछ तो हो गया। सारे रिश्तेतार आ गये। भागवत भी हो गई। तुम्हारे कानों में गायत्री मंत्र कई बार फंूका जा चुका है। तुमसे गय्या भी दान करवा चुके। सच तो ये है कि भैय्या लोग तुम्हे अस्पताल से घर नहीं ले जाना चाहते। तुम यहीं मर जाओ। बेशरम मत बनो। यहां मरने पर तुम्हारी इज्जत बची रहेगी।

सच्चाई जान कर मुझे बड़ा दुख हुआ। हालांकि पेरालिसिस के कारण मैं अस्पताल में भरती हुआ था, पर हार्ट अटैक से मैं मर गया । पर इज्जत की खातिर। जब से लोगों ने यह निश्चित जान लिया कि मैं मर चुका हूँ तो चारो ओर आँसू विहीन रूआ रेंट चालू हो गया। मेरी लाश को मेरे लड़के श्मशान घाट ले जाने के लिये जल्दी जल्दी उनके घर ले आये। चारो एक दूसरे के ऊपर हत्या का आरोप लगाने लगे। मैनें डाटा चुप रहो बदमाशो, तुम चारों ही चाहते थे कि मैं मर जाऊं। सब सकपका गये। कुछ अपराध बोध के कारण उनमें से डाक्टरो और नर्सो से लड़ने लगे। एक ने बेशरम बन कर पूछा आपको कैसे मालूम पड़ा बाबूजी।

मैनें कहा अब मैं प्रेत हो चुका हूँ और प्रेत सब जानते है। वे मेरे मरने से आश्वस्त हो गये। मेरे मरने पर जिन्हे अफसोस था वे लोग वे जिनसे मैं उधार लेकर मरा था खुश वे लोग थे, जिन्होने मुझसे उधार लिया था।

उधार और कर्ज में लिखा पढ़ी का फर्क होता है। उधारी डूब जाती है उधर कर्ज में आदमी डूबता है। जिन्होने मुझसे उधार लिया था वे मेरे लड़को से भी ज्यादा जल्दी मुझे श्मशान घाट ले जाने की मचा रहे थे। उनमें से एक बोला "जल्दी करो, सूरज डूबने में मात्र तीन घंटे बचे है।

ऊपर से मेरा मंझला लड़का बोला तुमसे मतलब हमारे पिताजी हैं, हम उन्हें कभी भी जलाये या न जलायें।"

वह बोला "हम तो तुम्हारे भले के लिये कह रहे हैं। नहीं तो मैनें ऐसी कहानियां भी सच्ची कहानी और धार्मिक किताबों में पढ़ी है जिनमें मुर्दा दुबारा जी उठा था" अब नीचे से मंझला बोला "भाई साहब ठीक तो कह रहे है वे हमारी भलाई की बात तो कह रहे है। दूसरा उधारी बोला सुना है अमेरिका में एक ऐसी दवा बन चुकी है जो मुर्दो को जिंदा कर देती है।

अब मेरा बड़ा लाड़ला बोला "इसके पहले कि वह दवा भारत में आये इस मिट्टी को ठिकाने लगा दें। मेरी पत्नी विधवा का मेकप करवाने ब्यूटी पार्लर गई हुई थी। वहां एक हजार रूपये खर्च करके वह विधवा बनी। फिर आते से ही वह किसी फिल्मी विधवा की तरह मेरे सीने पर पछाड़ खाकर गिरी और दहाड़ कर बोली "हे प्राण नाथ तुम अपने जनम जनम के साथी को अकेली छोड़ कर क्यों चल दिये। मुझे भी साथ ले लेते। मैनें उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा "मैं कोई यमदूत तो हूँ नहीं जो तुम्हे घसीट कर ले चलूँ। तुम चाहो तो आत्महत्या कर सकती हो। वह मेरा हाथ हटा कर बोली तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो।

इतने में ऊपर से आवाज आई “हे देवि, आप चाहें तो हमारे साथ चल सकती हैं। हमें इसके लिये बोनस अंक मिलते हैं। जिस तरह जलचक्र पदार्थ चक्र और शक्ति चक्र के स्थिरांक होते है वैसे ही प्राणांक भी स्थिर रहते है धरती और स्वर्ग में प्राणों का गुणनफल स्थिर रहता है। चंूकि बीमारियों की रोकथाम के कारण धरती पर प्राणों की संख्या बढ़ गई है अतः स्वर्ग और नरक खाली हो गये है। इसी कारण हमें प्राणों को ऊपर ले जाने के असीमित अधिकार मिल गये है। बस, आपको एक फार्म पर दस्तखत करने होंगें कि आप बगैर किसी दबाव के अपनी मर्जी से स्त्वगवास चाहती है। मेरी जनम जनम की साथी तमक कर बोली आप हम दोनो के मामले में आपका भैंसा न ही फंसाये तो अच्छा इन्होने अगर सुन्दर अप्सराओं को परलोक में देखकर मुझे तलाक दे दिया तो हे देवीय आवाज, क्या आप मुझसे शादी करोगे ? देवीय आवाज बोली वहां स्वर्ग में शादियां नहीं होती। स्वेपिंग होती है तब मेरी पत्नी बोली मालूम है धरती पर तलाकशुदा औरतों से कोई शादी के लिये तैयार नहीं होता। आप मुझसे शादी करोग ? ऊपर से आवाज आई नहीं “तब मेरी पत्नि बोली स्वर्ग में क्या आप भी पीछे हट गये। इन्हीं का नंबर है तो आप इन्हीं को ले जाये। मैं भगवान का कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहती।”

मैं अपनी प्राण नाथिनी से बोला “मैं ऊपर खुशी खुशी अकेला जाना चाहता हँू यही तो तुम सब चाहते थे न ? तो मैं चला। “इसके बाद मेरी गरदम टेड़ी हो गई और मैं हमेशा के लिये चुप हो गया।

वहां एक आदमी (मेरे लिये अब धरती वहां हो चुकी थी) गुनगुना रहा था “रंग महल के दस दरवाजे न जाने कौन सी खिड़की खुली थी। सैय्यां निपत गये मैं न लड़ी थी” दूसरा बोला (एक के बाद दूसरा ही बोलता है तीसरा नहीं) ये सैय्यां खिड़की ही क्यों बाहर निकलता है दरवाजों से क्यों नहीं और रंग महल के खिड़की दरवाजे बंद क्यों रहते है।”

एक अन्य बोला” सैंय्यां को कैद में रखने के लिये ही खिड़की दरवाजे बंद रखे जाते हैं। और कमाली (कबीर दास जी की पत्नि) इसलिए उनसें नही लड़ती है दरवाजे से निकलने पर मुक्ति मिल जाती है खिड़कियों से निकलने पर नहीं।

लेकिन ये गाना तो विट्ठल भाई पटेल ने किसी फिल्म के लिये लिखा था तीसरा बोला, चैथा बोला ये इसलिए होता है आजकल के फिल्मी कवियों को लिखना नहीं आता और सम्पादको दर्शको और फिल्मी डायरेक्टरो और प्रोड्यूसरो को पढ़ना नहीं आता। इसी तरह बातें करते हुये ये लोग मुझे श्मशान घाट तक ले गये। जहां आय बाज एसान्इड टू फ्लेस एण्ड दे लिण्ड हेप्पीली स्वर आफ्टर एवं आफ्टर, इति (यहां एवर आफ्टर की पुररूक्ति अध्याय समाप्ति को दर्शाती है)

जंगल में बोनसाई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बड़े बड़े सब पेड़ उखड़ने वाले है।
जंगल में बोनसाई लगने वाले है।।
बहुत गरजते है वे बरखा के पहले।
बादल अंग्रेजी के पड़ने वाले है।।
इंकलाब खुद जामों में ढल जाता है।
इंकलाब अब हुये पिघलने वाले है।।
बेईमान पूरी बस्ती पर हावी है
प्रजातंत्र में अब क्या करने वाले है।।
टांगो को अब कुर्सी रिश्वत देती है
तख्त ताज पायो से डरने वाले है
बुलेट फ्रूट में आसमान बम मिले हुये
पत्थर ये बेकार उछलने वाले है

शत रहो बरसते

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

धवल श्याम रक्ताभ गगन पर फैले बादल।
इंद्रधनुष के सुघड़ पटल सपनीले बादल।।

रिमझिम रिमझिम रैन दिवस शत रहो बरसते।
प्यासी धरती को पानी पहँुचाते बादल।।

गहन निविड़ कर तड़ित दिखा फिर गर्जन करते ।
धरा नदी झीलो को जीवन देते बादल।।

प्रजनन करती धरणी को रवि देख सके ना ।
चादर एक उसे बन कर ढक देते बादल।।

दादुर ध्वनि, रिमझिम की लय और घोष गगन पर।
तृप्त धरा को अनहद नाद सुनाते बादल।।

बादल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गरज गरज वृक्षांे पर गाज गिराते बादल।
घुमड घुमड़ कर धरती को धमकाते बादल।।

प्रकारान्त जो जल निधि को ही जल देना था।
अपनी सारी कृपा वहीं बरसाते बादल।।

तिनका तिनका कहीं तरसता अनुकम्पा को।
कहीं पेड़ पर्वत पर पैर पसारे बादल।।

तड़ित तड़कती झंझावाते घना अन्धेरा।
बरखा में तुम अंधकार गहराते बादल।।

बरछी सी बौछारे बूंदो की बरसाते।
डरे हुये तिनकों को और डराते बादल।।

वर्षा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वर्षा में थे जो घर वाले किये धार ने कई बेघर।
कभी गिरी है खूब झमा झम कभी गिरी है टिपर टिपर।।
बीज धरा में छिपा दिये कि ऊगेंगे पानी पाकर।
ना ही बरसे मेघ झमा झम ना ही बरसे टिपर टिपर।।
घर में फिर भी टपके रह गये घर को अच्छा छाने पर।
बाहर बरसा मेघ झमा झम अन्दर टपका टिपर टिपर।।
पहले तनखा निडर खर्च करते है और फिर डर डर कर।
सावन भादो खूबर झमा झम और क्वारं में टिपर टिपर ।।
दिन में दिल में सन्नाटा था रातें भारी विरहन पर।
सौतन नाची खूब झमा झम विरहन रोये टिपर टिपर।।
मेरे पिया छोड गये मुझको मेरे बालम तेरे घर।
तेरा आंगन खूब झमा झम मेरी देहरी टिपर टिपर।।
बाहर तुम पी कर आते हो घर में मुझ से लड़ते हो ।
मुझ को घुनते खूब घमाधम, मेरे आंसू टिपर टिपर।।
लक्ष्मी मां है लेकिन उसके सबको अलग अलग तेवर ।
कहीं बरसती खूब झमा झम कहीं टपकती टिपर टिपर ।।

यकीं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जमीं पे पैर रहें और नजर, आसमां पे हो
गांव दिल्ली बदल सकें ये यकीं भी जबां पे हो

रात को सो सके निपटा के काम दिन भर का
रहेगा जागता वह इतना यकीं रह नमुां पे हो
मस्ती में झूमते हम नाचते और गाते रहें
गलत मुड़ेगा नहीं इतना यकीं कारवां पे हो
रईसी दिखाते तो रहे पर गाफिल न हो
खर्च करते तो रहें एक नजर कुल जमां पे हो
आने परवाने लगे कि शमां शबाब पर है
शमा उड़ेगी नहीं इतना यकीं भी शमा पे हो
तर्जुमा खूब करो मीर और गालिब की गजल का
गजल से कम न होगा इतना यकी वजुमा पे हो

सीजर अधिक क्यों

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक आम आदमी की धारण है कि सामान्य प्रसव से सीजर बहुत अधिक होते है। उनके अनुसार महिला चिकित्सक रूपयों (पैसे तो बंद ही हो गये) के लालच में ऐसा करते है। दूसरा तर्क वे ये देते है कि रात खरबा न हो इसलिये महिला चिकित्सक ऐसा कर देती हैं क्योंकि सामान्य प्रसव के लिये हो सकता है उन्हें रात भर जागना पड़े।

सीजर आप्रेशन का मतलब है कि पेट का आप्रेशन करके प्रसव उदर से करवाना। कहते है कि लार्ड जुलियस सीजर को उदर का आप्रेशन करवाया गया था। सीजर

आप्रेशन का मतलब सीजर्स (कैंची) से बिल्कुल नहीं है। आजकल एल एस सी एस (लोवर सेगमेन्ट सीजेरियन सेक्शन)
किये जाते है। जो क्लासिस सीजेरियन से अधिक सुरक्षित होते है।

सीजीरियन सेक्शन के आप्रेशन बढ़ने का कोई एक कारण नहीं हैं। आजकल शादियाँ बहुत विलंब से होती हैं अतः सामान्य प्रसव के लिये उनकी कूल्हे की हड्डियां किंचत कठोर हो जाती है ऐसे अवसरो पर सीजेरियन आप्रेशन सुरक्षित रहता है।

आजकल निदान के लिये नये नये अविष्कार हो रहे है जिनके द्वारा गर्भास्थ शिशु की असमान्यातायें पहले ही मालूम पड़ जाती हैं ऐसे मौके पर माँ की जान बचाने के लिये सीजेरियन आप्रेशन सुरक्षित रहता है। ये असमान्यतायें हाइड्रोसिफेलस था। (गर्भ में तीन या चार या अधिक बच्चे) इत्यादि है।

जीवन स्तर के ऊपर उठने से हर माँ बाप उनके बच्चे की परवरिश अच्छी तरह से करना चाहते हैं अतः वे एक या अधिक से अधिक दो बच्चे ही चाहते है। इसलिये भी सीजेरियन सेक्शन बढ़ रहे है। महिलायें रोजगारोन्मुखी हो गई है। वे एक या दो बच्चे ही चाहती है जिससे उनकी नौकरी में व्यवधान उपस्थित न हो और परिवार में आय के साधन कम न हो।

बच्चों की जीवित रहने की सम्भावनायें टीकाकरण आदि से बढ़ गई है। अतः माँ बाप एक या दो बच्चे ही चाहते है। सामान्य प्रसव का दर्द महिलायें सहन नहीं करना चाहती हैं अतः वे स्व्यं सीजर आप्रेशन पर जोर देती है जो सामान्य प्रसव के बराबर ही सुरक्षित हो गया है।

कुछ माँ बाप एक विशेष समय पर ही उनके बच्चे का जन्म चाहते है। ऐसा वह पंडितो से पूछ कर या विशेष दिन जैसे 12-12-12 पर या किसी विशेष दिन जैसे क्रिसमस के दिन या अन्य किसी ऐसे समय पर दिन पर चाहती है जो केवल सीजर के लिये ही सम्भव है।

परिवार नियोजन के साधनों से अब बच्चों की संख्या भाग्य नहीं, माँ बाप तय करते है। सीजर के साथ ही महिलाऐं परिवार कल्याण का आप्रेशन भी करवा लेती है। सिफेलो पेल्विक डिसप्रपोरशन यादि गर्भस्थ बच्चे के सिर और माँ के प्रसव मार्ग में असमान्यता होने पर सीजर आप्रेशन आवश्यक हो जाते है। जैसे माँ के केल्शियम और विटामिन डी की कमी से प्रसव मार्ग अत्यन्त सकरा हो जाता है जिससे सामान्य प्रसव असम्भव हो जाता है। इसी तरह यदि गर्भस्थ शिशु के दिमाग का आकर उसमें पानी भरने के कारण सामान्य से बड़ा हो जाता है तब भी सामान्य प्रसव असभ्भव हो जाता है। गर्भस्थ बच्चा यदि आड़ा है या उसकी गर्भ में ही मृत्यु हो गई है तो माँ की जान बचाने के लिये सीजर आवश्यक हो जाता है। इसी तरह प्रेसेन्टा की असमान्य स्थिति में

भी सीजर करना आवश्यक हो जाता है। एक्सरे एवं अल्ट्रा सोनोग्राफी से इन असमान्यताओं का पता पहले ही लग जाता है। माँ की गर्भ के समय की आवाज की बीमारियाँ जैसे उच्च रक्त चाप टाक्सीमिया इत्यादि जिनकी सम्भावनायें विलम्ब आयु में बढ़ जाती है सीजर किये जाते हैं

यदि विलम्बित प्रसव है तो सीजर कर ही देना चाहिए। खून की आर.एच. समूह यदि माँ और प्रथम बच्चे का अलग अलग होता है तो आप्रेशन करते हैं हाइड्राक्स फीटेलिस भी एक कारण सीजर का हो सकता है। गर्भस्थ शिशु के इस रोग में पूरा बच्चा ही आकार में बहुत बढ़ा होता है। ऐसे अनेक कारण होते है जिनके कारण आजकल सीजेरियन प्रसव की संख्या में असमान्य वृद्धि होती जा रही है। मैं ऊपरी कारणों को गिना कर लेडी डाक्टरों का बचाव नहीं कर रहा हूँ। पर आजकल सीजेरियन आप्रेशन की असमान्य वृद्धि में माताओं की जिम्मेदारी सर्जन से अधिक है।

हिमालयन सूनामी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चीन ने तिब्बत तक रेल लाइन बिछा दी है पर भारत कई पार्वती कुण्ड से केदारनाथ तक सड़क नहीं बना पाया। रास्ते में कोई भी विश्राम स्थल नहीं है। अच्छी होटल नहीं है। सब टपरे छाप चाय की होटले है। जहाँ एक वर्ष में लगभग पाँच लाख तीर्थयात्री पहँुचते हो वहाँ आजादी के साठ वर्ष में केवल उबड़ खाबड़ खतरनाक सड़क है या टट्टुओं का सहारा है। इस तरह देश हर वर्ष और अधिक महान होता जा रहा है। भारत वर्ष की इस महानता पर विश्व के अन्य देश दाँतो तले उंगली दबा लेते है। भारतीय पुलिस की तरह भारतीय प्रशासन भी किसी बड़े हादसे का इंतजार करता है फिर मुस्तैदी दिखाने लगता है। बिचारी सेना को सेल्यूट करने का मन होता है जिसे हर हादसे के प्रबंधन के लिये झोंक दिया जाता है, चाहे साम्प्रदायिक दंगे हो जो कि राजनैतिक पार्टियों का वरदान है चाहे नक्सली आतंक हो चाहे विदेशी आतंकवाद हो जिसमें शासन केवल गिड़गिड़ाता रहता है चाहे महाराष्ट्र या गुजरात का भूकम्प हो सारी समस्यायें केवल सेना के कंधे पर डाल दी जाती है। जिनमें सेना के देश भक्त जवान बेरहमी से मारे भी जाते है। फिर नागरिक प्रशासन क्या करता है ? वह शराब के ठेकों की नीलामी, पक्की सड़को के खर्च पर कच्ची खतरनाक सड़के बनाना, फेक्टरियों के काम में व्यवधान डालना आदि महत्वपूर्ण देशहित के कार्य करता है।

दिनाँक 16.6.2013 को केदारनाथ में बादल फटा। पानी, केदारनाथ पर पत्थरो और मिट्टी को लुढ़ाकता हुआ दनदनाता आया। पत्थर घरो पर तोप के गोलो की तरह टक्कर मारने लगे। यह कहर लगाकार गिरते हुये पानी से पहले से ही कमजोर मकानों पर बमों की तरह गिरने लगा। मकान महामारी से ग्रस्त समाज पर मृत्यु के तांडव की तरह गिरने लगे।

फिर उसी तरह का कहर दिनांक 18.6.2013 को आसमान और धरती से धरती पर शिव की नगरी पर डमरू बजा कर नाचने लगा बची खुची कमी केदारनाथ के ऊपर बने गाँधी सागर डेम के टूटने से पूरी हो गई। मृत लोग सूखे पत्तो की तरह उन मृत्यु लहरों पर नीचे की तरफ बहने लगे। दिन में अंधेरा हो गया और रात को तो जैसे किसी ने गहरा काले रंग को पोत दिया हो। कोई प्रकाश नहीं। बड़ी बड़ी शिलाओं की टक्करो से धराशायी होते मकान और स्त्री पुरूष।

भगवान शिव की उस ज्योर्तिलिंग नगरी से प्रलयाकार अंधेरा और भगवान के डमरू की तरह पत्थरो और बादलों की गड़गडाहट और स्त्री पुरूषो की चीखे। मानो भगवान शंकर मंदिर से बाहर निकल कर हिमालय के चालीस हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में लाशो के ऊपर मुक्त ताण्डव नृत्य कर रहे हो। स्त्री और पुरूष उस भयानक घनी रात में यहाँ से वहाँ अंधे लोगो की तरह बचने के लिये लाशो के ऊपर भागने का प्रयत्न कर रहे थे और कीचड़ में बहे जा रहे थे। उनके शरीर पर बड़ी बड़ी शिलायें

क्रोधित होकर बरस रही थी। केदारनाथ के भवन कहीं तो ताश के पत्तो की तरह गिर रहे थे और कहीं कीचड और पत्थरो में जमींदोज हो रहे थे।

गाँधी सागर बाँध का पानी पत्थरो और कीचड़ को पानी के तूफान की तरह उड़ाता हुआ केदारनाथ को तहस नहस कर रहा था। पानी पिंजरे में कैद किये जाने से नाराज था। केवल वही कुछ बचे जो भाग्यवश भगवान के मंदिर में शरण ले पाये। कुछ भगवान की सवारी नादिया पर चढ़ गये और कुछ मंदिर की दीवारों पर जोंक की तरह चिपक गये। कुछ मंदिर का घंटा बन कर घंटे पर लटक गये। मंदिर में पानी लोगो की कमर से ऊपर चढ़ने लगा। फिर पानी ने सीने तक उनको डुबोया। फिर गले तक फिर नाक तक, फिर आंखो तक और फिर उन्हें पानी की कब्र बना कर उनके ऊपर बहने लगा। कुछ लोगो ने बच्चों को, जिस तरह चींटियां अण्डो को बचाती है उसकी प्रकार सिर के ऊपर ले लिया।

एक चमत्कार की तरह पानी फिर धीरे धीरे नीचे सरकने लगा। उसी क्रम से नीचे आया जिस क्रम से चढ़ा था। उस धक्के को सह न पाने के कारण कुछ लोगो के पैर उखड़ गये और वे दण्डवत होकर मरने के लिये नीचे की ओर बहने लगे। पानी का गुस्सा शांत होने पर लोगो ने देखा कि उन्हें बाहर निकालने के लिये रिश्तेदारो की लाशो से ऊपर से निकलने के अलावा और कोई मार्ग नहीं है।

बहती बाढ़ और पत्थर माँ की गोदो में से दुधमंुहे बच्चे बलात छीन कर ले जा रहे थे। जैसे कोई आतंकवादी माँ से बच्चों को छीन कर क्रूरता पूर्वक जमीन पर पटक दे। जो बच्चे माँ बाप काा हाथ पकड़ कर जान बचा रहे थे उन्हें माँ बाप से छीन कर पत्थरो की धारा बहा ले गई। कुछ बच्चों की उनकी माँ के सामने ही पत्थरो ने कपाल क्रिया कर दी। पति से पत्नि छीन ली गई। पत्नियां देखते ही देखते विधवा हो गई। युवा व्यक्तियों से वृद्ध माँ बाप छीन लिये गये।

कीचड़ की कड़ी में लाशो के विकृत रूप भजिये की तरह तैर रहे थे। मात्र ताण्डव यहीं समाप्त नहीं हुआ, काल के पैरो की घमस से मार्ग और पुलियां खाई में बदल गये। मानों यात्रियों का हाथ पकड़ कर कह रहे हो कि कहाँ जाते हो। अभी तुमने रूद्र का रौद्र रूप जी भर कर नहीं देखा। यहीं रूको और सड़ी गली लाशो के ऊपर चलो उनके ऊपर ही बैठो और राते बिताओ समय बीतने के साथ साथ लाशे फूल रही थी और फूट रही थी। जो बच गये थे वे एक दूसरे को स्तम्भित और आवाक हो कर देख रहे थे। उनके बीच में शब्द जम गये थे। आँखे पथरा गई थी या भयक्रान्त होकर दिल की धड़कन बढ़ कर बाहर आ रही थी।

यही हाल यम की बहिन यमुना के उद्गम और शिव के सिर पर नृत्य करती गंगा के उद्गम पर हो रहा था। मां बिच्छू के समान अपनी संतानों को खाने लगी थी।

लाशो से डर के कारण लोग जंगलो में भाग रहे थे। ब्रदीधाम में हालात अलबत्ता ठीक थे। लगता था भगवान विष्णु भगवान शिव के ताण्डव नृत्य से शरणागतों की रक्षा कर रहे हो। मार्ग तो फिर भी टूट ही गये थे। रूद्र प्रयाग तो मानों रूद्र का कहना मान कर उसके पूर्व के मार्ग तहस नहस कर चुका था।

रूद्र ने आश्रय तक छीन लिये थे। सारे मकान ध्वस्थ होकर धाराशायी हो गये थे। पानी से भीगे वस्त्र तो शरीर जमा ही रहे थे जल, बर्फीली वायु को भी आमंत्रित कर खून जमा रहा था। सनसनाती बर्फीली वायु उसी तरह तीरो की तरह सब तरफ से आहत कर रही थी जैसे अर्जुन के तीरो ने भीष्म पितामह को किया होगा।

पीने के लिये वर्षा का पानी ही था अन्यथा तो नीचे लाशो से टंकित कीचड़ की दीवाल ही थी। कहीं कही बर्फीले झरने बह रहे थे जिन पर पेड़ो के पत्ते लगा कर धार बनाई जा रही थी और अंजली से पानी पिया जा रहा था।

ऐसा लगता था मानों पूरी धरती पर मुनादी फिरवा दी गई हो कि जिनको मरना हो, भूखो मरना हो, बच्चों को अपने सामने मरते देखना हो, रिश्तेदारो को बलात् आंखो के सामने पानी पत्थर और कीचड़ में फेंकना हो तो वह दिनांक 16 जून से अठारह् जून 2013 तक चारो धाम पहँुच जावे। और पागलो की तरह लाखो लोग दौड़ भी पड़े।

प्रकृति उन पर भी मेहरबान नहीं थी, जो स्थानीय निवासी थे। कीचड़ का सैलाब उनकें घरो को इस तरह वहां ले गया मानों वे भी सैलानी हो वे यह देख कर हक्के बक्के रह गये कि उनके घरो और सामानों को वह पत्थरो, कीचड़ और पानी का सैलाब सब कुछ वहां ले गया। वे सड़को पर तो क्या खेतो में आ गये। उन्हें पहचानना मुश्किल हो गया कि उनका मकान कहां पर था।

जिनके पास कुछ बचा था उन्होने बिस्कुटो के पाँचे रूपयो के पैकेट तक की नीलामी लगाना चालू कर दी। एक पांच रूपये का पैकेट दो-दो हजार रूपयो तक में नीलाम किया। किन्ही गोस्वामी जी ने इस लूट पर लगाम लाई। ऐसा टी.व्ही पर तीर्थ यात्रियों ने बतलाया।

लोगो को, जिनके घर बच गये थे उन्हें आश्रय देने से मना कर दिया था। वे प्रकृति से भी अधिक क्रूर हो गये थे। सम्भवतः उन्हें डर था कि तीर्थ यात्रियों का दुर्भाग्य उनके घरो को भी न निगल जाये। स्थानीय लोग भी भूखे प्यासे मरने लगे। उनके वस्त्र तक मन्दाकिनी, भागीरथी अलक नंदा यमुना या गंगा वहाँ ले गयी। क्या तीर्थ यात्री क्या स्थानीय निवासी सब अल्प वस्त्र हो गये।

सामान्य दिनों में पार्वती कुण्ड तक, रूद्र प्रयाग से लेकर ब्रदीनाथ तक कारो का न टूटने वाला सिलसिला लगा रहता था। इन सैलानियों ने पूरे रास्ते को प्लास्टिक की बोतले और बिस्किट्स के पैकेट फेंक फेंक कर सड़को के बाजुओं को इतना ढ़क दिया

था कि वहां जमीन दिखती ही न थी। गंगा मैय्या उनकी सहयोगी नदियां एवं यमुना मैय्या सब वहां ले गई। मोटरो और कारो के काफिले इस आपदा के कारण कीचड़ में धंस गये थे। ऊपर से देखो तो ऐसा लगता था कि किसी नौसखिये राज मिस्त्री ने जमीन पर अनगढ़ टाइल्स लगा दिये हो।

इस प्रलयंकार प्रावन का वर्णन और किस तरह से किया जाये यह इस लेखनी से परे है

अपराधी कौन

(1) दिनाँक 14 जून 2013 को केन्द्रीय मौसम विभाग ने केदार नाथ में बादल फटने की चेतावनी राज्य सरकार के साथ ही केन्द्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान को दी। आपदा प्रबंधन संस्थान ने राज्य सरकार को यह चेतावनी प्रेषित कर दी। आपदा प्रबंधन संस्थान ने राज्य ब्यूरो क्रेसी को वह सूचना भेज दी क्योंकि आवश्यक प्रबंधन उन्हीं को करना था। कोई कदम नहीं उठाये गये।

(2) दिनाँक 17 जून 2013 को संचार माध्यमों से राज्य सरकार को बादल फटने की सूचना प्राप्त हुई। उनका सूचना तंत्र बुरी तरह से असफल हो गया था।

(3) सरकार ने कुछ अधिकारियों को आपदा प्रबंधन के लिये रवाना कर दिया। सरकार को दिनांक 17 जून 2013 तक स्थिति की गम्भीरता का पता नहीं चला।

(4) उसके बाद सेना की सेवायें ली गई। तब तक भारत के सारे राज्य अपने अपने हेलीकाफ्टर और नगद राशि भिजवा चुके थे। पहिले तो उत्तराखण्ड के मुख्य मंत्री कहते रहे कि वे स्वयं ही उस आपदा पर नियंत्रण कर लेंगे पर फिर हर राज्यों से सहायता की अपील करते रहे। उनकी अपील के पहिले ही मध्यप्रदेश सरकार उन्हें पाँच करोड रूपये और पाँच हेलीकाफ्टर भिजवा चुकी थी।

(5) कुछ मुख्य मंत्रियों ने इतनी संर्कीणता दिखलाई कि उनके हेलीकाफ्टर केवल उनके ही राज्य की सहायता करेंगे जैसे कि गुजरात के मुख्यमंत्री

(6) उत्तराखण्ड सरकार को मौसम विभाग ने पहले ही सलाह दे दी थी कि केदारनाथ से लेकर रूद्र प्रताप को वे पूरा खाली करवा दिया जाये और जाने वालो को हरिद्वार पर ही रोक दिया लावे पर ऐसा नही किया जिससे हजारो की जाने गई और अरबों का नुकसान हुआ

(7) गाँधी सागर बाँध को एन केदारनाथ के सिर पर न बना कर कुछ इधर उधर बनाना था।

(8) जो बेघर हो गये थे उन्हें मात्र ढाई हजार रूपये पाँच किलो चावल दो किलो दाल दी गई जो उनका अपमान ही है।

(9) आपदा प्रबंधन विभाग ने केदारनाथ बसाने के लिये एक सुरक्षित स्थान बतलाया था। उसकी अनदेखी की गई।

(10) लोगो को रिवरव्यू मकान बनवाने के लालच में खतरनाक क्षेत्र यानि नदियों को लगभग अंदर मकान बनवाने की अनुमति क्यों दी गई।

(11) केदारनाथ, ब्रदीनाथ, गंगोत्री और जमनोत्री जाने के लिये पहिले से पंजीकरण क्यों नहीं किया जाता जैसे के अमरनाथ के लिये किया जाता है।

(12) हमारे प्रधानमंत्री और श्रीमती सोनिया गाँधी ने लाशो का हवाई सर्वेक्षण किया। जनता अपेक्षा करती थी कि हमारे देश का प्रमुख उनके बीच थोड़ी देर के लिये ही सही उनके दुख दर्द को सुने जैसा कि स्वर्गीय राजीव गाँधी या स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाँधी किया करते थे।

(13) न तो उत्तराखंड के मुख्यमंत्री और न ही केन्द्र सरकार ने इस आपदा के लिये उनकी गलती मानी न ही ब्यूरो क्रेसी को लगभग दस हजार मौतो के लिये फटकारा। किसी को इस प्रलय के लिये पश्चाताप तक नहीं हुआ। केवल उन मूल्यवान जानों के लिये कुछ रूपये दे देना आँसुओं और जानों की कीमत नहीं।

जिनको सेल्यूट किया जाना चाहिये

(1) सेना की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। लगभग 5 हजार पायलटो ने 1500 उड़ाने भरकर पैदल सेना के साथ एक लाख से अधिक लोगो की जान बचाई। इस अभियान में 20 पायलट और सैकड़ो सैनिक मारे गये। उन्होने अपनी जान पर खेल कर एक लाख से अधिक जाने बचाई। पैदल सेना ने अस्थाई पुल बना कर रोप वे बना कर पीठ पर लोगो को लाद कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। हेलीकाफ्टर रसद पहुँचाई यहाँ तक कि अंतिम क्रिया के लिये लकड़ियाँ तक पहुँचाई। शुद्धिकरण के लिये ऊपर से छिड़काव किया।

(2) चालीस हजार वर्ग किलो मीटर के क्षेत्र में फैला यह विश्व का सबसे बड़ा बचाव (रेसक्यू) अभियान था। उन जाने अनजाने शहीदो को पुनः करबद्ध प्रणाम।

(3) उन प्रान्तो के मुख्य मंत्रियों को जिन्होनें बगैर भेदभाव के आर्थिक सहायता, हेलीकाफ्टर और मानवीय सहायता पहुँचाई। इनमें मध्यप्रदेश, कर्नाटक प्रमुख हैं उत्तराखण्ड सरकार को राज्यों द्वारा ही 140 करोड़ रूपये प्राप्त हुये। इतने ही केन्द्र सरकार ने प्रथम किशत के रूप में दिये।

(4) उत्तराखण्ड सहित सभी राज्यों के सभी चिकित्सालयों को जो सड़ी लाशो के बीच सेवाऐं दे रहे है सभी गैर सरकारी स्वयंसेवी संस्थाओं को।

(5) हमारे राष्ट्र के सभी नेताओं को जो सभी तरह की सहायताओं का नेतृत्व कर रहे है।

(6) हमारे देश के नागरिकों को, जो भयंकर मंहगाई और विपन्नता में आर्थिक सहायता पहुँचा रहे है। उन संसद सदस्यों को जो 50-50 लाख रूपये की आर्थिक सहायता दे रहे है उन सरकारी कर्मचारियों को जो एक दिन या एक माह का वेतन इस राष्ट्रीय आपदा में समर्पित कर रहे है। इस राष्ट्रीय आपदा में सहानुभूति रखने वाले सभी नागरिकों को।

(7) विदेशी सहायता को

(8) हमारे देश के प्रायवेट दृष्य एवं श्रव्य माध्यमों को जिन्होने इस आपदा की भयंकरता राष्ट्र को बतलाई एवं गुमशुदा लोगो को उनके रिश्तेदारों को मिलवानें में अपनी मूल्यवान जगह दी।

(9) समाचार पत्रों को जिन्होनें पाठको तक समस्या की भयावहता पहुँचाई।

(10) राष्ट्रीय माध्यमों को

(11) उन सब कर्मचारियों को जो आपदा प्रबंधन में लगे है

अब क्यों करें ?

(1) लास्ट एण्ड फाउण्ड (गुमशुदा व्यक्तियों की तलाश और उन्हें घर तक पहँुचाना)

(2) बीमारियों की रोकथाम

(3) जिनके घर एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान ढह गये है उन्हें दुबारा खड़े करने में सहायता करना

(4) सभी तीर्थ स्थानों की एक मास्टरप्लान सर्वे के पश्चात विशेष इंजीनियरों से बनवाना एवं उसका कठोरता से पालन

(5) नदियों के किनारे कोई भी मकान न बनाने देना

(6) बिजली इत्यादि के लिये धार्मिक स्थलो से छेड़छाड़ न की जावे जैसी कि धारादेवी के मंदिर को तोड़ा गया।

मनोरंजन क्षण

(1) नरेन्द्र मोदी ने कहा कि केवल उनके आकर्षण से पन्द्रह हजार लोगो की जाने बच गई।

(2) उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री का लड़का उसकी पत्नि को इस त्रासदी में भी हेलीकाफ्टर से त्रासदी के ऊपर घुमाने ले गया।

(3) बी.जे.पी. नेताओं को पहिले वहाँ जाने से मना किया फिर कांग्रेस के नेता चिल्लाने लगे कि वे सहानुभूति बतलाने तक नहीं गये।

(4) देश के गृहमंत्री शिन्दे का बयान कि नरेन्द्र मोदी को उत्तराखण्ड जाने से रोका गया क्योंकि राहत कार्यो में रूकावट पड़ती है फिर राहुल गाँधी को वहीं जाकर सैनिको का सूट खाली करवा कर उन्हें उसमें रूकवाया गया।

(5) पी. चिदम्बरम ने कहा कि जब मोदी के एक दिन जाने से पन्द्रह हजार जाने बच गई तो उन्हें दस दिन वहीं रोकना था। डेढ़ लाख जाने बच जाती। बेकार सेना को तकलीफ दी।

शासन नहीं चलेगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हर जगह लाइन लगी बस ये जवाब है
शासन नहीं चलेगा कि कम्प्यूटर खराब है
कुर्सी की कोशिश है कि टांगे टूटती सी हों
टांगो से कुर्सी करती आज भाव ताव है
खुद का बदन खाता हुआ कैसा दिमाग है
बदन है मजबूर जो किस्मत खराब है
स्विस बैंक के आगे झुके है देश भक्त
मुल्क परस्तो का उससे ही लगाव है
टेक्स से हो जायेगी खुश भुखमरी कैसी जनता
वजीरे खजाना का ये कैसा हिसाब है

मखमली ख्वाब

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तमतमाये जनाब लगते है यही उनके जवाग लगते है
ख्वाब में जब जनाब आते है
मखमली से वे ख्वाब लगते है
उनकी बातें भी अच्छी लगती है
जवाब ला जवाब लगते है
जुल्फ गिरती है सुर्ख चेहरे पर
हुस्न में वे हिसाब लगते है
नकाब रूख पे डाल लेते है
गुफ्तगू वा नकाब करते है
मेरे कहने पे चुप ही रहते है
हम क्या इतने खराब लगते है ?
बदन है चलता फिरता मय खाना
हर नजर में शराब लगते है

मोड़ो पर क्रान्ति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अगर जुल्म वह ढायेगी।
उलट सियासत जायेगी।।
तुझमें खुद्दारी होगी।
मंजिल चल कर आयेगी।।
जमीं पसीने से सींचो।
बदली ऊपर छायेगी।।
क्रान्ति खड़ी मोड़ो पर है।
वह रूक न अब पायेगी।।
नेता राशन खायेगा।
क्या पब्लिक तब खायेगी।।
अमर शहीदों की गाथा।
जनता हरदम गायेगी।।

लिख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

डांट सुनों लाचारी से।
क्या लड़ना अधिकारी से।।
अगर जुये में जीत गये।
तय है मार जुआरी से।।
बन्दर कितना उछलेगा।
डोरी बंधी मदारी से।।
लिखा हुआ है किस्मत में।
जीना मारा मारी से।।
शान बताने वाले सब।
पिच कर मरे उधारी से।।
पकड़ेगा और खायेगा।
दूरी बना शिकारी से।।
मन्दिर का दरवाजा में।
है प्रभु त्रस्त है पुजारी से।।
दूबो पर बिखरी शबनम।
देखो उतर सवारी से।।
इन्कलाब में हिस्सा लो।
उतरो जरा अटारी से।।
मेहनत कश पर भी तो लिख।
अपनी कलम दुधारी से।।

आवारा हूँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं इतना नाकारा हूँ।
मैं खुद से ही हारा हूँ।।
गिरकर बिना सहारे के।
उठता नहीं दुबारा हूँ।।
कंधो पर लाठी उसका ।
मैं ही एक सहारा हूँ।।
मेरी मंजिल तय कर दो।
फिरता मारा मारा हूँ।।
कोई कलन्दर कहता है।
कोई कहे आवारा हूँ।।

अब के बाद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

फिर से करने बरबाद न आये।
कड़वी कोई बात याद न आये।।
लगा है खिलने चमन फिर उसको।
करने तूफां से बरबाद न आये।।
कुछ भी है पास नहीं देने को।
मांगने कोई इमदाद न आये।।
बंद हो चुका है खाली पिंजरा।
करने आबाद कोई न आये।।
आज भी "डायर" की ही चलती है।
निराश होने आजाद न आये।।
करके उदास खुशी जाती है
कोई खुशी अब के बाद न आये।।

मेरे देश की धरती

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हर पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को मेरे देश की धरती सोना उगलने लगती है। सबसे पहिले यह तथ्य अभिनेता मनोज कुमार को मालूम हुआ। उसकी फिल्म उपकार ने सोना बटोरा। फिर तो हर चैराहे स्कूल सरकारी दफ्तरो की धरती

सोना उगलने लगी। भोंपुओं से हर जगह यह गाना बजने लगा कि मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।

पड़ोसी देशो के कान खड़े हो गये। उन्होने सोचा कि भारत में तो बगैर मेहनत किये ही देश की धरती का चप्पा चप्पा पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को सोना और हीरे और मोतियों को उगलने लगता है। तभी तो वहाँ के मंत्री और उच्चाधिकारी स्विस बैंक नामक खाली मटके को लबालब भर देते है। अस्पष्ट सूचनाओं से ज्ञात होता है कि स्विटजरलैण्ड के लोग इस उद्देश्य से यज्ञ करते है कि देव भूमि भारत में भ्रष्टाचार खत्म न हो जायें नहीं तो स्विटरलैण्ड समेत कई देशो को हाथ में कटोरा लेकर भारत से ही भीख मांगना पडेगी।

मेरे देश की धरती रेत और कोयला भी उगलती हैं जिसकी दो चीजें बनती है। फाइलें और सोना। सोना तो स्विटरलैण्ड के बैंको में चला जाता है और फाइलें गायब हो जाती है। रेत और कोयला से सोना बनाने की एक निश्चित रासायनिक प्रक्रिया होती है। पहले रेत और कोयले का अवैधानिक खनन होता है। यहाँ माफिया नामक उत्प्रेरक काम करता है। जिससे खनन प्रक्रिया तेज हो जाती है। और रेत और कोयले से सोना बनाने की प्रक्रिया से उत्पन्न सोना बैंक नामक कारखानें में डाला जाता है। जिससे स्विटरलैण्ड समेत कई देशो का विकास होता है। बदले में वे देश भारत में जहरीली दवाओं को कारखानों में संग्रहित करते है और भोपाल गैस काण्ड होते है। भारत वर्ष में नेता और अधिकारी रिश्वत खाते है और भाषण उगलते है। उनके दिमाग खाली रहते है और जनता का पेट। इस तरह सन्तुलन बना रहता है।

भारत वर्ष में सबसे बड़ा धंधा शिक्षा का गोरखधंधा है जो पिछड़े लोगो को समझ में नहीं आता। यहाँ जो पी.एम.टी. के इम्तिहान नहीं देता या पी.एम.टी. में फेल हो जाते है उनका प्रवेश मेडिकल काँलेज में हो जाता है। यही दुर्दशा पी.ई.टी. या उनके व्यावसासिक परीक्षाओं की हो रही है। कुछ भूखे लोग उनके औचित्य पर प्रश्न लगाते हैं। वे तो राजमार्ग पर खड़ी हुई आवागमन रोकने वाली गाया और भंसो पर भी लगाते है। इसके लिये फिल्मों में एक दूसरा गाना है" जिसके बोल है कुछ तो लोग कहेंगे, लोगो का काम है कहना। छोड़ो बेकार की बातें को कहीं बीत न जाये रैना।" यानि भ्रष्टाचार की चांदनी रात नहीं बीतनी चाहिये।

स्कूल और एक कमरे में लगने वाले डिग्री काँलेज, जगह-जगह नकली नोटो की तरह चल रहे है। विद्यार्थियों को मालूम नहीं कि वे क्या पढ़ रहे है और किसलिये पढ़ रहे है ? भारत में नौकरी पढ़ाई से नहीं रिश्वत से मिलती है। यानि अभी दे और बाद में ले। भारत वर्ष में रूपया डालर के मुकाबले नीचे आ रहा है और कीमते ऊपर जा रही है। प्याज और आलू सावन के झूलो की तरह हिचकाले खाते है। लोगबाग पहले सोने के

भाव पूछते थे अब प्याज के भाव पूछते है। अनाज और दाले तो अब खैर आसमान के निवासी होते जा रहे है।

चूँकि रूपये की कीमत चवन्नी से भी कम हो गई है अतः चवन्नी और उससे नीचे के सिक्के का कोई औचित्य नहीं रहा। इसलिये चवन्नी और उससे नीचे के सिक्को को सरकार ने बंद कर दिया। अब तो दस के नोटो की नीलामी होने लगी है। रूपये की क्रय शक्ति क्षीण हो गई।

वह वस्तुओ को टुकुर टुकुर देखता रहता है पर खरीद नहीं पाता। लोकसभा और विधानसभाओं का काम भ्रष्टाचारियों और आतंकवादियों को बचाना भी रह गया है और वे ये काम बखूबी कर भी रहे है। लोकसभा का कर्तव्य आक्रमणकारी देश के आगे गिड़गिड़ाना भी है। अब शासन भ्रष्टाचारियों को बचाये या आक्रमणकारियों से लड़े ? चूँकि भोंपुओं के द्वारा उद्घोषणा होती रहती है कि "मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती" इसलिये पड़ोसी देश सोचते है कि लूटमार में उनका भी हिस्सा होना चाहिये ?

मेरे देश के ही शहर मेरे देश के खेतो, गांवो और जंगलो को खा रहे है। ऐसा लगता है जैसे शहरो के पेट में कोई हवा, भर रहा हो। जंगल फर्नीचर में बदले जा रहे है। चूल्हे के धुंये पर आपत्ति करने वालों के प्रशीतको और गाड़ियों से दम घोटने वाला धुंआ निकल रहा है। उसी से आसमान की ओजोन परत में छेद हो रहा है। गांव जिलो और जिले कमिश्नरी में बदल रहे है। मैं भी इसी आशा में स्वर्ग नहीं जा रहा हूँ कि कभी तो मेरा गांव नोनिया करबल कमिश्नरी बनेगा। इसी लालच में मैं दो तीन बार स्वर्ग से वापिस आ चुका हूँ।

मंत्रियों की गुटकन क्रिया धरती की उगलन क्रिया से अधिक लगती है। थक कर किसी दिन धरती रेत कोयला, गैस, सोना, हीरे मोती यहां तक कि पानी भी उगलना बंद कर देगी पर ये भुक्खड़ भूखे ही रहेंगे।

गांधी जी के तीन बंदर न तो सच सुनते है न ही सच देखना पसंद करते है और न ही सच बोलते है। वे चुगली करते है चुगली सुनते है और न्यायमूर्ति की तरह आँखे बंद रखते है। बंद किस्मती से धृतराष्ट्र की केवल आंखे ही बंद थी हमारी तो आंखे, कान मुंह और हाथ सभी हमने स्वयं ही बंद रखे है। यदि देखते हुये भी भ्रष्टाचार पर हमने रोक नहीं लगाई तो हमारी तो एक भी औलाद नहीं बचना।

अयोध्या में राम मंदिर क्यों न बने ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुलायम सिंह एवं पार्टी को यह भय सताता है कि कहीं अयोध्या में राम मंदिर बन गया तसे उनका मुस्लिम वोट बैंक खिसक जायेगा। उत्तरप्रदेश में जो हिन्दु मुस्लिम दंगे भडकेंगे तो उन्हें रोकना मुश्किल हो जायेगा। शायद मुलायम राम मंदिर का समर्थन करंगे तो उनका और उनके कुनबे का धर्म भ्रष्ट ही हो जायेगा। उनका सिंहासन ही उनसे छिन जायेगा। पाकिस्तान और कश्मीर घाटी में हिन्दुओं का कत्लेआम चालू हो जायेगा। वे शान्ति के मसीहा नहीं रहेंगे। उन्हें नोबल प्राइज से वंचित कर दिया जायेगा। आदि-आदि।

मुलायम सिहं इस के दूसरे चमकदार पहलू को नहीं देखते। अयोध्या में राम मंदिर बनने से उन्हें और उत्तरप्रदेश को कितना लाभ होने वाला है। उत्तरप्रदेश के फैजाबाद (अयोध्या) में राम मंदिर बनाने के पक्ष में सबसे सशक्त पहलू यह है कि यदि मक्का, सलनल्लाहू अलह व सल्लम पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म स्थान होने से पूरे विश्वभर के मुसलमान हज को जाते है तो क्यों नहीं अयोध्या में एक भगवान राम का मंदिर होना चाहिये ? यह मंदिर विश्वभर के हिन्दुओं का एक भव्य तीर्थ स्थान हो जायेगा।

इससे उत्तरप्रदेश में एक और धार्मिक "टूरिज्म" का स्थान बन जायेगा जिससे प्रान्त को अकूत आय होगी। अतः यह प्रान्त के हित में होगा कि अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर बने बल्कि उसे रोम की तरह एक आटोनोमस स्टेट का दर्जा मिलना चाहिये।

जहाँ तक हिन्दु मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगो का प्रश्न है तो ऐसा कुछ नहीं होगा। भारत एक सहिष्णु देश है। उत्तरप्रदेश कश्मीर की घाटी नहीं है जहाँ व्यवस्थित तरीके से

कश्मीरी पंडितो का वध कर दिया गया, वहां से उनकी सम्पति छीन कर भगा दिया गया ? क्या ऐसा मथुरा वृन्दावन में हुआ ? या अयोध्या में ही ऐसा हुआ ?

अयोध्या में रामलला का मंदिर बनना रूकवाकर उन्हें शान्ति में कोई नोबल प्राइज नहीं मिल जायेगा। जब महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू को नोबल प्राइज नहीं मिली तो बगैर धर्म परिवर्तन के मुलायम सिंह यादव को कैसे मिलेगी। मुलायम सिंह यादव बाबर और भगवान राम को समकक्ष रख कर ही अयोध्या में मंदिर या परिक्रमा का विरोध कर रहे हैं। एक तो हम यह कतई मानने को तैयार नहीं कि बाबर भगवान का अवतार था दूसरे बाबर एक आकान्ता था। उसने भारत पर हमला किया था। उसके एक अदना से सिपह सलार द्वारा बनाये एक ढांचे का पक्ष लेकर वे बाबर का ही पक्ष ले रहे है। ऐसा न हो कि इतिहास मुलायम सिंह को मुलायम चंद कहने लगे।

अयोध्या में राम मंदिर बनने पर दंगे कतई नहीं भडकेंगे। क्योंकि वहां राम मंदिर बनने से मुसलमानों के अस्तित्व को खतरा नहीं होगा और यदि दंगे भडकते भी है तो जिस तरह अशोक सिंहल प्रवीण तोगड़िया (24 अगस्त 2013) इत्यादि को जेल में ठूंस दिया गया वैसे ही अयोध्या में राम मंदिर बनने पर दंगाइयों को भी जेल में ठूंसा जा सकता है।

अयोध्या में राम मंदिर बनने से रोजगार के अवसर खुलेंगे। कई दुकानों के बनने से हाथकरघा उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। शिर्डी की तरह कई होटले खुल जायेंगी। फोटोग्राफी बढ़ेगी, टैक्सी रिक्शे और तांगे बढ़ जायेंगे। नये तीर्थ स्थल यथा सरयू का किनारा इत्यादि खुल जायेंगे। परिवहन बढ़ेगा, वस्तुओं की बिक्री बढ़ेगी। अतः प्रान्त के हित में वे रोजगार नवयुवको के हित में उद्योग धंधो के हित में वहां भव्य रामलला का मंदिर बनना ही चाहिये।

अखिलेश यादव को अमर होने का यह अच्छा मौका था। शाश्वत विषयों का सहारा लेकर ही शाश्वत हुआ जाता है। जैसे भगवान राम का विषय लेकर महर्षि वाल्मिकी, महाकवि, तुलसीदास, कालिदास मैथिलीशरण गुप्त इत्यादि हो गये है। इसी तरह यदि दोनो यादव अयोध्या में राम मंदिर बनवाने की पहल करते है या राम मंदिर निर्माण का विरोध नहीं करते है तो इतिहास में अमर हो जायेंगे। और हिन्दुओं के सारे वोट उन्हें मिलेंगे। मुसलमानों के वोट भी कहीं नहीं जायेंगे।

राम जन्म भूमि बावरी मस्जिद का मामला जीवित रखने में मुलायम सिंह की पार्टी को ही लाभ होना हैं। वे हिंसा की एक अन्तधारा जीवित रखना चाहते है। जिससे कुछ सम्प्रदाय उनकी छत्रछाया में रहें। यदि रामलला का मंदिर अयोध्या में बन गया तो विवाद एक दम ही खत्म हो जायेगा। जिसके बाद मुलायम सिंह स्वयं को असुरक्षित

महसूस करने लगेंगे। मगर यह उनकी गलत फहमी है। रामलला का मंदिर बनने से बहुसंख्यक भी उनके समर्थक हो जायेंगे और साम्प्रदायिक सदभाव बनेगा जो सम्भवतः वह नहीं चाहते। अतः मेरे विचार से उत्तरप्रदेश यदि रामलला का मंदिर बनेगा तो

(1) साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ेगा।

(2) धार्मिक टूरिज्म बढ़ेगा।

(3) होटल व्यापार बढ़ेगा।

(4) परिवहन व्यापार बढ़ेगा।

(5) लघु उद्योग बढ़ेगें।

(6) बेरोजगारी कम होगी।

(7) उत्तरप्रदेश की आय बढेगी।

टिप्पणी:- रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद से यह ध्वनित होता है कि भगवान राम का जन्म हुआ था। जबकि भगवान प्रकट होते है जैसे कि तुलसी दास जी ने लिखा है "भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी" भगवान कृष्ण ने भी गीता में कहा है "प्रकृति" स्वाम धिषाय सम्भवाभ्यात्म मायया (अध्याय में श्लोक 6) यह गलत फहमी है कि भगवान राम का जन्म वहीं हुआ था जहाँ बावरी मस्जिद है। पूरी अयोध्या ही रामलला की क्रीडा स्थली है। अतः विश्व हिन्दु परिषद आदि संगठनों को अयोध्या में लगभग बीस एकड़ भूमि में एक भव्य राम मंदिर बनवा कर संगठन का नारा भी इतिहास में अमर कर लेना चाहिये।

दिक्कतें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बहुत हैं दिक्कते जमाने में
क्या उन्हें फायदा गिनाने में ?।।

जिन्दगी एक निकल जाती है
ईंट पर ईंट एक जमाने में ।।
एक मिसरा गजल का कागज पर,
उम्र ढ़ल जाती है सजाने में।।
अश्क गम के, खुशी के, गुस्से के,
है कई मोड़ एक फंसाने में ।।
जिन्दगी है, गुलाम होने की,
क्या मिलेगा सबब बताने में ।।
साज ने साथ न दिया जिसका,
है बहुत दर्द उस तराने में ।।

दृढ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह जब हठ पर अड़ता है
थोड़ा दबना पड़ता है।।
जूता वजनदार सिर पर,
पैरो में वह गड़ता है।।
इम्तिहान में फैल हुआ,
घर पर आकर लड़ता है।।

हक पाने रिश्वत दी है
यह भी करना पड़ता है।।
कब घर कन्धे पर लेगा
बेटा धीरे बढ़ता है।।
बाप मरा, झगड़ा घर पर
कुनबा अभी बिखरता है।।

सहारे से डरना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बहुत डरती है वह सहारे से।
खौफ कश्ती को है किनारे से।।
चमक रूतवा दिला ही देता है
जर्रा भी कम नहीं सितारे से।।
गड़ते है कब्र में भी कुछ कंकड़
कैसे समझाये हम इशारे से।।
एक पोखर में आस्मां डूबा
चमकते उसमें चांद तारे से।।
उन्हें खंजर की क्या जरूरत है
मार देते है वो इशारे से

खाई के उस तरफ महल ऊंचे
यहां महरूम हम गुजारे से।।
जब भी खोला तो निकली मंहगाई
चैन निकली नहीं पिटारे से ।।
मौत डाका है छेड़खानी है
रंगे अखबार बंद नजारे से।।

बने रहो प्रधानमंत्री

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अािखरकार प्रधानमंत्री को लोकसभा में आना ही पड़ा। उनके पी.ए. के पास एक ब्रीफकेस था जिसमें मेडम पी.एम. के द्वारा बाजार से सामान लाने के लिये सूची दी हुई थी। मगर उनके समर्थको को उससे वितरित किये जाने वाली मुद्रा और विरोधियों को मुद्रा नामक कटी पतंग पर श्वेत पत्र दिख रहा था।

प्रधानमंत्री जी ने कंू कंू करने वालो को स्नेहसिक्त और भौकनें वालो को ज्वालामुखी नजरों से देखा। फिर उन्होने लावा उगला "अध्यक्ष महोदय कृपया, हमें बतलाया जाये कि हमें क्यों बुलाया गया है। हमारे पास समय कम है। हमें बाजार से सामान लाना है।

इस पर सत्तारूढ़ दल ने टेबिल थपथपाई तो विरोधी दल ने "शर्म शर्म" के नारे लगाये। विरोधी दल के नेता ने कहा "अध्यक्ष जी, इनसे पूछिये कि ये क्या "हमाम" में नहाने या "स्पा" में मालिश करवाने आये है समय तो हमारे पास भी नहीं हैं। हमने भी

हमारी दिल्ली वाली पत्नियों को समय दे रखा है। हम ऐसे प्रधानमंत्री इस्तीफा मांगते है जिसे अपना होश भी नहीं है।"

अध्यक्ष जी ने व्यवस्था दी कि जब आपका बहुमत आ जाये तो आप इनसे तो क्या हमसे भी इस्तीफा मांग लीजिये। अभी तो फिलहाल ये ही प्रधानमंत्री बने रहेंगे। इस पर फिर सत्तारूढ़ दल ने मेजे थपथपाई। प्रधानमंत्री के पी.ए. ने उनके कान में कहा "यार तुम्हे रूपैय्या के गिरते स्तर पर काला सफेद करना है।" फिर सेल्यूट कर के तन के खड़े हो गये। प्रधानमंत्री जी ने फिर कहा ओ. हाँ रूपया डालर के मुकाबले नीचे जा रहा है। यह भी हो सकता है कि डालर ऊपर जा रहा हो और रूपया वहीं हो। "विरोधी दल का एक सदस्य बोला" तो डालर को पकड़ कर रखो न।"

प्रधानमंत्री बोले "हमें प्रजातंत्र ने एक करने से रोक रखा है। हरेक को ऊपर या नीचे जाने की आजादी है। ऐसा हमारे संविधान की प्रस्तावना में लिखा है। आप भी चाहे तो बर्हिगमन कर सकते है। आपको किसने रोका हैं यह है रूपये के नीचे गिरने पर श्वेत पत्र ? विरोधी पार्टी के सदस्य अवाक रह गये एक ने चीख कर कहा "फिर आप काहे के प्रधानमंत्री है।"

प्रधानमंत्री जी ने अपनी स्थिति स्पष्ट की "आपने खेत में कठबबुआ देखा है ? यह एक बांस और कपड़ो का पुतला होता है जो पक्षियों को डराने के काम में आता है। अब जिसको डरना हो, डरे और जिसको नहीं डरना हो न डरे। कुछ ढीट पक्षी उस पर बैठ कर बीट कर देते है और कुछ
उसमें घोंसला भी बना लेते है। बस वही हालत हमारे दल में प्रधानमंत्री की हो गई है।

प्रधानमंत्री की देश में यह हालात देख कर सत्ता रूढ़ के दल के कुछ सदस्य रो दिये। कुछ सुबकने लगे तो विरोधी पार्टी के सदस्य शर्म शर्म के नारे लगाने लगे। विरोधी पार्टी के सदस्य बोले प्रधानमंत्री जी आपको देश चलाना है।

मेरी क्या औकात प्रधानमंत्री ने जवाब दिया "यह भारत हमारी मां है। हम कैसे मां को आदेश दे सकते है कि तू चल। "किसी भी सदस्य ने ऐसा प्रधानमंत्री नहीं देखा था। ऐसे प्रधानमंत्री की मिसाल तो किसी भी देश में नहीं थी। एक विरोधी गला फाड़ कर चीखा" आपको डालर को नीचे लाने के लिए उस पर लटकना चाहिये।

"हम उसी पर लटके है अब वित्त मंत्री बोले। हमें आपका सहयोग भी चाहिये हम डालर पर लटके है। इसीलिये रूपये की पतंग कट गई। प्रजातंत्र तें 1 रूपया भी नीचे गिरने के लिये स्वतंत्र हैं हम यदि उसे नीचे गिरने से रोकेंगे तो उसकी व्यवक्तिगत स्वतंत्रता का हनन होगा। विरोधी पार्टी के लोग इस देश द्रोह पर भड़क गये। इस पर प्रधानमंत्री ने खुद के ही विरोध में अविश्वास का प्रस्ताव पटक दिया विषय था प्रधानमंत्री कठपुतला है। विरोधी तो विरोधी सत्तारूढ़ के सदस्य भी चकरा गये।अब तीन

खेमे हो गये आगे सत्तारूढ़ दल के सदस्य बैठे। बीच में उनके सहयोगी सदस्य बैठे। उनकी कंधो पर लिखा था बिक्री के लिये। और पीछे विरोधी पार्टी के सदस्य बैठे। विरोधी पार्टी के सदस्यों ने उनसे कहा जब आप सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्य नहीं है तब आप पीछे क्यों नहीं आ जाते।

उनमें से एक बोला "सभा का उल्टा होता है भास यानि काम कुछ न हो उसका आभास मात्र देता रहे। हम सब लोग वकील है। जब तक हमारा प्रश्न है तो हमें बीच में इसलिये बैठे है कि यदि
कीमत लगी तो बर्हिगमन कर जायेंगे और यदि हमारे मत को कीमती नहीं समझा गया तो हम मत डालेंगें।"

मत विभाजन हुआ सारे मत अध्यक्ष महोदय ने इकट्ठे किये और घर ले गये। उन्होंने परिणाम अगले दिन घोषित करने का एलान किया। अगले दिन सत्तारूढ़ पार्टी के सारे सदस्य पर विरोधी पार्टी का एक ही सदस्य उपस्थित था क्योंकि मत विभातन का परिणाम मालूम था।

सभापति महोदय ही परिणाम दिया कि तीनो तरह के मतों से आप प्रधानमंत्री पद पर बने रहेंगे। विरोधी बेंचों से फिर शोर उठा शेम-शेम। सत्तारूढ पद के सदस्य चकरा गये कि एक आदमी के टेंटुये से बहुत सारे लोगो की आवाज कैसे निकल सकती है। उसे पकड़ लिया गया तो उसके पास के मोबाइलो में ऐसी आवाजें भी हुई थी। अब सभापति को समझ में आया कि विगत दिन भी सभी विरोधी पार्टी के सदस्य आपस में बातें कर रहे थे पर आवाजें शेम-शेम की आ रही थी।

परसा परसू परसराम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

माया तेरे तीन नाम
परसा परसू परसराम

रुपैय्या पहले रूपी था। फिर रूपया हुआ अब रूपैय्या हो गया। एक डालर में सत्तर रूपये समाने लगे। सत्तर रूपये गये तो डालर के पेट में, पर उसका सीना फूल गया। पेट नहीं फूला। पौंड, यून, लीरा, फ्रैंक, यूरो इत्यादि ने डालर के सम्मान में बैंकाक में एक पार्टी दी। उसमें रूपैय्या को नहीं बुलाया क्योंकि वैसे ही एक डालर के पेट में सत्तर रूपैय्या मौजूद था।

मगर ठसियल रूपैय्या कहां मानने वाला था। वह बगैर बुलाये पानी के रास्ते चला गया। उसे सभा स्थल पर दरबान ने घुसने से रोक दिया। देखते ही कहा "नेवाल पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि के रूपयो तक को घुसने की अनुमति है पर भारत के रूपय्या को घुसने की अनुमति नहीं है वहां दिवालिया मुद्रा नहीं जा सकती।"

रूपैय्या ने विदेश सचिव से पूछा क्या करना चाहिये। विदेश सचिव ने टाई की नाट ठीक करके दरबान से कहा "नहीं व्ही आर नाट रूपैय्या । व्ही बार वन सेवन्टीन्थ आफ ए डालर हेन्स व्ही केन एन्टर"
(इसका मतलब यह हुआ कि हम रूपैय्या नहीं है। हम डालर का सत्तरवा हिस्सा है। इसलिये अंदर जा सकते हैं।) भारत में आजकल बगैर झूठ, अंग्रेजी और पहँुच के कोई काम नहीं होता। अतः मुफ्त में पकवान खाने के लिये वह तम्बू का परदा उठा कर घुस गया। पास की कैंसी उठ कर आगे चली गई। अन्दर डालर का भाषण चल रहा था।

प्रथम तो हम विश्व बैठक के आभारी है जिसने इंडिया को मुक्त व्यापार करने के लिये विवश कर दिया। हम इंडिया के प्राइम मिनिस्टर मेन मोहन के आभारी है और उनके कोर्टरी (चम्मचो) को धन्यवाद देते है जिन्होने रूपैय्या को दिवालिया होने के कगार पर ला दिया। हम वहां की देशी और विदेशी ताकतों जैसे मेनहुक सिहं हेलु वालिया आदि और सत्तारूढ़ रू.पी.ये के आभारी है जिनके कारण मेरा एक डालर सत्तर रूपैय्या खा लेता है।

हमें चाइना का विशेष आभारी होना चाहिये जो इंडिया की जमीन और उसके बाजार पर कब्जा करता जा रहा है। अब तो पाकिस्तान की बनाई इंडियन करेंसी वहां चल रही है वहां के बैंको ए.टी.एम. मशीनों, दफ्तरों, बाजारो में तक मेड इन पाकिस्तान इंडियन करेंसी चल रही है। पाकिस्तानी इंडियन करेंसी मुफ्त खोरो की तरह बगैर

टिकिट ए.सी. वन में चल रही है और इंडियन करेंसी को टिकिट लेने के बाद भी सेकेण्ड (थर्ड) क्लास में भी जगह नहीं मिल रही।

इस पर शेष सारी मुद्राओं ने तालियां पीटी तो रूपैय्या के विदेश सचिव तक ने बगैर तालियां पीटना चालू कर दी। सब हंसने लगे तो रूपैय्यों भी विदेश सचिच के कहने पर ताली बजाने लगा और ठेठ देहाती स्वर में हंसने लगा।

विदेश सचिव ने उसे चुप करने के लिये च्यूंटी काटी तो वह "उई" करके चीख उठा और बोला "जो कौन हमें च्यूटीं काट रओ है।" सबका ध्यान उस तरह खिंच गया। कोई उसे पहचानता नहीं था। सब डालर को पहचानते थे। सभा में सब मुद्राओं की नई पीढ़ी आ गई थी। अब सत्तर साल पहले की याद किसे थी जब रूपैय्या रूपी था और डालर से आंखे मिलाता था। उन्होने सोचा कि मालद्वीप टाइप किसी छोटे द्वीप की मुद्रा अन्दर घुस आई है।

रूपैय्या को छोड़ कर विदेश सचिव झेंप कर बाहर चला गया। इसके बाद चीन उठा। उसने बोलना चालू किया "कामरेड डालर (यह सुन कर डालर का मंुह लाल हो गया) आपके पेट फूलने
का कारण इंडिया आपकी तबियत नहीं है। इंडिया की वह ईमानदारी है जिसे सस्ते में खरीदा जा सकता है। वहां आदमी तभी तक ईमानदार रहता है जब हम उसे रिश्वत नहीं मिलती है। आज दुनिया का हरेक देश मेरी दुधारू गाय के गले में पट्टा बांधने का प्रयत्न कर रहा है।

अपने नो मेन्स लेन्ड को चीन द्वारा अपनी पालतू गाय बताने पर अमेरिका और ब्रिटेन की भौहे तन गई। उस ब्रिटेन ने अमेरिका को इशारा किया तो अमेरिका ने अपने बमवर्षक चीन की तरफ कर दिये। चीन ने भी अपने बमवर्षक उसकी तरफ कर दिये पौड, यूरो, डालर इत्यादि एक तरफ हो गये और चीन की मुद्रा पर झूम गये। ब्रिटेन के पौण्ड ने मंुह से झाग निकालते हुये कहा रे चीन की मुद्रा, इंडिया का रूपी हमारी देन था जिसकी औलाद ये कमजोर रूपैय्या है। वह तेरी बकरी कैसे हो गया। वह हमारी भेड़ है और हम उसके चरवाहे। उसको मंूडने का अधिकार हमें था हमें है और हमें रहेगा।

इस झूमा झटकी में सब मुद्राओं के कपड़े उतर गये। तो अध्यक्षीय विश्व बैंक ने कहा आप लोग शांत हो जाइये। रूपैय्या जैसे लजीज खाने का अधिकतम हम सबको है। यह गलत है कि अकेला स्विस बैंक उसे चाटे जा रहा है। जब तक इंडिया ब्यूरोक्रेसी है तब तक वहां यूरोकेसी है वहां का लाल फीता वहां की प्रगति रोके हुये है। इससे मंत्री खरब पति सरकारी नौकर अरब पति हो गये है इस तरह से वे हमारे भाई हुये क्योंकि डाकू डाकू साडू भाई।

रूपैय्या से नहीं रहा गया। वह बोला नहीं हुजूर कहावत तो चोर-चोर मौसेरे भाई है। "ठीक है विश्व बैंक बोला "तुम्हारा सुझाव भी मान लेते हैं मगर तुम हो कौन ? जी हूजूर, मैं ही रूपैय्या हँू रूपैय्या बोला मेरी इज्जत चिड़थे हो गई है। भारत के आईबीआई, सीबीबाई, एफबीआई और जितने भी बी. आई है सब हांफने लगे है। वे मुझे गिरने से रोक नहीं पा रहे है मुझे खुद नहीं मालूत कि मैं कितना गिरूंगा। भारत में किसका शासन चल रहा है यह किसी को नहीं मालूम प्रजातंत्र में प्रजा से तंत्र ताकतवर है गया है। प्रजा को तंत्र का गुलाम बना दिया गया है। नौकर मालिक हो गये है और मालिक भिखारी। सरकार ने वहां की प्रजा को स्वाभिमानी बनाने के बजाय कटोरे पकड़ा दिये है। श्रम पर आधारित तंत्र नहीं है। मध्यवर्गीय उच्चवर्गीय और निम्नवर्गीय पाटों के बीच में अनाज बना दिया गया है।

यह हकीकत बयानी किसी को रास नहीं आई और सैनिको के द्वारा रूपैय्या को बाहर फिंकवा दिया गया।

ज्यादा तादाद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

फिर से करने बरबाद न आये।
मुझको महबूब याद न आये।।
साथ में मैं भी चला जाऊँगा।
मांगने कोई इमदाद न आये।।
खुशी भी गम में बदल जाती है।
कोई खुशी अब के बाद न आये।।
एक ही खैरख्वाह ने लूटा।
उनकी ज्यादा तादाद न आये।।

जरा सी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दूर झुरमुट में खड़ी है उदासी
किसी ने बात कह दी है जरा सी।।
जाने क्यों याद उसकी है खफा कुछ
बात कुछ ज्यादा नहीं, है जरा सी।।
शोर करती है बहुत छत हमारी
लगी मेघो की झड़ी है जरा सी।।
शाखे दो बहस करती है ज्यादा
दूसरी से एक बड़ी है जरा सी।।
पूरा नाटक यहां बिखरा पड़ा है
कहीं टूटी हुई एक कड़ी, है जरा सी।।

चीखें हैं आलाप यहाँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घर उसका पर हर कोना बेगाना है
        वही शख्स उस घर में बहुत पुराना है
जब घर में था कितना अपना लगता था
        अब बजार में बनता वह अनजाना है
पहले इस घर में घर वाले रहते थे
        अब न जाने किनका आना जाना है
जंगल में अब पेड़ नहीं है, गमले है
        जाऊँ उनको मिट्टी पानी लाना है
कोई नहीं दिल से जो दिल की सुनता हो
        जेबो से जेबो का फकत जमाना है
खनक छुरी की चीखे हैं आलाप यहाँ
        इन्हीं धुनों पर जीवन हमें बिताना है

छू लूँगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

छोड़ कर भीड़ को मैं किधर जाऊँगा।
        जो रहूँगा अकेला, बिखर जाऊँगा।।
जो दिया एक दम, ले लिया किश्त में।
        देते देते ही किश्ते गुजर जाऊँगा।।
हूँ गुनहगार, मैं, साथ में तो रखो।
        साथ रहते हुये मैं सुधर जाऊँगा।।
आइना था वहीं मैं बदलता रहा।
        यूँ बदलते सफर पूरा कर जाऊँगा।।
मैं पकड़ता रहूँ तुम फिसलते रहो।
        तुमको छू लूँगा तो मैं सिहर जाऊँगा।।

द्रोणाचार्य एक आदर्श शिक्षक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

द्रोणाचार्य ऐसे पहले गुरू थे जो शिक्षण संस्थाओं को गुरूकुलों से नगरों में लेकर आये। उन्होने पाठशालाओं की अवधारणा दी। उन्होने गुरूकुलों को पाठशालाओं में बदला। उनके पूर्व विद्यार्थी गुरूकुलों में जाते थे। वहां परीक्षायें वस्तुनिष्ठ नहीं होती थी। व्यक्तिनिष्ठ होती थी। परीक्षा परिणाम ऋषि पत्नियों की इच्छा पर भी आधारित रहते थे। गुरू ने यदि कह दिया कि जंगल में सौ गायों को लेकर जाओं और जब तक वे सहस्त्र गायें न हो जाये तो वापिस मत आना, बस यही परीक्षा हो गई। या ऋषि पत्नि में कह दिया कि किसी रानी के कुण्डल लेकर आना है तो शिष्य को उतीर्ण होने के लिये वही कुण्डल लाना पड़ते थे। यहां तक कि भगवान कृष्ण को गुरू पत्नि का मृत पुत्र लाना पड़ा था।

दूसरी ओर द्रोणाचार्य ने व्यक्तिनिष्ठ परीक्षा से हट कर वस्तुनिष्ठ परीक्षा की परम्परा प्रारम्भ की। उन्होने शिष्यों की योग्यता परखने के लिये मल्ल, तीरंदाजी इत्यादि का सार्वजनिक रूप से परीक्षाओं में समावेश किया। उन्होने परीक्षको के रूप में संबंधित विषयों के निष्णात व्यक्तियों को रखा।

उन्होने शिष्यों के विषय में निमग्न होने की योग्यता का परीक्षण किया। दूर शाखा पर एक पक्षी रखा। तीर से उसकी आँख भेदने की परीक्षा ली गई जिसमें अर्जुन सफल रहे थे। उस समय तक गुरू दक्षिणा की प्रथा भी थी। जब शिष्यों ने आग्रह किया तो उन्होने राजा दुरपद को पराजित कर कैद करके लाने को कहा। यह इसलिये कि जब दुरपद के साथ द्रोणाचार्य गुरूकुल में थे तब दुरपद उनसे दोस्ती का दम भरते थे। पर शिक्षा समाप्त होने पर द्रोणाचार्य के पास अश्वसथामा को पिलाने के लिए दूध भी नहीं था। द्रोणाचार्य को अपने राजा मित्र द्रुपद की याद आई। वे सहायता के लिए दुरपद के पास पहुँचे तो द्रुपद ने उन्हें अपमानित करके भगा दिया। दूसरी तरफ भगवान कृष्ण और सुदामा की आदर्श मित्रता का उदाहरण है जहां भगवान ने अपने गरीब मित्र के पैरो का प्रक्षालन स्वयं के आंसुओं से किया और बगैर किसी आडम्बर के भगवान ने सुदामा की पत्नि के द्वारा भेट किये गये चावलों को प्रेमपूर्वक खाया।

द्रुपद को अर्जुन ने पराजित कर दिया और बंदी बनाकर द्रोणाचार्य के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। द्रोणाचार्य ने कृपा कर द्रुपद को आधा राज्य वापिस कर दिया। इतने क्षमाशील थे गुरू द्रोणाचार्य। इससे अपमानित होकर द्रुपद ने यज्ञ किया जिससे उनकी संतान द्रोणाचार्य का वध कर सके। यह जानते हुये भी कि धृष्टधुम्न उनका वध करेगा गुरू द्रोणाचार्य ने धृष्टदुयुम्न को शिक्षा दी। वे विशालहृनदय गुरू थे।

द्रोणाचार्य को जो आलोचना की जाती है वह उनके द्वारा शिष्य एकलव्य का अंगूठा मांगने पर की जाती है। मगर पहली बात तो यह है कि एकलव्य द्रोणाचार्य के शिष्य नहीं थे। एकलव्य उनसे शिक्षा मांगने जरूर आये थे पर प्रतिबद्धता के कारण उन्होने एकलव्य को शिक्षा देने से इंकार कर दिया था। अतः एकलव्य उनके शिष्य नहीं थे। फिर एकलव्य गुरूदक्षिणा देने के लिए तैयार हो गये। तो द्रोणाचार्य ने उनका अंगूठा मांग लिया। वह इसलिये कि एकलव्य ने एक स्वमी भक्त निरीह जानवर का मंुह वाणों से भर दिया था। वहीं दूसरी ओर युदिष्ठिर का उदाहरण है जो एक कुत्ते के लिये स्वर्ग तक ठुकराने के लिये तैयार हो गये थे।

द्रोणाचार्य ने युद्ध में कौरवों का साथ दिया। यह उनका राज्य के प्रति प्रतिबद्धता के कारण था। उस समय वह एक शिक्षक नहीं वरन् शासकीय सेवक थे। उन्हें उन्हीं के शिष्यों के द्वारा धोखे से मारा दिया गया। जिन शिष्यों को उन्होने पुत्रव्रत शिक्षा दी थी उनमें इतनी योग्यता एवं साहस नहीं था कि ईमानदारी से लड़कर द्रोणाचार्य को हराते।

गरीबो के सपने

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गरीबों का सपना दो वक्त की रोटी होता है। पर नेता जी ने कहा कि उन्हें बड़े सपने देखना चाहिये हवाई जहाज की ऊँचाई के। नेता जी प्रबन्धन का कोर्स किये हुये है वे चुनावच जनकल्याणकारी नीतियों से नहीं “याहू डाट काम” से जीतते है। बहुत बड़ा जाइू है यह। यहां गरीब, भूखो मरते जाते है वहां नेता जी चुलाव जीतते जाते है। सालमें जितनी आत्म हत्यायें होती है उतने ही वोटो से वे जीतते है।

वे साठ साल से गरीबों को हवाई जहाज का सपना दिखाते आ रहे है। गरीबो का हवाई जहाज रोटी के आकार का होता है जिसमें पंख लगे रहते है और वह उड़ जाती है। प्याज और रोटी आसमान पर पंख लगा कर उड़ जाती है और गरीब उनके सपनें नींद में देखता रहता है भूखे पेट नींद आती नहीं। और रात्रि नींद आती है तो सपनें में रोटी देख कर उड़ जाती है।

एक दिन नेता जी गरीब से मिले और पूछा तुमने हवाई हजाज का सपना देखा कि नहीं गरीब बोला हुजूर हमारे कोई सपनें नहीं होता है हमारा पेट की हमारा सपना

है। हम उसको भरने के लिये ही मेहनत करते है। आप सपना दिखाने से अच्छा था कि काम दिला देते।

नेता जी रूष्ट हो गये। वे चाहते थे कि गरीब हवाई जहाज का सपना देखे मगर गरीब पेट से ऊपर उठ ही नहीं रहा था। दूसरे दिन उन्होने चमचों को उसकी झोपड़ी में भेजा और उसके कमरों में चारो तरफ हवाई जहाज की बाल पेंटिंग लगवा दी और गरीब को हिदायत दी कि वह हवाई हजाज के सपने देखे नहीं तो सरकारी आदेश न मानने के जुर्म में जेल हो जायेगी। गरीब ने चमचों से कहा कि भूखे पेट नींद ही नहीं आती है तो सपने कहां से आयेंगे तो चमचों ने उसे थपड़या दिया।

सरकार ने उसके घर के आस पास कड़ा पहरा लगवा दिया कि कोई उसे उड़ा न ले जाये। पर भारत में वही चीज उड़ जाती है जिसे चारो तरफ पहरा लगा होता है जैसे कोयले की खदाने और गोपनीय फाइले। इधर सरकार ने प्रचारित करवा दिया कि भारत में गरीब जहाज के सपने देखता है तो इलेक्ट्राूनिक मीडिया के कान खड़े हो गये। उनमें से किसी चेनल ने पहरे के बावजूद गरीब को उड़ा दिया।

पहली बार गरीब हवाई जहाज में बैठा। कर्मचारियों ने पहले तो उसके फटे कपड़े और गंदा शरीर देख कर बिठाने से मना ही कर दिया फिर कहा कि उसे जानवरों के साथ या पार्सल वाले खण्ड में रखेंगे पर जब कैमरा चालू हुये तो सार्वजनिक क्लास में बिठाने को राजी हो गये। दूसरे दिन वह गरीब स्टुडियों में था। कैमरे ने उसके पूरे शरीर का मुआयना दिखाया फिर गंदे शरीर और फटे कपड़ों को दिखाया फटे कपड़ो से झांकते शरीर में कैमरा ज्यादा ही घुस रहा था। फिर कैमरा सूखे से फटी काली धरती के समान उसके झुर्रियों वाले चेहरे पर चिपक गया।

माइक ने पूछा "हमारे प्यारे भाई भारत के गरीब लाल ली आपने सपने में हवाई जहाज कब देखा ? गरीब के चेहरे पर स्थाई खुशी रहती थी और गंदे दांत हमेशा दिखते रहते थे। वह होंठो को और फैला कर बोला जब सरकार ने हमारी पिटाई लगाई। कैमरे का चेहरा विषाद से भर गया। कैमरा रोते हुये बोला भाइयो यदि हमारा कैमरा आप तक दुर्गन्ध पहुंचा सकता, यानि आपके टी.व्ही. से इस गरीब के मुंह से निकलने वाली दुर्गन्ध पहंुच सकती तो आपको मालूम पड़ता के भारत के गरीब लाल को कितने दिन से "टूथ ब्रश" करने को नहीं मिला है और सरकार देश के तिरतालीय प्रतिशत गरीबो को रोटी छीन कर उनकी पिटाई लगा कर उन्हें हवाई जहाज के सपने दिखा रही है।

फिर कैमरे ने पूछा अच्छा गरीब लाल जी तुमको हम हवाई जहाज में लेकर आये है यानि तुमने हवाई जहाज का सफर कर लिया। जब तुम बताओं तुमनें सपनें में जो हवाई जहाज देखा उसमें कितने पंख लगे थे। गरीब ने सोचा कि वह गरीब है अतः एक तो उसे हवाई जहाज देखने का ही हक रखता है। गरीब ने कहा "वह छोटा हवाई जहाज

था जिससे नेता जी गांव में आये थे। उसके ऊपर भी एक पंख लगा था। कैमरा अवाक रह गया। यह हिस्सा उसने बार बार दिखाया और कहा कि सरकार सफेद झूठ बोलती है। गरीब बेचारे ने तो हेलीकाप्टर का सपना देखा था और सरका कहती है कि गरीब हवाई जहाज का सपना देखता है।

इसके बाद एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सरकार विरोधी पार्टी और एक देलही विश्वविद्याल के एरोनाटिक्य के प्राध्यापक को दिखाया गया था। संचालक ने सरकार से पूछा सरकार पहले आपे से ही पूछते है आप कहते है कि गरीब ने हवाई जहाज का सपना देखा मगर गरीब कहता है कि उसके ऊपर एक पंखा और लगा था।

सरकार ने कान के फोन ठीक किये सुनने का उपक्रम किया फिर चुप रही। संचालक ने कहा शायद सरकार गरीबो की बात सुनना नहीं चाहती तब वह विरोधी पार्टी के नेता से पूछते है। हलो विरोधी पार्टी के नेता जी आपने पूरी "स्ट्रिप" देखी आपका क्या कहना है।

असत्तारूढ़ पार्टी दहाड़ी इनके जमाने में मंहगाई कितनी बड़ी है जबकि हमारे जमाने में इतनी सी ही बढ़ी थी। इन्होने जनता हो धोखा दिया है ये धोखेबाज है। जनता को लूटते है। अब सरकार को सब सुनाने लगा वह दहाड़ी ये साम्प्रदायिक है दंग करवाते है। नाटक बाज है। गरीब तुम इनको वोट मत देना। इन्हें क्या हक है हमारा वोट बै।क छीनने का ये देश कीर जनता से पूछते है।

ठीक है ठीक है अब वे विशेषज्ञ से पूछता है कि वह यान जिसका गरीब ने सपना देखा हवाई जहाज था या टेलीकाप्टर था। हमारे बीच प्रोफेसर हवाकाप्टर बैठे थे। श्री फलां फलां सी.एम. ई.ए.एस. इत्यादि संचालक बोला विशेषज्ञ ने पहले खकारा फिर माइक ठोका फिर बोला ऊं ऊं ऐसा भी हो सकता है वैसा भी हो सकता है।

इतने में संचालक बोला अभी एक महत्वपूर्ण विज्ञापन का समय है आप लेकिन जाइयेगा नहीं। हम फिर हाजिर होते है दो मिनिट के बाद। इसके बाद निर्वस्त्र नायक स्क्रीन और बोला मैं यह थ्री एक्स बनियान पहले होता तो ऐसे दिखता।

दुहाई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दो चोटियों के बीच में चुपचान खाई एक।
जैसे बाजार में कहीं चुप हो तन्हाई एक।।
हादसे दर हादसे बस खुद का सहारा।
बीमार पूरा शहर हो और हो दवाई एक।।
खून टपकाती हुई इमदाद है उनकी।
बादल गरजते सिर पे, खूनी घटा छाई एक।।
डरता हरेक शख्श लिये हाथ में चाकू।
सामने है चाकू सब देते सफाई एक।।
मंहगाई से लड़ने का सियासत का तरीका।
मंहगाई बढ़ा देते है बस बुराई एक।।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

छोड़ कर भीड़ को मैं किधर जाऊँगा।

जो रहँूगा अकेला बिखर जाऊँगा।
जो दिया एक दम ले लिया किश्त में
देते देते ही किश्ते गुजर जाऊँगा।
मैं गुनहगार हँू मुझको छोड़ो नहीं
साथ रहते हुये मैं सुधर जाऊँगा।
आइना एक है मैं बदलता रहा।
यँू बदलते सफर पूरा कर जाऊँगा।।
वक्त चलता रहा और मैं ठहरा रहा।
वक्त रूक जायेगा तो मैं घर जाऊँगा।।

भारत माता तुम्हे प्रणाम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेता हो गये बिना लगाम।
भारत माता तुम्हें प्रमाण।।

बिखरे है झूठे भाषण।
करते है बस उद्घाटन।
खा जाते है पूरा राशन।

नहीं छोड़ते है आसन ।

उनका हन्टर अपनी चाम ।
भारत माता तुम्हें प्रमाण।।

लोक सभा खाली खाली।
वहाँ उछलती है गाली।
खबरे सब घपले वाली ।
घपलो पर बजती ताली।

लोक सभा मंदिर बदनाम।
भारत माता तुम्हे प्रणाम।।

आश्रम है कि खुले हरम।
बाबाओं को नहीं शरम।
खबरे आती गरम गरम।
कीचड़ में धस गया धरम।

निश्चित वहाँ छलकते जाम।
भारत माता तुम्हें प्रणाम।।

रोटी से उड़ गई प्याज।
राम राज में कैसा राज।
मेहनत कश है भूखे आज।
पैसों से बंट गया समाज।

पैसो से होते सब काम।
भारत माता तुम्हें प्रणाम।।

टी.व्ही. में सिमटी दुनिया।
शिक्षित करते खुदखुशियाँ।
बेईमानी के घर खुशियाँ।
गर्भपात उगले मुनिया।

शादी तै करता है दाम।
भारत माता तुम्हें प्रणाम।।

कभी कोयला खाते है।
कभी रेत खा जाते है।
चारा कभी चबाते है।
देश बेच कर गाते है।

भूखो मरती जनता आम।
भारत माता तुम्हें प्रणाम।।

छोटे देश दबाते है।
हम उनसे डर जाते है।
वे नफरत फैलाते है।
आतंकी भिजवाते है।

घर में भी नक्सली तमाम।
भारत माता तुम्हे प्रणाम।।

बाबू खाता है पैसा।
चक्कर लगवाता है एसा।
मर जाये ऐसा वैसा।
नही समय पहले जैसा।

दफ्तर का है देश गुलाम।
भारत माता तुम्हे प्रणाम।।

चैराहे में देश फंसा।
राजनीति में धर्म धंसा।
मंहगाई से गला कसा।
गुटके का हर जगह नशा।

राजनीति के मोहरे राम।
भारत माता तुम्हे प्रणाम।।

इन हालातो में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मोहन दास करम चंद जी तो

देश प्रेम की आँधी थे।
पीछे देश खड़ा मर मिटने।
एसी हस्ती गाँधी थे।।

पीछे से तैय्यार हुये
नेहरू जाने को जेलो में।
मालूम था सिर दे देंगे
पीछे सब खेलों खेलों में।।

मालूम था कि थे पटेल।
मैलाना किदवई जान लिये।।
वल्लभ भाई के पीछे।
मिटने कितने अरमान लिये।।

इतिहासों के पन्नों में
आजाद गोखले दमक रहे।
सावर कर वन के मशाल
थे अंधकर में चमक रहे।।

आजादी के पन्नों में थे
चमक रहे रणजीत सिंह।
कितने मिटने को आतुर,
बिस्मिल पांडे और भगत सिंह।।

कितनी लक्ष्मी बाई जैसी,
यहाँ मशालें जलती थी।
कितने गफ्फारों के सीने में
कई आँधियां पलती थी।।

मरने और मारने का
जज्बा था हक को पाने का।
थे सुभाष, टैगोर और
जज्जा जन मन गाने का।।

ये कुरान और गीता पर
साथ साथ कटने वाले।
गुरूवाणी और बाइबिलों पर
एक साथ मरने वाले।।

कितने ही मर गये लिये
सपना अपनी आजादी का।
जला दिये कपड़े विदेश के
वाना पहना खादी कार।।

कई विवेकानन्द यहाँ थे
घर घर में थे रमन यहाँ।
करते थे अंग्रेज मगर
बे रहमी से ही दमन यहाँ।।

अंग्रेजो के खड़े सामने
हाथ नमक और नील लिये।
जंगल में स्वागत करने को
खड़े धनुष थे भील लिये।।

पर गोपाला चारी को
माउंटबेटन ने क्या सौंपा ?
भ्रष्ट प्रशासन जाति वाद का
छुरा पीठ पर एक घोंपा।।

देश खींच ले आये नेता
रिश्वत के चैहारे पर।
स्वच्छ बोट की नदी पटक दी
देखो गन्दे नाले पर।।

राष्ट्रपिता पर कालिख पोंछी,
देश के इन नेताओं ने।।
लिया देश को लूट मंत्रियों ने,
और नौकर शाहो ने।।

चील भेडिये बेहद खुश है
लाशो की कुछ कमी नहीं।
गेहँू प्याज गगन पर है
दिल में दिल्ली के नमी नहीं।।

रेशम, खादी किधर गये
हो गई कहां मलमल गायब ?

छोड़ रहे खेतो को बच्चे
बन कर के छोटे साहब।।

नफरत के जलने के बदले
जलती बहुयें सधवायें।
जगह जगह आतंकवाद,
मंत्री बैठे हैं मुंहबाये।।

हर दिन ट्रेनो की दुर्घटना,
हर दिन हत्या बलात्कार,
हर दिन लूटमार और चोरी
हर कोने में हाहाकार।।

हिन्दी ऐसी गुमी कि अब
गाली ही साहित्य बनी।
भाषाओं से प्राँत बट गये
सीमा पर है तनातनी।।

सच के अब प्रयोग बापूजी
बतलाओं क्या कर लेंगें ?
साधु घर की इज्जत लूटे
साथ साथ धन ले लेंगे।।

किस किस मुद्दे पर सत्याग्रह
बतलाओं बापू कर लें।
कई छेद बाली है चादर
कहाँ-कहाँ बापू ढ़क ले।।

लगता है डर गये आप भी
इस भारत में आने से।
कैसे देश मिला हम सब को
बापू तेरे जाने से ?

आजादी के किस्से बापू,
हुये किताबों से गायब।।
अंधकार से सूरज डर कर
हुआ आस्मां से गायब।।

नैतिकता गायब हो बैठी
और अंधा परिवेश यहाँ ?

इन हालातो में क्या गाँधी
बच पायेगा देश यहाँ

छोटी बुराई पर बड़ी बुराई की विजय

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

असत्य पर सत्य की विजय का पर्व प्रति कैलेण्डरानुसार आ रहा था। मंत्री जी ने सचिव से कहा "कहीं से सत्य को पकड़ कर लाओ जिससे उसकी असत्य पर विजय करवाई जा सके।" सचिव "यस सर" कह कर भुनभुनाने लगा "तुम्हारी वजह से सत्य हिमालय की गुफाओं में भी नहीे मिलता। यहाँ राजधानी में तो असत्य ही बिलबिला रहा है। "यह कह कर वह कुर्सी पर सिर पीछे रख कर बैठा और पी.ए. को बुलाया और कहा "हर कलेक्टर को "मेसेज" भिजवा दो। हर गली कूचे में सत्य को ढँूढा जाये। मिल जाये तो उसे सरकारी खर्चे पर राजधानी मेरे पास भिजवा दिया जाये। जो भिजवायेगा उस कलेक्टर को सरकार चार लाख रूपये का पुरस्कार देगी।

कोई आश्चर्य न करे। सरकार आज कल फेमिली प्लालिंग का टारगेट पूरा होने पर भी कलेक्टर को लाखो रूपये इनाम देती है। यानि दमड़ की नसबंदी हो और फूल मालायें पहनायी जाये मिठाई खिलाई जाये, और रूपयो का लिफाफा दिया जाये कलेक्टर को। ये तो मात्र सत्य को राजधानी पहँुचाने की बात थी। हर जिले से चार पाँच सत्य राजधानी पहुंच गये। राजधानी में अच्छाइयो की भीड़ लग गई। एक से एक बड़ी अच्छाइयाँ। कोई धोती कुर्ता पजामा पहने अच्छाई। किसी अच्छाई ने जैकेट पहिना था तो किसी ने टोपी लगाई थी कोई कोई अच्छाई टाइ पहिने थीे।

सब अच्छाइंयो सचिच के चेम्बर के सामने इकट्ठी हो गई। सबने अपनी अपनी स्लिप भिजवा दी। सचिच आश्चर्य चकित हो गये। उन्होने सच्चाईयों को इंतजार करने को कहा क्योंकि वे एक बुराई से बाते कर रहे थे।

खैर, उन्होने उन सच्चाइयो की मीटिंग मंत्री के साथ रख दी। मंत्री ही छांटे कि कौन सी अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त करेगी। मंत्री पद तक वह ऐसे नहीं पहंुच गये थे। उन्हें ऐसी सच्चाइयो की अच्छी पहचान थी। मीटिंग से हरेक अच्छाई ने खड़े होकर

उसका परिचय दिया। किसर अच्छाई के बच्चे को तीस लाख के डोनेशन से मेडिकल में दाखिला दिलाया गया। कौन सी अच्छाई हर रविवार को वृद्धाश्रम में घर से निकाले गये माँ बाप से मिलने चली जाती थी। कौन सी अच्छाई धोखाधड़ी, घपला, हत्या और बलात्कार करके न्यायालय से साक्ष्य के अभाव में बाइज्जत बरी हो गई थी। सभी अच्छाइयां कह रही थी कि बुराई दिखाओं हम उसे खत्म कर देंगे।

मंत्री जी ने मीटिंग में माइक को लेकर ठोका फिर बोले डीयर अच्छाइयों, आप सब से मिल कर बहुत खुशी हुई। आपको मालूम है कि हमारी पार्टी अच्छे लोगो की पार्टी है। आज रात को अच्छाई बुराई में आग लगायेगी। आप सब उस पर्व पर आमंत्रित है। रात को उन सब अच्छाइयों की पंचायत को वी.आई.पी कुर्सियों पर बिठाला गया और कोक के डिब्बो में विदेशी दारू दी गई। बुराई अच्छाई के पैक में ही मिलती है। सबने छक कर पान किया। उस अच्छाई द्रव से कुछ तो बहकने लगे।

मैदान में तीन असत्य के पुतले लाये गये। मंत्री जी अच्छाई के परिवेश में हाथ जोड़े हुये आये। उनका हार से स्वागत किया गया। बहुत सारे उपहार दिये गये। फिर मंत्री जी को एक धनुष बाण दिया गया। मंत्री जी ने एक बाण को छुआ। उनके अंग रक्षक (मालूम नहीं कौन से अंग के रक्षक) ने उसे मैदान में अकेली खड़ी बुराई पर छोड़ा। उस छोटी बुराई का कोई चेहरा नहीं था। वह बड़ी बुराई के प्रहार को सहन नहीं कर सकी और धू-धू करके जल उठी।

मंत्री जी बुराई का जलना नहीं देख सके और बीच में ही उठ कर चले गये। उनके अनुसार वह बुराई जिसको उन्होने जलाया या विरोधी पार्टी थी। विरोधी पार्टी के अनुसार बेईमानी ने ईमानदारी को जलाया था। सासों के अनुसार मंत्री ने बहू को जलाया था। बहू के अनुसार बुराई की जगह सास को जलना चाहिए था। साहित्यकारो के अनुसार मंत्री ने साहित्यक अस्मिता को जलाया था। कलाकारो के अनुसार उन्होने कला को और गरीबों के अनुसार उन्होने उनकी मेहनत की कमाई में आग लगाई थी।

झुकी नजर हमारी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भूख यहाँ है खाना उनके पास है
दोनो की दूरी से चित्त उदास है
बगैर लिबासो के मेरी तकरीरे है
साफ गोई कितनो को आती रास है
कहां शमां से रहता खुश तूफान यहाँ
और शमां रहती बेहद बिंदास है
कब्र गाह को तो मत खोदो यारो
बलिदैन का नीचे यहाँ निवास है
नहीं पत्थरो से डरता है वह यारो।
वह तराशता पत्थर संग तराश है

पी.एम.टी. का औचित्य

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सन् 2000 के बाद के चिकत्सको या चिकित्सालय महाविद्यालयो के विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया जाये तो मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के चिकित्सको या चिकित्सा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों में से 75 प्रतिशत या तो पी.एम.टी. में फेल हो गये है या उन्होने पी.एम.टी. की परीक्षा दी ही नहीं है। यही हाल महाराष्ट्र या कर्नाटक के चिकित्सको डेन्टल या सर्जन्स का है। यह स्थिति पी.एम.टी. बोर्ड के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह्न लगाती हैं। जब बगैर पी.एम.टी. की परीक्षा दिये ही या उसमें फेल होकर ही डाक्टर बनाना है तो पी.एम.टी. नामक नाटक को बंद ही कर देना चाहिये जिससे कि प्रान्तीय सरकारों के अरबो रूपयो की बचत हो सके और इस बचत को अन्य कल्याणकारी योजनाओं में लगाया जा सके ?

ऐसा किस तरह हो रहा है ? इस समस्या का विश्लेषण करने पर ज्ञात होगा कि हर कालेज को कुछ सीट तो एन.आर.आइ. कोटे को दी गई हैं। क्या ब्रिटेन या अमेरिका में वहां की प्राथमिक परीक्षा में उतीर्ण हुये बिना किसी चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है ?

अलबत्ता चीन और रूस के कुछ मेडिकल कालेज केवल पैसो के लिये दान लेकर उनके कुछ मेडिकल कालेजो में प्रवेश दे देते है। ये फोरन रिटर्न डाक्टरो को भारत हाथों हाथ ले लेता है। वहां के बहुत सारे एम.डी. या एम.एस. डाक्टर जो ठीक से “बेचलर आफ मेडिसिन” को हिज्जे भी नहीं जानते ठप्पे से मध्यप्रदेश के शासकीय चिकित्सालयों में मेडिकल आफीसर है।

कुछ महाविद्यालयों में मेनेजमेंट कोटा की जगहें रहती है जिनमें पचास लाख रूपये तक इन कालेजो को देने पर उनमें प्रवेश मिल जाता है। फिर मुन्ना भाई प्रकार के विद्यार्थी रहते है जिनमें जिनमें परीक्षा तो कोई और देता है और प्रवेश किसी और का हो जाता है।

महाराष्ट्र के एक पी.एम.टी. केन्द्र में लेखक खड़ा हुआ था। वहां मंहगे गहने पहने एक थुलथुल महिला उसकी सहेली से कह रही थी कि वह पप्पू को पी.एम.टी. की कापी पर केवल नाम लिखवाने के लिये लाई है। कुछ कालेजो में केवल पी.एम.टी. परीक्षा देना ही पर्याप्त है। फैल होने पर भी एडमीशन तो मिलता ही है। नहीं तो क्या कारण है कि महाराष्ट्र में या कर्नाटक गाँव-गाँव में मेडिकज कालेज है ?

आज इतने अप्रशिक्षित डाक्टर जिन्हें झोला छाप डाक्टर भी कहा जाता है भारत में हो गये है कि सचमुच में आंख बंद कर के पत्थर मारने पर या तो किसी तथाकथिक डाक्टर को लगता है या किसी ....को।

इस व्यवस्था के भयावह परिणाम देखने को मिल रहे है।

पहला तो यह है कि मेडिकल शिक्षा केवल अमीर आदमियों के बच्चो को ही मिल पा रही है। इस व्यवस्था ने अमीर और गरीब विद्यार्थियों के बीच खाई को बहुत अधिक चैडी कर दिया है। दूसरी यह कि देश चीन और रूस के अर्धप्रशिक्षित डाक्टरों से भरता जा रहा है। कानून की भाषा में केवल मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों की डिग्री पर्याप्त हैं। जबकि भारत के मुकाबले चीन या रूस से बने डाक्टरो का ज्ञान बेहद निम्न स्तर का होता है।

तीसरी यह कि जो पढ़ाई में तेज मगर गरीब विद्यार्थी इस कीचड़ भरी व्यवस्था के कारण चिकित्सक नहीं बन पाते वे किसी अन्य तरह से चिकित्सक बनने का प्रयत्न करते है। ऐसे चिकित्सालय हर गांवो में मिल जायेंगे जो ढोरो को बांधने की जगहो में मात्र बोर्ड के सहारे चल रहे है।

इस समस्या का इलाज यह है कि पहले ऐसे चिकित्सकों और चिकित्सा महाविद्यालयों का शासकीय सर्वेक्षण कराया जाये जिनमें या जहां से पी.एम.टी. परीक्षा में अनुर्तीण या बगैर पी.एम.टी. के ही चिकित्सक बन रहे है या बन चुके हैं। इस सर्वेक्षण के बाद ऐसे चिकित्सालयो की डिग्री छीन ली जावे और विद्यार्थियों को बाहर निकाल दिया जाये एवं चिकित्सा महाविद्यालयों की मान्यता छीन ली जावें।

रूस चीन या ऐसे ही किसी देश के डिग्रीधारी डाक्टरो को शासकीय सेवा में न लिया जावे। क्योंकि यह व्यवस्था भारत की पी.एम.टी. परीक्षा को बायपास करने का एक तरीका है। और ये देश मात्र चार या पांच लाख रूपयो में डाक्टर बना देते है।

एक अच्छा समाधान लेखक के द्वारा पहले भी दिया जा चुका है। बहुउद्देशीय स्वास्थ कार्यकर्ता जो शासकीय सेवा में दस वर्ष बिता चुके है उनकी एक परीक्षा लेकर

उन्हें ग्रामीण चिकित्सक का दर्जा दिया जाये। यह सुझाव शिवराज सिंह सरकार ने भी दिया था पर क्रियान्वित नहीं हो सका।

इन सुझावो में एक अत्यंत भ्रष्ट कानूनी व्यवस्था अपनी टांग अड़ा देती है जिसे इंडियन मेडिकल कौंसिल कहते है।

यदि सरकार इन अनियमितताओं को रोकने में असफल होती है तो कम से कम पी.एम.टी. नामक अक्षम व्यवस्था को तो खत्म कर ही सकती है जिससे सरकार के अरबो रूपये बचेंगे।

मगर यह नाटक बंद नहीं होगा क्योंकि डोनेशन मंत्री या अमीर लोग ही दे सकते है। सरकार को अब तो मेडिकल कालेज की जगहें कानूनन रूप से नीलाम करना चालू कर देना चाहिए। जिससे गरीब सरकारो की आय तो बढ़ेगी। अभी तो पैसा भ्रष्ट अधिकारियों या दलालो की जेब में जा रहा है या फिर सरकार को बगैर प्रवेश परीक्षा के रूस, चीन या अन्य दूसरे देशो की व्यवस्थायें लागू कर देना चाहिये जिससे कि प्राप्त विदेशी मुद्रा पर्याप्त मात्रा में विकास में लगाई जा सके।

यदि चिकित्सकों की गुणवत्ता सुधारना है तो सन् उन्नीस सौ सत्तर की व्यवस्था लागू कर देना चाहिये जिसके अनुसार मेडिकल कालेजो में प्रवेश बी.एस.सी प्रथम वर्ष के प्राप्तांको के अनुसार होता है

यदि सुधारात्मक कदम नहीं उठाये गये तो चिकित्सा क्षेत्र से भ्रष्टाचार मिटाना असम्भव हो जायेगा जनता को और सरकारो को यह अपेक्षा नहीं करना चाहिये कि जो विद्यार्थी पचास लाख रूपये की डोनेशन देकर मेडिकल कालेज में प्रवेश लेता है वह निस्वार्थ भाव से मरीजो की सेवा करेगा या योग्य चिकित्सक बन पायेगा।

विज्ञापनों की टी.आर.पी.

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जिस तरह रामगोवाल वर्मा और देवेन वर्मा में कोई रिश्ता नहीं है उसी तरह भगवान करें कि कैफ भोवाली और केटरीना कैफ में कोई रिश्ता न हो और यदि हो तो कोई ऐसा वैसा रिश्ता न हो। सेफ अली और केटरीना कैफ में तो भगवान करे कि भाई बहन का ही रिश्ता हो। जो चीज हमें नहीं मिल पाई वह उसे भी न मिले।

मेरे एक मित्र है, जब भी वे मेरे ड्राइंग रूम में आते है तो टेलीव्हीजन का रिमोट छीन लेते है। फिर बोलते है "अमा यार सीरियल भी कोई देखने की चीज होती है। देखने की चीज तो विज्ञापन होते है। सीरियल तो विज्ञापन की वजह से है जैसे अंग्रेजी के समाचार हिन्दी की वजह से है। अश्लीलता देखना हो तो विज्ञापन में देखो। दृश्य इतने गरम की जैसे अभी भट्टी में से निकलकर आ रहे हो।

मैं कहता हूँ "क्या साठ साल के हो गये हो और गन्दी-गन्दी बाते करते हो"। मेरी बातों पर वह हँसता है कहता है कि उसने आस्था और संस्कार जैसे धार्मिक चैनल भी देखे है उनमें विकलांगो को दिखाकर तुम्हारी कारूणिक भावनाओं को भड़काया जाता है और लाखो रूपये ऐठे जाते हैं बीच-बीच में पेन्टीज और ब्रा के विज्ञापन दिखाये जाते है या भगवान की कथा के बीच में भगवान को बदनाम करने वाली रासलीला दिखाई जाती है। कुछ देर कथा के बाद फिर भद्दी आवाज में मुख्य प्रवाचक विचित्र अर्थ वाले भजन गाते है। बेचारा मोहम्मद रफी नहीं हो पाया। फिल्मी गानों की धुन पर भजन बनाते है। हो सकता है बाद में शब्द भी प्रयोगिक होने लगे। दरअसल विज्ञापनों के लिये ही सीरियल बनते है या समाचार दिखाये जाते है। मुझे गुस्सा आ जाता है, मैं कहता हूँ "तुम्हारे कारण ही धरती गर्क में जा रही है और कलयुग हो रहा है। वह हंस कर बोला जिनके चरण ही तुम लोग देखते हो। जरा ऊपर नजर उठाओं तो तुम्हीं इन्हें जूते मारने लगोगे। देखने की चीज तो असली चीज है विज्ञापन। वे उनकी अलपिन बेचने के लिए बेडरूम के दृश्य भी दिखा देंगे। झूठ तो नहीं बोलते वे भगवान के भजन गाकर मर्दागनी बढ़ाने वाली आयुर्वेदिक दवा तो नहीं बेचते।

वह मुझे हमेशा चुप कर देता है। मैं इस बार हार मानने वाला नहीं था। मैनें तर्क रखा। "चलो सीरियल की बात करें"।

उसने पलटकर जवाब दिया "क्या करें"? विज्ञापनों की बैसाखियों पर टंगे सीरियल्स की बात करें जिनके वाक्य तक प्रयोजित होते है। कहा जाता है, घिस सेन्टेन्स आॅफ दि सीरियल इज स्पाॅन्यस्स वाय............थाल सोप फिर ऋतिक रोशन के अर्द्धनग्न शरीर को एक मोटर साइकिल चलाते हुऐ दिखाया जाता है। अब तुम्हे ऋतिक रोशन का आधा उघंड़ा शरीर अच्छा लगता है यह वह रूआसा सीरियल"।

मैने तैश में कहा "कुछ विज्ञापनों में जो सुहागरात तक दिखा दी जाती है जैसे मैनकाइंड के किसी प्रोडक्ट में।" वह हँसा। मुझे चिड़ता देख वह हंसना लगता है। बोला

“तो गधे देख ना। कौन इन विज्ञापनों को देखकर उनके उत्पाद खरीदता है। अब कैटरीना कैफ यदि किसी “बेक्स” से उसके टांगो के बाल उखाड़ती है तो उसे उखाड़ने दो”।

“तू तो उसे एक टांग से उचकते हुये देख। या वह मेंगो स्लाइस लेटकर पीती है तो उसे पीने दे। तुझे भी पीना है तो बाजार चला जा। नहीं पीना तो विज्ञापन देख।”

मैं बोला “क्या ऐसे विज्ञापन सेन्सर नहीं होना चाहिये ? वह बोला” अभी सेन्सर बोर्ड है क्या ? हमें क्या देखना उचित है वह हमारे मंत्री जी तय करते है। जब एक बार उन्होने सेन्सर के माध्यम से किसी दृश्य को उचित ठहरा दिया तो उसे देखना हमारा कर्तव्य हो जाता है”।

मैनें कहा “नहीं, अनुचित दृश्यो का हमें विरोध करना चाहिये।”

उसने पूछा “क्यों करना चाहिये हमें तो बस देखना चाहिये।“ मैनें कहा “इन दृश्यो से हमारी नई पीढ़ी बिगड़ती है। “उसने कहा” क्या मंत्री जी की नई पीढ़ी नहीं बिगड़ती ? जब इतने बड़े मंत्री जी या सेंसर बोर्ड के अधिकारियों की नई पीढ़ी नहीं बिगड़ती जो हमारी क्यों बिगड़ेगी। मियाँ, हमारी नई पीढ़ी को इतनी फुरसत ही कहां कि वह बिगड़े। ये सब बेकार की बातें है। दरअसल तुम्हें तुम्हारे खुद के बिगड़ने का डर लगता है।”

मैनें कहा “मैं क्यों बिगड़ने लगा। मैं तो तब विज्ञापन आते है तो चैनल बदल देता हँू। उसने पूछा “तब क्या तुम्हे कोई अन्य सीरियल या समाचार देखने को मिल जाता है ? मैनें ईमानदारी से कहा “नहीं मिलते। जब एक जगह विज्ञापन लगते है तो सभी विज्ञापन लगा देते है। सब चालाक है।

“तो वही देखो “वह बोला मैनें अब उसका समर्थन किया “हाँ जब सेफल अली सैफ को कुछ सी ग्रेड फिल्मों में काम करने पर और चंद विज्ञापनों में काम करने पर पदम् श्री की उपाधि मिल सकती है तो एक मजदूर और किसान क्या कर सकता है। “मैनें पूछा “राष्ट्रपति जी इन मुद्दो पर सोचते क्यों नहीं। उसने जवाब दिया “उनके सोचने के सारे अधिकार छीन जाते है। हो सकता है

सेफ अली के बूढा होते होते वह भारत रत्न हो जाये। आम आदमी तो केवल विज्ञापन ही देख सकता है। न तो सीरियल देख सकता है और न समाचार देख सकता है। विज्ञापन बनियान का आता है और बनियान उतर जाती है। साबुन, पाउडर, कोल्ड क्रीम को तो जन्म सिद्ध अधिकार है कि नायिका के वस्त्र उतरवा दे। मोबाइल के विज्ञापन भी ऐसे ही आने लगे है। एक इंजिन आइल है जिसके विज्ञापन में महिलाएं कूल्हे मटकाती है। अब कहां इंजिन आइल और कहां आइटम सांग। पर धन्य है विज्ञापनदाता। वे फिजिक्स के अविष्कार में भी महिलाओं का नाच दिखा सकते है। मानसिक दिवालियेपन की ऊँचाई है यह तो “वह बोला।

मैनें कहा “ये विज्ञापन मानों विज्ञापनदाता की ऊट-पटांग सोच है। उसके मन की गहराईयों की गंदगी है, उत्पाद का गुण नहीं”।

मैनें बहस में मेरा इतना समय बिताने के लिये उसे धन्यवाद दिया। आजकल बहू ने मेरे दोस्तो को चाय पिलाना बंद कर दिया। उसके जाने के बाद मैनें फिर धार्मिक सीरियल देखना चालू कर दिया पर उसमें विज्ञापन के जरिये कोई जूता बेचा जा रहा था फिर चैनल बदला तो समाचारो में न्यूनवस्त्रा केटरीना कैफ और करीना कपूर में कोई बहस हो रही थी जब पारिवारिक सीरियल लगाया तो घोषणा हो रही थी दंत मंजन के इस विज्ञापन का यह भाग इस मोटर साइकिल द्वारा प्रायोजित है।

देश सेवा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं और वह मिले। वह ताजा ताजा स्नातक लगता है। बिल्कुल ताजे ताजे खिले फूल की तरह। मेरी भी हर जगह नाक घुसाने की आदत है। इस चक्कर में कई बार नाक के बल गिर चुका हूँ। मैं उसे देख कर अंदर की फड़फडाहट नहीं दबा पाया। मैनें पूछ ही लिया आगे क्या करने का है नौ जवान।”

वह बोला “मैं देश सेवा करूँगा अंकल जी।” उसके एक पिताजी और पचास करोड अंकल जी है। मैं इस संबोधन का बुरा नहीं मानता। मैं चाचा जी पांच का हूँ। बाकी सबका भी कुछ हूँ यानि अंकल जी हूँ।

मैनें पूछा देश सेवा कब तक करोगे ? यह प्रश्न बेहूदा था। पर मैनें छूटे प्रश्न कम ही पूछे है। उसने जवाब दिया” जब तक नौकरी नहीं मिल जाती ।” इसका मतलब सरकारी नौकर देश से सेवा करवा रहे है। कर नहीं रहे हैं। उसका तात्पर्य कितना सही है मैनें फिर पूछा” ये पाठ उसने कहां पढ़ा।

वह बोला थाने में। थाने में लिखा रहता है देश भक्ति जनसेवा।" वहां देश से भक्ति करवाई जाती हैं यदि देश भक्ति नहीं करता जो डन्डे से पिटाई तक तब लगाई जाती है जब तब कि देश सेवा न करने लगे।

यदि सत्य की डन्डे से पिटाई लगेगी तब वह भी डर कर झूठ बोलने लगेगा। मालूम नहीं पड़ता कि डन्डे बाला सत्य है या पिटने वाला। दोनो सत्य है या दोनो झूठ। मैनें एक वर्दी से कहा क्यों सत्य को मार मार कर उससे झूठ बुलवा रहे हो ? वर्दी बोली" साले तुझे कैसे मालूम कि चोर सच बोल रहा है। जब तब पिटाई न लगे तब तक सच भी सच नहीं बोलता। फिर यदि यह मेरी देश सेवा कर देगा तो इसे छोड देंगे।" मैनें फिर पूछा" यदि यह आपकी देश सेवा नहीं करता तो मैनें थाने ने जवाब दिया "फिर हमारे यहां एक देश सेवा कमरा है जिसे "लाकप" कहते है। देश द्रोही को उसे तब तक के लिये पटक देते है जब तक वह देश भक्त न बन जाये।

एक बार धोखे से मेरे घर में डाकू घुस आये । देश भक्तो" के घर के किवाड़ उनकी हिम्मत की तरह कमजोर होते है । जल्दी टूट जाते है। टूट गये। डाकू बोले "बता वे देश भक्ति कहां छुपा कर रखी है।" मैं मूर्खो की तरह बोला "मेरे ह्नदय में। "उन्हें लगा कि मेरा ह्नदय पीछे की जगह धड़ और टांगो के बीच में है वहां एक विनम्र डन्डा मार कर बोले यहां क्या गवर्नर के दस्तखत है ? चाबी ढीली कर।"

मैनें विनोबा बन कर कहा "क्यों डाका डालते हो ? उन्होने फिर दूसरा टिटकारते हुये कहा "देश भक्ति को डाका कहते हो ? फिर आवस्त्र सब लूटा कर चले गये। मैनें सोचा सही है ये मुझ से ज्यादा देश सेवक है। मैं केवल एक मत डालता हूँ। ये सैकड़ो मत डलवाते हैं । हरेक देश सेवक का कर्तव्य है कि उन्हें बिना मांगे हफ्ता दे नहीं तो ये हर हफ्ते देश वसूली करने आ जायेंगे।

मेरे एक मित्र है। जो राजपत्रित अधिकारी थे। थे का मतलब अब नहीं है। एक बार मैं उनके घर गया तो पहली बार उनके चेहरो से प्रसन्नता झलकती देखी। सबको मिठाई बांट रहे थे। मैनें कहा "क्या बात है तिवारी जी भाभी जी भाग गई क्या ?

वह बोला "नहीं अब उनसे कोई डर नहीं है वह मुझसे खुद डरने लगेगी। अब मैं रजिस्ट्रार कार्यालय में क्लर्क हो गया हूँ। उसी उपलक्ष्य में मिठाई बांट रहा हूँ। अब आयेगा देश सेवा का मजा।"

सबसे ज्यादा देश सेवा मंत्री लोग करते है। जिस तरह से नदियां तेजी से समुद्र की तरफ बहती है उसी तरह से सब तरफ वे देश सेवा बटोरते है। कहीं कोयले की खदानो से कहीं रेत से कहीं नागरिको पर गेंती चला कर तो कहीं फाइले गायब कर के। उनकी देश सेवा से स्विस बैंक झुटा रहा है। तो जो मजदूर है जो किसान है केवल वही देश सेवक नहीं है।

थाने में लिखा रहता है सत्यमेव जयते। नान्नृतं। सत्य की ही जीत होती है झूठ की नहीं। यदि सच हार गया तो वह झूठ और यदि झूठ जीत गया तो वह सच। झूठ के गवाह होते है सच के नहीं होते। वह अकेला रहता है तो हार जाता है वहां गवाहो के बल पर झूठ बैठे बैठे ही जीत जाता है।

लोग आयकर बचा कर देश सेवा करते हैं। फिर बची बाय से लंगर करवा कर भगवान की सेवा करते है। एक आय से दो सेवायें इसी को कहते है।

सहारा नहीं गया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पत्थर हॅू मैं वह कि ताराशा नहीं गया
इज्जत से आज तक मैं नवाजा नहीं गया
छांटा गया कभी नहीं मैं बुत के वास्ते

ठोकर डर से सड़के पर डाला नहीं गया
ठोकर से ठोकरो में मेरी जिन्दगी कही
हाथो से कभी मुझको सवारा नहीं गया
जिन्दगी वीरान रेगिस्तान ही रही
नजरों का मन से लेकिन नजारा नहीं गया
मां बाप को बच्चो ने ये कह कर भगा दिया
पत्थर ही निकलते है सहारा नहीं गया।

अध्र्य पुष्प उद्यान के

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भुवन भास्कार को देते है,
अध्र्य पुष्प उद्यान के।
वट पल्लव कीर्तन रत होकर
करते मधु स्वर गान के।।
कल कल झरने विरूद्धावली है
खग स्वर ढोल मन्जीरे
साथ दे रहे हैं वन पल्लव
हिल कर धीरे-धीरे।।

या फिर वेद ऋचायें पादप
मोहक सृष्टि वितान के।
भुवन भास्कर को देते है,
अर्घ्य पुष्प उद्यान के।।

वायु धूम्र वप कर ले जाती,
हवि रवि तक सादर।
रवि सुगन्ध स्वीकृत करता है
पुष्पो की सादर।।

वृक्ष लुटाते फल के दोने
मुक्त हस्त के दान के।
भुवन भास्कार को देते है,
अर्घ्य पुष्प उद्यान के।।

भ्रमर गान कर नर्तन रत है
पुष्प पुष्प तितली।
झूम रहे है ताल मुग्ध ले
महुआ और कदली।।

परिवर्तन कर प्रकृति मनोहर
क्षितिज बढ़ाती ज्ञान के।
भुवन भास्कार को देते है,
अर्घ्य पुष्प उद्यान के।।

हिम झरनों से प्रसवित नदियां
दौड़ी यौवन को।
प्रसवित कुछ झरनों से होकर
मैदानों वन को।।

होकर कुसमित कनक किनारे
इच्छित है सम्मान के।
भुवन भास्कार को देते है,
अर्घ्य पुष्प उद्यान के।।

कभी पुष्प विद्यार्थी जैसे
पंक्तिबद्ध जाते।
कभी झुके दिनकर से
किंचित लगते शरमाते।।

कभी छूटते हों वसन्त के
खिंचते तीर कमान के।
भुवन भास्कर को देते है
अध्र्य पुष्प उद्‌यान के।।

कृष्णवतार के विभिन्न कारक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भगवान कृष्ण सौलह कलाओं युक्त पूर्वावतार थे। कई पुराणों में उनके अवतारों के विभिन्न कारण बतलाये गये हैं। हर अवतार के बारे में उनके प्रशंसक कहते है कि वेद भी उन अवतारों की महिता बखान नहीं कर सके, पर वेदो के काल में अवतार वाद नहीं थो। केवल देवकी नन्दन कृष्ण का सन्दर्भ जरूर छान्दोग्य उननिषद में आया है यथाः

तद् द एतद् घोर आंगरिसः कृष्णाय देवकी पुत्राय उषत्वा उवाच। अपिपास एष से व भूख सौडन्तवेलाया एतत त्रय प्रतिवधेत। अश्रितमसि अच्युतमसि प्राण संशितम सीति। 35।।

घोर आगिरस ने देवकी पुत्र कृष्ण को यह उपदेश दिया। अन्तिम समय में इस मंत्रत्रय का जाप करो। तुम अक्षित हो। तुम अच्युत हो। तुम प्राणों से तीक्ष्ण हो।

इसी संदर्भ में एतरेय महिदास का उदाहरण दिया गया है जो ओम नमो भगवते वासुदेवाय का जाप करते थे एतरेयश महिदास माण्डूक्य त्रिषि की इतरा नामक पत्नि के पुत्र थे। उस समय लगता है कि मातृ सत्तात्मक समय था। इस हिसाब से देवकी नन्दन कृष्ण का समय सतयुग में आता है।

मुख्यतः भगवान कृष्ण को निर्गुण परमात्मा का सगुण रूप कहा गया है जैसा कि स्वयं भगवान कृष्ण ने श्रीमद्भगवत्गीता में कहा है

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः। परं भावम् अजानन्तो ममाव्ययम नुत्तम।

मुझ अव्यक्त को बुद्धिहीन व्यक्ति व्यक्ति रूप हुआ मानते है पर मेरे श्रेष्ठ अव्यय और अनुत्तम भाव को नहीं जानते। भगवान कृष्ण को मुख्य रूप से भगवान विष्णु का अवतार कहा जाता है। क्योंकि इन्द्र के छोटे भाई उपेन्द्र यानि विष्णु के ही सब अवतार माने जाते है। वे भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने गये है। यह समय पुराणों का समय माना गया है। वे देवकी की आठवीं संतान थे।

भगवान कृष्ण की लीलायें एवं महिमा श्रीमद् भागवत् एवं महाभारत में विस्तृत रूप से आई है। राम चरित मानस के अनुसार भगवान विष्णु को नारद ने श्राप दिया था तब वे भगवान राम के यप में अवतरित हुये भगवान विषणु के दो पार्षद जय और विजय को श्राप दिया गया था कि वे राक्षस बनेंगे। श्री कृष्ण को भगवान राम का एवं श्री बलराम को लक्ष्मण जी का अवतार भी माना जाता हैं। रावण श्रीकृष्णावतार के समय शिशुपाल हुआ जिसे भगवान कृष्ण ने मारा। कुभ कर्ण कंस बना उसे भी भगवान कृष्ण ने मारा।

भगवान कृष्ण को नारायण ऋषि का अवतार भी माना जाता है और अर्जुन पर नर ऋषि के अवतार माने गये हैं। श्रीमदभगवत गीता के अध्याय 70 में भगवान कृष्ण ने कहा भी है।

वृष्णीनां वासुदेवोडस्मि पाण्डवानां धनन्जय । मुनीनाप्य हैं व्यासः कबीनामुश्ना कवि। मैं वृष्णियों में वायुदेव हँू पाण्डवो में धनन्जय हँू मुनियों में व्यास और कवियों में शुक्राचार्य हँू।

महाभारत के अन्त में वर्वरीक के सिर से पाण्डवो ने पूछा कि युद्ध में सबसे अधिक योगदान किसका था तो वर्वरीके के शिर ने कहा किसी का नहीं। उसने तो मात्र भगवान कृष्ण को पूरे युद्ध में घूमते हुये और दुष्टो का संहार करते हुये देखा था। भगवान कृष्ध ने श्रीमद्भगवत गीता के ग्यारहवें अध्यास में इस प्रकार कहा है

कालोडहमरिम लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो
लोकान्यममाहर्तुहि प्रवृतः
ऋतेडपि त्वां न भविष्यति सर्वे
येडवास्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः

(श्रीमद्भगवद्गीता 11 वां अध्याय 32 वा श्लोक)

मैं काल हँू और लोको को नष्ट करने के लिये उद्धत हुआ हँू। तुम्हारे न रहने पर भी युद्ध में आये सभी योद्धा नहीं रहेंगे।

यहां भगवान काल का रूप है।

वहीं थी देवी पुराण (महाभागवत) में भगवान श्री कृष्ण को मां महाकाली का अवतार और श्री राधा जी को भगवान शिव का अवतार बतलाया गया है। भगवान विष्णु दो भागो में बंटकर क्रमशः भगवान बलराम और श्री अर्जुन हुये।

भगवान शिव ने देवी पार्वती से कहा कि वे नारी रूप होकर देवी पार्वती को पुरूष रूप में पाना चाहते है तब देवी ने कहा (उनन्चासवा अध्याय)

भवितयेडहं त्वत्प्रियार्थ निश्चित पृथ्वी तले। 118 श्लोक
पु रूपेण महादेव वसुदेव गृहे प्रभो।
कृष्णोड है मत्प्रियार्थ स्त्री भव त्व हि त्रिलोचन 119 श्लोक

मैं आपके प्रिय कार्य के लिये निश्चित रूप से पृथ्वी तल पर पुरूष रूप में वसुदेव के घर कृष्धावतार के रूप में जन्म लूँगी और आप मेरा प्रिय करने के लिये, है त्रिलोचन, स्त्री रूप में जन्म लेना।

श्री शिव ने कहा "पुरूपेण जगद्वात्रि प्राप्प्रायां कृष्णावताभत्वयि।
वृषभानो सुता राधा स्वरूपां हं स्वयं शिवे।।
तव प्राण समा मूत्वा विहरिये त्वण सह।
मूयोडवटौ तथा मत्र्ये भविवयनयुत योषितः
रूकमणी सत्यभामाद्या महिवश्चारू लोचनाः

आप जब पुरूष रूप में कृष्ण यप जन्मेंगी तब मैं कृ षभानु सुता राधा के रूप में आपके साथ विहार करूँगा। मेरी आठ मूर्तियां सुन्दर लोचना रूक्मणि सत्यभामा आपकी आठ पटरानियां बनेंगी।

इस तरह हमने देखा कि भगवान कृष्ण के अनादि अनन्त के अवतार भगवान विष्णु के अवतार नारायण ऋषि के अवतार काल के अवतार वासुदेव के अवतार भगवान राम के

अवतार महाकाली के अवतार अव्यक्त के अवतार इत्यादि माना गया है। भगवान दर असलः।

हरि अनन्तः हरि कथा अनन्ता

कहहि सुनहि गावहिं श्रुति सन्ता

भगवान कृष्ण ने श्रीमद्‌भगवतगीता में स्वयं को आत्मा, भूतो का आदि मध्यस और अन्त विष्णु, सूर्य, मरीचि, चन्द्रमा, सामवेद, इन्द्र, चेतना, शंकर, अग्नि, मेरू शिखर, वृहस्पति, कार्तिकेय, समुद्र, भृगु ऊँ, जपयज्ञ, हिमालय, पीपल, नारद, चित्ररथ, कपिल, उच्चैः, श्रवा, एरावत, नराधिप, वज्र,कामधे, कन्दर्प, वासुकि, अनन्त, वरूण, अर्थमा, यम, प्रहलाद, काल, मृगेन्द्र, गरूड, पवन, राम (या बलराम) मगर, गंगा, सृष्टि का (आदि, मध्य और अज) आध्यात्म, वाद “अ” द्‌वन्द, परम, आश्रय, काल, वृहना, मृत्यु, उदभव, कीर्ति श्री वार्क, स्मृति, मेघा, धृति, क्षमा, गायत्री छन्द, मार्गशीर्ष, वसन्त, धूत तेज, जय, व्यवसाय, अस्तित्व, दण्ड, नीति, मौन, ज्ञान आदि भी बतलाया तात्पर्य यह कि भगवान कृष्ण सभी वैदिक देवता, सम्पूर्ण प्रकृति एवं जो कुछ भी व्यक्त एवं अव्यक्त है वह कृष्णमय हैं जो भी सत्य असत्य और दोनो से परे है वह कृष्ण का ही रूप है।

बसन्त

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो विषम वाण से सज्जित है
मकरध्वज रथ को साथ लिये
मन पर शासन करने आया
ऋतुराज मदन को साथ लिये
स्वागत में पुष्पित पूर्ण धरा
कल कल झरना विरूदावलि है
मदमस्त पवन है अस्त शस्त्र
सेना उसकी भ्रमरावलि है
उच्छंृखल बहती चलती थी
सकुचाकर लज्जावनत हुई
किसा स्पर्श हुआ उसको
मर्यादित चंचल नदी हुई
वृक्षो ने वस्त्र नये पहिने

सर मुकुर बना कर देख रहे
कब लता उठे वे जरा
कब से उसका रूख देख रहे
तन बोराये मन बोराये
बोराये आम, बगीचो में
पदत्राण रहित वे नाच रहे
जो चलते सदा गलीचो में
पक्षी पेड़ो पर नाच रहे
नर्तन रत पुष्प हुये सारे
ऋतुराज नचाता तितली दल
नर्तन रत जग को करता रे
हिम ऋतु में सोये सिकुड़े थे
हिम खण्ड पिघलने लगते है
नदियों में अपने को खोकर
सागर तक चलने लगते है
वन श्री कर जागृत पुष्प खिला
केशरिया भाव जगाता रे
फिर वन निःसंग क्यों सौंप उसे
वह प्रचार ग्रीष्म को जाता रे
उदयाचल शिशिर ग्रीष्म पश्चिम
है ग्रीष्म पृष्ट और पूर्व शिशिर
है ऋतु वसन्त जलता दीपक
और शिशिर पिघलता एक तिमिर

सचिन को भारत रत्न दबाव में लिया गया निर्णय

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

यदि कांग्रेस यह सोचती है कि सचिन को भारत रत्न देकर नई पीढ़ी के वोट उसकी झोली में आ जायेंगे तो यह एक दिवा स्वप्न ही न हो। सचिन सम्भवतः सबसे कम उम्र के भारत रत्न प्राप्त व्यक्ति है। कांग्रेस को कुछ वर्ष और इंतजार करना था। तब तक अटल बिहारी बाजपेयी जैसे राजनीतिज्ञ को भारत रत्न देकर कांग्रेस उपकृत हो सकती थी। इससे कांग्रेस की उदारता झलकती और बी.जे.पी. के बहुत से मत उसको प्राप्त हो सकते थे। मगर अब ट्रेन छूट चुकी है।

मेजर ध्यानचंद के लिये इतनी ताकतवर लाबी नहीं थी जितनी कि सचिन के लिये थी। सचिन को भारत रत्न देकर कांग्रेस, महाराष्ट्र में उसकी स्थिति और मजबूत करना चाहती है। कुछ चिन्तको का यह सोचना सही है कि सचिन को मोहरा बनाया गया है। उसके अलावा महाराष्ट्र में और कोई व्यक्ति नहीं है जिसे कांग्रेस उपकृत करना चाहेगी, उन्ना हजारे को तो कतई नहीं। अमिताभ बच्चन एक अन्य नाम भारत रत्न को लिये उभर कर आता है। पर वह एक गर्म लाल लोहे की छड़ है कांग्रेस के लिये। वह कांग्रेस की नजरों में बी.जे.पीच अभिनेता है।

इससे सिद्ध होता है कि भारत रत्न या पद्म जैसी उपाधियाँ राजनीति से प्रेरित होती है। उनको बाँटने में निष्पक्षता या विशाल ह्नदयता को कोई स्थान नहीं है। सचिन को भारत रत्न देने के निम्नलिखित मुख्य कारण दिखते है।

1. वह पिछले पांच छः वर्षो से फ्लाप रहा है।
2. वह कांग्रेस से राज्य सभा का सदस्य है।
3. उसके पीछे एक ताकतवर लाबी है।
4. कांग्रेस उसके द्वारा नौजवानों के वोट खींचना चाहती है।
5. कांग्रेस महाराष्ट्र में उसके पैर और मजबूत करना चाहती है। अन्यथा खेल जगत में ही ध्यानचंद विश्वनाथ, ओलंपिक पदक विजेता इत्यादि हैं
6. यह कांग्रेस की गुलाम मानसिकता को दर्शाता है। क्रिकेट केवल कामन वेल्थ देशो में ही खेला जाता है।

जो कभी ब्रिटेन के गुलाम रहे है । पूरे विश्व में मुश्किल से दस देश ऐसे है जहां क्रिकेट खेली जाती है। आश्चर्य होता है कि ओलम्पिक स्वर्णपदक विजेता को छोड़ कर मात्र दस देशो में खेले जाने वाले पिछले पाँच साल से फ्लाप खिलाड़ी को भारत रत्न देकर कांग्रेस क्या प्रदर्शित करना चाहती है। जहाँ तक क्रिकेट में रिकार्ड बनाने का सवाल है तो क्रिकेट में तो किस खिलाड़ी ने पिच पर कितनी बार थूका तक का रिकार्ड बन जाता है।

यदि क्रिकेट में भारत रत्न देना ही था तो कपिल देव को मिलना चाहिये था जिसके नेतृत्व में क्रिकेट का पहला विश्व कप भारत छीन कर लाया था। उस समय फायनल में भारत लगभग हारने की स्थिति में था। तब उसकी बालिंग, फील्डिंग और बेटिंग की वजह से भारत विषम परिस्थितियों में पहला विश्व कप छीन कर लाया था। सचिन ने तो जल्दी आऊट होने डर से ओपनिंग ही छोड़ दी थी। यह भी कहा जाता है कि सचिन का शतक मतलब भारत की हार। खैर जब सचिन को भारत रत्न और सैल अली खान को पद्म श्री दिया जा चुका है तब हमें उसकी इज्जत करना हमारा कर्तव्य है।

धारा 370

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जम्मू कश्मीर में धारा 370 के तहत जो सुविधायें दी गई है उससे जम्मू कश्मीर, लद्दाख सहित बहुत पिछड़ गया है। वहां की अत्याधिक गरीबी एवं अशिक्षा धारा 370 के कारण ही हैं। बाहर का कोई उद्योगपति वहां उद्योग नहीं लगा सकता, जिससे वहां के नवयुवको में बेरोजगारी बहुत है इसीलिये वहां अलगाव के स्वर उभरते रहते है।

नरेन्द्र मोदी ने, कश्मीर को, धारा 370 के तहत जो कथित सुविधायें दी गई है उनके बारे में चर्चा का मुद्दा उछाल कर एक राष्ट्रीय बहस का आव्हान किया है । हालांकि बुद्धिजीवी इस मुद्दे पर बहस के पक्ष में शुरू से ही है। धारा 370 की सुविधा या जो सभी सीमा वर्ती राज्यों को दी जानी चाहिये या काश्मीर को याारा 370 की सुविधायें बंद कर देनी चाहिये। जब तब धारा 370 रहेगी पाकिस्तान कश्मीर पर त्रिपक्षीय वार्ता का मुद्दा उठाता रहेगा।

कश्मीर की समस्या ही धारा 370 हैं। इसके रहते सभी राजनीतिज्ञ कश्मीर को एक जलती आग मानते है और इस मुद्दे को हाथ लगाने से डरते है। मोदी के आव्हान पर शेख अब्दुल्ला का त्वरित बयान आ गया। उनका कहना था कि बी.जे.पी. का बहुमत होने पर भी मोदी चाहे तो भी धारा 370 विलोपित नहीं कर सकते। इसके बाद वही तू तू मैं मैं का खेल चालू हो गया। कांग्रेस के लोग हल्ला मचाने लगे कि मोदी के बयान से अलगाव वादी ताकतो का शह मिलेगी। जैसे अभी तक वे लगाव वादी ताकते थी। कांग्रेस का कहना है कि संविधान एक पवित्र किताब है और धारा 370 उसका पवित्र अंश हैं। जैसे अभी तक संविधान में संशोधन ही न किये गये हो। जब श्रीमति इंदिरा गांधी ने ही दो राष्ट्र दो झण्डे, दो संविधान एवं दो प्रधानमंत्रियों की अवमानवा को खारिज कर दिया तो अब धारा 370 का अस्तित्व ही कहां रहा ?

इधर एक लेख पड़ने को मिला जिसमें धारा 371 का सहारा लेकर धारा 370 के पुष्टिकरण का प्रयास किया गया था। यह जो इस तरह का बयान है कि चंूकि सभी राष्ट्र धरती पर है अतः भारत अमेरिका का हिस्सा माना जाना चाहिये। कांग्रेस का कहना है कि धारा 370 के कारण ही जम्मू कश्मीर का विकास हो रहा हैं। कश्मीर में जो विकास हो रहा है वह किसी से छिपा नहीं है सबसे अधिक गरीबी और अशिक्षा कश्मीर में ही हैं।

वहां पर्यटन ही एक मात्र उद्योग है जो कि पाकिस्तान की कृपा से ठप्प पड़ा है। सबसे अधिक पाकिस्तान और चीन के हमले कश्मीर में ही होते हैं। कश्मीर में ही अलगाववादी आतंकवादी पनाह लेते है। कश्मीर समस्या का एक व्यौहारिक हल यह भी है कि सेवा निवृत सैनिक परिवारो को वहां बसने की अनुमति दे देनी चाहिये। वैसे भी वे शासन के आदेशानुसार ही ड्यूटी के दौरान वहां रहते ही है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने दूसरा हल बतलाया था कि जम्मू कश्मीर के तीन प्रान्त बना दिये जाये। जम्मू, कश्मीर घाटी और लद्दाख। एक और हल है कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को भारत पाकिस्तान से सौंपने को कहे। वैसे भी वहां की दो लोकसभा सीटो को हम खाली दर्शाते है। इसका मतलब है कि वह भारत का हिस्सा है पर पाकिस्तान ने उस पर बलात् कब्जा कर रखा है। यदि पाकिस्तान कश्मीर पर त्रिपक्षीय वार्ता पर जोर

देता है तो वार्ता पाक अधिकृत कश्मीर तक ही सीमित रखी जाये और भारत उस पर अपना हक संयुक्त राष्ट्र संघ में रखे।

कश्मीर समस्या और भारत के आतंकवाद का एक ही हल है कि कश्मीर को भारत की मुख्य धारा से जोड़ा जाये और वह तभी संभव है जब धारा 370 विलोपित की जावे। कश्मीरियों को यह एहसास दिलाया जावे कि वह एक बहुत बड़े राष्ट्र का अंग है।

मध्य भारत की नक्सली समस्या कुछ हद तक धारा 370 खत्म कर की जा सकती है।क्योंकि नक्सलियों को कई हथियार पाकिस्तान के आतंकवादी ही देते है। हालांकि आतंकवाद दोनो ही फैलाते है पर नक्सली आंदोलन अलगावादी आंदोलन नहीं है। वह व्यवस्था के अंदर व्यवस्था का विरोध है। इधर पाकिस्तान के लीड़रों को गुरू साहिब अमृतसर पर ज्यादा ही प्रेम उमड़ रहा है। वह कहीं अलगाव वादी ताकतो को हवा देना तो नहीं है। यदि वे सिखो का इतना ही आदर करते है तो पवित्र तीर्थ ननकाना साहिब क्यों नहीं भारत को सौंप देते ? भारत को याद रखना चाहिये कि "आफेन्स इज द बेस्ट डिफेन्स"।

गाने का हश्र

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो पलने पर मां ने गाना गाया था
रूका कब्र पर जाकर वही तराना था

लहर फंसी भंवरो में डूब गयी कैसे ?
उसको सागर तक हालांकि जाना था

खुद ही जाय लबों तक मेरे आते थे
ऐसा जीवन में भी एक जमाना था

आगे बढ़कर तूफानों से मिल लेता
तूफानों को भी कुछ आगे आना था

कटे पेड़ मासूम परिन्दो के घर थे
कारो को क्योंकि एक सड़क बनाना था

शबनम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

डूब पर बिखरी हुई शबनम
जैसे कुदरत हो गई पुरनम

बिखरे हीरे, मोती, रूबी है
और है बिखरी हुई नीलम

झिलमिलाती रंगो की किरणें,
जैसे वीणा पर खिंची सरगम

ओस छूकर कहा किरणों ने
लग रही हो आज सुन्दरतम

रंग बिरंगी पायलें जैसे
नाचती तबलों हों छम छम

वहाँ शैतान मिला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वहाँ महल में जुल्मों का सामान मिला
यहाँ सड़क पर हंसता एक इंसान मिला

आसमान से तो बरबादी हंसती थी
विवश जमीं पर पड़ा हुआ अरमान मिला

बेईमान काजी कुर्सी पर बैठा था
हाथ जोड़ता फरियादी ईमान मिला

जमीदोंज सारे पेड़ो को होना हैं
कालोनी का एक उन्हें फरमान मिला

एक गांव में साथ साथ ही रहते थे
यहाँ फरिश्ता मिला वहां शैतान मिला

भंवरें हैं खाली पेट की

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिथड़े बदन पें देखके कसतें हैं फब्तियाँ।
शाही लिबास तुम ये उतारोगे कब मियाँ।।

सोया नहीं था भूख से वो वक्त अब गया।
आने लगी है मौत की धीरे से झपकियाँ।।

बच्चों की भूख लोरियाँ से सुलाता हूँ मैं।
खाने की जगह हौले से देता हूँ थपकियाँ।।

बाढ़ जो गुर्बत की आई फिर गई नहीं
भवरें है खाली पेट की कुनबा है कश्तियाँ

उनकी कबूल इबादत को कर लिया गया।
आता है पैसा रब के, गरीबो के दरम्याँ।।

गरीब के सपने और नेताजी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेता जी के बंगले के सामने पिछले पाँच साल से लाइन लगी थी। लाइन कम होने का नाम हीं नहीं ले रही थी। मुझे लाइन में लगने के बाद भी अभी तक कोई चीज नहीं मिली थी पर लाइन में लगने के आदत पड़ गई थी।

मैं भी लाइन में लग गया। लाइन में लगते मेरी तांकने झांकने की भी आदत पड़ गई थी। मैनें आगे देखा तो एक आदमी की जगह छोड़ कर भीड़ आगे बढ़ रही थी। मैनें सोचा कि कहीं नेताजी से मांगते मांगते कुछ आदमी खाली जगह न हो गये थे पर उनकी इच्छा न हुई हो। लाइन में लग कर मरने वाला कहीं और लाइन में पैदा हो गया होगा। मैनें सोचा कि वह जगह लपक की जावे। मैं वहाँ जाकर लग गया।

कुछ दूर जाकर एक आदमी आया और मुझे हटाने लगा। मैनें कहा "पीछे लाईन में आओ। वह बोला "अपनी जगह रोकने के लिये लोग बैग, रूमाल या खाली थैला रख जाते हैं। मैं खाली जगह रख गया था। तुम पीछे जाओ। कुछ लोगो को नहीं मालूम रहता हैं उनकी मांगे क्या हैं पर वे नारे लगाते रहते हैं कहते हैं "अभी तो ये अंगडाई हैं आगे और लड़ाई हैं। "या" जो हमसे टकरायेगा मिट्टी में मिल जायेगा। इनमें कोई नहीेंं टकराता अलबत्ता वे ही हर किसी से टकराते रहते हैं। मुझे नहीं मालूम कि लोग अंगडाते अंगडाते कैसे लड़ते हैं। यह भी कहते हैं हर ओर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा हैं। ये लोग अन्यास से संघर्ष नहीं कर पाते बल्कि न्याय से या आपस में संघर्ष करते रहते हैं आफिस में आपस में और घर में पड़ोसियों से संघर्ष करते रहते हैं। जब कोई इनसे पिटने नहीं मिलता तो बीबी बच्चों की पिटाई लगाते हैं। पर यहां दूसरा

ही नारा लग रहा था वह था नेता जी आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ हैं। नेता घर में गाँधी हैं। घर के बाहर आंधी हैं। कुछ बगैर कारण नेता जी को जिन्दाबाद मुर्दाबाद अमर रहे कह रहे थे। नेता जी कमरे में बैठा था आगे नहीं बढ़ रहा था।

मैनें एक से पूछा "ये नेता जी आगे क्यों नहीं बढ़ते हैं ?" आगे बढ़ो कहने वाले ने कहा "जब वे आगे बढ़ने वाली को पीछे हटाते हैं तो उन्हें लगता हैं कि वे आगे बढ़ रहे हैं यही उनका आगे बढ़ना हैं। "मैनें पीछे वाले से पूछा "ये नेता जी आगे बढ़ कर क्या करेंगे ? वह बोला "मालूम नहीं मैं भी तुम्हारी तरह लाइन देख कर लाइन में लग गया।

हमारे देश में अधिकांश लोगो की किस्मत में केवल लाइन में लगना ही हैं। कुछ को जिन्दगी भर लाइन में लगे रहने पर भी कुछ उपलब्धि नहीं होती। दूसरी ओर धक्का देकर आगे बढ़ने वाले आगे बढ़ जाते है।

पीछे के पीछे वाले ने सूचना दी नेता जी सपने दिखाते हैं। हम गरीबो को जिन्दगी भर कुछ मिलता तो हैं नहीं सपने ही देख ले तो अच्छा लगने लगता हैं। तो नेता जी के आस पास अकर्मण्य सपना देखने वालो भी भीड़ थी। नेता जी के यहां कुछ पीने का पानी देखने वालो की भीड़ थी। अन्यथा वे कीचड़ के समान पानी पीते थे। जानवरो के साथ ही पानी पीते थे। उल्टी-दस्त करते रहते थे और हैजे से मरते रहते थे। यहाँ नेता जी उन्हें विश्व स्वास्थय संगठन के स्तर के पानी का सपना दिखाते रहते थे।

कुछ अति गरीब राशन का सपना देखने आते थे। जिन्हें नेता जी कहते थे कि पाँच साल बाद जरूर वे उन्हें पेट भर खाने का सपना दिखा देंगें। कुछ सड़को पर बिलबिलाते वे लोग थे जो ट्रको और अमीरो की कारों से बच गये थे। नेताजी उन्हें मकान का सपना दिखाते थे।

सपना देखने के लिये हाथ में "वोट" लाना जरूरी था। यानि नेता जी को "वोट" दो और चुनाव दर चुनाव सपने देखो। नेता जी नंगो को कपड़ो का सपना दिखाते थे और भूखो को खाने का। नेता जी भूखो को खाने का सपना दिखा कर पाँच सितारा होटल में खाना खाने चले जाते थे। उन भूखो के राशन कार्ड नेताजी ने दबा रखे थे और भूखो के हिस्से का अनाज ब्लैक से बाजार में बेच देते थे।

जिनके पास मकान नहीं थे उनके हिस्से की जमीन नेता जी हड़प चुके थे। नेता जी के खेतों भयानक दांत लगे हुये थे। वे आसपास के खेतो को हड़पते जाते थे। नेताजी की दस साल पहले की पचास एकड़ जमीन आज पाँच सौ एकड़ हो गई थी।

नेताजी ने दो नम्बर की काली कमाई को एक नम्बर की सफेद कमाई करने का अभिनव तरीका है ढँूढ़ निकाला था। वे उनके चमचों के नाम से किसान विकास पत्र

खरीदते थे और अपने पास रख देते थे। इस तरह लगभग दो बड़े आकार की अलमारियां उन विकास पत्रो से भरी पड़ी थी।

नेताजी गरीबो को सपने दिखा कर खुद के सपने पूरा करते थे। एक नेता जी ने कहा कि गरीबो को हवाई जहाज के सपने देखना चाहिये। एक शेर कहीं सुना था। एक बादशाह ने बनवा के हंसी ताजमहल। हम गरीबो की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक। नेताजी आपके कारण गरीब तो बेचारा अब प्याज तक के सपने नहीं देख पा रहा हैं।

विज्ञापनों में हिंसा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

विज्ञापन उत्पादको द्वारा ग्राहको तक पहुँचाया जाने वाला वह संदेश हैं जिसके सहारे उत्पाद अधिक से अधिक बिक सके। विज्ञापन ग्राहको को वह उत्पाद भी बेच सकता हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं होती हैं। विज्ञापन ग्राहको को उस वस्तु की कमी अनुभव कराता हैं जिसकी वास्तव में उन्हें कमी हैं ही नहीं। विज्ञापन वस्तु के उन गुणो का वर्णन भी कर जाते हैं जो प्रतियोगी वस्तु में नहीं होते है और उसमें भी नहीं होते हैं।

उत्पाद ग्राहको का पैसा उनके उत्पाद के बदले खींचना चाहते हैं। पहले वस्तु विनिमय का जमाना था जिसे अंग्रेजी में वाटिंग कहते हैं। जैसे गेहँू के बदले जूते ले लेना। अब विनिमय का एक सामान्य माध्यम आ गया हैं जिसे मुद्रा कहते हैं। आज भी कहीं कहीं वस्तु विनिमय होता हैं जैसे "माल" आपकी कागज की रद्दी या पुराने इलेक्ट्रॉनिक सामान के बदले उनका सामान बेचने लगे हैं। विज्ञापन के संदेश निम्न प्रकार के हो सकते हैं

(1) व्यक्ति से व्यक्ति तक

(2) लिखित

(3) श्रव्य

(4) द्रव्य और श्रव्य

श्रव्य और दृश्य माध्यम इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं। व्यक्ति से व्यक्ति तक संदेश पहुँचाने का तरीका हैं। कुछ बैंक, फाइनेन्स कंपनी, बीमा कंपनी इत्यादि यह तरीका अपनाती हैं। लिखित विज्ञापन सिनेमा, समाचार पत्रो, पम्पलेट, मोबाईल, कम्प्यूटर, पोस्टर इत्यादि द्वारा होता हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया विज्ञापन से टी.व्ही. वीडियो, कम्प्यूटर, लेपटाप एवं अन्य अनेक माध्यमो से किये जाते हैं। हिंसा केबल विडियो गेन्स मोबाइल या सिनेमा में ही नहीं दिखाई जाती वरन विज्ञापनों में भी हिंसा की अन्त्तधारा होती हैं।

एक मोबाइल के विज्ञापन में पहले एक छोटा बच्चा मम्मी मम्मी चीखता हुआ आता हैं फिर एक बड़ा बच्चा पापा पापा चीखता हुआ आता हैं यह जो चीख है यह ध्वनि द्वारा ग्राहको पर आक्रमण हैं।

एक सीमेन्ट के विज्ञापन में मुख्य राज मिस्त्री चीख कर कहता हैं, "हम क्या तुम्हें बेवकूफ दिखते हैं।" यह जो चीख हैं और जनता को वह सीमेन्ट खरीदने की बलात सलाह हैं यह क्या ग्राहको पर आक्रमण सा नहीं लगता हैं।

एक गर्म कपड़ो के विज्ञापन में कपड़ा ही ग्राहक को चांटे मारता हैं इसका क्या मतलब हैं?

ऐसा ही एक विज्ञापन मोटर साइकिल के विज्ञापन में दिखता हैं। क्रेता को मर्द दिखाने के चक्कर में हिंसा की एक अन्त्तधारा डाल दी जाती हैं। ये जो एक सीरियल में कोई विज्ञापन बार बार बगैर बदले दिखाया जाता हैं इसमें उत्पादक तो हालांकि यह सोचता हैं कि वह उपभोक्ता को मानसिक गुलाम बना रहा हैं पर उल्टे कोफ्त पैदा करता हैं। यह विज्ञापन का बार बार दिखाना वितृष्णा पैदा करता हैं। ग्राहक के मन में हिंसा पैदा करता है एवं उत्पाद के प्रति घृणा।

यूँ तो बनियानों के विज्ञापना में भी हिंसा दिखाई जाती है। यह अवांछनीय हैं। विज्ञापन का कार्य तो उपभोक्ता को उत्पाद तक ले जाना होता हैं। बाद का काम तो उत्पाद की गुणवत्ता करती हैं। और व्यक्ति से व्यक्ति के संदेश को उत्पन्न करती हैं।

कभी शेविंग क्रीम कभी चप्पल जूते कभी कपड़ो, कभी तेल, कभी अण्डो (हिन्दी नहीं आती क्या ? की डांट सुनकर मुर्गी एक और अंडा दे देती हैं) यानि सभी प्रकार के विज्ञापनों में हिंसा बलात देखी जाने लगी है जैसे एक पुरूष की शेविंग क्रीम में हीरोईन की टांगे दिखाई गई थी हालांकि उन विज्ञापनों को शालीन और मनोरंजक भी बनाया जा सकता था। इन हिंसक विज्ञापनों में ग्राहक की मूल हिंसक भावना को भड़का कर खुद के उत्पाद बेच कर ग्राहक के जेब खाली करवाना होता हैं।

ये विज्ञापन बगैर सीरियल के नहीं चल सकते। इसी तरह सीरियल भी विज्ञापनों की बैशाखियों पर चल रहे हैं। सीरियल्स में भी घरेलू हिंसा दिखाई जा रही है और विज्ञापनों में भी। आदमी उन्हें देखकर चिड़चिड़ा होता जा रहा हैं।

आजकल विज्ञापन इस तरह प्रस्तुत किये जा रहे है जैसे वे कोई समाचार हो और समाचार तो किसी न किसी के विज्ञापन हैं ही दोनो के बीच की सीमा रेखा धंुधली होती जा रही हैं। एक गोंद के विज्ञापन में हीरो इतनी जोर से सांस खींचता हैं कि उसकी कमीज फट जाती हैं मर्द का सीना दिखाना तो हर विज्ञापन की आवश्यकता सी बनती जा रही हैं। यह लिंग भेद हैं। जब मर्द सीना दिखा सकते हैं तो औरते क्यों नहीं। अगर औरतों का सीना विज्ञापनों फिल्म में ठूंसा जाने लगे तो अश्लीलता मानी जायेगी। मर्दो का सीना दिखाना भी बंद होना चाहिये।

एक बनियान के विज्ञापन में हीरो किसी की पिटाई लगा कर तीन चार कुलांटे खाता हैं फिर प्रशंसा पाने पर किसी लड़की से कहता हैं तुम्हारे बटन खुला हैं। इस विज्ञापन में सैक्स और हिंसा दोनो ही ठंूस दिये गये हैं। यह माना कि सेक्स और हिंसा मानव जाति की आदिम भवनायें हैं पर क्या अपना उत्पाद बेचने के लिये उन्हें भड़काना जरूरी है ?

हिंसक विज्ञापन ऐसे ही हैं जैसे कोई गुण्डा चाकू दिखा कर अकेले व्यक्ति को लूट ले। इन विज्ञापनों से ऋणात्मक प्रभाव उत्पाद की बिक्री पर पड़ता हैं। ऐसी कोई सी भी वस्तु नहीं हैं जिसका विक्रय ऐसे विज्ञापनों से बढ़ा हो।

रब के और मेरे दरम्यां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिथड़े बदन पे
देखके कसते है फब्तियाँ।
शाही लिबास तुम ये
उतारोगे कब मियां।।
सोया नहीं था भूख से
वो वक्त अब गया।।
आने लगी हैं मौत की
धीरे से झपकियां।।
बच्चों की भूख लोरियां
से सुलाता हूँ मैं।
खाने की जगह हौले से
देता हूँ थपकियां।।
बाढ़ जो गुर्बत की आई
तो गई नहीं
भवरें है खाली पेट की,
कुनबा है कश्तियां।।
उनकी कबूल इबादत को
कर लिया गया।
आता है पैसा रब के
और मेरे दरम्यां।।

बिजली और महबूब

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुझ ये कौन मीठी सी
        सदायें दे रहा हैं ?
नहीं हैं इस जहां की
        किस जहां से दे रहा हैं ?
शमा जो थरथराती है अगर फानूस में भी।
        उसे फानूस ही अधड़ हवायें दे रहा हैं।।
आज के जमाने में सांस लेना कम नहीं हैं।
        हैं कोई मुझको जो दिल से दुआयें दे रहा हैं।।
गुनाह एक था वे सख्ता जो हो गया था।
        मुझे क्यों जिन्दगी भर सजायें दे रहा हैं।।
ये बादल गिराते है बिजली रह रह के जमीं पे।
        मेरा महबूब उनको ये अदायें दे रहा हैं।।

रिसालों की खबरें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रोज रिसालें लाता हूँ।
        बाहर खबर झड़ाता हूँ।।
क्यों पतंग न लहरायें ?
        पीकर उन्हें उड़ाता हूँ।।
सर में ठोकर लगती हैं।
        जब भी टांग उड़ता हूँ।।
पहले पैसे लेता हूँ।
        फिर ईमान पड़ाता हूँ।।
कान नहीं है दुनिया के।
        चीखे किसे सुनाता हूँ ?

नई मंजिल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक मंजिल रास्ते में ढ़ल गई।
        एक शाखा गिरी और एक फल गई।।
हवा कश्ती को चलाती ही रही।
        सुबह आई रात कल की ढ़ल गई।।
जाम एक खाली हुआ एक भर गया।
        एक शम्मा बुझ गई एक जल गई।।
साथ में कुछ वक्त अपने ले गया।
        बर्फ बं◌ूदो में पिघल कर गल गई।।
गया पल नये पल का वालिद बन गया।
        एक हल चल आई एक हलचल गई।।
फूलझड़ी से पल जलायें आइये।
        नाव नई मंजिल को अपनी चल गई।।

अरविन्द केजरीवाल की अनिश्चित मानसिकता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अन्ततः अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली प्रांत के मुख्यमंत्री की शपथ ले ही ली। इसके पूर्व जब उनकी आम आदमी पार्टी को देहली में मतदाताओं ने अट्ठाइस विधायक डाले तो वह उस वजन से घबरा गये।

अट्ठाइस विधायक दिल्ली की विधानसभा में बहुमत नहीं होता पर जिस कांग्रेस को वे पानी पी पी कर गालियां दे रहे थे उसी ने राजनैतिक दाब चला कर उन्हें बाहर से समर्थन देने की घोषणा कर दी। इस तरह चालाकी तो चाणक्य के दिमाग में भी नहीं आती। पर कांग्रेस का जन्म तो सर ए.ओ. ह्नयूम के दिमाग में हुआ था।

अब केजरीवाल "बेक फुट" पर आ गये। उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ लेना ही पड़ी। उसके पहले उनकी महत्वकांक्षा भी थी कि वे मुख्यमंत्री बने पर प्रश्न बहुमत का था। वे चाहते भी थे कि कोई उन्हें समर्थन भी दे पर डरते भी थे कि नहीं दिया तो ? क्या वे हमेशा कांग्रेस और बी.जे.पी. के विरूद्ध विषवमन ही करते रहेंगें।

तुलना करना एक अच्छी बात हैं पर अपनी रेखा को बड़ा दिखाने के लिये अन्य रेखायें मिटाना कतई जरूरी नहीं होता। जितनी गालियां उन्होने दोनो अखिल भारतीय दलों को दी हैं उतनी तो दोनो दलों ने मिलकर भी उन्हें नहीं दी होंगी। यह सही हैं कि राजनैति को भ्रष्टाचार से पूर्णतः मुक्त नहीं कया जा सकता पर यह भी सही हैं कि कोई भी दल भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हो सकता। उनका भी !

वे तो हर तरफ उंगलियां उठा रहे हैं। इससे बेहतर होता कि वे उनके वादों को अक्षरशः पूरा करते जो वे नहीं कर पायेंगे। हर शासक एक अनजाने भय एवं अनिश्चितता की ग्रंथि से ग्रसित होता हैं जो कि अरविन्द केजरीवाल भी हैं। वे अभी से यानि शपथ ग्रहण के बहत्तर घंटे के अन्दर यानि कि वर्षान्त तेरह में ही कहनें लगे कि देखना कोई अड़तालीस घंटे में ही हमारी टांग खींच कर गिरा देगा।

उनकी हालत उस कमजोर व्यक्ति की तरह हैं जो अपनी कमजोरी को ताकत मानता हैं। वे हर बात पर मीडिया में चिल्ला कर कहते हैं यहां तक कि ट्विटर पर भी भगवान की शिकायत
दिल्ली की जनता से करने लगे कि भगवान ने गलत समय पर उन्हें बीमार कर दिया। जब पहली ठोकर में ही उन्हें अट्ठाइस कुर्सियों मिल गई तब भगवान को धन्यवाद नहीं दिया। उन्हें मालूम था कि वायदा पूरा नहीं कर पायेंगे। पानी उन्होनें सभी को मुफ्त दिलाने का वायदा किया था। यह नहीं कहा था कि मात्र आधी दिल्ली को ही वे पानी मुफ्त मुहैया करवा पायेंगे।

बगैर धन संग्रह के सरकार नहीं चलती। हर पैसा एक बीज होता हैं जिसे इंग्लिश में "सीड मनी" कहते हैं। अरविन्द केजरीवाल कुछ खुद की आय से पूरी दिल्ली प्रान्त को सुविधायें पांच साल तक नहीं दे सकते। कहीं न कहीं तो बताना चाहिये कि वे जो

सुविधाऐं मुफ्त में लुटा रहे हैं वे कबतक लुटा पायेंगे और भविष्य में वे दिल्ली का प्रबंधन कैसे कर सकेंगें।

चक्का जाम करना सरल हैं पर चक्को को चलाये रखना मुश्किल हैं। उसे ईंधन की आवश्यकता पड़ती हैं। गति के लिये शक्ति चाहिये और वह शक्ति मुद्रा हैं। उन्होनें कुछ मीटर वाले घरो को प्रतिदिन छः सौ छयासठ लीटर पानी निःशुल्क देने का वायदा किया हैं। अब इसी तर्ज पर बिजली कितने घरो का आधे दामों पर दे पायेंगे या बिजली की हालत दिग्विजय सिंह का मध्य प्रदेश जैसी हो जायेगी। पैसा लुटाना सरल है पर कमाना मुश्किल हैं और एशियाड करवाना और भी मुश्किल।

यदि उन्हें कुछ दूरी तक ही दौड़ना हो तो ठीक और दिल्ली को पाँच साल तक चलाना हो तो कुछ कठोर निर्णय तो उन्हें लेना ही पड़ेेंगें। ऐसी हालत में दिल्लीवासी फिर शीला दीक्षित को याद करने लगे तो “आप” पार्टी का तो वजूद ही मिट जायेगा।

अभी वे अपनी गतिविधियां अन्य प्रान्तो में फैला रहे हैं। ईमानदार व्यक्तियों से आवेदन नहीं लिये जाते उन्हें खोजना पड़ता हैं। ईमानदार आदमी उनकी तरह निर्णय लेते हैं क्योंकि वे खुद्दार होते हैं। वे अन्ना हजारे के आंदोलन में शामिल हुये थे। अब अन्ना को उन्होनें विचलन मार्ग के द्वारा कोने में कर दिया और नायक फिल्म की तरह नायक बन गये हैं। उन्हें याद रखना चाहिये कि नायक एक ही दिन का नायक था और अन्त में उसे भी हिंसा का सहारा लेना पड़ा था।

कांग्रेस का इतिहास रहा है कि उस पार्टी ने जिसको सहारा दिया हैं उसको ही धूल चटाई हैं यह तो तय हैं कि केजरीवाल का यह आदर्श नाटक कुछ ही दिन चल पायेगा। वे जिस दिन कांग्रेस और बी.जे.पी. के नेताओं को जेल में ठूंसना आरम्भ करेंगे जैसा कि वे कहते रहें हैं तब उनके लिये भी तिहाड़ के दरवाजे खुल जायेंगे। भारत का प्रजातंत्र सभी पार्टियों के कारण हैं किसी एक व्यक्ति के कारण नहीं। इस सिलसिले में इंदिरा गांधी भी ठोकर खाकर गिर चुकी हैं।

यदि केजरीवाल का यह सोचना हैं कि चूंकि उनका शासन कुछ दिनों का मेहमान हैं अतः दिल्ली का खजाना खाली कर दिया जाये तो यह एक कुशासन होगा सुशासन नहीं। यह एक अच्छे प्रशासक का गुण नहीं। उन्होनें एक जनवरी दो हजार चैदह से बिजली के बिल आधे कर दिये हैं इसे वे कैसे चुकायेंगे। बिजली का उत्पादन बढ़ा नहीं और खर्च बढ़ गया। ऐसा न हो कि कहीं बिजली कम्पनियाँ हड़ताल कर दें तब तो जनता का आक्रोश उन पर टूट पड़ेगा।

पूछिये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लड़कियों से पूछिये
    दिन रात डर होता हैं क्या ?
आपके इस शहर में
    शामों-सहर होता हैं क्या ?
गाँव की नदियों में
    कैसे नालियां बहने लगीं
गांव वालों से भी पूछो
    कि शहर होता हैं क्या ?
सर्दियों की रात में
    कपड़े बदन पर हों नहीं
कंपकपाती रात का तब
    हर पहर होता हैं क्या ?
सियासत ने चन्द सिक्के
    किसानों को दे दिये ।
पूछिये खेतों से सड़कों का
    कहर होता हैं क्या ?
अस्पतालों में भटकते हम
    रहे बच्चा लिये।

दवाओं से पूछिये
दर्दे जिगर होता हैं क्या ?
भूख से जो मर रहे हों
उनकी हर पल मौत हैं।
उनकी नजरों से भी देखो
कि जहर होता हैं क्या ?
जाने कब मालिक मकां
भाड़े के घर को छीन लें
जरा घर वालों से पूछो
अपना घर होता हैं क्या ?

अतीत का भविष्य

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

यदि मैं भूला नहीं तो वह साहब का ही कुत्ता था। उसे मैनें दो चीजो से पहचाना। एक तो उसके गले का पट्टा और दूसरा मुझ पर झपकना। मगर मुझे अचरज हुआ कि वह इन झोपड़ पट्टियों में कैसे आ गया। जब वह साहब के बंगले में था तो एक नौकर उसकी देख रेख के लिये ही रखा गया था। जब भी साहब के घर जाता था तो वह मुझे देख कर जरूर झपटता था। शायद साबह भी यह चाहते होंगे कि वह मुझे देख कर झपटे। साहब साहब ही थे। सोते समय भी टाई उनके गले में रहती थी। सोते समय वे टाई ढीली कर लेते थे।

दूसरी तरफ मैं था। उनका तत्काल नीचे का अधिकारी। मैं कपड़ो के मामलें में बिंदास रहता था। इसीलिये साहब मुझे नहीं चाहते थे। पर नौकरों के द्वारा मुझे बंगले से बाहर भी नहीं निकाल सकते थे। क्योंकि एक तो मैं उनके तत्काल नीचे का अधिकारी और दूसरे मैं ईमानदार था। अतः शायद उन्होनें ही उस कुत्ते को मुझ पर झपटना सिखा दिया था। उनका कुत्ता मेरे प्रति उनकी मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता था। जैसे कैरम में जब कोई गोट आसानी से गुल्लक में नहीं जाती तो उसे दूसरी गोट से ठोकर मार कर अन्दर किया जाता हैं।

साहब के बंगले में तो मैं उससे डर जाया करता था पर यहां एक अपरिचित मोहल्ले में जब वह मुझ पर झपटा तो मैनें एक डंडा उस पर टिटकार दिया। वह मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखता हुआ दूर जाकर भौंकने लगा।

दरअसल जब मेरे साहब रिश्वत लेते हुए पकड़े गये तो उन्हें जेल हो गई। कुत्ते का पेट उसे आवारा भटकाने लगा। वह बहुत दुबला हो गया था। जब इस नये मोहल्ले में उसने मुझे देखा तो उसे याद आ गया कि साहब मुझे नहीं चाहते थे और उसे मुझ पर झपटने के लिये प्रेरित करते थे। उसके इस कार्य के लिये साहब का अतिरिक्त स्नेह उसे मिलता था।

मगर जानवर तो जानवर ही होता है। उसका अतीत उसे चलाता हैं भले ही परवरिश बदल जाये। अतः वह आवारा हो गया कुत्ता उनके अनुपस्थित रहने पर भी झपटने के लिये आदतन विवश था। अतीत ही वर्तमान को नियंत्रित करता हैं।

उस कुत्ते का वह वह व्यौहार आदमियों पर भी लागू होता हैं। हमें अतीत ही चलाता हैं। अतीत से हम भविष्य पाना चाहते हैं। दो दुश्मन जब नये परिवशे में मिलते हैं तब भी खुल कर नहीं मिल पाते। उन्हें लगता हैं कि अतीत यहां भी उन्हें झांक रहा हैं।

गिरगिटो का शहर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पंकज टाकीज के सामने एक तेज रफ्तार ट्रक ने एक ग्याहर वर्ष के मासूम को कुचल दिया। तत्काल ही कायर भीड़ इकट्ठी हो गई। सामने ही एक डाक्टर की क्लिनिक थी। उस रोंगटे खड़े कर देने वाली दुर्घटना को देखते ही उन्होनें दुकान के शटर गिरा दिये। भीड़ ने तब "शटर" भड़भड़ाये और डाक्टर को ऐसा लगा कि शटर टूटर जायेंगे तो उन्होनें शटर खोल दिये। भीड़ से घिरे वे उस लाश के पास पहंुचे। उन्होनें उसे कृत्रिम सांस देना चालू कर दी। एक छोटे कागज पर उन्होने "डेक्सामिथासेन" के इंजेक्शन और सिरिंत लिख कर उस आदमी को दे दी जो भीड़ का नायक बना हुआ था। वह आदमी पीछे हट गया। उसने वह परची दूसरे को पकड़ा दी।

वह गंदे कपड़े और चप्पल पहने हुये सब्जी लेने जा रहा था। वह परिभाषा के आम आदमी से भी निचली स्तर का व्यक्ति था। वह निचली स्तर का आदमी सामने के ही मेडिकल स्टोर पहुंचा और पर्ची स्टोर वाले को पकड़ा दी।

हालांकि मेडिकल स्टोर वाला भी वह दुर्घटना देख रहा था पर उसने सब दवाइयों के इक्यावन रूपये मांगे। उस निचली स्तर के आदमी के पास मात्र पचास रूपये ही थे। मेडिकल स्टोर वाले ने एक रूपये के लिये उसकी घड़ी उतरवा ली। ट्रक के पास भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ ड्राइवर को मारने लगी। जब उस ड्राइवर की पर्याप्त पिटाई हो चुकी तो एक हट्टा कट्टा आदमी यह कह कर कि वह ड्राइवर को थाने ले जा रहा है कुछ दूर ले गया। कुछ दूर जाने पर उसने ड्राइवर से एक हजार रूपये लिये और उससे कहा “तू फरार हो जा”।

यहां डाक्टर ने इंजेक्शन देने के बाद यह घोषित कर दिया कि वह लड़का मर चुका था। कुछ देर बाद लड़के का बाप आ गया। वह शहर का नामी गुण्डा था। उसे देख कर मेडीकल स्टोर वाला डाक्टर, भीड़ और वह हट्टा कट्टा उससे गले लग कर रोने लगे। डाक्टर बोला “दादा” जैसे ही मैनें एक्सीडेन्ट देखा तत्काल क्लिनिक के शटर गिरा कर मुन्ना के पास आ गया। मैनें उसे कृत्रिम सांस भी दी और जीवन रक्षक इंजेक्शन भी दिये पर भगवान के आगे किसकी चलती हैं।

मेडिकल स्टोर वाला रोते रोते बोला “दादा मैं तो बच्चे को देखते ही पहचान गया था कि दादा का बच्चा हैं। मैनें दवाओं के कुछ पैसे भी छोड़ दिये। कहा गया वह आदमी जो घड़ी रख कर गया था उसे घड़ी वापिस करना हैं।

हट्टा कट्टा आदमी ज्यादा ही रो रहा था। सुसकते हुये बोला “उस्ताद जी बच्चे को मैं घर पहुंचा दूंगा कितना सोना बच्चा हैं।” उस लड़के की शव यात्रा में वह पूरी भीड़ रोते हुये चल रही थी मात्र वह आखिरी आदमी ठगा या रह गया जिसके पास सब्जी खरीदने के पैसे भी खत्म हो गये थे।

गिरगिटो का शहर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सहारे डोर के ही।

पतंगे झगड़ती हैं।।
डोर बालो के लिये।
आसमाँ पे लड़ती हैं।।
डोर से तोड़ कर।
रिश्ता, पतंग गिरती हैं।।
बंधी हो डोर से तो।
आसमां पे चढ़ती हैं।।
रंग बिरंगे फूल पतंगे।
गगन पर हैं।।
झूमती हैं कभी।
तो वे कभी मचलतीं हैं।।
विसात आसमां हैं।
मोहरा पतंगे हैं।।
इशारा मिलने वें।
अगलीं चाल चलती हैं।।
सोच को आदमी के।
गगन पर बताती हैं।।
कभी लड़ती हैं कभी ।
तो कभी ठुनकती हैं।।
गले मिलने पे कभी ।
गला काट देती हैं।।
एक दूसरे के पतंगे।
जो गले पड़ती हैं।।
हमी उड़ा के हमी।
देखतें है हसरत से।।
नाजनीनों की तरह।
पतंगे संवरती हैं।।
कभी कण्डील।
पतंगो के साथ रातों में।।
ठुमकती झूमती।
तारों की तरह लगती हैं।।
कभी दुपट्टे की तरह।

तेज हवा चलने पर।।

पतंगे सर सरा कर।

हवा में निकलतीं हैं।।

किसी तालाब में ।

कई कमल खिलें हों जैसे।।

पतंगे आसमां पर ।

उनकी तरह खिलतीं हैं।।

भौरें फसाते फूल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं कदा की तरह फूल हंसने लगे।

भौरें मैंकश की मानिन्द फंसने लगे।।

किस तरह आ गये हम अंधेरे तले।

जाले मकड़ी के गरदन पे फंसने लगे।।

घर तो बदरंग और बौने होने लगे।

ऊँचे मीनारें धरती में धंसने लगे।।

चहचहाते परिन्दे थे जिन पर कभी।

प्रेत अब उन दरख्तों में बसने लगे।।

फायदा क्या समन्दर हो चारो तरफ।

चन्द बंूदों को कश्ती तरसने लगे।।

कोई वासन्ती मौसम अब आये यहाँ।

और बहारों की शबनम बरसने लगे।।

बदहाल जंगल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

क्यों न यारी जाये चटक।
    मौसम रस्ता गया भटक।।
सियार भेड़ियों को रोको।
    वे जंगल को रहे गटक।।
शेर पड़े हैं सुस्ती में।
    कहते उनकी नहीं अटक।।
कितनें सारे कीडे हैं।
    जो पेड़ो पर रहे लटक।।
नेता की तकरीरों में।
    गूदा कम और अधिक मटक।।
कचरे को अब चिड़ियें ही।
    बाहर जोकर रहीं फटक।।

हम सब उस पर अमल करेंगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नियम और भी सरल बनेंगे,।
सबल और भी सबल बनेंगें।।
खाई को गहरा करने की
पर्वत बढ़कर पहल करेंगे।।
पत्थर से लड़वाकर पत्थर
शीशो के सब महल बनेंगे।।
अनुवादो की नकल हर जगह
आगे कितनी नकल करेंगे।।
तलवारो के आगे झुक कर
घाव शान्ति की पहल करेंगे।।
भक्तो में आराध्य आये हैं
और अधिक वे धवल लगेंगे।।
उनकी जड़े ऊध्र्व गामी हैं
तब ही नीचे सुफल लगेंगे।।
वे लक्ष्मण रेखा खीचेंगे
हम सब उस पर अमल करेंगे।।

भारत देश महान मिला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घूरे पर से पनी बीनता
भूखा एक इन्सान मिला।
बगैर छतों के सड़कों पर
रातों को हिन्दुस्तान मिला।।
बस में, सड़को पर, कमरो में
अपनी लाज बचाने को।।
अबला की आँखो में जलता
एक कैद तूफान मिला।।
रिश्वत खोरी, भाइ, भजीजो
के कारण छत पर लटका
नहीं नौकरी मिलने पर
एक पड़ा लिखा अरमान मिला।।
कहीं गरीबों की हड्डी के
ईंधन के ऊपर पकते
बड़ी होटलों में अमीर का
सजा हुआ पकवान मिला
और गांव की झोपड़ियों,
गंदी नालो की बस्ती में।
आंखो के सपनों में कल का
भारत देश महान मिला।।

संगमरमर पिघलने लगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अपने गम के जो आंसू छलकने लगे।
        देख कर संग मरमर पिघलने लगे।।
मैनें पूछा जो उनसे कि क्या हाल हैं,
        लग के कंधे से मेरे सिसकने लगे।।
आसमानों का फन्दा जो ज्यादा कसा ।
        पैर धरती से मेरे सरकने लगे।।
मैं बया अपनी तकलीफ करने लगा,
        हंस के सोफे पे वे कुछ धसकने लगे।।
झोपड़ी की जगह उनकी मंजिल तनी
        घाव सीने में मेरे कसकने लगे।।

सरकार द्वारा मेरा कल्याण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भारत सरकारें मेरे परिवार का कल्याण हर दिन चाहती हैं। हर दिन एक ऊटपटांग काम हमारे घर के आगे, हमारे कल्याण के नाम पर होता रहता हैं। मैनें भारत सरकारें शब्द का उपयोग किया है। इसका कारण है कि हर पांच साल में सरकार बदल जाती है। या तो सरकार की सरकार आती हैं, या विरोधी दल की सरकार। फिर पंचायत

की सरकार, मंडी की सरकार, झांकी समिति की सरकार, नगर पालिका की सरकार, विधान सभा की सरकार, लोक सभा की सरकार, या इसकी सरकार या वो उसकी सरकार आती रहती हैं। हर सरकार का काम पैसे वसूलना होता है, चाहे वह पत्नि की सरकार हो या झांकी की सरकार हो या भारत सरकार हो।

तो उस दिन मैं उठा तो घर के चारो तरफ झील बन गई थी और घर एक टापू बन गया था। मैनें मजदूर सरकार से पूछा अब हमारा क्या कल्याण हो रहा है। तुमने जो हमें नजरबंद कर दिया" उसने जवाब दिया कि आपके घर के चारों तरफ नल के पाइप डाले जा रहे हैं। जहां से आपका मन चाहे कनेक्शन ले लो।

मैनें घर से दृष्टि को विशाल दृष्टि किया तो मोहल्ले के हर मकान के चारो तरफ खाइयां खुदी हुई थी। ये लड़ने वाले भाइयो को भाई से अलग करने की साजिश थी। मैनें भी वही सोचा जो बाकी मोहल्ले वाले सोच रहे थे कि अब हम आपस में कैसें लड़ेंगे यह तो हमारे लड़ाई झगड़े को खत्म करने की साजिश थी। जबकि मोहल्ले वालो से लड़ना हमारा जन्म सिद्ध मौलिक अधिकार था।

मैनें कहा "भारत सरकार पहले भी तीन सेट पाइपो के हमारे चारो तरफ डाल चुकी है। चैथे की क्या जरूरत आपको आ पड़ी। हमें तो जरूरत नहीं हैं। उस एम.म. पास मजदूर ने हमसे पूछा "क्या पहले वानी आया ? मैनें प्रति प्रश्न किया "क्या अब आयेगा ? उसने कहा मेरा उत्तर अर्ध सत्य है। आधा सत्य यह है कि पाइप डाला जा रहा है और आधा झूठ यह है कि पानी आयेगा।"

मुझे दुख हुआ। एक असहाय नागरिक केवल दुखी हो सकता है सो मैनें भी कर्तव्य निर्वाह किया। घर के बाहर निकलने में हिडोंलना में झूलने का आनन्द आता है। ऐसा लगता है जैसे ड्रेगन झूला घर के चारो तरफ खिंच गया हो। मैनें मजदूर के पर्यवेक्षक से पूछने की हिम्मत की पुरानी पाइप लाइन से ही कनेक्शन क्यों नहीं दे देते ? उस कटखने शख्श ने जवाब दिया "फिर ये जो पाइप विधायक के पाइप कारखाने से खरीदे गये है इन्हें क्या बिजली के जगह लगायेंगे। मैनें डरते डरते पूछा "क्या उससे बिजली आ जायेगी ?

इस बार उसने प्रति प्रश्न किया क्या अभी आती है ? तो कभी मंत्री जी थोक में पाइप खरीद लेते है तो कभी विधायक की फैक्ट्री से पाइप खरीद लिये जाते हैं। मैनें दबे कान यह भी सुना है कि पाइप खरीदी में करोड़ो घपला होता है पर मैं नहीं मानता। मेरे विचार से अरबो का होता है।

इन पाइप लाइनों को टंकी से नहीं जोड़ा जाता। यदि जोड़ा जाता है तो टंकी भरने की कोई व्यवस्था नहीं है। यही हाल बिजली के खम्बो का हैं। इन कल्याणकारी योजनाओं से डर लगता है कि मालूम नहीं कब घर गिर जाये या कब बिजली का

खम्बा घर पर गिर जाये। ये जमीन में पाइप और ऊपर बिजली के तार इसलिये बिछाये जा रहे हैं कि हजारों साल बाद जब खुदार्द हो तो देशवासी कह सकें कि उनके पूर्वज बिजली, नल और अग्निबाण और पुष्पक विमान से

परिचित थे। सरकार की कितनी दूर दृष्टि है कहते हैं कि योजनायें कम से कम अगले पचास सालो को ध्यान में रख कर बनाई जानी चाहिये पर ये तो हजार साल बाद की सोचते है।

बिजली के बिल तो बिजली का झटका देते ही हैं पानी के बिल भी बिजली का झटका देते हैं। हम ये बिल इसलिये चुकाते जाते हैं कि घर की कुर्की का नोटिस न मिल जाये। ऐसा हो चुका हैं लघु उद्योग विभाग मेरे घर पर मेरे दस्तखत न होने पर भी अनजान व्यक्ति को ऋण दे देता है। वह अंजान व्यक्ति हो सकता हैं कि संचालक महोदय न हों। फिलहाल मुझे एक दिन नोटिस मिला कि अत्यन्त हर्ष का विषय हैं फला तारीख को आपका घर नीलाम होने जा रहा हैं।

इस तरह सरकार के हर विभाग का मेरा घर कुर्क करने पर हर्ष होता है। मुझे हर दिन अपना मकान कब्जे में रखने के लिये सरकार से सरकारी न्यायालय में द्वन्द युद्ध करना पड़ता हैं।

आजपा (आम जनता पार्टी) से साक्षात्कार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आजपा के मंत्री शासन में आते ही लक्जरी कार में बैठ गये। उनकी लार तो पहले से ही उन कारों पर टपक रही थी। बैठ गये तो कोई गलत नहीं किया। कुछ लोग इस बात पर नाक भौं सिकोड़ने लगे। सिकोड़ने वालो की नाक का क्या करें ? वह तो राजपथ पर गोबर देख कर भी सिकुड़ जाती है। सिकोड़ने वालो की भोहों का क्या करें वह तो शहर में अखिल भारतीय कवि सह मुशायरा सह संगीत सम्मेलन पर भी सिकुड़ जाती हैं। जनता की इन्ही भावनाओं को ध्यान में रखते हुये संवाद दाता ने पूछा

संवाद दाता: आप ने कहा था कि आप आम आदमी की तरह रहेंगे पर आम आदमी तो लक्जरी कार में नहीं घूमता ?

आजपा: इसमें हमारी क्या गलती है ?
आम आदमी को लक्जरी कार में घूमने से किसने रोका है।

संवाददाता: आम आदमी के पास इतने पैसे कहां कि वह लक्जरी कार खरीद सकें ?

आजपा: तो हमने भी खरीदी कहां हैं ? सरकारी है। अब आम आमदी सरकारी बसों में घूमता है जो हमारी कार से मंहगी आती हैं तो हम आपत्ति नहीं लेते। घूमो, खूब धक्के खाओं। धक्के खाने का शौक है तो हम क्या करें ?

संवाददाता: जीतने के एक दम बाद तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में गये थे।

आजपा: तो इसमें क्या आपत्ति है पहले दिन थोक में इतनी कारें खरीदी नहीं गई थी।

संवाददाता: यह जो जनता के खजाने पर डाका डालना हुआ।

आजपा: पहले हम जनता में थे। अपने ही खजाने पर क्या डाका डालते ? अब जनता से अलग हो गये है। अब हम उसके खजाने पर डाका डाल सकते है।

संवाददाता: आप पुरानी कारों में भी तो विधानसभा आ सकते थे।

आजपा: हम पुराने ढर्रे पर नहीं चलते। क्रांतिकारी है नये रास्तों पर चलते हैं।

संवाददाता: आप अपने अलावा सबको भ्रष्ट कहते है

आजपा: वे लोग है भी भ्रष्ट

संवाददाता: और आप सब ?

आजपा:	हमें अभी मौका नहीं मिला है। हमें खुशी मिलेगी अगर कोई हमें भ्रष्ट करेगा। आप की नजरो में कोई हमें भ्रष्ट करने वाला मिले जो भेजियेगा। आपको दस प्रतिशत कमीशन मिलेगा।

संवाददाता:	उन्ही भ्रष्ट लोगों का आप सहयोग ने रहे हैं।

आजपा:	उनसे हमें बहुत कुछ सीखना है।

संवाददाता:	यह तो जनता से साथ धोखा है।

आजपा:	हम तो जन भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जनता ने हमसे कहा कि हमें धोखा दो। तो हम देने लगे।

संवाददाता:	मगर दूसरे प्रान्त में आप भ्रष्ट लोगो के विरूद्ध चुनाव लड़ रहें है।

आजपा:	हां उस प्रांत में वे भ्रष्ट है। इस प्रान्त में जनता ने उन्हें सुधार दिया तो हमने सहयोग ले लिया।

संवाददाता:	आप जल कर माफ करके और बिजली का बिल आधा करके जनता का खजाना लुटा रहे हैं।

आजपा:	हमारा तो नहीं लुटा रहें। जनता ने हमें इसी मुद्दे पर जिताया था। जब जनता ने नहीं सोचा कि की बगैर खजाने के राज्य कैसे चलेगा तो हम क्यों अपने दिमाग पर जोर डाले ?

संवाददाता:	छः महिने में जब खजाना खाली हो जायेगा तब आप क्या करेंगे ?

आजपा:	हम पानी और बिजली बंद कर देंगे। जब घरो में पानी नहीं आयेगा और बिजली नहीं आयेगी तो बिल तो शून्य ही आयेगा। हम अपना वादा किसी भी हालत में पूरा करेंगे।

संवाददाता:	इससे तो विद्रोह भड़क जायेगा।

आजपा:	जब गर्मी बढ़ती है तो हिल स्टेशन के रास्ते खुल जाते है।

संवाददाता:	आप तो पिट जायेंगे।

आजपा:	पुलिस के डन्डे अभी तैल पी रहे हैं। उन्हें काम मिल जायेगा।

संवाददाता:	इससे तो विद्रोह और भड़क जायेगा।

आजपा:	हम तो चाहते हैं। फिर हम कुछ मंत्रियों से इस्तीफा दिलवायेंगे। वे नई पार्टी बनायेंगे। भोली जनता उन्हें जितायेगी। फिर हम सब धीरे से उनसे मिल जायेंगे।

संवाददाता:	भ्रष्ट पार्टी का यह रिकार्ड रहा है कि उसने जिस पार्टी को सहयोग दिया है वह पार्टी मिट गई। आपकी पार्टी अगर ज्यादा नहीं चल पाई तब ।

आजपा:	हम उन्हीं में मिल जायेंगे। सत्ता दल बन कर हम मक्खन बन गये है। अब हम दुबारा मठा में नहीं मिल सकते। हम ऊपर ही तैरेंगे ?

संवाददाता: लड़कियों पर अपराध बढ़ गये हैं। पहले आप लड़कियों पर अपराध बढ़ने पर मोमबत्ती परेड निकालते थे। अब क्या करेंगे।

आजपा: महात्मा गांधी ने कहा है कि अपराध सहने वाला भी उतना ही अपराधी है जितना कि अपराध करने वाला। अतः हम शिकयत करने वाली लड़कियों को जेल में डाल देंगें।

संवाददाता: शिकायत करने वाली लड़कियों को ? बलात्कार करने वालों को क्यों नहीं ?

आजपा: वे तो हमारी पार्टी के कार्यकर्ता हैं उन्हें जेल में डालकर अपने पैरो पर कुल्हाड़ी थोड़े ही न मारेंगे। फिर अपराधियों को कहा ढूंढने जायेंगे। अभी हमें लोकसभा की तैय्यारी में उनसे काम भी लेना हैं।

काव्य में रचनाकार द्वारा स्वयं का नाम देने का आग्रह

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

काव्य में स्वयं का नाम देने की परम्परा बहुत पुरानी हैं। यह आग्रह या मोह हमें संस्कृत साहित्य में भी मिलता है। उपनिषदो में यह आग्रह आवश्यक रूप से आया है ऋचाओं के पूर्व में या पश्चात यह आग्रह बिखरा हुआ पड़ा। महर्षि व्यास ने तो महाभारत में इसका खुलकर उपयोग किया है। महाभारत में वह स्वयं को एक मंत्रदृष्टा ऋषि के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं और स्थान स्थान पर युधिष्ठिर को उपदेश देते हुये या सूत्रधार के रूप में दिखते हैं। गीता में तो दसवें अध्याय में स्वयं को कृष्ण के समकक्ष रखते हैं यथा

वृष्णीना वासुदेवोडस्मि पाण्डवानां धनन्जय:।
मुनीनाव्यहं व्यासः पाण्डवानां कबीनामुशना कवि:।।

गीता के दसवें अध्यास के सैतीसवें श्लोक में वे कहते है कि वृष्णियों में मैं वासुदेव (अर्थात कृष्ण) हूँ पाण्डवो में धनन्जय (अर्थात अर्जुन) हूँ मुनियों में व्यास और कवियों में उशना (अर्थात शुक्राचार्य) हूँ।

वे भगवान की विभूतियों में हाथी घोड़े पीपल नागों इत्यादि तक को बतलाते है पर महर्षि वाल्मीकि को भूल जाते हैं। हिन्दी साहित्य के र्भिक्तकाल में यह आग्रह कविवर रहीम, कबीर, तुलसी, सूरदास, मीराबाई आदि में बिखरा हुआ पड़ा है। उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है पर प्रतिनिधि रूप में कुछ रचनायें प्रस्तुत की जा रही हैं।

(1) कबिरा सोई पीर है जो जाने पर पीर
जो पर पीर न जानहि सो काफिर वे पीर।।

(2) रहिमन वे नर मर चुके जो कहुँ मांगन जांहि।
उनसे पहले वे मुये जिन मुख निकषत नाहि।।

(3) स्वान्तः सुखास तुलसी रघुनाथ
माथा, भाषा निबन्ध मति मन्जुल मा तनोति।।

(4) सूरदास तब बिहंसि जसोदा ने उर कंठ लगायो।

(5) दासी मीरा लाल गिरधर तारियों अब मोहि।

उर्दू गजलें तो बिना तखल्लुस के अपूर्ण मानी जाती है जैसे
यूं तो हैं दुनिया में सुखनवर कई अच्छे
कहते हैं कि गालिब का है अन्दाजे बयां और।।

चाहे मीर हो या गालिब हो वे यह मोह नहीं छोड़ पाते हो गालिब ने कुछ रचनाओं में यह परम्परा तोड़ी है। वे इस मायने में क्रांतिकारी प्रतीत होते हैं। आज से चार सौ साल पूर्व परम्परा तोड़ने की यह हिम्मत एक क्रांति ही मानी जायेगी उनकी गजलें दरबार से निकल कर सड़क पर आ जाती हैं। गजल के उन्होने पूरे मायने ही बदल दिये हैं। जहां गजल का मतलब प्रेमी और प्रेमिका की वार्तालाप होता हैं वहाँ गालिब की गजलें क्रांति का परचम लिये दिखती हैं।

हिन्दी काव्य में इस आग्रह को पूरी तरह नकार दिया गया हैं। जय शंकर प्रसाद हो या सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हों (हिन्दी के पहले गजलकार) या महादेवी वर्मा हो या आधुनक कवि हों वे रचनाओं में स्वयं को नहीं जड़ते। यहां तक कि हिन्दी गजलों में यह परंपरा टूट जाती है। गजल नाम का काव्य हिन्दी व्याकरण या हिन्दी साहित्य पुस्तक में देखने नहीं मिलता पर उसका प्रयोग दुष्यन्त कुमार ने इस तरह प्रतिष्ठित किया कि वह एक काव्य धारा ही बन गई। आज हिन्दी साहित्य में गजल इतनी लिखी जा रही है जितने की शेष अन्य छन्द। इस का कारण है कि इस विद्या में चमत्कारिक तत्व होना एक तरह से आवश्यक हो गया है। इस विधा में आवश्यक नहीं कि दूसरा छन्द पहले पर परतंत्र हो, सभी छंद एक दूसरे से स्वतंत्र रह सकते हैं। मात्र दो पंक्तियों में दोहों की तरह एक पुस्तक के भाव आ सकते हैं।

छंदो या काव्य में स्वयं का नाम देना एक तरह से कवि का “ब्रान्ड” बन गया था। कहीं कहीं मात्रायें पूर्ण करने के लिये भी नाम का प्रयोग किया जाता है। फिर भक्तिकाल में गुरू शिष्य परम्परा या घराने हुआ करते थे। अतः रचनाकारों के शिष्यों को पहचानने में भी सरलता होती थी। यह परम्परा जहां संस्कृत में छिपी हुई मिलती है वहीं भक्तिकालनी रचनाओं में स्पष्ट रूप से उभर कर आई है और गजलों में शिद्दत के साथ उभर कर आई है।

इंग्लिश साहित्य एवं काव्य में यह परम्परा नहीं मिलतीं है चाहे वह शैले हो, शेक्शपियर हो कोट्स हो वर्डसवर्स हो बारबरा ओनील हो किसी ने उनके काव्यों में स्वयं के नाम का ठप्पा नहीं लगाया है।

बची रही

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लूट कर सब ले गये इज्जत बची रही।
लड़ती रही वह अन्त तक हिम्मत बची रही।।
ईमान के रहते सभी कुछ हाथ से गया।

सब कुछ गया पर हाथ में जन्नत बची रही।।
मिलने के बाद घूरते है दिखा कर छुरियां।
मिलना नहीं था दिल से तो नफरत बची रही।।
दुनिया की दौलतें तो नियामत उन्हें हुई।
हैं तो अमीर दिल की पर गुरबत बची रही।।
करके गुनाह सामने पछता रहे हैं वे ।
करना हैं फिर गुनाह की लज्जत बची रही।

सूरज पर हमला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लेकर किरणों का अमला
सूरज का नीचे का हमला
अपन तर व तर गर्मी में
सूखा बगिया का गमला
दादा कहते नाती से
पानी तू फ्रिज का मत ला
सोच रहे प्यासे पक्षी

उलझा पानी का मसला
नहीं झोपड़ी में पानी
रोज नहाता है बंगला
सड़े हुये मत ले आना
गर्मी में अच्छा फल ला
दूध गर्मियों में ग्वाला
देती है कितना पतला
प्यासे है पशु घर के तू
पानी कुछ गन्दा भर ला
लू की हवा जलाती है
जल्दी से मेघा जल ला

दिल पर काली कमली है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रपट पुलिस में नकली है।
मगर मुकद्मा असली है।।
ऊपर मिले हुये नीचे।
अपनी अपनी ढपली है।।
झण्डे क्या है छुरियां है।
और हमारी पसली है।।
भाव आसमानों पर हैं।
नीचे हालत पतली है।।
चाल एक सी है हरदम।

पिछली थी या अगली हैं।।
वहीं घिनोने चेहरे हैं।
देखूँ आती मतली है।ं
हैं सफेद कपड़े उनके।
दिल पर काली कमली हैं।।

गड़ता है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बेइज्जत होकर भी जाना पड़ता हैं।
मिले बेरूखी तब भी खाना पड़ता हैं।।
हमें समझ क्या रक्खा हैं नेताओं ने।
उनका गाली भरा तराना गड़ता हैं।।
अब लाखों में उनको तनखा मिलती हैं।
फिर अरबों का रिश्वत खाना गड़ता हैं।।
सरे आम महिलाओं का छेड़ा जाना।
कुछ पुरूषों को पशु हो जाना गड़ता हैं।।
लोक सभा में गुण्डो का चुन कर जाना।
उस पर उनका बना ठिकाना गड़ता हैं।

शीशे और पत्थर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सीशो के घर लड़ते हैं।
पत्थर हम पर पड़ते हैं।।
चरवाहें शीशे पत्थर।
भेड़ो जैसे लगते हैं।।
कहने भर को पत्थर हैं।
शीशो से भी डरते हैं।।
पत्थर कच्चे शीशों की।
पहरेदारी करते हैं।।
चमक बढ़ाने शीशो की।
मिल का पत्थर लड़ते हैं।।
पत्थर दिल हैं शहरों के।
बदन कांच का रखते हैं।।

चाय चैपाल बनाम काफी चैपाल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पार्टी नेता जी में हवा भर रही है। नेता जी फूलते ही जा रहे हैं वहीं विरोधी पार्टी सुई घुसाने का मौका देख रही हैं। नेता के मंुह से केवल बदबू आती हैं। वे जो भी सामने पड़ता है उस पर थूकने लगते हैं। जनता का कहना है कि उस गुब्बारे में इतनी हवा भरो कि वह फट जाये या हाथ से उड़ जाये।

बड़ी अफरा तफरी मची है। वे सामने झपट्टा मार कर उनके आदमियों को अगवा कर के लाते है तो ये उनके आदमियों को। कुछ बीच में कीमतो की पट्टी लगाये बैठे है। आदमियों की कीमत बड़ गई है।

हर चीज मंहगी हो गई है। कागज मंहगे होने से साहित्य कार अवसाद में है। कागजो पर नारेदार फोटो छापे जा रहे हैं। कुछ साहित्यकारो ने तो अवमूल्यन के डर से कागजो की जमाखोरी पहले से ही कर रखी है। कपड़े मंहगे हो गये है अब कपड़ो की पोशाक नहीं, झण्डे और बेनर बन रहे है। पूरा देश दर्जियों का मोहल्ला बन गया है। रंग रोगन मंहगा हो गया है। कुछ चेहरो पर पोतने के कारण तो कुछ नारे लिखने के कारण। सामने के नारो को पोत कर अपने नारे लिखे जा रहे है। नारे और तुक बंदियां मंहगी हो गई है घटिया कवियों का बाजार उछल गया है।

माइको की फेक्ट्री मांग पूर्ति नहीं कर पा रही हैं। तम्बू वाले सीधे मंुह बात नहीं कर रहे है। होटलो में इतना फायदा हो रहा है कि उसके फायदे से नई नई होटले खुलते जा रही हैं। होटलो के कारण मकान ढंूढना मुश्किल हो गया है। ढ़ाबे पर ढाबे खुलते जा रहे है। इस धमाचैकड़ी में शादी वालो को मैदान नहीं मिल रहे है।

दूरदर्शन में खानदानों की बखिया उधेड़ी जा रही है। इन्हें नहीं मालूम की इनके पड़दादा क्या करते थे पर उन्हें मालूम है कि वे जूतो पर पालिश करते थे। उनके ज्ञान से ये वंशावली सुधार रहे है और इनके ज्ञान से वे चाकुओं डंडो, तलवारों, तोपो,

बमों, पिस्तोलो, राकेट, लांचरो और बंदूक की कीमतो से उछाल आ गया है। गुण्डो और हत्यारो को सर पे बिढाला जा रहा है। उनके चेहरे पर चमक आ गई है। उनके पास समय नहीं है। तरीखे दी जा रही है। कुछ हत्याओं ने घरो के आगे तीन माह बाद अपनी उपलब्धता लिखना चालू कर दी है। सुपारी देने के कारण सुपारी मंहगी हो गई है।

काफी एवं चाय चैपालो के कारण चाय एवं काफी कम्पनियों का बेकार माल बाहर निकलने लगा है। अब चाय पर कमीशनों का दौर चालू हो गया है। नेताओं ने जिन चाय काफी कम्पनियों से पहले "कमीशन" ले रखा था उन्हीं कम्पनियों की चाय खरीदी जा रही है। गृहणियों को आराम मिल गया है। सुबह की चाय/काफी सब चाय चैपालो पर ही पीते हैं। अभी तो बिस्कुट घर से ही ले जाते है पर आशा है कि चुनाव आते न आते खाना भी नहीं बनाना पड़ेगा। मतदाता भगवान से प्रार्थना कर रहे है कि चुना आयोग चाय चैपालो पर आपत्ति न लेने लगे। कुछ कार्यकर्ता दबी जबानों से दास चैपालो की मांग करने लगे है।

बेरोजगारी खत्म हो गई हैं। अखबारों में विज्ञापन निकलने लगे है कि जूता फेंकने वाले, गधो, चेहरा काला करने वालो इत्यादियों की आवश्यकता है। पारिश्रमिक मंुह मांगा दिया जायेगा। एक जूता फेंकने पर पाँच सौ रूपये दिये जा रहे है। जूता राजनैतिक पार्टियां ही देगी। एक बाप उसके सपूत से कह रहा था निगोडे जाके नारे ही लगाने लग। घर का खर्चा चलने लगेगा और कुछ बचत हो जायेगी। लड़की की शादी जो करना है।

नारो के कारण कान बचते फिर रहे है। पत्थरो की कीमत बड़ गई है। हेलमेट पहन कर पैदल चलने की सलाह दी जा रही है। जिनके घर शीशे के है वे दूरो के घरो पर पत्थर फेंकने जा रहे हैं। चुनाव गालियां देकर जीते जाते है, नीतियां गिना कर नहीं।

नेता सबको पहचानने लगा है। उसकी याददाशत लौट आई है। याददाशत तेज करने के लिये वह बादाम खाने लगा है। गरीबो की कीमत बढ़ गई है जो नेता गरीबो को बंगले में नहीं घुसने देता था वह अब उनके साथ खाना खाकर फोटो खिंचवाने लगा है।

जगह-जगह व्ही.डी.ओ ग्राफी हो रही है। नई नई टी.व्ही. चेनल खुल गये है। विज्ञापन समाचार बन गये है और समाचार विज्ञापन। हमारे घर के ऊपर से हेलीकाफ्टर में बैठे विरोधी पार्टी के नेता को सड़को के गढ़ढो से दचके लगने लगे है। हवाई जहाजों का घाटे वाला धंधा अब मुनाफे में बदल गया। कारो के नये नये माडल सड़क पर उतर आये हैं गांवो में जहां सात दिन में एक बस पहुंचती है अब एक दिन में सात बसें

पहंुचने लगी हैं। नेता को अब मालूम पड़ रहा है कि संगीत में तबले की तरह सड़को पर गढ़्ढे हैं।

सब तरफ चहल पहल मची हुई हैं। धूल, धुंआ और धक्का का धुमाल मचा हैं। मकान खाली हो गये है और सड़के भर गई है। अब आसानी से जनसंख्या गिनी जा रही है। सड़को पर सुबह घूमने वालो को शराब की फूटी बोतले पड़ी मिलती है। शराब की खपत बढ़ गई है। झूमते लोग सड़को पर मिल रहे है। दुख का नामो निशान नहीं मिलता। लगता है राम राज्य आ गया है। इस राम राज्य में रावण खुशी से झूम रहें है और राम और सीता दुखी है।

चैराहे, धरनों और सत्याग्रह से व्यस्त है। देश में सभाओं, सत्याग्रहो और धरनों के अलावा कोई काम नहीं रह गया है। जनता या तो भाषण दे रही है या सुन रही है। समाचार पत्रों की बिक्री बढ़ गई हैं। समाचारों की कमी नहीं है। दफ्तरो में खुद इतने समाचार आ रहे है कि संवाददाताओं का काम कुछ कम हो गया हैं। उनकी पूछ परख भी बढ़ गई है। टी.व्ही पर इतनी चीख चिल्लाहट है कि ऐसा लगता है कि घर में बलवा हो रहा है। सूत्रधार इस बलवें के मजे ले रहे हैं।

इतने घपले उजागर हो रहे है कि आम भारतीयों पर आश्चर्य होता है कि वह इतने घपलों में जिन्दा कैसे हैं। उसे आश्चर्य होता है कि क्या उसकी फटी जेब और झोपड़ी में इतने पैसे भी थे जितने रूपयो के घपले हो रहे है। ऐसा लगता है कि भारत सोने की चिड़िया नहीं कई मंजिलों वाली सोने की खादान है।

हर पुरूष स्वयं को कलंकित महसूस कर रहा है। वह अंदर तक डर रहा है कि कहीं उसका भी कोई धारा तीन सौ छहत्तर के तहत लफड़ा तो नहीं हुआ। श्रद्धा की चिट्टी चिन्दी हो रही है। हर लड़की उस पर आरोप लगाकर न्यायालय जाती प्रतीत हो रही है। न्यायालय मुकद्मों के वजन से बैठे जा रहें हैं। उन्हें अब हर बात पर निर्णय देने पड़ रहे हैं जैसे किसी आदमी ने आसमान की तरफ क्यों देखा। वह मंदिर क्यों गया। मंदिर गया तो फलां रास्ते से ही क्यों गया। वहां फलां भजन ही क्यों गाया। भजन गाते समय वह फलां पंक्ति को क्यों भूला या फलां पक्ति पर सिर क्यों नहीं भटकाया। अतः मार्ग पर यह सजा, आसमान देखने पर बरी, भजन में फलां पक्ति झूलने पर यह सजा, और भूलने पर बरी किया जाता है।

प्रजातंत्र में प्रजा और तंत्र का समीकरण बराबर दिख रहा हैं। कहीं प्रजा तंत्र को दबा देती है तो कहीं तंत्र प्रजा को। दोनो में चूहे बिल्ली का खेल चल रहा है। इस तरह विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र विश्व का सफलतम प्रजातंत्र बन गया हैं।

विवाह पूर्व दैहिक संबंध अनैतिक है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अनैतिक वह जो नीतिगत नहीं होता। सर्वमान्य रीति नैतिक होती है। नीति व्यक्ति तै करते हैं, प्रकृति नहीं। उदाहरण स्वरूप कल्पना करें कि चांद पर एक दम कोई समाज उठ खड़ा होता है तो उनके आपसी संबंध वहां का गुरूत्वाकर्षण तै करेगा। वहां का समाज ही तै करेगा।

रीतियाँ एक दिन में तय नहीं होती। पीड़ियाँ लगती है किसी रीति को बनने में यही कालान्तर में रीति का रूप ले लेती है। पहले उन्मुक्त दैहिक संबंध ही होते थे। कालान्तर में उसकी हानियां समझ में आई तो विवाह नाम की संस्था बनी। विवाह एक उत्सव होता है। यह कही नहीं सुना कि एक महिला और पुरूष धूमधाम से विवाह पूर्व संबंध बनाने के लिये रहने लगे। विवाह या पति पत्नी होना एक सर्वमान्य प्रथा है, जो एक पुरूष और महिला को दैहिक संबंध बना कर आदर्श समाज बनाने की अनुमति देते है। यही नीति है। इसके अलावा स्त्री और पुरूष के दैहिक संबंध अनैतिक है, क्योंकि वे एक आदर्श समाज का निर्माण नहीं करते।

मान लीजिये विवाह पूर्व दैहिक संबंधो के बाद एक संतान उत्पन्न की जाती है। अब उसका भविष्य क्या होगा। क्या उसे सार्वजनिक कचरे दान में फेंक दिया जायेगा या गटर में डाल दिया जायेगा। मान ले कि वह पांच वर्ष का हो गया तब वह स्कूल में माता पिता का नाम क्या लिखायेगा? और यदि विवाह पूर्व का वह सबंध प्रेम पूर्वक चलता रहा जो वह विवाह की हुआ न ? और यदि टूट गया तो संतान को अनाथालय जाना पड़ेगा। स्वयं के दैहिक आनन्द के लिये एक अबोध बच्चे के साथ वह घोर अपराध होगा।

विवाह पूर्व उनमुक्त दैहिक संबंध बनाने से दोनो को यौनजनित रोग यहां तक कि एडस होने का डर रहता है। जो एक डरे हुये मरनासना समाज की उत्पत्ति करेगा। जैसा कि अफ्रीका में हो रहा है। इस तरह, विवाह पूर्व दैहिक संबंध बनाना एक मीठा जहर पीना होता है। आजकल कुछ बुद्धिजीवियों में विवाह पूर्व दैहिक संबंध को उचित ठहराने की एक मुहिम सी चल पड़ी है। उसके पक्ष में कई तर्क वे देते है पर इस परम्परा के सामाजिक पहलू को वे बिल्कुल भूल जाते है।

विवाह पूर्व दैहिक संबंधो का सबसे अधिक नुकसान महिलाओ को उठाना पड़ता है हालांकि इसके पक्ष में जो तर्क दिये जाते है वे दहेज दानव की अनुपस्थिति और

स्वतंत्रता है। एक बार बेमेल विवाह हुआ तो पति पत्नी को आपसी नापसन्दगी के बाद भी घुटघुट कर या तो रहना पड़ता है या कोई एक पागल हो जाता है या किसी को आत्महत्या करना पड़ता है या एक कोई उसके साथी की हत्या कर देता हैं। यह हालांकि एक भयावह दृश्य है पर यह सब तो विवाहपूर्व संबंधो में भी हो जाता हैं। विवाह पूर्व संबंध बनाने वाले कंुठित लोग होते हैं यदि उनका मानसिक विश्लेषण किया जाये तो क्या तथ्य सामने आयेगा ? क्या वे बहादुर लोग है या नकारवादी है या भागे हुये लोग है?

यदि वह नकारवादी (निहिलिस्टिक) या भगोड़े है तो वे स्वार्थी है और कैसा समाज बनायेंगे। यदि वे कुछ सालो तक साथ साथ रह कर अलग अलग शादी कर लेते है तो शादी के पहले उनका रहना क्या कहा जायेगा। मात्र शारीरिक आनन्द के लिये साथ रहना या वेश्यावृति ? फिर विवाह पूर्व उनका शारीरिक संबंध वैवाहिक जीवन में जहर घोल देगा। और यदि वे दोनो अजीवन साथ साथ रहते है तो वह विवाह ही हुआ पर वे केवल बहादुर दिखने के लिये अमृता प्रीतम एवं अफरोज या जान इब्राहीम और और बिपाशा बसु की तरह साथ साथ रह रहे होते है इसे पलायन वादी लिव इन रिलेशनशिप का नाम देते है।

सिद्धांतो की लड़ाई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लड़ाई सिद्धांतो की थी। सिद्धांत न होतो तो लड़ाई की कोई बात नहीं थी। चूँकि सिद्धांत थे इसलिये लड़ाई थी। लड़ाई के लिए दो सिद्धांत जरूरी थे, दोनो का एक ही सिद्धांत होता तो लड़ाई का कोई मुद्दा ही नहीं था मगर सिद्धांत तो एक ही था। एक ही सिद्धांत पर दोनो लड़ रहे थे, बस उस एक सिद्धांत के रंग दो थे। अतः वह सिद्धांतो की लड़ाई न होकर रंगो की लड़ाई थी।

खड़े-खड़े लड़ने में दोनो थक गये थे। अतः उन्हें बैठने के लिये कुर्सी चाहिए थी। वह लड़ाई सिद्धांतो से रंगो पर आई और रंगो से कुर्सियों पर आ गई। दरअसल वह लड़ाई कुर्सियों के लिए ही थी। मगर उसे सिद्धातो का रंग दे दिया था। कुर्सी चंूकि एक थी और बैठने वाले दो इसलिये लड़ाई हो रही थी। यदि दो कुर्सियां होती तो लड़ाई न होती। मगर उन्हें लड़ना था, अतः उन्होने एक कुर्सी हटा दी।

उन्हें मालूम था कि वे कुर्सी के लिये लड़ रहे है। वे समझ रहे थे कि वे रंगो एवं रंगो के सिद्धांतो के लिये लड़ रहे है। मगर वे कुर्सी के लिये ही लड़ रहे थे। वे उस

कुर्सी के लिये लड़ रहे थे। कुर्सी आरामदायक थी। उस पर कुशन लगा हुआ था। उस कुर्सी के सामने एक डायनिंग टेबिल थी। उस डायनिंग टेबिल पर लजीज खाना रखा हुआ था। मगर उसे कुर्सी पर बैठने वाला ही खा सकता था। इसलिये वह लड़ाई लजीज खाने के लिये थी, कुर्सी के लिये नहीं थी। उन्हें लग रहा था कि वे सिद्धांतो के लिए लड़ रहे है, पर लजीज खाने के लिए लड़ रहे थे।

सूखी रोटी तो सूखे खेत में भी मिल जाती थी। मगर उसे निकालने के लिए सूखी जमीन को हाड़तोड़ मेहनत से तोउना पड़ता जिसमें पसीना बहता। उन्हें पसीने की बदबू से नफरत थी। इसलिये वे मेहनत करने के बजाय लड़ रहे थे। उनकी लड़ाई मेहनत से बचने की लड़ाई थी और वे समझ रहे थे कि वे सिद्धांतो की लड़ाई लड़ रहे थे।

लड़ते-लड़ते वे गांवो से शहरो में आये और शहरो से विधानसभा पहुंच गये। वहां भी वे लजीज खाने के लिए ही लड़ रहे थे। मगर अखबारों के जरिये वे बतला रहे थे कि वे जनता के हकों के लिए लड़ रहे हैं। वे जनता को खुद के लजीज खाने के लिए लड़ा रहे थे। जनता समझ नही े पा रही थी कि वह आपस में क्यों लड़ रही है। विधानसभा में लड़ने के लिये दो दल थे। सत्तादल और विरोधी दल। सत्ता हल का नेता मुख्यमंत्री बनना चाह रहा था। विरोधी दल के नेता ने दहाड़ा कर कहा "नैतिकता के आधार पर मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना चाहिए।"

मुख्यमंत्री ने आगे देखा, पीछे देखा, ऊपर देखा नीचे देखा, दांये देखा, बांये देखा, किसी तरफ देखा। सब तरफ देखा। उसे नैतिकता नहीं दिखी। अतः उसका आधार भी नही ें दिखा। चूंकि इस्तीफा नैतिकता के आधार पर मांगा गया था और उसके पास नैतिकता नहीं थी। अतः उसने सप्रसन्न इस्तीफा नहीं दिया। मगर मुख्यमंत्री चुप नही रहा। वह बोला" अगर तुम्हारे पास ही नैतिकता या उसका आधार हो तो तुम्ही इस्तीफा दे दो।

नैतिकता इनके पास भी नहीं े थी। मगर उसके आधार पर उनसें भी इस्तीफा मांगा जा रहा था। नैतिकता के कटोरे में कोई भी भीख नही े डाल रहा था। मुख्यमंत्री ने पूछा अगर मैं इस्तीफा नहीं े दे रहा हँू तो तुम आमरण अनश्न क्यों नही ेें करते ?

पिछली बार इन्होने आमरण अनशन किया था। मगर क्रूर मुख्यमंत्री ने उन तक खाना न पहुंचाने के पुख्ता इंतजाम करवा दिये थे। वे मरते मरते बाल बाल बचे। इन्ही े की पार्टी के लोगो ने मांगे पूरी न होने के बावजूद उन्हें फलो का रस पिला कर बचा लिया। आखिर अपने ही काम आते हैं। उसके बाद में आमरण अनशन के नाम से उनकी रूह कांप कर अन्दर तक धसक जाती है।

उनका दल इस बार महामहिम के पास गया। महामहिम भी सत्ता दल ने बनाया था। अतः सत्ता दल को सहारा देना महामहिम का दायित्व था। फिर भी वे महामहिम के पास गये। उन्होने शिकायत की कि मुख्यमंत्री नैतिकता के आधार पर इस्तीफा नहीं दे रहा। महामहिम के सुझाव दिया तो तुम किसी और आधार पर मांग लो। "हमने मांगा था। हमने पूछा कि बाढ़ में सैकड़ो आदमी और मवेशी मर गये तो सरकार क्या कर रही हैं ? मुख्यमंत्री ने जवाब दिया कि सरकार उद्घाटन कर रही हैं।

हमने पूछा कि भुखमरी से सैकड़ो लोग मर गये तो सरकार क्या व्यवस्था कर रही है। मुख्यमंत्री ने जवाब दिया कि सरकार शिलान्यास कर रही हैं। हमने पूछा कि हजारो नौजवान बेराजगारो है सरकार उन्हें रोजगार देने के लिय क्या कर रही है ? तो उन्होने जवाब दिया कि सरकार विधायको की खरीद फरोख्त कर रही है। हमने पूछा कि "बिजली के हालात कैसे सुधरेंगे? तो उन्होने कहा कि उनके विदेशी दौरे से बिजली के हालात सुधर जायेंगे।

"हमने पूछा कि प्रान्त की कानून व्यवस्था कैसे सुधरेगी ?" उन्होने जवाब दिया कि टेक्स लगाने और आश्वासन देने से कानून एवं व्यवस्था के हालत सुधर जायेंगे। यह सब सुनकर महामहिम ने जवाब दिया "हमारी सरकार इतना कुछ तो कर ही रही है। आप लोग और क्या चाहते हैं ? आपकी सरकार होती तो वह भी यह करती।"

फूल और मैंकदा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं कदा की तरह फूल हंसने लगे।
भौरें मैंकश की मानिन्द फंसने लगे।।
किस तरह आ गये हम अंधेरे तले।
जाले मकड़ी के गरदन पे फंसने लगे।।
घर तो बदरंग और बोने होने लगे।
ऊंचे मीनारे धरती में धंसने लगे।।
चहचहाते परिन्दे थे जिन पर कभी ।
प्रेत अब उन दरख्तो पे बसने लगे।।
कोई वासन्ती मौसम अब लाये यहाँ।
और बहारो की शबनम बिखरने लगे।।

क्या ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लड़कियों से पूछिये दिन रात डर होता है क्या।
आपके इस शहर में शामों शहर होता है क्या।।
गांव के बच्चे शहर सब छोड़ कर जाने लगे।
गांव वालो से भी पूछो कि शहर होता है क्या।।
सर्दियों की रात में कपड़े बदन पर हो, नहीं।
कंपकंपाती रात का तब हर पहर होता है क्या ?।।

अस्पतालों में भटकते वे रहे बच्चों लिये।
आके उनसे पूछिये दर्दे जिगर होता है क्या।।
भूख से जो मर रहे हों उनको हर पल मौत है।
उनसे पूछो कब्र तक का सफर होता है क्या।।
जाने कब मालिक मकां भाड़े के घर की छीन ले।
वे घरों से जानिये कि अपना घर होता है क्या।।

लड़खड़ाती मैं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दोपहर ओहदे पे जो आने लगी।
धूप भी अपने तेवर दिखाने लगी।।
चांद ऊपर से निगरानी करने लगा।
चांदनी झील में जो नहाने लगी।।
एक भंवरे को छू के चमेली खिली।
दूसरी अपनी पेंगें बढ़ाने लगी।।
मोगरा खिल गया गंध उसकी लिये।।
दूसरे घर हवा घर बसाने लगी।।
जाम साकी ने हौले से जो चख लिया।
सब ने देखा कि मय लडखड़ाने लगी।।

मौसम खराब हैं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

महुये के दिल में शराब है
काँटो का सपना गुलाब है
        खिले कमल लेते अंगडाई
        कीचड़ पर आया शबाब है
रब के लिये इबादत मेरी
जन्नत दिल का फकत ख्वाब है
        पहला पत्थर मत उठाइये
        यही दुशमनी का जवाब है
आॅखे इतनी लाल हो गई
आँखो से डरती किताब है
        रूठे हैं वो कब से मुझसे
        कब से ये मौसम खराब है

सेमी फाइनल का देश

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हमारा देश एक सेमी फाइनल का देश है। खिलाड़ी सेमी फाइनल तक बे रोक टोक पहुँच जाते है फिर सेमी फाइनल होता है। पूरा देश जानता है और खिलाड़ी भी जानते है कि वहांँ पहुँच कर संघर्ष पूर्ण खेल के बाद हमारे खिलाड़ी हार जाते है और विजयी मुक्कान के लिये वापिस आ जाते है।

सट्टे बाज भी बड़े इत्मीनान से हमारे खिलाड़ियो के सेमी फाइनल तक पहुँचने का सट्टा लगाते है फिर पीछे हट जाते है। यह गौरवपूर्ण इतिहास आजादी के बाद से अब तक कायम है यदि कोई पूछता है कि बेडमिन्टन में सन् 1980 में भारत अन्त्रराष्ट्रीय स्पर्धा में कहाँ तक पहुँचा था तो बेहिचक आंख बंद कर कहा जा सकता है सेमीफाइनल तक।

यदि त्रिकोणीय स्पर्धा भी होती है तब भी हम सेमी फाइनल में बाहर हो जाते है। अभी कबड्डी में हम चेम्पियन है पर पाँच साल बाद जरूर सेमीफाइनल की गौरवपूर्ण स्थिति तक आ जायेंगे नहीे तो खेल मंत्रालय अच्छे खिलाड़ियो को अपमानित करके निकाल देगा।

इस स्थिति का कोई छिपा हुआ कारण नहीे हैं जैसे शिक्षा पर अमीरों या मंत्रियो के बच्चो का हक है वैसे ही अब खेल की टीम में अमीर मंत्रियों के मोटे और थुल-थुल बच्चे भी ही रखे जाते है। आपको याद होगा कि बिहार में जब लालू प्रसाद यादव एंड कंपनी का हक था तब उनके बच्चे डाक्टर बन गये थे और लड़का रणजी ट्राफी में खेलता था और पत्नि मुख्यमंत्री थी क्या ही “टेलेन्टेड” परिवार है।

अर्थ व्यवस्था में भी भारत तीसरे नम्बर पर रहता है। हर तरह की प्रगति में भी हमारी यही दुर्दशा रहती है। यहाँ तक कि हमारे राष्ट्रीय त्यौहार खेल, भ्रष्टाचार में भी

हमारा स्थान प्रथम नहीं रहता है। युद्ध में हम तीसरे स्थान पर रहते हैं। पहले नम्बर पर चीन और दूसरे नम्बर पर पाकिस्तान हैं नहीं तो वे हमारी भारत माता के कुछ हिस्से पर कब्जा कैसे किये बैठे है।

जनसंख्या में हम दूसरे नम्बर पर हैं पहले स्थान पर चीन है पर इसमें खुश रहने जैसी कोई बात नहीं हैं यह एक भ्रामक तस्वीर है यदि जनसंख्या का घनत्व निकाला जाता है तो हम फिसल जायेंगे। हमारे स्ववं के बाजार में भी हमारा स्थान तीसरा होगा। पहला स्थान चीन का है। पूरा भारतीय बाजार चीनी उत्पादो से पटा पड़ा हैं। अब तो भारतीय निर्मित वस्तुएँ बड़े शहरो की बड़ी दुकानो में ढूँढना पड़ता है।

भाषा में भारत में ही हमारा स्थान दूसरा है अंग्रेजी बोलने वालो में भारत कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक हैं साड़ी स्कर्ट की गुलाम है। उन्मुक्त व्यापार क्या किया धड़ाधड़ विदेशी कम्पनियों के उत्पादो से हमारा बाजार पट गया। अब उनमें प्रतिस्पर्धा होने लगी कि कबिरा को कौन लूटे। जब कबिरा ही बाजार में खड़ा हो तो लुटेगा ही। घर में क्यों नहीं बैठता ? बाजार अब तो दरवाजा खटखटा कर लूटने लगा है। हमारी कम्पनियाँ भी सोचती है कि अब वे तो है हम क्यो बनाये ?

यहां तक कि शिक्षा तक में विदेशी कम्पनियाँ आ गई। वे यहाँ के विद्यार्थियों को अगवा करके ले जाती है और फिनिश्ड प्रोडक्ट भेजने लगी हैं और वह भी सस्ते दामें में। नालन्दा के ऊपरी आक्सफोर्ड हावी हो गया। अब तो देश में चीनी डाक्टर भर गये है। अब भारत में बची जमीन के सिवा भारत का रह क्या गया है ?

तो यदि हमारे खिलाड़ी सेमी फायनल में जीत जाते है तो उनसे स्पष्टीकरण पूछा जाता है कि उन्होने परम्परा क्यों तोड़ी और क्यों न उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावे खिलाड़ी जब सेमीफायनल में पहुँच जाते है तो मानी उन्होने राष्ट्रीय लक्ष्य पूरा कर लिया, देश के प्रति कर्तव्य का निर्वाह कर लिया, देश का नाम रोशन कर दिया, देश सेवा कर ली। धिक्कार है, उन खिलाड़िरूो को जो सेमी फायनल से आगे बढ़तें है।

कबिरा खड़ा बाजार में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कबिरा जब बाजार में खड़ा रहेगा तो उसका तो कोई फायदा होने से रहा। वह तो लुटेगा ही। बाजार का ही फायदा होगा। दर असल कबिरा खुद बाजार नहींे आया था। वह तो अच्छा भला घर में सोया था। सुबह उठा तो घर की दीवारे ही गायब थी और वह बाजार में था। और बाजार भी ऐसा वैसा, नहीं माॅल था। उसने आॅखे मली कि वह किसी विदेशी बाजार में तो नही आ गया। जिस बाजार में उसकी आॅखे खुली वहां सब चीजे आयातित थी।

उसने सोचा कि चलो सेब ही खरीद लें। उसने दुकानदार से कहा "एक किलो कश्मीरी सेब दे दो। दुकानदार बोला "इम्पोर्टेड सेब ले जाओ। अब तो कश्मीर में भी आस्ट्रेलिया के सेब मिलते है। वही मिलेंगे। ले जाओ, भाभी जी भी क्या कहेगी कि कभी तो "इम्पोर्टेड" चीज ले के आया। कबिरा अपने एक दोस्त से बोला "हद हो गई अब तो बाजार सकून नहीं देता, लूटता है।"

लुटा पिटा मित्र बोला "घर क्यों नहीं बैठते भाई ? क्यों लुटने के लिये बाजार में आ गये ? कबीर ने कहा "मैं बाजार नहीं आया।" बाजार ही मेरे पास आ गया। भैय्या अब घर बचे ही कहा ? सब कुछ बाजार हो गया है। किसी ने कहा भी है

कब के घर ढल चुके दुकानो में
और तू खाली जेब आया है ?

कबीर को दुख है कि भारत में भारत निर्मित वस्तुयें नहीं मिलती। भारत का बाजार चीनी चीजो से पटा पड़ा हैं यहाँ तक कि भगवान भी "मेड़ इन चाइना" मिलते है। ठीक भी है चीन में तो भगवान पर भरोसा करने नहीं दिया जाता। जब भारत भगवान बन ही गये है तो कहाँ बेचे जावे? लो भगवान भी बेचने की चीज हो गये है। डाक्टर भी मेड इन चाइना मिलने लगे हैं। भारतीय मुद्रा भी चीन या पाकिस्तान में बनती है। उसी मुद्रा से उन्हीं की चीजे खरीदो। ये "मेड इन" विदेश की चीजों से भारत सरकार को नोट छापने की किल्लत नहीं डाक्टर बनने की किल्लत नहीं, बस सरकार एश करती रहे जो कि वह पहले भी कर रही थी।

अब तो विश्वविद्यालय भी विदेशी आ गये है। बैंक भी विदेशी आ गये हैं इन्श्योरेन्स कम्पनियाँ भी विदेशी आ गई है। भारतीय जीवन बीमा निगम का, भारतीय बैंको का, भार कम हो गया। अब थोड़ा आराम भी कर लो। (जो कि पहले भी करते रहे तो हो) बहुत मेहनत कर ली। जब सरकार ने खुद की दीवारें गिरा ही दी तो विदेशी चीजों की बाढ़ तो आयेगी ही। बाजार अब दरवाजा खटखटा कर लूटने लगा है।

वे हमारे यहां के विद्यार्थियों को अगुवा करके ले जाते है और लाखो की फिरौती लेकर वापिस किया जाता है। कबिरा बाजार में घूम नहीं रहा वह तो खड़ा है। बाजार ही उसके चारो तरफ घूम रहा है;

क्योंकि कबिरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती न काहू से बेर।

"कबिरा खड़ा था और एक लक्झरी कार उसके पास आकर रूक गई। बोली "किश्तो में ले लो। कबिरा बोल "मैं जुलाहा हूँ। "कार बोली" याने कपड़ा मिल के मालिक कबिरा बोला नहीं सचमुच का जुलाहा यानि की "वी भर"। अच्छा तो अभी पैसे मत दो बाद में दे देना। कबिरा बोला "नहीं भाई बाद की भी संभावना नहीं है"

कार बोली “अरे ले लो। जब कार में घर जाओगे तो कितना गौरव पूर्ण लगेगा। कमाली भाभी खुश हो जायेगी। कबिरा ने कहा “भाई मैं सबकी खैर मांगने खड़ा हुआ हूँ। मुझे बख्शो। “कार बोली” ऐसा तो सभी कहते है। मुझे मालूम है तुम्हे किताबो की रायल्टी मिलती है और चढावा भी बहुत आता है। “तभी पीछे से आवाज आई “कबिरा खड़ा मत रह भाग जा। नहीं तो ये बाजार तेरे पीछे ही पड़ा रहेगा। कबिरा भाग तो एक थ्री डी एल ई डी टी व्ही उसके पीछे हो लिया।

जब कबीर कुछ नहीं खरीद पाया तो बाजार ने पूछा “साम्यवादी हो ? कबीर बोला नहीं भारतीय हूँ। बाजार ने कहा “नहीं जब सबकी खैर मांग रहे तो साम्यवादी ही होंगे। अब तो वे भी पूंजीवादी हो गये हैं। कबीर बोले मैं यह भी तो कह रहा हूँ कि न काहू से दोस्ती न काहू से बैर।

बाजार बोला “इसका मतलब तुम्हे दोनो लूट सकते है देखो भाई बाजार वाद का मतलब है कि पहले बाजार, वाद में कोई वाद कबीर दास ने इस क्षिजिज से उस क्षितिज देखा, हर जगह बाजार वाद मिला। वे थक कर बैठ गये तो मिनरल वाटर आ गया। बोला ले लो मात्र 12 रूपये का हूँ और प्रदूषित भी नहीं हूँ।

कबीरदास चिढ़कर बोले “मैं तो हेण्ड पंप का पानी पीता हूँ। “उसमें फ्लोराइड होता है” वह बोतल बोली। उससे क्या ? कबीर दास बोले उससे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है तभी सबकी खैर मांगते हो। मानसिक रूप से स्वस्थ आदमी केवल अपनी खैर मांगता है। “बोतल ने कहा।

दामन भिगो दिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेले में गुम गया, रो दिया।
छूटा मेला और रो दिया।।
मैनें फूल नहीं देखा तो।
उसने एक कांटा चुभो दिया।।
जिस कश्ती पर किया भरोसा।
उसने दरिया में डुबो दिया।।
मैं तो घर खंजर ही लाया ।
दुश्मन पाया दोस्त खो दिया।।
फसल मिलेगी यही सोच कर।
बंजर में एक बीज बो दिया।।
अपना दुखड़ा तुम्हें सुना कर।
नाहक ही दामन भिगो दिया।।

प्याले छलकने लगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आसमानों पे जब तू पहुँचने लगे।
पैर धरती से न तब खिसकने लगे।।

अपने गम पत्थरो के तू नीचे ही रख।
ऐसा न हो कि पत्थर सरकने लगे।।

मेरे गम को सुना फूल पथरा गये।
और सुन करके पत्थर पिघलने लगे।।

तुमको ताबीजे बाहों में बांधी गई।
सांप बन के न वे तुमको डसने लगे।।

दोनो हाथो में सूरज लिये दिन ढला,
और अंधेरों के प्याले छलकने लगे।।

अनबेले नहीं थें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बुत बने बैठे थे वे बोले नहीं थे
तुम्हारी आवाज में शोले नहीं थे

सूर्य की दूरी बहुत दूरी नहीं थी
हमने अपने पंख ही खोले नहीं थे

जाने किस विश्वास में तुम साथ आये

वरना हम तो मंुह से कुछ बोले नहीं थे
आ गये वे मन में मेरे मुस्कुराते
मैनें मन के द्वार तक खोले नहीं थे
मेरी परछाई पड़ी तुम मुड़ गये थे,
उपेक्षा के स्वर भी अन बोले नहीं थे।।

चुनावी दोहे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बन्धु इस संसार में कर लेना दो काम
टिकिट मिले हो जा खड़ा बैठ मिले जो दाम
मतदाता को बूथ तक गुण्डे ही ले आहि,
अब भी मतदाता स्वयं नहीं बूथ तक जाहि।।
ज्योतिषि बोला दृष्टि कुछ वक्र लिये आयोग
न पायल न साड़ियां न रूपयों का योग।।
बी.जे.पी. कांग्रेस का मत कर ज्यादा जाप
टिकिट मना जो सब करें कहां गये हैं "आप"
फीका रहा इलेक्शन, फीका रहा प्रचार।
न गुण्डो का काम था, न पैसे दो चार।।

मसान जागरण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

श्रीवास्तव कभी-कभी छपने वाले किसी छोटे से समाचार पत्र के संवाददाता थे। हल्के से एवक तान छोटा कद कमीज पजामा और सफेद जेकेट पहनने वाले श्रीवास्तव पहली ही झलक में कोई अच्छा प्रभाव नहीं डालते थे। एसा लगता था कि आपसे मिलकर वे कुछ उधार मांग लेंगे और वे मांग भी लेते थे। वे कोई लाख दो लाख रूपये नहीं मांगते थे उनकी हैसियत के मुताबिक यही कोई दस रूपये मांगते थे जिससे उनकी देशी दारू यानि ठर्रा का इंतजाम हो जाये। उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि सामने वाला कोई चपरासी है या डिप्टी कलेक्टर। खुरई तहसील में डिप्टी कलेक्टर ही सबसे ऊँचा रूतबा होता था।

खुरई तहसील सागर जिले की सबसे समृद्ध तहसील है। वहाँ श्रीमंत लोग उस समय भी यानि की सन् 1985 में भी अरबपति हुआ करते थे। श्रीवास्तव पत्रकार हर कर्मचारी को धमकी देते थे कि उन्हें उस कर्मचारी के सारे राज पता थे। और अगले अंक में वह राज भी छाप देंगे अन्यथा उन्हें पचास रूपये दे दिये जायें। इस तरह पचास रूपये में उस कर्मचारी को ईमानदारी का प्रमाण पत्र दे देते थे।

मैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का मेडिकल आफीसर था। श्रीवास्तव पत्रकार आया और सौ रूपये मांगने लगा। मैनें असमर्थता जाहिर की तो वह पचास रूपये पर उतर

आया। मैंनें पचास रूपये भी देने से मना कर दिया तो बीस रूपये ही मांगने लगा। कहने लगा डा. साहब आज सुबह से मैनें कुछ नहीं खाया है अतः बीस रूपये ही दे दिये जाये। इससे मुझे दो लाभ होंगें एक तो मेरे राज जो ऐसे पत्रकार को मालूम रहते है दब जायेंगे और दूसरे एक भूखे को खाना खिलाने का पुण्य मिलेगा। मैनें उस टुच्चे पत्रकार को बीस रूपये दे दिये। ऐसे पत्रकार को सरकारी कर्मचारी टुच्चा पत्रकार ही कहते है। तहसील के लगभग ऐसे सभी पत्रकार ब्लेकमेलिंग करते है।

एक बार श्रीवास्तव मुझे बदहवास से मिले। बोले डा. साहब चल के मेरी पत्नि को देख लीजिये। उसकी तबीयत ज्यादा खराब है। मैनें अंदाज लगाया कि वह मर चुकी होगी। फिर भी ऐसे लोगो के घर जाना ही पड़ता है। मैंनें उसके घर जाकर देखा तो एक कच्चा घर था। कमरा बहुत छोटा था। गरीबी स्वयं ही अपनी उसकी उपस्थिति की घोषणा कर रही थी। मांत्र उनका एक जोड़ी कमीज पजामा ही उस कमरे में टाट में मखमल के पैबंद की तरह लटका था, अन्यथा कुछ एल्युमिनियम के खाली बर्तन की जमीन पर रखे हुये थे। एक कोने में एक मिट्‌टी का बुझा चूल्हा था। वहीं एक महिला मृतावस्था में पड़ी हुई थी। मैनें घोषणा कि वह औरत मर चुकी है तो वह बोला डाक्टर साहब अभी घोषणा मत कीजिये। पहले मैं खाना खा लूँ। इसके बाद उसने चार चपाती निकाली और रस लेकर प्याज और अचार के साथ इत्मीनान से खाने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई लाश पर रोटी रखकर खा रहा हो।

उसने इत्मीनान से रोटियाँ खाने के बाद कहा “डा. अब आप घोषणा कर दीजिये कि मेरी पत्नी मर चुकी है।”

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ग्राहकी कम हुई गरमी पड़ने लगी ।
ज्यादा लालच हुआ चीज सड़ने लगी।।
प्रेम शेयर की माफिक उतरने लगा ।
मांग मंहगाई सी उनकी चढ़ने लगी ।।
सोने चांदी के भावो से रिश्ते हुये ।
कभी ग्राहक कभी दुकान अड़ने लगी।।

पैसा कम जो मिला चिड़ चिड़े हो गये।
कम दिया औलाद लड़ने लगी।
कम बिका माल तो दिल में गड़ने लगा।
ग्राहको की बहस दिल में गढ़ने लगी।।
माल असली रखा ग्राहकी कम हुई ।
माल नकली रखा भीड़ लड़ने लगी।।
चढ़ते शेयर पे शेयर जमा कर लिये।
भाव गिरने परे दुनिया उजड़ने लगी।।

गरीब दिखने की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चुनाव क्या आये कि सारे उम्मीदवारो में गरीब बनने की होड़ भी चालू हो गई। प्रधान पद के उम्मीदवार यह कहते हुये नहीं अघाते कि वे चाय पिलाया करते थे। उन्होने पहले कभी कभी चाय क्या पिला दी थी कि पूरे देश में चाय चैपाले चालू हो गई। नेता जी अब उनकी प्रस्तुति चाय चैपालो के माध्यम से ही देते है। तरह तरह के कप बाजर में आ गये जिन पर नेता जी का फोटो बना रहता है चाय चैपालो पर टी.व्ही. का डब्बा रखा जाने लगा।

फिर एक कदम आगे एक सास जो कि बहू जैसी सुन्दर ही लगती रही पोंछा पर उतर आई। उन्होने विस्फोट किया कि वे एक होटल में पोंछा लगाती थी। लीजिये सारी पोंछा लगाने वाली बाइयों गृहिणियों और होटल वालो के वोट उन्होने अपनी झोली में

डाल लिये तो वे, जिनके विरोध में वे खड़ी हुई है और जिन्हें उम्मीदवार क्रमांक एक शहजादे कहते है, गरीबों के घर खाना खाने लगे। क्योंकि वे गरीब नहीं थे। इस तरह वे भी सींग कटा कर बछड़ो में शामिल हो गये।

इस समय टी.व्ही. चैनलो के पत्रकार बहुत पीछे रह गये। वे उस आदमी को नहीे पकड़ पाये जिसे प्रधानमंत्री उम्मीदवार ने चाय पिलाई थी। नहीं तो वे पूछते की सर आपको प्रधानमंत्री पद के हाथो तब चाय पीकर, अब कैसा लग रहा है क्योंकि जब चैनलो के पत्रकार साक्षातकार लेते है तब सामने वाले को कैसा भी लगना चाहिये। यदि वे गले में फन्दा डाले हुए फांसी की सजा प्राप्त व्यक्ति का साक्षातकार लेंगे तब भी यही पूछेंगे कि आपके गले में फांसी का फंदा पड़ चुका है अब आपको कैसा लग रहा है ? और उसे भी इनके अनुसार अच्छा लगना चाहिये फिर ये केवल उसे ही अच्छा नहीं लगायेंगे बल्कि उसके मां बाप को, और फांसी देने वाले जल्लाद को भी अच्छा लगायेगी। चैनल वाले यदि किसी कुत्ते का भी साक्षातकार लेंगे तो उससे भी पूछेगे, कुत्ता सर , आपको कुत्ता होकर कैसा लग रहा है ?

तो वे न तो उस होटल को खोज पाये जिसमें प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार बैरा थे और न हीं किसी ऐसे आदमी को जिसे माननीय ने चाय पिलाई थी। बल्कि विरोधी पार्टी के लोगो ने खोज लिया। उनके अनुसार माननीय की चाय की होटल थी। ये दौड़ इसलिये हो रही है कि हमारे एक स्वर्गीय प्रधानमंत्री किसी विदेश नाम जगह में किसी होटल में काम कर चुके थे। अच्छा, न ही प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार ही यह बतला रहे है कि उन्होने किस होटल में काम किया था और न ही कोई होटल वाला ही यह जिम्मेदारी उठाने की हिम्मत कर पा रहा है। मगर उनके विचार प्रधानमंत्री का पद होटल से होकर ही जाता है।

यही हाल उन पोछा लगाने वाली माननीया का है। वे यह तो कह रही है कि उन्होने होटल में पोंछा लगाया पर किस होटल में लगाया यह वे नहीं बतला रही। वह होटल वाला भी कितना सौभाग्यशाली होगा जहाँ इस फिल्म फेयर सुन्दरी ने पोछा लगाया होगा।

अभी भी हम भारतवासी यह नहीं पचा पा रहे है कि बगैर गरीब हुये कोई बड़ा आदमी कैसे बन सकता है ? मैं एक बार सांची के स्तूपो के पास एक राज्य सभा सदस्य के उद्गार भगवान बुद्ध के बारे में सुन रहा था। वे भाषण दे रहे थे कि "वे भगवान बुद्ध को जानते है। वे एक गरीब परिवार में पैदा हुये थे। वे मेरे साथ प्रायमरी स्कूल में पड़ते थे।" अरे भले आदमी, जब भगवान बुद्ध की जीवनी प्रायमरी में नहीं पड़ी थी तो उन्हें खुद के साथ प्रायमरी में क्यों पड़ा रहा है ?

इस समय जब ये किसानों को संबोधित करते है तो हल चलाने लगते है और जब मजदूरो को सम्बोधित करते है तो बंधुआं मजदूर बन जाते है। और यदि आप उन्हें नफरत से शहजादे कहते है तो आप उनका गोधरा करने लगते है। अब तो गोधरा शब्द इतना प्रचलित हो गया है कि कुछ दिनो बाद गुण्डो में "गोधरा वार" न होने लगे। गुण्डे फिरौती मांगने के लिये धमकी देंगें कि पांच करोड़ देकर अपने बच्चे को ले जाओ नहीं हो हम उसका गोधरा कर देंगे। मगर भारतवासियों को नफरत की भाषा अच्छी नहीं लगती। आप भले ही अपने अतीत या अपने परिवार वालो के अतीत से अपना भविष्य बनाना चाह रहे हो, पर हमें नफरत करना मत सिखाओ।

आम आदमी पार्टी के नायक को तो सपने में अंबानी ही दिखते है। उन्हें हर आदमी अंबानी का एजेन्ट लगता है। यदि वह आम आदमी पार्टी में नहीं है तो अमीर होना एक अभिशाप माना जाता है। उम्मीदवारों के साक्षातकार में पूछा जाता है कि उम्मीदवार या उसके मां बाप अमीर तो नहीं है ? और यदि है तो वह अंबानी का आदमी है उसे टिकिट नहीे दी जा सकती। समाजवार्दी पार्टियों में खुद पर गरीब होने का ठप्पा ही लगा रखा है भले ही वे एक हजार करोड़ के मालिक क्यों न हो। यदि कोई सौ हजार करोड़ का गरीब है तो उसे हजार करोड़ के गरीब से ईर्ष्या होती है। बाकी भैंस तो हर समाजवादी लगाता ही था। उनके अनुसार गरीब होने के लिये भैंस पास में होना जरूरी है। किन्ही किन्ही मुख्यमंत्री के पास हजार जोड़ी चप्पले और वार्ड रोब में हजारो साड़ियां है मगर वे समाजवादी हैं। ईश्वर करे ऐसा समाजवाद हर भारतीय को मिले।

बनाना बस्ती को महानगर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुछ लफंगे गली मुहल्ले में बस्ती को तोड़ने गये। बस्ती मिलने पर उससे बोले "चलो तुम्हे मंत्री जी ने बुलाया है" बस्ती बोली" हमें नेता जी से कोई काम नहीं है। हम पेड़ों, गली-कूचो में खुश हैं। नेताजी को मना कर देना कि बस्ती को टेम नहीं हैं मैं अपने बाल बच्चो में खुश हँू।"

उन गुण्डो ने कुछ नहीं सुना। बस्ती की कलाई पकड़ी ओर नेताजी के सामने पटक दिया। नेता जी ने उन गुण्डो को डांटा और कहा "बस्ती बाई को इज्जत से लाना था।" "हुजूर" गुण्डे बोले "हमने इन्हें बहुत इज्जत दी पर इन्होने ली ही नहीं। मगर हमने जब अपमान के घंूट पिलाये तो इन्होने झट से पी लिये। फिर भी हम इन्हें घसीटते हुये नहीं लाये उठा कर लाये हैं।"

नेता जी बस्ती की इस इज्जत अफजाई पर संतुष्ट हो गये फिर बस्ती से बोले "हम बाई पर मतदाताओं का बहुत दबाव आ रहा है कि हम उन्हें महानगरी दें। इसलिये तुम्हारे ये चिड़िया के घोसलें जैसे बाल नहीं चलेंगे। "मंत्रीजी ने इंजीनियर को बुलाया और कहा मेडम को बाब कट कर दो। "बस्ती कांपने लगी समझ गई कि उसके जंगल कटवाने का फरमान जारी हो चुका है। मंत्री जी बोलते रहे" ये क्या गली कूचे है तुम्हारे अंदर । हम तुम्हें राष्ट्रीय राजमार्ग देना चाह रहे हैं नब्बे फीट चैड़ी फोरलेन सड़कें हम तुम्हें देंगे।" बस्ती ने निरर्थक ही पर्यावरण के पीछे खड़ा होकर कहा "साहब इससे पर्यावरण खराब हो जायेगा। पेड़ कटने से गर्मी ज्यादा बढ़ जायेगी।

"अब आई तुम मुद्दे पर "नेता जी ने कहा "तुम्हारे एक भी घर में ए.सी. नहीं लगा है। बगैर ए.सी. लगे क्या प्रगति होती है। ए.सी. की दुकान वाले मेरे पास आये थे। वे बिचारे रो रहे थे। कह रहे थे कि पिछले दो सालो में उनका एक भी ए.सी नहीं बिका। अब जंगल कटेंगे तो गर्मी पड़ेगी और उनके ए.सी. बिकेंगे े। तभी तो अपना नगर आगे बढ़ेगा।" बस्ती कांपने लगी। उसे गुण्डो ने सम्हाला। मंत्री जी के आस पास शरीफ आदमी थे ही नहीं। नेता जी ने मंत्री बनने के पश्चात वे गुण्डे ही बस्ती को शराफत से सम्हाल रहे थे।

बस्ती को ठण्डा पिलाया गया। फिर मंत्री ने एक और बंदूक दागी। बोले "मैं देखता हँू कि तुम्हारी औलादे फालतू घूमती रहती है। कुछ काबिल लड़को को मैनें ही गुण्डागिरी की नौकरी दे दी है मगर अब बाकी बेकार नौजवानों का क्या करें ? मैनें घोषणा की थी कि तुम्हारे अंदर एक भी नौ जवान फालतू नहीं रहेगा। अतः तुम्हारे

चारो तरफ कारखाने खुलवाना पडेंगे। तभी तो धूल धुंआ और धक्के का बोलाबाला होगा। धूल धुंआ और धक्का ही तो प्रगति की निशानी है।"

"मगर मंत्रीं मात्र सड़कें तो प्रगति नापने का मापदण्ड नहीं हैं। "बस्ती ने प्रतिवाद किया।" मुझे मालूम है कि बढ़ते अपराध प्रगति के मापदण्ड हैं। मंत्रीजी ने कहा "हम उसका इंतजाम भी कर रहे है। हम मंहगाई वे इंतहा बढ़ा रहे हैं। इस से जो खुद्दार लोग हैं जो भीख नहीं मांग सकते है वे डाका डालने लगेंगे या हत्याये करने लगेगें। यही असली प्रगति का मापदण्ड है।"

बस्ती पसीने पसीने हो रही थी। उसका शरीर मरा नहीं था उसने फिर प्रतिवाद करने का प्रयत्न किया तो मंत्री जी ने कहारों से कहा "इसकी डोली उठवा दो। बहुत खुद्दारी है इसमें। बस्ती अब मरनासन्न है। इसमें अब स्नेह का सूर्य डूब रहा है और नफरत के अंधरे पसर रहे हैं।

शेक्स पियर: एक विहगांव लोकन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

विलियम शेक्यपियर के साहित्य का स्पष्ट प्रभाव विलियम, वर्डसवर्थ, मिल्टन, बारबरा ओर नील, विक्टर हयूगो, सेमुअल टेलर, वाल्टेयर, गोथे, शामस कारलाइल जार्ज बर्नाड शा इलियल वर्टाल्ट ब्रेट इत्यादि के साहित्य पर स्पष्ट देखा जा सकता है। विलियम शेक्सपियर की निश्चित जन्म तारीख का पता नहीं है हां उनका बपिस्तमा सन् छब्बीस अप्रैल पन्द्रह सौ चैसठ को हुआ था। उनकी मृत्यु तेईस अप्रैल सन् सोलह सौ सोलह में हुई थी। वे एक नाटककार कवि और अभिनेता थे । उनके पिता जाॅन शेक्सपियर और मां मेरी आरेडन थी। वह स्ट्रेट फोर्ड अपोन ए वाॅन में पैदा हुये थे। उनकी शिक्षा स्ट्रेट फोर्ड के किंग्स न्यू स्कूल में हुई थी। उन्होने सजा के भय से स्टेट फोर्ड छोड़ दिया था और लंदन आ गये थे। जब वे मात्र अठारह वर्ष के थे तब उन्होने छब्बीस वर्ष की एनी हाथ वे से शादी की थी । फिर दो वर्ष पश्चात जुड़वां बच्चे पैदा हुये। सूसन हाल उनकी पहली लड़की थी जो शादी के मात्र छह माह बाद ही पैदा हुई थी।

उनमें एक लड़का हेमेट शेक्सपियर और लड़की जूडिथ क्वीनी पैदा हुई। हेमेट किसी अज्ञात बीमारी में ही चल बसा। पन्द्रह सौ बानवे में शेक्सपियर लंदन थियेटर से जुडे। सन् सोलह सौ तेरह तक वह लिखते और अभिनय करते रहें। उनकी मृत्यु तेईस अप्रैल सोलह सौ सोलह को हो गई। उनके बहुत से नाटक दूसरो के सहयोग से लिखे

गये है। उस दौरान परंपरा थी कि शेक्सपियर नाम रखा जाता था। "टाइटस एन्ड्रोनिकस नामक" नाटक एवं कई दूसरे ऐतिहासिक नाटक ऐसे ही रचित है जबकि "किन्स मेन" एवं "लास्ट कारडेनियो" मात्र उन्हीं के द्वारा लिखित बतलाये जाते है। रिचार्ड तीन एवं हेनरी (पाॅच भाग) के तीन भाग उन्होने लिखे है। कामेडी आफ एररस द टेनिंग आफ द रियू" और "टू जेन्टेलमेन आफ वियाना" उनके द्वारा रचित हैं जबकि कामेडी आफ एररस (इस पर आधारित अंगूर नाम फिल्म हिन्दी में बनी है) विशुद्ध हास्स नाटक है "ए भिडसमर नाइटस ड्रीम" एक हास्य प्रेम के त्वरित जवाबों का मिश्रण है। "मरचेन्ट आफ विनाइस" "एक ज्यू उधार देने वाले पर आधारित व्यंग्य है। मच एडो एवाउट नथिंग" "एज यू लाइक इट" और टवेल्थ नाइट अन्य हास्य नाटक है। लयात्मक "रिचर्ड टू" के पश्चात उन्होने काव्यात्मक नाटको का सृजन किया। "हेनरी" चार भाग एक एवं दो और "हेनरी पांच" उनके व्यक्तित्व को क्लिष्ट बनाते हैं उनके बाद के नाटक गद्य-पद्य हास्य-अवसाद का मिश्रण हो जाते है। "रोमियो-जूलियट" एवं "जूलियस सीजर", दुखान्त नाटक है। मेजर फार मेजर "ट्रायल्स एवं केसिडा" और "आल" एन्डस वेल "देट एन्डस वेल" अन्य दुखान्त नाटक है "हेलमेट" एक ऐसी रचना है जिस पर सर्वाधिक चर्चा हुई है। "आथेलो एण्ड किंग लीयर" कामेडी आफ एररस पर आधारित है। "मेक्वेथ" उनकी लघुत्तम दुखान्त रचना है। एन्टोनी एण्ड क्लीओपेट्रा" और "केरिओ लेमस" उनके सर्वोत्तम पदय नाटक है।

हेलमेट "किंग लीयर" "ओथेलो" और मेक्वेथ" इंग्लिश की सर्वोत्तम रचनायें मानी जाती है।

उसके अंतिम चार, नाटको, उदाहरणार्थ "सिम्वे लाइन" द "बिन्टर्स, टेल" द टेम्पेस्ट "और" "परिन्लिस "प्रिन्स आफ टायर्स" (सहयोग से लिखा गया) में गलतियों पर क्षमा तत्व अधिक दिखता है। जान प्लेयर के साथ उन्होने हेनरी प्प्प् और "द टू नोबल किन्स मेन" रचे। शेक्सपियर के कुछ वाक्य कहावतें बन गये है। जैसे "रंगमंच पर महिलाऐं और पुरूष मात्र पात्र है वे प्रवेश और बर्हिगमन करते है और एक समय में एक व्यक्ति कई पात्रों का अभिनय करता हैं।" इस वाक्य को हिन्दी फिल्म आनन्द में इस तरह से लिया है "हम सब उस रंगमंच की कठपुतली हैं आलम पनाह जिसकी डोर ऊपर वाले के हाथ में है। (एज यू लाइक इट से) या महिला के ह्नदय में शेर का दिल (द यूनिवर्सिटी बिट्स) या शरीर का पहला लड़का या टू वी आर नाट टूवी टेड इंज द कनेक्शन रचनाऐं "मेजर फार मेजर बाइबिल के एन आई फार एन आई (अपोन) से प्रभावित है।

शेक्सपियर उनके अंतिम दिनो में स्टेट फोर्ड (अपोन) एवनं जाकर रहने लगे थे। इस तरह हम कह सकते है कि जिस तरह मुंशी प्रेमचंद कहानी सम्राट थे उसी तरह शेक्सपियर नाटक सम्राट थे। जब प्लेग के कारण पन्द्रह सौ तिरानबे से पन्द्रह सौ

चैरानवे तक नाटक बंद हो गये थे तब शेक्सपियर ने कामोन्तेजक कविताऐं लिखी जैसे “वीनस एण्ड एडोनिस” “रेप आफ लारिस” और “ए लवर्स कम्पलेन्ट” आदि। इसका प्रभाव कई अमेरिकल कवियित्रियों की रचनाओं में दिखाई देता है।

शेक्सपियर का प्रभाव थामस हार्डी विलियम, फाॅकनर, चार्ल्स डिकेन्म, हरमन येल विले आदि के उपन्यासो में स्पष्ट देखा जा सकता है। कुछ विद्धानो ने शेक्सपियर के नाटको को अन्य रचनाकारो द्वारा लिखित माना है।

अंेगूरी है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अभी मुझमें और उनमें दूरी है
जाना महफिल का अब जरूरी है
बगैर दुशमन के दास्तां उनकी
उन्हें लगता है कुछ अधूरी है
पीछे दरवेश लगे रहते है

मेरा महबूब इतना नूरी है
कपूर जैसा रंग है उसका
और उसमें गंध भी कपूरी है
करती मदहोश गिरा के बिजली
है तो कड़वी मगर अंगूरी है

कब सहर गई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

फूल की पंखुडी पे गिर के वह सिहर गई।
नाचते ही नाचते शबनम बिखर गई।।
    परछाइयों की आप हिमाकत तो देखिये।
    जो डूबते सूरज को देख कर पसर गई।।
कुछ साल पहले हम सफर हम जिन्दगानी थे।
अब ढंूढता हँू उनकी यादें भी किधर गई।।
    मेले में आंख नजारों सी नाचती रही।
    अपनी नहीं थी फिर भी वह उस पर ठहर गई।।
भूखे की नजर बाज सी, रोटी लबा सी है।
रोटी का पीछा करती रही वह जिधर गई।।

अब तो तपती धूप है या फिर अंधेरी है।
मालूम नहीं कि सांझ कब और कब सहर गई।।

ज्नइमतबनसंत ुतंदनसवदह उनउउपबापदह ीमनतवबलेजपबवतबवेपे

ब्ेम तमचवतज

। उवींननंकंद हपतस चतमेमदजमक ूपजी जीम बवउचसंपदजे व िंजजंबो व िंिपसपदह नदबतवने विससवूमक इल ेमप्रनतमे ंइवनज मपहीज जपउमे 3तक रनसल 2013ण् ।द ंजजंबा संेजमक वित ीेंस िंद ीेंपतण् त्मबवअमतल ूंे विससवूमक इल पदजमदेम ीमंकंबीम ेीम ीेंक ेनबी जीतमम ंजजंबो कनतपदह जीम संेज जूव लमंतेण् भ्मत जमउचमतंजनतम तंपेमक जव 380°ब् ंजिमत मंबी ंजजंबीण्

न्चवद ेनबी वद ंजजंबी वद 3ण्09ण्12 ेीम ीेंक ं ंिसस कनतपदह जीम ेचमसस व िंदंबपवनेदमे ेीम ेनेजंपदमक इसनदज पदरनतल व िेबंसचण् ज्ीमतम ंबबनतमक इसनम कपेबवसवनतंजपवद व िवितमीमंकण्

त्मसमअमदज पदअमेजपहंजपवद मसमबजतव मदबवचींपजव हतंउ तमबमपअमक ंइदवतउंस विबंस कपेबींतहम ंत तपहीज जमउचवतंस सवइम पद पजे नचचमत चंतज

बण्ज्ण् ेबंद ेजनकलण् क्वदम वद 25 श्रनसल 2012 तमअमंसमक ेपहद ेदमक समेेवद पद जीम तपहीज चवेजमतव ेनचमतपवत जमउचवतंस सवइम ूपजी ेउंसस

मबबमदजतपम बंसबपपिब विबंस ंदक उवकमतंसम वमकमउंण् ज्ीम समेेवद ंचचमंतमक ंे दमनतव बलेजपबमतबवेपे तंजीमत जींद जनइमतबनसवउंण् डण्तण्ण्ण् ठतंपदण् ॅपजी बवदजतंेज वद 01ण्08ण्12 तमअमंसमक ं बवदसिनमदबम व िेउंसस ेपदह मदींदबपदह जमपेवद पद तपहीज समतदचवतंस सवइम ेनततवनदकमक इल ेपहदपपिबंदज ूीपसम उंजजमत वमकमदं ;च्ीवसवहतंची मदबसवेमकद्ध

ज्तमंजउमदज ण् च्ंसजमदज ूंे चनज वद विनत कनतपदह ंदन जनइमतमनसंत तमहपउपद उपजपंसल वित 3 उवदजीे ंद ंदजप मचकमदजपम जव हंजीमत ूपजी ंदजप जनइमतबनसंत कतनहेण् ंदक जीमद ेूपजबीमक जव 3 कतनह ंदजपजनइमतबनसंत ेीम ूंे हपअमद ेवकपनउ अंचवतंजम ंे तमहपउमद वित जीम ेनइेमुनमदज 9 उवदजीेण् ैपदबम जीम ेसंतज व िजीम जतमंजउमदज जपसस दवू जीम चंजतमदज पे ेलउचजवउ तिममण्

क्पेबनेेपवद

।बबवतकपदह जव भ्नेमत ंदक ज्ञनतसंदक जीम कपंहदवेजपब बतपजमतपदह ति मचपजमचेल ंदक ;1द्ध ।दल पदकपअपकनंस ूीव ींक जूव वत जीतमम ेचपेवकमे व िदवद मिइतपसम ेमदेनतमे वत ेलउचजवउंजम ेमप्रनतमे ंज कमििमतमदज जपउमे ूपजी वदम कनतपदह जीम संेज पिअम लमंते ;2द्ध जीम पदकपअपकनंस जंापदह ंदजप मचपजमचजपम कतनह ंदक कपक दवज ींअम ेमत्रनतमे वित जीम संेज पिअम लमंतेण्

ब्लेजपबमतपवेपे पे समेे ूमासल जव इम विनदक ंउवदह डवींनसमंकवपदे ंे जीमल कव दवज बवनेनउम चंतजण् । जनइमतबनसवउं बंद उपउपबा अमनतवगलजपबवतबवेपे वद इतंपद डत्प् ंे ंबबनतमक पद जीपे बंेमण् ।बबवतकपदह जव ं चंदंहंतम मचपसमचेल पे ं बवदजतवसमंइसम कपेमंेमण् ठमेज ंबबवतपदह जव जीम ंनजीवत पज बंद इम बनतमक प िजीम बंनेम पे विनदक ंदक जतमंजमकण् ज्ीम चतमेमदज चंजपमदज ूंे हपअमद 4 कतनह तमहपउमद ंदजपजनइमतबनसंत जतमंउमदज विससवूमक इल जीतमम कतनहे तमहपउमदण्

ैनउउंतल ंदक ब्वदबसनेपवद

म्जपवसवहल उनेज ंसूले इम पदअमेजपहंजमक पद मचपसमचेलण् डण्तण्ण्ण् ंदक म्म्ळ ंतम पउचवतजंदज पदअमेजपहंजपवदे वित मचपसमचेलण् ज्ठ हतंदनसवउं पे ंे पउचवतजंदज मजीवसवहल पद बलेजपम चतमेमदजंजपवद पद डत्प्ण्

निर्माण और भ्रष्टाचार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इंजीनियर ने मंत्री से निवेदन किया सर आप बजट पास करवाये तो हम भ्रष्टाचार करें। बगैर पैसो के कही भ्रष्टाचार होता है क्या ?हमारी तो इच्छा होती है कि हम अधिक से अधिक भ्रष्टाचार करें। मगर जब आप भ्रष्टाचार की “रिले रेस” चालू करेंगे तभी हम दौडेंगे।

मंत्री बोले “इंजीनियर हमें ये निर्विरोध “टाइप” की भाषा समझ में नहीं आती है। संसदीय भाषा समझ में आती है। तुम्हारा कहना है कि हम सड़क पर पैसे बिछाने का बजट पास करवायें तब तुम उस सड़क से पैसे छीन करी हमें दोगे। ठीक है हम दिल्ली से आगरा की एक और सड़क बनवाये देते है। हमें उसकी उपयोगिता बतलाना पड़ेगी। हमें यह स्पष्टीकरण देना पड़ेगा कि वह पांचवी समानान्तर सड़क देश हित में रहेगी। उससे देश प्रगति की कुलांचे लगाने लगेगा। अभी तक जो चार समानान्तर सड़के बनी है उनसें देश प्रगति नहीं कर सका। पांचवीं से कर जायेगा। यार इंजीनियर देखो इनके अलावा देश और कहां कहां है ?हम वहां के देश की प्रगति भी करवा देंगे।”

इंजीनियर लोगों ने दिल्ली आगरा मार्ग के अलावा और भी कहीं देश के मिलने की संभावनाओं का सर्वेक्षण प्रारंभ कर दिया। सर्वेक्षण में चैकानें वाले तथ्य सामने आये। ऐसी असंख्य जगहें थी जहां देश था मगर डंडा नहीं गया था। वहां के रास्तो में गड्डे ही गड्डे थे “फोर लेन” सड़के नहीं थी। देश चिकना नहीं था। देश जगह जगह दाड़ी वाला था जबकि क्लीन शेण्ड होना चाहिये था। पूरे देश को “फोरलेनो” से पट जाना चाहिए था। घने जंगलो के कारण कई स्थान ऐसे थे जहां मई जून का प्रभाव नहीं होता था अतः “ए सी” नहीं बिक पाते थे। “ए सी” ही देश की प्रगति की पहचान है।

मंत्री जी हरकत में आ गये। उनकी मान्यतायें कांच के गिलास में साफ पानी की तरह स्पष्ट थे। पैसो से निर्माण और निर्माण कार्य से पैसे बनते है। दोनो अन्योनाश्रित है। मंत्री जी ने इंजीनियर लोगो से कहा “यह सही है कि तुम लोग बजट रूपी गन्नो को निचोड़कर हमें उसका रस पिलाते हो पर यह पहले ही तय हो जाना चाहिये कि देश की प्रगति में हमारी कितनी भागीदारी रहेगी। और वह हमें पहले ही मिल जाना चाहिये। ऐसा न हो कि संसद में बजट तो मैं पास करवाऊं और विभाग बदल जाये। देश के छिलके मैं उतारूँ और गूदा कोई दूसरा मंत्री खाये।

तय ये हुआ कि मंत्री पहले तो पांच प्रतिशत लेंगे, फिर क्रमशः लेते रहेंगे। मंत्री ही कोशिश करेंगे कि पूर्ण कार्यकाल तक उनका विभाग न बदले। और वे पूर्ण कार्य काल तक उनके प्रमुख सचिव को भी न बदलेंगे। यदि प्रमुख अभियंता ठीक ठाक देता रहा तो उसका विभाग भी न बदला जाये। इस तरह से एक ग्रंथि बनी रहेगी।

तो जगह जगह फोर लेन बनाई जाने लगी। खेत सड़को से पटने लगे। पूरे देश में सड़के ही सड़के बनने लगी। मकानो को तोड़ कर सड़के बनाई जाने लगी। मंदिर मस्जिद टूटने लगे। सड़के ही भगवान हो गई। गंगा और जमुना सरस्वती में मिलने लगी। देश में आजान या ओम की जगह हाहाकार सुनाई देने लगा। घर टूटने के कारण तम्बुओ का धंधा उछाल पर आ गया।

हर रात को देश हितार्थ जुआ कार्यक्रम होने लगा जिसके मुख्य अतिथि महादरणीय मंत्री जी होते थे। सभापति मुख्य अभियंता होते थे। बाकी सदस्य अन्य अभियंता होते थे। उन्हें हराने का दायित्व दिया जाता था जो मुस्तैदी से निभाते थे। किसी भी बोतल का ढक्कन बंद नहीं रहता था। किसानों और मजदूरो के पैसो की नदी यहां बहती थी जिसमें मंत्री सचिव और अभियंता लोग नहाते रहते थे। यहां सड़को में गढ़डे पड़ते जाते थे और पुल टूटते जाते थे और वहां स्विस बैंक मुटाता जाता था।

विरोधी पार्टी को जब भ्रष्टाचार की नदी में नहाने नहीं मिलता तो उसके शरीर में खुजली होने लगती थी। जब वह शरीर खुजाती थी तो एक धारा उस तरफ भी मोड़ दी जाती थी और सलाह दी जाती थी कि वह नीतियों का विरोध करने के बजाय व्यक्तिगत आक्षेप लगाये। जनता को उसमें ज्यादा मजा आता है। सभी दल जनता की गेंदे इस कोर्ट से उस कोर्ट में फेंकने लगते हैं। होता यह है कि वे सब भ्रष्टाचार की नदी में नहाते है और गालियो के मंत्र पढ़ते है।

सासू मां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पति की मां पत्नि की सास होती है जिसका "ट्रेलर" आप "मां" और सुखी दाम्पत्य जीवन में पढ़ चुके है। दूसरी तरफ पत्नि की मां पति की सास होती है। संक्षेप में मां का विलोम सास होती है। मेरा स्वर्ग मेरी मां के कदमों में है तो मेरी पत्नि का स्वर्ग उसकी मां के कदमों में। इसे ऐसे भी कह सकते है कि मेरा स्वर्ग तो मेरी मां के कदमों में और मेरा नर्क मेरी सास के कदमों में है।

मेरी पत्नी बड़े प्रेम से बोली "अजी सुनते हो।" "मैनें कहा" शादी के बाद से सुनता ही तो आ रहा हँू। बोलने का मौका कहां देती हो। पत्नि ने कहा "गुड जोक" मुझे मजाक पसंद है। अच्छा सुनो, तुम्हारा स्वर्ग यानि मेरी मां आज तीन बजे जबलपुर से आने वाली है उन्हें लेने पहुंच जाना।" यानि मुझ से कहा जा रहा था कि मौत का सामान लेने पहुँच जाऊँ।

फिर पत्नि ने एक जासूस मेरे साथ ही लगा दिया। खुद के चिरंजीव से बोली "बेटा भोंपू तुम्हारे पापा को तो भूलने की बीमारी है, विशेष कर तब जब तुम्हारी नानी आती है इस लिये आज दिन भर इनके साथ रहोगे। "मैनें कहा" मैं नहीं भूलूंगा। इसको साथ लगाने की क्या जरूरत है। दिन भर चाकलेट मांगेगा। पत्नि बोली "तो पैसे जेब में रख लो न"। जहां जेब खाली की जाती थी आज भरी जा रही है।

मैं भूत प्रेत भगाने वाले भगवान का नाम लेता हुआ बस स्टैण्ड पहुंचा। पर जिससे भूत प्रेत डरते हो उसे भला कोई डरा सकता हैं। मेरी सास जी जब सामान के साथ बस से उतरी जो बस कुछ हल्की होकर ऊपर उठ गई। मैं बस की तरफ पीठ करके खड़ा हो गया तो पीठ पर एक "धौल" पड़ा जो मेरे दुश्मन के मुक्के से दस गुना ज्यादा ताकतवर था। मैनें बगैर मुड़े कहा "प्रणाम मां जी/मेरी सास ने पूछा मेरी लड़की कैसी है ? मैनें कहा "शादी के समय से बेहतर है।

मेरी सासू मां बोली “वो तो मेरी बेटी के घर जाकर देखूंगी। तुम्हारी कार किधर है। जहां तक मुझे याद है मुझे दहेज में कार नहीं मिली थी। सास तो क्या पैदल बनने वाली थी ? सामान मुझ पर लादा और खुद ने रिक्शा कर लिया। उस रिक्शे में तीसरे के लिये जगह नहीं बची थी। वे खुद दो के बराबर थी। घर आये तो सास जी की पुत्री यानि की मेरी पत्नि ने उनका स्वागत किया। सास जी “चिल्लाई” दामाद जी क्या तुमने दूसरी शादी कर ली/अब देखती हॅू तुम्हें।”

मेरी पत्नी बोली “क्या कहती हो मां ? अब तो ये मेरे मरने के बाद भी दूसरी शादी नहीं कर सकते। वो तो मैं ही पलंग तोड़ते तोड़ते थोड़ी मुटा गई हॅू। मैनें कहा “हां मां जी इनके बाहर निकलने के लिये दरवाजे चैड़े करवाने पड़े है। “सास जी ने उनकी लाड़ली से पैंतरा बदल कर फिर कहा “आय हाय कितनी दुबली हो गई है मेरी लाड़ली। दामाद बाहर निकालने की बात कर रहा है। बाहर निकालने के लिये दरवाजे चैडे करवा रहा है। सुनो दामाद अब हम आमरण यहीं रहेंगे।”

मैं बोला “मुझे मालूम है। आपके लाड़ले अब आपको आमरण वापिस नहीं जाने देंगे ? कह रहे थे कि जीजा उस नक चढ़ी बुढ़िया को अब अपने पास ही रखना। हमारी बीबीयों के साथ उसकी नहीं बनती।”

सास जी बोली “ये उनके ऊपर नहीं है कि मैं कहा रहॅू। और ये कोना क्यों गंदा है ? आप ठीक से पोछा नहीं लगाते।” उन्होने मुझे डांटा। मैं सकपका गया मैनें उनके सामने एक साफ सी बनियान अलमारी से निकाली और पोछा लगाने लगा। “जरा ताकत लगाके” सासू मां बोली” मैं पन्द्रह दिन में मेरी लड़की के घर को जगमग देखना चाहती हॅू। तुम आफिस से अवकाश लो और दिन में आठ घंटे “पोछा ड्यूटी” करो। और तुम” वे उनकी लड़की से बोली इनकी लगाम खींच के नहीं रखती घोड़े को घास से यारी मत करने दो।”

मेरी बीबी ने एक डायरी निकाली और सासू मां के दिये हुये टिप्प्स लिखने लगी। एक कोने में ले जाकर सासू मां मेरी बीबी को भड़काने लगी” इस पर नजर रखना/तुम्हारे घर वाले की चाल ढाल ठीक नहीं लगते। तकरीबन हर सास उसकी लड़की को पति की जेब और नजर पर नजर रखने को कहती है। यह बीबी को दुबला बनाने का कारगर नुस्का है।

दोनो के खाने के बाद बचा खुचा भी नहीं बचता। मैं एक ऐसा रोबोट हो गया हॅू जिससे वेटरी डाले बगैर काम लिया जाता है। मुझे दो पाटो के बीच में दलिया बना जा रहा है। मैं वह घूरा हो गया हॅू जिसके दिन शायद ही फिरें।

पंखडी पर जमी ओस

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

फूल की पंखुडी पर जमी ओस थी
देख कर उसको कुदरत भी मदहोश थी
झूमती शाख हौले हवाओं तले
लगता था कि नशे में ही मदहोश थी
गालों जैसी गुलाबी थी एक पंखुड़ी
डूबी खुद में ही इतनी कि खामोश थी
एक मोती था सीपी के बाहर रखा
बंूद हिलने पे गिरने को पुर जोश थी
फूल सोया था कलियों में कुछ देर तक
फूलो की वह कली एक आगोश थी

चुप्पा बदमाश विभाग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुछ सरकारी विभाग ऐसे होते है जिनसे शरीफ आदमी का पाला मात्र एक बार पड़ता है। मगर एक बार में ही वे दस बार का वसूल लेते है। वसूल से ही वसूला शुद्ध बना है जो एक छैनी की तरह होता है और लकड़ी छीलता है। यह विभाग भी बसूला की तरह होता है जो छील देता है। रजिस्ट्री विभाग आपकी जमीन को प्रमाणित करता है कि वह जमीन आपकी ही है। हालांकि जमीन की रजिस्ट्री जरूरी होती है नहीं तो सारी जमीन बाहुबलियों की हो जाये। और आप आपकी जमीन में ही मजदूर बना दिये जाये। आप आपके मकान के ही किरायेदार हो जायें। इस तरह रजिस्ट्री विभाग आपको आपकी जमीन के लिये डंडा पैजार करने की हिम्मत देता है।

रजिस्ट्री विभाग में जब आप प्रवेश करेंगे तब कुछ लोग समानान्तर बैठे मिलेंगे। बेहतर हो कि आप इनसे संपर्क कर लें। क्योंकि आपकी थैली में तो स्टाम्प पेपर नहीं होते है न ही आपको उस भाषा का ज्ञान होता है जिसमे े रजिस्ट्री होती है सबसे बड़ी बात यह है कि उस विभाग का बाबू आपको नहीं जानता पर इन्हें जानता है, क्योंकि ये लोग पीड़ियो से रजिस्ट्री करवा रहे होते है आप नहीं। सरकारी बाबू ड्यूटी पर मुस्कुराता नहीं है भले ही वह आपका लड़का ही क्यों न हो पर इन्हें देख कर मुस्कुराता है भले ही इनका पड़ोसी ही (दुश्मन) क्यों न हो।

जब आप रजिस्ट्री के लिये अन्दर जाते है तो वहां पर पड़ी एक मात्र कुर्सी पर आपको बैठने के लिये निवेदन किया जाता है। पर आप उस पर बैठने की जुर्रत नहीं करते क्योंकि वह कुर्सी टूटी हुई होती है। इस तरह बाबू उसकी शराफत का परिचय दे

देता है और आप भी बेहतर हैं कि आप पीने का पानी साथ में ले जावें। क्योंकि रजिस्ट्री के लिये आपका नम्बर पहला होने पर भी आपकी रजिस्ट्री शाम को ही हो पायेगी। यदि देश का राष्ट्रपति भी रजिस्ट्री करवाने जाता है तब उसे भी खड़े रह कर देश की (रजिस्ट्री बाबू की) इज्जत मजबूरन करना पड़ती हैं। वहां सब देशवासी समान यानि मूर्ख और असहाय माने जाते है।

रजिस्ट्री की शुल्क नहीं होती है शुल्का होता है यदि जमीन एक लाख रूपये में क्रय की है (आज कल फुट स्क्वायर की फीस डेढ़ लाख रूपये होगी। यानि एक लाख रूपये आप विक्रेता को दें और डेढ़ लाख रूपया सरकार को) आपको तय करना मुश्किल होता है कि आपको विक्रेता लूट रहा है या आपकी चुनी हुई सरकार। पहले आप जो विक्रेता पर गुस्सा हो रहे होते है अब उस पर दया करने लगते है।

जब आपकी सरकार आपको लूटती है तो सरकार की मशीन क्यों न लूटे आप से एक लाख की जमीन के दो लाख पिचहत्तर हजार वसूले जाते है। अब ये पच्चीस हजार की लिखा पढ़ी मत मांगना नहीं जो जिंदगी भर आपकी रजिस्ट्री नहीं होगी। आप पांच छः जोड़ी तलुये बदल लेंगे पर जमीन का हस्तान्तरण नहीं होगा।

यदि कोई आइ.ए.एस. अधिकारी आपकी पहचान का है तब जरूर रजिस्ट्रार, जिसका चेहरा उसके चपरासी के अलावा किसी को देखने नहीं मिलता आपको दफ्तर के दरवाजे पर स्वागत करते हुये मिल जायेगा। हो सकता है कि वह आपको रजिस्ट्री करने के बाद दुखी मन से चाय भी पिला दे। आपके चाय पान पर उसे अजीवन दुख रहेगा। इसी तरह यदि आप जमीन बेचना चाह रहे हो तो किसी जज या कलेक्टर को बेचे काम फटाफट हो जायेगा। नहीं तो ये विभाग जनता को रूलाने वाले मंत्री या गुण्डो तक भी रूला देता हैं। हां जब किसी आइ.ए.एस. अधिकारी की पहुंच लगवा कर आप रजिस्ट्री करवायें और रजिस्ट्रार पूछे कि रजिस्ट्री करवाने दुबारा आइयेगा तो आप कतई न जावें। वह आपसे तीन चार रजिस्ट्री का बदला ले लेगा।

गैर महत्वूपर्ण विभाग के एक राजपत्रित अधिकारी एक दिन बहुत खुश थे। हर आने जाने वाले आदमी को मिठाई बांट रहे थे। लोगो ने सोचा शायद उनको पांचवी लड़की के बाद लड़का हुआ होगा। पूछने पर अतिरिक्त प्रसन्नता के साथ बतलाया कि वे रजिस्ट्रर आफिस में क्लर्क हो गये थे। अब उन्हें लड़कियो की चिंता नहीं थी। एक दो और भी होती तो कोई बात नहीं थी। अपनी लड़कियों के साथ साथ वे मोहल्ले वाली लड़कियों की भी शादी करवा सकते थे। हमारा देश दहेज के कारण ही पहचाना जाता है। एक दहेज प्रधान देश है हमारा। यहां लड़की को मारने पर खुशी मनाई जाती है। कुछ लोग तो हंस कर बतलाते है कि उन्हें लड़की के मरने का उन्हें दुख है।

आश्चर्य की बात है कि आयभर विभाग के छापे आइ.ए.एस अधिकारियों तक पर पड़ने लगे है पर रजिस्ट्रार और आर.टी.ओ बरका दिये जाते है। डाक्टर और इंजीनियर तो खैर गरीब का मुर्गा है चाहे जब हलाल कर दिये जाते है। मैं उनका पक्ष नहीं ले रहा हँू भ्रष्ट व्यक्तियों पर तो आयकर के छापे पड़ना ही चाहिये और आजकल पड़ भी रहे हैं। यह एक अच्छे प्रजातंत्र की पहचान भी है पर उनका क्या करें जिनके पैसे (सारी, करोड़ो अरबो रुपये) स्विस बैंक में जमा है। उन लोगो को भी टटोला जाये जिनकी पीढ़ियाँ पार्टी अध्यक्षगिरी के अलावा कुछ नहीं कर रही पर अंबानी तक की भी शानो शौकत उनके सामने फीकी है।

पंगत संस्कृति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पंगत का तात्पर्य है पंक्तिबद्ध भोजन करना। इससे लघुत्तर परिभाषा और नहीं हो सकती। पंगत में पक्ति का "प" लिया गया है और दुर्गत का गत लिया गया है। आप कह सकते है कि नही, यह स्वागत का गत लिया गया है यह अपने अपने अनुभवों पर आधारित है।

हिन्दी में हर शब्द के कई अर्थ होते है जैसे मरम्मत का अर्थ यंत्र का सुधारना भी होता है और किसी की धुनाई भी होता है। धुनाई का मतलब रूई की धुनाई भी होता है और किसी की पिटाई भी पटाई का मतलब धातु की पिटाई भी होता है और

किसी की कुटाई भी होता है। कुटाई का मतलब धान की कुटाई भी होता है और किसी व्यक्ति की पिटाई भी। तो व्यक्ति के संबंध में कुटाई दुर्गति पिटाई, धुनाई, मरम्मत इत्यादि ही होते है। इसी तरह पंगत के भी कई अर्थ निकल सकते है।

पंगत इतिहास की संस्कृति बनती जा रही है। गांवो में पंगत शादी या तेरहवीं पर ही अधिकतर होती थी। शहरो में तो केवल लंगर या भंडारा पर ही देखने मिलती है। गांवों में तो पहिले थाली और लोटा भी साथ लाने का रिवाज था। फिर दोना और पत्तल आये। पत्तल बड़ी पत्तियों को सींको से सी कर बनाई जाती थी जिनमें से धरती साफ दिखती थी। अतः रायता जमीन में रिसता था और गोबर पत्तलों में प्रवेश कर जाता था। इसी तरह दोना होता था जो स्थिर नहीं रहता था। उसके लुड़कने के डर से एक हाथ होने को संभालता था और दूसरे हाथ से खाना खाया जाता था।

पंगत में आग्रह करके खाना परोसा जाता था, फिर भी खाना बेकार नहीं जाता था। आज कल स्वरूचि भोज में आप आपकी पसंद का खाना लेते है फिर भी फिक जाता हो हां यदि बचा खाना वापिस परोसने या बर्तनों में रखने का रिवाज चालू हो जाये तब खाना नहीं फिकेगा।

पंगतो में एक सलीका होता था। पहिले सारे पकवान एक एक कर परोसे जाते थे। नहीं , सबसे पहिले पत्तलो पर पानी छिड़का जाता था। फिर परोस चालू होती थी। जब सारे पकवान परस दिये जाते थे तब मेजबान हाथ जोड़कर जय श्रीराम कहता था। इसका मतलब था कि सीटी बज चुकी है और दौड़ चालू की जा सकती है।

फिर जो सामान अधिक मात्रा में बना होता था जैसे पूड़ियां, वे आग्रह कर करके परोसी जाती थी और जो समाप्त होने की कगार पर होते थे वे आपके मांग पर भी बरका दिये जाते थे। जब पानी का फेर चालू होता था तो इसका मतलब होता था कि बहुमत उठने के पक्ष में है।

पंगत के अंत में कुछ दृष्य अवांछित होते थे जैसे कोई सज्जन पंगत में रखे नमक से दांत घिसने लगते थे और वहीं कुल्ला कर देते थे। बुजुर्ग लोग नकली बत्तीसी निकाल कर वहीं धोने लगते थे तो कुछ व्यक्ति जोर से डकार लेने लगते थे। अब ऐसे अनुपम दृष्य कहां देखने मिलते है। फिर बर्हिगमन पर पान पेश किये जाते थे और तिलक लगा दिया जाता था जो इस बात का द्योतक था कि आप दुबारा न पधारें। “आप खाना खा चुके है।” सुना है कि भिण्ड मुरैना में जितने लोगो ने पंगत में खाना खाया उतनी ही उसकी शान बढ़ जाती थी। एक डाकू जी के घर पिता जी की तेरहवीं में पांच हजार लोगो ने जीमा तो दूसरे डाकू जी ने वहां से गुजरने वाली मोटरे रूकवाना चालू कर दी मोटरो के सारे यात्री बंदूक की नोक पर उतारे जाने लगे। उन्हें लूटा नहीं गया वरन उन्हें आदेश दिये गये कि दूसरे डाकू श्री के दादा जी के तेरहवी में खाना

खाकर ही यात्री आगे बढ सकेंगे। वह पहली बार हो रहा था कि बंदूक की नोक पर यात्रीयों को उतारा जरूर जा रहा था पर धमकी देकर खाना खिलाया जा रहा था और तिलक लगाया जा रहा था। जब सात हजार जीमने वाले हो चुके तो अगली बस को लूटा जाने लगा।

पंगत में गांव खेडो के परिवारो का कोई भी सदस्य घर में नहीं रहता था। पूरा गांव ढिकल जाता था। दूध पीते बच्चो से लेकर खटिया पर लेटे वृद्धो तक। अब वह प्रेम कहां ? अब तो गांव में भी स्वरूचि भोज होने लगे हैं। प्रेम के स्थान पर औपचारिकता पसर गई। पहले पंगतों में शोर शराबा होता था अब स्वरूचि भोजो में धारा एक सौ चवालीस लगी रहती है। ध्यान मेकप और कपड़ो पर जाने लगा।

पंगतो का आयोजन मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री भी करते है। उनके आगे विधायक और लोकायक (विधान सभा के सदस्य विधासक तो लोकसभा के सदस्य लोकायक) पंगत लगा कर बैठते है और चीन्ह चीन्ह कर मंत्रियों के पद परोस जाते है। जिनको नहीं मिलता वे या तो खिसयाने लगते है या चीखने लगते है।

प्रति,

श्री रमेश यादव

संस्थापक/अध्यक्ष
श्री कृष्ण कला साहित्य अकादमी
कार्यालय-127, गोकुलगंज, कंडीलपुरा इंदौर म.प्र.

महोदय,

निवेदन है कि आपकी संस्था श्री कृष्ण कला साहित्य अकादमी द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार सम्मान-अवार्ड के लिए अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ। मैं अपनी सम्पूर्ण जानकारी निम्नलिखित दे रहा/रही हूँ। मेरे आवेदन पर सम्मान हेतु विचार किया जाए। मैं आपका आभारी रहूँगा/रहूँगी।

1. पूरा पता	-	डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव
2. पिता का नाम	-	स्वर्गीय श्री कोमल प्रसाद श्रीवास्तव
3. जन्मतिथि	-	पन्द्रह सितम्बर उन्नीस सौ छयालीस
4. शिक्षा	-	एम.बी.बी.एस, एम.एस. (सरजरी)
5. स्थाई पता	-	171 नौनिया करबल छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 480001
6. दूरभाष निवास	-	07162 (220239) मोबाइल - 9424636145
7. जिस क्षेत्र की प्रतिभा है-		साहित्य

8. समाजसेवी/समाजसेविका, कवि, कवियत्री, लेखक-लेखिका, रचनाकार गायक-गायिका, नृत्यांगना, डाॅक्टर, चित्रकार आदि सम्मान हेतु दो रंगीन फोटो सहित कोरियर या रजिस्ट्री से अकादमी के कार्यालय पर अपना जीवन परिचय अतिशीघ्र भेजे। अतिशीघ्र ही सम्मान समारोह कार्यक्रम किया जाएगा।

आवेदक के हस्ताक्षर

....

नाम

....

पता

....

साफ सुथरा कानून

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरी लड़की ने पुणे से बहुत उत्तेजना में पूछा कि पापा आपने आज दूरदर्शन देखा कि नही ? मैनें जवाब दिया कि हां आज अकबर की जोधा के प्रति गलतफहमी दूर हो, गई सास बहू से नाराज हो रही थी, भगवान कृष्ण ने द्रोपदी का चीर इतना बढ़ाया कि दुस्साशन चीरहरण करते करते थक गया, भगवान गणेश चूहो के साथ खेल रहे थे, सब टी.वी में चन्द्रमुखी चैटाला पुरूष कान्सटेबलो को मारती रहती है तब भी वे उसकी शिकायत आइ.जी. से नहीं करते। और बीच में ढेरो विज्ञापन। मैनें सोचा कि इतना सूचना पाकर मेरी लड़की कहेगी शाबाश डैडी आप इक्यावन इंच टी.वी. को खूब निचोड़ रहे हैं पर वह नाराज हो गई बोली "समाचार देखा कि नहीं" ?

मैनें कहा "कल अखबार में पढ़ लेंगे" तो वह उत्साह से बोली अरे नहीं सरकार ने कानून बनाया है कि सड़क पर गंदगी करने वालो पर रू. 100 जुर्माना होगा। और जो जुर्माना नहीं देगा तो ? मैनें पूछा। लड़की बोली तब उसे एक महीने की जेल हो जायेगी। ये तो जनकल्याण कारी कानून है ? "मैनेें कहा। वह बोली "हां है ही। अब नगर साफ सुथरे रहेंगे मैनें कहा "नहीं अब लोग भूखे नहीं रहेंगे। कहीं कहीं तो पूरा परिवार ही गंदगी करेगा जिससे कि जेल भेज दिया जाये। फिर अपने कानूनो के क्या कहनें ? लोग कहेंगे मैनें आधा गंदा किया है अतः पचार रूपये दंूगा।"

लड़की ने उसकी तरफ लगता है कि मंुह बिचकाया होगा बोली" छि छि आप हमेशा गंदी बाते करते हो। "मैनें कहा" अच्छा गंदी बातें नहीं करता। कुछ लोग कहेंगे कि हूजूर मैं गंदगी करने वाला ही था कि पकड़ लिया गया। जहां मैं गंदगी करने बैठा वहां पहले से गंदगी पड़ी हुई थी। मैं जैसे ही कुछ करने को हुआ कि धर लिया गया। "मैं फिर आगे बोला लो मैनें गंदी तो नहीं की, करने ही वाला था।"

वह सभ्भवतः रूठ कर बोली "प्लीज पापा ठीक" है मैं अब दूसरा पहलू बतलाता हँू। मैं बोला थाने में फोन आयेंगे कि दरोगा तुमने जिसे गंदगी के झूठे अपराध में पकड़ा है वह सफाई मंत्री का साला है उसे छोड़ देवे मंत्री के रिश्तेदार कानून से ऊपर रहते है उन पर कानून लागू नहीं होते। दरोगा धेबिया कर कहेगा सर हूजूर वह पहले भी इसी अपराध से पकड़ा गया है। उसे छोड़ने पर कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ जायेगी। साफ आदमी पार्टी वैसे भी आपके साले की वजह से नगर बंद करने वाली है।"

बिटिया की आंखे सम्भवतः आतंक से फैल गई होगी उसने पूछा "अब कानून लागू कैसे होगा ? मैनें जवाब दिया हमारा स्वच्छ नगर इस कानून के लागू होने के

बाद भी वैसा ही गंदा रहेगा जैसा कि वह पहले था। हमारी जिंदगी में खुशी आती नहीं है उसका आभास भर आता है। वहीं दूसरी तरफ पुलिस निरपराध लोगो को यह कह कर जेल में डालती रहेगी कि वे गंदगी करने का षडयंत्र रच रहे थे और जो शहर का माहौल गंदा करेंगे वे कानून की पकड़ से बाहर ही रहेंगे और माहौल गंदा करते रहेंगे।“

मेरी बिटिया ने फोन पर कहा “पापा आप कुछ करते क्यों नहीं ? मैनें जवाब दिया “मैं कुछ करूगा तो धर लिया जाऊँगा। आज कल कुछ करने से कुछ न करना सबसे अच्छा है।”

सर पे कांटे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रूख ही बदला है वही जूता है अब होता है क्या ?
दिन नहीं बदलें वही तकदीर है रोता है क्या ?
सड़क है खंूरेज, खिड़की बंद घर सोये हुये।
दरम्याने चीख कोई इस तरह सोता है क्या ?
तू है मोहरा बिसाते शतरंज का इतना समझ।
पिटने पर मोहरा खिलाड़ी फिर उसे ढ़ोता है क्या ?
पहले नारो को समझ, फिर बोल, फिर रस्ता पकड।
मिरचियो पे मत लपक तू पिंजरे का तोता है क्या ?
सर पे कांटे मत बिठा उनको कुचल और फेंक दे।
कोई अपने खेत में कांटे कभी बोता है क्या ?

हीरे का नग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रहे मशगूल जो झुकाने में।
हाथ का पाये न मिलाने में।।
जिन्दगी एक निकल जाती है
ईंट पर ईंट एक जमाने में।।
एक प्यारा सा गोद में बच्चा।
प्यार छुपता नहीं छुपाने में।।
पूछते हैं जो गजल का मतलब।
जरा जायें वे रिन्द खाने में।।
गजल गाने से निखर जाती है।
गजल हीरे का नग तराने में।।

रूठा जाम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भाव ताव से रूठा जाम।
साथी छूटे, छूटा जाम।।
याद नशे में भी घर था।
घर सच्चा और झूठा जाम।।
धोखे बाज हम सफर था।
उसने मेरा लूटा जाम।।
मैं से खाली भले रहे।
तू बस कर दे झूटा जाम।
ठोकर को क्या गाली दँू।
फूटी किस्मत फूटा जाम।।

मंच पर आने की छटपटाहट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिनांक 23 जून 2014 को किन्ही राजनैतिक स्वयंभू शंकराचार्य ने साइं भक्तो पर प्रहार करते हुये कहा कि साई बाबा के भक्तो को राम या ॐ का प्रयोग नहीं करना

चाहिये और हिन्दुओं को सांई की आराधना नहीं करना चाहिए। भगवान राम को द्वारका के शंकराचार्च ने एवं राजनैतिक पार्टियो ने पिंजरे में कैद कर रखा है। ये वे लोग है जो राम का मतलब नहीं जानते। राम का मतलब होता है आनंद दायक इसी से आराम शब्द बना है जैसा कि राम रक्षा स्त्रोत में कहा है

आरामः सकला पदां

यानि सारी आपदाओं को हरने वाले। आगे है अभि रामस्त्रिलोकानां रामः श्री मान्स नः प्रभो।

जैन धर्म का पद्मापुराण श्री राम एवं श्री हनुमान जी की कीर्ति गाथा है।

राम शब्द का उपयोग कबीर दास जी ने बहुत किया है तो क्या कबीर पंथिसो से राम शब्द के उपयोग का अधिकार छिन जाना चाहिये। इसी तरह श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में भी राम शब्द का उपयोग किया गया है।

"राम" तथाकथित शंकराचार्य के बंधक नहीं है। राम पर उनका एकाधिकार नहीं हैं। राम तो आत्मा है जो हर प्राणी में हैं तथाकथित राजनीतिझो एवं स्वयम्भू शंकराचार्य ने उन्हें गुलाम बना दिया। नाम होने से राम एक संज्ञा एवं आनंददायक होने से क्रिया विशेषण है। राम शब्द का उपयोग भगवान राम के पहले परशुराम के नाम के साथ एवं बाद में बलराम के साथ भी हुआ है।

क्या दया राम, सिया राम या राम दयाल इत्यादि नाम ही नहीं रखे जाने चाहिये। इसी तर्ज पर सांइ राम कहते है। उन शंकराचार्य को तो खुश होना चाहिये कि वे किसी तरह राम का नाम तो लेते है तुलसीदास जी ने कहा भी है कि भाव कुभाव अनख आलस नाम जपत मंगल दिसि दय है।

राम एक वैदिक देवता नहीं हैं अतः तुलसीदास जी का यह कहना कि नति नेति इति निगम कह समझ में नहीं आता। किसी भी वेद में भगवान राम का गुणगान नहीं किया गया हैं। जिन भगवान विष्णु के वे अवतार माने जाते है उन्हें उपेन्द्र कहा गया है। यानि इन्द्र से छोटे। इस तरह विष्णु अनादि नहीं है दिति के लड़के हैं। श्रीमद्देवी भागवत महापुराण के अनुसार ब्रम्हा विष्णु और महेश का निर्माण पराम्बा मूल प्रकृति करती है और वे सब प्रलय में उन्हीं में मिल जाते है अतः वे अनन्त भी नहीं हैं।

भगवान कृष्ण ने राम को गीता के दसवें अध्याय में "राम: शस्त्र भृतामध्दम कह कर उन्हें हाथी घोड़ा, पक्षियों, मगर इत्यादि के समकक्ष रख दिया है। उन शंकराचार्य ने कहा है कि सांई भक्तो को "ॐ" शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि "ॐ" शब्द हिन्दुओं की ही धरोहर हैं। उन शंकराचार्य को जैनों का वणोकार मंत्र रटना चाहिये। "ॐ" शब्द का प्रयोग सिख लोग भी करते है। मगर शंकराचार्य नाम के व्यक्ति को उन्हें ॐ के प्रयोग की वर्जना करने की हिम्मत नहीं है। वरनल श्रीमदभगवतगीता के सत्रहवें

अध्यास के चैबीसवें श्लोक के अनुसार “तस्मादोभित्यु दा ह्नदय होस्त्र यज्ञ तपः क्रिया। प्रचर्तन्ते विद्योनोक्ता सततः ब्रह्ननवादिदनाम यानि इसलिये बेदमंत्रो का उच्चारण करने वालो की शस्त्र विधि से नियत यज्ञ दान और तप क्रियायें सदा “ॐ” इस उच्चारण से प्रारम्भ होती है। इसलिये सांइ भक्त ओम् शब्द राम का उच्चारण करते है।

माण्डूक्य उपनिषद में कहा गया है सोअयमात्मा अध्यक्षर ओंकार अधिमात्रं पादा मात्रा। मात्राश्च पादा इकार उकारो मकार इति। जागरितस्थानो वैश्वानरः। अकारः प्रथम मात्रा। आप्रेरादि मत्वाद वा। आप्रोनिहवै सर्वान कामान आदिश्च भवति य एवं वेद (8 वां एवं 9 वां श्लोक) यह वह अधि अक्षर से ओंकार है। अधिमात्रा पद है और पद ही मात्रा है वह आकर उकार और मकार है जागृत स्थान। वैश्नावर अकार प्रथम मात्रा है आप और आदि होने से इसकी सारी इच्छाएें पूरी हो जाती है। (10 वां श्लोक) स्वप्न स्थानस तैजसः। उकारो द्वितीया मात्रा। उत्कर्षाद उभयत्वाद वा। उत्कर्षति ह व ज्ञान संततित समानश्च भवति न अस्य अब्रहन विद मुकुल कुले भवति। य एवं वेद (11 रहवां श्लोक) सुषप्रस्थानः प्राज्ञः मकारस तृतीया या मात्रा मितरपतिरवां। मिनोति ह वा इदं सर्वः। अपीतिश्च भवति। य एवं वेद।

यानि स्वप्न की तेजस यह उकार रूपी द्वितीय मात्रा हैं उत्कर्ष के कारण या उभयत्व के कारण। यह ज्ञान संतति का उत्कर्ष करती है। समान होती हैं उसके कुल में कोई अह्नावहनविद नहीं रहता हैं। जो यह जानता है (10 वां श्लोक) सुषप्रि की “प्राज्ञ” यह मकार रूपी तृतीय मात्रा है। मिति या लय के कारण। जो ऐसा जानता है वह इस सारे जगत को नाप लेता है या अपने में लय कर लेता है। इस तरह माण्डूक्स उपनिषद के अनुसार ॐ का मतलब जागृत, स्वप्न या सुषुप्ति, वैश्नावर तेजस और प्राज्ञ, आदि मध्य और अंत प्राप्ति समान और नाप या कामना, ब्रहनविद लय, आदि है।

शंकराचार्य को जानना चाहिये कि मात्र बाहर श्लोको वाले इस उपनिषद का भाव्ेय आदिगुरू शंकराचार्य एवं उनके गुरू आचार्य गौडपाद जी ने एक साथ किया था। कहीं पड़ा था कि ओम् के अर्थ शताधिक होते है।

अतः द्वारिका के बलात् शंकराचार्य को सलाह दी जाती है कि वे पहले उदार हिन्दु धर्म की समृद्ध साहित्यिक विरासत का गहन अध्ययन करें फिर कुछ बोलें। उनसे यह कहने की भी हिम्मत होनी चाहिये कि हिन्दु लोग अजमेर शरीफ भी न जायें। उनके वक्तव्य उदार हिन्दु धर्म को विकृत करने की कुचेष्टा है। उन शंकराचार्य के मात्र कुछ ही सैकड़ा अनुयायी है और करोड़ो हिन्दुओ के लिये फतवा जारी कर रहे हैं। यह धार्मिक साहिष्णुता को और भारतीय संस्कृति को विकृत करने की कुचेष्टा है। उन शंकराचार्य को सांइ बाबा के खजाने पर भी नजर है।

मंच पर कहीं से पत्थर की सनसनाहट है,

किसी के मंच पर आने की छटपटाहट है।।

रेल बजट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रेल बजट प्रस्तुत होने को है। भारत में एक परम्परा है कि पहले रेल बजट प्रस्तुत किया जाता है फिर सामान्य बजट। बजट का मतलब बटुआ होता है पर कालान्तर में मुद्रा की प्राप्ति के तरीके और खर्च करने की योजना को बजट कहने लगे। रेल बजट सामान्य आदमी को बहुत अधिक प्रभावित करता है। रेल पूरे भारत को जोड़ती है। यह एकता का सशक्त माध्यम है। विश्व के सबसे अधिक कर्मचारी भारतीय रेल में है। अगर यात्री किराया बढ़ता है तो नुकसान सरकार को ही होता है जिन्हे हम निम्न बिन्दुओ में समझ सकते है:

(1) जन सामान्य का परिभ्रमण प्रभावित होता है। हम जानते हैं कि यात्री भी व्यापार में एक बहुत बड़े माध्यम है, मंगहाई बढ़ेगी ही

(2) यदि माल भाड़ा बढ़ता है तो वस्तुओं की कीमते पूरे भारत में बेतहाशा बढ़ जायेगी। सरकार यदि किराया एक रूपया बढ़ाती है तो मंहगाई दस रूपया बढ़ जाती है।

(3) बगैर टिकिट यात्रियों की संख्यायें बढ़ जायेंगी। सरकार को अभी भी गरीबों की मजबूरी का अंदाज नहीं है। इलाज के लिये बड़े केन्द्रो में जाना, न्यायालयों में गवाही देने की मजबूरी, रिश्तेदारों की मौत या शादी में जाना ऐसी तमाम मजबूरियां है जिनमें यात्रा निश्चित रूप से करना ही पड़ती है। जब जेब में पैसे न हो और अदालत में गवाही देने की मजबूरी हो (अन्यथा निरपराध जेल जाने की विवशता हो) तो एक गरीब आदमी क्या करेगा ? रेल ही एक सस्ता माध्यम है अन्यथा मोटरो का किराया तो मध्यम वर्गीय भी नहीं उठा सकते।

(4) अपराध बढेंगे: रेल के किराया न देने की मजबूरी में एक विवश व्यक्ति क्या करेगा ? जेब कतरो उठाई गिरी निश्चित रूप से बड़ जायेगी। मारपीट और हत्यायें भी। कंुठित आदमी ही यौन अपराध की तरफ भागता है।

(5) भ्रष्टाचार बढ़ेगा: बढ़ा किराया टी.टी.आई को भ्रष्टाचार की तरफ ढकेलता है। यू.पी.बिहार, बंुदेलखंड इत्यादि में यात्री चाकू लेकर चलते है। मध्यप्रदेश के बीना जंक्शन तक तो सब ठीक ठीक चलता है फिर वहां से कटनी तक लगभग आधी ट्रेन बगैर टिकिट चलती है। फिर टी.टी.आई या तो रिश्वत खाये या चाकू खायें। सब टी.टी.आई को नमस्ते करके निकल जाते है। जिसने नमस्ते की यानि उसके पास चाकू है। इससे सरकार की रेवन्यू में ही नुकसान होना है। सरकार सोचती है कि लोगो की मजबूरी का फायदा उठा लेगी तो गलत है। फायदा यात्रियों का, बुकिंग विभाग और टी.आई लोगो का ही होगा।

यही हाल उत्तर प्रदेश बिहार आदि प्रान्तो में रहता है अब कुछ टी.आई और पूरी ट्रेन। यह तो रेल्वे मिनिस्टर भी नहीं संभाल सकते। विकलांग प्रमाण पत्र बढ़ जायेंगे। रेल मंत्रालय ने विकलांगो को बहुत अधिक सुविधायें दे रखी है। मैनें स्वेच्छा से इन सुविधाओ को उठाने के लिये

स्वस्थ व्यक्तियों को उंगलियों कटवाते देखा है। उन्हें एक व्यक्ति निःशुल्क ले जाने की सुविधा है। व्यापारी एक नौकर विकलांग इसलिये रखते है कि बेचने का सामान यहां से वहां निःशुल्क एवं सहायक के साथ ले जाया जा सके। यहां यह कहने की भी इच्छा होती है कि विकलांगो को आयकर में में छूट भी मिलती है।

(6) माल भाड़ा बढ़ने से वस्तुओं का परिभ्रमण ट्रको के द्वारा बढ़ जायेगा। जो एक सुरक्षित सुनिश्चित और सुविधाजनक साधन है सरकारी झंझट की वजह से अभी भी ट्रक, रेल के बराबर ही माल ढोते है।

(7) सरकार का जनता को यह झांसा की वह बड़े किराये के बदले सुविधायें बढ़ायेगी आकाश कुसुम है। रेल किराये के बढ़ने के साथ साथ सुविधायें कम होती जा रही है। पुलिस फोर्स बढ़ने से रेलो में भ्रष्टाचार बढ़ा ही हैं। अब यात्रियों को अपमान भी अधिक झेलना पड़ रहा है। पहले कर्मचारी सुन भी लेते है अब तो यात्रियों को डांटते है। अब या तो संभ्रात यात्री मार पीट पर उतारू हो जायें या चुप रहे। ए.यी में कंबलो में मकडियां रहती है और कंबल किराये से मिलने लगे है। फिर उन्हें कोई कंबल उठा कर नहीं देता। कंबलो और चद्दरो की स्वरूचि भोज व्यवस्था है। अटकी हो तो उठा लो अन्यथा अटन्डेंड तो सोता रहता है या काटने दौड़ता है। यहां तक खाने में पानी की जो बोतल निशुल्क मिलना चाहिए, उन्हें खरीदना पड़ता है। सफाई का तो भगवान ही मालिक है। शौचालय गंदे रहते है, उनमें सामान नहीं रहता। अब तो हाल यह है कि शौचालय जाने

के पूर्व मिनरल वाटर खरीदो और और उन्हीं से शौच करो। बेसिन गंदे रहते हैं। शुक्र है भिखारियों का कि वे यदि न हो तो ट्रेन साफ ही न रह पाये।

कृपाया बतलायें कि रेल मंत्री सुविधाओं को कैसे सुधारेंगे। पहले वे सुविधाओं और असुविधाओं का किसी निशपक्ष माध्यम से सर्वेक्षण करवा ले फिर तो कह सकेंगे कि उन्होने सुधार करवाया। “अन्यथा इंडिया को मत उल्लू बनाविंग”। नई सरकार यहद ये कहती है कि ये किराये में वृद्धि तो पुरानी सरकार की योजना में था तो जनता ने आपको शासन पुरानी सरकार के निर्णय लागू करने के लिये नहीं दिया था। इससे तो पुरानी सरकार कहां की खराब थी ?

रेल प्रशासन यदि जरा सा प्रशासन में सुधार कर ले तो वर्तमान किराये में भी फायदें में चलने लगे। लोग हवाई जहाज की यात्रा कम करने लगेंगे जो कि अत्याधिक बढ़ गई है। जरा देखे तो कि स्टेशनों से रिजर्वेशन तो वेटिंग में चल रहे है पर प्लेटफार्म टिकिट एक भी नहीं बिग रहे है। यह एक आश्चर्य का विषय है। अन्त में:

घने सन्नाटे में एक मुद्दा उछलना चाहिये
मुतमइन सैलाब में हलचल मचलना चाहिये
वजन जूतों का मुसलसल बढ़ रहा है रात दिन
सब्र ही हद हो चुकी चीखें निकलना चाहिये

एक्सपायरी डेट की दवायें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हरेक दवा के रेपर "या" "पैकिट" पर तीन जरूर छपी रहती है। (1) "डेट आफ मेन्युफेक्यरिंग" या एम.एफ.डी या निर्माण तिथि (2) "बेच नम्बर" (3) डेट आफ एक्सपायरी या डी. एक्स या अवसान की तारीख

इसका मतलब है कि कोई भी दवा निर्माण से अवसान की तारीख की अवधि में ही सक्रिय रहती है। अवसान की तारीख के बाद वह निष्क्रिय हो जाती है एवं हानिकारक भी हो सकती है। कुछ लोगो को गलत फहमी रहती है कि अवसान की तारीख के कुछ महीनो बाद तक दवा का उपयोग किया जा सकता है। पर यह खतरनाक गलतफहमी है। अब कुछ दवाओं में अवसान की तारीख के स्थान पर माह एवं वर्ष लिखा रहता है। इसका मतलब है कि उस दवा का उपयोग अवसान माह के पिछले माह तक ही उपयोग कर सकते है। जैसे किसी दवा का अवसान की तारीख जुलाई 2014 है इसका मतलब है कि दवा का उपयोग जून 2014 तक ही किया जा सकता है। जो खाद्य पदार्थ है उन पर निर्माण के बाद "बेस्ट बिफोर" लिखा रहता है। यह मिनिरल वाटर पर या कोल्ड ड्रिंक्स पर भी लिखा रहता है। उनका उपयोग निर्माण तिथि के बाद लिखित समय तक ही किया जा सकता है। यह समय बड इत्यादि में मात्र चार या पांच दिन ही रहता हैं। अतः ऐसी वस्तुओं को संभाल कर उपयोग करना चाहिये। अवसमन की तारीख का निर्धारण कई तत्व संघटक पर निर्भर रहता है

जैसे (1) उसका मुख्य संघटक कब तक सक्रिय रहेगा

(2) उसका "प्रिजरवेटिव" कब तक सक्रिय रहेगा

(3) उसका कोट यानि जिलेटिन या शुगर कोटिंग कब तक सक्रिय रहेगा।

जैसे (1) बी काम्प्रेक्स के सिरप में बी काम्पलेक्स के संघटक कब तक सक्रिय रहेंगे।

(2) सिरप यानि शकर का घोल कब तक खराब नहीं होगा/युक्त जिलेटिन या शुगर कोटिंक कब तक खराब नहीं होगा।

(3) प्रिजरवेटिव जैसे मिथायल पेरा पेरावेन प्रोपाइल पेरावेन आदि कब तक उसे विखण्डन से रोक कर रखेंगे।

यही कायदे आर्युेवेदिक यूनानी या किसी भी पेथी की दवाइयों पर लागू होते है।

दवाइयों के पेकेट पर यह दर्शाना भी आवश्यक है कि वह दवा शाकाहार या मांसाहार के तत्वों से मिलकर बनी हैं यह न दर्शाना एक दण्डनीय अपराध है।

एक्सपायरी दवा के परिणाम भयंकर भी हो सकते है। उस दवा का असर तो बिल्कुल ही खत्म हो जाता हैं उल्टी पेट दर्द शरीर पर चकते एवं प्रतिक्रियात्मक सदमा एनाफायलेक्टिक शाक) एवं मृत्यु भी हो सकती है कोई भी दवा जब तक उन्हें उपयोगी न हो बच्चो की पहुंच से दूर रखनी चाहिये जो दवा एक्सपायर हो गई हो उसे नष्ट कर देनी चाहिए। जैसे गोलियां पीस देनी चाहिए। सिरपर को बहाया जा सकता है मगर

रेडियो ऐक्टिव दवाओ को यथा निर्दिष्ट तरीके से ही नष्ट किया जाना चाहिये अन्यथा "रेडियेशन हेजार्ड" हो सकते है।

अधिकतर दवाइयों को बडे एवं शुष्क स्थान पर रखे जाने के लिये लिखा रहता है। उसे निर्दिष्ट तरीके से ही रखना चाहिये। कुछ वेक्सीन एवं दवाइयों को रेफ्रिजरेटर में रखे जाने का निर्देश लिखा जाता है।

अच्छे दिन अच्छी रात

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अंदाज नहीं था कि अच्छे दिन इतनी जल्दी आ जायेंगे। हम तो नये शासन को वोट देकर निश्चिंत हो कर सो रहे थे कि अब यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे अच्छे दिन लायें। क्योंकि वे चुनाव प्रचार में लगातार चिल्ला रहे थे कि अच्छे दिन, अच्छे दिन। "हमनें अच्छे दिन देखे भी नहीं थे। फिर शासन परिवर्तन के दस दिन बाद ही दरवाजा खटखटाया जाने लगा। हमने पूछा "कौन है भाई जो हमारी अच्छी रातें खराब कर रहा है ? बाहर से आवाज आई "दरवाजा खोलो"। मैं अच्छा दिन हूँ जिसका तुम सपना देख रहे हो।" हमने लपक कर दरवाजा खोला तो एक रेल का डब्बा खड़ा हुआ था। उसने बढ़े हुये किरायों की लिस्ट थमा दी। हमारी तो आधी रात को ही नींद उड़ गई। हमने डब्बे से कहा भाई ये तो खराब दिन है।

वह डब्बा क्रूरता पूर्वक हंस कर बोला "नहीं, यही अच्छे दिन की शुरूआत है। सोना मत और दरवाजा भी बंद मत करना। पीछे तो अच्छे दिनों की कतार लगी है। हमारा दिल धड़क उठा। हमें उसकी धड़कन से मालूम हुआ कि दिल बांयी तरफ होता है। हम यह भी समझ गये कि हमारा दिमाग घुटने में ही था जब हम वोट डालने गये थे। अब घुटनों में बूटों की ठोकरें लगना चालू हो गई थी। हम सोते तो खैर क्या। रेलगाड़ी के डिब्बो की भांति अच्छे दिन आना चालू हो गये थे।

दूसरे दिन फिर रात को दरवाजा खटखटाया गया। हम बोले " दरवाजा खुला है चाय वाले। हमें मालूम है कि तुम अच्छे दिन हो। तुम्हारा ही घर है। घर तो अच्छे दिनों से भर गया है तुम कौन हो ? मुझे पेट्रोल की गंध पहले ही आ गई थी। बोला मैं पेट्रोल हूँ। मात्र दो रूपये पचास पैसे ही मंहगा हुआ हूँ। अफवाहों में मत आना कि मैं ढाई सौ मंहगा हुआ हूँ।" हम बोले "वह भी हो जाओगे। जर्रान वाज मत बनो।

तीसरी रात फिर सिलेण्डर गिरने की आवाज आई। वह छत पर से टन्न से हमारे सर पर गिरा। अच्छा रहा कि दिमाग घुटनों में था और खोपड़ी ठोस थी प्रसन्नता पूर्वक वह रसोई गैस का सिलेण्डर बोला "चिंता मत करो। हम अभी केवल पन्द्रह रूपये ही मंहगे हुये है। अब तो तुम्हें छत की भी जरूरत नहीं है। पानी भी नहीं गिर रहा और अफवाहों में मत आना कि सिलेण्डर ढाइ सौ रूपये प्रति सिलेण्डर मंहगा हो रहा हैं। "ज्यादा भी हो सकता हैं। हमनें कहा "पांच साल तक तो हमारा घर बिन दरो दीवार का रहेगा। अभी तो एक आलू, एक प्याज, एक अरबी, एक मुट्ठी में हँू कुछ दालो के दाने, थोड़ा सा तेल आदि भी ये समाचार लेकर आयेंगे। हमारा छोटा सा घर अच्छे दिनों के लिये बहुत बड़ा है।

फिर रात को बिजली जाने लगी। हमने पूछा "अब तुम क्यों नखरे दिखा रही हो" वह बोली अब तो रातें भी अच्छे दिनों में तब्दील हो गई हैं। हम अच्छे दिनों को घर में ठंूस कर बाहर निकल आये। वे वहां पांच साल तो रहने वाले थे। बाहर आकर हम माडल राज्य में गये। हमनें वहां अव्छे आदमी को पकड़ा और कहा "तुम तो माडल आदमी हो तुमने झूठ क्यों बोला।

वह बोला "हम भी तुम्हारी तरह सड़क पर कटोरा लेकर बैठे है। हमनें कहा चलो नमों से मिलते है उन्होने कहा था कि अच्छे दिन आने वाले है।" "मत जाओ"। वहां का अच्छा नागरिक बोला इन्हीं अच्छे दिनों को सहन करो। वहां जाओगे तो जेल में डाल दिये जाओगे।"

हमनें कहा "वहां घर तो होगा" वह बोला अब तो हमारी किस्मत में घर कहा ? उन्हीं के अच्छे दिन हैं और उन्हीं का घर भरना हैं। हमें तो जेल में पिटाई लगेगी ? क्यों अपने घर में पिटने जा रहे हो। हमनें सोचा पुराने आदमियों के पास जायें। वे थोड़े से बचे थे मगर निश्चिन्त बैठे थे। हमारे कुछ कहने के पहले ही बोले "अच्छे आदमी, अच्छाइयों को भुगतो। हमारी गलती थी कि हम अपनी बुराईयों को तुम्हें दिखाने लगे थे। अब तुम्हें बचाने न तो कोई काम देव बाबा और न ही कोई कन्ना सैकडे आयेगा वे भी पश्चाताप कर रहे हैं। अब तो अच्छाईयों के बुरे दिन और बुराईयों के अच्छे दिन आ गये है।"

हमारी कुल्हाड़ी हमने अपने पैरो पर ही मार ली हैं। अब तो रातें भी अच्छी है। रात भर आने वाले दिनों के कारण जागते रहते हैं। मंहगाई ने कमर तोड़ दी है, फिर भी घिसट रहे है230 आसमान के सारे तारे गिन लिये है। रातों को जागने के कारण हम वाराहमिहिर हो गये है।

द्वारिका पीठ के शंकराचार्य की ईष्र्या

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सोमवार दिनांक 7 जुलाई 2014 को मध्यप्रदेश में ही रहने वाले द्वारका पीठ के शंकराचार्य स्वरूपानंद ने कहा कि "वे सनातन धर्म के जज है। शिरडी के साईबाबा के पास दुनिया भर का काला धन चढ़ाया जा रहा है।" साईबाबा के प्रति उनके स्वर कुछ नम हो गये उन्होने कहा कि उन्हें साई बाबा से कोई शिकायत नहीं है, पर उनके दलालो से है। साईबाबा की पूजा वैधानिक इसलिये नहीं है कि शिरडी में उनकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई। अन्य मंदिरों में भी उनकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती इसलिये उनकी पूजा नहीं करना चाहिये। साईबाब के इतने चमत्कार नहीं थे उन्हें दलाल गरिमा मंडित कर रहे हैं।"

एक तो सनातम धर्म क्या है उन्होने परिभाषित नहीं किया। क्या यह वह सनातम धर्म है जिसमें द्वन्द् धोखे से गौतम ऋषि की पत्नि का सतीत्व भंग करता था, या भगवान विष्णु वृन्दा का धोखे से सतीत्व भंग करते थे। क्या यह वह सनातम धर्म है जिसमें सत्यवादी हरिशचन्द्र शुनःशेप को खरीद कर उसको यज्ञ पशु बनाते थे।

स्वरूपानंद का सनातन धर्म क्या वही है जिसमें एक राजा की हजारो रानियां होती थी या एक नारी के कई पति होते थे ? आखिर उनका सनातन धर्म कौन सा है जिसका उन्हें जज बनाया गया है । और जिसके मूल्य वे स्थापित करना चाह रहे है। क्या वे उस सनातम धर्म की बात कर रहे है जहां चन्द्रमा देव गुरू वृहस्पति की पत्नि का बलात् हरण कर लेता है और वृहस्पति अपने छोटे भाई की पत्नी का फिर स्वरूपानंद को सनातन धर्म का जज किसने बनाया ? उन्हें करोड़ो हिन्दुओ ने तो मत देकर जज नहीं बनाया। जिस आदमी के अनुयायी जज है मात्र हजारो में हो वह करोड़ो पर शासन कैसे कर सकता है ? उनको कोई नहीं सुनता। कई लोग तो उनके मोटे थुलथुल शरीर को देख कर हंसते है। एक समय किसी विकृत मानसिक व्यक्ति की सलाह पर हजारो शिवलिंग लोगो ने घर से बाहर कर दिये थे फिर क्या हुआ। क्या भगवान शिव के उपासक कम हो गये। हिन्दुओं को शैव और वैनबी विवाद से ही निजात नहीं मिलती वह स्वरूपानंद की बात कौन सुने करोड़ो हिन्दुओं को तो यह भी नहीं मालूम कि इन शंकराचार्य का कर्तव्य क्या है ? और दायित्व क्या है। द्वारिका पीठ के शंकराचार्य ने जो गोटेगांव में एक व सिवनी में दो धार्मिक दुकाने खोल रखी है उनमें जाने वालों की संख्या ही साल भर में मात्र सैकड़ो में ही होगी। ये वही शंकराचार्य है जो एक दंबग नेता के कारण जान बचा कर भागे भागे फिर रहे थे। इन शंकराचार्य पर दव्री जवान में कुछ लोग एक प्रभावशाली व्यक्ति के नाजायज पिता होने का आरोप लगाते हैं। ये शंकराचार्य कैसे पवित्र सनातम धर्म के जज बन गये।

आदि गुरू शंकराचार्य ने चार मठ हिन्दुओं के धर्मान्तरण रोकने के लिये बनाये गये थे। आज के शंकराचार्य उनका मूल कर्तव्य भूल कर चांदी के सिंहासनों पर बैठ कर मात्र उनके चरण स्पर्श करवाने के पांच सौ रूपये ले लेते है, कृपया स्वरूपानंद जी बतलायें कि उन्होने कितने धर्मान्तरण रोके। दहेज प्रताडित कितनी अबलाओं को इस्लाम ग्रहण करने से रोका आज भारत में इस्लाम, सिक्ख और बौद्ध इत्यादि लोग हिन्दु धर्मान्तरण से ही बड़े हैं। जो मुस्लिम स्वतंत्रता के समय मात्र दस प्रतिशत थे आज बीस प्रतिशत हो गये है। हिन्दु धर्म के सरलीकरण के बजाय इन्होने उसे क्लिष्टतर बना दिया है। इस्लाम में हिन्दु विधवाओं को शरण तो मिल जाती है। कठोर वर्णव्यवस्था से पीड़ित वह ठंडी छांव तो पाते है।

जहां तक ईमानदार सरकारी नौकर, बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले साई भक्त है। यह कह कर कि साई बाबा के पास काला धन पहंुच रहा है स्वरूपानंद ने उनके गाल पर तमाचा ही मारा है। वे खुद उनके गले में झांके कि उनके कितने भक्त ईमानदार है स्फाटिक का विशाल भगवान शंकर का शिवलिंग, श्रीमाता धाम या गोटेगांव स्थित शंकराचार्य का भव्य आश्रम बिल्कुल ईमानदारी के पैसो से तो नहीं बन सकता।

स्वरूपानंद ने उनकी काली कमाई से कितने अस्पताल बनवायें इसका लेखा जोखा भी देश के सामने रखें। स्वरूपानंद पूर्व सरकार के समय में इस प्रकार सार्वजनिक रूप से इस प्रकार हिन्दुओं पर विषवमन नहीं करते थे। आज मोदी सरकार के शासन में आते ही क्यों हिन्दुओ के सुधार की बात याद आने लगी। कहीं यह वर्तमान सरकार के विरूद्ध प्रायोजित षडयंत्र का शंखनाद तो नहीं है।

स्वरूपानंद को आपत्ति है कि बाबा "सबका मालिक" एक कहते थे। यदि सबका मालिक एक नहीं है तो वे ही बतला दें कि कितने मालिक होते है इसी तरह उन्हें आपत्ति है कि साई बाबा "अल्लाह मालिक" कहते थे, तो महात्मा गांधी भी ईश्वर तेरो नाम, अल्ला तेरो नाम कहते थे क्या उन्हें राष्ट्रपिता मानना बंद कर दिया जाये ? साई बाबा तो भजन भी गाया करते थे। साई बाबा के चमत्कार तो थे, केवल दलाल उनका फोटो हर दुकान पर नहीं लगवा सकते। साई बाबा की तुलना अन्य जीवित बाबाबों से इसलिये नहीं की जा सकती कि अन्य बाबाओं से मिलने के लिये पिच्चर हाल में घुसने की तरह फीस देनी पड़ती है। साई बाबा के मंदिर में हिन्दुओं के अन्य मंदिरों की तरह खाली हाथ भी बेरोकटोक जाया जा सकती है।

कुछ ही सैकड़ा अनुयायी रखने वाले स्वरूपानंद कैसे करोड़ो हिन्दुओं से यह कह सकते है कि वे क्या सोचें और क्या न सोचे। यह तो तालिवानी प्रवृति हुई। उनके वक्तव्य केवल हीन भावना एवं ईष्र्या दर्शाते है। स्वरूपानंद का कहना है स्कूली बच्चो की हिन्दुओं के संस्कारो से परिचित करवाने के लिये स्कूलों में रामायण व गीता पढ़ाना आवश्यक कर देना चाहिये। क्या ये संस्कार देना सरकार का काम है ? क्या परिवार नामक संस्था इतनी कमजोर हो गई है ? क्या यह परिवार का कर्तव्य नहीं है फिर स्वरूपानंद को सोचना चाहिये कि क्या यह धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में संभव है। फिर क्यों नहीं पैगम्बर मोहम्मद, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, दशमेश गुरू, गुरू गोविन्द सिंह और जीसस क्राइस्ट के बारे में भी स्कूली बच्चों को शिक्षा दी जावे। स्वरूपानंद का हर वक्तव्य भगवा कट्टरवाद थोपने का षडयंत्र लगता है।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पेश्तर रात शाम जिन्दा है
मैं के कारण ही जाम जिन्दा है
बदन तो खाक में मिल जाता है
जो किया उससे नाम जिन्दा है
अकेला आफताब क्या करता
धरती छूने से धाम जिन्दा है
चलन ही जिन्दगी है पैसे की
पैसा जिन्दा है दाम जिन्दा है
कर्ज अदायी में क्या सलामी है
प्यार में ही सलाम जिन्दा है
यू हजारो में आम होते है
खास हैं क्योंकि आम जिन्दा है
वीरानी उजड़ा हुआ मैदा है
जिन्दगी से मकान जिन्दा है
कैसे कैसे गुजर गये यारो
एसे एसे तमाम जिन्दा है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

याद गहराई में उतरती है
एक तस्वीर सी उभरती है
है अल्हड उस शमा की लौ देखो
मगर परवाने से भी डरती है
शान्त रहती है बहुत गुमने पर
उसको ढँूढू तो वह बिगड़ती है
भीड में गुमने की ललक लेकर
गजल मेरी भी बहुत लड़ती है
पकड़ सकता हँू मैं सितारो को
मेरे पैरो के तले धरती है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक अरसा गया मनाने में
जाम को हवा से लगाने में
दोस्तो मोमिनों मैं कदा ही जन्नत है

हूर है शहद है पैमाने में
बदन मैं खाना नजर पैमाना
साकी, मैखाना है मैं खाने में
धू जो साकी ने लिया है उसको
लगा है जाम डगमगाने में
नशा है ध्यान फकीरी मुक्ति
है अनहद नाद इस ठिकाने में
घर को मैं खाना बना ले भाई
ले खुशी पीने और पिलाने में
यहां जन्नत भी जाम में डूबी
ये मजा कहां इस जमानें में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तुम तो माहिर हो घर जलाने में
उससे त्यौहार फिर मनानें में
जिन्दगी एक निकल जाती है
ईंट पर ईंट एक जमाने में
एक प्यारा सा गोद में बच्चा
प्यार छुपता नहीं छुपाने में
मजा खेलो का उन्हें आता है

भाव को उठाने गिराने में
गजल गाने से निखर जाती है
गजल हीरे का नग तराने में

स्वस्थ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब आप अपने निकट रहते हैं या अपने में रहते हैं तब स्वस्थ रहते है यानि अपने में स्थित। यानि आप ही निवास स्थान है और आप ही उसमें निवास करते है। वह एक अर्निवचनीय स्थिति होती है। वहां परम शांति रहती है। आप ही आपको महसूस करते है। कोई दूसरा नहीं होता। यह अद्धैत भाव है। भक्त भी इसी स्थिति में रहते है। उनके देवता उनके अंदर रहते है और वे उनकी आराधना करते रहते है यानि वे ही आराध्य और वह ही आराधक।

उन स्थितियों में संसार उनके अंदर नहीं रहता। संसार अंदर आया और दो हो गये। संसार से प्रतिक्रिया स्वरूप संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। यह संघर्ष मृत्यु तक चलता है यानि स्वयं से झगड़ते हुये स्वयं की मृत्यु। आप जानतें है कि आप लड़ रहे है पर उससे निजात नहीं पा सकते।

एक तीसरी स्थिति भी शांति प्राप्त करने की हो सकती है। वह वैज्ञानिको और धनिको की होती हैं वे अपने कार्य में इतने निमग्र रहते है कि उद्देश्य प्राप्ति के लिये

बगैर पश्चाताप के कहीं तक जा सकते है। पर जब उन्हें लक्ष्य प्राप्त हो जाता है तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता होती है। यह प्रसन्नता उन्हें उनके लक्ष्य से दूर कर देती है और उनमें संघर्ष प्रारम्भ हो जाता हैं यदि वे आगे का लक्ष्य निर्धारित करते चलते है जो संबंध कम हो जाता है।

ध्यान से सोचा जाये तो जब तक लक्ष्य आपके अंदर समाहित नहीं होता तो आप उस विषय में सोचते तक नहीं। यानि लक्ष्य भी आपके अंदर और प्राप्त भी आपको ही करना है। उसकी प्राप्ति के प्रयत्न भी आपके अंदर। यानि आप लक्ष्य प्राप्ति के प्रयत्न और लक्ष्य तीनों आप ही हैं।। लक्ष्य प्राप्ति की असफलता में पश्चाताप भी आपके अंदर ही रहता है। इस तरह क्रिया और प्रतिक्रिया आपके अंदर ही चलती रहती है जब तक मृत्यु नहीं हो जाती। आप लक्ष्य बदलते रहते है प्रसन्नता और पश्चाताप बदलते रहते है और ये सब आपके अंदर ही होते रहते हैं

जब लक्ष्य या इच्छित वस्तु या भोग प्राप्त नहीं होते तो क्रोध उत्पन्न होता है। उस क्रोध को महसूस करना है आप को ही। जब उस संवेदक से बहत दूर हो जाते है तब भी उसकी स्मृति और और उसकी प्रतिक्रियाऐं रहते हैं। ये सारी स्थितियां आपके अंदर ही रहती हैं पर आपकी स्वस्थिति से बहुत दूर रहती है यानि आपके अलावा सारा संसार आप से दूर रहता है। वह आपका हिस्सा नहीं रहता है पर आपके अंदर ही रहता है। अपने अंदर पर अपने से दूर इस संसार पर विचय पाने के लिये आप स्वयं से संघर्ष करते रहते है पर स्वयं पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते। हां उस स्मृति को विस्मृत जरूर कर सकते है।

जब आप अकेले होते है तब भी काम आपके अंदर जरूर रहता है। वह आपको आपकी स्वस्थ स्थिति से खींचता रहता हैं एवं संसार का निर्माण करता रहता है। आपको मालूम नहीे रहता कि कब आप आपके अंदर स्थित इस दूरी में गिर जाते है फिर आपके अंदर इससे गिरने और ऊपर उठने का संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। यह संघर्ष आमरण चलता रहता है। इस दर्दनाक संघर्ष से निजात पाने के लिये प्रबंधक प्रबंधन में धनिक धनोपार्जन में या वैज्ञानिक खोजो में लग जाते है। यही उनके लिये काम वासना हो जाती हैं। मगर उपलब्धि के बाद संघर्ष फिर प्रारम्भ हो जाता है जब तक वे नया लक्ष्य निर्धारित करके उसमें नहीं लग जाते। संवेग यथा काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ईष्र्या आदि हालांकि हमारे अंदर ही घटित होते रहते है पर हम उनमें नहीं रहते इसीलिये हम उन्हें महसूस करते है। हम केवल उसी का अनुभव करते है जो हमसें अलग होती है। जैसे दृश्य, वे हमसे दूर रहते है इसीलिये हम उन्हें देख पाते है। हम संवेगो को इसीलिये महसूस कर पाते है क्योंकि हम संवेग स्वयं नहीं होते।

एक और संवेग हम महसूस करते है जो उपरोक्त षड़रिपुओं से अलग होता है मगर वर्णित नहीं है वह है घबराहट। यह चूँकि प्रतिक्रिया स्वरूप होती है अतः इसे महसूस किया जा सकता है। यह अनुभव बड़ा त्रासदायी होता है। इसके कई सोपान होते है। इस जाल पर यदि विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करते है तो इसमें और उलझते जाते है। इस संघर्ष का कोई अन्त नहीं मिलता। अतः बेहतर है कि इससे अलग हो जाये। इसे भूल जाये। मन न लगाये। अमनी हो जायें। अमनी होने के कई तरीके है। व्यायाम एक तरीका है। इसके अंदर के रस स्त्रावित हो जाते है और शरीर थक जाता है यह जो शिथिल होने का उदाहरण है यही निर्वाण है। खेल इसी श्रेणी में रखे जाते है। कलाओं में निमग्र होना दूसरा साधन है पर इसके लिये पहले साधना करके कला का स्वाद उत्पन्न करना पड़ता है तभी उसें डूब पाते है।

प्राणायाम तीसरा अनुभव है। इसमें ध्यान सांसो पर केन्द्रित करना होता है। यानि साँस जब अंदर लेते है और जब बाहर निकालते है तब शांत मन से उन पर ध्यान केन्द्रित करना चैथा साधन मानते है जब कुछ महसूस नहीें किया जाता या मात्र स्वयं को महसूस किया जाता है। पांचवा साधन आराध्य को निरन्तर जपते रहना है। यह सबसे सरल साधन है। यानि आवश्यक नहीं कि किन्ही देवता का ही नाम लिया जावे। किसी वस्तु का किसी क्रिया या नाम भी लिया जा सकता है। जैसे ओम् आदि। उत्कृट प्रेम और भक्ति इसी श्रेणी में रखना चाहिये।

अनहद नाद पर ध्यान केन्द्रित करना छठवां साधन होता है। सुनसान स्थान में आप एक आवाज निरंतर सुनते रहते है जो आपके साथ ही चलती है। उस पर ध्यान केन्द्रित करना, उसे निरंतर सुनने का अभ्यास करना होता है। किसी समस्या के हल पर विचार करते रहना सातवां साधन हो सकता है। विचार करना और संवेग अलग अलग वस्तुयें है। संवेग मन की शांति भंग करते है पर विचार ध्यान केन्द्रित करते है। नींद की दवाइयां खाना आठवां साधन है। पर इस खतरनाक साधन की यह लेखक अनुशंसा नहीं करता। लेखक मात्र स्मृतियों की अनुशंसा करता है। यह विस्मृति का साधन है। जो नीेचे गिराता है। लेखक मात्र ऊपर वाले साधनों की अनुशंसा करता है।

दुनिया से ही विरक्त हो जाना नवां स्थान है। इसे भी अभ्यास से ही प्राप्त किया जाता है। पागलपन और विरक्ति में फर्क है। विरक्ति चेतना पूर्वक होती है पर पागलपन एक निश्चेतना है। स्वाध्याय दसवां साधन है। यह स्वाध्याय कष्ट साध्य न होकर एक कला की तरह होना चाहिये। स्वाध्याय सुरूचि पूर्ण विषयों का होना चाहिये जिसमें आप निमग्र हो सके। विभिन्न प्रकार के नाटक करना बारहवां प्रकार है। शांत झील या नदी के किनारे बैठना तेरहवां प्रकार है।

इस तरह चेतना पूर्वक स्वयं में स्थित होने के अनन्त साधन हो सकते है। एक आदत डालना पड़ती है अपने में स्थित होने की। इन सभी स्थितियों में जाने के लिये परम श्रद्धा अत्यन्त आवश्यक है परंतु ध्यान रहे कि एक सर्वव्यापी चेतना में हम सब स्पन्दन करते रहते है। वहीं चेतना विभक्त होकर प्राणी विशेष हो जाती है। हमारा शरीर निष्क्रिय होता है उसे अहं सक्रिय बनाता है। सारी वासनायें उनका महसूस किया जाना शरीर के बाहर के शरीर की कल्पना में होता हैं उसी में घटित होता है। शरीर तो मशीन की भांति चलाया जाता है। हमारा एक जब अनन्त में मिलता है तब हम उस कल्पना के संसार से मुक्त हो जाते है। जहां असीम शांति और आनन्द है। यानि आप उसी में रहते है आपका अस्तित्व बनाये हुये।

धर्म संकट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिनांक 14.07.14 को एक टी.व्ही. के साक्षातकार में स्वरूपानंद ने कहा कि जब शिरडी के साई मंदिर में इतना धन है तो उन्हें और क्यों पैसा चढ़ाया जाये। इस तरह के व्यक्तव्य कोई पांचवी फैल आदमी के मंुह में उच्छे लगते है स्वरूपानंद के मंुह से अच्छे नहीं लगते है। उपराक्त उक्ति देश के अन्य मंदिरों पर भी लागू होती है। लेकिन वहां का संदर्भ स्वरूपानंद ने नहीं दिया जो प्राकृतिक न्याय के विपरीत है। क्यों केवल शिरडी के साइबाबा के मंदिर के विरूद्ध यह विष वमन कर रहें है। यह मन की राजसी प्रवृति को दर्शाता है और यदि वे लगातार मात्र शिरडी के साईबाब के विरूद्ध ही विष वमन करते है ? तो यह एक तामसी वृति है जो उन लोगो को शोभा नहीं देती जिनसे सात्विक वृति की अपेक्षा की जाती है। यह वक्तव्य वैसा ही है कि धनिको यथा अम्बानी टाटा विडलाज, अजीम प्रेमजी इत्यादि के पास अत्याधिक धन है तो वे आगे धनोपार्जन क्यों करते है ? क्यों वे राष्ट्र की प्रगति में सहयोग देते है ?

दान तो स्वरूपानंद के पास भी बहुत आता है, पर वे प्रसन्न चित से स्वीकार कर लेते है। स्वरूपानंद स्वयं को सनातन धर्म का रक्षक बतलाते है। इन्हीं सनातन धर्मियों ने “अल्लोपनिषद” नाम का भी एक उपनिषद लिखा है। यदि विश्वास न हो तो गीता प्रेस गोरखपुर के पुराने उपनिषदों विशेषांक को देख लो। स्वरूपानंद इतिहास में अनर्गल प्रलापों के लिये याद किये जायेंगे।

भोपाल में स्वरूपानंद एक संवाददाता सम्मेलन में भाषण दे रहे थे। अधिकतर पत्रकार उन्हें महामहिम, महामना, महादरणीय कहकर वहीं घिसी पिटी बातें कर रहे थे जो स्वरूपानंद के मतो को समर्थन करती है। एक जागरूक पत्रकार संजीव पत्रकार ने जब उनसे पूछा कि शंकराचार्य जी आप
शिरडी के साईबाबा का मुददा उठा कर अनर्थ नहीं कर रहे है। हिन्दुओं को विभाजन के लिये प्रेरित नहीं कर रहे है ? तब शंकराचार्य ने उस नौजवान पत्रकार से कहा "तू मूर्ख है। तू बैठ जा"। यह तो आदि गुरू शंकराचार्य की तर्क से जीतने की शैली के बिल्कुल विरूद्ध है। इस तरह कि भाषा यदि स्वरूपानंद बोलते है तो शंकराचार्य के पद के योग्य नहीं है। यह बौखलाहट यह दर्शाती है कि वे ही एक मूर्खतापूर्ण कदम उठा कर गलती कर चुके हैं। उनके इस उत्तर में कहां आदि गुरू शंकराचार्य जैसी तार्किक पहुँच धैर्य या विद्धता दिखती है ? ऐसा उत्तर तो कोई लठैत ही देता है।

पुनः दिनांक 24.07.14 को दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुआ कि स्वरूपानंद ने शिरडी प्रबंधक संस्थान को दिनांक 24/25 अगस्त को छत्तीसगढ़ में होने वाली धर्म सभा में वाद विवाद के लिये आमंत्रित किया हैं। इसकी आवश्यकता स्वरूपानंद को है शिरडी के साई बाबा ट्रस्ट को नहीं। जो व्यक्ति एक पत्रकार को मूर्ख कह सकता है उसका खैय्या आक्रामक ही होगा। इस धर्मसभा शिरडी संस्थान को जर्बदस्ती घसीटा जा रहा है। इस विषय में निम्न बिन्दु विचारधीन है

(1) ऐसे निरर्थक विषय की आवश्यकता ?

(2) इस निरर्थक नाटक की आवश्यकता किसे है ?

(3) जह वादी और जज एक तरफ हो वहां न्याय की क्या आवश्कता है।

(4) इस धर्मसभा में या स्वरूपानंद के द्वारा उनकी कंुठाओं में सनातन धर्म को क्यों घसीटा जा रहा है।

(5) अपनी कंुठाओं को सनातन धर्म पर थोप कर हिन्दु धर्म के विभाजन का षडयंत्र कौन रच रहा है।

(6) आदि शंकराचार्य ने धर्म परिवर्तित हिन्दुओं को हिन्दु धर्म में लाने के लिये वाद विवाद किया था। साईबाबा के हिन्दु भक्तों ने धर्म परिवर्तन नहीं किया है ?

उक्त धर्म संसद में साई ट्रस्ट को बुलाने की जिम्मेदारी दंडी स्वामी अविमुक्त स्वरूपानंद सरस्वती को दी दी गई है। सनातन धर्म की ओर से श्रंगेरी शंकराचार्य व पुरी शंकराचार्य के प्रतिनिधि, निवकाचार्य, महाराज, रामानंद, राम नरेशाचार्य महाराज मध्य संप्रदाचार्य से विश्वेशतीर्थ महाराज रामानुजाचार्य महाराज एवं 13 अखाड़ो के प्रमुख मौजूद रहेंगे।

उपराक्त बहस बड़ी असमान रहेगी। जहां स्वरूपानंद के साथ लगभग 6 हजार योद्धा रहेंगे वहीं दूसरी और साई ट्रस्ट के चार या पांच व्यक्ति रहेंगे। स्वरूपानंद के साथ 6 हजार सनातन धर्म के विद्धान रहेंगें। साई ट्रस्ट में कुछ प्रबंधक रहेंगे। उन प्रबंधको से सनातन धर्म को गहराईयों पर बहस करने के लिये कहा जायेगा। हां यदि सनातन धर्म के विद्धानों से प्रबंधन के बारे में बहस करने को कहा जाये जो बात दूसरी है। मेरा तो ख्याल है कि शिरडी के साई बाबा ट्रस्ट को स्वरूपानंद के द्वारा बनाये गये इस चक्रव्यूह में नहीं फंसना चाहिये।

आखिर इस बहस में साई ट्रस्ट को नीचा दिखा कर स्वरूपानंद क्या सिद्ध करना चाह रहे हैं इस तमाशे से शंकराचार्य स्वयं कन्नी काट ली हैं। वे स्वयं उपस्थित न होकर उनके प्रतिनिधियों को भेज रहे है। स्वरूपानंद का प्रभाव क्षेत्र भारत का मध्यक्षेत्र है अतः वहीं के अखाड़े के साधु लोग आ रहे है। यह एक धर्मयुद्ध न होकर मानसिक हिंसा का तमाशा भर हो कर रह जायेगा। हिन्दु लोग तो कई महापुरूषो को मानते है स्वयं ठनठन पाल गीता में लिखा है कि स्वरूपानंद ठन ठन पाल बाबा उनसे मिले थे। जबलपुर में ही कई हिन्दु महापुरूषो की शरण में जाते है। पर क्या स्वरूपानंद ने उन पर आपत्ति उठाई। हजारो हिन्दु लोग तो अजमेर शरीफ पर जियारत करने और हरमिन्दर साहब पर मत्था टेकने जाते है तो क्या स्वरूपानंद वहां की प्रबंधन समिति को सनातन धर्म पर बहस करने धर्म संसद में बुलायेंगे। दरअसल शिरडी साई मंदिर की बंधन समिति को सनातन धर्म पर बहस करने के लिये बुलाने का उनका विचार ही उत्तेजक (प्रोवोकेटिव) है।

स्वरूपानंद पिछले कुछ महिनों से लगातार साईबाबा पर विषवमन कर रहे है। अतः उनका धर्म संसद में वहां के प्रबंधन संस्थान को घसीटना एक सोची समझी साजिश है जिसका निर्णय धर्मसंसद के पहले ही लिखा जा चुका है। आदि गुरू ने सारे उपनिषद वेद गीता एवं कई ग्रंथो पर भाव्य लिखे है मुझे नहीं ज्ञात कि स्वरूपानंद ने किसी संस्कृत के ग्रंथ पर भाव्य लिखे है या आदि गुरू द्वारा लिखित सभी पुस्तको का अध्ययन किया है।

बादल बिजली और धरती

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेघ गरजते वहां गगन पर।
बंूदे छम छम धरती पर।।
बिजली दांत दिखा कर हंसती।
बादल गरजे बिजली पर।।

दुखी रात में आंसू जैसे।
बंूद गिरती है टप टप ।।
या समूह नर्तन रत निशि दिन ।
धरती पर और जलनिधि पर।।

बादल पड़ते बैठ गगन पर।
वैदिक मंत्रो के स्वाहा।।
बंूदो की हवि छोड़ रहे है।
वे धरती की वेदी पर।।

पुलकित रोम हुये धरती के।
वर्षा में हरियाली से।।
बादल हंसता बिजली जैसा ।
धरती की हरियाली पर ।।

चरवाहा जैसे ले जाता।
हांक हांक कर गायों को।।
हवा उड़ा ले जाती आगे।
हुक्म चला कर बदली पर ।।

बादल बंूदें लेकर आते।
तपजी धरती को देने।।
मुट्ठी मुट्ठी बंूद गिराते।
वे इस रूठी अवनी पर।।

रूप

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

स्थूल शरीर बाह्नय रूप से दो कार्य ही कर सकता है ग्रहण एवं उत्सर्जन। वह वायु, खाना और पानी इत्यादि को ग्रहण करता है और वायु, मूल, मूत्र, वीर्य, पसीना, केश इत्यादि का उत्सर्जन करता रहता है। श्वसन, पाचन, मूत्र निर्माण उसकी आन्तरिक क्रियायें हैं इनमें ग्रहण को तो नियंत्रित किया जा सकता है उत्सर्जन को नहीं। जो ग्रहण किया है वह तो निकालना ही पड़ेगा। उसे रख कर नहीं रख सकते। स्थूल शरीर संघात कहलाता है। स्थूल शरीर को नियंत्रित किया जाता है इसमें 5 ज्ञानेन्द्रयां और पार्च कर्मेन्द्रिया रहती है। ज्ञानेन्द्रिया है त्वचा घ्राणोन्द्रियां आॅख कांन और रसना और कर्मेन्द्रिया है वाणी, हाथ, पैर, जनन्द्रिया एवं उपस्थ। इन इन्द्रियों का नियंत्रण मन के द्वारा किया जाता है। मन को भी एक इन्द्रिय कहा है। जननेन्द्रिय के दो कार्य पुरूष में हो गये मूत्र उत्सर्जन एवं वीर्य उत्सर्जन। मन स्वयं बुद्धि के लिये कार्य करता है।

बुद्धि रसास्वादन स्वयं नहीं करती है। वह मात्र चखती है। मन उसके लिये स्वाद प्रस्तुत करता है। काम एक अलग स्वाद है जो ग्यारह इन्द्रियों के साथ वर्णित नहीं हैं कर्मेन्द्रियां मात्र कार्य करती हैं। ये ज्ञानेन्द्रियों के लिये कार्य करती है। बुद्धि इन्द्रिय रहित है पर रसस्वादन करती है। बुद्धि एक नियंत्रित माध्यम है। वह किसी अन्य के लिये कार्य करती हैं वह आत्मा के लिये कार्य करती है। आत्मा अहंकार के माध्ण्यम से बुद्धि को नियंत्रित करता है। पर बुद्धि अहंकार की गलतियां निकाल सकती है। आत्मा से सूक्ष्म इन्द्रियों तक अव्यक्त है स्थ्ूल इन्द्रियां व्यक्त है। कहा जा सकता है कि आत्मा से सूक्ष्म इन्द्रियों तक एक ही तत्व स्वयं को विभक्त किये हुए है।

सात्विक बुद्धि इन सारे तत्वों को सदा अविभक्त देखती है। तामयी बुद्धि मात्र काम को ही अस्तित्व मानती है उसी में डूबी रहती है उसी के लिये कार्य करती है एवं राजसी बुद्धि, मतलब होता है तब पूजा करने लगती है मतलब पर युद्ध करती है मतलब पर दोस्ती करती है अन्यथा काम में डूबी रहती हैं। तो आत्मा से लेकर सूक्ष्म इन्द्रियों तक एक ग्रन्थि हुई। इसमें आत्मा भगवान की परा प्रकृति हुई और अहंकार, बुद्धि, मन और इन्द्रियां अपरा अव्यक्त हुई । पृथ्वी अग्नि, जल, वायु और अन्तरिक्ष स्थूल अपरा प्रकृति हुई। तो पांच स्थूल तत्व ग्यारह इन्द्रियां पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय और बुद्धि और अहंकार ये भगवान की अपरा प्रकृति और जीव भगवान की परा प्रकृति

हुई। इन्हीं से ये संसार बना हैं। इन्हें परमात्मा नियंत्रित करता है अतः जीव सान्त, आदि, अन्त युक्त अज्ञानी है जबकि परमात्मा अनादि अनन्त और सर्वत्र है।

परमात्मा तक बलात् नहीं पहंुच सकते। वह अपने आपको उन पर व्यक्त कर देता हैं जिन पर वह कृपा करता है। मूल प्रकृति से लेकर इन्द्रियों तक द्रष्य हैं। उन्हें देखा जा सकता है। विषयों से लेकर जो मूल अव्यक्त है उन्हें प्रयत्न करने पर ही देखा जा सकता है। वह स्वयं से ही स्वयं को देखना होता है। उस दृष्टा की दृष्टि हासिल करने के लिये ब्रम्हचर्य, सत्य, अक्रोध, अलोभ अहंकार के रास्ते पर चलना होता है मगर इन्हें देखने का मतलब परमात्मा को देखना नहीं हो। वह तो कृपा कर स्वयं को व्यक्त करता है।

एक श्लोक बार बार उद्धत किया जाता है असतो मा सद गमय। इस सत् और सत्य भाषण में अंतर है। सत् वह जिसका अस्तित्व है। असत् वह जो अस्तित्व रहित है। असत् वह जिसका नाश हो जाता है। इस तरह शरीर इन्द्रियां उनके विषय स्थूल तत्व, मन, बुद्धि और अहंकार, सर्वक्षणिक है अतः असत् है। असत् का जन्म होता है अत वह नाशवान भी है। सत् वह है जो अनादि है अपरितर्वतनशील है अनन्त है भासमान है। क्योंकि इसी श्लोक में है तमसो मा ज्योतिगमय मृत्योर्मा अमृलम गमय। तो वह सत, अनादि अपरिवर्तनशील ही हमारा ध्येय होना चाहिये। हम असत् वहीं है शरीर और संसार में आवृत हैं।

बरसात के साथ साथ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बरसात एक खुशनुमा मौसम है। पानी गिरने के साथ साथ आद्रता बढ़ जाती हैं हरियाली बढ़ जाती है। पानी झमा झम गिरता है। धरती की प्रजनन क्षमता के साथ साथ कीड़े मकोड़े बढ़ जाते है। बादल की गरज के साथ ही स्थान स्थान पर बिजली चमक के साथ गिरने लगती है। भूस्खलन होने लगते है नदियों में बाढ़ आ जाती है। घर में सीड बढ़ जाती है। इतनी सारी चीजे बढ़ने के साथ ही तापक्रम अचानक कम हो जाता है। आर्द्रता बढ़ने के साथ ही त्वचा का संक्रमण बढ़ जाता है। इंटर, टाइगो, फोड़े, फंुसी, खाज खुजली इत्यादि बढ़ जाते है। पानी गिरने के साथ ही पानी का रूकाब गड्डो नालियों और तालाब होने लगता है जिससे मक्खी मच्छर और जल जन्य बीमारियां बढ़ जाती है। मक्खियां और दूषित पानी, कै, दस्त, डीसेन्ट्री, टायफायड, पैरा

टायफायड, पीलिया जैसे रोगो को बढ़ा देते है। मच्छरो से मलेरिया, डेंगू, चिकिनगुनिया एनसेफेलाइसिस के प्रकरण अत्यधिक बढ़ जाते है। कीड़े मकोड़े बढ़ने से सर्पदंश के प्रकरण बढ़ जाते है। साथ साथ ही बिच्छु इत्यादि कीड़ो के काटने के प्रकरण बढ़ जाते है। बिजली के चमकने के साथ ही स्थान स्थान से बिजली गिरने से मनुष्यों और पशुओं के मरने के समाचार आने लगते है।

भूस्खलन से धरती एक दम या तो धसक जाती है या बह जाती है जिससे मार्ग बंद हो जाते है। एक दम कई लोगो की जानें चली जाती है खाने पीने की वस्तुओं की कमी हो जाती है। यह एक विडम्बना है कि शुद्ध पेय जल की अत्यधिक कमी हो जाती है। नदियों में अचानक बाढ़ के साथ ही आदमी बह जाते है आवागमन बंद हो जाता है वहीं अत्याधिक वर्षा एवं बाढ़ के कारण राहत सामग्री पहंुचाने में शासन को परेशानी होती है। घर में सीढ़ बढ़ने एवं तापक्रम कम होने से फेफड़ो का संक्रमण बढ़ जाता है। जैसे दमा, ब्रांकाइटिस न्यूमोनिया वायरल बुखार आदि।

जब इतनी सारी समस्यायें झमाझम बरसात लाती है तब उनकी रोकथाम आवयक है। त्वचा के संक्रमण की रोकथाम के लिये त्वचा यथा सम्भव सूखी रखना चाहिये विशेषकर पैरो के उंगलियों के बीच का हिस्सा और जांघो का ऊपरी हिस्सा फोडे फंुसी होने पर चिकित्सक को दिखा कर उचित एन्टीबायोटिक लेना चाहिये। गढढ़ो नालियों इत्यादि में नमी का रूकाव भर देना चाहिये। मच्छरो को भगाने के लिये धुंआ मच्छरदानी या मच्छर भगाने के द्रवो का प्रयोग किया जा सकता है। मलेरिया, डेंगू होने पर तत्काल चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

पानी शुद्ध ही पीना चाहिये। पानी को शुद्ध करने के लिये तरह तरह के उपकरण बाजार में मिलते है या फिर पानी उबाल कर पी सकते है। पानी क्लोरीन से भी शुद्ध किया जा सकता है।

सोडियम हाइपोक्लोराइड की दो बंूदे दस लिटर पानी में डाली जा सकती है। पानी के स्त्रोतो के आसपास सफाई रखना आवश्यक है अन्यथा कुओं, बोरवेल का पानी संक्रमित हो कर बीमारियां फैला सकता है। आसपास ब्लीचिंग पाउडर भी डाल सकते है। कुयें इत्यादि का पानी भी रासायनिकों से शुद्ध किया जा सकता है। सर्प दंश से बचने के लिये खेतो में गम बूट पहन कर ही जाये। घर में पर्याप्त प्रकाश रहना चाहिये। सर्प घर में दिखने पर उन्हें मारना नहीं चाहिये या तो उन्हें पकड़वा देना चाहिये या तीखे गंध युक्त पदार्थ कमरे में रखना चाहिये सर्प कुछ देर बाद स्वयं ही भाग जाते है। दो बंूद पेट्रोल भी कमरे में डालने पर सर्प भाग जाते है। अंधेरो में हाथ नहीं डालना चाहिये। सर्प दंश होने पर दंश के ऊपर एक हड्डी वाले अंग जैसे जांघ और बांह पर "टूर्नीकेट" बांध देना चाहिये। मरीज को सोने नहीं देना चाहिये। इसके लिये चाय का प्रयोग किया

जा सकता है। झाड फूंक में समय नहीं गवाना चाहिये मरीज को तत्काल चिकित्सालय ले जाना चाहिये जहां "एंटी स्नेक" बेनम की व्यवस्था होती है।

आकाशीय तड़ित से बचने के लिये यदि आप खेत इत्यादि मैदान में खड़े हो तो ऊँचे पेड़ के नीचे न खड़े। हो गीला पानी बिजली का सुचालक होता है जहां बार बार बिजली का इतिहास हो उस स्थान को बरकाना चाहिये। बाढ़ एवं भूस्खलन से जान से बचाव के लिये पहले से ही सुरक्षित स्थानों पर चले जायें। हरेक को यदि सम्भव है तो आपदा प्रबंधन आना चाहिये। पहंुच विहीन क्षेत्रों में अनाज एवं सूखी सब्जी का पहले से ही प्रबंध करके रखे ऐसे मौको पर शासन को सहयोग दें।

विशेषकर बच्चों और बूढ़ो को ठंड एवं आर्द्रता से बचना चाहिये उन्हें ब्रान्काइटिस एवं निमोनिया जल्दी हो सकता है। इस समय एवं ठंड के मौसमों में हार्ट अटैक के प्रकरण भी ज्यादा देखने को आते है। कुछ वृद्ध पुरूषो को एकदम पेशाब भी रूक जाती है यह बढ़ी हुई प्रोस्टेट के कारण होता है। इन्हें शीघ्र चिकित्सालय ले जाना चाहिये। साथ ही साथ पास की एम्बुलेंस का नंबर याद रखना चाहिये। यह सावधानी प्रसवमान महिलाओं को शीघ्र चिकित्सालय पहुंचाने में सहायता करेगी।

इस समय खान पान पर विशेष ध्यान दें। बाजार के फलों को ताजे ही सेवन करें। इस समय फलों और हरी सब्जियों एवं भाजियों में कीड़े जल्दी पड़ जाते है। उन्हें अच्छी तरह से धोकर ही उपयोग में लायें। खाना अच्छी तरह से पकाया हुआ और ताजा ही लें। बासा खाना न खाया जाये। तला हुआ खाना जल्दी नहीं पचता अतः बरकाया जाये। तो उक्त सावधानियां रख कर ही इस सुनहरे मौसम का आनंद उठायें।

गुर्बत की बाढ़

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिथड़े बदन पर देख के कसते है फब्तियाँ।
शाही लिबास तुम से उतारोगे कब मियां।।
सोया नहीं था भूख से वह वक्त अब गया।
आने लगी है मौत की धीरे से झपकियां।।
बच्चो की भूख लोरियो से बुझाता हूँ मैं।
खाने की जगह हौले से देता हूँ थपकियाँ।।
गुर्बत की बाढ़ आई घर में फिर गई नहीं।
भंवरे है खाली पेट की, कुनबा है कश्तियाँ।।
उनकी कबूल इबादत को कर लिया गया।
आता है पैसा रब और गरीबों के दरम्यां।।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सच्चे प्यार को तुम आज मत ठूंडो जमाने में
बिखर जायेगा नाजुक दिल किसी को आजमाने में
बुत है संगमरमर के तो चेहरा मुस्कुराता है
फंसायेगे मजा लेंगे, तुम्हारे फड़फड़ाने में
तपती दोपहर है एक शिकारी जिंदगी पंछी
लगी रहती है शामो शहर को भी वह चबाने में
बाहर नाचती शबनम यहां पर कैद में मैं हूँ
हो लेता हूँ थोड़ा बहुत खुश उनके तराने में
जागेगी कली एक फूल वन कर सुबह आने पर
कली में फूल सोया है लगा हे कुनमुनाने में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिल है उजड़ा हुआ शहर जैसे
एक वीराने में हो डगर जैसे
उदास हँू मैं कामयाबी पर
हो रोशन मका पे खंडहर जैसे
खुशी को घेरता है गम ऐसे
धुयें से घिरी हो सहर जैसे
खुशी गहरे तलाब में कुकड
फेंकने पर एक उठी लहर जैसे
नजर तो ठहर गई है उस पर
बना हो मोम का शहर जैसे
मां के गीतो को सुन के लगता है
दर्द की बहती हो नहर जैसे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिल है उजड़ा हुआ शहर जैसे
एक वीराने में हो डगर जैसे
उदास हँू मैं कामयाबी पर
हो रोशन मका पे खंडहर जैसे
खुशी को घेरता है गम ऐसे
धुयें से घिरी हो सहर जैसे
खुशी गहरे तलाब में कुकड
फेंकने पर एक उठी लहर जैसे
नजर तो ठहर गई है उस पर
बना हो मोम का शहर जैसे
मां के गीतो को सुन के लगता है
दर्द की बहती हो नहर जैसे

गुरू, गाय और गंगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गुरू नदी है ज्ञान की।
ब्रह्नन ज्ञान के दान की।।
केवल समित्याणि जाना है,
गुरू का यशोगान गाना है।।
चिदानन्द के पान की,
गुरू गंगा है ज्ञान की।।
गंगा चिदानन्द अमृत की,
गायें स्त्रोत दुग्ध और धृत की।।
ईधन और सम्मान की,
गुरू गंगा है ज्ञान की।।
गंगा विष्णु का चरणोदक,
बहता एक स्वर्ग का मोदक।।
शंकर के यश गान की,
गुरू गंगा हैं ज्ञान की।।
गंगा अमृत का बहता रस,
भागीरथ प्रयत्न का वह यश

संस्कृति के पहचान की,
गुरू गंगा है ज्ञान की।।
गुरू गंगा और गाय हमारे
जन्म जरा क्रम तोड़े सारे
पापो के परित्राण की
गुरू गंगा हैं ज्ञान की।।
योग आसन के भेद सिखायें
योग आसन को नहीं बनायें
गुरू ऊंचाई बितान की
गुरू गंगा है ज्ञान की
नाले शव हम नहीं बहायें
कानूनन अपराध बनायें
गंगा के अभियान की,
गुरू गंगा है ज्ञान की।।

गुरू, गाय और गंगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गुरू, ज्ञान गंगा का उद्‌गम है। और शिवय उस ज्ञान गंगा में डूब कर स्नान करते हैं और आचमन करते हैं। ज्ञान की गंगा में डुबकी लगा कर उनका पुनर्जन्म हो जाता है। गुरू ज्ञान की कामधेनु है। वह शिवय की हर मनोकामना पूर्ण करने का बीज है। यदि शिवय एक उपजाऊ भूमि बन गया तो उसकी मनोकामना पल्लवित होकर मन वांछित फल देती है। हर धेनु एक कामधेनु है उसका मूत्र गंगा जल में समान रोगहर है। हर गाय में तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। गाय से स्वर्ग, पौष्टिक दूध, गोबर से खाद, ईंधन प्रकाश, गौ मूत्र से औषधि तो प्राप्त होते ही है।

गंगा भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न होकर भगवान शंकर को शिरोधार्य हुई। फिर भगीरथ की तपस्या उन्हें पृथ्वी पर लाई। गंगा आई तो भगीरथ के पूर्वजो को पुर्नजीवित करने पर हम सबको भी जमीन दान देती है। गंगा पाप हर है। हिमालय से उद्‌गम कर श्रिप्र गति से बहती हुई कई नदियों को समाहित कर उन्हें भी पार हर बनाती है। गंगा मार्ग में कई प्रयाग उत्पन्न करती है जैसे रूद्र प्रयाग, विष्णु प्रयाग और

प्रयागराज आदि। वह हमारी संस्कृति एवं इतिहास का प्रवाह है। महाभारत की जन्म दात्री है। गंगा विष्णु की साक्षात चरणोदक है और सभी कामनायें पूर्ण करती है। जनक ने गायों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया था। इस तरह गुरू, गाय और गंगा एक परमात्मा के तीन प्रवाहमान गुण रूप है। इनमें से किसी की भी भक्ति ब्रह्नम पद प्राप्त करा देती है फिर तीनो की एक साथ भक्ति का तो कहना ही क्या।

लगभग सम्पूर्ण ब्रहदारण्यक उपनिषद गुरू और गाय की प्रवाहनमान गंगा है। जनक याज्ञवल्कल से ज्ञान प्राप्त करने के लिये स्वर्ण मुद्रा जटित श्रंग युक्त गायें ज्ञान के निमित्त दान करते थे। जिन गायों का दान किया जाता है, व्यक्ति उन की पूछ पकड़ कर ही बैतरणी पार कर लेता है।

भगवान कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय में गायों में कामधेनु गुरूओं में वृहस्पति एवं नदियों में गंगा को स्वयं की विभूति बतलाया है, वहीं मंत्रो में गायत्री को स्वयं की विभूति बतलाया है। इस तरह गुरू गायत्री गाय और गंगा संस्कृति के पवित्र घटक है।

मात्र गायों की सेवा ने सत्यकाम जावाल को ब्रह्नम वेत्ता बना दिया था। गुरू हरिद्रुमित गौतम ने चार सौ दुर्बल गायों को सत्यकाम जावाल को देते हुये कहा है कि साम्य इनके पीछे पीछे जाओ। तब सत्यकाम जावाल ने कहा है "इनके सहस्त्र हुये बिना मैं वापिस नही े आऊँगा। फिर कुछ दिन बीतने पर ऋषभ ने सत्यकाम से कहा "हे सत्यकाम अब हम सहस्त्र हो गये है हमें आचार्य कुल में पहुंचाओ। मैं तुम्हें ब्रह्नम का एक पाद बतलाता हँू। पूर्व दिशा एक कला पश्चिम दिशा एक कला उत्तर दिशा एक कला और दक्षिण दिशा एक कला ये चार कलायें मिल कर ब्रह्न का प्रकाशवान नाम का एक पाद होता है।

अग्नि तुम्हें आगे की कला बतायेगा। रात में अग्नि ने दूसरा पाद बतलाया "पृथ्वी, कला, अंतरिद्वा कला, स्वर्ग कला और समुद्र कला मिल कर ब्रह्नन की अनंत पद नामक एक कला होती है। अब हंस तुम्हें तीसरा पाद बतलायेगा। हंस ने बतलाया "अग्निकला, सूर्य, कला, चन्द्रकला और विद्युत कला ब्रह्नम ज्योतिवमान कला होती है। अब मदगु तुम्हें अगला पाद बतलायेगा। मदगु ने कहा "प्राण कला, चक्षु कली श्रीत्र कला और मन कला ब्रह्नन की आयतन वान कला होती है। इस तरह प्रकाशवान, अनंत, ज्योतिकला और आयतन कला युक्त सत्यकाम को गौतम ने देख कर तुम ब्रह्नन वेत्ता मालूम पड़ते हो।

अति श्रेष्ठ कनेपनिषद का जन्म ही गायों के दान को लेकर हुआ था। प्रेमल वाज श्रवस का लड़का नचिकेता था। जब पिता ने पानी पी चुकी, घास खा चुकी, दूध दे चुकी ढीली इन्द्रियों वाली (बूढ़ी, दुबली, पतली) गायों को यज्ञ के पश्चात दान में दिया तो नचिकेता ने पिता का भला चाहते हुये पूछा "कि" मुझे किसको दान करेंगे। तब गौतम

ने कहा कि “मैं तुम्हें मृत्यु को दान देता हँू।” इसके पश्चात यम नत्रिकेता संवाद प्रारम्भ हुआ जो कठोपनिषद के नाम से जाना जाता है।

आज हम भी भंगीलाल को पूजते है पर गिपथगा को दूषित करते हैं जो रघुवंश और महाभारत की जनक है। गोपाल, गोवधर्न या गोविन्द की भागवत श्रद्धा से सुनते है पर गायें उपेक्षित है। यथा दैवो तथा गुरू कहते है पर गुरू को महत्व नहीं देते । भूलिये कि भगवान राम को गुरू वशिष्ठ और विश्वामित्र ने बनाया था। भगवान कृष्ण को योग गायों और संदीपनी ने सिखया था।

ब्रह्नम ज्ञान वह ज्ञान है जिसको प्राप्त कर सब ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं। ब्रह्नन वेत्ता ही विरले हैं और मुमुक्षु तो हैं ही नहीं। गंगा में शव और नाले प्रवाहित कर हम गंगा मां का अपमान कर रहें है। गो माता भिखारियों की तरह यहां वहां कचरे में मंुह डालती रहती है। शासन गीता को पाठ्यक्रम में शामिल कर हमें संस्कृति सिखाने का बलात प्रयत्न कर रहा है। क्या परिवार नामक संस्था इतनी कमजोर हो गई है कि हम बच्चों को संस्कृति से परिचित करवाने में अक्षम हो गये है।

धर्म संसद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

स्वरूपानंद ने कहा है साइ बाबा के विरूद्ध उनका अभियान सनातन धर्म बचाने के बचाने के लिये है। सनातम धर्म नामक कोई धर्म नहीं है। भारतीय संविधान में या तो हिन्दु धर्म है या सिख, ईसाई या इस्लाम धर्म है। इस उद्देश्य के लिये कि साई बाबा की मूर्तियां सनातन धर्म के मंदिरों में नहीं रखी जानी चाहिये उन्होने धर्म संसद का आयोजन छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिले में दिनांक 24.8.2014 को किया। स्वरूपानंद ज्योतिष और द्वारिका पीठ के संयुक्त शंकराचार्च है। सनातम धर्म में अब सनातम धर्मियों को इतनी कमी आ गई है कि अब दो दो पीठों का भार एक ही शंकराचार्य को संभालना पड़ रहा है। धर्म संसद के केवल एक ही वर्ग के लोग प्रमुखतः थे। 13 अखाडे भी मध्यभारत श्रेत्र के ही थे। धर्म संस्था नामक पंजीकृत संस्था है या नहीं यह ज्ञात नहीं। चार व्यक्ति मिलकर अहं तुष्टि के लिये कोई भी संस्था बना सकते है।

साइमूर्ति बलात हटवाने का जो निर्णय धर्म संसद ने लिया है वह मुगल लोगो की याद दिला देता है मुगल को भी हमारे चार हाथ या दस हाथ के देवी देवताओं की मूर्तियां विचित्र लगी थी। हालांकि वे हमारे श्रद्धा की आधार थी पर मुगल लोगो ने उन्हें खंडित कर दिया था। मूर्ति पूजा हमारे धर्म का आधार बन चुकी थी। अतः साइ मूर्ति को मंदिरो से हटवाने का फतवा जारी कर स्वरूपानंद ने मूर्ति पूजको की आस्था पर प्रहार ही किया है।

साइबाबा की पूजा के खिलाफ जो तर्क दैनिक भास्कर के दिनांक 25 अगस्त 2014 की प्रति में छपे हैं उन्हें अक्षरशः निम्नानुसार उद्धत किये जो रहे है। सनातम परंपरा में पांच देवोः शिव, शक्ति गणेश, विष्णु सूर्य और चैबीस अवतारों की ही पूजा की जा सकती है। कलियुग में दो ही अवतारोंः बुद्ध बल्कि की ही चर्चा है। ये तीसरे साइ कहां से आये ?

साइचरित ही स्पष्ट करता है कि 1018 में उनकी मृत्यु हो गई थी। एक नश्वर शरीर की आत्मा कहां गई पता नहीं। उनकी पूजा कैसे संभव है। साई असत है अचेतन है अब चेतन है। वह गुरू भी नहीं। इसलिये उनकी पूजा भी संभव नहीं है। सनातन परंपरा वेदो और शास्त्रो से चलती है। पूजा हिंदु विधि से ही संभव है। साई हिन्दु या मुस्लिम दोनो होने की संकल्पना को स्वयं नकार देते है। हमारी आपत्ति साइ को सनातन धर्म से जोड़ने को लेकर है। इस धर्म संससद में सभी शंकरचार्यो व 13 अखाड़ो ने भाग लिया। साइ भक्तो को जो कि कुछ ही थे धक्के देकर स्टेज से उतार दिया गया। तात्पर्य यह है कि एक ही पक्ष के लोगो ने इस धर्म संसद में भाग लिया और निर्णय ले लिया गया। इसे फतवा भी कह सकते हैं।

जिन पांच देवोः चैबीस अवतारों का जिक्र किया गया है उनके अलावा कई देवी देवताओं की हिन्दू लोग श्रद्धा से पूजन करते है उन्हें एक सिरे से ही धर्म संसद ने

नकार दिया। इनमें से कुछ प्रमुख देवी देवताओ निम्नानुसार है: बजरंग बली शनिदेव, मां वैष्णों देवी चित्रगुप्त, विश्वकर्मा, सहस्त्र बाहु, स्कन्द, भैरो बाबा, इन्द्र, अयप्पा स्वामी, बलराम सुभद्रा (पुरी) लक्ष्मण सीता, सेन महाराज, बंजारी देवी, लोकपाल सरस्वती, नाग देवता, शेगांव के गजानन महाराज शनि महाराज, ठन ठन पाल बाबा (इनसे स्वरूपानंद भी मिलते थे) आदि अनेक देवता है। चारो वेद तो इन्द्र के यशोगान से भरे पड़े है। मगर उन्हें अपूज्य माना है। चैबीस अवतारों को स्पष्ट नहीं किया गया।

आज तो अमिताभ बच्चन, सचिन, मीनाकुमारी दक्षिण भारत के कई अभिनेता (रजनीकांत) नेताओं यथा इंदिरा गांधी, नरेन्द्र मोदी की भी मूर्तियां मंदिरों में रखाने लगी है। यदि स्वरूपानंद में हिम्मत है तो उन्हें भी समाज से विहितकृत कर दें। फिर धर्मसंसद में मात्र पांच देवताओं और भगवान विष्णु के अवतारों को ही पूज्य माना हैं। अब उन्होने शक्ति किन एक देवी को माना है वह स्पष्ट नहीं किया। क्योंकि उन एक के अलावा शक्ति के सारे रूप नकार दिये गये है। धर्म संसद हिन्दु समाज के मात्र एक वर्ग की ही संसद थी। शिरडी के साई मंदिर तो सभी जननायक जाते है। स्वरूपानंद के मत में वे सभी मूर्ख है।

स्वरूपानंद के मन में साई बाबा के प्रति गहरी नफरत झलकती है। मात्र एक व्यक्ति की नफरत ने साई बाबा को अपूज्य माना है। क्योंकि धर्मसंसद के पूर्व स्वरूपानंद के साई बाबा के विरूद्ध नफरत भरे बयान आ चुके है। फिर धर्मसंसद में वे स्वयं दो शंकराचार्यो का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। अतः निष्पक्ष नहीं माना जा सकता। धर्म संसद का निर्णय साई बाबा के मंदिरों में एवं अन्य सभी मंदिरों में भी ब्राम्हण ही पुतारी है। अतः साई बाबा को अपूज्य बतला कर स्वरूपानंद एवं धर्मसंसद के जमाव ने उनकी अस्मिता को चोट पहुंचाई है। ब्राम्हण हिन्दु समाज में पूज्य है अतः उन्हें गलत ठहराकर स्वरूपानंद ने उन्हें अपमानित किया है।

स्वरूपानंद ने हनुमान जी सहित अन्य भगवानों का भी अपमान किया है जो क्षम्य नहीं है स्वरूपानंद ने शनि देव सहित आठो ग्रहो का अपमान किया है। उन्होने भैरो बाबा का अपमान किया है। सभी उपनिषद अवतारों एवं उनकी मूर्तियों को नकारते है। उदाहरण के लिये खेताश्नतर उपनिषद के अनुसार

नैनमूरध्व न तिरयंच न मध्ये परिजग्रंभूत

न तस्य प्रतिमाग्रस्ति यश नाम मदययशः (53)

अठारह हजार श्लोको वाले श्रीमद देवी महापुराण ने सारे अवतारों को मायाबद्ध एवं जन्म मरण शील बतलाया गया है। अतः सभी अवतार स्वरूपानंद के मत में नकारने योग्य है। मंदिरों में साइबाबा की मूर्तियां बलात हटाना एक नागरिक की आस्था एवं धार्मिक स्वतंत्रता का हनन है जो किसी स्वतंत्र नागरिक को उनकी आस्था को मानने

से रोकता है। इस तरह की गुंडागर्दी की संविधान अनुमति नहीं देता है। स्वरूपानंद भारत की धार्मिक सहष्णिुता को तहस नहस कर रहें है अतः शासन एवं न्यायालयों द्वारा उन्हें आगे धर्मसंसद नामक भड़काऊ भीड़ इकट्ठी करने से रोकना चाहिये।

मोहनीश, मामू और मशीनें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मोहनीश ने मामू से कहां मामू अब अपने बैंको में सी.डी.एस. मशीन लग गई है। अब बैंको को अमीर बनाने के लिये धक्के खाने की जरूरत नहीं है। मामू बोले "बेटा मेरी धक्के खाने की आदत पड़ गई है। अगर धक्के न खाऊं तो रात को हाथ पैर दुखते रहते है। मैं तो लाइन में इसी लिये खड़ा होता हँू कि जोर से धक्के खा लँू। मैं इसी लिये ए.टी.एम. से पैसे भी नहीं निकालता हँू। ये क्या कि आप ए.सी. केबिन में घुसे और दो मिनिट में हंसते हुये बाहर आ गये। फिर चोरो कि की तरह यहां वहां देखते रहो कि किसी ने आपका पिन नम्बर तो चोरी नहीं कर लिया।

मोहनीश जोर से हंसा । जब पर्याप्त हंस लिया तो बोला "आपका पिन नम्बर" कौन चोरी करेगा। मात्र पांच हजार तो आपके एकाउंट में रहते है। कुछ लोग जो भिखारियों को भीख न देकर दया करके पांच दस रूपये आपके एकाउंट में डाल देते है। मामू का चेहरा लाल हो गया। वे रोने के किनारे खड़े थ कि मोहनीश बोला "मेरा इरादा आपका दिल दुखाने का नहीं है। मेरा कहना है कि जब नई "टेक्नालाजी" आ गई है तो क्यों न उसका उपयोग कर लिया जाये। अब इस "कम्प्यूटर" युग में आप अभी भी अशोक पेन खरीदते फिरते हो।"

मामू ने सोचा कि नई टेक्नालाजी को अनुग्रहित कर ही दिया जावे। एक दिन उन्होने ए.टी.एम. से दो हजार रूपये निकाले और सी.डी.एम में स्वयं के खाते में डाल दिये। एक हजार रूपये तो तत्काल उनके खाते में जमा हो गये और एक हजार के लिये मशीन चुप रही। मामू के हाथ पैर फूल गये। चेहरे ही हवाइयां (? क्या होती है) उड़ने लगी। वे उस मशीन रूपी घोड़े के घुड़ सवार के पास गये। क्लर्क से उन्होने कहा “मेरे एक हजार मशीन ने जमा कर दिये और एक हजार खा गई।

क्लर्क कान में स्पीकर लगाकर म्यूजिक सुन रहा था। यानि नई टेक्नालाजी का फायदा उठा रहा था। हिलते हिलते उसने पूछा “यस” ? मामू ने अटक अटक कर उनकी समस्या दुहराई। वह घुडसवार बगैर रूके बोला “आपकी वह छोटी राशि प्रोसेसिंग में है। मामू लगभग रोने पर आ गये। बगैर रोये आज आम आदमी का जिन्दा रहना मुश्किल है। क्लर्क ने सहानुभूति बतलाते हुये कहा “यह ऐसा समझ लीजिए कि एक हजार जमा करने के लिये आपके एक हजार रूपये की रिश्वत दे दी। मामू करूण रस से वीर रस पर चढ़ गये बोले वह मेरी खून पसीने की कमाई है। मैनें दो दिन पहले ही गेहूँ लाने के लिये खून बेचा था और मुझे पसीना आ गया था। मैं तुम्हारी शिकायत करूंगा। “करो, मैं शिकायतें सुनने के लिये ही बैठा हूँ” वह क्लर्क बोला और जिससे कि उसे शिकयत न सुनाई दे उसने फिर म्यूजिक सिस्टम कान में लगा लिया।

मामू बैंक के मेनेजर के पास गये। आजकल अधिकारी से ”क्या मैं अंदर आ सकता हूँ” नहीं पूछा जाता। वे ये सीधे ही घुस गये और बोले “सुनिये”। मेनेजर बोला “सुनाइये हम सब न सुनने के लिये ही बैठे है।” मामू बोले “आपकी मशीन मेरा एक हजार का नोट खा गई” मेनेजर ने हंस कर जवाब दिया आजकल हमने सीधे सीधे रिश्वत लेना बंद कर दिया है । फिर गंभीर होकर बोला उसके भी बाल बच्चे है रखरखाव लगता है।”

मामू बोले “मैं सूचना के अधिकार का उपयोग करूंगा”। मेनेजर ने नियमावली निकाली फिर पेज नम्बर चार सौ बीस को देखा और पढ़ा “वह एक हजार का नोट नकली था।” मामू चकरा गये और बोले वह नोट तो आपके ही बैंक का था। मेनेजर ने पूछा “कोई सबूत ? जबकि हमारे पास सबूत है कि वह नोट नकली था।” यह कह कर उसने जेब से वह नोट निकाल कर दिखाया मामू चकरा गये। उन्हें दुखी देखकर मेनेजर बोला “दुखी मत हो। मैं तुमसे अधिक दुखी हूँ। कबिरा दुखिया सब संसार। हमारे गुरू जी के शिवय बन जाओ तुम्हें शांति मिलेगी। वे शांति बेचते है। ज्यादा दुखी हो तो वह सी.आर. मशीन रखी है। एक दस के नोट के साथ उसमें शिकायत डाल दो।”

“गजब “मामू बोले” अब मशीने भी रिश्वत खाने लगी है वे कम्पलेट रिकार्डिंग मशीन के पास गये और बगैर नोट संलग्न किये उनकी शिकायत उस मशीन में डालने

लगे। मशीन ने उनकी उंगली पकड़ ली। और उसमें से आवाज आई“ आपने दस का नोट मुझमें नहीं डाला । आपने दस का नोट मुझमें नहीं डाला” मामू को पसीना आ गया। मशीन के पास खड़े चपरासी ने कहा “अब पांव नम्बर का बटन दबा दो।” उन्होने पांच नम्बर का बटन दबाया तो मशीन में से आवाज आई “उंगली छुड़ाने के लिये पचास रूपये का नोट डालो। उंगली छुड़ाने के लिये पचास रूपये का नोट डालो।”

मामू ने जलती आंखो से मोहनीश को देखा। मोहनीश ने डरते हुये जेब से पचास का नोट निकाला और चुपचाप सी.आर.एम (शिकायत रिकार्ड करो मशीन या कम्पलेट रिकार्डिंग मशीन) में डाल दिया। मामू का हाथ तो निकल गया पर मोहनीश से उनकी बोल चाल बंद हो गई।

दश दशहरा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दुर्गा स्थापना पर मालवा में एक कहावत है

दश-दशहरा, बीस दीवारी।

देव उठने की भई तैय्यारी।।

उपरोक्त पंक्तियां हालांकि जल्दी-जल्दी त्योहार आगमन की कामना को दर्शाती हैं पर हिन्दुओं ही हर सामान्य कहावत में एक गहरा दर्शन भी छिपा रहता है। उपरोक्त कहावत एक निर्देश है कि शक्ति पूजा के दौरान मन दशों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करें।

रामयण में यह विचित्र संयोग है कि दशहरा और दशानन के नामों में दश आया है। दश रथ यानि जिसके हाथों में दशो इन्द्रियों की लगाम है और दशानन यानि जिसकी दशो इन्द्रियां भूखी है। जब दशरथ के हाथ से एक इन्द्रिय की भी लगाम छूट जाती है तो आत्मा राम का निष्क्रमण हो जाता है। प्रकृति पुरूष के साथ रहती है। जब तक प्रकृति पुरूष के साथ रहती है तब तक उसका कल्याण होता रहता है। जब वह स्वर्ण मृग की आकांक्षा करती है तब तामसी वृतियां उसका अपहरण कर लेती है। वनवासी सीता ने जब सोने की आकांक्षा की तब रावण ने उसका अपहरण कर लिया।

दशरथ की पत्नियां प्रकृति के तीन गुणो की प्रतीक है। कौशल्या सत्य गुण की प्रतीक है। श्रद्धा से राम उत्पन्न होते है। कैकेई, रजो गुण की प्रतीक है। यानि बैचेन करने वाली न खत्म होने वाली इच्छाये। कैकेई ने उसके लड़के के लिये राज्य मांगा। यह भी कि की इच्छायें हमेशा अधूरी ही रहती है। जैसे दशरथ की इच्छा कि राम को युवराज पद मिले कैकेई की इच्छा कि भरत को राज्य मिले सीता की इच्छा कि उन्हें सोने का मृग मिले, सूर्पनखा की इच्छा कि सीता उसका वरण कर ले इत्यादि। देखा जावे तो रामायण अतृप्त इच्छाओं को महाकाव्य है।

रावण के परिवार में सारे नाम के अंगो या उसके गुणों पर आधारित है जैसे दशान या रावण कुम्भकर्ण है (बड़े कान) विभीषण सूर्पनखा (बड़ी नाक या नाखून) यह तो विश्लेषण हुआ दशरा का अब बीस दिवारी की बात करें। प्रकृति में बीस तत्व है। पांच ज्ञानेन्द्रियां (त्वचा, आंख, नाक, कान, जिहवा) पांच उनके विषय है (स्पर्श, रूप, रस, ध्वनि और गंध) पांच ज्ञानेन्द्रियां (हस्त, पाद, उपस्थ, वाणी और गुदा) एवं पांच स्थूल तत्व (अन्तरिक्ष, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी)। यानि इन पर विजय प्राप्त करने पर चेतना दीप ज्योति तरह झिलमिलती है। हमारी चेतना प्राकृतिक रूप से अंधकार मय रहती है। उसे प्रकाश मय करने के लिये प्रयत्न करना पड़ता है। यही दीप जलाने का महत्व है। जब चेतना प्रकाश मय हो जाती है तब ज्ञान उत्पन्न होता है। हर चीज स्पष्ट हो जाती है। गीताजी में कहा भी है (अध्याय 14 श्लोक 6) तत्र सत्वं निर्मलत्वात्प्रकाश अनामयं सुखसंगेन बन्धाति ज्ञान संग्रेन चानद्य प्रकाश होने पर सुख प्राप्त होता है।

अब हम अंतिम चतुर्थान्जलि लें। वह है: देव उठने की भई तैय्यारी। जब चेतना प्रकाशमय होती है कृष्ण पक्ष प्रकाशमय हम कर लेते है तब हमारे अंदर देवत्न जागृत हो जाता है। ताड़का, सुबाहू, मरीचि, मेद्यनाद, मंदोदरी (क्षीण उदर) इत्यादि। जबकि दशरथ के परिवार में सारे नाम अध्यात्मिक गुणो पर आधारित हैं यथा दशरथ कौशल्या (कुशल यां कौशल) सुमित्रा, राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुध्न इत्यादि। तो तब हम शरीर या उसकी इच्छाओं या उसके गुणो पर ही मन केन्द्रित करते है तो हमारा विनाश सुनिश्चित है।

चांद की निगरानी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब अंधेरे की आहट सी आने लगी
चूनरी रात की सरसराने लगी
चांद ऊपर से निगरानी करने लगा
चांदनी झील में जो नहाने लगी
एक भोरें को छू के चमेली खिली
दूसरी अपनी पेंगे बढ़ाने लगी
छू के चंदा की किरणें कुमुदनी हंसी
और अभिसार में जगमगाने लगी
रात रानी से टकरा के ठंडी हवा
गंध उसकी लिये डगमगाने लगी

तुम्हारे हाथ की मेंहदी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तुम्हारे हाथ की मेंहदी निमंत्रण पत्र है मुझको
प्रश्नासिक्त स्मित दृग परीक्षा सत्र है मुझको
        दृष्टि बस एक ही डाली है पागल हो गया हूँ मैं
        हुआ अवधूत ये जग तू ही तू सर्वत्र है मुझको
तुम्हारे रूप की तुलना प्रकृति में छान मारी है
तू जैसी मेरे अंदर है नहीं अन्यत्र है मुझको
        कभी बादल फटे ऊपर कभी घूमा हूँ मरूस्थल में
        तुम्हारी याद इन सबमें सुरक्षित छत्र है मुझको
कहीं भी गिरूँ आकर्षण तुम्हारा उठा देता है
कई ध्रुव मेरे अंदर हैं, तू ध्रुव नक्षत्र है मुझको

खिड़कियां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गुण्डे जब सरे राह छेडते है लड़कियां।
दरवाजे बंद होते है खुलती है खिड़कियां।।
मालिक को फटेहाल आजादी ने कर दिया।
मालिक को नौकर हर कदम देते है झिडकियां।।
भाषण के आसमान धरती भी नहीं देते।
नेता तो ठुमरी से अधिक लेते है मुरकियां।।
जिस्म उनके लिबासों में समाता नहीं।
बादल बगैर दिल पे गिराते है बिजलियां।।
पत्तों को हरी रखने जमीनों में जड़ें है।
पत्ते हवा में धरती को देते है गालियां।।

खेल का सिक्का

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बुत को बुत होने का ज्यादा गरूर था।
इसलिये ही संगतराश रहता दूर था।।
आगाज किया खेल का, सिक्का उछाल कर।

खेल के हर कदम पर सिक्का जरूर था।।
मुस्कुरा कर आपने चेहरा झुका लिया।
आपका लगता है कुछ कहना हूजूर था।।
उसके आने से चमन में फूल खिल उठे।
उस महजबी के चेहरे पे सूरज का नूर था।
मैं कदा आया नहीं कि मुड़ गया मैकश।
मैं कदा खुद के नशे में बहुत चूर था।

मेघ और आफताब

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जितने झिझके जनाब लगते है।
उतने वे वा शबाब लगते है।।
ख्वाब में जब जनाब आते है।
मखमली से वे ख्वाब लगते है।।
उनकी बातें तो अच्छी लगती है।
जवाब ला जवाब लगते है।।
बदन है चलता एक मैं खाना।

हर नजर में शराब लगते है।।
जुल्फ चेहरे पे जब मचलती है।
मेघ और आफताब लगते है।।

इश्क

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पलक को उठाने गिराने में।
आ गये मोड़ कई फसाने में।।
इश्क की नाव को मिला साहिल।
बहते बहते ही डूब जाने में।।
इश्क का मिल गया जिन्हें मोती।
बचा फिर कुछ नहीं जमानें में।।
तराना इश्क के बिना फीका।
इश्क मोती का नग तराने में।।
इश्क की वे हिसाब दौलत है।
मेरे दिल के गरीब खाने में।।
बे वजह हंसना और रो देना।
इश्क छुपता नहीं छुपाने में।।

मां और बच्ची

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चांद की खूबसूरती मोती में देखिये।
मोती का रोना बच्ची जो रोती है देखिये।।
    एक खिलखिलाता फूल है बच्ची का खेलना।
    कुदरत का सोना बच्ची जब सोती है देखिये।।
एक पेड़ हिचकते हुये तुमनें नहीं देखा।
लड़की की विदाई में मां रोती है देखिये।।
    ममता की चांदनी को अगर देखना चाहो।
    बच्चों के कपड़े जब भी मां धोती है देखिये।।
कुदरत जब बदहवास हो तो होती है कैसी ?
जब भीड़ में बच्चें को मां खोती है देखिये।।
    मोती को समुद्रों में कहां ढूंढोगे जाकर ?।
    बच्चा है मोती सीपी मां होती है देखिये।।

उलझे मन की बात

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बात अकेले पन की है
उसमें उलझे मन की है
        उलझन में सीधा रास्ता
        खोज रहें जीवन की है
कांटो भरे चमन में एक
तितली के उलझन की है
        नहीं एक भी भौंरा है
        सूने उस मधुवन की है
जिसमें जाल तुम्हारे हों
मेरे उस आंगन की है

सन्नाटे पर शासन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हम चिल्लाते आटे पर।
शासन है सन्नाटो पर।।
        रिश्ते नातें हैं मानों।
        एक तिजारत घाटे पर।।
मौत हसीना आगे है।
रोक लगा फर्राटे पर।।
        फकत भरोसे ताले के।
        मत जा सैर सपाटे पर।।
राजा रंक बराबर है।
अपने मन के कांटे पर।।
        पिट कर क्या भाषण देना ?।
        जुडो और कराटे पर।।

माफ करना बच्चों

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रात भर दर्द का है सफर जिंदगी।
दूसरे दिन फिर उसी की लहर जिंदगी।।
भूख की आग में होम होते रहे।
और रहीं दूसरों की नजर जिंदगी।।
दो असूलों में जम कर खं़ रेजी हुई।
हो गई खून से तर बतर जिंदगी।।
पेट की भूख ने जानवर कर दिया।
और ढोती रही फिर कहर जिंदगी।।
कब्र पर कब्र शहरों के ऊँचे मकां।
जिनमें मुर्दो की है एक बसर जिंदगी।।
मौत को इंच पल दूर करता रहा।
हाथ में गई फिसलती मगर जिंदगी।।
गांव खीचें शहर की चकाचैंध ने।
फिर निगलते रहे ये शहर जिंदगी।।
कुछ को फूलों का गुलदस्ता होगा मगर।
गम जदों को हैं धीमा जहर जिंदगी।।
हम सहारों के बल पर चले उम्रभर।
और फरेबों की लम्बी डगर जिंदगी।।
वक्त हमकों डराना रहा उम्र भर।
जैसे प्रेतो के संग रह गुजर जिंदगी।।
छेद धरती के सीने में हमनें किये।
हो गई आग की एक लहर जिंदगी।।
भूख के घर मकां हमने गिरवी रखा ।
न इधर जिन्दगी न उधर जिंदगी।।
मौत के संग गुजारा किया उम्र भर।
और सब कुछ के बदले सिफर जिंदगी।।
फूल जूतों से मसले जरा सं़घ कर।

एक दहशत बनी हर खबर जिंदगी।।
माफ करना हमें हम चलें छोड़ कर।
बच्चों आतिश की तुमको नहर जिंदगी।।

मुश्किल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बहुत हठी ईमान मनाना मुश्किल है,
उसकी बुत से रब पर लाना मुश्किल है।।
आंसू और समन्दर दोनो खारे हैं,
और दोनों की शहर लगाना मुश्किल है।।
बच्चें की किलकारी मां की दबी खुशी,
उसे तकल्लुफ से ढक पाना मुश्किल हैं।।
मेरा बच्चा सो जाये तो मैं लेटूं,
बिन लोरी मेरा सो पाना मुश्किल है।।
एक इबादत है पीकर के होश रहे,
बिना पिये इसको समझाना मुश्किल है।।

बही तराना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो पलने पर मां ने गाया गाना था,
रूका कब्र पर जाकर वहीं तराना था।।
        लहर फंसी भंवरों में डूब गई वह कर,
        उसको सागर तक हालांकि जाना था।।
खुद ही जाम लवों तक मेरे आते थे।
ऐसा जीवन में भी एक जमाना था।।
        आगे बढ़ कर तूफानों से मिल लेता।
        तूफानों को भी कुछ आगे आना था।।
कटे पेड़ मासूम परिन्दों के घर थे।
शासन को एक चैड़ी सड़क बनाना था।।
        रूह उठी ऊपर और नीचे बदन गड़ा।
        दुनिया से दोनो का उठा ठिकाना था।।

दर्द पुराना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बहुत दिनों में दर्द पुराना आया है।
याद कहां से गया जमाना आया है।।
एक घुमड़ते बादल में बिजली जैसा।
तूफानों के संग दीवाना आया है।।
कोई नहीं हलचल है दिल में शांत शमां।
टीस जगानें एक परवाना आया है।।
कर के तय लम्बी मेहमानी का दिल में।
नया कोई बनने अफसाना आया है।।
कर के सबसे अलग सुनाने एक गम का।
अपना ही एक लिये तराना आया है।।

खुद खुशी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नारों के बीच हकीकत।
रखना गुनाह है।।

आजादी है पर सच का।
निकलना गुनाह है।।
है खंजरों की कैद में।
मजलूम देखिये।।
मतलूम की अब गवाही।
बनना गुना है।।
ईमानदारी किताबों तक से।
निकल गई।।
ईमान की अब बात भी।
करना गुनाह है।।
कर्जे में दी है।
अमीरी तहजीब नहीं दी।।
अब गलियों की झुण्ड से।
लड़ना गुनाह है।
जिंदा रहें इस दौर में।
मुमकिन नहीं यारो।।
पर खुदखुशी अब करवों भी।
मरना गुनाह है।।

अपनी जमीं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पार कर कांटो को कली फूल
बनी है।

मिट्टी की तपिश चमकते हीरो की
कनी है।।
दशहतो से बच के बीहड़ पार किया
है।
राह और मंजिल में फिर भी
तना तनी है।।
झुग्गियां कीचड़ में है और गिराओगे
तुम ?
तुम्हारी ये हरकत एक कीचड़ से
सनी हैं।।
कौन सांकल झनझनाता है नहीं
मालूम।
याद की दरिया के ऊपर धंुध
धनी है।।
गजल सुन कर आपकी अच्छा
लगा हमको।
हो मकां अपना नहीं पर अपनी
जमीं है।।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मोंगरे की गंध चंदा की इबादत है।
सितारों के बीच चंदा की सदारत है।।
साथ कांटो के जरा तुम कली भी देखो।

कली आधी खिली कांटो की नजाकत है।।
नींद का और रात का है साथ जन्मों का।
नींद पर सपनों की सुंदर सी इबारत हे।।
रात को में जागता हँू सुबह होने तक।।
छेड़ना रातों को मेरी एक आदत है।
पैर में गढ़ते है कंकंड याद जेहन में।
हटाता हँू नहीं उन्हें मेरी शराफत है।।

कुछ समझ नहीं आया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आसमान का धंुधलापन कुछ समझ
नहीं आया।
और समुद्र का उथलापन कुछ समझ
नहीं आया।।
धागों से कपड़ों का बुनना बात हुई
कब की।

उन धागों का उलझापन कुछ समझ
नहीं आया।ं
फूल उछालों तो पत्थर दस वापिस
गिरते हैं।
कुदरत का ये दुहरापन कुछ
समझ नहीं आया।।
कीचड़ बहती है पहाड़ से धरती
बेबश है।
उस पर पेड़ों का उखड़ापन कुछ
समझ नहीं आया।।
खुद उतार कर इज्जत रख दी चाकू
के आगे।
कौमों का ये मुर्दापन कुछ
समझ नहीं आया।।

हो जायेगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तेरे बारे में लिखंू तो
मुकम्मल हो जायेगी।
तू अगर गायेगा उसको
तो गजल हो जायेगी।।
तुम्हारे वारे आये है।
आयें है शायर सभी।।

मैं भी वैसा लिखंूगा
तो एक नकल हो जायेगी।।
तेरी आंखो, होंठ, गालों
को कमल कहतें है सब।
गा दे मेरी गजल तो
वह भी कमल हो जायेगी।।
चांद धरती पर उतर
आया है तेरे रूप में।
झोपड़ी भी तेरे आने से
महल हो जायेगी।।
चांद तारों के लिये
तू है सवालों सी कठिन।
जमीं पर उनको
तू फूलों सी सरल हो जायेगी।।

अधों संरचना तो बनाओ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दो अक्टूबर दो हजार चैदह को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झाडू लगाकर फोटे क्या खिंचवाई कि शासकीय संस्थाओं का सारा कचरा सड़क पर आ गया। मंत्रियों ने झाडू लगा कर फोटो खिंचवाई, सचिवों ने झाडू लगा कर फोटो खिंचवाई, कलेक्टरों ने झाडू लगा कर फोटा खिंचवाई, संचालको ने झाडू लगा कर फोटो खिंचवाई, इसी तरह सभी संस्था प्रमुखों ने तक ने झाडू लगा कर जनता को यह बतला दिया कि आजादी पाने के

बाद से नरेन्द्र मोदी तक के कार्यालयों समेत सब संस्थान कचरा मय रहते थे, वो तो प्रधामंत्री के अनुशरण करने से अब साफ हुये है।

किसी ने यह नहीं सोचा कि कार्यालयों एवं घरो से निकल कर यह कचरा कहां जायेगा सड़के के किनारे खाली प्लाट, बाजू वाला घर, रेल्वे लाइन के किनारे नदियां, पहाड़ और समुद्र इत्यादि सब कचरे से पटे हुये है। कचरा इनमें न जाये और उसका प्रबंध ठीक तरह से हो यह प्रधानमंत्री, किसी मंत्री, सचिव जिलाध्यक्ष, संचालक, सरपंच या किसी नागरिक ने नहीं बतलाया। फोटो खिंचाई सफाई मुहिम से क्या फायदा ? कचरा प्रबंधन का कोई प्रभावी तरीका हमारे पास नहीं है। दीवालें गंदी है, सड़के गंदी है, गांवों में ट्रेन के द्वारा हर राजधानी या बड़े शहर में प्रवेश के पहले जो असहनीय दृष्य एवं असहनीय गंध आती है उससे क्यों नहीं हमारे कमिश्नरों या जिलाध्यक्षों के हनदय उद्धैलित होते ?

गंदी बस्तियों में उनके किनारे पंक्तिबद्ध शौच पड़ी रहती है। सड़को के किनारे, हिमालय से हिन्द महासागर तक पोलीथीन से गंदे हो रहे है।
नदियों में नाले और शव बह रहे हैं यह है, साफ भारत की तस्वीर ! काश प्रधानमंत्री कचरा प्रबंधन की अधोसंरचना विकास के बारे में आश्वासन देते।

(1) कचरा प्रबंधन के लिये कुछ कदम तत्काल उठाये जाने चाहिये। पोलीथीन के पैकेट एवं झोले का प्रयोग तत्काल प्रभाव से बंद होना चाहिये। पालीथीन जलाने से जहरीली गैसे उत्पन्न होती है। इसका प्रयोग समाज को बीमार एवं समाज की हत्या करने वाला है। यह पूरे भारत में कानूनबद्ध ढंग से बंद होना चाहिये। पालीथीन बनाने की फैक्ट्रियां ही कानूनन बंद कर देनी चाहिये। चीन की बनी पोलीथीन जिसके पास पाई जाये उसे दंड का भागी माना जाये।

(2) कागज की री साइक्लिंग कर उसके मजबूत एवं संुदर थेले बनाये जा सकते है। इससे पोलीथीन का उपयोग बंद हो जायेगा एवं कागज की रद्दी का उपयोग होने लगेगा। पेपर की रीसाइक्लिंग के कारखानों को प्रोत्साहन देना पड़ेगा।

(3) कचरे से बिजली बनाने के बारे में बहुत हल्ला होता है पर उस दिशा में अधिक कुछ नहीं किया जाता। अन्यथा तो हमारे देश में इतना अधिक कचरा है कि उससे उत्पन्न बिजलीे का हम निर्यात कर सकते है।

(4) कचरे से ईंधन बनाने के प्रयत्न किये जा सकते है। वैसे भी कचरो एक बुझा ईंधन है। उसे इनर्जी में बदला जा सकता है।

(5) जैसे गोबर गैस बनाई जाती है वैसे ही कचरा गैस बनाई जा सकती है और अपशिष्ट से खाद बनाई जा सकती है।

(6) कचरे को इनसिनरेट किया जाना चाहिये। ये प्लांट हर जिले, राजधानी, नगर निगम, नगर पालिकाओं एवं पंचायत काम्पलेक्स में लगाना आवश्यक कर देना चाहिये। पंचायतों का कचरा संग्रहित कर इन इंन्सिमरेटरो तक कचरा संग्रहित किया जाता है। इन्सिनरेटरो की चिमनी पर्याप्त ऊंचाई तक जाना चाहये।

(7) हर नगर पालिका को पोलूशन बोर्ड से प्रमाण पत्र लेने की बाध्यता होना चाहिये कि उसके पास कचरा प्रबंधन के पर्याप्त एवं प्रभावी उपाय है।

(8) अभी तो यह होता है कि नगर पालिकाओं मुहल्लों से कचरा उठवा कर शहर के बाहर कचरे का पहाड़ लगाती जाती है जो स्वयं गंदगी संक्रमण एवं बदबू का स्त्रोत होता है।

(9) हम कचरे का उत्पन्न होना समझ लें एक व्यक्ति कचरा उत्पन्न करता है, एक परिवार उत्पन्न करता है एक मोहल्ला उत्पन्न करता है और एक नगर उत्पन्न करता है। यह एक व्यक्ति का ही कचरा है जो किसी वस्तु के उपयोग के बाद उत्पन्न होता है। एक व्यक्ति दीवालों पर या सड़के पर थूकना बंद कर सड़क पर, कागज या पानी खाली बोतलें या पालीथीन के टुकड़े फेंकना बंद करें फिर वह इन वस्तुओं को कहां फेंके ? स्थान स्थान पर पंचायतों और नगर पालिकाओं के कचरा संग्रहण बिन्दु हो जिनमें व्यक्ति एवं परिवार कचरा फेंक सके। अभी तो वे डब्बे या टंकियां ही इतने कचरे से ढक जाते है कि घूरा बन जाते है। दूसरी ओर पंचायतें रोती रहती है कि उनके पास सफाई कर्मचारी रखने की राशि ही नहीं है। इस ओर राज्य शासन का ध्यान जाना चाहिये। पंचायते, नगर पालिकायें या नगर निगम उनके कार्यक्षेत्र की सफाई नहीं करेंगे तो उनके अस्तित्व का उद्‌देश्य समझ में नहीं आता।

(10) फैक्ट्रियां उनके अपशिरूट को नाले के द्‌वारा नदियों में बहा देती है। जिससे जलचर, थलचर एवं नभचर मारे जाते है। यह सामूहित हत्या का दुष्कर्म है। ऐसे कारखानें तो एक दम बंद कर देना चाहिये एवं उन पर दंड आरोपित करना चाहिये। पोलूशन बोर्ड को आसमान के साथ साथ जमीन एवं नदियों को भी सुरक्षा करना चाहिये। कारखानों का उनका स्वतंत्र अपशिष्ट प्रबंधन होना चाहिये।

(11) हिन्दुओं को शवदाह के पश्चात राख खेतों में फेंकना चाहिये। नदियों को यदि मां एवं पवित्र माना जाता है तो यह कुप्रथा बंद होना ही चाहिये। सन्यासियों के शव पूरे ही नदियों में प्रवाहित किये जाते है क्या यह नदियों के साथ अन्याय नहीं हैं। गंगा को पवित्र रखना साधुओं और सन्यासियों का भी कर्तव्य है। नदियों को गंदा करके हम सब धरती और समुद्रो को भी गंदा कर रहे है। नदियां "सोकेज पिट" नहीं है।

(12) उन नगर पालिकाओं नगर निगमों और पंचायतों के अध्यक्षों को हटा देना चाहिये जो नदियों को गंदा करते है। इनके कार्यक्षेत्र के नाले दनदनाते हुये नदियों या समुद्रो में मिल जाते है। यह उचित नहीं है।

उपसंहार

अपशिष्ट का प्रबंधन व्यक्ति परिवार नगर निकायो, कारखानों संस्थाओं, बस स्टैण्ड, रेल्वे स्टेशन इत्यादि पर होना चाहिये। यह केवल नगर निकायो का ही कार्य नहीं है। यह एक स्वतंत्र विज्ञान है इसकी संगोष्ठियां समय समय पर होना चाहिये एवं उनकी रिपोर्ट सरकार को भेजी जानी चाहिये। अपशिष्ट प्रबंधन के नये विषय कालेजों में जोड़े जाने चाहिये।

अपशिष्ट प्रबंधन का स्वतंत्र मंत्रालय बने जो प्रबंधन के वैज्ञानिक एवं लाभदायक तरीके लागू करें। यह काम केवल गंगा बचाओं मंत्रालय के कंधो पर ही नहीं छोड़ा जा सकता।

आंगन और सड़क के बीच की झाड़ू

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दो अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री मोदी ने भारत को साफ करने की मुहिम छेड़ी। उन्होने स्वयं झाड़ू लगाई। वह झाड़ू और वह कचरा धन्य हो गये। उनके पूर्व जन्मों का ही प्रताप था कि प्रधानमंत्री ने उन्हें छुआ। वह कचरा जहां फेंका गया वह जगह भी धन्य हो गई।

प्रधानमंत्री ने झाड़ू क्या पकड़ी कि सारे अधिकारी स्वयं का कार्य छोड़ कर झाड़ू लगाने लगे। वैसे भी वह उनका कर्तव्य पालन करते भी कहा थे ? उनका ध्यान झाड़ू पर कम और फोटोग्राफर पर अधिक था। टाइ लगा कर झाड़ू लगाते हुये वे अमेरिका के सफाई कर्मचारी लग रहे थे। झाड़ू लगाने वाले उनका कार्य छोड़ कर सिगरेट धोकने लगे। हाल यह था कि अधिकारी कैमरे वाले का इंतजार कर रहे थे जब चैनल वाले आये तो उन्होने झाड़ू उठाई और इस तरह से झाड़ू लगाने लगे जिससे कि धरती माता को तकलीफ न हो। वे भरसक कोशिश कर रहे थे कि शाहरूख खान की तरह दिखे। जब पर्याप्त चित्राय गये तो कैमरा मेन ने कैमरा बंद कर दिया। अधिकारी

फिर उनकी कुर्सी पर बैठ गये। उन्होने कैमरा मेन के साथ बैठ कर चाय नाश्ता किया। वह झाडू समारोह और चल चित्राय समारोह देश को बहुत मंहगा पड़ा।

मैं जब घर गया तो नई झाडू मेरा स्वागत कर रही थी। पत्नि ने आदेश दिया कि पहले झाडू लगाओ फिर खाना मिलेगा। मैनें कहा "यह मेरा काम नहीं है। घर की झाडू तुम लगाओ दफ्तर की मैं लगाऊंगा। "पत्नि ने हाथ नचाते हुये कहा "अहा ! सड़क पर सबके सामने झाडू लगाते हुये शर्म नहीं लगती और घर का काम करने में शर्म आती है।"

मैनें कहा "वह मेरे कर्तव्य में था। उससे मुझे वेतन मिलता है। भले ही मैं संयुक्त संचालक हँू पर यदि सरकार कहेगी कि तुम्हें झाडू लगाने पर वेतन मिलेगा तो मैं अपना काम छोड़ कर झाडू लगाऊंगा। पत्नि ने जवाब दिया "तुमसे तो वह हेड कान्सटेबल अच्छा है जिसने वर्दी में झाडू लगाने से मना कर दिया है। वह काम करे या सड़क पर झाडू लगाये। उसने बतला दिया कि वह एक जगह पर झाडू लगा सकता है, घर में। थाने में वह अपना कर्तव्य करेगा। तुम्हारे अधिकारी नहीं पूछते कि तुम अपना काम छोड़ कर झाडू क्यों लगा रहे हो ?"

मैनें कहा "वह खुद झाडू लगा रहे थे। बल्कि उनका आदेश ही था कि दफ्तर का काम छोड़ कर झाडू लगाओ। "पत्नि ने पूछा "तुमने वह कचरा कहां फेंक दिया" मैनें पान थूकते हुये जवाब दिया "सड़क पर" पत्नि मेरे पान थूकने पर नाराज हो गई बोली" गुटका क्यों नहीं ? लेते दीवालें गंदी करते हो।"

मैनें कहा "इसके लिये प्रधानमंत्री ने कोई निर्देश नहीं दिये। पहले के प्रधानमंत्री बोलते नहीं थे और ये चुप नहीं रहते। पत्नि बोली प्रधानमंत्री ने इसके भी निर्देश नहीं दिये कि अब सड़का का कचरा कहां जायेगा ? हिमालय से हिन्द महासागर तक पोलीथीन के पहाड़ लगे है उनका क्या होगा। यहां वहां पानी की खाली बोतलें, पाउच, पोलीथीन के झोले पड़े रहते है ? उनका क्या प्रबंध किया जायेगा ? क्या केवल झाडू लगाना ही भारत को साफ रखना है। घर, संस्थायें अपना कचरा सड़क पर फेंक देते है। नगर पालिकाओं के पास अपशिष्ट प्रबंधन की कोई कार्य योजना नहीं हैं

मैनें एक आम भारतीय की तरह कहा "सरकार कुछ न कुछ तो सोच रही होगी। अभी तो सारा कचरा शहर में "गेट वे आफ शहर" में डाल दिया जाता है जैसे दिल्ली में या भोपाल में घुसने से पहले। पत्नि बोली और जैसे तुम मर्द लोग दीवाल गंदी करते रहते हो वैसे ही कारखाने उनका गंदा पानी गंगा में डाल देते है।"

यह घर का झगड़ा अब वर्ग संघर्ष का रूप लेने लगा। मैनें कहा "मर्दो पर मत जाओ। तुम लोग तो अधिकांश समय घर में बिताती हो पर मर्दो का अधिकांश समय तो सड़क पर ही बीतता है। अब सड़क छाप आदमी दीवाल गंदी न करे तो क्या करे ?

मीलो तक शौचालय नहीं रहते मिलते है तो इतने गंदे कि उनमें जाने से उनकी दीवार गंदी करना अधिक स्वास्थप्रद लगता है।

अब हाल यह है कि सोने के दाम कम हो रहे है और डिजाइनर झाड़ूओं के दाम बढ़ रहे है। मैं घर में झाड़ू लगाने के लिये जब झुकने ही लगा तो बुद्धि ने कहा "रे मर्द तू औरत के आगे झुक रहा है। तू भूल रहा है कि मर्द ज्यादा चालाक होते है और औरत ज्यादा भावुक। प्रधानमंत्री ने झाड़ू क्या लगा दी कि तुम्हारी नारी भावुक बन गई। याद रख कि वह तुम्हारी नारी है, नरेन्द्र मोदी की नहीं, नरेन्द्र मोदी तो खुद की छोड़े बैठे हैं। इसीलिए प्रधानमंत्री बन पाये नहीं तो कहीं क्लर्क होते। तू छोड़ देता तो अमेरिका का प्रेसीडेंट बन सकता था। अमेरिका का प्रेसीडेन्ट न सही, विभाग का डायरेक्टर तो बन ही सकता था। अब मक्कारी दिखा, हे मर्द, मक्कारी दिखा। मैनें मक्कारी से जवाब दिया "तुम झाड़ू तो बहुत अच्छी लाई हो। बिल्कुल संयुक्त संचालक की गरिमा की। मगर दूरदर्शन के चैनल वाला कहां है ? वह बुला लाओं तो मैं पूरे घर की झाड़ू लगाने के लिये तैयार हूँ। दफ्तर में तो मैनें तभी झाड़ू लगाई थी जब दूरदर्शन के चेनल वाले आ गये थे। दूरदर्शन के फोटोग्राफर के अभाव में तुम्ही झाड़ू लगा सकती हो। इसलिये घर का आंगन साफ करके सड़क गंदा करने का पवित्र काम करती रहो।

ल्यूकोहरिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

महिलाओं की योनि में इतने द्रव का स्त्राव तो होता रहता है कि घर्षण से योनि की दीवालों को कोई हानि न हो पर सामान्य से इतना अधिक स्त्राव कि उनकी पेन्टीज में अधिक दाग पड़ जाये बोल चाल की भाषा में सफेद पानी जाना कहते है। महिलायें इस असमान्यताः के कारण बहुत अधिक चिंतित रहती हैं। उनकी यह सामान्य धारण रहती है कि इस बीमारी के कारण वे दुबली होती जा रही है या उनकी शक्ति क्षीण हो रही है या एक गंभीर बीमारी है। इस तरह की चिंताऐं उनके मन में उनकी माँ या बहनों या उनके पति या पड़ोसन भर देती हैं। कुछ महिलायें इस कारण से अवसाद में भर जाती है। अतः बेहतर हो कि वे इस असमान्यता के कारण जाने। इससे उन्हें इस बीमारी के इलाज में सहायता भी मिलेगी।

(1) इस बीमारी के सामान्य कारण

(क) कोई कारण नहीं

(ख) हीमोग्लोबिन की कमी

(ग) गंदी "हायजीन"

(घ) मधुमेह

(ड) गर्भवती होना

(च) अधिक चिंता

(2) इस बीमारी के स्थानीय कारण

(क) संक्रमण

(प) बेक्टीरियल

(पप) वायरल

(पपप) फंगल

(पअ) परजीवी

(2) योनि का कैंसर या गर्भाशय का केंसर

हीमोग्लोबिन की कमी सामान्य से अधिक योनि स्त्राव का प्रमुख कारण है। भारतीय महिलाओं में यह आम कारण है। सामान्यतः हीमोग्लोबिन 11 से 14 ग्राम प्रतिशत होना चाहिये यदि कम होता है तो आयरन वाले सिरप या गोलियां दी जानी चाहिये। साथ में फोलिक एसिड भी दिया जाना चाहिये। एनीमिया के तीन प्रमुख कारण है। (प) पोषण की कमी, आयरन, पालक की भाजी, चैलाई, रंगीन भाजी अनार इत्यादि में अधिक होता है।

इन पदार्थो का गरीबी या अज्ञातवश कम लेनी एनीमिया का कारण हो सकता है (पप) पेट के कीड़े- ये खेत में या कहीं भी नंगे पांव चलने से होते है (पपप) मासिक धर्म के समय अधिक रक्त स्त्राव (पअ) कैंसर

योनिक की हायजीन - महिलाओं को हायजीन का अधिक ख्याल रखना चाहिये, विशेषकर मासिक रक्त स्त्राव के समय। उस समय गंदे कपड़े का उपयोग नहीं करना चाहिये।

मधुमेह या एन.आई.डी.डी. एम (नान इन्सुलिन डिपेन्डेन्ट डायबिटीज मेलिटस) में संक्रमण अधिक होते है। सामान्य शर्करा का रक्त में स्तर 80 से 120 मिग्रा. प्रतिशत होता है। यदि यह स्तर खाना खाने के ढाई घंटे बाद 180 मिग्रा प्रतिशत से अधिक होता है तो इसका इलाज किया जाना चाहिये।

सद्यजात लड़कियों में मां के हारमोन्स चले जाते है जिनसे योनिस्त्राव अधिक हो सकता है अतः चिंता की बात नहीं हैं। समय बीतने पर यह ठीक हो जाता है। गर्भवती माताओं में सामान्य रूप से योनि का स्त्राव हो सकता है। योनि के संक्रमण में गोनोकाकल संक्रमण प्रमुख कारण है इस बीमारी में चिपचिपे पीप जैसा स्त्राव होता है। क्लेमाइडिथल संक्रमण में भी योनि स्त्राव होता है।

"पेल्विक इन्फ्लेमेटरी डिसीज" में हालांकि संक्रमण ओवरी या ओबेरियन ट्यूब्स का होता है पर योनि स्त्राव भी हो सकता है। भारत में यह बीमारी, गोमोरिया या टी.बी. के कारण होती है।

सिफिलिस एक स्पाइरोकीट के द्वारा होता है जिसे ट्रिपेनोमा पेलिडम कहते है। यह एक महत्वपूर्ण यौन जनित रोग है। इस बीमारी में यौनांगो में छाले हो जाते है। चंूकि महिलाओं में यौनांग अंदर रहते है अतः छाले बाहर नहीं दिखते। हरपीज सिन्प्रेक्स एक वायरल संक्रमण है। इसमें योनि में दर्द देने वाले छाले हो जाते है। सेकायड हीमोफिलिक डूक्री नामक जीवाणु से होता है। हयूमन पेपिलोमा वायरस से "वार्टस" हो जाते है। इस संक्रमण में अधिक छोटे छोटे मसे होते हैं जो बाद में कैंसर का रूप ले सकते है। एच.आई.वी संक्रमण एक अन्य जानलेवा बीमारी है जो बाद में एड्स का रूप ले सकती है।

(1) अधिकतर यौन जनित संक्रमण में पुरूषों से अधिक महिलाओं को हानि होती है। क्योंकि यौन संसर्ग में वे एक अक्रियशील व्यक्ति होती है एवं उनके जननांग अंदर होते है। अतः जांघ की जड़ो में गठाने एवं योनि स्त्राव में चिकित्सक की सलाह तत्काल ली जानी चाहिये। योनि, सर्विक्स या गर्भाशय का कैंसर 50 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में होता है जिसमें रक्त मिश्रित बदबूदार योनिस्त्राव होता है। यदि 50 वर्ष के आसवास

या उनसे अधिक उम्र की महिलाओं में रक्त मिश्रित या बगैर रक्त मिश्रित योनि स्त्राव होता है तो तत्काल चिकित्सक से संपर्क करना चाहिये।

महिलायें योनिस्त्राव छिपाती है जो उन्हें ही नुकसान दायक होता है अतः चिकित्सक से मिलने में झिझक नहीं करना चाहिये। संक्रमण या कैंसर में जांघो के मूल में गठाने हो जाती है अतः ऐसे प्रकरणों में चिकित्सक से सलाह ली ही जानी चाहिये क्योंकि संक्रमण प्रति जैविक औषधियों से ठीक किये जा सकते है एवं जननांग में कैंसर का प्रारंभिक अवस्था में आपरेशन किया जा सकता है।

फंगल संक्रमण गंदगी गीलापन आदि से होता है यदि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो तो भी हो जाता है। एंटी फंगल दवाइयां इस बीमारी में दी जानी चाहिये। भारतवर्ष (या अन्य विकासशील या अविकसित देशो) में सामान्य से अधिक योनिस्त्राव के प्रमुख कारण हीमोग्लोबिन की कमी गंदगी "हायजीन" पेट के कीड़े, मानसिक चिताऐं जैसी शीघ्र ही ठीक की जा सकने वाली स्थितियाँ है जो सस्ती दवाइयों एवं शिक्षण से काबू में लाई जा सकती है।

जैविक अपशिष्ट प्रबंधन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिकित्सालयों में जो अपशिष्ट पदार्थ निकलते है वे अत्यन्त संक्रामक, दुर्गन्ध युक्त एवं भयावह होते है। ये चिकित्सालय मनुष्यों के चिकित्सालय या पशुओं के चिकित्सालय हो सकते है।

इनमें निकलने वाले अपशिष्ट ठोस, द्रव या गैस या विकिरण के रूप में हो सकते है। इंजेक्शन की सुइयां अत्यत्न नुकीली होती है। इसी तरह चाकू के फल या अन्य नुकीली वस्तुयें हो सकती है। घाव की पट्टियां हो सकती है। रक्त या पीप हो सकती है या मानव या पशुओं के अंग हो सकते है। इंजेक्शन की सुइयां या चाकू गड़ कर संक्रमण

के घाव बना सकते हैं अस्पतालों में निकलने वाली गैसे संक्रामक या दुर्गन्ध युक्त हो सकतीं हैं। अस्पतालों से निकलने वाले द्रव विसंक्रमित कर सावधानी पूर्वक निकाले जाने चाहिये। क्योंकि द्रवीय अपशिष्ट शहर की नालियों में मिल जाता है।

बड़े चिकित्सालयों में कई किलो ग्राम के पोलीथीन के अपशिष्ट भी प्रतिदिन निकलते है जो नलियों सिरिंजो पालीथीन की बोतलों एवं थैलों के रूप में होता है। बड़े चिकित्सालयों में शल्य क्रिया के बाद शरीर के काटे गये अंग, रक्त, जीव, शिशुओं के जेर (प्रेसेन्टा) प्रसव के पश्चात निकले द्रव बड़ी मात्रा में बाहर निकलते है। उनका सावधानी पूर्वक प्रबंधन करना चाहिये। इसी तरह शव परीक्षण के पश्चात अपशिष्ट निकलते है। असावधानीपूर्वक इनका प्रबंधन कर कभी कभी कुत्ते भी इनको घसीट कर आबादी वाले इलाके में ले जाते देखे गये है जो एक भयप्रद स्थिति पैदा कर देते है।

यदि आण्विक विकरण उत्पन्न करने वाले पदार्थो का असावधानीपूर्वक प्रबंधन किया जाता है तो वे खतरनाक रूप से स्वास्थ्य को हानिकारक हो सकते है। ये विकिरण क्ष-किरण यंत्रो (एक्सरे मशीन) केंसर के इलाज या उनके संग्रहण में असावधानी से बाहर आ सकते है। कई अस्पतालों में तो एक्सरे टेक्नीशियन बगैर विकिरण मापी पट्टियों के काम करते देखे गये है जो स्वयं उनके स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होते है। यहाँ तक कि उन्हें कैंसर तक हो सकता है। यह अस्पताल प्रबंधन की चूक का ही परिणाम है। संक्षेप में किसी मरीज के इलाज के दौरान या शव परीक्षण के पश्चात जो भी अपशिष्ट निकलता है वह चिकित्सकीय अपशिष्ट कहलाता है और उसके प्रबंधन में विशिष्ट तरीके अपनाये जाते है।

चिकित्सकीय अपशिष्ट के प्रबंधन के तरीके

चिकित्सकीय अपशिष्ट रंग चिह्नित थैलो में एकत्रित किया जाता है। नुकीले पदार्थो तथा इंजेक्शन की सुई को मोड़ दिया जाता है। सिरिंज का आगे का हिस्सा तोड़ दिया जाता है। चाकू इत्यादि नुकीले पदार्थो को तोड़ दिया जाता है। ड्रेसिंग की पट्टियों, चादरों या अन्य लिनिन इत्यादि को अलग रखा जाता है। अंगो को अलग संग्रहित किया जाता है। चिकित्सकीय द्रव अपशिष्ट को फेंकने के पहले एन्टीसेप्टिक घोलो से उपचारित किया जाता है उन्हें और पट्टियों को वाष्प से भी विसंक्रमित किया जाता है। फिर उनको विसर्जित कर सकते है।

पोलीथीन, नलियों, सिरिन्जों को सामान्य रूप से जलाया नहीं जा सकता अन्यथा वे हानिकारक गैसे निकालते है। यह एक बहस का विषय रहता है कि क्या उन्हें इन्सिनिरेट किया जा सकता है। इसी तरह शरीर के अंगो को क्या उपचारित कर गढ़ाया जाये या “इन्सिनिरेट” किया जा सकता है। यह बहस का विषय हो सकता है। क्योंकि गढ़ाये जाने पर वे स्वयं विखंडित होकर खाद बन जाते है पर वे संक्रमण का स्त्रोत हो

सकते हैं उन्हें गढ़ाने के लिये एक बड़ा गड्ढा खोदा जाता है फिर उसमें एक सतह चूने की बिछाई जाती है फिर अंग गढ़ाये जाते है। फिर एक सतह चूने की डाली जाती है इस तरह से उनका प्रबंधन किया जाता है।

फर्श इत्यादि की धोवन वैसे भी "ब्लीच" की जाती है या एंटीसेप्टिक घोल से उपचारित रहती है। कोई भी द्रव बगैर उपचारित किये शहर की नालियों में नहीं मिलाना चाहिये या चिकित्सालयों का अलग से द्रव विसर्जन का प्रबंधन होना चाहिये।
इन्सिनरेटर में दो या तीन भट्टियां होती है जो अत्यंत अधिक तापक्रम पर वस्तुओं का वाष्पीकरण कर देती है फिर ये गैसे पर्याप्त ऊँचाई की चिमनी से वायुमंडल में विसर्जित कर दी जाती है।

प्रेसेन्टा एक अत्यन्त उपयोगी अंग है इससे "स्टेमसेल" प्राप्त किये जा सकते है जो विभिन्न गंभीर बीमारियों में उपयोगी होते है। तत्पश्चात उनको उपचारित कर विसर्जित किया जा सकता है। प्रेसेन्टा की झिल्ली जलने के या अन्य क्लिष्ट घावो में उपयोग की जा सकती है। विकिरणीय पदार्थो को सावधानी पूर्वक उपयोग में लाना चाहिये। उनका रख रखाव शीशे की नलियों या कंटेनेरो में होता है उपयोग के पश्चात उन्हें प्राप्ति स्त्रोत पर पहंुचा दिया जाता है।

क्ष किरण यंत्र वैसे तो बहुत कमजोर विकिरण उत्पन्न करते है पर उन यंत्रो के आस अपास अनावश्यक रूप से नहीं जाना चाहिये। दूसरी ओर केट मशीनों में अत्यंत अधिक मात्रा में क्ष किरणें निकलजी हैं अतः उनके प्रभाव क्षेत्र से दूर ही रहना चाहिये।
संक्रमित स्थानों पर एग्जास्ट पंखे लगे रहते है। जो संक्रमित वायु को बाहर फेंकते रहते है। फिर भी वहां कम प्रतिरोधक क्षमता वाले मरीजो को नहीं जाना चाहिये।

मेरा जलना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उसकी उन्नति होती है मैं जलता हँू।
जलता हँू शीशे की तरह पिघलता हँू।।
वह सोने की तरह गर्व से बिकता है।
धोका जाकर मैं लोहे में ढलता हँू।
मन कहता है हार मान लँू मैं थक कर।
हार मान कर नीचा सिर कर चलता हँू।।
आज पूछता है परिचय ऊपर जाकर
पछता कर अपने हाथों को मलता हँू।।
धक्के देने की मत कृपा करो मुझ पर।
दरवाजा मालूम है स्वयं निकलता हँू।

पुराना रिश्ता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उसका उस बुत पर मर जाना लगता है
कब्रगाह जाना पहचाना लगता है
उनका सुन्दर बुत परदे में लगता है
धरती में एक गड़ा खजाना लगता है
बढ़ते दामों पर ज्यादा हंसने वालो
तुमने ही खा लिया खजाना लगता है
बच्चों की मीठी तुतलाहट कानों में
मध्यम सुर में एक तराना लगता है
जब सुगंध कपड़ो में आई, दोस्त मेरा
मुझसे मिलने हुआ रवाना लगता है
पहले पहल हुआ मिलना हो गये खफा
मुझसे रिश्ता बहुत पुराना लगता है

क्या कहिये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अपना बीमारों से हाल क्या कहिये ?
उससे होता है मलाल क्या कहिये ?
जिसने रास्ते में कांटे बिखराये
करता है फिर वह सवाल क्या कहिये ?
छूता हूँ तो गुल पत्थर हो
बदकिस्मती का है कमाल क्या कहिये
पेट की चोंच की दानो की तरफ
डाला दानों में जाल क्या कहिये
दुकानदार तो दिखते नहीं बजारों में
बाजार बन गया दलाल क्या कहिये
वह खिजा जिससे पंक्तियां ही न थी
खिले हैं फूल डाल डाल क्या कहिये
फटे कपड़ो का शिकंजा है तेज कुनबे पर
खींचती भूख है अब सबकी खाल कहिये
फूल को भौरा खींचता है बड़ी शिद्दत से
है जवानी का कमाल क्या कहिये
खाना घर में मिले न मिले, दिल ये
इश्क में माला माल क्या कहिये

नफरत की एक लहर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नफरत की एक लहर रात भर बहती है
उसमें मुझ से दबी दबी जो रहती है
मैनें कहा रहो पिंजरे घर में तुम
ढक लंूगी खुद को, नकाब से कहती है
जली कटी जो उसे सुनाऊँ, अन्दर की
खुद सूरत सी एक इमारत ढहती है
मेरी जलती नजरों को दिन रातों में
अपनी ठंडी नजरों से वह सहती है
घर आता हँू मैं, वह चुप हो जाती है
अजनबियों से कितनी बातें करती है

रख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तन सीपी मन मोती रख
नहीं रूह को सोती रख
मेले में उसको ले जा
मत बिटिया को रोती रख

जो बख्शीस इनायत दे/उसके हाथ फिरौती रख
जिस दिन तनखा तुझे मिले/पहले अलग कटौती रख
बलिदान दै के मेले से/एक कुरता एक धोती रख
उनकी कड़वी जुबां चले/अपनी जुबां सरोती रख

को

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जाला बना फसाने को
जन्म दिया अफसाने को
परकोटे में भी छोड़ो
रस्ता आने जाने को
बिता जिन्दगी मेले में
भूलों नहीं ठिकानें को
दीवानों में र व देखो
मारो नहीं दीवानों को
सभी मदरसे कहते है

खुद को बेच कमाने को
घर के अंदर भी जाओ
रख कर परे जमाने को

प्रगाढ़ मित्रता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक था अनिल एक था विमल। दोनो शासकीय प्राथमिक शाला चंदनगांव में अध्ययनरत थे। जब भी दोनो को अच्छा खाने का मन होता तो किसी लंगर या भंडारे में चले जाते थे बड़े अच्छे दिन थे। विमल को उचकने का शौक था। यह शौक उसे आर्थिक विपन्नता के कारण हुआ था। वह पिता से कहा करता था कि उचकते उचकते वह पैसे वाले हो जायेगा और फिर पिता और मां का चैथापन सुखमय बीतेगा। उसके आश्वासनों से उसके अम्मा बापू सपनों में खो जाते थे। वह नहीं समझ पाता था कि वह उसके अम्मा बापू को धोखा दे रहा है। यहीं से उसने लोगो को धोखा देना सीखा है।

उसने देखा कि उचकने का सही पटिया तो विकलांग ही है। उन्हीेें के सर पर से उचक कर वह ऊपर पहंुच सकता है। अधिकतर उचकने वाले बच्चे, विकलांगो, विधवाओं और बूढ़ो पर उचक कर ऊपर पहुंचे है। वह विकलांगो के ऊपर उचकने लगा। कुछ ऊपर पहंुचा तो उसने उचकने का क्षेत्र विस्तृत किया वह गांव से शहर आ गया। मगर अनिल का आना जाना उसके स्नानगृह तक बना रहा।

विमल कुछ उचक कर ऊपर पहंुचा तो उसने अनिल को ड्राइंग रूप में बिठालना चालू कर दिया। अनिल उसके लिये एक प्रदर्शन की वस्तु बन गया। विमल ने उसके मां-बाप को सुनहरे पिंजरे में कैद कर दिया था। मगर मां-बाप प्रसन्न थे कि उन्हेंें दो वक्त के खाने की असुरक्षा नहीं थी। अमीर आदमियों की महफिल में वह अनिल को ले जाता और प्रदर्शित करता था कि वह उसके गरीब मित्रों को भूला नहीं था जैसे कि भगवान कृष्ण नहीं भूले थे।

अनिल जब भी विमल के मां-बाप से मिलता था तो उसे बहुत दुख होता, मगर मां-बाप खुश थे कि उनका लड़का धीरे-धीरे अमीर होता जा रहा है।

विमल की उचकने की काबिलियत को देख कर एक मम्मी पापा ने उनकी इकलौती लड़की की शादी विमल से कर दी। विमल उचकने की प्रतियोगिता में लगातार उतीर्ण होता जा रहा था। विमल के घर जो दीवार नौ इंच की होती थी वह बारह इंच की हो गई थी। अब अनिल को बराण्डा में बिठाया जाने लगा। मगर अनिल ने दोस्ती नहीं तोड़ी। इधर उचकने की प्रतिभा ने उसे पहले राज्य का और फिर देश को पुरस्कार दिलाना प्रारंभ कर दिये थे। अनिल को अब बड़े दरवाजे से ही टकराया जाने लगा। अनिल भी कोई भीख नहीं मांगता था। अपनी रोजी रोटी इज्जत से कमा ही लेता था। एक बार विकलांगो ने विमल की पिटाई बीच बाजार में लगा दी। आखिर कब तक वे उनके पेट में पलने वाले उस कीडे को ढोते ?

विमल को मौके का फायदा उठाना खूब आता था। उसने प्रचारित करवा दिया था कि कुछ स्वार्थी तत्वों ने उसको विकलांगो की मलाई से रोकने के लिये यह घृणित कार्य करवाया है। उनके इस घृणित प्रयास से वह हतोत्साहित नहीं हुआ है। वह और जोर से विकलांगो की सेवा में लग जायेगा। विकलांग उसकी इस मक्कारी से हतप्रत रह गये।

अनिल और विमल का संपर्क अब फोन तक ही सीमित रह गया था, मगर होता रहता था। विमल की इस त्याग भरी पिटाई को विदेशी माध्यम ने अधिक उछाला। विमल का नामांकन सर्वोच्च अन्त्तराष्ट्रीय पुरस्कार के लिये हो गया। विमल ने भी लाबीइंग के लिये उसके ससुराल वालो को लगा दिया था। तब तक देश उसकी मक्कारी को जान गया था। देश ने प्रयत्न किया कि उसे अन्त्तराष्ट्रीय पुरस्कार न मिले। मगर देश हार गया, और विमल जीत गया। विमल ने यह अन्त्तराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर देश का नाम ऊँचा कर दिया। उस पुरस्कार समारोह में देश के प्रधानमंत्री नहीं पहुंचे।

मगर उस बेशरम ने वह पुरस्कार विश्व के विकलांगो और देश को समर्पित कर दिया। देश की भोली “प्रेस” और भोली जनता ने उसे बधाइयाँ भेजना प्रारंभ कर दिया।

अनिल विमल की इस उपलब्धि पर फूला नहीं समझा। आखिर वह उसके बचपन का लंगर और भंडारे का दोस्त था। अनिल ने बधाई देने के लिये विमल को फोन किया

तो फोन उसके पी.ए. ने उठाया। जो पी.ए. अनिल का फोन सीधे साहब को देता था अब पूछने लगा "आप कौन"।

अनिल ने कहा "जी विमल से कहियेगा कि वह बचपन का दोस्त अनिल बोेल रहा है। "पी.ए. बोला" पुरस्कार के बाद साहब के कई सगे चाचाजी, कई सगे भाई और कई पिता जैसे लोग छिन्दवाड़ा में पैदा हो गये है। फिलहाल तो साहब दूरदर्शन में उनके पुरस्कार का "कवरेज" देख रहे है। साहब को मैं आपका बधाई संदेश पहंुचा दंूगा। वे चाहेंगे तो आपको धन्यवाद ज्ञापन देंगे मगर आज दो महिने हो गये विमल ने अनिल को जवाब नहीं दिया। इस तरह एक प्रगाढ मित्रता टूट गई।

कई खुदा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रास्ते में लोग कई अजमाये हैं।
कई खुदा मुझको यहाँ तक लाये हैं।।
कितनों ने की है मेरी तारीफ और।

कितनों के मैनें कसीदे गाये हैं।।

खुदा जब तने, मुझे धोखा दिया।

मैनें कई लोगो से धोखे खाये हैं।

मैं अलग बिल्कुल यहां रह गया हूँ।

मैनें कितने ही अजीज अजमायें हैं।।

किनारा दिखता नहीं है सामने।

हर कदम पर जबकि साहिल आये हैं।।

मेरा घर खाली नहीं हो रहा है।

गैरों ने कोने कई हथिआयें हैं।।

मुझको तन्हा भटकना है जिन्दंगी।

साथ क्यों थे अजीजो के सायें हैं ?।।

हवा पर इबारत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ना जानें क्यों कुनबें को खुदा से शिकायत है

हर घर में एक तन्दुरूस्त खुदा की इनायत है।।

मतलब के लिये अपने वह देता है दावतें

कहता हैं खाना खिलाना यह भी इबादत है

कानून की छतरी में वे गुनाह करते हैं

हम चलें कानून से हम को हिदायत है

धीरे-धीरे आप से वे तुम में आ गये,
तुम से तू ही बरसने वाली नियामत है
धरती की गंध पेड़ो से फूलो पे आई है
फूलों की गंध हवा पे सुंदर है इबारत है

आजम खान का रहस्योद्‌घाटन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश का एक मंत्री है आजम खान। जिसने दूर दर्शन पर ढीटता से कहा कि मुलायम सिंह के पिचहत्तर वे जन्म दिन समारोह का पैसा दाऊद इब्राहीम, अबू सलेम तालिबान और मृत आतंकवादीयों के परिवारों से मिला है। हमारी नपंुसक सरकार इस उद्‌घाटन की पूछताछ भी नहीं कर रही। अपराधी स्वयं कह रहा है कि वह देश द्रोही है। फिर भी उसे जेल में नहीं डाला जा रहा और शूट नहीं किया जा रहा। न ही मुलायम सिंह से पूछा जा रहा है कि आयोजन के लिये ये अरबो रूपये कहां से आये। क्या यह जनता का पैसा है, या दाऊद इब्राहीम या तालिबान आदि से लिया गया है जैसा कि उनका एक जिम्मेदार मंत्री कह रहा है। यदि सचमुच ऐसा हुआ है तो यह एक अति गंभीर बात है। चंूकि न तो यू.पी. के मुख्यमंत्री अखिलेश सिंह और उसके पिता मुलायम सिंह का उस विषय में कोई खण्डन आया है अतः वैसा ही हुआ होगा। और यदि जनता का पैसा एक आदमी के जन्म दिन समारोह में बहाया गया है तब भी यह

एक गंभीर बात है। उस पैसे का स्त्रोत मालूम करना ही चाहिये और माननीय न्यायालय को इसका स्वयं संज्ञान लेना चाहिये क्योंकि उच्चतम न्यायालय हमारे संविधान की संरक्षक है।

यदि आजम खाने ने उक्त व्यक्तव्य मजाक या व्यंग्य में भी दिया है तब भी जांच पड़ताल तो होनी ही चाहिये और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को राष्ट्र से क्षमा मांगना चाहिये और ऐसे मंत्री को निष्काशित कर देना चाहिये। आजम खान सचमुच ही दाऊद इब्राहीम के संपर्क में होंगे। उनके द्वारा दाऊद इब्राहीम तक पहँुचा जा सकता है। वे दाऊइ इब्राहीम से पैसे लेकर भारत की अर्थ व्यवस्था को कमजोर करते रहे है। यदि ईराक या ईरान की सरकार या अमेरिका उनसे पूछताछ करे तो उनसे तालिबान के कई रहस्य मालूम पड़ सकते है। हो सकता है कि मुलायम सिंह और अखिलेश सिंह भी आतंकवादियों के संपर्क में हो। भारत सरकार को इन पर भी दबाव डालकर दाऊद इब्राहीम का पता लगाना चाहिये। इनके द्वारा अन्य आतंकवादियों का पता भी लग सकता है एवं मुम्बई की आतंकवादी घटनाओं का पता लग सकता है।

आश्चर्य है कि भारत के चैथे स्तम्भो में से केवल कुछेक ने ही आजमखान के खिलाफ बोलने की हिम्मत दिखाई है। कश्मीर के अलगावादियों से भी आजमखान के संबंध हो सकते है। मुझे तो आश्चर्य होता है कि और आर.एस.एस.को क्या सांप सूंघ गया है तो उसने आजम खान के इस वक्तव्य की निंदा नहीं की। हमें गर्व होना चाहिये उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पर जो उन्होने आजम खान के इस व्यक्तव्य की भत्र्सना की है।

आश्चर्य तो तब होता है जब सिंघल या तोगडिया इस विषय पर आग नहीं उगलते। प्रधानमंत्री आस्ट्रेलिया में भारत की अच्छाइयां गिनाने के बजाय इस बात पर आस्ट्रेलिया में रोनो रोते है कि भारतीय लोटा लेकर दिशा मैदान को जाते है। उन्हें शौचालय बनवाना प्रधानमंत्री की प्राथमिकता है। उन्हें भारत की सुरक्षा की चिंता नहीं है। वे शौचालयों के बारे में चिंतित है। शौचालयों का भार देश की सुरक्षा के भार से अधिक है। हमारे लड़ाकू विमान तोपे, टेंक आदि झाड फूंक कर छब्बीस जनवरी और पन्द्रह अगस्त पर दिल्ली में प्रदर्शनी के काम में ही आते है सीमा पर उनके मंुह में सफेद झंडा ठूस दिया जाता है हमारे देश के सैनिको के हाथ पीछे से बांध दिये जाते है और उन्हें दुश्मनों की गोलियां खाने के लिये खड़ा कर दिया जाता है। ऐसे माहौल में यदि दाऊद इब्राहीम खुद चांदनी चैक पर खुश होकर चिल्लाने लगे कि वह दाऊद इब्राहीम है तब सरकार जेके एण्डरसन की तरह उसे स्टेट गेस्ट बनाकर फिर पाकिस्तान भेज देगी। इस बारे में कांग्रेस सपा, बसपा या मुस्लिम लीग कुछ कहेगी इसकी तो

अपनी अपेक्षा करना ही निरर्थक है। संतोष की बात है कि इन पार्टियों ने इस खुले देश द्रोह की प्रशंसा की थी।

जम्मू कश्मीर में सत्तर प्रतिशत मतदान के मायने

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जम्मू कश्मीर में पहले चरण के मायने दूरगामी एवं विस्तृत है। इसे केवल आतंकवादियों के पराजय के संकुचित रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिये। यह सत्तर प्रतिशत मतदान झारखण्ड के अड़सठ प्रतिशत मतदान से अधिक है। यह जम्मू कश्मीर का मतदान वहां के मतदाताओं की जागरूकता को प्रदर्शित करता है। वे अपने क्षेत्र की प्रगति चाहते है। उन्होने अलगाववादियों को मंुहतोड़ जवाब दे दिया है उन्होने स्पष्ट रूप से अलगाववादियो को बतला दिया है कि वे भारत के अभिन्न अंग है। वे भारत के अभिन्न अंग रहेंगे।

जम्मू कश्मीर के जागरूक मतदाताओं ने पाकिस्तान के स्पष्ट संदेश दे दिया है कि वह कश्मीर और भारत के मामले में राग अलापना बंद कर दे। कश्मीर भारत का ही एक अभिन्न भाग है और कश्मीरी आवाम को पाकिस्तान या संयुक्त राष्ट्र का या अमेरिका का हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है और वह स्वविवेक जैसे मूर्खातापूर्ण सुझाव का राग अलापना बंद कर दें।

इस बड़े हुये प्रतिशत ने आतंकवादियों के गाल पर कस कर तमाचा मारा है। उन्होने स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवादी और कुछ नहीं, कुछ गुण्डे ही है जैसे नक्सली या वोडो आतंकवादी है। उन्हें कश्मीरी आवाम से जोड़ कर नहीं देखना चाहिये और न ही आंतकवादियों को कश्मीरी आवाम का कोई समथर्न प्राप्त है। सत्तर प्रतिशत मतदान ने विश्व को बतला दिया कि पाकिस्तान कश्मीर के मामले में विक्षिप्त मानसिकता का शिकार है। कश्मीर का जिक्र धारा 370 के बिना अधूरा लगता है। जम्मू कश्मीर के तत्कालीन राजा के साथ भारत सरकार की दो राष्ट्रध्वज दो राष्ट्रगीत और दो प्रधानमंत्रियों की संधि हुई थी। यह संधि एक चुने हुए प्रधानमंत्री के एक राजा के साथ हुई थी। एक आवाम की दूसरे आवाम के साथ नहीं हुई थी। अब जब तीनों शर्ते यथा दो राष्ट्रध्वज दो राष्ट्रगीत एवं दो प्रधानमंत्रियों की शर्त विलोपित हो चुकी है तो धारा 370 भी विलोपित की जानी चाहिये। धारा 370 से आवाम के बजाय कश्मीर के मुख्यमंत्रियों एवं मंत्रिमंण्डल का लाभ अधिक होता है। धारा 370 रहते कश्मीरी आवाम भारत की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाता। वहां कारखाने नहीं डाले जा सकते

जिससे वहां के नवयुवको में बेरोजगारी बहुत है। धारा 370 के विलोपित होने से वहां आतंकवाद की समस्या पर काबू पाया जा सकेगा। सबसे बड़ा लाभ आवाम को यह होगा कि वहां सेना की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। सेना प्रान्त के अंदर न रह कर मात्र सीमाओं पर रहेगी। इसकी पहल वहां के मंत्रिमण्डल को ही करनी पड़ेगी जिससे कश्मीरी आवाम धारा 370 की गुलामी से छूट सके और कश्मीर प्रगति के पथ पर चलना आरम्भ कर दे।

यह अपेक्षित ही था कि पाकिस्तान पर पलने वाले हाफिज सईद जैसे पागल कुत्ते हमारे प्रधानमंत्री की शान में अपशब्द उगलते हुये यहां वहां पाकिस्तान का भारत के विरूद्ध "प्रोक्सीवार" तेज कर देंगे। भारत को भी याद रखना चाहिये कि सरहदो की आग घी के छींटो से नहीं बुझेगी। उसे बुझाने के लिये तो पाकिस्तान की तरफ आग का दरिया ही बहाना पडेगा। यदि भारत के किसी प्रान्त में सत्तर प्रतिशत से अधिक मतदान होता है तो पाकिस्तान के पेट में मरूढ क्यों होती है ? यह बात समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिये।

एकोसद् विप्रो बहुधा वदन्ति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सच एक है (मगर) विद्धान लोग उसे विविध प्रकार से परिभाषित करते है इस वाक्य में विद्वानों को भी परिभाषा दी गई है। विद्वान वह है जो सच मात्र की व्याख्या अलग-अलग तरह से करता है। सच वह है जो तीनो कालो में अपरिवर्तित रहता है। मगर विद्वान लोग अलग-अलग कालों में बदलते रहते है अतः सच की व्याख्या व्याख्या कालानुसार करते है। फिर सच एक है पर विद्वान अनेक अतः सच की परिभाषायें विभिन्न बुद्धियों के कारण विभिन्न हो जाती है।

विद्वान लोग एक सच को अलग-अलग तरह से परिभाषित न करें तो तर्को का समन्वय न होकर एक सच तक नहीं पहुंच सकते क्योंकि सच का ज्ञान न हो। अतः एक सच को से अलग-अलग तरह से समझाया जाता है फिर विद्वानों की बुद्धि का स्तर भी अलग-अलग रहता है अतः समय के साथ साथ एक ही विद्वान एक सच को अलग-अलग प्रकार से समझाते है यदि सत् एक है तो असत् कई होते होंगे। भगवान कृष्ण ने श्रीमद्भगवत गीताजी में कहा भी है।

"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः

उभयोरपि दृष्टोडन्तस्त्वन्योः तत्व दर्शियः
यानि असत् का तो अस्तित्व नहीं होता और सत का अभाव नहीं होता । तत्वदर्शियों ने उन दोनो के अंदर को देखा हुआ है। जब असत का अस्तित्व ही नहीं होता तो उसकी विवेचना कैसे हो जाती है। यह सब बुद्धि की स्वयं की विवेचना है क्योंकि तत्व दर्शियो की निश्चात्मक बुद्धि होती है और अनिश्चय रखने वालो की बुद्धि कई शाखाओं वाली होती है।

ब्रह्नन छाया और प्रकाश दोनो रूपों में है। सर्वंखल्वमिदं ब्रह्नना छाया तमौ ब्रह्ननविदो वदन्ति। तो जो है और जो नहीं है वह सब ब्रह्नन ही है। वही माया है और वही परमतत्व है। वह एक ही दोनो रूपों में भासता है। परम ज्योति और परम अंधकार वह सब ब्रह्नन ही है हम यह नहीं कह सकते कि यहां तक ब्रह्नन है और इसके आगे ब्रह्नन नहीं है कुछ और है। इससे द्वैत भाव आ जायेगा। अतः एकोसद्विप्रो बहुधा वदन्ति।

सत का मतलब होता है अस्तित्व शुभ सच। उसका गुण है कि सच्चिदानंद। वह अस्तित्वमान है। वह अस्तित्व जड़ नहीं हैं चैतन्य है। वह चैतन्य अवसाद मय नहीं है, आनंदमय है। श्रीमद्भगवदगीता में भगवान ने कहा है कि सद्भाव और साधुभाव में जो मानसिक स्थिति होती है उसे "सद" कहा जाता है वह आनन्द मय स्थिति होती है गीता जी के अध्याय 17 श्लोक 23 से कहा है "ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रहनणस्त्रिविधः स्मृतः ब्राहनणास्तेन वेदाश्व यज्ञाश्च विहिताः पुरीः यानि ब्रहन को तत्सम नाम से याद किया जाता है। उसी से पूर्णकाल में विद्वान वेद और यज्ञ बने। यानि सच ज्ञान मय है। चेतना ज्ञानमय है।

प्रकृति और पुरूष दोनो अनादि है पर प्रकृति जड़ है एवं पुरूष चैतन्य पर प्रकृति पुरूष के सकाश में चेतन्य प्रतीत होती है प्रकृति पुरूष का ही अंश है अतः दोनो सत् है।

धुओं से डरती आग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मिट गई तारीख अब दिन वो नहीं रहा।
जैसा सोचा था नजारा हो नहीं रहा।।

रास्ते मंजिल के अब सीधे नहीं रहे।
रास्ते का निशां देखो सोचो नहीं रहा
हालात अब लड़ने लगे आपस में इस कदर।
हाथियों पर महावत मानों नहीं रहा।।
सरहदो की आग पानी से नहीं बुझना।
उसको दरिया आग का क्यों धो नहीं रहा।।
नजारा तोपों का दिल्ली में बहुत देखा।
सरहदों पर उनका मुंह खुल क्यों नहीं रहा।।
धुयें से डरने लगी है आग इस कदर।
आग में भी खून काटो तो नहीं रहा।।

प्रधानमंत्री जन धन योजना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री की महत्वकांक्षा है कि भारत के ही नागरिक का पैसा इस योजना का माध्यम से बैंको में खंीेंचा जा सके। इसके लिये कई पुरानी आकर्षण योजनाओं को नया रूप दिया गया जैसे दुर्घटना बीमा योजना जो पहले से ही अस्तित्व में है। जनधन योजना से ताले में गरीबो का बंद पैसा देश की मुख्य धारा मे लाया जा सकेगा। यह पैसा देश की योजनाओं में लगाया जा सकेगा।

इससे कम पढ़े लिखे लोगो को बैकिंग की आदत पड़ जायेगी। उनका पैसा सुरक्षित हो जायेगा। इस योजना के साथ साथ बैंको में पर्याप्त लाकर्स का इंतजाम भी हो जाता तो सोने में सुहागा होता।

इस व्यवस्था से बैंको की लचर व्यवस्थायें और लड़खड़ाने लगेंगी। जब तक सुचारू बैंकिंग की ग्यारन्टी नहीं दी जाती, यह व्यवस्था देश के कार्य घंटो पर बुरा प्रभाव डालेगी। अभी भी सारी शक्तियो को स्टेट बैंक को देने पर वहां पेंशनरों, विकलांगो और विधार्थियों की लम्बी कतारें सुबह से ही देखी जा सकती है। इस योजना के लागू होने से कार्य क्षम व्यक्तियों का समय नष्ट होने लगेगा और प्रतिदिन धक्के खा कर उन्हें प्रतिदिन अपमान सहना पड़ेगा।

जिन भ्रष्ट कर्मचारियों की सम्पति राजसात कर उन्हें सार्वजनिक प्रताड़ना मिलना चाहिये वे तो न्यायालय को मोहरा बना कर बचे रहते है। आज सरकारी कर्मचारियों का वेतन लाखो रूपये प्रतिमाह कर देने पर भी भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। हालात "गंदे नालों का भाई दुर्गन्ध" की तरह बदतर होते जा रहे है।

दूसरी ओर स्टेट बैंक पर कार्य का बोझ लादते रहने के बाद भी उनके वेतन संबंधी मांगो को सरकार सहानुभूति पूर्वक सुन भी नहीं रही है। आज कार्याधिक्य के कारण अधिकतर "आॅन द काउन्टर" कर्मचारी चिड़ चिडे होते जा रहे है। चूँकि अभी भी भारतीयों का बड़ा प्रतिशत साक्षर नहीं है अतः उन पर होने वाले "ई" अपराध बढ़ जावेंगे। फिर बावरी मस्जिद रामलला मंदिर की तरह न्याय पाने में पीढ़ियों गुजर जावेंगी।

स्टेट बैंक समूह नये प्रयोग करने का तरीका (शिक्षा विभाग की तरह) एक माध्यम बनती जा रही है। कड़ी में एक और प्रयोग किया जा रहा है। मशीन में नगदी डालो तो एकाउन्ट में जमा हो जाता है। यह मशीन लाखों लोगो का पैसा बगैर एकाउन्ट में जमा किये हजम कर चुकी है। जब सीधा साधा ग्राहक बैंक कर्मचारियो से शिकायत करने जाता है, तो नोट नकली था कह कर उन्हें डराया और धमकाया जाता है।
इस तरह प्रधानमंत्री जनधन योजना के सुचारू रूप से चलने में कई व्यौहारिक अड़चने आना है। बेहतर तो यह होता कि पहले यह सीमित क्षेत्र में सीमित समय के लिये लागू की जाती फिर इस पर विस्तृत कार्य योजना बनाई जाती फिर इसे लागू किया जाता।

कर लो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बनाने एक धन दो ऋण तो इकट्ठे कर लो
मौत के आने पहले खूब जम हंसी ठ्ठठे कर लो
ये तो माना कि रहने को महल रखते हो
मगर जब बट रहे, कुछ और भी पट्टे करलो
हाकी के वेट है, कुछ बेस बाल के मुग्दर
मेरी मानों तो साथ इकट्ठे कट्टे करलो
साधुओं के वेश रख कर जेब में पिस्टल भी रखो
नगर के गुण्डे भी चेलो की तरह पट्ढे कर लो
देशी चेलनियां भी रहे नाचते उपदेशो में।
साथ में खर्च कर कुछ गोरे दुपट्टे कर लो।।
श्रद्धा से मूर्ख कुछ दें तो दबा लो उनको
साथ में कुछ सट्टे करो और झपट्टे करलो

ठंडी ताप रही

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ठंड ठिठुरती ताप रही दोपहरी।
रात कहीं मुश्किल कुत्तो पर
पिल्लें चिपके सोये।
बिल्ली ढंूडे घर में गद्दी,
रातों कुत्ता रोये।
ठंडी ओस गिरे उन सब पर
वह भी निष्ठुर ठहरी
दिन में ठंडी ताप रहीं दो पहरी।।
आवारा गायें रातों को,
बेवश ठंडी सहतीं।
कहीं देखती चार दीवारी,
ओड़ आड़ को रहतीं।
मैदानों में ठंड बरसती
ओले से भी गहरी।
दिन में ठंडी ताप रही दोपहरी।।
पूरब से दिन बरसा क्रमशः
हलचल जागी धीरे।
ढंूढ रहे सब धूप सुबह की
हिलने लगे सभी रे
दाना पानी हेतु लेकर
डरती आई गिलहरी
दिन में ठंडी ताप रही दोपहरी
रातो को जो चुप थे पक्षी
लगे चहकने दिन में
पशु पक्षी आहार ढूढ़ने।
यहां वहा छिनछिन मे
हुई शाम फिर आ जायेगी
रात हठी जो ठहरी
इस से ताप रही दोपहरी।।
धरती है बर्फीला गढ़ढा।

नीला गमन रजाइ।
मरा भिखारी उस रजाई में
सुबह भीड़ घिर आई
कलम लिये हाथो में आकर
जांच रहा है प्रहरी
ठंड बेफिकर ताप रही दोपहरी

सेमी फायनल का देश

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जी, मैं सारे जहा ॅ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा की ही बात कर रहा हॅू। ऐसा लगता है कि वह सेमी फायनल्स का गुलिस्तां है। यहां से जब हमारे खिलाड़ियों को अन्त्तराष्ट्रीय स्पर्धा में भेजा जाता है तो कह दिया जाता है कि उन्हें मात्र सेमीफायनल तक ही पहुंचने की आजादी है। यदि वे फायनल में पहुॅचे तो उन्हें झूठे प्रकरणों में फंसा दिया जायेगा या उनका वल्डकम कस्टम पर ही छीन लिया जायेगा और उन्हें स्मगलिंग के प्रकरणों में फंसा दिया जायेगा।

या फिर चीन की सरकार से प्रार्थना की जायेगी कि वह उन्हें वहां की नागरिकता प्रदान कर दे यानि कि उनकी नागरिकता छीन ली जायेगी। उनकी पद्‌मश्री की उपाधि छीन कर उन्हें छदम श्री की उपाधि से नवाज दिया जायेगा। सारे चयनकर्ता देशी कोच फेडरेशन के अधिकारी खेल सचिव और खेल मंत्री "मेरीकाम" नामक देश द्रोही से नाराज है जिसने किन्ही शर्मा जी नामक अधिकारी के कपड़े उतार दिये। सेमी फायनल तक पहुंचने पर वे खिलाड़ियों से खुश रहते है कि चलो जब तक उन्हें श्रीमती चयन शर्मा और अन्य चयनकर्ताओं को बेफिक्री से विदेश नामक पार्क में घूमने मिलेगा। खिलाड़ी फायनल में पहुंचा नहीं कि खेल ग्राम सपरिवार वापिस आना पड़ता है। सोचते है, कहा ॅ दुष्ट ने फंसा दिया। अब उसके राष्ट्रपति जी से मिलने का प्रबन्ध करो। मामला सेमी फायनल तक ही निपर्ट जाता तो अच्छा था। कह सकते थे कि रेफरी बेईमान था, वह भारत की आर्थिक प्रगति नहीं देखना चाहता। जो फायनल में पहुंच गये है वे भारत के भ्रष्टाचार से जलते है चयनकर्ता प्रार्थना करते है कि हे भगवान खेल ग्राम में भारत का झंडा फहराने के बजाय हमारे देश का खिलाड़ी "डोप टेस्ट" में ही फंस जाये।

वे मात्र सेमीफायनल तक खिलाडियों के पहुंचने की तैयारी भारत वर्ष से ही कर देते है। पहले तो भाई भजीता वाद नामक दाव लगाया जाता है यानि कि चयनकर्ताओं और खिलाडियों का मैच चालू हो जाता है। फिर खिलाडियों को खेलग्राम में घोड़ो के अस्तबल में ठहराया जाता है। आखिर घोड़ो से ज्यादा तेज दौड़ने वाला जानवर कौन सा

होता है ? उन्हें चने और खली युक्त खाना दिया जाता है। यदि इसके बाद भी वे फायनल तक पहंुच गये तो उन्हें वापिस भेजने कर जुगाड़ किया जाता है या उनसे अनुबंध करवा लिया जाता है कि वे तामपत्र से आगे नहीं बढेंगें। ताम्रपत्र तक पहुंचने के बाद उन्हें रोने की ट्रेनिंग दी जाती है कि वे अगले ओलम्पिक में स्वर्ण पदक का प्रयत्न जरूर करेंगे। तब तक वे बेचारे बूढे हो जाते है।

चयनकर्ता अभिनव बिन्द्रा, मेरीकाम सायना मिर्जा जैसे खिलाड़ियों से नाराज रहते है जो भारत की छवि बदलने की जुर्रत करते है। क्या जरूरत है पहलवानों को प्रतिस्पर्धा में ही देशो के पहलवानों को हराने की ? क्या इसी दिन के लिये तुम्हे वादामें खिलाई थी सुदेश कुमार

जब सरकारें पदक जीतने वालो को नौकरी, इनाम जमीन या खेल रत्नों से नवाजती है तो उन्हें दुख होता है। सोचते है कि उन्होने कहां भयंकर भूले कर दी है। उन्हें अनुप्रास मालूम नहीं रहते जैसे दन्त्यानुप्रास लोटानुप्रास छेकानुप्रास आदि। कोई काम नहीं आया अन्त्यानुप्रास। अलंकार याद आता है कि भगवान भक्तो की भयंकर भूल भगाइये।

हमारा देश उत्पादन के मामले में भी दूसरे या तीसरे नम्बर पर ही रहता है। अमेरिका और चीन हमें पछाड़ देते है। हमारे खाद्य अधिकारी बहुत प्रयत्न करते है कि हम उत्पादन के मामले में प्रथम न हो जायें और वे सफल भी हो जाते है।

हमारे देश के चपरासियों के घर तक से करोड़ो रूपये बरामद होते है। शर्म करो ईमानदार अधिकारियों और कर्मचारियों। बेचारे आयकर अधिकारियों को अब चपरासियों के घर तक छापा डालना पड़ रहा है। ऐसा कभी सोचा था आयकर विभाग ने ? हमारे बाजारों में अब हमारी चीजे नहीं मिलती। अब तो हमारे टकसाल के रूपये भी नहीं मिलते।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिसे स्वयं के प्रयत्नों से अन्तराष्ट्रीय स्पर्धाओं पहुंचना हो तो पहुंचे, हम तो मात्र भ्रष्टाचार नामक खेल खेलते रहेंगें। हमारे खिलाड़ी निशानेबाजी, मुक्केबाजी, पहलवानी जैसे खेल में जरूर स्वर्ण पदक ला सकते है क्योंकि उन्हें लगता है कि सामने वाला चयनकर्ता है अतः उसे तबीयत से धुन दो, अन्यथा तो हम वर्ल्ड क्लास तो क्या थर्ड क्लास खिलाड़ी भी पैदा कर दे तो बहुत है।

हमारे देश के खिलाड़ी जब अन्तराष्ट्रीय स्पद्र्धाओं में जाते है तो उन्हें हिदायत दी जाती है कि वे स्पर्धाओं में प्रथम आकर अन्तराष्ट्रीय सद्भावना को न बिगाड़े। हम नहीं चाहते कि हमारे किसी देश से संबंध बिगडे। सेमी फायनल तक ठीक है। उसके आगे लाल रेखायें है। थुल थुल शरीर वाले खिलाड़ी सेमीफायनल तक पहुंच जाये तो

बहुत है। विश्व स्तरीय कोचो को भी बतला दिया जाता है कि हमारे खिलाड़ियों को सेमीफायनल तक ही पहुंचना सिखायें।

सेमी फायनलों की इज्जत देख कर विश्वनाथन आनन्द और साइना नेहवाल जैसे खिलाड़ी भी जानबूझ कर संघर्ष पूर्ण तरीके से हारने लगे है। देखना एकदिन नरेन्द्र मोदी भी जानबूझ कर कोई ब्लन्डर कर के देश का गौरव बढ़ा देंगे।

क्या धारा 309 विलोपित कर देनी चाहिए

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अभी तक आत्महत्या करना एक दण्डनीय अपराध था। सरकार संसद में प्रस्ताव लोकर इसे विलोपित करना चाह रही है। यानि आत्महत्या का प्रयास एक अपराध नहीं माना जायेगा। क्या धारा तीन सौ नौ समाप्त कर आत्महत्या को बढ़ावा देने तो नहीं जा रहे। आत्महत्या वैदिक काल से ही वर्जनीय अपराध है। ईशावाश्योपनिषद में कहा गया है।

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता
तान्सते प्रेत्यामि गछन्ति ये के च आत्म हनो जना।

यानि जो लोक गहनअंधकार से घिरे हुये है और जहां सूर्य उदित भी नहीं होता है वहां वे लोग भर जाते है जो आत्महत्या करते है। श्रीमद् भगवद्गीता के छठे अध्यायध् के पांचवे श्लोक में भगवान कृष्ण ने कहा है

उद्वेरदात्मनात्यानं नात्मनानमवसाद्येत

आत्मेव हयात्मर्नो वन्धुरात्मेव रिपुरात्मनः

अर्थात अपने द्वारा अपना उद्वार करे, आत्मा को अवसाद में न डाले क्योंकि आत्मा ही स्वयं का मित्र और आत्मा ही स्वयं का शत्रु है।

आत्महत्या करने के लिये दो मुख्य कारक होते है यथाः

(1) कमजोर, अवसादमय व्यक्तित्व और

(2) विषम वातावरण या परिस्थितयां।

यह सही है कि आत्महत्या करने के प्रयत्न करने वाले व्यक्ति को सहानुभूति और कौउन्सिलिंग की आवश्यकता होती है। ऐसे व्यक्ति कमजोर इच्छा शक्ति वाले होते है। "मेनिक डिप्रेसिव साइकोसिस" में अवसाद से उभरने पर व्यक्ति आत्महत्या कर बैठता है। कुछ दवाइयों से भी आत्महत्या की प्रवृति बढ़ जाती है। नशे की दवाइयां लेने वालो में भी आत्महत्या की प्रवृति बढ़ जाती है। आत्महत्या करने की प्रवृति अनुवांशिक भी हो सकती है। मस्तिष्क की कुछ बीमारियों भी आत्तहत्या की प्रेरक हो सकती है।

वातावरण भी आत्महत्या के लिये उत्तरदायी हो सकता है। वातावरण का अत्याचार इतना बढ़ जाये कि व्यक्ति को उससे निजात पाने का एक ही विकल्प, आत्महत्या नजर आये तो व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। आत्महत्या के लिये इस तरह की परिस्थितियों भी पैदा की जा सकती है। अपराधी किस्म के या सेडिस्ट लोग सीधे आदमियों को आत्महत्या के लिये प्रेरित भी कर सकते है नवबंधुओं की आत्महत्याएॅ इसी श्रेणी में आती है कि दहेज या अन्य कारणो से नव विवाहताओं को लेकर इतना प्रताड़ित किया जाता है कि वे आत्महत्या ही करले। सौतेले मां बाप बच्चो को आत्महत्या के लिये विवश कर देते है

हिस्नोटाइज करके भी आत्महत्या के लिये प्रेरित किया जा सकता है। अपराधी किस्म के हाइटेक अपराधी सम्पति के लिये किसी को भी आत्महत्या के लिये प्रेरित कर सकते है। कुछ हत्याओं के लिये भी आत्महत्या का रूप दिया जा सकता है। अब, जबकि आत्महत्या करना अपराध नहीं माना जा रहा तो आत्महत्या के लिये प्रेरित करने वाली परिस्थितियों भी अपराध की श्रेणी में नहीं आयेगी। कई बार क्रूर शिक्षक बलात्कारी,क्रूर अधिकारी भी निर्बल असहाय व्यक्तियों की आत्महत्या का कारण बन जाते है। क्या इस कानून के विलोपित होने पर वे आपराधिक मानसिकता के व्यक्ति छूट नहीं जायेंगे भुखमरी के कारण कई लोग या परिवार के परिवार आत्महत्या कर लेते

है। इस धारा के विलोपित होने पर सरकार चैन की सांस लेने लगेगी। आत्महत्या की सजा को "क्वारन्टाइन" नाम दे देना चाहिये जिससे कि आत्महत्या करने वालो को उन परिस्थितियों से दूर रखा जा सके जो उसे आत्महत्या के लिये प्रेरित करता है।

व्यक्ति आत्मा हत्या की परिस्थितियों के लिये खुद जिम्मेदार हो सकता है। हिटलर खुद के बनाये जाल में इस कदर फंस गया था कि उसे आत्महत्या ही करना पड़ी। इसी तरह निर्भया काण्ड के आरोपी ने आत्महत्या कर ली थी। मेरे कहने का तात्पर्य है कि इस कानून के बनने के पहले सभी पहलुओं पर खुली बहस होनी चाहिए।

आत्महत्या करने वालो को कौंसलिंग की बात कही जा रही है। मगर कौन्सिलिंग तो उनके परिवेश यथा शिक्षको, उच्चाधिकारियों, बलात्कारियों एवं परिवार वालो के लिये ज्यादा जरूरी है जो असहाय लोगो को आत्महत्या करने के लिये प्रेरित करते है। फिर जब तक कौन्सिलिंग की व्यवस्थित अधोसंरचना विकसित नहीं की जाती जब तक क्या धारा तीन सौ नौ को विलोपिनत करना अनुचित नहीं रहेगा ?

जीवन भगवान देता है। आदमियों को उसे छीनने का हक नहीं है। जिन लोगो ने का ॅलेजो में रेगिंग का दुव्यौहार सहन नहीं किया है वे क्या जाने कि संभ्रात परिवार के बच्चों को किनी अश्लील प्रताड़ना सहन करना पड़ती है। उस समय पश्चातान वश वे आत्महत्या का प्रयत्न करते है। इस धारा के विलोपित होने पर अपराधी तो बच जायेंगे पर निरपराध होने पर अपराधी तो बच जायेंगे पर निरपराध युवक एवं युवतियां दुष्चक्र में फंस कर पुनः आत्महत्या का प्रयास करेगा या अवसाद में चला जायेगा या दुर्दान्त अपराधी बन जायेगा।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रिम झिम के अब में संयुक्त परिवार पर लेख पढ़ा उत्तम है। आज पुरानी पीढ़ी से शिकायत रहती है कि वह अपने पुराने संस्कारो से दूर होती जा रही है। इससे नई पीढ़ी को कुछ हानियाॅ भी हो रही है।

यदि हम संयुक्त परिवारों के टूटने के कारणों का विश्लेषण करें तो ज्ञात होगा कि नई पीढ़ी मजबूरी में अपनी जड़ो से अलग हो रही है। बच्चो को शिक्षा प्राप्त करने के लिए महानगरो की तरफ भागना पड़ रहा है। फिर जब उच्च शिक्षा प्राप्त कर ली तो आजीविका के लिये पुरानी पीढ़ी से अलग होना पड़ता है और आम हर मां बाप चाहते भी है कि बच्चे उच्च पदों पर नौकरी करें जो कि छोटे गांव में उपलब्ध नहीं होती है।

आजकल पति और पत्नी दोनो आर्थोपार्जन करते है। अतः शिक्षा एवं स्वयं के पैरो पर खड़े होने की विवश्ता संयुक्त परिवारो का पुराना रूप नहीं रहने दे रही है। इसके बाद भी यदि बाहर रहने वाले दम्पतियों के बच्चे होते है तो सहायता के लिये उनके माॅ-बाप पहुँच ही जाते है या माँ बाप बीमार पड़ते है तो बच्चे सेवा के लिये आ ही जाते है। अतः हम कह सकते है कि संयुक्त परिवार टूट नहीं रहे है उनका रूप ही बदलता जा रहा है।

क्या हो रहा है ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रपट पुलिस में नकली है
मगर मुकद्‌मा असली है
ऊपर नीचे हरेक जगह
अपनी अपनी ढ़पली है
झण्डे क्या है छुरियाँ है
और हमारी पसली है
भाव आसमानों पर है
नीचे हालत पतली है
चाल एक सी उनकी है
पिछली थी या अगली है
वही घिनोने चेहरे है
हमको आती मतली है
है सफेद कपड़े उनके
दिल पर काली कमली है

सूरज का हमला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गरम किरण का अमला है
ये सूरज का हमला है
अपन तर व तर गर्मी से
सूखा सूखा गमला है
नहीं झोपड़ी में पानी
रोज नहाता बंगला है
सोच रहे प्यासे पंछी
उलझा जल का मसला है

भारत देश महान मिला

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घूरे पर से पनी बीनता
भूखा एक इंसान मिला।
बगैर छतों के सड़को पर।

रातों को हिन्दुस्तान मिला
बस में, सड़को पर, कमरो में
अपनी लाज बचाने को
अबला की आॅखो में जलता
एक कैद तूफान मिला।।
रिश्वत खोरी भाई भतीजों
के कारण छत पर लटका,
नहीं नौकरी मिलने पर
एक पड़ा लिखा अरमान मिला।।
कहीं गरीबो की हड्डी के
ईंधन के ऊपर पकते
बड़ी होटलों में अमीर का
सजा हुआ पकवान मिला।।
और गांव की झोपड़ियों,
गंदे नालों की बस्ती में
आॅखों के सपनों में कल का
भारत देश महान मिला।।

शीशो के घर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

परचे जितने सरल बनेंगे।
बच्चे उतनी नकल करेंगे।।
खाई को चैड़ा करने की,

पर्वत बढ़ कर पहल करेंगे।।
अनुवादों की नकल हर जगह,
अब नकलों की नकल करेंगे
तलवारों के आगे झुक कर,
घाव शान्ति की पहल करेंगे।।
पत्थर से पत्थर लड़वा कर
शीशों के घर महल बनेंगें।।

उल्टी लटक रही है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

थोड़ी भटक रही हैं।
यारी चटक रही है।।
फोर लेन की सड़क।
जंगल सटक रही है।।
सूप में रख गांव को
बस्ती फटक रही है।।

अर्जी मेरी दफ्तर में।
उल्टी लटक रही है।।
जेब को सरकार भी,
हर दिन झटक रही है।।
नूर है कुछ भी नहीं
फिर भी महक रही है।।

पतंगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सहारे डोर के ही।
पतंगे उलझती है।।
डोर बालों के लिये आसमां पे लड़ती हैं।।
डोर से तोड़ कर
रिश्ता, पतंग गिरती है।
सहारे डोर के ही
आसमां पे चढ़ती है।।
रंग बिरंगे फूल सी,
पतंगे गगन पर है।
झूमती हैं कभी

तो वे कभी मचलती है।।
बिसात आसमां है,
मोहरे पतंगे है।
इशारा मिलने पे वे
अगली चाल चलती हैं।।
सोच को आदमी के,
गगन पर बताती है।
कभी लडती हैं कभी
मजे से ठनकतीं हैं।।
गले मिलने पे कभी
गला काट देती है।
लिपट कर गले से वे,
दूर तक उलझती है।।
हवा में उड़ने के
पहले तो संवरना देखो।
नाजनीनों की तरह
पतंगे संवरती है।।
कभी कंडील,
पतंगो के साथ रातों में।
ढुमकती झूमती,
तारों की तरह लगती हैं।।
कभी चुनरी की तरह
तेज हवा चलने पर,
पतंगे सर सरा कर
हवा में निकलती है।।
कभी तालाब में
खिलते हुये कमलों की तरह
पतंगे आसमां पर
वैसी ही निखरती है।।
नीला आसमां
सागर की तरह लगता है
पतंगे मछलियों की सी

गगन में फिसलती हैं

साहिल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब से देखा कि मौत साहिल है।
तब से बेफिकर और खुश दिल है।।
उन पे हम मर मिटें है इस हद तक
मौत अब जिन्दगी में शामिल है।।
पेड़ के जड़ो पर कुल्हाड़ी भी ।
एक तरह आदमी की कातिल है।।
खुदा बस मोमिनों में रहता है।
राम बस हिन्दुओं में दाखिल है।।
वही लादे हुये है दुनिया को।
जिसे तुम कह रहे हो, जाहिल है।।

क्यों नहीं है ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चाहत में बन्दगी जैसी क्यों नहीं है ?

जी तो रहे हैं जिन्दगी जैसी क्यों नहीं है ?
सड़के हैं साफ धूल से आकाश भरा है
इस मुल्क में सन्जोदगी जैसी क्यों नहीं है ?
जो देखो तुमको ठग रहा, अपनाया पराया
मन में तेरे पेचीदगी जैसी क्यों नहीं है ?
आजम की बेटी आज क्यों डरती है साये से
तरीख में शर्मिन्दगी जैसी क्यों नहीं हैं
लगते हैं एक दरखास्त को कई साल सरकने
दफ्तर में कुछ पावन्दिगी जैसी क्यों नहीं है

कितना ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सितारा बन के कितना चमकदार लगता है
हरेक शख्स ही उसको शिकार लगता है।।
पहुँच कर गगन पर इतिहास को छिपाता है।
लुटता पहले है फिर मददगार लगता है
अंधेरे मन के दिखावट से वह छिपा लेगा।

प्यासा तारीफ को वह बार बार लगता है।।
उसके नयनों में गमन शुरू से ही चिपका था।
जमीं का अभी तक वह कर्जदार लगता है।।
हवा से गमन तक पहुँचाने गिड़गिड़ाता था।
आज ज्यादा हवा से असरदार लगता है।।

रास्ता दिखाने का दम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रास्ते को रास्ता दिखलाने का दम रखते है।
मंजिल से आगे की मंजिल पे कदम रखते है।।
खुशबू फूलो की हम इस दुनिया को लुटाते हैं
कांटो का सीने में हम चुभता हुआ गम रखते है
यँू तो झुका सकते है दुश्मन को अपने कदमों में।
इरादा फौलाद का सीने को नरम रखते है।।
जलती है हमसे दुनिया हालांकि ठंडे तेवर है।
लोग शबनम पर भी नजरों को गरम रखते है।।
सीने पे झेले है खंतर सभी फूलो की तरह।

दिखाने दोस्ती पे दिल में सितम रखते है।।
दिल जो गमगीन हुआ वहां कुछ हुआ होगा।
सनम कहीं भी हो हम दिल में सनम रखते हैं।।

उच्च वर्गीय गरीब

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैनें घर झाड़ू पोछा करने वाली बाई की साड़ी की तारीफ करते हुये कहा “शीला तुम्हारी साड़ी तो बहुत संुदर लग रही है। वह सावधान हो गई और बोली “मेडम, मै ने पन्द्रह दिन पहले ही तो तुम्हे उधार दिया है। पहले वह चुकता कर दो, फिर साड़ी की तारीफ करना। मैं सकपका गई। मैं ने कहा मैं अपने मतलब के लिये ही आपकी तारीफ नहीं करती हँू। मुझे इस बार कोई उधार नहीं चाहिये। “वह बोली” रहने दो रहने दो मेम साहब ! हम उधार मांगने वालो को खूब समझते है। रोज तो तुम तू कह कर बात करती हो आज आप कह कर बात कर रही हो। जरूर तुम्हे उधार ही चाहिये है।”

दरअसल मुझे उधार ही चाहिये था। यह भी सही था कि पन्द्रह दिन पहले ही उससे पाॅच सौ रूपये उधार लिये थे। उधार क्या लिये थे, एक सोने का टाॅप्स गिरवी रखा था तब अठारह प्रतिशत प्रतिमाह पर उसने पाँच सौ रूपये उधार दिये थे। बड़ी काइयां है वह, बगैर कुछ रखवाये कुछ भी उधार नहीं देती। एक बार मैं उसके घर गई थी। क्या घर था संगरमरमर के फर्श वाला दुमंजिला मकान, चालीस इंच का एलईडी,

टी.वी, मंहगी कार वाशिंग मशीन इत्यादि। मेरे लिये तो सपना है यह सब। सपना क्या ? सपने में भी इतनी मंहगी चीजे मुझे नहीं दिखती। एक कमरे में लिखा था उधार घर। उस कमरे को खोल कर उसने शान से बतलाया कि उसमें जूते, चप्पल, छतरी से लेकर हर कबाड़े का सामान रखा हुआ था। मेरे मंुह से तारीफ निकली “क्या ठाठ है।” वह बोली यह प्रजातंत्र भगवान की कृपा हैं हमारे घर में चार लोग काम पर जाते है। चारो लोग छः-छः हजारे रूपये कमा कर लाते है उन चैबीस हजार रूपयों से खर्च चल जाता है। “फिर इतना आलीशान घर मैनें पूछा मेडम जी, हम चारो के अति गरीब श्रेणी के राशन कार्ड बने है जिस पर हर राशन कार्ड पर महिने में एक रूपये किलो के हिसाब से तीस किलो गेहँू, पन्द्रह किलो चावल, दाल, केरोसिन इत्यादि मिलते है। इस तरह हर महिने एक सौ बीस किलो गेहँू, साठ किलो चावल, दाल बहुत सारा केरोसिन मिल जाता है।

मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि मेरे पति को प्रति वर्ष तीस हजार रूपये आयकर देना पड़ता हैं। मैनें कहा “फिर तुम इतने सामान का क्या करती हो, कहाँ रखती हो ? वह हंस दी बोली “सामान घर लाता ही कौन है ? उसी दुकानदार को गेहूँ पन्द्रह रूपये किलो में, चावल बीस रूपये किलो में, केरोसिन तीस रूपये लिटर में और दाल चालीस रूपये किलो में बेच देता है। बाई साव, वह हमें सामान नहीं बेचता हम ही उसे सामान बेचते है। वह हमारा ग्राहक है। फिर हम बाजार जाकर आपके गेहँू से थोड़ा उम्दा गेहँू खरीद कर लाते है। मैं हक्की बक्की रह गई। उसे मेरा आश्चर्य चकित रहना अच्छा लग रहा था। वह फिर बोली “यही नहीं मेडम, हमनें सहकारी समूह बना रखें है जिन्हें सरकार ब्याज रहित उधार देती है। वह पैसा हम ब्याज पर बाजार में उठा देते है। हम लोग एक या दो किश्ते देकर किश्ते देना बंद कर देते है इस तरह पूरा मुनाफा अपना हो जाता है। सरकार ऋण माफ कर देती है।

और बाई साब उसने बोलना जारी रखा हमारी जमीनें पट्टे की है। जहां भी नजूल की जमीन हम देखते है, पन्द्रह बीस लोग बेघर होकर कब्जा कर लेते हैं। फिर पार्षद को कुछ रिश्वत या बोट के बदले कलेक्टर के सामने खड़ा कर देते है। वह हमारी लड़ाई लड़ता रहता है। पाँच जगह तो प्लाट मेरे ही नाम से है। मैं पसीने पसीने हो गई। मुझ लगा कि ये लोग गरीब नहीं हैं गरीब तो हम तथाकथित मध्यम वर्गीय है। हमें इनके घर झाड़ू पोछा करना चाहिये। इतने में उसके घर झाड़ू पोछा करने वाली बाई आ गई।

मैं बगैर चाय पिये ही उसके घर से आ गई। सोचने लगी मेरा बिजली का बिल हमें झटके मारता है पर एक बत्ती कनेक्शन की सरकारी कृपा से इन्हें बिजली भी मुफ्त में मिलती हैं हाल ये है कि मैं उससे केरोसिन खरीद कर स्टोव पर खाना बनाती हँू

और उसके घर चार गैस खिलेण्डर रहते हैं। सरकार ने उन्हें श्रम एवं ईमानदारी की कीमत न सिखा कर संगठित भिखारी बना दिया है।

सरकार उन्हें नौकरियां न देकर पैसे बांटती फिरती है। भारत की प्रगति कैसे होगी ? ऐसी कई योजनायें सरकार चला रही है। एक है "मनरेगा" योजना। जिसने बगैर काम किये सरपंचो तक को घर बैठे पैसे पहुँचाना चालू कर दिया। ये मैं नहीं कहती, समाचार पत्र कहते है। यदि कहीं स्वर्ग है तो यहीं है यहीं है, यहीं है और उनका ही है, उनका ही है।

(उनका ही है की पुनरूत्ति अध्याय समाप्ति का द्योतक है।)

यच्छद्ध स एव सः

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

श्रद्धा सम्भवतः अस्तित्व से ही जुड़ी है। जड़ और चेतन हरेक में श्रद्धा पाई जाती है वास्तविकता में तो दुनिया में न तो कोई मात्र जड़ ही है एवं न ही कोई मात्र चेतन ही। हर वस्तु या प्राणी जड़ और चेतन का मिश्रण है। श्रद्धा चेतना में होती है जड़ में नहीं। श्रद्धा कब से प्रारम्भ हुई इसका इतिहास नहीं है और न ही साहित्य में मूल श्रद्धा का वर्णन ही आया है। छुट पुट उदाहरण पेड़ पौधो तक में श्रद्धा के पाये जाते है। कुछ लेखो में संगीत सुनाने पर पेड़ पौधो के सामान्य से तेजी से बढ़ने का वर्णन आया है। पेड़ पौधो में प्रकाश के प्रति श्रद्धा दिखती है वे प्रकाश की तरफ ही बढ़ते हैं सूर्यमुखी का पुष्प सूर्य की स्थिति के हिसाब से अपनी दिशा बदलता रहता हैं वह उसकी श्रद्धा ही है। पालतू पशु मालिक के प्रति श्रद्धा रखते है जैसे बंदर, बिल्ली, गाय, कुत्ता आदि। मालिक के आने पर उनकी श्रद्धा स्पष्ट झलकती है। पालतू जानवरो में तो मालिक के प्रति श्रद्धा के कई उदाहरण पाये जाते है और देखने में भी आता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण कुत्तो का उनके मालिक के प्रति दिखता है।

हर धर्म का अस्तित्व श्रद्धा पर टिका है। देखा जाये तो समाज का ताना बाना ही श्रद्धा पर टिका है। हिंसा पर नहीं। श्रद्धा हम मूर्त पर भी रख सकते है और अमूर्त पर भी। इसी को व्यक्त पर और अव्यक्त पर श्रद्धा रखना कहते है। अव्यक्त कारण होता है और व्यक्त कार्य। कार्य और कारण में उसी एक तत्व की पूजा होती थी। वैदिक काल में कारव की पूजा होती थी जैसे सूर्य वरूण वायु आदि। वैदिक काल के पहले का इतिहास लिखित नहीं हैं। शैल चित्रों में जैसे भीम बैठका, कटनी, होशंगाबाद आदि में चित्र तो मिलते है पर उनमें कितनी श्रद्धा थी कह नहीं सकते।

वैदिक काल के पश्चात वेदान्त युग आया उस काल में मनीषियों ने आत्मा, परमात्मा, प्रकृति आदि के बारे में चिंतन प्रारम्भ करना चालू कर दिया। महर्षि कपिल ने सृष्टि के पच्चीस तत्व बतलाये। वे हैं पाँच स्थूल तत्व, पाॅच इन्द्रियों के विषय, ग्यारह इन्द्रियां अहंकार, बुद्धि मूल प्रकृति और चेतना तत्व। मूल प्रकृति के तीन गुण बतलायें है सत्व रज और तम। इनमें सत्व गुण ज्ञान देता है रजो गुण इच्छा का प्रतीक है और तमो गुण मोह निद्रा एवं आलस्य का। शुद्ध श्रद्धा तभी होती है तब प्रकृति सतोगुण में रहती है। कपिल का सांख्या उपनिषद काल के वाद का प्रतीत होता है। स्थूल और सूक्ष्म आइंस्टीन के ई एम.सी2 के अनुसार आपस में बदलते रहते है।

श्रद्धा वेतान्त युग के पश्चात पौराणिक युग में अवतारो पर आ गई। इस तरह हिन्दु धर्म के ग्रन्थों में हम श्रद्धा का एक सूक्ष्म प्रवाह कई शक्तियों से एक मूल तत्व परमात्मा फिर पुरूषों और अवतारों तक में दिखाई देता है।

ईसाई और मुस्लिम धर्मो में श्रद्धा एक ही परमात्मा में दिखती है। श्रद्धा किसी में भी रखी जाये, वह एक मानसिक स्थिति ही है। अतः यदि अव्यक्त या व्यक्त में

यदि कोई शक्ति है तब वह आराधक में ही है जो आराध्य में प्रक्षेपित की जाती है। श्रद्धा जब पदार्थो में भी होती है प्रोटाॅन, इलेक्ट्राॅन को आकर्षित करता है धरती सूर्य के चारो तरफ चक्कर लगाती है। सूर्य आकाश गंगा के चारो तरफ घूमता है। ये स्वयं मुग्ध होकर स्वयं के चक्कर भी लगाते है। लोहा चुम्बक की तरफ खिंचता है। श्री मद्भगवदगीता का सत्रहवा अध्याय ही श्रद्धात्रय विभाग योग नाम से है उसमें तीसरे श्लोक में कहा गया है

“सत्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत
श्रद्धामयोडय पुरूषो यो यच्छद्धः स एव सः

उसमें श्रद्धा के तीन रूप बतलाये गये है दूसरे श्लोक में कहा गया है

त्रिविधा भवति श्रद्धां देहिनां सा स्वभावजा
सात्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां श्रृणु।।

इन श्लोको का मतलब है

देह धारियों की श्रद्धा स्वभावानुसार सत्विकी, राजसी एवं तामसी होती है। सबकी श्रद्धा अस्तित्व के अनुरूप होती है। यह पुरूष श्रद्धामय है जो जैसी श्रद्धा रखता है वह वैसा ही होता है। अतः सिद्ध होता है कि श्रद्धा चैतन्य पुरूष में होती है जड़ प्रकृति में नहीं। श्रद्धा हमेशा अपने से श्रेष्ठ तत्व में होती है जो कर्ता, भर्ता और महेश्वर होता है। वह सच्चिदानंद मय है। यानि वह चैतन्य है अस्तित्व मान है एवं घनानंद है। हम भगवान का ध्यान करते है। भगवान भी ध्यानमय रहते है एवं प्रकृति यथा वृक्ष एवं पर्वत भी मानों ध्यानमय है।

वास्तविकता में तो सात्विकी श्रद्धा ही श्रद्धा है शेष राजसी एवं तामसी श्रद्धा स्वार्थ ही है। श्रद्धा एवं भक्ति में बारीक सा फर्क है। श्रद्धा भाव है एवं भक्ति उसका क्रियात्मक पक्ष।

हिन्दुओं के अधिक बच्चे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

साक्षी महाराज ने हिन्दुओं को सलाह दी कि वे चार बच्चे पैदा करें। फिर पश्चिम बंगाल के भा.ज.पा. नेता श्यामल गोस्वामी ने कहा कि हर हिन्दु दम्पति पांच बच्चे पैदा करे। साध्वी प्राची ने भी हिन्दुओं को अधिक बच्चे पैदा करने की सलाह दी है। पत्रिका के दिनांक उन्तीस जनवरी दो हजार पन्द्रह के संस्करण में बद्रिकाश्रम के शंकराचार्य वासु देवानंद सरस्वती ने हिन्दुओं को दस बच्चे पैदा करने की सलाह दे डाली। उनके अलग-अलग तर्क है पर इन सलाहों से हिन्दुओं को जो नुकसान होगा उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। साक्षी महाराज ने हिन्दुओं से आग्रह किया है कि उन्हें चार बच्चे पैदा करना चाहिए। जिनमें से एक विश्व हिन्दु परिषद को दे देना चाहिए। आज कल्लु के चैथा बच्चा पैदा हुआ है। वह उसे विश्व हिन्दु परिषद को देना चाहता है क्या विश्व हिन्दु परिषद उसे पाल सकेगी ? भारत में हिन्दु लगभग अस्सी करोड़ होगे। यदि एक परिवार में चार सदस्य मानें तो हिन्दुओं के बीस करोड़ परिवार हुये। वे सब उनका एक बच्चा विश्व हिन्दु परिषद को देने के लिये तैयार हो जायें तो क्या विश्व हिन्दु परिषद के पास बीस करोड़ शिशुओं को पालने लायक आश्रम है।

या फिर साक्षी महाराज का मन्तव्य है कि उन बच्चों को पालें तो हिन्दु परिवार फिर अठारह वर्ष का होने पर विश्व हिन्दु परिषद को सौंप दें। पर क्या वे बीस करोड़ बच्चे बालिग होने पर विश्व हिन्दु परिषद में जाना चाहेंगे ? या वे डाक्टर या इंजीनियर बनना चाहेंगे ? या फिर साक्षी महाराज का मन्तव्य होगा कि जब भी हिन्दु मुस्लिम ईसई दंगे हो जो उन बच्चों को उनकी मर्जी के बगैर लठ पकड़ा दिये जायें। साक्षी महाराज का समर्थन भी कर दिया। आगे बढ़ कर श्यामल गोस्वामी ने हिन्दुओं को पांच बच्चे पैदा करने की सलाह दे डाली। वदिकाश्रम के शंकराचार्य वासुनंद सरस्वती ने हिन्दुओं को दस बच्चे पैदा करने की सलाह दे रहे है। जगदगुरू ने तो बच्चे पैदा ही

नहीं किये वे क्या जाने की प्रसव पीड़ा क्या होती है और बच्चे पालने में कितनी कठिनाई एवं खर्च उठाना पड़ता है। हां यदि उनका तात्पर्य है कि बच्चे पैदा करके गटर में डाल दिये जायें तो यह एक भयानक सलाह है क्योंकि आजकल तो एक बच्चा भी ठीक से नहीं पाला जा सकता।

यदि उपरोक्त महानुभावों का मतलब हिन्दुओं की जनसंख्या बढ़ाने से है तो उन्हें ज्ञात होना चाहिये कि ताकत संख्या में नहीं संगठन में होती है। जब मुगलों का आक्रमण हुआ था तो भारत में हिन्दु उन आक्रमणकारियों से हजार गुना ज्यादा थे पर चार सौ साल उनके गुलाम रहे। इसी तरह अंग्रेजो की गुलामी कर ली। यदि हिन्दु संगठित रहते तो गुलाम न रहते। यदि साक्षी महाराज साध्बी जी या शंकराचार्य जी की सलाह मान कर हिन्दुओं की संख्या तीन अरब हो जाती है तो वे अत्यन्त गरीब हो जायेंगे। गरीबी उन्हें और कमजोर बना देगी। जिन्होने ये सलाहें दी है वे तो उन बच्चों को पालने से रहे। तब अधिसंख्यक हिन्दु या तो गुलाम हो जायेंगे या भिखारी हो जायेंगे या अपराधी हो जायेंगे। इन हिन्दुओं के हितचिन्तको की सलाह मुझे तो उचित नहीं लगी।

धर्मगुरूओं के द्वारा सलाह तो यह दी जानी चाहिये कि हिन्दु आपस में भेदभाव मिटायें और विश्व की अन्य कौमों से शिक्षा में सबसे आगे रहें, कि हिन्दु सच्चरित्र बनें, बलात्कार जैसे घृणित अपराध न करें, बूढे मां बाप की इज्जत करें और उनका ठीक ढंग से पालन करें, कि पत्नियों पर अत्याचार न करें, कि ईमानदार एवं देशभक्त बनें। गुरू धर्म के उपदेश दें न कि वासना के या कुत्ते बिल्लियों जैसे बच्चे पैदा करने के।

मात्र साक्षी महाराज ने एक उचित सलाह भी दी है कि हर हिन्दु बच्चे को सेना में जाने को तत्पर रहना चाहिये। मगर उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि सेना में जाने के लिये भारत की हर कौमों का आदमी जाने को तैयार रहता है। यहां तक कि जगह न होने के कारण उन्हें निराश लौटना पड़ता है। अभी तो सेना का एक बड़ा भाग आंतरिक शांति के लिये लगाना पड़ता है जैसे नक्सली समस्या भूकम्प बाढ़, बोड़ो समस्या आदि। किसी भी धर्म गुरू ने आज तक नहीं कहा कि दंगे मत करो, नक्सली मत बनो बलात्कार मत करो। (कुछ धर्म गुरू तो इन्हीं अपराधो के कारण जेल में भी बंद है, वे इन्हें रोकने के क्या उपदेश देंगे) चोरी मत करो, रिश्वतखोरी कालाबाजारी बंद करो इत्यादि। भारतीय जनता पार्टी का जम्मू-कश्मीर में पूर्ण बहुमत आ सकता था यदि उसी समय हिन्दु संगठन यदि 2021 तक सारे अल्पसंख्यको की घर वापसी की घोषणा न करते। उन्हें अल्पसंख्यको की मानसिकता समझनी चाहिये थी। वे इन अतिवादी वक्तव्यों से घबरा गये और खामियाजा भा.ज.पा. को भुगतना पड़ा। भा.ज.पा. अब

शासन में है वह सबका प्रतिनिधित्व करती है। मात्र हिन्दुओं का नहीं। उसे सबका हित देखना चाहिये।

भारतीयों ने केन्द्र में भा.ज.पा.को उसकी विकासवादी विचारधारा को वोट दिया है किसी हिन्दुत्व संबंधी विचारधारा को नहीं। जनता कांग्रेस के कु. प्रबंधन से त्रस्त हो चुकी थी। यदि महिलायें बच्चे ही पैदा करती रहेंगी तो नौकरी कब करेंगी ? यदि नौकरी नहीं करेंगी तो परिवार की अर्थव्यवस्था सुधारने में योगदान कैसे करेगी शंकराचार्य की बात मान कर हिन्दु तो गरीब होते जायेंगे, वे कमजोर हो जायेंगे और साक्षी महाराज या शंकराचार्य का हिन्दुओं को शक्तिशाली देखने का स्वप्न पूरा न हो सकेगा। अधिक जनसंख्या से देश गरीब कमजोर और अशिक्षित हो जायेगा।

द हिन्दु

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कहते हैं कि भारत के बहु संख्यको को हिन्दु सम्बोधन, आकान्ताओं ने दिया था। अंग्रेजो के समय हिन्दु शब्द स्थापित हो चुका था। इस संबोधन को सिन्धु नदी से जोड़ा जाता है। मगर वह संख्यको को सिन्धु भी कहा जा सकता था या सिंधी भी कहा जा सकता था। मगर हिन्दु ही क्यों। हिन्दु को हिन्दु संबोधन इस्लाम आकान्ताओं ने

दिया और हिन्दुओं ने बगैर आपत्ति के मान भी लिया। इस मान्यता के अनुसार जो सिंधु नदी के पूर्व में रहते है उन्हें हिन्दु कहा जाने लगा। क्या इस संबोधन का कोई और भी कारण हो सकता था ?

सलल्लाहु अलैह व सल्लम पैगम्बर मोहम्मद साहब, हजरत बीबी खदीजा रजियाल्लाह, अन्हा के तीसरे पति थे। इनके पहले पति जनाब अबहाला बिन जुराह तमीमो थे। उनके दो लड़के, हिन्दु बिन अबू हाला और हाला बिन अबू हाला थे। फिर अबू हाला के इंतकाल के बाद हजरते रूदीजा रजियल्लाह, अन्हा ने दूसरा विवाह अतीक बिन आबिद मखूमी से किया। इन से भी दो औलादे हुई एक लड़का अब्दुल्ला बिन अतीक और एक लड़की हिन्द विन्त अतीक हुई (हजरत अल्लामा अलूहाज एवं अब्दुल मुस्तफा आजमी गुजाहिद्दी सीरत-ए-मुस्तफाँ नूरी बुक डिपो 422 मटिया महल जामा मस्जिद, नई दिल्ली पृष्ठ 68: 2007)।

इस तरह हम देखते है कि भारत में आने से पहले से ही इस्लाम हिन्द शब्द से वाकिफ था अतः हिन्दु नाम ही उन्हें सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वालों के लिए मुफीद लगा। हालांकि हिन्दु धर्म दस हजार वर्ष से भी पूर्व से चला आ रहा है। इस दौरान कई प्राचीन सम्यताऐं नष्ट हो गई जैसे रोमन ग्रीक इत्यादि। यहूदी भी बहुत कम बचे है। हिन्दु कभी आकान्ता नहीं रहे। उन्हें इस्लाम एवं ईसाईयों ने रौंदने की कोशिश की लेकिन यह धर्म अभी भी अपनी विषमताओं के साथ जीवित है। यह जिजीविषा उसके लचीलेपन के कारण है।

हिन्दु शब्द न तो वेदो में मिलता है न ही पुराणों में है और न ही उपनिषदों में है। अतः यह तय है कि "हिन्दु" सम्बोधन इस्लाम से आया है। हिन्दुओं के जिन्दा रहने का कारण उनकी विविधता हैं। उनमें शव भी है वैष्णव भी है (कृष्णानुआयी एवं रामानुयायी) निर्गुण उपासक भी है सांख्योपासक भी है। वे मजारों पर भी जाते है मंदिरों में भी जाते है और किसी पूजा स्थल पर नहीं भी जाते पर फिर भी वे हिन्दु है। महात्मा गांधी की मां प्रणाम पंथी थी और पिता वैष्णव थे। महर्षि दयानंद ने हिन्दुओं को "आर्य" शब्द दिया था पर वह सामाजिक क्रांति अधिक नहीं चल पाई।

"हिन्दु" सम्बोधन के पूर्व हिन्दु स्वयं को सनातनी कहते थे। सनातन का मतलब होता है पहले से चला आने वाला। मगर हिन्दुओं ने सभी को आत्मासात किया है इनमें कुश भी थे हूब भी थे एवं अन्य अनेक आक्रान्ता थे। अब समय है कि हम सब स्वयं को भारतीय कहें। हमारा एक ही "पर्सनल ला" हो और एक ही संस्कृति। कोई आवश्यक नहीं कि वह हिन्दु "पर्सनल ला" हो या मुस्लिम "पर्सनल ला" ही हो। सारे धर्मो के धर्म गुरू एक साथ बैठ कर मंथन करें एवं काफी विचार विमर्श के बाद लचीले निर्णयों पर पहुँचे।

बुजुर्ग महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें: कारण और प्रबंधन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वृद्धावस्था उस गाने की अंतिम पंक्तियां है जो पलने के समय प्रारम्भ हुआ था। महिलाओं में मासिक धर्म का नियमन कुछ हारमोन्स के द्वारा होता है, जो मुख्य रूप से पिट्यूटरी, "एड्रीनल्स" ग्रंथियों और "ओवरीज" (अण्डाशयों) के द्वारा होता है। ये हारमोन्स मुख्य रूप से "ईस्ट्रोजेन्स" और प्रोजेस्टरीरान्स होते है। भारतीय महिलाओं की माहवारी औसतन पैंतालीस एवं पचास वर्ष के दौरान बंद हो जाती है। इसे "मेनूपाज" कहते है। मेनूपाज के पूर्व ये हारमोन्स महिलाओं को कुछ उन बीमारियों से बचा कर रखते है जो सम कक्ष आयु के पुरूषों में होती है। मेनूपाज के समय उपरोक्त हार्मोन्स कम होने लगते है एवं एन्ड्रोजेन्स (पुरूष हार्मान्स) सापेक्ष रूप से बढ़ जाते है। परिणाम स्वरूप बुजुर्ग महिलाओं में वे सब बीमारियां तो बराबरी में होने से लगती है जो समकक्ष आयु के पुरूषों में होती है। कुछ विशिष्ट बीमारियां भी होने लगती है। हालांकि महिलाओं की औसम आयु पुरूषों से अधिक होती है।

कहते है कि पुरूष निर्माता की प्रतिकृति है, पर नारी तो स्वयं ही निर्माता है। वह शरीर से शरीर का निर्माण करती है एवं उसकी चीख से किलकारी पैदा होती है। अतः उसका अधिक बीमार रहना स्वाभाविक है।

बुजुर्ग महिलाओं की बीमारियों को तीन भागो में बांटा जा सकता है-

(1) शारीरिक

(2) मानसिक

(3) सामाजिक

बुजुर्ग महिलाओं की शारीरिक बीमारियां

पुरूषों की तरह महिलाओं में भी शरीर के हर व्यवस्था की कुछ विशिष्ट बीमारियां होती है-

मस्तिष्क संबंधी बीमारियांः- इनमें कुछ बीमारियां प्राथमिक बीमारियां होती है एवं कुछ दूसरे संस्थानों की बीमारियों का प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है।

प्राथमिक बीमारियाँ:- इनमें मस्तिष्क की सेनाइल एटोफी (बार्धिक संकुचन) “एल्झीमर”, संक्रमण, पार्किन्सोनिज्म, हाइड्रोसिफेलस, एन.एम.ओ, आदि हो सकते है। इनमें वार्धिक संकुचन एम.एस. या एन.एम.ओ का कोई निश्चित कारण ज्ञात नहीं हैं पर इन्हें प्रतिरोधक क्षमता से भी जोड़ा जाता है। इसके प्रभाव से भुल्क्कड़पन, सिरदर्द, झटके आना, पेरेलिसिस, इत्यादि हो सकते है। इसके कारण नेत्र ज्योति कम हो सकती है।

संक्रमण के लिये प्रतिजैविक औषधियाँ, (एंटी बायोटिक) सेनाइल एट्रोफी के लिए पुर्नस्थापन या फिजियोथेरेपी, हाइड्रोसिफेलस के लिए शंट आप्रेशन, मल्टीपिल श्किलरोसिस एवं एनएमओ के लिए प्रतिरोधक क्षमता कम करने की दवाइयां देते है। ट्यूमर के लिए आपरेशन किये जाते है।

मस्तिष्क के रोगो के निदान के लिये सी.टी.स्कल (कम्प्यूटराइज्ड टोमो गाफी) एवं एम.आई (मेग्नेटिक रेसोनेल्स इमेजिंग) आधुनिक तकनीकें है।

प्रभावित बीमारियाँ- किसी भी संस्थान की बीमारियां, जिनका प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ सकता है सेकेंण्डरी बीमारियां कहलाती है। इनमें अन्यत्र संक्रमण (त्वचा, फेफड़े, गुर्दा, पाचनतंत्र, अस्थि इत्यादि की बीमारियां) ये मेनिन्जाइटिस एवं दिमागी संक्रमक हो सकते है। उच्च रक्त चाप से स्टोक (पेरेलिसिस) ब्रेन हेमरेज हो सकता है ह्नदयाघात या ह्नदय की बीमारियों से सेरीव्रल मम्बोलिज्म एक दम पेरेलिसिस) हो सकता है। गुर्दे की बीमारियों, मधुमेह यकृत की बीमारियां इत्यादि में बेहोशी आ सकती है। किसी अन्य अंग का कैंसा दिमाग में रक्त के माध्यम से पहंुच जाता है। यह ब्रेन एव्सेस (दिमाग में पीप पड़ना) का भी परिदृश्य दे सकता है, अन्यथा ये एस.ओ.एल. (स्पेस आक्यपाइंग लीजन) या तो शरीर में मिर्गी, या कुछ अंगो की निष्क्रिय करना या नई शिकायते पैदा कर सकते है।

सिर की चोट बुजुर्गो को शीघ्रता से प्रभावित करती है। कई बार मालूम नहीं पड़ता कि वे गिरने से बेहोश हुई है या उन्हें मारा गया है। कुछ वायरस परजीवी या फंगस भी दिमाग को संक्रमित कर सकते है। यदि दिमाग की कार्यप्रणाली में जरा भी असमान्यता दिखती है तो विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह लेना चाहिये। आजकल दिमाग की शल्य क्रिया में बहुत उन्नति हो चुकी हैं पीप को बाहर निकाला जा सकता है। ट्यूमर का भी आपरेश्न किया जा सकता है। न्यूरेल्जिया (विशेषकर ट्राइजेनिनल में “कार्बामेजापिन” यदि 1.25 मि.ग्रा. डायजेपिन के साथ दी जावे तो वह कार्बामेजाबीन एवं गावानिन के मिश्रण से अधिक लाभ एवं कम हानिकारक देखी गई है।

त्वचा:- त्वचा में मुख्य रूप से संक्रमण/झुर्री पड़ना या कैंसर हो सकता है। संक्रमण में रक्त शर्करा देखी जानी चाहिये। त्वचा की इलास्टिी खत्म हो जाती है। बाल सफेद हो जाते है एवं कम हो जाते है। मसे बढ़ सकते है। इलाज पौष्टिक खाना डाई लगाना एवं सरबरी है।
पाचन तंत्र:- अन्य बीमारियों के साथ संक्रमण, कैंसर (मंुह का भी) या कब्जियत की अधिक संभावना रहती है। बुजुर्ग महिलाओं को अधिक पानी पीना चाहिये एवं हल्की व्यायाम नियमित रूप से करना चाहिये। जरदा, सुपारी का उपयोग नहीं करना चाहिये।
श्वसन तंत्र:- (घर जाने की बेला है सांसो में भी घर घर है) संक्रमण बुजुर्ग महिलाओं में न्यूमोनिया या फेफड़ो के कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। धूम्र पान से कैंसर की संभावना बढ़ जाती है व्यायाम न करने से न्यूमोनिया की संभावना बढ़ जाती है, खांसी, बुखार, सांस फूलना या मंुह से खून आने पर तत्काल चिकित्सक को दिखाना चाहिये। श्वसन तंत्र की बीमारियों के निदान के लिए एक्स रे सी.टी, एम.आर.आई खकार की जांच ब्रोन्कोस्कोपी इत्यादि विधियां काम में लाई जाती है।
पाचन तंत्र:- मंुह का कैंसर एक भयानक बीमारी हैं जो तम्बाकू सेवन या खराब ओरल हाइजीन से हो जाता है। मृत्यु दर अधिक है। आपरेश्न, रेडियोथेरेपी और दवाइयां एक साथ दी जानी चाहिए। यदि भूख कम लगने लगे, पेट में दर्द हो, उबकाई आये पेट फूला फूला लगे, दस्ज लगे या कब्जियत हो, पीली पेशारब जाये, आंखे पीली हो तो पाचन तंत्र की बीमारी हो सकती है। सीन के पीछे जलन खाना खाने के बाद या पहले पेट के ऊपरी भाग में दर्द हो तो जी.ई. आर.डी. यो पेप्टिक अल्सर हो सकता है। ऐसे समय खाने में मिर्च, तला खाना न लें। अधिक मीठा भी हानिकारक होता है। अधिक चावल खाने से सीने में जलन बढ़ सकती है। यदि खाना नीचे न सरकता हो तो ग्रास नली का कैंसर हो सकता है। तम्बाकू या शराब का सेवन आमाशय के कैंसर को जन्म दे सकता है। वृद्धावस्था में कब्जियत हो ही जाती है। इसके इलाज के लिये हल्की कसरत करना चाहिये एवं पानी अधिक पीना चाहिये। कब्जीयत मधुमेह में भी हो सकता है। कब्जीयत में उच्च फाइबर डाइट ली जाती है। यदि मल के साथ खून आता है तो बवासीर फिशर या बड़ी आंत का कैंसर हो सकता है। बवासीर या कैंसर के लिए आपरेश्न की सलाह दी जाती है।

पाचन तंत्र की बीमारियों के निदान के लिये बेरियम, मील, वेरियम एनीमा, ईसोफेगो, गेस्ट्रो ड्यूडीनोस्कोपी, प्रोक्टोस्कोपी सिगमायडोस्कोपी, अल्फा फोटो प्रोटीन, सीरम बाइलीरोबिन, सीरम अल्के लाइन फास्फेटेज एस.जी.ओटी, एस जी पीटी, सीरम प्रोटीन आदि जांचे की जाती है।

मूत्र तंत्र:- इसमें गुर्दे, ब्लेड आदि आते है। वृद्ध महिलाओं की सामान्य बीमारियां में बार-बार पेशाब आती है। यह जच्चादानी के नीचे उतरने पथरी, केंसर या मधुमेह के कारण हो सकती है। इस शिकायत में उदर का एक्सरे, पेशारब की एवं खून की जांच करवाना चाहिए एवं महिला चिकित्सक को दिखाना चाहिये। यदि जच्चादानी नीचे सरकती है तो इसका आपरेशन किया जाता है।

डिम्ब एवं जच्चादानी:- "सरविक्स" का कैंसर एक महत्वपूर्ण बीमारी है। यह बीमारी अधिक बच्चे वाली महिलाओं एवं जननांगो की सफाई न रखने वाली महिलाओं को अधिक होती है। पेपेनीक्लाव जांच में योनि के स्त्राव की स्लाइड बनाई जाती है एवं स्टेन करते है। इस उम्र में योनि से रक्त स्त्राव, बदबूदार पानी जाना एवं एनीमिया मुख्य लक्षण हो सकते है। हाथों में दास्ताने पहन कर योनि की जांच द्वारा योनि या सरविक्स के कैंसर को आसानी से देखा जाता है। कभी कभी बच्चादानी के बड़े बड़े फाइब्राइड हो जाते है इन्हें जांचने के लिये अल्ट्रा सोनोग्राफी एक विश्वसनीय तरीका है। कभी-कभी हारमोन्य की गड़बड़ी या जच्चादानी की श्लेश्मा की खराबी से लगातार रक्त स्त्राव हो सकता है। ऐसे मौको पर महिला चिकित्सक गर्भाश्य निकालने की सलाह देती है।

स्तन कैंसर:- यह बीमारी महिलाओं में सबसे महत्वपूर्ण जान लेवा बीमारी है एवं स्तन पान न कराने वाली या मोटी महिलाओं में अधिक होती है। एक छोटी से गठान से पैदा होने वाली यह बीमारी पूरे शरीर को प्रभावित कर सकती है। अतः महिलाओं को सलाह दी जाती है कि वे स्वयं अपने हाथो से स्तन की गठाने देखती रहें। बढ़ने पर ये गठाने त्वचा से चिपक जाती है और त्वचा को संतरे के छिलके की तरह गढ्ढे युक्त बनाती है। यह अंदर की तरफ गढ़ कर पसलियों से चिपक जाती है। बाजू में काख की लसिका ग्रंथियां बढ़ जाती है। इसके बीज हड्डियों, डिम्ब, उदर गुहा फेफड़ो और मस्तिष्क तक में जम जाते है। अतः स्वयं जांच कर कैंसर कली को बचपन में ही तोड़ देना चाहिए। यदि मां को स्तर कैंसर रहा हो तो परीक्षण नियमित करवाते रहना चाहिये। इसकी जांच के लिए मेमोग्राफी, एफ.एन.ए.सी. या बायोप्सी करते है। एफ.एन.ए.सी का मतलब "फाइन नीडिल एस्पिरेशन यानि एक पतली सुई द्वारा गठान से द्रव निकाल कर उसकी जांच करते है। रीड़ की हड्डी के एक्सरे जांच या कूल्हे की हड्डियों के एक्स रे एवं सीने के एक्स रे लिये जा सकते है। खोपड़ी की एम.आर.आई. की जा सकती है। इसका इलाज संयुक्त रूप से शल्य क्रिया दवाइयां एवं "डीप रे" द्वारा करते है।

ह्नदयघात:- रजोनिवृति के बाद पुरूषों एवं महिलाओं में ह्नदयाज्ञात का प्रतिशत एक सा हो जाता है। सीने में असहनीय दर्द जो बांयी बांह के अंदर की तरफ जा सकता है इसका मुख्य लक्षण है। मरीज को पसीना आता है, अत्यधिक मृत्युतुल्य घबराहट होती

है। ई.सी.जी, इको कार्डियोग्राफी एवं कुछ एन्जाइम की जा जांच की जाती है। कोरोनेसी एंजियोग्राफी भी दी जाती है। लिपिड प्रोफाइल एवं मधुमेह की जांच भी की जाती है। इलाज दवाईयो, एंजियोप्लास्टी एवं बायपास सर्जरी से किया जा सकता है। इमरजेंसी में एस्पिरीन, ग्लिस्रीन ट्राई नाइट्रेट की गोली ली जाती है। यह बीमारी मोटी महिलाओं, मधुमेह, मांस मदिरा या तम्बाकू का सेवन करने वाली महिलाओं में अधिक होती है।

उच्चरक्तचाप:- यह भी मेनूपाज के पश्चात बढ़ सकता है। जोखिम तत्व उपरोक्त ही है। इस बीमारी में नमक कम कर देना चाहिए। बस बंद हो सके तो अच्छा। मधुमेह, बसा, तम्बाकू, शराब जोखिम भरे तत्व है। उच्च रक्तचाप से पेरेलिसिस गुर्दे के निष्क्रिय होने या ह्नदयघात का खतरा बना ही रहता है। उच्च रक्तचाप गुर्दे की खराबी एड्रीनल के अधिक काम करने थायरायड की विकृति से भी हो सकता है।

जोड़ो का दर्द:- (ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से दोहरा हुआ होगा
में सजदे में नहीं या आपको धोखा हुआ होगा।
दुष्यन्त कुमार

इनमें कमर का दर्द, घुटने का दर्द और कंधो का दर्द मुख्य है। कारण केल्शियम की कमी एवं सामान्य टूट फूट ही होता है। इलाज केल्शियम, दूध एवं दर्द की गोलियां है। मगर, एन.एस.ए.आई डी (यथा डायक्लोरोफिनेक पिरोक्सीकेम, नेप्रोक्सिन इत्यादि) से गुर्दे खराब हो जाते है अतः सावधानी पूर्वक लेना चाहिए। डायक्लोरोफिनेक, मेन्थाल आदि की मल्हम का स्थानीय प्रयोग ही उवित है, फिजियोथिरेपी की सहायता लेना चाहिये। गर्दन में कालर एवं घुटनों में नी केप इत्यादि की सहायता ली जा सकती है। एच.आर.टी. (हारमोन रिप्लेसमेंट थेरेपी) भी दी जाती है।

ओस्टीओफेरोसिसः - (सिर से सीन तक कभी पेट से पांवो तक कभी
एक जगह हो तो कहें दर्द का इधर होता है)
दुष्यंत कुमार)

हड्डियों में केल्शियम सामान्य से कम होने को ओस्टीओ पोरोसिस कहते है। केल्शियम, विटामिन डी एवं कुछ अन्य विटामिन एवं धातुओं की कमी के कारण यह बीमारी होती है। ओस्टीओ-पोरोसिस के लक्षण कमर में दर्द, हड्डियों में दर्द एवं उनका जल्दी फ्रेक्चर होना (कूल्हे की हड्डी) है इसमें बोनडेन्सिटी टेस्ट करते है। इलाज के लिये विटामिन डी, केल्शियम एवं एच.आर.टी देते है। कम में सपोर्ट भी दिया जाता है।

मधुमेह:- इस उम्र में एन.आइ.डी.डी.एम (नाम इन्सुलिन डायबिटीज मेलिटस) की संभावना बढ़ जाती है एक अनुमान के अनुसार सन् 2020 तक प्रत्येक दूसरा भारतीय मधुमेह से ग्रसित होगा। यह बीमारी अधिक मीठा खाने, अधिक वसा के सेवन, जंक फूड

एवं आराम की जिंदगी बिताने के कारण होती है। यह लक्षण रहित भी हो सकती है या अधिक फोड़े फुन्सी होना, खुजली चलना, घाव का न भरना, उच्च रक्तचाप, अधिक प्यास या पेशाब लगना इसके लक्षण हो सकते है। रक्त में शर्करा की (एवं पेशाब में भी) जांच से यह पहचानी जा सकती है। इलेक्ट्रानिक उपकरणो ने डायबिटीज एवं उच्च रक्तचाप के प्रकरणों में प्रयोगशालाओं पर निर्भरता कुछ कम कर देती है।

उच्च रक्तचान, पेरेलिसिस, बेहोशी, गुर्दे का खराब होना, या ह्नदयघात आदि इसकी जटिलताएं हैं। कहते है कि यह बीमारी पुरूषों में गर्भाधान के अलावा किसी भी लक्षण को जन्म दे सकती है। इलाज के लिये कार्बोहाइड्रेड (यथा मीठा, चावल, आलू इत्यादि कम कर देना चाहिये)

शारीरिक श्रम थोड़ा बढ़ा देना चाहिये एवं नियमित गोलियों लेते रहना चाहिये।

थायरोटोक्सिकोसिस:- शायद आधुनिक जीवन पद्धति के कारण यह एण्डोकाइन बीमारी बढ़ रही है। गले के बीच में यह अन्तस्त्रावीय ग्रंथि रहती है इसके स्त्राव/टी-3, टी-4) बढ़ने से घबराहट आंखो का को बाहर निकालना हाथो का कांपना, दुबले होना, दस्त लगना आदि हो सकते है व कम होने से मिक्सीडिमा/नामक बीमारी होती है मिक्सीडिमा में आवाज भारी होना, बाहरी भौंहो का झड़ना, चेहरे का भारीपन एवं पैरो की सूजन (नान पिटिंग) बढ़ जाती है। रक्त में हारमोन की जांच ही से इसका पता लगता है एवं इलाज भी हारमोन्स या अन्य दवाइयां है ग्रंथि बड़ी होने पर उसका आपरेशन किया जाता है।

मोतियाबिंद:- मोतियाबिंद का मतलब है आंखो के लेंस का अपारदर्शक हो जाना। इस बीमारी से महिला को कम दिखने लगता है एवं अन्त में दिखना ही बंद हो जाता है। मधुमेह में यह क्रिया तेज हो जाती है। इसका इलाज लेंस को निकाल कर चश्मा दे दिया जाता है। आजकल फेकोइमल्शन का काफी चलन है या लेंस भी अंदर डाला जा सकता है। ये आपरेशन शासन सा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा लगाये जाने वाले शिविरों में भी उत्तम गुणवत्ता के साथ होते है।

रेटीनल डिटेचमेंट एवं रक्तस्त्राव:- मधुमेह एवं उच्चरक्तचान में विट्रियस (या आंख के अंदर) रक्त स्त्राव हो जाता है। इसमें भी आंख से दिखना बंद हो जाता है इसका इलाज अत्यंत जटिल है।

कम सुनना:- वृद्धावस्था की यह एक अन्य सामान्य बीमारी है जिसमें कान के अंदर के कार्टिलेज कड़े हो जाते है। बाह्नय उपकरणों से इसे ठीक किया जाता है। श्रवणयंत्र के साथ साथ कुछ विटामिन भी दिये जाते है।

हाथ पैरो का कांपना:- इस उम्र में हाथ पैर कांपने लगते है अतः महिलायें गरम चाय इत्यादि से स्वयं को जला सकती है। हस्ताक्षर एवं लिखाई छोटी हो जाती है।

पारकिन्सोनिज्मः- शरीर का झुकना, हाथो का कांपना एवं भुलक्कड़पन इसके मुख्य लक्षण है। दवाइयों से इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

दांतो का झड़ना:- उम्र के साथ दांत साथ छोड़ देते है इससे आवाज पोपली हो जाती है एवं खाना चबाया नहीं जाता। फलस्वरूप खाने में लार नहीं मिलती एवं कुपोषण हो सकता है। दांतो के कई तरफ के उपचार या फिलिंग केप, डेंचर आदि होने लगे है। मोतियाबिंद के आपरेशन की तरह डेंचर शिविर भी लगने चाहिए।

नींद कम आना:- पो पो में दर्द सुबह से दिन भर सीढ़ी चढ़ना है
रात बेरहम है ऊपर की मंजिल पर ही रहती है

उम्र बढ़ने के साथ-साथ नींद के घंटे कम होते जाते है मगर यह एक सामान्य समस्या है। 24 घंटो में नींद के चार घंटे ही काफी है। यदि नींद नहीं आती है तो सत् साहित्य पड़ना चाहिये। नींद खुलने पर यदि कुछ सुपाच्य खा लिया जाये या गुनगुना दूध पी लिया जाये तो नींद पुनः आ जाती है। यदि अनिद्रा कष्टदायी है तो नींद कीे गोलियों कम मात्रा में लेने पर कोई हर्ज नहीं है। ऐसी दशा में चिकित्सक एल्प्राजोलम इत्यादि देते है। चेहरे पर बाल आना एवं आवाज भारी होना: एल्ड्रोजेन की सापेक्ष बढ़त के कारण हो सकता है।

मानसिक बीमारियां

यह उम्र सहानुभूति एवं हमारा समय चाहती है अन्यथा बुजुर्ग महिलायें अवसाद में चली जाती है।

अवसादः- थाम रखना है बाहों ने कहने को अपना घर है

जब बुजुर्ग महिलाओं की उपेक्षा होती है जब जीवन के प्रति उनका रूख ऋणात्मक हो जाता है। वे अन्त्तमुखी हो जाती है। अक्सर चुप एवं दुखी रहने लगती है। यह एक भयानक मानसिक त्रासदी होती है। नई पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वे उन्हें पर्याप्त समय दें एवं उन्हें अवसाद में न जाने दें।

अवसाद ग्रस्त होने पर उनका खाना पीना कम हो जाता है जिससे उन्हें अन्य शारीरिक बीमारियां घर लेती है एवं यह दुष्चक्र चलता रहता है।

चिड़चिड़ापन:- यह भी एक द्विध्रुवीय (बाई पोलर) बीमारी का दूसरा सिरा है। दोनो बीमारियों को मिला कर मनिक डिप्रेसिव साइकोमिका कहते है। बुजुर्ग महिलाओं को लगता है कि कोई उनकी अब सुनता नहीं है अतः यह एक प्रति क्रियात्मक अभिव्यक्ति होती है इसका इलाज सामाजिक पुर्नस्थापना ही है।

भूलक्कड़पन (डी मेन्सिया):- यह प्राथमिक भी होता है या मस्तिष्क की किसी बीमारी के कारण भी होता है इसमें तात्कालिक रीसेन्ट याददास्त जाने लगती है एवं दूरस्थ (रिमोट) याददास्त तेज हो जाती है। कभी कभी ये मरीज अनायास ही मल या मूत्र त्याग कर देते है। इनको परिचर्चा की आवश्यकता पड़ सकती है अन्यथा ये खुद को चोट पहुंचा सकते है। साथ ही साथ इन्हें भरपूर पोषण एवं विटामिन्स भी मिलने चाहिये।

सामाजिक परिदृश्य

सारा घर जिसको कहता बेगाना है।
वही शख्श इस घर में बहुत पुराना है।।
पहले इस घर में घर वाले रहते थे।
अब न जाने किनका आना जाना है।।

बजुर्ग महिलायें यह समझने लगती है कि अब सामाज में उनका कोई काम नहीं रह गया है कम दिखना कम सुनना पोपली आवाज भी उन्हें समाज से कष्ट देती है। अतः वे समाज से कटने लगती है। आधुनिक प्रगति से निस्पृह हो जाती है। हालांकि नई पीढ़ी उनसे काफी कुछ सीख सकती है या सहायता ले सकती है वे बच्चों में घुलमिल जाते है मगर उन्हें बच्चों से अलग अलग रखा जाता है। कभी-कभी तो उन्हें मथुरा वृंदावन के भजनाश्रमों में छोड़ दिया जाता है। वृद्धाश्रम में इन बुजुर्ग महिलाओं का रहना एक अंतिम मगर फिर भी अच्छी पहल है। इस तरह उन्हें वहां एक समाज तो मिल जाता है। कई शहरों में उनकी कालोनियां बनी है जो अच्छा कदम है मगर फिर भी परिवार में ही उन्हें यथासम्भव रखा जाना चाहिये। वे कोई सामाजिक कार्य अपने हाथो में ले सकती है या किसी मिशन से जुड़ जाती है।

उपसंहार

(बहुत सकून है सूरज को उसके ढ़लने पर
किसी तरह से हुआ दिन गुजार ले आये)

लेकिन जिंदगी के प्रति धनात्मक रूख रखने पर जिंदगी खुशगवार हो जाती है। इस उम्र की महिलायें यदि तम्बाकू खाना, नस करना, गुटखा खाना, धूम्रपान, शराब पीना छोड़ दे तो मंुह फेफड़ो, अमाशय एवं मूत्राशय के केंसरो से बची रह सकती है। साथ ही हार्ट अटैक, ब्लड शुगर, पेरेलिसिस से भी बची रह सकती है। उन्हें हल्का श्रम (जैसे पैदल घूमना) करना चाहिये। पौष्टिक खाना लेना चाहिये व नियमित सोना चाहिए।

यदि श्रम साध्य और तनाव रहित हो तो योग करने की सलाह दी जाती है। केल्सियम लेना चाहिये कुछ विटामिन्स जैसे विटामिन्स डी, बी काम्पलेक्स ए, सी, ओमेगा 3 फटी एसिड इत्यादि का सेवन करना चाहिए। यही एंटी आक्सीडेन्ट होते है। स्तनों का नियमित परीक्षण करते रहना चाहिये। जननांग स्वच्छ रखना चाहिये।

कहते है कि जितनी चैड़ी कमर होती है जिंदगी उतनी ही कम होती है अतः वजन कम रखना चाहिये। ज्यादा वजन हृनदयाघात, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, स्तन कैंसर पेरेलिसिस, गुर्दा खराब करना, जोड़ो के दर्द इत्यादि को बढ़ाता है।

उठा पटक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उठा पटक में दो शब्द है। एक उठा है और दूसरा पटक है। अतः उठा पटक शब्द कम से कम दो व्यक्तियों के बीच होती है। एक उठाता है और दूसरे का पटक जाता है। मगर उठा पटक में दो से अधिक व्यक्ति ही रहते है।

उठा पटक में उठा व्यक्ति ही पटकता है। पहले वह उठाता है फिर पटक देता है। उठा-पटक में आवाज होती है। यह आवाज ही बाहर खड़े हुये व्यक्तियों को कान लगाने के लिये मजबूर करती है। उठाने वाला “मारो” की आवाज करता है और पटका जाने वाला “अरे मार डाला” नामक आवाज करता है। कई बार उठाने वाला चुप रहता है पर उसके गुर्गे उठा पटक करते है। पटका जाने वाला कुछ नहीं करता है। जो कुछ करता है

वह उठाने वाला ही करता है पटकने के लिये ही उठाया जाता है। अंदर से कई आवाजें आती है पर "मारो" और "मार डाला" ही मुख्य होती है।

उस कमरे में प्रजा तंत्र चल रहा था। पारदर्शिता लाने के लिये कमरे की दीवारें कांच की थी पर पार्टी में प्रजा तंत्र घुसने नहीं दिया जा रहा था। पार्टी के अंदर बार बार प्रजातंत्र घुसता था। मगर तंत्र उसे बार-बार निकाल फेंक देता था। जब प्रजा से तंत्र बनता है तो प्रजा कमजोर हो जाती है और तंत्र मजबूत हो जाता है अंदर प्रजा और तंत्र भिड़ रहे थे पर तंत्र प्रजा को बार बार पटखनी दे रहा था।

तंत्राध्यक्ष ने प्रजा के पैरोकार से पूछा "तुम्हें तंत्र में रहना है या प्रजा में ? प्रजा के अधिवक्ता ने कहा "हमें तंत्र में प्रजा तंत्र घुसाना है।" उस विद्धान अधिवक्ता से कुर्सी बोली "मूर्ख, प्रजातंत्र को प्रजा जीवित रखती है, उसमें घुसती नहीं। समझ लो कि तंत्र मक्खन है वह दूध से निकलता तो जरूर है पर उसके ऊपर ही रहता है, उसमें मिलता नहीं है। "मगर तुमने मक्खन बनने के लिये दूध को मही बना दिया" विद्धान अधिवक्ता ने तर्क रखा। "नहीं" तंत्राध्यक्ष बोला, "दूध खुद सड़ कर दही बन रहा था। हम तो उसके मंथन से निकले है। "मगर तुमने तो कहा था कि हमारी पार्टी में प्रजा तंत्र रहेगा। इसीलिये हमने पार्टी बनाई थी।" एक समाज सेवी बोला

"देखा दाढ़ी और झोले वाले समाज सेवी" अब मक्खन के चम्मच से आवाज आई "मां से बच्चा पैदा होता है तो मां कमजोर हो जाती है कि नहीं। बच्चा मां की गोद में रहता है, मां बच्चे की गोद में नहीं बैठती। तंत्राध्यक्ष चम्मच से खुश हो गया। तंत्राध्यक्ष चम्मच से ही मक्खन खाता था। दूसरा चम्मच इससे आगे बढ़ गया, बोला "अबे, मां का दुबारा ताकतवार बनाने के लिये बच्चे को तो मां के अंदर नहीं घुसाया जा सकता है। प्रकृति का यही नियम है। मां से ही बच्चा पैदा होता है, बच्चे से मां पैदा नहीं होती।

तीसरे चम्मच ने इस को लपका और आगे बढ़ाया," मां की चीख से किलकारी पैदा होती है। चीख को चीखते रहना है और किलकारी को किलकते रहना है। तुम हमारी पार्टी में हो तो किलकारी मारो, चीखो नहीं।" इस उठा पटक से सुश्री खाटकर डर गई। वे हमेशा अनशन करने वालो के साथ अलग खाट पर पड़ी रहती थी। उनकी खाट हमेशा जगह बदलती रहती थी, कभी नर्मदा किनारे तो कभी दिल्ली। जहां मार पीट होती ती थी तो वे अपनी खाट उठा लेती थी। अतः अपनी खाट उठाकर खाटकर बाहर निकल गई। तंत्राध्यक्ष झल्लाकर बोला" ये समाजवादी और अधिवक्ता नहीं समझेंगे। इतने प्राकृतिक उदाहरण इन्हें दिये पर इन्हें समझ में नहीं आये। मैं मंुह फेर लेता हँू और हे चम्मचो, तुम इनकी पुलसिया पिटाई कर दो जो लगती तो है, पर दिखती नहीं। एक चम्मच बोला "हूजूर इनके कपड़े भी फाड़ दे।"

“हाँ, इनके पुराने कपड़े फाड़ दो और नये पहना कर बाहर निकाल दो। ये अब प्रजातंत्र से प्रजा बनने की कोशिश कर रहे है। देखो इनको लात जरूर मारना, प्रजा इसी काबिल होती है, “हूज़ूर बोला। “और सर, ये लोग आपकी कुर्सी के नीचे सुरंग लगा रहे थे, एक जासूस ने कहा सर बोले “ये प्रजा नहीं है। बदमाश है” अरे कुर्सी पर बैठता है तो सामने से आओ। कुर्सी के एक एक पाये मैनें जोड़े, अब उसमें ये पलीता लगा रहे है। मैनें तंत्र से इसीलिये इस्तीफा नहीं दिया था कि तंत्र के नीचे काम करूँ। मैं तो तंत्र के ऊपर बैठना चाहता था। ये लोग कभी तंत्र में रहे नहीं और उस पर बैठने की कोशिश कर रहे है। अब तुम्ही बतलाओं गुण्डे, ये घोड़े के खुर के नीचे रहने वाले उस पर बैठने की जुगत कर रहे है तंत्राध्यक्ष एक चम्मच से बोला

यदि चम्मच गुण्डे नहीं हों तो चम्मच बनने के काबिल नहीं रहते। दरअसल चम्मच ही गुण्डे होते है” और गुण्डे ही चम्मच होते है। भले ही वे चाहे कवि का रूप धारें या समाज सेवी का। कवियों को तो भीड़ चाहिये। वे हमेशा सुधार करते है। वे कवि महाराज कविता सुनाने लगे। पिटाई से ज्यादा उनकी कविता त्रासदायी थी। जब कविता से आहत होकर असंतुष्ट भागने लगे तो उन्हें तुष्ट पहलवानों ने पकड़ लिया और तब तक पकड़े रखा जब तक कि वह कष्टगान सुनकर वे अधमरे नहीं हो गये। उस कमरे में एक भाषण दे रहा था, दूसरा कविता सुना रहा था तीसरा गालियां दे रहा था चैथा पिटाई लगा रहा था। बाकी चीख रहे थे प्रजातंत्र पिट रहा था और बाहर प्रजा फिर मंथन कर रही थी।

हाथों के पिंजरे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जिसका हाथ, हाथ में लो
        वह एक पिंजरा बन जाता है।
एक परी को सपने में
        हाथों का जंगल आता है।।
मैंना जिन हाथों को अपना
        एक सहारा कहती है।
हाथ सहारा देने वाला
        कैंची में ढ़ल जाता है।।
पिंजरे का दरवाजा उसका
        पिंजरे में ही खुलता है।
बीता कल ही आज और
        आगे का कल बन जाता है।।
कटे हुये पंखो से पक्षी
        पिंजरे से टकरायेगा।
कभी कभी चिंगारी से
        पूरा जंगल जल जाता है।।
वे दिल वालों में दिल वाली
        संुदर मैना रहती है।
उसके आॅसू की गर्मी से
        पत्थर तक जल जाता है।।
अब तो फूल देवता से भी
        आंख मिलाने निकला है।
फूल पैर से सिर पर चढ़ कर
        बुत जैसा तन जाता है।।

वजह चाहिये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पैदल चलने वालों को भी जगह चाहिये।
उनकी जगह छीनने की भी वजह चाहिये।।
यदि सुलह करवा सकते हो तो अच्छा है।
चैन सुहाती नहीं तुम्हें क्या जो कलह चाहिये।।
फटे कपड़े बदन पर है वह भी इंसा है।
उसको इज्जत इंसानों की तरह चाहिये।।
पैरों की नीचे की धरती तो रहने दो।
हमें खड़े होने की भी कुछ जगह चाहिये।।
कुछ देने की वजह देखना नहीं जरूरी ।
एक भिखारी को खाना वा वजह चाहिये।।
आपस में लड़वाआगे तो जल जाओगे।
किसी तरह लड़ने वालो को सुलह चाहिये।।
घना अंधेरा, एक दीपक से खिल जाता है।
खिड़की खोलो हरेक रात को सुबह चाहिये।।

दिल की गहराई में

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ऊपर है लहर नीचे कुछ गहराई तो होगी।
सब कोसते हैं उसमें कुछ अच्छाई तो होगी।।
दिल मारने के पेश्तर पत्थर हुआ होगा।
दिल में लहर पछताने की तब आई तो होगी।।
बेटी को पाला उसको फिर दर से बदर किया।
पलने को देख याद में वह आई तो होगी।।
पैसे नहीं थे जेब में बाजार ने खींचा।
कैसे खिलौना लें ये इच्छा आई तो होगी।।
घर से निकल आये हो खाली काटता होगा।
मेरे लिये भी दिल में कुछ तन्हाई तो होगी।।

यहां और वहां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लोकसभा पर लगी नजर है।
फुटपाथों पर पड़ी खबर है।।
यहां सियासत की डींगे है।
वहां भूख की एक लहर है।।
भूखा पेट टंगा रस्सी पर।
दावत खाता एक शहर है।।
फटी साडियां जिस्म दिखाती।
उन्हें घूरती नजर जहर है।।
यहां झोपड़ी प्यासी मरती।
वहां महल में बसी नहर है।।

हो गये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इन्द्रधनुष के रंग सभी बदरंग हो गये।
जो फराग दिल थे वे भी सब तंग हो गये।।
भगवा हरा सफेद वस्त्र पहचान बन गया।

नूरी रूहों के भी कितने रंग हो गयेे ?
नहीं बीच में रहना अब खतरे से खाली।
वहां किनारे वालो के कई जंग हो गये।।
ऊंचाई से डर जाते हैं नीचे वाले।।
ऊपर वाले छोटे और दबंग हो गये।।
चलते हैं सीधी पगडंडी पर थोड़े से।
ज्यादातर टेढ़े रस्तों के संग हो गये।।

सांस की कीमत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बोये ऐसे दरख्त क्या कहिये ।
हमीेंं पे धूप सख्त क्या कहिये।।

हमारी जीत में मालूम न था।
छिपी थी एक शिकस्त क्या कहिये।।

हमारे चारो ओर हर्फो की।
कसती जाती गिरफ्त क्या कहिये।।

दलों के दल दलों से मुल्क भरा।
सभी मौका परस्त क्या कहिये।।

हरेक सांस की कीमत देकर।
हम तो हो गये पस्त क्या कहिये।।

यादों के कैदी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक बुत के जो आंसू निकलने लगे।
जैसे पत्थर से मोती से झरने लगे।।

मुझ को ठुकराकर तुमको ही ठोकर लगी।
दर्द दिल में हुआ तुम सिसकने लगे।।

न गिरो बन के बिजली इस महफिल में तुम।
एसा न हो कि महफिल ही जलने लगे।।

भूलने की मुझे कोशिशें जुल्म है।
जुल्म खुद पर ही तुमको न डसने लगे।।

मेरी यादों के पिंजरो के कैदी रहो।

उड़ गये मेरी जां न निकलने लगे।।

हम चलें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हम दुश्मनों के राग को गाते हुये चलें।
लड़ने की जगह घुटने टिकाते हुये चलें।।

वादे जो किये कुर्सी को पाने के लिये थे।
हम भीष्म नहीं, वादे निभाते हुये चलें।।

देहरी के पार भीख दें घर भूख पाल कर।
दीवार खुद ही घर की गिराते हुये चलें।।

बंदर की बांट मिलती रहेगी हमें हर दिन।
मंदिर को मस्जिदों से लड़ाते हुये चलें।।

बढ़ना नहीं आता है पर जनता की मांग पर।
आगे बढ़े है शोर मचाते हुये चलें।।

जिन गलतियों पर उंगली उठाई थी कल हमने।
उन गलतियों को आज दुहराते हुये चले।।

आगे का रास्ता तो हमने रोक ही दिया।
पीछे की तरफ मुल्क धकाते हुये चलें।।

दुनिया छोड़ रहे हैं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

राह को मंजिल की अब वे मोड़ रहे हैं।
खुद देवता अपने ही बुत को तोड़ रहें हैं।।

बदलाव तो किस्मत में कभी आयेगा नहीं।
इस इंतजार में ही दुनिया छोड़ रहे हैं।।

अच्छे दिनों का दोस्त दिलासा ही रह गया।
पहले भी गगन अब भी गगन ओढ़ रहे हैं।।

महल पहले के ही हैं वाशिंदे नये है।
उनके लिये भी हाड़ अपने तोड़ रहें है।।

पटके ही जाते रहें हैं हम पा के दिला से।
बचपन से ही हम दिल के टुकड़े जोड़ रहे हैं।।

चांदी ही चांदी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नहीं बता पाऊंगा उसके सिर पर आंधी है।
उसने मेरे मंुह पर कस कर पट्टी बांधी है।।

सोने की टकसाल बनाना उसका मकसद है।
पांच साल का पट्टा है चांदी ही चांदी है।।

कुछ अनशन पर रहा मगर रसगुल्लों की खातिर।
अब तो उसके दिल में सच की एक समाधि है।।

गिरी शहद में मक्खी उसने शहद अलग कर दी।
मक्खी अलग फेंकना मक्खी की बरबादी है।।

बख्श दिया अपना हक मालिक ने नौकर ही को।
अब गुलाम राजा है जनता उसकी बांदी है।।

हर दिन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आदत इबादत गाह में जाने की छूट गई।
मंदिर की बुत साबुत रही पर मन की टूट गई।।

कीलों से किस्मत ठुक गई लोहे की फ्रेम में।
तर्जुमें बालों की फौज आई लूट गई।।

नदिया का भरोसा हमें तो रात दिन दिया।
पानी के इंतजार में मटकी ही फूट गई।

बेईमानी और धोखा कर नहीं सके।
चोटी पे हम खड़े रहे दौलत ही रूठ गई।

जूतों के तले रहने की आदत सी पड़ गई।
हर दिन वजन बढ़ता गया और कमर टूट गई।।

रोना क्या

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सपनों पर डाका पड़ने पर सोना क्या ।
मंजिल जब खुद ही ठुकराई रोना क्या ।।

टुकुर टुकुर हम देखा किये खिलौनों को।
जो हमको मिल पाया नहीं खिलौना क्या।।

हम फकीर है हमें रूप क्या व्यंजन क्या ?
मस्ती साथी है फिर चांदी सोना क्या ।।

उपजाऊ धरती को बंजर बना दिया।
कोंपल अब न फूट सकेंगे बोना क्या।।

तूने जिसे गिरा कर खुद ही फोड़ दिया।
उस फूटी किस्मत पर रोना धोना क्या।।

मुझे रूला कर ही छोड़ा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लगे हुये थे मेरे पीछे छोड़ वहीं खट राग गये।

नया जल जला कहीं सुना तो तेजी से वे भाग गये।।

उंगली उठा उठा कर देखो मुझे रूला कर ही छोड़ा।
जब जब रोया पीछे पीछे लेने नया सुराग गये।।

वे ऊपर उठते हैं नीचे झुलसा कर कई चेहरों को।
जहां गये वे साथ साथ में लेकर जलती आग गये।।

रहे डालते स्याह रोशनी मेरे उजले चेहरे पर।
नया स्याह चेहरा देखा तो लेकर चले चिराग गये।।

मुझे लगा कि कई भेड़ियों ने आकर घेरा मुझको।
नया फंसा बकरा देखा तो उसे लगाने दाग गये।।

रूपहली भी नहीं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तू आखिरी भी नहीं और तू पहली भी नहीं।
गरूर करने के काबिल तू रूपहली भी नहीं।।

वजूद था ही नहीं जिसको ढंूढ़ता मैं रहा।
न कोई बस्ती वहां और कोई गली भी नहीं।।

एक तमन्ना ही रही जम के आग लग जाती।
सीढ़ती लकड़ियों में मेरी कुछ चली भी नहीं।।

मैनें उपजाऊ जमीं में ही बीज बोये थे।
नीचे किस्मत नहीं थी निकली एक फली भी नहीं।।

तुम्हें लगता है चमन नागफनीं का बन है।
वहां न फूल हैं कोंपल नहीं कली भी नहीं।।

कोई फसाना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उसका फिर बुत से टकराना लगता है।
बनने वाला कोई फसाना लगता है।।

संुदर बुत के रूख पर एक नकाब मानों।
धरती में एक गढ़ा खजाना लगता है।।

जब सुगंध कपड़ो में आई दोस्त मेरा।
मुझसे मिलने हुआ रवाना लगता है।।

पहले पहल हुआ मिलना हो गये खफा।

मुझसे रिश्ता बहुत पुराना लगता है।।

तेरा झल्ला जाना भी मेरे मन को।
मद्धम सुर का कोई तराना लगता है।।

आंख नशीली होंठ रसीले जिस्म तेरा।
रोम रोम मुझको मैं खाना लगता है।।

साहब के खराब गुर्दे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह उसकी तरफ से मेरा अभिन्न मित्र हैं पर मैं उससे भिन्नता बनाये रखता हूॅ। एक छोटे कस्बे में मेरी सामान्य वस्तुओं के संग्रह की दुकान हैं। वह आते ही बोला "यार एकाध गुर्दा हो तो दिलवाओ"

जो कुछ ग्राहक दुकान पर खड़े थे डर कर स्तम्भित हो गये। वे ग्राहक मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे। मुझे लगा कि वह वीभत्स समाचार अब शहर में फैलने ही वाला है कि मेरे संग्रहालय में मानव अंग मिलते है। मैं जनाक्रोश की मेरे विरूद्ध कल्पना करने लगा। मुझे लगा कि वह पागल आदमी हथकड़ियां लेकर ही मेरी दुकान पर आया है। मुझे लगा कि मेरा घर बिखरने ही वाला है।

मैं तैश में बोला "मेरे इस सामान्य वस्तुओं की दुकान को मानव अंगो की दुकान समझ रखा है। नीचे उतरो मूर्ख आदमी। जहाॅ तक मेरा ज्ञान है, किसी दवाखाने में भी

मानव अंग नहीं बिकते। गुर्दे या अन्य कोई मानव अंग सगे सम्बन्धियों के ही निकाले जाते हैं। तुम भी किसी को अपना अंग दे सकते हो"।

वह गधा बोला "मेरे निकटतम उच्चाधिकारी के दोनो गुर्दे मधुमेह में खराब हो गये हैं उन्हें एक स्वस्थ गुर्दे की आवश्यकता है। उन्होने मुझसे कहा कि जाओ कहीं से एक गुर्दा ढूँढ़ कर लाओ जो स्वस्थ हो।"

मैनें बीच में बात काट दी "जैसे तुम गधे हो, तुम्हारा वह अधिकारी भी गधा हैं उसे तो गधे का गुर्दा ही रास आयेगा। तुम भी तो तुम्हारे उस मूर्ख अधिकारी के गुप्त मित्र हो। तुम्हे उसके बहुत सारे गुप्त भेद मालूम है। यहाँ तक कि कुछ गुप्त रोग तक। तुम ही क्यों नहीं उसे तुम्हारा गुर्दा दे देते। वह डर गया। खुद के पेट पर हाथ रख कर नीचे उतरने लगा। मैनें उन्हें बाँह पकड़ कर रोका। अन्यथा उन्हें छोड़ने बाहर तक जाता हूँ, जिससे कि वे "पीछे मुड़" न हो जायें।

मैने सुझाव दिया "तुम उसके मोटे आवारा लड़के से गुर्दा दान क्यों नहीं करवा देते। सुना है कि प्रत्यारोपण के समय रक्त समूह एवं टिशू टायपिंग की जाती है।" मैनें वह सब सुना था। उस रिश्वतखोर ने नहीं सुना था। उसको तो केवल मकड़ी की तरह लोगो को फंसाना और बेवश लोगो का खून चूसना आता था।

वह बोला "साहब को किसी ने सलाह दी थी। साहब बोले कि "बाबा" बहुत भोला है। एक बार मुझे खून चढ़ना था तो बाबा लोटा लेकर चिकित्सक के घर खून लेने पहुँच गया था।" "फिर गुर्दे के लिये आप लोगो ने क्या किया मैने पूछा ?

"साहब ने चपरासी को लिखित आदेश दिया था कि भारत सरकार को गुर्दे की आवश्यकता है। शासन के पत्र क्रमांक "क्यू" के अदिनांकित पत्र के अनुसार सबको देश हित में एक-एक गुर्दा दान देना है जिस तरह कि पिछले दिनो आप लोगो ने रक्त दान दिया था। आपके इन्दौर तक आने जाने का खर्च शासन उठायेगी।" वह बोला

मुझे उस दिमाग हीन व्यक्ति की बातों में रस आने लगा मैनें पूछा "फिर क्या हुआ ?" वह बोला "फिर क्या था ? उस चपरासी ने वह पत्र चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ को दिखा दिया। बड़ी मुश्किल से हड़ताल होते होते बची।"

मुझ आश्चर्य नही हुआ। शासन में ऐसे ही अधिकारी है। इसीलिये विदेशों का विनिवेश भारत में नहीं होता । विनिवेश करने वाले को शताधिक कानून बता दिये जाते है। सब का मतलब है कि रिश्वत दो। भारत में कानून का अनुवाद रिश्वत में हो गया है।

मुझे उसके साहब से सहानुभूति हो गई। मैनें बात का रूख उनके भैंसे सदृश पुत्र पर मोड़ना चाहा। वह बोला "साहब का कहना है कि बाबा कमजोर है। फिर साहब के बाबा पर देश की आशायें टिकी है। भारत में ईमानदारी से अध्ययन करने वाले चपरासी

ही बन पाते है। तृतीय श्रेणी में उर्त्तीर्ण होने वाले जोड़ तोड़ करने में सक्षम अमीर व्यक्तियों के लड़के ही अधिकारी बन पाते है। अब देश के बजट में कौन घपला करेगा ? अधिकारी ही न ! चपरासी तो बजट में घपला नहीं करेगा

वह मस्तिष्क विहीन आगे बोला "अच्छा सगे व्यक्तियों में साला साली नहीं आते क्या ? वे भी तो साहब के सगे हुये।" मैनें कहा "नहीं"। रक्त सम्बन्धी होना चाहिये। फिर कानूनन मानव अंगो की खरीद फरोख्त, तस्करी बन्द कर दी गई है।"

वह कांइयां बोला "फिर तो साहब को गुर्दा मिल जायेगा। जिस चीज की कानूनन खरीद फरोख्त वर्जित हो उसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। अब किसी बड़े अस्पताल के आसपास देखूॅगा, दलाल घूम रहे होंगे।"

मैनें व्यंग्य से कहा "हाॅ यह काम तुम उनके लिये आसानी से कर सकते हो। नियमानुसार काम करने में तुम्हे परेशानी होती है। फिर तुम ही तुम्हारे उस निकटतम उच्चाधिकारी के लिये रिश्वत लेते हो। तुम उनके सगे मित्र जो हो।

वह बदमाश तुनक गया बोला "तुम हमें बार बार उनका सगा क्यों कह रहे हो। कहीं तुम्हारी दृष्टि सचमुच मेरे गुर्दे पर तो नहीं। मैं बोला "अरे नहीं"। सगा वह, जो सौतेला न हो। अब क्या तुम तुम्हारे अधिकारी के सौतेले अधीनस्थ हो।"

उसकी बिजली जल गई एक दम बोला "अरे नहीं। सौतेला अधीनस्थ तो विमल कुमार है। साला ईमानदार बनता है। हालांकि कथरी के अन्दर घी पीता है। अच्छा यह बतलाओं क्या खराब गुर्दे के स्थान पर और कोई अंग नहीं लग सकता" वह मेरे सामान्य ज्ञान से प्रभावित था।

मैनें पूछा "मसलन" "जैसे पैर का अंगूठा या एक आॅख" उसने पूछा । मैं उसकी चालाकी की प्रशंसा करने लगा। मैनें प्रति प्रश्न किया" अच्छा बतलाओं क्या तुम्हारे "किचन" में किसी को "टायलेट" करने की अनुमति दे सकते हो। "मैं कहना तो चाहता था कि वह क्या किसी को उसके रसोई घर में पे..........................करने की अनुमति दे सकता है। पर अंग्रेजी में कुछ गन्दे शब्द भी बेशर्मी से कहे जा सकते है जैसे "गेस पास" करना इत्यादि।

वह भड़क गया चिल्लाया "तुम ऐसी बेहूदी बात कैसे कह सकते हो ? मैनें तुर्क-व तुर्क जवाब दिया "वैसे ही जैसे तुम एक परचूनी की दुकान पर मानव अंग खरीदने आये हो, वैसे ही जैसे वह तुम्हारा मूर्ख अधिकारी शासकीय पत्र द्वारा भृत्य का गुर्दा निकलवाने आदेश लिख सकता है, वैसे ही जैसे तुम सगे साले से जीजा के लिये मानव अंग दान करवाने का सोच सकते हो और वैसे ही जैसे तुम गुर्दे की जगह पैर का अंगूठा लगाने की बात कह सकते हो, वे हूदे आदमी।"

स्वयं के बारे में मेरे वास्तविक विचार जान कर वह बुदबुदाता हुआ नीचे उतर गया।

शौचालयों के मॉडल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

राजनैतिक हवा शिक्षा विभाग को तिनके की तरह उड़ा ले जाती है। आजादी के तत्काल पश्चात गाय मां हुआ करती थी अतः "गाय पर निबंध लिखो", पूछे जाने लगे थे फिर धीरे-धीरे गाय एक पशु हो गई "तुम्हारे शिक्षक" तुम्हारी कक्षा" और "अविष्कारो से लाभ और हानि" पर निबंध लिखवाये जाने लगे। अब शौचालयों का जमाना है। भारत की मुख्य समस्यायें भ्रष्टाचार बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा आदि नहीं है। हमें इस चुनाव के पश्चात मालूम पड़ा कि भारत की मुख्य समस्या शौचालय है। शौचालय पर विज्ञापन बनने लगे है। कब्जियत विषय पर "पीकू" जैसी फिल्में बनने लगी है। जो बहू शौचालय रहित ससुराल नहीं जाती उसे लाखों रूपये इनाम में मिलते हैं। आजकल विवाह के संबंधों में वर की नौकरी नहीं पूछी जाती वरन शौचालय के बारे में पूछा जाता है। आज यदि अंबानी, टाटा, अजीम प्रेमजी, बिड़ला आदि भी उनके लड़के का रिश्ता लेकर कहीं जाते है तो पहले पूछा जाता है कि क्या आपके महलों में शौचालय है ? आज कल लोग कमरे कम, शौचालय अधिक बनवाते है।

यह सब इसलिये हुआ कि हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जो बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि से महत्वपूर्ण शौचालय को मानते है। उनके ऊपर शौचालयों का बड़ा उत्तरदायित्व है। वे विदेशो में यानि कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, मंगोलिया, चीन, अमेरिका आदि में कहते फिरते है कि जब वे पूरे भारत को शौचालयों से पाट देंगें तभी देश का भ्रष्टाचार मिट पायेगा। यह सही है कि चाय बेचने वालों को, गरीबो को, मजदूरों को खुले में लोटा लेकर जाना पड़ता है। कई बार उन्हें खेतों से भगा भी दिया जाता है, तो बेचारों के लोटा को दूसरी जगह तलाशना पड़ती है पर यह स्थिति गरीबी के कारण है अशिक्षा के कारण है। शौचालयों की कमी के कारण गरीबी नहीं है वरन गरीबी एवं अशिक्षा के कारण शौचालयों की कमी है। भारत में सार्वजनिक शौचालय का तो बहुत पर गंदगी के कारण

उपयोग ही नहीें हो जाता। नये शौचालयों का भी यही हाल होना है हमारी आदत है कि हम जड़ों के बजाय पत्तो को सींचते है।

कई बार गांवो में शौचक्रिया के लिये दो तीन सौ रूपये तक खर्च करने पड़ते है। एक बार मैं अपने एक रिश्तेदार के गांव गया। मुझे जब हाजत हुई तो उन्होने एक आदमी को लोटा लेकर मेरे पीछे लगा दिया। वह मुझे एक खेत में ले गया और बोला "मैं एक झाड़ी के पीछे बैठ जाऊँ। मैनें कहा "मुझे लोटा दे दो। "उसने जवाब दिया" मैं ऐसा नहीं कर सकता, हुजूर नाराज हो जायेंगें आप फुरसत हो जाओ तो मैं आपको लोटा दे दूँगा। "मैं परेशानी में था। मैनें पूछा "यहाँ मुख्य सड़क कहाँ है ? उसने कहा "पास में है" मैनें कहा ठीक है," मैं दबाव बना कर आता हँू तब तक तुम यहीं रूको। "मैं मुख्य सड़क पर आया। एक आटो रिक्शा पकड़ा और रेल्वे जंक्शन पहुँच गया। फिर मैनें रेल्वे प्लेटफार्म टिकिट लिया और नित्य क्रिया से निवृत हुआ। सफाई कर्मचारी को कृतज्ञ होकर कुछ पुरस्कार दिया और आटो रिक्शा से वापिस मेहमानी करने आ गया।

यह सही है कि गांव में पूर्व दिशा या उत्तर दिशा पर अधिक ध्यान दिया जाता है पर पश्चिम या दक्षिण दिशा पर ध्यान नहीं दिया जाता यदि वहां समृद्ध लोग शौचालय बनाते भी है तो उनमें दरवाजे नहीं लगवाते। एक फटा कपड़ा दरवाजे पर टांग देते हैं यदि आप अंदर हैं तो गाना गाते रहना पड़ता है।

पर ये हमारे आंतरिक विषय है इसके लिये आवश्यक नहीं है हम विदेशो में ढिंढोरा पीटते फिरें। क्या गलत है कि वे यदि हमें सपेरों, जादूगरों, गरीबों का देश कहते है। भारत की समस्याओं जैसे भ्रष्टाार, बेरोजगारी, अशिक्षा, गरीबी इत्यादि पर शौचालयों से अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। इन समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तो शौचालय तो स्वयं बन जायेंगे। यदि आठ लाख रूपयों का सूट पहन कर प्रधानमंत्री जी शौचालयों की कमी का जिक्र करके भारत का मजाक उड़ा कर विदेशियों को हंसाना चाह रहे हो तो यह बात अलग है। अफ्रीका के देश या बांगला देश या अन्य अनेक देश भारत की तरह शौचालयों का जिक्र नहीं करते। वे दूसरे देशों से कटोरो में से शौचालय नहीं मांगते।

आलय का तात्पर्य होता है बड़ा घर जैसे हिमालय यानि हिम का बड़ा भंडार। इसी तर्ज पर शौचालय का तात्पर्य शौच का बड़ा भंडार होना चाहिए। पर मुझे मालूम नहीे ऐसा होता है या नहीं। सरकार एक विज्ञापन प्रसारित करती है जहां विद्या बालन जैसी एक महिला शौचालयों का प्रसार करती है। अभी "ब्रांडेड" शौचालय नहीं बनते हैं नहीं तो "तीनों में एक ही का खून बहने" की तर्ज पर कहा जाता तीनों शौचालयों में एक ही का शौच बह रहा है।

उस विज्ञापन का मुख्य वाक्य की आपत्ति जनक लगता है जिसमें विद्या बालन के टाइप की वह महिला कहती है जहां सोच वहां शौचालय। व्याकरण की दृष्टि से यह वाक्य गलत है। वाक्य होना चाहिये जहां शौच वहां शौचालय। मुझे तो डर है कि विदेशो में हमारे प्रधानमंत्री जी को सम्मान स्वरूप शौचालयों के विभिन्न मॉडल न मिलने लगें। हमारा मंगल यान अब मंगल ग्रह से वापिस लौट कर शौचालयों में उतरने लगा है।

मुझे शौचालयों में सपने बहुत आते है। शायद भुखमरी से उत्पन्न कब्जियत के कारण। कभी-कभी सपने में मुझे शौचालयों की लम्बी कतार दिखती है पर एक से बढ़ कर एक गंदी। मैं शौच नहीं कर पाता हूँ और मेरी नींद खुल जाती है। अब सपना सच होने वाला है। शौचालय तो बनेंगे पर सारे सार्वजनिक शौचालय इतनें गंदे रहेंगे कि वहां थूका भी न जा सके। लगता है अब मंगल यान के पुर्जे प्रयोगशालाओं में न बनकर शौचालयों में बनेंगे। हर यान पर चन्द्रमा या मंगल ग्रह पर एक शौचालय का मॉडल जरूर भेजा जायेगा।

हमारी पंचायत के नेताजी को उद्घाटन करने का बड़ा शौक है। अब प्रधानमंत्री तो हमारी पंचायत के शौचालय का उद्घाटन नहीं कर सकते। वे तो दिल्ली के किसी एक शौचालय का ही उद्घाटन करेंगे। बाकी उद्घाटन तो सरपंचो को लूटने के लिये छोड़ देंगें। अब नेताजी क्रिकेट का उद्घाटन क्रिकेट खेल कर करते है वृक्षारोपण का उद्घाटन पेड़ लगा कर करते है, शतरंज का उद्घाटन शतरंज खेल कर करते है इत्यादियों का उद्घाटन इत्यादि क्रियाओं से करते है। एक दिन अब सुबह-सुबह ही उन्हें शौचालय का उद्घाटन करने के लिये बुलाया गया एवं निवेदन किया गया कि वे घर पर नित्य क्रिया कर के न आयें।

मुझे नेता जी से अत्यन्त आवश्यक कार्य था वे घर पर नहीं मिले। मैं गांव में इकट्ठी भीड़ देखने निकल पड़ मैनें भीड़ से पूछा नेता जी कहां हैं उनके चमचे ने जवाब दिया "वे शौचालयों का उद्घाटन कर रहें है और आधा घंटा तक करते रहेंगे। यह एक राष्ट्रीय हित का कार्य है।

एल्लो ! अब नेताजी का शौच करना भी एक राष्ट्रीय हित का कार्य हो गया है। वे भाषण देतें हैं तो राष्ट्रीय हित में चुनाव में खड़े होते है तो राष्ट्रीय हित में घपले करते है तो राष्ट्रीय हित में, अब उनका शौच करना भी राष्ट्रीय हित में शामिल हो गया है। भगवान ! वे राष्ट्रीय हित में भरेंगे कब ?

अच्छे दिन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उन्होने ऊपर से पूछा: क्यों अच्छे दिन दिखाई दिये ?
हमने कराहते हुये जवाब दिया: हुजूर यहां तो पहले जैसा ही अंधेरा है, बल्कि अंधेरा पहले से गहराता जा रहा है

वे बोले "जरा ऊपर उठ कर देखो। हमें तो क्षितिज तक अच्छे दिन ही अच्छे दिन दिखाई दे रहे" है हम ने कहा" हुजूर हम तो आपके पैरो के तले दबे है हम ऊपर कैसे उठे वे बोले "तनिक ठहरो, हम जूतो का वजन थोड़ा और बढ़ाते है। शायद फिर ऊपर उठ सको।" यह कह कर उन्होने जूतो का वजन और बढ़ा दिया। वे आसमान पर थे। उन्हें अमेरिका से आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन से जापान तक अच्छे दिन ही दिखाई दे रहे थे। उनका क्षितिज बड़ा हो गया था मगर हमारा क्षिजित तो घर की चार दीवारी ही थी। वहां तो अच्छे दिन नहीं आये थे।

अलबत्ता हम बड़े सपने जरूर देखने लगे थे। हमारे पूर्व वैज्ञानिक राष्ट्रपति ने हमें फटकारा और कहा कि छोटे सपने देखना गुनाह है तब से सपनों में हमारी रोटी एक क्षितिज से दूसरी क्षितिज तक दिखने लगी थी मगर उसे आसमान वाले ही कुतर रहे थे। वह रोटी हर दिन उठती जा रही थी। हमारी पहुँच से दूर होती हा रही थी।

एक रात को जब हम सो रहे थे तब हम सबके दरवाजे खटखटाये जाने लगे। हम हड़बड़ा कर उठ बैठे। दरवाजा खोल कर देखा तो एक रेल का डब्बा दरवाजे पर खड़ा था। हमने पूछा "तुम्हे तो रेल्वे स्टेशन पर होना चाहिये था हमारी झोपड़ी के दरवाजे पर क्यों आये हो ? वह बोला "तुम्हारे अच्छे दिनों की शुरूवात हो चुकी है। खुश हो जाओ कि आज से रेल का किराया बढ़ चुका है।"

दूसरी रात को फिर दरवाजा खटखटाया जाने लगा। अबकी बार पेट्रोल पंप दरवाजे पर खड़ा था बोला "मुबारक और डीजल और पेट्रोल मंहगे हो गये है। फिर तो हर रोज दरवाजा खटखटाया जाने लगा। हर वक्त कुछ न कुछ मंहगा होने लगा। हमारे दिन तो क्या अच्छे आते हमारी रातों की नींद भी चली गई। उन अच्छे दिनों से हमारी झोपड़ी भरती जा रही है और अच्छे दिनों नें हमें झोपड़ी से बाहर कर दिया। हमनें शासन के नीचे दबे हुये कहा "मालिक जंगलों से लकड़ियां काट नहीं सकता गैस मंहगी होती जा रही है। हम सब्जियां कैसे पकायें ?

सरकार बोली "अच्छा अभी तक सब्जियां मिल रहीं है, कुछ करना पड़ेगा। दूसरे दिन सरकार ने सचमुच कुछ कर दिया। बाजार से सब्जियां भी गायब हो गई। हमनें जूतो के तले दबे दबे ही तेज आवाज में कहा" सर अब तो कानून हाथ में लेना पड़ेगा। सरकार ने चेतावनी दी" खबरदार जो कानून हाथ में लिया। कानून सरकार के हाथ में ही रहने दो। कानून सरकार का है। वही बनाती है तो नहीं बनाते। तुम तो सिकुड़ कर खाना बनाते रहो। अगर खाना न मिले तो गेहँू और सब्जी की तरह ऊपर चले जाओ पकड़ से दूर।"

यदि तुमने कानून हाथ में लिया तो हाथों में हथकड़ी पड़ जायेगी और तुम्हारे शरीर की पश्चिम दिशा में डंडे पड़ने लगेंगे। याद रखो कानून के हाथ बहुत लम्बे है। दिल्ली से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक। तुम्हारा छिन्दवाड़ा तो बीच में ही पड़ता है। आखिर तुम वह क्यों नहीं देखना चाहते जो सरकार दिखाना चाहती है, यानि अच्छे दिन ? अच्छे

"जब अखबारों को अच्छे दिन दिख रहे है अंबानी, बिड़ला, टाटा अजीम प्रेमजी आदि और हम लोगो को अच्छे दिन दिख रहे है, दूरदर्शन को अच्छे दिन दिख रहे है तो तुम्हे क्यों नहीं दिख रहे। तुमने "वोट" हमको दिखा है और बातें विरोधी पार्टियों की तरह कर रहे हो।"

ये लोग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मंुह से आग लगाते लोग।
हवा बहुत गर्माते लोग।।
जैसा पैसा कहता हो।
वैसे ही रंग जाते लोग।।
टकरा कर मंदिर मस्जिद।
शांत शांत चिल्लाते लोग।।
सीधे सच्चे लोगों पर।
उंगली बहुत उठाते लोग।।
कुछ अपनी किस्मत खोकर।
चुपके से मर जाते लोग।।
तोड़ तोड़ कच्चे फल को।

पका पका कर खाते लोग।।
खूं भर भर कर जामों में।
पीते और पिलाते लोग।।
इतने हिम्मत वाले हैं।
छाया से डर जाते लोग।।
आग लगा कर बस्ती में।
बंशी बैठ बजाते लोग।।

वजह चाहिये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उनकी जगह छीनन की भी वजह चाहिये।
झोपड़ पट्टी वालों को भी जगह चाहिये।।
उनको बात सुलह की अच्छी नहीं लगेगी।
जिंदा रहने उनको हरदम कलह चाहिये।।
कपड़े फटे बदन पर हैं पर हैं इंसां वह।
उनको इज्जत इंसानों की तरह चाहिये।।
हाथों को फैला कर खाली पेट खड़ा है।
अगर भिखारी है खाना वा वजह चाहिये।।
पैरों के नीचे की धरती तो रहने दो।
धरती इंसानों को शामों सहर चाहिये।।

क्यों नहीं है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जी तो रहा हूँ जिंदगी जैसी क्यों नहीं है ?।
चाहत तो है पर बंदगी जैसी क्यों नहीं है ?।
सड़के है साफ धूल से आकाश भरा है।
इस मुल्क में संजीदगी जैसी क्यों नहीं है ?।
जो देखो तुमको ठग रहा अपना या पराया।
मन में तेरे पेचीदगी जैसी क्यों नहीं है ?।
आजम की बेटी आज क्यों डरती है साये से।
तारीख में शर्मिन्दगी जैसी क्यों नहीं है ?।
लगते हैं एक दरखास्त को कई साल सरकने।
दफ्तर में कुछ पाबंदगी जैसी क्यों नहीं है ?।

रख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तन सीपी मन मोजी रख।
बिखरे नूर मनौती रख।।
उसको भी मेला ले जा।
मत बिटिया को रोती रख।।
बलिदैन को मेले से।
एक कुरता एक धोती रख।।
जिस दिन तनखा तुझे मिले।
करके अलग कटोती रख।।
जो बख्शीश इनायत दे।
उसके हाथ फिरोती रख।।

अफसाने को

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पहले सुनो फसाने को।
फिर ढूढो अफसाने को।।
परकोटे में भी छोड़ो।
रस्ता आने जाने को।।
आये कहां से मेले में।
भूलो नहीं ठिकाने को।।
दीवानें में रब देखो।
मारों नहीं दीवाने को।।
सभी मदरसे कहते हैं।
खुद को बेव कमाने को।।
घर के अंदर भी झांको।
रख कर परे जमाने को।।

लगता है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बार बार बुत पर मर जाना लगता है।
कब्रगाह जाना पहचाना लगता है।।
संुदर बुत परदे में छुपा हुआ मानों।
धरती में एक गढ़ा खजाना लगता है।।
उनकी मीठी बातें मेरे कानो में।
मद्धम सुर में एक तराना लगता है।।
जब सुगंध कपड़ो में आई दोस्त मेरी।
मुझ से मिलने हुआ रवाना लगता है।।
जब भी पूछँू हाल खफा हो जाते हैं।
उनसे रिश्ता बहुत पुराना लगता है।।

फब्तियां

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चिथड़े बदन पे देख के कसते हैं फब्तियां।
शाही लिबास तुम ये उतारोगे कब मियां ?।।
सोया नहीं था भूख से मैं रात दिन कई।
आने लगी हैं मौत की अब सुबह झपकियां।।
बच्चों की भूख लोरियों से सुलाता हँू मैं।
पहुँचाने उन्हें मौत तक देता हँू थपकियां।।
गुरबत की आई बाढ़ जो तो फिर नहीं।
भूख है बहती नदीं रोटी हैं कश्तियां।।
उनकी कबूल इबादत को कर लिया गया।
आता है पैसे हमारे और रब के दरम्यां।।

समझ नहीं आया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आसमान का धुंधलापन कुछ समझ नहीं आया।
और समुद का उथलापन कुछ समझ नहीं आया।।

धागो से कपड़ो का बुनना बात हुई कल की।
उन धागो का उलझापन कुछ समझ नहीं आया।।
फूल उछालो तो पत्थर दस वापिस गिरते है।
ऊँचाई का दुहरापन कुछ समझ नहीं आया।।
कीचड़ बहती है पहाड़ से नदियां नहीं रहीं।
अब पहाड़ का गंदापन कुछ समझ नहीं आया।।
खुद उतार कर इज्जत रख दी चाकू के आगे।
खुद्दारी का मुर्दापन कुछ समझ नहीं आया।।

हो जायेगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तू अगर देखेगी उसको मुकम्मल हो जायेगी।
तेरी एक तस्वीर भी संुबर गजल हो जायेगी।।
तेरे बारे में ही लिखते आये है शायर सभी।
मैं भी वैसा लिखँूगा तो एक नकल हो जायेगी।।
तेरी आँखों, होंठ, गालों को कमल कहते हैं सब।
तू अगर आ जाये महफिल भी कमल हो जायेगी।।

चांद धरती पर उतर आया है तेरे रूप में।
झोंपड़ी भी तेरे कारण एक महल हो जायेगी।।
तू सवालों सी कठिन,है चांद तारों के लिये।
जमीं पर आ जायें वे तो तू सरल हो जायेगी।।

दे रहा है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुझे ये कौन मीठी सी सदायें दे रहा है ?।
नहीं है इस जहां की किस जहां से दे रहा है ?।
इरादा नेक है रस्ता भी नेक है मेरा।
परेशा क्यों हँू कोई बुदबुआयें दे रहा है।।
शमा जो थरथराती है अगर फानूस में भी।
उसे फानूस ही अंधड़ हवायें दे रहा है।।
आज के जमाने में रहना जिंदा कम नहीं है।
है कोई मुझको जो दिल से दुआयें दे रहा है।
गुनाह एक था वे साख्ता जो हो गया था।
मुझे क्यों जिंदगी भर की सजायें दे रहा है।।

ये बादल गिराते है बिजली रह रह के जमीं पर।
मेरा महबूब उनको ये अदायें दे रहा है।।

जिंदगी की सांस

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब से छाया गुनाहों की पड़ने लगी।
मेरी परछांइ मुझसे झगड़ने लगी।।
तेज आंधी जो जंगल हिलाने लगी।
सूखे पेड़ो की दम तब उखड़ने लगी।।
मन के वीरान जंगल डराने लगे।
गर्म बालू सी तबीयत बिगड़ने लगी।।
मरते दम तक भी बच्चे जब आये नहीं।
लाश भी बाप की अब अकड़ने लगी।।
वक्त के लम्हें ओलों से गिरने लगे।
जिंदगी की हरेक सांस झड़ने लगी।।

होता है क्या

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लड़कियों से पूछिये दिन रात डर होता है क्या ?।
आप के इस शहर में शामों शहर होता है क्या ?।
गांव के बच्चे सभी घर छोड़ कर जाने लगे।
गांव की नजरों से देखो कि शहर होता है क्या ?।
सर्दियों की रात में कुछ ओढ़ने को हो नहीं।
कंपकंपाती रात का तब हर पहर होता है क्या ?।
अस्पतालों में भटकते जो रहे बच्चा लिये।
पूछिये उनसे जरा दर्दे जिगर होता है क्या ?।
जाने कब मालिक मकां भाड़े के घर को छीन लें।
सोचिये उनके लिये कि अपना घर होता है क्या ?।

डगमगाने लगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब अंधेरे की आहट सी आने लगी।
चूनरी रात की सरसराने लगी।।
चांद ऊपर से निगरानी करने लगा।
चांदनी झील में जो नहाने लगी।।
एक भौंरे की छू के चमेली खिली।
दूसरी अपनी पेंगे बढ़ाने लगी।।
छू के चंदा की किरणें कुमुदनी हंसी।
और अभिसार में जगमगाने लगी।।
रात रानी से टकरा के ठंडी हवा।
गंध उसकी लिये डगमगाने लगी।।

मुश्किल है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

या रथ सासें भी ले पाना मुश्किल है ?
तूने कितना दिया जमाना मुश्किल है ?।
मौत हर कदम करने इस्तकबाल खड़ी।
सड़को पर अब आना जाना मुश्किल है।।
मिलता है बस शोर हर तरफ दुनिया में।
कहीं मिलेगा कोई तराना मुश्किल है।।
छोटे घर में पहले छह रह लेते थे।
आज महल में तीन समाना मुश्किल है।।
आज मुहब्बत का मतलब बस सहना है।
दिल में असली चाहत पाना मुश्किल है।।
घर सराय जैसे लगते हैं उनमें अब।
कुछ सुकुन से वक्त बिताना मुश्किल है।।
एक समन्दर प्यास ओस से बुझ जाती।
पर समुद्र से प्यास बुझाना मुश्किल है।।
रात रोई थी उसके आंसू शबनम है।
उन आंसू की थाह लगाना मुश्किल है।।

जिंदगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रात भर दर्द का है सफर जिंदगी।
दूसरे दिन उसी की लहर जिंदगी।।
भूख की आग में होम होते रहे।
और रही दूसरो की नजर जिंदगी।।
दो उसूलों में जम कर खूरेजी हुई।
हो गई खून से तर व तर जिंदगी।।
पूछता जिंदगी से तू है क्या बता ?
मोड़ पर मुझको मिलती अगर जिंदगी।।
पेट की भूख ने जानवर कर दिया।
और ढ़ाती रही फिर कहर जिंदगी।।
कब्र पर कब्र शहरों के ऊँचे मका।
जिनमें मुरदों की है बस बसर जिंदगी।।
मौत को इंच पल दूर करता रहा।
हाथ से गई फिसलती मगर जिंदगी।।
गांव खीचें शहर की चका चैंध ने।
फिर निगलते रहे ये शहर जिंदगी।।
कुछ को फूलो का गुलदस्ता होगा मगर।
गम जदों का है धीमा जहर जिंदगी।।
हम तो बातें उसूलों की सुनते रहे।
थी फरेबों की लम्बी डगर जिंदगी।।
वक्त हमको डराता रहा उम्र भर।
जैसे प्रेतों के संग रह गुजर जिंदगी।।
छेद धरती के सीने में करते रहे।
हो रही आग की एक लहर जिंदगी।।
भूख के घर मकां हमने गिरवी रखा।
न उधर जिंगदी न इधर जिंदगी।।
मौत के संग गुजारा किया उम्र भर।

और सबकुछ के बदले सिफर जिंदगी।।
फूल जूतों से मसले तनिक संूध कर।
एक दहशत भरी हर खबर जिंदगी।।
इंच दर इंच आयेंगे तेरी तरफ।
थी यही कब्र से एक ठहर जिंदगी।।
माफ करना हमें हम चलें छोड़ कर।
बच्चों आगी की तुमको नहर जिंदगी।।

अजीवन दरबान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बेईमान दुनिया में मेरे पिता लिये ईमान रहे
इसीलिये वे इस दुनिया में आजीवन दरबान रहे
रहे बरसते आसमान से अंगारे दिन रात यहां
रहे देवता अमृत पीते हम करते विषपान रहे
दिया दिलासा हमें स्वर्ग का और नरक में झोंक दिया
बाते उनकी अलग अलग थी ठगते एक समान रहे
उनको अपने हाथों से ही हमने ऊपर उठा दिया
और उन्हीं के हाथों से फिर हम पीते अपमान रहे
जब जब नीचे भाव गिरे तो हमने सिर पर बिठा लिये
लेकिन सस्ते भाव हमारे दो दिन के मेहमान रहे
बच्चों को भी भूखे रहना हमने कब से सिखा दिया
बचपन में ही बूढ़े हो गये हम भी कहां जवान रहे
जब भी पीछे चले क्रांति के वह कुर्सी पर बैठ गई
कुर्सी हमको रहीं हांकती हम होते हैरान रहे
पीछे से वे अच्छे दिन लाने की बातें कहते थे
अच्छे दिन उनके घर पहुँचे अपने घर सुनसान रहे
वे कम्प्यूटर भर देते हे मंुह में जब रोटी मांगे
मंदिर तो सोने से लद गये पर भूखे भगवान रहे
छिलके ही छिलके है उनमें गुदा नहीं जरा सा भी
फल उनकी झोली में हम तो धूल भरे तूफान रहे

नहीं हक

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हमारी पहँुच है कोर्नीश ही तक।
हमें नाराज होने का नहीं हक।।
ताली में तिजोरी में रखी हैं।
हमें रहना है काहिल कुछ नहीं शक।।
हमारे हकों की मत बात करना।
हथियाली हैं कब्रो की जमीं तक।।
क्या देखेंगे वे दौलत से अंधे।
मजलूमों की आंखो की नमी तक।।
मुल्क की अमीरी कुछ तो बढ़ी है।
मगर सिमटी है जैसे बस तुम्हीं तक।।

या खुदरा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उन दरख्तो को पल में गिराने लगे।
जड़ जमाने में जिनको जमाने लगे।।
जिससे दौलत मिले काम करते हैं वे।
आया मौका तो कब्रें सजाने लगे।।
उनकी इतनी हवस कि या खुदारा।
सारी दुनिया के भी कम सजाने लगे।।
कुछ लुटेरो ने छोटे निशां इस तरह।
वे कसूरो के वे अब फसाने लगे।।
दफन खुद में ही अब शख्श होने लगे।
कब्र को कब्र में ही गढ़ाने लगे।।
गीत हमने चखे हैं शहद से भरे।
आज के गीत फीके तराने लगे।।
डांटते हैं हमें खुद के लख्ते जिगर।
जब से पैसे क्या थोडे कमाने लगे।।
बिजली आई नहीं न ही खम्बे लगे।
बिजली वाले हमें बिल थमाने लगे।।
आज ईमान ढोना है मुश्किल बहुत।
उस पे बेईमान उनको दबाने लगे।।

डेने दो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कल जबरन पीना छूटेगा।
आज तो पी लेने दो।।
कब तक जीऊं जमानें को मैं।।
खुद को जी लेने दो।
कल से वे फिर नहीं मिलेंगे।।
आज अगर आये हैं।
जितना वक्त हमें मिलता है।।
उतना ले लेने दो।
जितने संुदर दिखते हैं वे।।
उतने जहरीले हैं।
भरे जहर से उनके अंदर।।
दांत तेज पेने दो।
नहीं ठगाये उनसे अच्छा।
हम बच आये निकल के।।
देते हैं वे अगर बद्दुआ।
तो उनको देने दो।।
बाहर जाना ही था उनको।
उसमें गम क्या करना ?
देख लिया है आसमान।
फिर तौल लिये डेने दो।।
वक्त लगेगा अंडो से।
बाहर चूजे आने में
चिड़िया को धीरज से अपने
अंडे तो सेने दो।।

आदत सी पड़ गई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कल ही बढ़ी थी आज कीमत
        फिर से बढ़ गई।।
बढ़ते वजन की हमको अब
        आदत सी पड़ गई।।
चंद लोगो की पकड़
        बस्ती पे काबिज है।।
फिजा अच्छी थी चमन की
        अब बिगड़ गई।।
कोर्निश करते रहे
        तो जिंदगी उन्हें।।
इतना झुके कि कमर
        तो बिल्कुल अकड़ गई।।
कोई भी दवा छिड़को
        पेड़ अब न बचेगा।।
अब काटना पड़ेगी डाल
        इतनी सड़ गई।।
हर जाम में सोना वे
        मिलाते है घोल कर।।
फिर कहतें है कि मैं
        उन्हें सोने की चढ़ गई।।
पानी फसल का उल्टा
        नहरों में चला गया।।
मोटी तिजोरी हो गई

पर फसल झड़ गई।।
कपड़े फटे थे मेरे "सेठ" उन्होनें कहा
उनकी हंसी एक कील सी सीने में गढ़ गई।।

बन दल दल गये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इंकलाबी लफ्ज खुदगर्जी में ऐसे ढल गये।
इंकलाबी लफ्ज के मतलब नये अब चल गये।।
इंकलाबी मशालें सब बुझ गई देकर धुआँ।
उन मशालों से कई मजलूमों के घर जल गये।।
जोश में सड़कों पे निकले बैठ कुर्सी पर गये।
इंकलाबी लोग एक बरसात में ही गल गये।।
इंकलाबी चोटियों पर ऐसे कुछ पैसे गिरे।
इंकलाबी रस्सियों के निकल सब कस बल गये।।
क्या हुआ कि लोग आपस में झगड़ने फिर लगे।
दल बने दल दल बने फिर कई बन दल दल गये।।

लिख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

थोड़ा लिख या ज्यादा लिख ?
लेकिन सीधा सादा लिख।।
वे जो कुछ भी लिखवायें
अपना नेक इरादा लिख
उसने तोड़ा तोड़ दिया
तू तो अपना वादा लिख
तड़क भड़क क्या दिखलाना
प्यादा है तो प्यादा लिख
जो देहरी पर बैठा है
जो भी है तू दादा लिख
चमड़ी कितनी संुदर हो।
मन का एक लबादा लिख।।
जो गिर गया उसूलों से।
नीचे गिरा बुरादा लिख।।

हिन्दी सिनेमा का हिन्दी के प्रसार में योगदान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पहली भारतीय फिल्म सवाक हिन्दी आलम आरा थी। मगर वह मूक फिल्म थी। हालांकि पहले ल्यूमिये बंधु की फिल्मी स्ट्रिप्य बाजार में आ चुकी थी। उसी समय लोगो ने अनुमान लगा लिया था कि एक सशक्त माध्यम जन्म ले चुका है। सन् उन्नीस सौ तेईस में "हरिशचन्द्र तारामती पहली हिन्दी मूक फिल्म थी। उस समय की फिल्मों में पारसी थियेटर का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उस समय की हिन्दी फिल्मों में उर्दू के शब्दों की बहुलता मिलती है। सन् उन्नीस सौ चालीस से उन्नीस सौ पचास तक हिन्दी फिल्मों का स्वर्ण युग आरम्भ हो चुका था। वह समय के के.एल.सहगल, दिलीप कुमार, देविका रानी जैसे सितारों का युग था। पृथ्वी थियेटर आरम्भ हो चुका था और मुम्बई हिन्दी फिल्मों का केन्द्र बन चुका था।

सन् पचास से साठ तक कई धार्मिक सामाजिक फिल्में बनी। स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित फिल्में भी बनी वे फिल्में खूब चली। इस समय फिल्मी नायको में कुमार नाम से प्रचलन हो गया था जैसे दिलीप कुमार तो पहले से ही थे, राजकुमार, राजेन्द्र कुमार, मनोज कुमार आदि। मगर कुछ और नायक भी थे जैसे कपूर परिवार, विश्वजीत आदि। कवि प्रदीप ने इस दौरान कई मधुर गीत लिखे।

साठ और सत्तर का दशक हिन्दी सिनेमा का स्वर्ण युग था। शैलेन्द्र और नीरज जैसे कवि सतह पर आये। जैसे पचास के दशक में "मदर इंडिया" दिया और तूफान जैसी अप्रतिम फिल्में बनी। साठ के दशक में तो जैसे उत्तम फिल्मों की बाढ़ सी आ गई। जेमिनी, आर.के.प्रोडक्शन, राजश्री प्रोडक्शन आदि कई कंपनियां बाजार में उतर आई। राजकपूर के पीछे तो लोग पागल हो गये थे। उसकी फिल्म रिलीज होत ही लोग सैकड़ो मील दूर से उसकी फिल्में देखने आते थे। हिन्दी सिनेमा में देवानंद एवं धर्मेन्द्र के योगदान को कभी भूला नहीं जा सकता। नई पीढ़ी इनकी नकल करने लगी थी। यह युग नायिकाओं का भी युग था। जिनमें नरगिस का नाम सबसे ऊपर रखा जाता है। साथ ही साथ मीना कुमारी, वहीदा रहमान इस समय की सबसे अमर नायिकायें है।

उन दिनों गाने, संगीत एवं नाच उत्कृष्ट होते थे। पचास और साठ के दशक के गाने अमर हैं। लोगो ने हिनदी सीखना एवं नृत्य सीखना, गाने एवं संगीत की मधुरता से किया। साठ से सत्तर के दशक में हिन्दी फिल्मों की तूती बोलने लगी। मध्य पूर्व के लोग हिन्दी सीखने लगे। इन्ही फिल्मों को समझने के लिये महाराष्ट्र और दक्षिण भारत

के लोग हिन्दी सीखने लगे। मुगले आजम, "वक्त" के तो डायलाग जीवन शैली बनने लगे । जैसे "सलीम का दिल हिन्दुस्तान" की सल्तनत नहीं है या वक्त का डायलाग "चिनाय सेठ", जिनके अपने घर शीशे के बने होते है वे दूसरों के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते या वक्त का एक और डायलाग यह चाकू है, लग जायेगा तो हाथ कट जायेगा। इसी समय बालीबुड में हालीवुड से ज्यादा फिल्में बनने लगी। सत्तर के दशक में एक ऐसे नायक का उदय हुआ जो सदी का महानायक कहा जाने लगा। ख्वाजा अहमद अब्बास की सात हिन्दुस्तानी ने अमिताभ बच्चन को जन्म दिया। उसकी दीवार और जंजीर फिल्मों ने एक नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व किया। उसकी छवि एंग्रीयंगमैन की बन गई। उसकी अन्य अमर फिल्में काला पत्थर, त्रिशूल, लावारिस इत्यादि रही। ये बाक्स आफिस पर अत्यन्त सफल रही।

साठ से सत्तर का दशक समानान्तर सिनेमा का युग भी था। ये फिल्में कम बजट की होती थी मगर चलती खूब थी। इन्हीं फिल्मों के माध्यम से स्मिता पाटिल, शबाना आजमी, नसिरूद्दीन शाह सहदशिव अमरापुरकर इत्यादि कलाकारों ने हिन्दी सिनेमा में मानो भूचाल ला दिया। फिल्मों की हिन्दी सामान्य बोलचाल की भाषा होती है। यह विशुद्ध संस्कृत निष्ठ मानक हिन्दी नहीं होती। यह वह, संख्यक हिन्दी की सरल हिन्दी होती है। इसलिये ग्राहय होती है। फिल्मों ने हिन्दी को विश्व की पहले दर्जे की भाषा बना दिया है। हालांकि इसे अंग्रेजी, मण्डारिन के बाद रखा जाता है।

"शोले" फिल्म का तो हर वाक्य अमर हो गया जैसे "मैं देखना चाहता था कि तुम्हारे हाथो" में अभी भी वह दम है और मियां मैं सूरमा भोपाली ऐसे नहीं कहलाता, "ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर," "कितने आदमी थे", यहां से पचास पचास कोस दूर गांव में जब बच्चा रोता है तो माँ कहती है, बेटा सो जा, नहीं तो गब्बर आ जायेगा, हम अंग्रेजो के जमाने के जेलर है और कई अन्य अनेक डायलाग लोगो की जबान पर आ गये।

मनोज कुमार ने हमारी धार्मिक भावनाओं और देश प्रेम को खूब भुनाया। "ओम जय जगदीश हरे", आरती उनमें पूरब पश्चिम में डाली इस आरती के परदे पर आते ही लोग श्रद्धा से हाथ जोड़ते हुए देखे गये। इसके रिकार्ड भी बहुत बने और उनसे ग्रामाफोन भी बहुत बिके। क्रांति फिल्म कमजोर निर्देशन के कारण अधिक नहीं चली। पर उसकी फिल्मों के गाने बहुत प्रसिद्ध हुए। अभिताभ बच्चन की "सिलसिला" एक ऐसी फिल्म थी जिसने विदेशो में खूब पैसे कमाये। उसकी अग्निपथ अधिक नहीं चली। इन सभी फिल्मों के संवाद और उनकी अदायगी ने लाखों लोगो को हिन्दी सीखने के लिये मजबूर किया। हिन्दी ही नहीं कतिपय हिन्दी फिल्मों के कारण उर्दू को भी प्रसार मिला। खान बन्धुओं की फिल्मों ने मध्य पूर्व एशिया ने जम कर हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार किया।

अभी सलमान खान की "बजरंगी भाईजान" पर्दे पर आई। उसे कुछ काटने छाटने के बाद पाकिस्तान में भी दिखाया जा रहा है। निर्देशको ने अलग-अलग देशो में जो छायांकन किया है वहां के देशवासी भी इन फिल्मों को देखने के लिये उत्सुक रहते है। सलीम-जावेद की जोड़ी ने सशक्त संवाद लिखे। वे अच्छे अभिनेताओं का सहारा पाकर और सशक्त हो गये। उन संवादो की अदायगी के समय उन्हें बोलने वाला भी स्वयं को नायक समझने लगता है।

आमिर खान की फिल्में नये विषयों को लेकर बनाई जाती है। लगान एक उत्कृष्ट फिल्में थी। शाहरूख खान रोमांटिक फिल्मों में आये और नई पीढ़ी से प्रशंसा बटोरी। अक्षय कुमार एक्शन फिल्मों के नायक रहे। मेनेरिज्म, दिलीप कुमार के समय से फिल्मों पर छाया रहा।

हिन्दी का जितना प्रसार फिल्मों ने किया है उतना किसी हिन्दी के प्राध्यापक या विश्वविद्‌यालय ने नहीं किया। वैसे भी हिन्दी या हिन्दी का मूल रूप सामान्य बोलचाल की भाषा है, संस्कृत निष्ठ या मानक हिन्दी नहीं।

गानों ने हिन्दी को बहुत लोकप्रिय बनाया। बिनाका टूथ माला के अमीन सयानी को कौन भूल सकता है ? जिसका प्रसारण सीलोन से होता था। लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, आशा भोसले, महेन्द्र कपूर, हेमन्त कुमार, बर्मन दा आदि हिन्दी फिल्मों के अमर गायक रहें है। "सा, रे, गा, मा, या लिटिल चेम्प कार्यक्रम में उन्हीं की नकल की जाती है।

हिन्दी फिल्मों से हिन्दी के प्रसार का श्रेय पूरा हिन्दी फिल्म उद्‌योग को जाता है मात्र एक व्यक्ति को नहीं। आज विश्व में सर्वाधिक फिल्में हिन्दी की ही होती है और अधिक से अधिक लोग उन्हें देखने और समझने को उत्सुक रहते हैं।

क्या जमाना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आज के इस दौर में ये क्या जमाना आ गया।
दांत तो निकले नहीं लेकिन चबाना आ गया।।
उम्र की उन सीढ़ियों पर खुदा ही हाफिज रहे।

खिलखिलाते थे कभी अब मुस्कुराना आ गया।।
उनकी आॅखो में हमें फंदे नजर आने लगे।
बच के चलना है उन्हें चिड़िया फसाना आ गया।।
जो फकत अल्लाह के आगे ही झुकता था कभी।
जमाने के सामने वह सर झुकाना आ गया।।
प्यार में हमको बचाना या खुदा कि अब उन्हें।
प्यार की पाकीजा शै को आ जमाना आ गया।।
कुछ पलों की दूरियां कुछ दिनों की होने लगीं।
एक अफसाने में अब एक और फसाना आ गया।।
अपने घर का एक कोना हमारा घर हो गया।
हमारी औलाद को पैसा कमाना आ गया।।
तेज चलती रेलगाड़ी खड़खड़ाने अब लगी।
समेंटे समान अब अपना ठिकाना आ गया।।

सारी रात

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रात हो गई मैखाने से चलता हँू।
गली गली फिर सारी रात भटकता हँू।।
घर जैसा घर नहीं नजर में आता है।
घर में मैं अंदर जाने से डरता हँू।।

किसी झील के पास चांदनी रातों में।
चांद और तारो की तरह बिखरता हूँ।।
घर वाले तो नहीं ढूँढने आयेंगे।
हवा और पेड़ो से बातें करता हूँ।।
मन की भी आवाज न बाहर आ जाये।
मन में भी कुछ कहते हुये संभलता हूँ।।
सुबह सुबह कब मैं खाने को खुलना हैं ?
उसके दरवाजे पर सुबह टहलता हूँ।
मेरा दिन सूरज ढलने पर होता है।।
सूरज जब उगता है तो मैं ढ़लता हूँ

जोड़िये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जिंदगी में साल कुछ मत जोड़िये।
साल में कुछ जिंगदी अब जोड़िये।।
नदी उल्टी तो कभी बहती नहीं।
अगर बहती है उसे मत मोड़िये।।
तेरे अंदर है अगर वह रहने दें।
देखने में दोस्ती मत तोड़िये।।

दर पे मंजिल के तुझे पहुँचायेगा।
रास्ते को बीच में मत छोड़िये।।
आप वैसे हैं दिखाने के लिये।
उनकी छोड़ी चादरें मत ओड़िये।।

दो चार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जहां नाविक नहीं हो हवा की पतवार होती है।
नहीं साहिल मिले तो किराना मझदार होती है।।
तुम्हारी नजर से घायल हुये तो हुआ ये मालूम।
कि आँखों जैसी नाजुक चीज भी तलवार होती है।।
तुम्हारी गुफ्तगू तो सामने है शहद की माफिक।
मगर वह पीठ पर खंजर की पैनी धार होती है।।
जवानी में तो सं◌ुदर जिंदगी फूलो सी लगती है।
मगर कुछ बीतने पर वक्त एक बेगार होती है।।
हवा भी गेंसुओं के बिखरने की राह तकती है।
उड़ा कर रेशमी जुल्फों से वह दो चार होती है।।

तुम्हारी याद न होती तो ये संसार सूना था।
तुम्हारी याद ही मेरे लिये संसार होती है।।

बिगड़ता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बीज तो बोया मगर वह काटने से डरता है।
प्यार बाजार से घर आये तो बिगड़ता है।।
रंग रोगन तो जूते का बहुत ही अच्छा है।
पहन के चलता हँू तो पैरो में बहुत गड़ता है।।
कुरानो-गीता फकत क्या कसम खाने को है ?
घरों-घर पर रखें हैं पर कोई नहीं पड़ता है ।।
खाद तू खायेगा पेड़ो की तो फूल जायेगा।
शिकायत चमन से उसका अगर फूल झड़ता है ?
कोई सुनता नहीं तो सही है सुनने वाले
बे कसूरो पे क्यों गलतियों को मड़ता है
गालियां मिलेगी जायज का हक दबाने पर
गलत होकर तू इज्जत के लिये बेकार लड़ता है

मिट्टी का बुत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मिट्टी का बुत बना दिया।
फिर मिट्टी में मिला दिया।।
मिट्टी में सांसे फूंकी।
मरने का डर लगा दिया।।
जन्नत गंदी करती थी।
तो मिट्टी को धका दिया।।
मिट्टी की दुनिया को रव,
मिट्टी पर ही वसा दिया
मिट्टी सा जज्जा देता।
जज्बातों में फंसा दिया।।
तेरा बुत तो बाहर था।
मैनें अंदर छुपा लिया।।

शमा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जिसे जलाती है उसकी वजह से जलती है।
जला के एक पतिंगा शमा पिघलती है।।
शमा के दिल में एक चिराग जलता रहता है।
और उस चिराग के संग संग सफर पे चलती है।।
शमा जलती है हमें ये मिसाल देने को।
कि रोशनी भी अंधेरे के बीच पलती है।।
शमा और रात का तो साथ गजब ढंग है।
रात ढ़लती है शमा साथ साथ ढ़लती है।।
वही शमा इन पतिंगो से बची रहती है।
जो शमा एक भी शीशे के घर में जलती है।।
ये अंधेरा है बगैर जले तो मिटने से रहा।
इससे लड़ने को शमा बंूद बंूद गलती है।।
बाहरी एक लौ को दिल में बसाया उसने।
मोम सा दिल हो तभी रोशनी निकलती है।।

पत्थर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आसमान पर मारा पत्थर।
सिर पर गिरा करारा पत्थर।।
वक्त जमी थी बोया पत्थर।
पैदा हुआ दुबारा पत्थर।।
पत्थर तो तुमने फेंका था।
क्या करता बेचारा पत्थर।।
क्या होगा मेरी किस्मत का।
उसका हुआ इशारा पत्थर।।
तुम सोते हो रंग महल में।
मेरा एक सहारा पत्थर।।
मुझे फोड़ ही डाला आखिर।
था मैं एक नकारा पत्थर।।
नदी तभी तक एक नदी है।
जब हो एक किनारा पत्थर।।
उनके बच्चे आसमान में।
मेरा एक सितारा पत्थर।।
पत्थर तो पत्थर है चाहे,।
बुत या हो प्यारा पत्थर।।

एक शहर का बंद

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बंद का एलान सुन कर चोर उचक्कों ने लूट पाट की रिहर्सल चालू कर दी। उनके बगैर बंद अधूरा ही रहता है। वे नेताजी के फोन का इंतजार कर ही रहे थे जो आ गया। उन्होने लपक कर बाॅस का फोन उठाया और बगैर पूछे ही कह दिया "बाॅस हम लैस हैं फिकर न करें। बाॅस ने कहा वो तो ठीक है। बहू से पूछ कर लिस्ट बना लेना घर में किस किस सामान की जरूरत है। "चोर बोला जी नेताजी" मेरे घर में तीन दरवाजो का फ्रिज नहीं है।" उच्चका बोला "सर मेरे घर में थ्री डी, एल.ई.डी की कमी है। दद्दा का कहना है कि उस टुच्चे से गंुडे के घर में थ्री डी, एल.ई.डी है और तुम्हारे घर नहीं हैं। "गुण्डा बोला "साहब जी मैं तो आपका दाहिना हाथ हॅंू और मेरे पास ही लक्जरी कार न हो तो लोग आपको ही बदनाम करते है, मेरा क्या ?

बंद के आव्हान का ऐसा ही कोई छोटा मोटा कारण था जैसे मंहगाई का बढ़ना, बिजली के बिल के झटके, पोजीशन पार्टी के नेता की लड़की का भाग जाना, व्यापम आदि। अपोजीशन पार्टी चाहती थी कि बंद हो और पोजीशन पार्टी चाहती थी कि बंद न हो। बहुत दिनों तक कुछ धमाल होने के कारण विरोधी पार्टी के नेता को लोगो ने नमस्ते करना बंद कर दिया था। उनके पास कोई काम नहीं था अतः वे कुछ काम करना चाह रहे थे जिससे उन्हें महसूस हो कि वे जिन्दा है। वे विरोधी, रोधी और अवरोधी तीनो ही थे।

"रूलिंग पार्टी के पास रूल्स और रूल की ताकत थी। उन्होनें प्रशासन को बुलाया और कहा कि "बंद असफल होना चाहिये यानि सफल नहीं होना चाहिए।" प्रशासन ने सर

कह कर आज्ञा पालन सूचक सिर हिला दिया। प्रशासन कार्यालय आया और धारा एक सौ चैवालीस को पुचकारा। कर्फ्यू को चूमा और तैयार रहने का आदेश दिया और पुलिस को वर्दी पहनने का आदेश दिया। बंद से पुलिस को अत्यन्त प्रसन्नता होती है। उन्हें कानूनन मारने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। उन्होने प्यासे डंडे को तेल पिलाया और उन टुच्चे नेताओं की लिस्ट बनाई जो उन्हें थाने में ही गाली देकर गये थे। उन्हें घर से निकाला गया और थाने ले आये। थाने में ही बंद रखा जिससे दूसरे दिन उन्हे तोड़ फोड़ की जगह से पकड़ना बतला कर पिटाई लगाई जा सके।

प्रशासन ने फिर डाक्टरों को बुलाया और कहा "अब कल जरा अस्पताल भी चले जाना। देखना अस्पताल कहीं और तो स्थानान्तरिक नहीं हो गया। घर का आउट डोर कल बंद रखना। डाक्टरों का नेता बोला "अपने शब्द वापिस लीजिये नहीं तो हम "मास स्ट्राइक" पर चले जायेंगे। हमारी वजह से ही चेचक और पोलियों विश्व से खत्म हुआ और पाँच जानलेना बीमारियां नियंत्रणमें है। प्लेग विश्व से खत्म हो गया और है जा नियंत्रण में है।"

प्रशासन ने सोचा कि ये रट्टू तोते पेड़ के सारा अमरूद चट कर जाते है और अहसान देश पर बताते हैं। ये बीमारियां तो प्रशासन की योजना और बहुउद्देशीय कार्यकर्ताओं के कारण खत्म हुई है। खैर इस तरह वह मीटिंग सफलता पूर्वक खत्म हुई। रात को सत्तारूढ नेताओं और प्रशासन की मीटिंग एक साथ हुई। वे कोई ऐसी तरकीब निकालना चाह रहे थे कि सत्तारूढ को बंद असफल लगे ओर सत्ताच्युत हाईकमान को बंद सफल लगे। आखिर स्थानीय नेताओं को भविष्य में एक साथ रह कर ही एक दूसरे को कंधा देना पड़ेगा। तय से हुआ कि जिस क्षेत्र में सत्तारूढ़ पार्टी के मतदाता ज्यादा हैं वहां ज्यादा खुला और कम बंद रखा जाये और जहां सत्ताच्युत पार्टी के मतदाता ज्यादा है वहां ज्यादा बंद और थोड़ा खुला रखा जाये। बाकी चोर उचक्को, गुण्डो इत्यादि सभ्य नागरिकों को दुकाने लूटने का पर्याप्त मौका दे दिया जाये।

हाईकमान का आदेश आया कि बंद केवल व्यापम पर ही रखना है। भ्रष्टाचार का मुद्दा अन्ना हजारे को आरक्षित रहने दिया जाये। नर्मदा को मेघा पाटकर बचायेगी। बाल मजदूरी का मुद्दा कैलाश सत्यार्थी डील करेंगे। महिला सुरक्षा का मुद्दा महिला आयोग सम्भालेगा। एक दूसरे के क्षेत्र में हस्ताक्षेप होने के "गैंग वार" होने का डर है।

जो बाहर थे वे बंद करा रहे थे और जो अंदर थे वे खोल रहे थे। बंद करने वाले सुबह छः बजे ही बंद करने निकल पड़े। जब कुछ खुला ही नहीं था तो सब कुछ बंद था। अतः उनके अनुसार बंद सफल रहा। दुकानों के बंद "शटर्स" की "फोटोग्राफी" कर "हाईकमान" को भिजवा दी। दुकानें 11 बजे पूर्वान्ह खुलने लगी अतः खोलने वालों के लिये शत प्रतिशत खुला था। बंद वाले अंदर के वाहनों को बाहर नहीं जाने दे रहे थे

और बाहर वाले वाहनों को अंदर नहीं आने दिया जा रहा था । अन्यथा प्रयत्न करने वाले वाहनों की हवा निकाल दी जा रही थी। अतः हवा भरने वालो की बन आई।

सुबह से ही हवा में गालियां तैरने लगी थी। मारो, पकड़ो की आवाज से शहर गंूजने लगा। प्रशासन ने सुबह से ही जगह जगह पत्थर रखवा दिये थे। जिससे नागरिक एक दूसरे पर पत्थर फेंक कर नागरिकता का परिचय दे सकें। पुलिस वालों से कहा गया कि वे एक दूसरे पर पत्थर फेंकें जिससे कफ्र्यू लगाया जा सके। कफ्र्यू लगने पर शहर ने देखा कि वह कितना साफ सुथरा है और उसकी सडके कितनी चैड़ी है। नहीं तो वे तरतीब पार्किंग और ठेलो से शहर बदनाम होता जा रहा था। शहर ने भगवान से प्रार्थना कि कफ्र्यू कुछ दिन इसी तरह लगा रहें जिससे कि वह कुछ दिन खुली हवा में सांस ले सके।

क्या याकूब मेमन की फाँसी गलत थी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

याकूब मेनन सन् 1993 में मुम्बई बम ब्लास्टों की श्रृंखला का दोषी पाया गया और उसे दिनांक 29.07.2015 को सुबह 7 बजे नागपुर केन्द्रीय कारागार में फांसी दे दी गई। प्रतिक्रिया स्वरूप शशि थुरूर ने कहा कि यह अनुचित हुआ। यह एक राज्य प्रायोजित हत्या है। उनका मत उसी दिन यानि 29.07.2015 को दूरदर्शन पर आया। दिनांक 31.07.2015 को संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा कि 21 वीं सदी में फांसी की सजा को कोई जगह नहीं होनी चाहिये।

थुरूर या महासचिव ही बतलायें कि जो व्यक्ति 257 बेकसूर लोगो की हत्याओं का दोषी है उसे क्या पुरस्कार देना चाहिये ? क्या उसे भारत रत्न से नवाजा जाना चाहिये था या भारत सरकार को उसे बम ब्लास्टों की अन्य योजनाओं में सहायता देना चाहिए था। ये लोग बम विस्फोटो में मारे गये बेकसूर लोगो से तो सहानुभूति नहीं रखते पर क्रूर हत्यारों से सहानुभूति रखते है। फांसी की सजा पर शशि थुरूर का भय तो समझ में आता है क्योंकि वे उनकी पत्नि की हत्या में संदिग्ध है।

यदि कहा जाय कि इन क्रूर हत्याओं को आजीवन कैद में रखा जाये तो वह भी बेकसूर लोगो को ही सजा होगी क्योंकि उनका जीवन यापन भी कानून का पालन करने वाले लोगों के खर्चे से ही होगा। सजा का उद्देश्य जानबूझ कर किसी की जान लेना नहीं होता। उसके तीन उद्देश्य होते है:

(1) अपराधियों को यह संदेश देना कि वे भविष्य में अपराध न करें। सजा का उद्देश्य भविष्य के अपराध रोकना होता है। सजा का उद्देश्य अपराधियों को यह बतलाना होता है कि अपराध की परिणति अच्छी नहीं होती है।

(2) समाज के वे लोग जो अपराध करना चाह रहे है उन्हें यह संदेश देना होता है कि वे अपराध न करें अन्यथा उन्हें भी सजा मिलेगी यहां सजा का अपराधों की रोकथाम वाला पहलू है।

(3) राज्य का निर्दोष व्यक्तियों को यह दिलासा देना होता है, जिससे वे लोग जो अपराध के रास्ते पर चलना चाह रहें हो उनके कदम रूक जायें।

जघन्य अपराधों की मात्र भत्र्सना से अपराध नहीं रूकने के। सजा का डर न रहने से तो राज्य में अपराजकता फैल जायेगी जंगल राज हो जायेगा। भारत को संयुक्त राष्ट्र के महासचिव से प्रति प्रश्न करना चाहिये कि दो सौ सत्तावन वे कसूर नागरिको के जघन्य अपराधियों को वे क्या पुरस्कार तजवीज करते हैं ?

छोटा शकील ने धमकी दी है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है और याकूब मेनन की फांसी के भारत को परिणाम भुगतने पड़ेंगे। तो आतंकवादी अभी तक भारतीयों को हलुआ नहीं बांट रहे थे। वे क्या करेंगे ? अधिक से अधिक एक दो विस्फोट और करवा देंगे तो वे अभी भी हर दिन यही कह रहें हैं। छोटा शकील का यह कहना

कि अब दाउद इब्राहिम भारत कभी भी नहीं आयेगा। तो क्या वह अभी तक आ गया था। और वह न ही आये तो अच्छा।

यह आश्चर्य की बात है कि संयुक्त राष्ट्र संघ और मानव अधिकार आयोग बेकसूर लोगो के क्रूर हत्यारों का पक्ष लेते हैं। उन बेकसूर मृत लोगो के परिवारों के बारे में कोई सहानुभूमि नहीं रखतें जिनके परवरिश करने वाले बगैर किसी अपराध के मारे गये। इस विचारधारा से जो समाज का ताना बाना ही बिखर जायेगा। अपराध का साथ देने वाला भी अपराधी होता है अतः क्रूर आतंकवादियों के पक्ष में बोलने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एवं मानव अधिकार आयोग भी एक तरह से आतंकवादी एवं हत्यारे हुये।

यह हमारे समाज का एक लज्जाजनक पहलू है कि प्रशान्त भूषण जैसे अधिवक्ता एक ओर तो आदर्शवादी बातें करते है और दूसरी ओर याकूब मेनन की सहायता करने के लिये अर्द्धरात्रि को सर्वोच्च न्यायालय इसलिये खुलवाते हैं कि आने वाले सुबह याकूब मेनन की फांसी रूकवाई जा सके। एक देशद्रोही, समाज द्रोही बेकसूर लोगो के हत्यारे के वे मसीहा बन के आते हैं। याकूब मेमन को बचाने के लिये एक महिला अधिवक्ता भी थी। यदि उनका बच्चा या बेटी उनके पति, पिता या भाई भी बम ब्लास्ट से मांस के लोथड़ो में तब्दील हो गये होते तो क्या वे तब भी याकूब मेमन को बचाने का प्रयास करती ?

विकास करना है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इन्हें भी देश का विकास करना है उन्हें भी देश का विकास करना है पर दोनो लड़ रहें है। दोनो के रास्ते कुर्सी तक जाते है। जब तक वे कुर्सी पर नहीं बैठेंगे विकास नहीं करेंगे। कुर्सी पर खजाना रखा है। वहीं विकास है। दोनो का ध्येय एक है पर दोनो के रास्ते एक दूसरे को काटते हैं। विकास के लिये दोनो साथ साथ नहीं चलते। मंत्री जब कुर्सी पर बैठा तो गरीबी एक दम गायब हो गई। मंत्री को आश्चर्य हुआ कि एक दिन पहले ही पर गरीबो के बीच में था अब उद्योगपतियों के बीच में कैसे आ गया। उद्योगपतियों ने उसे घेर रखा था। वे मंत्री को आरपार देखने नहीं दे रहे थे। मंत्री ने आश्चर्य से उनसे पूछा "ये एक दिन में ही विकसित देश कैसे बन गये"।

उद्योग पतियों ने जवाब दिया "आपकी कंुडली के गृह ही ऐसे है सर।" मंत्री को विश्वास हो गया। उसके चमचे हर चैराहे पर देश का विकास करने लगे। हर गली में विकास रथ निकलने लगे। गोया देश में एक जबरदस्त विकास का माहौल बन गया। विकास के विज्ञापन में अरबों रूपये खर्च हो गये पर विकास का धेला भी खर्च नहीं किया गया।

दफ्तर-दफ्तर में विकास हो रहा था। एक बाबू को जगाया गया पूछा "सो क्यों रहे हो सर।" वह गुर्राया और बोला" "मैं सोकर देश का विकास कर रहा था और तुमने जगा दिया निकालो पचास हजार रूपये अन्यथा सरकारी काम में व्यवधान उत्पन्न करने के अपराध में तुम्हें सजा करवा दंूगा।" आजकल जब कर्मचारियों के घरो में छापे पड़ते है तब आम आदमियों का सिर हीनता के आभास में झुक जाता है। अभी समाचार पत्र में पढ़ा था कि एक चपरासी के घर छापा पड़ने पर तीन करोड़ रूपये निकले। अब आप ही बतलाइये देश विकास कर रहा है कि नहीं। यदि आपका जवाब नहीं है तो आप देश द्रोही है।

सोने वाले बाबू को जगाना अपराध हो गया। उससे पूछा गया "आप पचास हजार की रिश्वत क्यों मांग रहे है ?" तो उसने कहा "देश का विकास करना है भाई वह बगैर पैसो के कैसे होगा? एक बार कुछ फटेहाल लोग मंत्री से मिलने आये। पी.ए. ने सूचना

दी, सर कुछ विकास विरोध ? लोग आपसे मिलना चाह रहे हैं।" मंत्री ने कहा उनसे कहो मैं देश का विकास कर रहा हँू वे इंतजार करें।

वे लोग सुबह से शाम तक बैठे रहे। शाम को मंत्री ने बुलाया। भूख से उनके चेहरे कुम्हला गये थे। मालिक आजकल नौकर से नहीं मिल सकता। मंत्री ने उन्हें देखा तो आश्चर्य से भर गया। ये तो वही लोग थे जिन्होने उसे लोकसभा में भेजा था। पूछा "क्यों गरीबा, क्या हाल चाल है ? गरीब बोला "हमारे हाल चाल तो काफी फट गये है। हमारी जमीन को फैक्ट्रियां खा रही है। हमसे जबरन धरती माता छीनी जा रही है। मंत्री ने कहा "पर तुम्हें उसका भरपूर मुआवजा तो मिल रहा है।"

गरीब बोला "भरपूर तो पटवारी और तहसीलदार खा जाता है। हमें तो मुआवजा ही मिलता है। और हूजूर तुम हमारी मां को खरीदकर दुकानदारों में बेचने के लिए बिठाल रहे हो। मंत्री तिलमिला गये। भ्रष्टाचार ने उन्हें भुला दिया कि कुछ दिन पहले इन्हीं लोगो से आर्शीवाद मांग कर वे मंत्री बने थे। मंत्री ने समझाया "देखो तुम खेती सदियों से कर रहे हो, उससे देश का विकास हुआ क्या ? नहीं हुआ न। अब वहां कालोनियां बनेगी तो देश विकसित हो जायेगा। हम तुमसे जीन छीन कर विकसित लोगो को ही दे देंगे। जरा सोचो तुम्हारे बच्चे किसान नहीं, मजदूर और चपरासी बन जायेंगे तो तुम्हारे घर का ही विकास होगा न ?" किसान समझ गये कि ये, ऐसे नहीं मानेगा हड़ताल करना पड़ेगी। मंत्री भी समझ गये और बोले "देखो हड़ताल की सोचना भी मत नहीं तो हड़ताल करने के षडयंत्र में अंदर कर दिये जाओगे और तुम्हारी पश्चिम दिशा में डंडे पडेंगे। किसान समझ गये कि मंत्री काइयां हो गया है। इन विकास विरोधी किसानों को चाय पिला कर बाहर खदेड़ दिया गया।

ऐसा नहीं है कि विकास नहीं हुआ है। पहले टेलीफोन पोस्ट आफिस से करना पड़ता था फिर चीन की कम्पनियां मोबाइल ले कर आई। पहले टीन का बक्सा लेकर सफर करते थे, अमेरिकन टूरिस्टर कंपनियां पहिये वाले बेग ले आई। पहले लट्टू जलते थे अब एल.ई.डी. बल्व आ गये, पहले टी.व्ही. नहीं थे अब तमाम तरह के टी.व्ही. आ गये हाथ से चलने वाले पंखो की जगह ए.सी. आ गये, मटके की जगह फ्रीज आ गये, चिट्ठियों की जगह व्हाट्स अप आ गये गोया विदेशो नें देश का विकास कर दिया। विदेश न होते तो देश का विकास नहीं होता।

आज हमारा नारा है "मेक इन इंडिया" यानि हम तो नहीं बना सकते तुम आकर यहां बनाओ, तो हमारे मजदूरों का विकास हो। तुम मेगी बनाओ हम खायेंगे, तुम आक्सीजन बनाओ हम सूघेंगे, तुम कोका कोला बनाओ हम पीयेंगे। तुम रिश्वत दो, हम लेंगें।

क्या प्रकाश शास्वत है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अंधकार शाश्वत है और प्रकाश क्षणिक है। प्रकाश करने के लिये शक्ति की आवश्यकता होती है जब शक्ति चुक जाती है तो प्रकाश समाप्त हो जाता है और अंधकार उस स्थान को फिर ढ़क लेता है। भागवान कृष्ण ने गीता में कहा है

ज्योतिषाम अपि तत ज्योतिष
तमसः परम उच्चयतै।

यानि वह ज्योतियों में ज्योति है और परम अंधकार मय है।

यह “तमसः परम” को विद्धान लोग तमसे परे कहते है पर परमात्मा परम अंधकार मय भी क्यों नहीं हो सकता जब वह परम प्रकाश हो सकता है तो परम अंधकार भी हो सकता है। वह सत भी है और असत भी और दोनो से परे भी है। अर्जुन ने भगवान को “सत असत तत्परम यत” कहा है यानि कि भगवान सत् भी है, असत् भी है और उससे परे भी।

प्रकाश का क्षरण होता रहता है और वह अंधकार में विलुप्त हो जाता है पर अंधकार का क्षरण होकर प्रकाश तो नहीं बनेगा। परम अंधकार हो जायेगा। सूर्य में शक्ति है और उसका तेजी से क्षरण हो रहा है। अंत में वह अपने ग्रहो का भक्षण कर

ब्लेक होल में बदल जायेगा और प्रकाश को भी निगलने लगेगा। प्रलय में क्या होता है ? सब कुछ नष्ट होकर अंधकार मय हो जायेगा प्रकाश के लिये प्रयत्न करना पड़ता है पर अंधकार के लिये नहीं करना पड़ता। वह तो है ही।

उपनिषदों में कहा है असत से सत् उत्पन्न हुआ। मा असतो मा सदगमय। कहने वाला बीच में खड़ा है। वह असत् से निकल आया है, और सत् में ले जाने की प्रार्थना करता है। तमसो मा ज्योर्तिगमय" कहने वाला तम से निकल आया है और ज्योति में ले जाने की प्रार्थना करता है। मिट्टी का विकास हुआ तो पेड़ पौधे निकले आदमी निकले। ये खत्म हो जाते है पर अचेतन मृदा रही आती है।

अचेतन चेतन की पृष्ठभूमि में अचेतन है और प्रकाश की पृष्ठभूमि में अंधकार है। चेतन और प्रकाश सापेक्ष है। सहस्पर का उद्गम मूल धारा से होता है। भगवान ने गीता में कहा है "अध्र्व मूल अधोशाखं अस्वयम प्राहुरव्ययम्। छन्दासि यस्यपर्णानि यस्तं वेद से वेदवित। जो उस पीपल के वृक्ष को जानता है जिसकी जड़े ऊपर है बीच में शाखा और पत्ते नीचे है वही वेदज्ञ है। शरीर क्रिया शास्त्र में कहा है कि प्राणि नींद के बीच में जागता है" यानि नींद की पृष्ठभूमि में जागृत अवस्था है। प्राणि मात्र का विकास भी यही दर्शाता है। अमीबा से लेकर कैंचुये तक अंधकार में रहते है। फिर पौधे तो अंधकार में हैं ही। फिर प्रकाश का आभास होता है चैपासे इसी लिये अंधकार में प्रकाश से डरते है। जंगली जानवरों से बचने के लिये गांव वाले मशाले लेकर चलते है।

इसके विपरीत दूसरा मत है कि अंधकार भी शाश्वत है और प्रकाश भी। अंधकार अचेतन है और प्रकाश चेतन। दोनो अलग अलग है। अंधकार की पुष्टि प्रकाश करता है। प्रकाश न हो तो अंधकार को प्रभावित करने वाला कौन है ? चेतन अचेतन से मोह रखने के कारण उसमें गिर पड़ा है अन्यथा वह मात्र चेतन है। यानि प्रकाश मंदा पड़ जाये तो अंधकार उसको ढ़कने लगता है। पर रात को भी चन्द्रमा या तारों का प्रकाश रहता है तभी निशाचर पशु रात में भी देख सकते है। यानि पेड़ पौधे प्रकाश और अंधकार में भेद न कर पाते तो "क्लोरोफिल" कैसे बनाते ? अचेतन में भी लगातार गति होती रहती है। हर अणु में इलेक्ट्राॅन लगातार चक्कर लगाते हैं एवं उनमें अनन्त ऊर्जा रहती है तो अंत है ही नहीं अनन्त ही है।

दीपक प्रकाश देता है। पर सूर्य के समक्ष उसका प्रकाश नहीं दिखता तो क्या दीपक के प्रकाश का अंत हो गया। प्रकाश तो है पर अपेक्षाकृत कम प्रकाश अंधकार है। जिस तरह अन्तरिक्ष की एक अनवरत ध्वनि है उसी तरह उसका एक अनवरत औसत प्रकाश है जिसे सूर्य, चन्द्रमा, विद्युत या अग्नि प्रकाशित नहीं करते। वह है ही।

क्या सचिन को अब विज्ञापन करना चाहिए

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सचिन तेंण्डुलकर ने क्रिकेट जगत में कई रिकार्ड बनाये है पर क्रिकेट में हर गेंद एक रिकार्ड बन जाती है। सचिन को टेस्ट क्रिकेट में भी सौ शतक बनवाये बनाये गये थे अन्यथा उन्हें पहले ही क्रिकेट से सन्यास ले लेना चाहिये थे। इसी तरह सचिन को भारत रत्न दिलाने के लिये महाराष्ट्र में जबर्दस्त “लाबीड़िंग” की गई थी। वे पहले भारत रत्न है जिन्हें लाबीइंग के कारण भारत रत्न दिया गया है अन्यथा क्रिकेट में ही कपिल देव को बहुत पहले ही भारत रत्न मिल जाना चाहिये था। उनके नेतृत्व में भारत ने पहला क्रिकेट विश्व कप जीता था। जिन्होने उनका वह रोमांचक खेल देखा था उन्हें मालूम होगा कि वे एक तरह से विश्व कम छीन कर लाये थे। मगर उनके लिये कोई लाबी नहीं थी। खेलो में ही अगर भारत रत्न देना था तो मेजर ध्यानचंद को हाकी में मिल जाना चाहिये था। वे हाकी के जादूगर कहे जाते थे।

दूसरी बात जो जिसके कारण सचिन को भारत रत्न नहीं मिलना था वह है उनका पैसो के लिये विज्ञापन करना। वे सम्भवतः ऐसे पहले भारत रत्न है जो पैसो के लिये स्वयं को बेचते हैं उनका यह कार्य भारत रत्न की गरिमा को कम करता है। ऐसा नहीं है कि उन्हें कोई विज्ञापन करने से रोक सकता है। वे तो रिश्वत भी ले सकते है। पर उन्हें क्या करना उचित रहेगा यह उन्हें सोचना चाहिए। भारत रत्न ने उन्हें सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन, मदर टेरेसा, पं. मदन मोहन मालवीय, श्री अटल बिहारी बाजपेयी, सुश्री लता मंगेशवर, श्री नेल्सन मंडेला आदि के समकक्ष खड़ा कर दिया है। क्या अच्छा लगेगा कि उपरोक्त महानुभाव पेन्टीज के विज्ञापन करें या नोबल लारियेट कैलाश सत्यार्थी कंडोम के विज्ञापन करें।

सचिन के पास अरबो की संपति है। कई होटले है कई बहुमूल्य उपहार है। अतः उन्हें सस्ते विज्ञापन करने की कोई आवश्कता नहीं है। विज्ञापन करके वे विज्ञापन दाताओं के नौकर बन जाते है। वे बाजार में खड़े होकर एक सेल्समेन की तरह उनकी चीजे बेचते है। अब क्या भारत रत्न प्राप्त व्यक्ति की यह नौबत आ गई है कि वह चैराहे पर खड़े होकर दूसरो की चीजें बेचे। भारत रत्न का मतलब है कि आपको यह उपाधि देश सेवा के लिये दी गई न कि दूसरो की चीजें बेचने के लिये।

यदि खेल के क्षेत्र में भारत रत्न देना ही था तो मेरी काम को क्यों नहीं मिलना चाहिये था। एक विषम परिस्थितियों में पड़ी महिला ने बाक्सिंग में भारत का नाम रौशन किया था या कुश्ती में ओलंपिंक स्वर्ण विजेता या विश्वनाथन आनंद आदि ऐसे अनेक नाम है जो सचिन से बहुत ऊपर है। इन्हें केवल इसलिये भारत रत्न नहीं मिल पाई कि इनके पक्ष में हल्ला मचाने वाला कोई प्रान्त नहीं था।

एक दूसरा तर्क भी है। सचिन तेण्डुलकर के पक्ष में कि वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर है। फिर अब उसको भारत रत्न प्राप्त हो गया है तो क्या बस उसको देखता रहे। काम करना छोड़ दे दिनांक 23/06/2015 को एक याचिकाकर्ता ने माननीय उच्चन्ययालय जबलपुर में पूछा हैं क्यों न सचिन का भारत रत्न छीन लिया जाये तब माननीय न्यायालय ने जवाब में पूछा कि किस कानून में लिखा है कि भारत रत्न प्राप्त व्यक्ति विज्ञापन में काम नहीं कर सकता ?

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का क्रांतिकारी निर्णय

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अक्सर क्रांतिकारी निर्णय दिये हैं जिन्होने देश का इतिहास ही बदल डाला। आपको याद होगा जस्टिस सिन्हा का वह निर्णय जो राजनारायण बनाम इंदिरा गांधी प्रकरण में था। उस निर्णय ने इंदिरा गांधी का चुनाव शून्य करार दिया था एवं राजनारायण को विजयी घोषित किया था। उस निर्णय के पश्चात श्रीमती इंदिरा नेहरू गांधी ने देश में आपातकाल लाद दिया था एवं जयप्रकाश नारायण सहित प्रजातंत्र की पक्ष में आवाज उठाने वाले सब नेताओं को जेल में डाल दिया था। एक तरह से पूरा देश ही कैदखाने में तब्दील हो गया था। हालांकि उस समय भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, अनुशासनहीनता पर प्रभावी अंकुश लगा था, खाने का तेल पांच रूपये लिटर मिलने लगा था। रेलों के समय से लोग घड़िया मिलाने लगे थे पर उस काल के पश्चात यह सिद्ध हो गया था कि प्रजा आजादी पसंद करती है गुलामी नहीं।

इसी तरह बावरी मस्जिद प्रकरण में तमाम तथ्यों के आधार पर फैसला दिया गया था कि रामलला का मंदिर वहीं बनना चाहिये जहां बावरी मस्जिद है। हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला आया कि मंत्रियों एवं अधिकारियों के बच्चों को सरकारी स्कूलो में पढ़ना चाहिये, इससे सरकारी स्कूलो का स्तर सुधरेगा। हालांकि इसका उल्टा होना चाहिये। यदि सरकारी स्कूलों का स्तर सुधर जायेगा तो मंत्री एवं अधिकारी स्वयं अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ायेगे। अभी भी देश में कुछ सरकारी स्कूल ऐसे है जहां अधिकारी एवं मंत्री अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिये इच्छुक रहते हैं।

इसके लिये सरकारी स्कूलों के शिक्षा का स्तर शिक्षा विभाग एवं सामान्य प्रशासन विभाग को सुधारना पड़ेगा ? अभी तो शिक्षकों से अध्यापन के अलावा सारे काम लिये जाते है। जनगणना उन्हें करना पड़ती है, पशुपक्षी गणना उन्हें करना पड़ती है, प्रजातंत्र जिंदा रखने के लिये चुनाव उन्हें करवाना पड़ते है, परिवार कल्याण का लक्ष्य उन्हें दिया जाता है। इसके साथ ही यदि उनमें राजनैतिक प्रतिबद्धता नहीं है तो उन्हें स्थानांतरित कर सुदूर क्षेत्रों में फेंक दिया जाता है।

जोर इस बात पर दिया जाना चाहिये कि शिक्षा का स्तर सुधरे। अभी तो प्राथमिक शाला के शिक्षकों को ठीक से पहाड़े भी याद नहीं है। उन्हें देश के राष्ट्रपति का नाम याद नहीं रहता। हिन्दी भी ठीक से लिखना पढ़ना नहीं आती अंग्रेजी की कौन बात करे कई स्थानों पर तो सरकारी स्कूलों में ताले महीनों नहीं खुलते।

क्या उच्च न्यायालय के इस निर्णण से ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन है। क्या लोगों की यह आजादी भी छीन ली जायेगी कि वे उनके बच्चों को उनकी रूचि के स्कूलों में पढ़ा सके ? क्या अब उच्च न्यायालयों को यह निर्णय भी देना पड़ेगा कि हम क्या पहने एवं कौन सी सब्जी न खायें ?

और इस बात की भी क्या गारंटी है कि मंत्रियों और अधिकारियों के बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाने से उन स्कूलों का शैक्षणिक स्तर सुधर ही जायेगा ? यदि सरकारी स्कूलों का शैक्षणिक स्तर सुधारने के लिये उक्त निर्णय दिया गया है तो और बेहतर कदम भी सुझाये जा सकते थे। हो सकता है कि सरकारी स्कूल के शिक्षक दबाव में महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बच्चों को नकल करने का गलत तरीके से अधिक नम्बर देने के लिये बाध्य हो जायें। फिर तो कई व्यापम घोटाले खड़े हो जायेंगे और उत्तरप्रदेश में और भी अधिक।

मुझे याद है कि सन् 1956 में मेरी कक्षा में एक मुख्यमंत्री का पोता पड़ता था। उस सरकारी स्कूल का शैक्षणिक स्तर बहुत अच्छा था। इसके बावजूद भी उस लड़के को कुछ शिक्षक गोद में लिये फिरते थे। मुझे यह भी याद है कि मेडिकल कॉलेज में डीन और प्रोफेसर के बच्चों को अनेक विषयों में डिस्टिन्कशन आती थी। जमीनी हकीकत कुछ और ही होती थी जिससे माननीय जज लोग परिचित नहीं रहते।

मानलो कि यदि यह कानून बन भी जाता है कि मंत्रियों एवं अधिकारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में ही पढ़े तो उन्हें ऐसा बाध्य करने के लिये कानून भी बनाने पड़ेंगे। फिर इस बात की गारंटी कि वे कानून का पालन करेंगे ही। क्योंकि जितनी अधिक संख्या कानूनों की होगी उतने ही अधिक रास्ते उन्हें तोड़ने के भी निकाले जायेंगे।

भारत की जनसंख्या के आकंड़ो का विश्लेषण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दिनांक 24.08.2015 को भारत की जनसंख्या के आंकडे प्रकाशित किये गये। ये गणना कांग्रेस के शासनकाल में हुई थी और कांग्रेस शोर मचा रही थी कि उनका प्रकाशन किया जाये। आंकडे बहुत चैकानें वाले नहीं है। इसमें बतलाया गया है कि मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि आठ प्रतियात रही है। उनकी कुल जनसंख्या में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि अन्य जातियों में यह वृद्धि दर ऋणात्मक रही। हिन्दुओं में 0.7 प्रतिशत घटे है। इस तरह मुसलमान हिन्दुओं के मुकाबले 1.1 प्रतिशत बढ़े है। सन् 2001 के मुकाबले हिन्दु 82.75 करोड़ से 96.63 करोड़ हो गये, मुसलमान 13.8 करोड़ से 17.22 करोड़ हो गये, ईसाई 2.40 करोड़ से 2.78 करोड़ हो गये सिख .92 लाख से 2.08 करोड़, बौद्ध 79 लाख से 84 लाख, जैन 42.26 लाख से 45 लाख अन्य, 66.4 लाख से 79 लाख एवं जिन्होने धर्म नहीं बताया वे 7.29 लाख 29 लाख हो गये। इस तरह कुल जनसंख्या 102.06 करोड़ से 121.09 करोड़ हो गई थी। (दैनिक भास्कर दिनांक 26 अगस्त 2015 से साभार) भारत में औसत वृद्धि दर 17.79 थी जबकि इस दौरान मुस्लिमों की आबादी की वृद्धि दर 24.6 प्रतिशत रही। हिन्दुओं की 16.8, ईसाईयों की 16.5 प्रतिशत, सिखों की 8.4 प्रतिशत बौद्धो की 6.1 प्रतिशत, ओर जैनियों की 5.4 रही।

बेहतर होता कि इन आंकड़ो के साथ ही विभिन्न धर्मो में प्रति व्यक्ति औसत आय एवं शिक्षा का प्रतिशत भी प्रकाशित किया जाता जिससे उन कारणों की तह तक जा सकते थे जो विभिन्न धर्मो में जनसंख्या वृद्धि दर की विभिन्नता पर प्रकाश डालते। जहां तक मुस्लिमों की जनसंख्या से सापेक्ष वृद्धि कारण है, वे कई हैं। जिनमें शिक्षा एवं आय की कमी मुख्य है। साथ ही मुल्लओं द्वारा फैलाया जा रहा अंधविश्वास एवं रूढ़िवाद भी मुख्य कारण हो सकता है। इसके साथ ही पड़ोसी देशो से गैर कानूनी लगातार प्रवेश एवं सजातियों द्वारा उनको संरक्षण भी एक कारण हो सकता है।

अधिकतर मुस्लिम बच्चों की शिक्षा मदरसों में होती है जहां मुख्यतः पवित्र कुरान के पाठन पर जोर दिया जाता है जिससे मुस्लिम बच्चे मूल धारा से कटे रहते है। फिर अरबी भारतवर्ष में अप्रसांगिक है। जब तक वे बड़े होते है, वे बहुत पिछड़ जाते है। फिर मोटर मेकेनिक या ड्राइवर बनने के अलावा अधिक विकल्प नहीं रहते जिससे वे आय में

पिछड़ जाते है और परिवार कल्याण कार्यक्रमों पर ध्यान नहीं दे पाते। यह सही है कि अंधविश्वास या धर्मान्धता के कारण कभी-कभी शिक्ष्ज्ञित मुसलमान भी परिवार कल्याण को नहीं अपनाते। गरीबी, अंधविश्वास एवं अधिक बच्चों का परिवार में एक दुष्चक्र चलता रहता है। उधर कुछ हिन्दु दम्पति भी एक लड़के की चाह में बच्चे पैदा करते जाते है।

यदि विकलांगता का प्रतिशत निकाला जाये तो वह मुसलमानों में अधिक निकलेगा। इसका कारण कुपोषण एवं सगे रिश्तेदारों की आपस में शादियां है। बहुत कुछ परदा प्रथा के कारण भी मुस्लिम लड़कियां अधिक नहीं पढ़ पाती जबकि एक शिक्षित मां उसके बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाती है। ऐसा पवित्र कुरान में कहीं नहीं कहा गया कि मुसलमानों को अधिक बच्चे पैदा करना चाहिये। चंूकि आज से पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व परिवार नियोजन का अस्तित्व नहीं था, अतः यह भी नहीं कहा जा सकता कि उस समय परिवार कल्याण के विरूद्ध कुछ कहा गया होगा यदि नसबंदी के आंकड़े देखे जायें तो मुसलमानों में अब परिवार कल्याण के प्रति झुकाव बढ़ता जा रहा है। चंूकि भारत में ¬प्रजातंत्र है अतः कानून अपेक्षाकृत उदार है इसलिये पाकिस्तान या बांग्लादेश से मुसलमान अनधिकृत रूप से भारत में आते रहते है। शासन को इस समस्या पर ध्यान देना होगा । इस समस्या के कारण भारत के मुसलमान तो क्या भारत के हर नागरिक पर आर्थिक दबाव पड़ रहा है। इसके विपरीत भारत से उतनी ही संख्या में लोग पाकिस्तान या बांग्लादेश में बर्हिगमन नहीं कर रहे हैं।

जनसंख्या के आंकड़ो के विशलेषण पर हमने देखा कि जिस जाति में आर्थिक सम्पन्नता है उनमें जनसंख्या वृद्धि दर कम है। यदि प्रान्तवार से आंकडे प्रकाशित होते तो मालूम पड़ता कि जहां शिक्षा का प्रतिशत अधिक है वहां जनसंख्या वृद्धि दर कम होगी। इस प्रकरण में केन्द्रीय मंत्री साक्षी महाराज की त्वरित एवं सन्तुलित प्रतिक्रिया आई है कि विभिन्न धर्मो की इस असंतुलित वृद्धि दर को सम्मान नागरिक कानून से संतुलित किया जा सकता है जबकि शिव सेना के उद्धव ठाकरे ने कहा है कि इस तरह की असंतुलित जनसंख्या वृद्धि दर से तो सन् 2050 में भारत में मुगल राज्य हो जायेगा।

इस असमान जनसंख्या वृद्धि को कैसे संतुलित किया जाये यह एक विचारणीय प्रश्न है। शासन क्या प्रजातंत्र में एक कच्चा कानून बना सकती है जैसा कि चीन में है या नसबंदी जबरदस्ती लाद सकती है जैसा कि इमरजेंसी के समय हुआ था। मगर भारत में जितने कानून बनते है उतने ही टूटते भी है। आज भी सरकार को नसबंदी के जो आंकडे सरकार को दिये जाते है उनमें से लगभग दस प्रतिशत फर्जी होते हैं यह इसलिये भी है कि सरकार उन जिलों के जिलाध्यक्षों को और सी.एम.एच.ओ को नसबंदी

की लक्ष्य प्राप्ति एक लाख रूपये पुरस्कार देती है एवं बी.एम.ओ. को लगभग तीस हजार रूपये पुरस्कार देती है जबकि लक्ष्य प्राप्ति उनकी सरकारी ड्यूटी में आता है।

घिसटते राम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुश्किल से दिन कटते राम।
हम हो गये घिसटते राम।।
    चलते नंगे पैर रहें।
    जूते किसके फटते राम ?
मंत्री जैसे आप हुये।
नहीं मिलें हम रटते राम ।।
    सब्जी जेब काटती है ।
    सब्जी से हम कटते राम।।
शासन मिला अमीरों से।
फिर गुनाह क्या घटते राम ?।।
    बढ़ते जाते है मंदिर।
    और तुम रहे सिमटते राम।।
झूठे दाब लगे हम पर।
नहीं हटाये हटते राम।।

मिलती रोज गालियां हैं।
हम चुप रोज गटकते राम।।

तुम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तारे जगह बनाने तुमको सरकने लगें।
सर उठा पर्वत भी तुमको निरखने लगें।।
शान्ति हो, गहराई में आवाज न उठे।
सतह पर हलचल की लहरें मचलने लगें।।
भावय वेदों के समर्थन के लिये देखें।
भास्कर देखें तुम्हें तो चमकने लगें।।
अगर तुम बोलों तो फूलों की महक फैले।
और उद्यानों की कलियां चटखने लगें।।
पैर धरती पर रखो तो धूल सकुचाये।
मगर चट्टाने पदों से घसकने लगें।।
तुम्हारे अंदर तुम्हारा देश खुद धड़के।
तुम दिखों मुर्दो के दिल भी धड़कने लगें।।
जिंदगी भी पा के तुमको गर्व कर सके।
मौत पर निर्मोही मिल के सिसकने लगें।।

ये पुरूष

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भ्रूरण से ही मारने षणयंत्र रचते है।
आंधी दुनिया को पुरूष ही खत्म करते है।।
आत्महत्या करने का क्यों शौक है इतना ?
मिटाते हैं उसको जो इनको ही रचते हैं
नफरत क्यों रगो में है कि बगिया में ये सब।
चीखते फूलो पे आतिश से बरसते हैं।।
चमन के माली नहीं आवारा पशुओं से,
कुछ पुरूष महिलाओं पर ऐसे झपटते हैं।।
इनके अंदर है पशु पर वस्त्र मानव के
जानवर की तरह महिला को मसलते हैं।।
इनकी कब होगी प्रगति भगवान ही जाने।
जाने कब पशुओं से मानव में बदलते हैं।।
होता है आश्चर्य जब कुछ पुरूष अपनी ही।
जाति के व्यक्ति पे अत्याचार करते हैं।।

वह

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वह जली तीली के जैसी आग सुलगाती रही।
खुद तो बुझ गई जिन्दगी भर मुझको भड़काती रही।।
    बन के घी वह जिन्दगी भर आग पर पड़ती रही।
    राख में होता रहा वह मुझको सरकाती रही।।
मैं रहा जलता उसी की आग में हर दम।
अगर मैं भड़का तो मुझसे खुद को खिसकाती रही।।
    आग सा जलता रहा मैं तापती उसमें रही।
    राख से वह बर्तनों दांतो को चमकाती रही।।
आग की उस रोशनी में देखती दुनिया रही।
सेंकती रोटी रही और चाव से खाती रही।।

हम ही पुराव करवायेंगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पहले हम प्रतिनिधि को चुन ले फिर चुनाव करवायेंगे।
नहीं कोई आगे आये हम एसा दाव चलायेंगे।।
जो विरोध को आये उसकी अच्छी हम खबरें लेंगे।
कभी न भूले दिल में उसको ऐसा घाव लगायेंगे।।
जो हिसाब मांगे उनको भी कुछ टुकड़े टपका देंगे।
नदी दूसरों की दरिया में उसमें अपनी नाव चलायेंगे।।
एक बार तो चुन जाने दो, फिर कोई मिलने आये।
रोयेंगे अपना रोना हम अपने घाव दिखायेंगे।।
क्या सेवा करना, सेवा के बदलो हम भाषण देंगे।
हम ही गढ्ढे खोदेंगे हम पुराव करवायेंगे।।

सीखो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तन्हाई से बचना है तो लोगो में मिल जाना सीखो।
खुद्दारी से रहना है तो पैसे चार कमाना सीखो।।

सदा सोचते रहो मुल्क की वह तुममें और तुम उसमें हो।
जो मर गया मुल्क की खातिर उसका कोई फसाना सीखो।।
डरते रहते हो लिहाज से और दुश्मन सिर पर चढ़ता है।
उसका कुछ प्रतिरोध करो और उसको जरा डराना सीखो।।
नहीं खड़े तुम रहो किनारों पर दर्शक बन यहां क्रान्ति के।
चलो भीड़ में नारे बोलो बीच सड़के में आना सीखो।।
भरसक कोशिश करों यहां तक दुश्मन को भी दोस्त बनाओ।
अगर न माने वह फिर भी तो दुश्मनी यार निभाना सीखो।।

इबारत क्या

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रब ऐसी भी इबारत क्या
एक तरफा हमारी चाहत क्या
दिल अपना छुपा के रखते हो
खेल में एसी भी शरारत क्या
मांग तो पूरी तुम नहीं करते
सियासत जैसी थोड़ी राहत क्या
हर पैसे का हिसाब रखते हो

तुम भी करने लगे तिजारत क्या
रोज तो आता हॅू तुम्हारे घर
नहीं दिखती हमारी हालत क्या

आरक्षण के मुद्दे पर संविधान की विवेचना कितनी उचित

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

संविधान कोई कुरान शरीफ (लोहे महफूज) या श्रीमद्भागवत गीता या बाइबिल जैसी धार्मिक पुस्तक नहीं है जिसे बदला ही न जा सके। हर देश से संविधानों में परिवर्तन हुये है और समय की मांग के अनुसार होते जा रहे है। फिर हमारा संविधान तो संशोधनों का संविधान है, जिसमें इतने संशोधन हुये है कि मूल देखना भी मुश्किल हो गया है। आर.एस.एस एक प्रगतिशील सोच वाला संगठन है जिसकी विचारधारा राजनैतिक पार्टियों को नहीं जॅचती मोहन भागवत ने केवल इतना कहा था कि संविधान की आरक्षण संबंधी धाराओं पर पुर्नविचार होना चाहिये। उन्होने यह बिल्कुल नहीं कहा कि आरक्षण हटा देना चाहिये। विचार करने में क्या हर्ज है ?इस पर लालू प्रसाइ जैसे परिवार वादी व्यक्ति ने भागवत को अपशब्द कहे। यह निन्दनीय है। जबकि आर.एस.एस. ने उनके अपमानजनक शब्दों पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। यह आर.एस.एस. की शालीनता है।

मोहन भागवत का यह कथन कितना सच है कि आजकल कोई भी जाति भीड़ इकट्टा करके आरक्षण हेतु विध्वंस करने लगती है। ये लोग तोड़ फोड़ प्रारम्भ करके शासन पर आरक्षण हेतु दबाव डालने लगते है। इस तोड़ फोड़ से सामान्य नागरिक की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष आर्थिक हानि होती है। कईयों की तो जान से भी हाथ धोना पड़ता है। देश की प्रगति में बाधा पड़ती है। यह देशद्रोह है। यदि एक भीड़ आरक्षण पाने के लिये संविधान में संशोधन चाहती है तो क्या विचारशील नागरिक इन प्रक्रियाओं पर पुर्नविचार भी नहीं कर सकते ?

आज भारतवर्ष में जहां एक और पाकिस्तान समर्थक, तालिबान समर्थक, अलगाववादी देश द्रोही लोगो को कुछ नहीं कहा जाता वहीं दूसरी ओर निहत्थे साधुओं पर पुलिस बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज करती है। यहां देश द्रोहियों को सहन किया जाता है और देश प्रेमियों का दमन किया जाता है। अरे! तालिबान समर्थको, पाकिस्तान समर्थको, अलगाववादियों को तो सार्वजनिक रूप से गोलियों से उड़ा देना चाहिये। जो प्रान्त सरकार उन्हें सहन करती है वह स्वयं देशद्रोही है। उसे अपदस्थ कर देना चाहिये। प्रांत सरकारो की यह नपंुसकता जनता को क्या संदेश देती है कि आओ तालिबानियों, पाकिस्तान समर्थको हमारे घर पर रहो और यहीं से देश द्रोही गतिविधियों चलाओ। यहां कि सरकार तो नंपुसक कायर और भ्रष्ट है। सोचिये क्या चीन, अमेरिका या अन्य इस्लामिक देशों में सार्वजनिक रूप से ऐसी गतिविधि करने वालों को सहन किया जा सकता है ? अमेरिका में तो बुरका और दाड़ी को भी सहन नहीं किया जाता।

जहां तक आरक्षण का प्रश्न है, जितनी जातियां संविधान में आरक्षित है उतनी ही आरक्षित क्यों न मानी जायें। संविधान से छेड़ छाड़ क्यों की जाये ? आज आर्थिक रूप से अति सम्पन्न जातियां भी आरक्षण की मांग कर रही है जिससे हरिजन, पिछड़ा वर्ग आदिवासियों के अधिकार धीरे-धीरे सुनियोजित ढंग से खत्म किये जा रहें है एवं पाटीदार, गुर्जर एवं यादवों जैसी सम्पन्न जातियां उनके अधिकार हथिया रही है। यह तो संविधान की मूल भावना नहीं है। आज हरिजन पिछड़ा वर्ग, आदिवासी इत्यादि वहीं के वहीं है। जबकि समाज के अंतिम व्यक्ति को समृद्ध बना कर आरक्षण खत्म करना संविधान की मूल भावना थी।

कांग्रेस के प्रवक्ता नया शिगूफा छोड़ रहे है। आरक्षण आर्थिक आधार पर होना चाहिये। आज कार रखने वालों, बंगले वाले के पास अति गरीब प्रमाण पत्र मिल जायेंगे। भारत जैसे भ्रष्ट देश में अति गरीब अति गरीबी का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिये भटकते भटकते मर जाते है और अमीरो को अति गरीबी का प्रमाण पत्र तश्तरी में रख कर पेश कर दिया जाता है।

आरक्षण यदि इसी तरह बढ़ाते रहे तो उसे सौ सालों में तो क्या हजारो सालो में भी खत्म करना असम्भव हो जायेगा। आज अनारक्षितो का आरक्षण हो गया है। आरिक्षतों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, विकलांग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बच्चे खेल कोटा, सेनानियों के बच्चे, अनुकम्पा नियुक्तियां आदि सभी आरक्षित हो गये है तो उन हरिजन आदिवासियों को कौन पूछता है ?

कुनबे की चक्की

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुनबे की चक्की में साबुत रहना बेहद मुश्किल है।
चक्की भी पिसती रहती है और वह सबकी कातिल है।।
बेच दिया उसने घर सबका और खुद का घर बना लिया।
लुटे हुये सब कहतें हैं कि वह ही केवल काबिल है।।
घर ही बिकने की चाहत में ईंट ईंट उकसाता है।

उसके बिकने की चाहत में कमरा कमरा शमिल है।।
वह जाता है तो महफिल भी खाली खाली लगती है।
वहीं हरेक जामों में है और उसके कारण महफिल है।।
जो जिंदा है वह खाता है किसी दूसरे का हिस्सा।
वरना तो मरता तिल तिल है जिन्दा रहना तिल तिल है।।
वह जो इतराता फिरता है वह मेरे ही कारण है।
सबको बतलाता फिरता है मुट्ठी में मेरा दिल है।।
खड़ा हुआ है जो खेतो में फसल प्यार से देख रहा।
ऊपर की गिरती बिजली से वह बिल्कुल ही गाफिल है।।
दुनिया नदी एक ऐसी है बस बहती ही रहती है।
नहीं निकलती और न गिरती ना ही उसका साहिल है।।

हम कैसे जीते हैं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ये मत पूछो मेरे भाई कि हम कैसे जीते है।
भरने भूखा पेट हमारा अपना ही खूँ पीते है।।
सदियों से हमको ऐसे ही रखा गया है दुनिया में।
सदियों से टूटी झुग्गी है अपने बर्तन रीते हैं।।
गाली सुनने के हम आदी हैं और बदन है पिटने को।
याद नहीं कितनी पीढ़ी और कितने महीने बीते हैं।।
फटे हुये कपड़े मिलते हैं हमको सदा विरासत में।

उनको सीं कर पहना है और फट जायें तो सींते है।।
हमकों पाला ही जाता है केवल खाने की खातिर।
घायल पड़े जानवर हैं हम हमें नोचते चीते हैं।।

इबादत कैसी ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रब की ऐसी भी इबदत कैसी।
हमारी एक तरफा चाहत कैसी।।
दिल अपना छुपा के रखते हो।
खेल में ऐसी शरारत कैसी।।
मांग तो पूरी तुम नहीं करते।
सियासत जैसी कम राहत कैसी।।
जो पैसे दूँ तो पैसे मिलते हैं।
तुम भी करते तो तिजारत कैसी ?
रोज तो आता हूँ मैं मंदिर में।
फिर भी मेरी ये हालत कैसी।।

खण्ड की तरह

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घन खड़ा हुआ है एक घमण्ड की तरह।
पैरों में गरीबी है गिरे दण्ड की तरह।।
देखा हैं हमने साधुओं का दिल टटोल कर।
प्रवचन और कीर्तन लगे पाखण्ड की तरह।।
आते चुनाव गरीबी को फिर घटायेंगे।
बढ़ जायेगी फिर पूस की वह ठण्ड की तरह।।
झोपड़ी हमारी झुकी नम्रता सी है।
सामने भवन है एक उद्दण्ड की तरह।।
मौजूदा वक्त महल सा तन कर खड़ा हुआ।
बीता हुआ है खण्डहर के खण्ड की तरह।।

अवरोध

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रास्ता सीधा नहीं, अवरोध मिलेगा।
क्रांति में अन्याय का प्रतिशोध मिलेगा।।
आत्मा है जिनमें, सत्याग्रह से झुकेंगे।
क्योंकि उसमें सत्य और अनुरोध मिलेगा।।
यंू तो ज्ञान विश्व के हरेक कदम पर है।
ज्ञान लेंगे वहीं जिनमें बोध मिलेगा।।
प्रयोग की शालायें दुहराती हैं क्रियायें।
जाओं प्रकृति में तो वहां पर शोध मिलेगा।।
एक ही आवाज हो, हों एक ही कदम।
जीतोगे तुम्हीं भले कुछ प्रतिरोध मिलेगा।।
आदमी निर्भय रहे और धैर्य हो उसमें।
जानवर में पलायन और क्रोध मिलेगा।।

पाक अधिकृत कश्मीर का पाकिस्तान के विरूद्ध विद्रोह

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पाक अधिकृत कश्मीर में पाकिस्तान की सेना बंग्लादेश का इतिहास दुहरा रही है। पहले हम समझ लें कि पाक अधिकृत कश्मीर अस्तित्व में कैसे आया ? सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के पहले गृह मंत्री थे। उस समय भारत कई छोटी बड़ी "स्टेटस" में बंटा हुआ था। बहुत सी "स्टेट्स" भारत में सम्मिलित होने के लिये तैय्यार नहीं थी। इनमें जूनागढ़, भोपाल और हैदराबाद प्रमुख थी। अन्नतः दबाव में वे भी भारत में शामिल हो गई लेकिन कश्मीर के राजा ने भारत में शामिल होने से स्पष्ट मना कर दिया। मगर वह एक कमजोर राज्य था। इसका लाभ पाकिस्तान ने उठाया। कबाइलों को आगे कर उसने कश्मीर से "प्रोक्सी वार" छेड़ दिया। इससे कश्मीर का राजा घबड़ाया। उसने रक्षा के लिये भारत से गुहार लगाई। मगर जली रस्सी के बल तब भी नहीं गये थे। उसने भारत से चार शर्ते रखी।

(1) दो राष्ट्र होंगे (2) दो झण्डे होंगे (3) दो राष्ट्रगान होंगे और (4) दो प्रधानमंत्री होंगे इस संधि के अनुसार उनकी रक्षा के लिये सेना भारत की रहेगी पर कानून वहां की जनता के होंगे। यह व्यवस्था आज तक चली आ रही है। कश्मीर, मालूम नहीं क्यों भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की कमजोरी था। उन्होने सरकार वल्लभ भाई पटेल को दर किनार कर कश्मीर के तत्कालीन राजा (डा. कर्णसिंग के पिता) की सारी शर्ते मान ली पर तब तक कश्मीर का कुछ हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में जा चुका था। पर अभी भी भारत में दो संसद सदस्य पाक अधिकृत कश्मीर के माने जाते है एवं वे दो "सीट्स" भारत की लोकसभा में खाली रखी जाती है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की कुछ गल्तियां श्रीमती इंदिरा गांधी ने सुधार ली थी। उन्होने दो राष्ट्रगीत, दो प्रधानमंत्री एवं दो राष्ट्रध्वज हटा दिये। मगर धारा 370 बनी रहीं जिसके तहत कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है। अभी भी कुछ कानून कश्मीर पर लागू नहीं होते एवं भारत का कोई अन्य नागरिक कश्मीर में जमीन नहीं खरीद सकता एवं फैक्ट्री इत्यादि नहीं डाल सकता।

अब जो पाक अधिकृत कश्मीर है वहां के लोगो को समझ में आने लगा है कि भारत में कितनी अधिक आजादी है। यहां बोलने की तो इतनी अधिक आजादी है कि एक गरीब आदमी भी देश के प्रधानमंत्री की गल्तियां सार्वजनिक रूप से निकाल सकता है। चुनाव में किसी भी जाति या धर्म के लोग खड़े हो सकते है। यहां राष्ट्रपति के पद को ही 4-5 मुस्लिम सुशोभित कर चुके है। किसी भी धर्म के लोग कोई भी नौकरी प्राप्त

कर सकते है। हर राजनैतिक पार्टी में हर धर्म के खिलाड़ी योग्यतानुसार खेल रत्न का पुरूस्कार प्राप्त कर सकते है। यदि अभिनेता सलमान खान कहते है कि उन्हें पाकिस्तान की आलोचना पसंद नहीं है तो कोई आपत्ति नहीं लेता। जम्मू-कश्मीर में यदि पाकिस्तान समर्थक झण्डे फहराये जाते है तो उन्हें गोली नहीं मार दी जाती।

जबकि पाकिस्तान में ही शिया मुसलमानों, खोजा मुसलमानों इत्यादियों पर अत्याचार किये जाते है। पाकिस्तान में सेना हर प्रान्त को उपनिवेश समझती है। बंग्लादेश इसीलिये पाकिस्तान से अलग हुआ था कि तत्कालीन पश्चिमी पाकिस्तान पूर्वी पाकिस्तान को उपनिवेश समझकर बेइन्तिहा अत्याचार कर रहा था। यही अब सेना पाक अधिकृत कश्मीर पर कर रही है। वहां नागरिको को खुले आम घसीटा जा रहा है। नवयुवको को जबरदस्ती आतंकवादी बनाया जा रहा है। सेना लड़कियों तक का अपमान कर रहीं है। उन्हें मालूम है कि पाक अधिकृत कश्मीर को भारत का भाग समझकर उन पर अत्याचार ढ़ाये जा रहे है। इस समय फारूख अब्दुल्ला एवं उमर अब्दुल्ला के वक्तव्य प्रशंसानीय आ रहे है। वे बधाई एवं पद्म पुरूस्कारों के पात्र है।

पाक अधिकृत कश्मीर के नागरिको का आंदोलन को देख कर यहां के अलगाववादी कश्मीरियों की आंखे खुल जाना चाहिये कि भारत से अलग होकर पाकिस्तान उनके क्या हाल करने वाला है ?

अलगाववादी कश्मीरियों को पाकिस्तान केवल मोहरा बनाना चाहता है। जीतने के बाद मोहरे फेंक दिये जाते है। आतंकवादियों ने घाटी के लोगो के धंधे चैपट कर दिये है। अन्यथा कश्मीरियों की मुख्य आय पर्यटकों एवं धार्मिक पर्यटन से थी। केवल वहीं आय उन्हें समृद्ध बनाने के लिये पर्याप्त थी। बगीचों एवं वनोपज की तो बात ही अलग है।

दरअसल घाटी के लोगो को मोहरा बना कर पाकिस्तान बंगलादेश के अलग होने का बदला लेना चाह रहा है पर बंगला देश के अलग होने का दोषी पाकिस्तान खुद था। आज मुंबई के श्रृंखलाबद्ध विस्फोटो का मास्टर माइंड हाफिज सईद पाकिस्तान सरकार को ही गालियां देने लगा है जिन आतंकवादियों को पाकिस्तान संरक्षण ट्रेनिंग और आर्थिक मदद दे रहा है वे पाकिस्तान पर ही कब्जा करने की सोच रहे है जैसा कि उन्होने ईराक पर किया था। यह पाकिस्तान के देशभक्त नागरिको को समझ लेना चाहिये।

भारत सरकार ने कश्मीर को धारा 370 की परिधि में रख कर मुसलमानों का ही नुकसान किया है। आज कश्मीर में आतंकवाद का दंश केवल मुसलमानों को ही झेलना पड़ रहा है। वहां उद्योग नहीं लगने से वहां के नौजवानों में बेकारी बहुत है।

यदि पाक अधिकृत कश्मीर को भारत अपना अंग मानता है तो वहां के नागरिको का आना जाना एवं कश्मीर में बसना सरल बना देना चाहिये, लेकिन लभी जब धारा 70 समाप्त कर दी जाये। पाकिस्तान को अहसान मानना चाहिये कि जिस बेशर्मी से वह जम्मू कश्मीर में हस्तक्षेप कर रहा है, भारत वहां पंजाब या हमारे ही पाक अधिकृत कश्मीर में हस्तक्षेन नहीं कर रहा।

कस रही है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बन्द कमरे की दीवारें कस रहीं है।
और टांगे दल दलों में घंस रहीं हैं।।
हवा तो माहोल में वे इंतिहां है।
गलें में सांसे हमारी फंस रही है।।
कहीं जाना है कहीं हम जा रहे हैं।
भटकने पर ही फिजायें हंस रही है।।
एक हैं हम, हम को लड़वाने की खातिर।।
बीच कुछ कौमें हमारे बस रहीं है।।
भूल तो तारीख ने की थी मगर अब।
वहीं भूलें हम सभी को डस रहीं है।।

वे हमारे नहीं है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किसी और के हैं वे हमारे नहीं हैं।
गरजते यहां और बरसते कहीं हैं।।
कई साल पहले अलग हम हुये थे।
या रब खुबसूरती में अब भी वहीं हैं।।
मुझे मत बताओं जिन्हें ढूंढता हूँ मैं।
मुझे ये है पता है वे रहतें यहीं है।।
यहां भीड़ इतनी ये किसने उड़ा दी।
छुपाया बहुत था कि वे आ रहीं हैं।।
पकड़ता हूँ सांसे फिसल जाती है अब।
जीवन भर मेरे बदन में रहीं हैं।।

मांगा था

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

रब से मैनें दिल से जिनको मांगा था।
मौत हंसी कि मैनें किन को मांगा था।।
परेशानियां आती गई सिलसिले से।
खुदा नहीं ऐसे पल छिन को मांगा था।।
शमा लाये हैं करनें भेंट पतिंगो को।
ये बतलाओं किसने इन को मांगा था।।
खूबसूरत पत्थर दिल किसने मांगी थी।
रहे फुदकती उस कमसिन को मांगा था।।
उसके घर में देर नहीं अंधेरा बहुत है।
दिया अंधेरा जबकि दिन को मांगा था।।

अंतिम व्यक्ति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चुनाव आने या भाषण देते समय ही नेता अंतिम व्यक्ति की चिंता करने लगता है। सब अंतिम व्यक्ति की तरफ पीठ करके अंतिम व्यक्ति की तरफ दौड़ते है। पूज्य महात्मा गांधी कह गये हैं कि प्रजातंत्र तभी सफल होगा जब हम अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेंगे पर न तो वे अंतिम व्यक्ति को परिभाषित करके गये और न यह बतला कर गये कि समाज का अंतिम व्यक्ति कहां मिलेगा ?

हर नेता का भाषण अंतिम व्यक्ति से प्रारंभ होता है और किसी विरोधी पार्टी के प्रथम व्यक्ति पर समाप्त होता है। उसे शैतान, चारा खोर, वृहत पिशाच इत्यादि अलंकारो से विभूषित किया जाता है। वह अलंकृत प्रथम पुरूष भी अपना भाषण अंतिम व्यक्ति से चालू करता है और सामने के प्रथम पुरूष को अलंकृत कर समाप्त हो जाता है। जब आप अंतिम पुरूष को देखते हैं तो लगता है कि देश में अंतिम पुरूषो की बाढ़ सी आ गई है। सरकारी आंकड़ो के हिसाब से हर कार वाला, बंगले वाला अति गरीब है। एक एक कार वाले के पांच पांच अति गरीबी के प्रमाण पत्र रखे हुये है। जब आप आश्चर्य चकित होकर उनमें अति गरीबी का कारण पूछते हैं तो वे कहते है कि अम्बानी, टाटा, बिड़ला, अजीम प्रेमजी के मुकाबले में तो वे अति गरीब ही हैं।

मंत्री जी का हर चमचा अति गरीब है। हरेक को राशन की दुकान दिलवाई गई है। दूसरे और जो सचमुच अति गरीब है उसे अति गरीबी के प्रमाण पत्र नहीं मिल रहें है। अंतिम व्यक्ति को शासन धीरे-धीरे एक व्यवस्थित तरीके से आत्महत्या करने की तरफ धकेल रहा है। पहले अंतिम व्यक्ति दाल रोटी में गुजारा करता था अब दाल उनसे छीन ली गई है। दाल तो मध्यम वर्गीय लोगो के लिये “बजट” से भी फिसलती जा रही है। आज से पचास साल पहले अंतिम व्यक्ति कितने भाग्यशाली थे जो दाल रोटी खाते थे और हरि के गुण गाते थे और आज तो अच्छे अच्छों की दाल भी नहीं गलती। जिन्हें दाल नहीं मिलती थी वे प्याज के गटे के साथ रोटी खा लेते थे। आज प्याज का भी रोटी से तलाक हो गया है। प्याज तो क्या अमीरों तक को दाल आटे के भाव मालूम पड़ गये समझ में नहीं आता कि आपस में गाली गलौच करने वाले ये नेता अंतिम व्यक्ति तक क्यों पहंुचना चाहतें है। उसे चैन से क्यों नहीं रहने नहीं देते। अरे नेताओं, तुम तो काला धन बटोरो और विदेशो को भेजो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। उसे पूरा करो अंतिम व्यक्ति को खेतो में हाड़ तोड़ मेहनत करके जिंदा रहने दो। चुनाव आने पर अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना कह कर न पहंुचना एक रिवाज सा बन गया है।

जो अंतिम पुरूष चुनाव जीत कर प्रथम पुरूष बन जाते है वे भी अंतिम पुरूष और पुरूजानी को भूल जाते है। ऊपर के बहुत सारे प्रथम पुरूषों का हित सोचने लगता हैं। अंतिम पुरूष प्रति भांति की तरह फिर ठगा जाता है। अपना ही आदमी उसे ठगने लगता है। चुनाव के समय अंतिम पुरूष के चारो ओर भेड़िये, मेमने का मुखौटा लगा कर उसको चारो तरफ मंडराने लगते है। अंतिम पुरूषो के हाथो में मत पत्र होता है जो चाकू की नोंक पर उससे छीन लिया जाता हैं। एक बार

एक प्रथम पुरूष अंतिम व्यक्ति को पंक्ति में देख रहा था। उसने अंतिम व्यक्ति से कहा रे अंतिम व्यक्ति तू तो कल मध्य में था तेरे पीछे वाले कहां गये ? वह हाथ जोड़ कर बोला "हूजूर वे भूखे मर गये या करों और मंहगाई के कारण उन्होने आत्म हत्या कर ली।

प्रशासन बोला सरकार, यह परोक्ष रूप से शासन की आलोचना कर रहा है "ही इज किटिसाइजिंग द एडमिनिस्ट्रेशन" यह राष्ट्र द्रोही है। प्रथम पुरूष ने पूछा क्या प्रशासन और राष्ट्र एक ही होते है ? "जी सर फाइलमेन झुक कर बोला" प्रथम पुरूष ने पूछा "क्या जेलो में जगह बची है कि इसको भी ठंूसा जा सके ? "फाइल मेन" उसी तरह झुक कर बोला देखते हैं सर कि कोई मरता है तो इसको अंदर कर देंगे। अंतिम व्यक्ति बोला "सरकार सर जल्दी करें नहीं तो शासन के जूतो के बढ़ते वजन से ये बाहर ही मर जायेगा। प्रथम पुरूष को दया आ गई। बोला प्रशासन सर, जेल में इतने व्यक्तियों को मारा जाता है। एकाध को मानवीय आधार पर जल्दी मार दिया जाये जिससे कि इसे अंदर कर दें। बाहर एक और अंतिम व्यक्ति कम हो जायेगा।

उधर विरोधी प्रथम पुरूष भी अंतिम व्यक्ति को लुभा जनता को भाषण के अलावा कुछ नहीं देते थे। इन्होने भी भड़का दिया कि वे भी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहंुचेंगे। उनकी सभा के अस्तित्व अंतिम व्यक्तियों ने चिल्ला कर पूछा "आप हम तक कैसे पहुंचेगे ? वह बोला "रिश्वत लेकर। हम बड़े घरानों से रिश्वत लेकर तुम लोगो तक पहंुचेंगे। अंतिम व्यक्ति ने कहा "इससे तो आप उन तक पहुंचेंगे हम तक नहीं। "सही पकड़े हैं "वह बोला इससे मंहगाई बढ़ेगी। चीजे मंहगी हो जायेगी फिर तुम लोग घिघियाते हुये हमारे पास आओगे इस तरह तुम लोग हम तक पहुंचोगे।"

आंख नम करें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इतना प्यार हम दम आपस में हम करें।
कांटा अगर तुम्हे चुभे तो आह हम भरें।।
आपकी बातें तो अच्छी लगती हैं हमें।
पर गुफ्तगू में भी कम पेंचों खम करें।।
मेरे अफसानों में रहती आह गम की है।
उनको सुनके आप भी क्यों आंख नम करें।।
मुल्क परस्तों के किस्से जोश भरते हैं।
आप सुनते ही नहीं हैं कुछ शरम करें।।
भूख अगर आपसें कुछ मांगती हैं दें।
ऐसे नजारों के लिये दिल नरम करें।।

आदमीं में जानवर उठने लगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हवायें कितनी लगी बहने गरम।
चोटियां इसको लगी कहने वहम।।
वजन जूतों का बढ़ाने वे लगे।
देख तो लें हम गये कितने सहम।।
एक ही उस्ताद के शार्गिद है।
लगे लड़ने नहीं आती कुछ शरम।।
हिलाई जो नींव खुद हिलने लगे।
हो रही मीनार खुद पर बे रहम।।
आदमीं में जानवर उठनें लगे।
बे असर इन्सानियत की है कसम।।

नजर आयेंगे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भूखे कुनबे को लेकर किधर जायेंगे।
भीख लेंगें नहीं चाहे मर जायेंगे।।
जिन्दगी से तो नाराज है जिन्दगी।
मौत माला लिये है उधर जायेंगे।।
अच्छे दिन के तो वादे रफू हो गये।
बीते दिन दे दो हालत सुधर जायेंगे।।
बीच में से हमारे जो ऊपर उठे।
देंगें तकरीर हक पूरा कर जायेंगे।।
मौत की डोरियां जिनके हाथों में हैं।
मंच पर बैठे वे सब नजर आयेंगे।।
पन्ने इतिहास के फिर न खूनी करो।
आगे पढ़ने पे झुक खुद ही सर जायेंगे।।
खूनी मंजर न नफरत के रोके अगर।
दशहतों के ही शामों सहर आयेंगे।।
दावतों से न नफरत को बिखराइये।
सब ओर मंजर नजर आयेंगे।।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

माँ दुर्गा की स्थापना के समय मालवा में एक कहावत हमारे बुजुर्ग लोग कहते थे

दश दशहरा बीस दीवारी
देव उठने की भई तैय्यारी

यानि दुर्गा स्थापना के दश दिन बाद दशहरा आता है। दशहरे के बीस दिन बाद दीवाली आती है फिर ग्यारवही तिथि पर देवता जागृत हो जाते है। लेकिन उन कहावतों में गहरा दार्शनिक तत्व भी रहता था।

दशहरा का मतलब है दशानन का हनन। यह मात्र संयोग ही नहीं हैं कि दशरथ एवं दशानन के नामों में दश शब्द आया है। दशरथ का मतलब है कि जिसका दशो इन्द्रियों पर नियंत्रण हैं कठोपनिषद में दशो इन्द्रियों को अश्व के समान माना है। मन को प्रगहण (लगाम) माना है और बुद्धि को सारथी कहा गया है। तो दशरथ का मतलब हुआ शरीर की दशो इन्द्रियां। दूसरी और दशानन का मतलब हुआ दश मंुह यानि जिसकी दशों इन्द्रियां भूखी हो।

जब राम को युवराज पद देने का समय आया तो देवता मां सरस्वती के पास गये और निवेदन किया कि वे भगवान राम की वन भेजने की योजना बनायें। तब सरस्वती जी ने इस कार्य के लिये मन्थरा को चुना। तुलसीदास जी ने लिखा हैः

नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि कैकई केरि।
अजस पिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि।

मति उसी की बदली जा सकती है जिसका मन अस्थिर है। मन्थरा का तात्पर्य है अस्थिर मन बाली। इसीलिये सरस्वती जी उसका मन बदल सकी। दशरथ की तीन रानियां थी। कौशल्या, कैकेई और सुमित्रा। गीताजी के चैदहवें अध्याय में पांचवा श्लोक कहता है:

सत्यं रजस्तम इति गुणाः प्रकृति सम्भवा।
निवघ्नन्ति महावाहो देहे देहिनम व्ययम।।

स्त्री में त्रि शब्द ही तीन गुणों का प्रतीक है। दशरथ की तीनों रानियां, प्रकृति के तीनो गुणों की प्रतीक हैं। उनमें कौशल्या सत्व गुण की प्रतीक हैं सत्व गुण को ज्ञान मय बतलाया है। गीता जी के 14/छटवें श्लोक में कहा है

तत्र सत्व निर्मत्वात्प्रकाशम नामयम।
सुख संगेन ब्रघ्नान्ति ज्ञान संगेन भारत।।

कैकेई रजोगुण की प्रतीक है। गीता जी के चैदहवें अध्याय का बारहव श्लोक कहता है:

लोभः प्रवृतिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा

रजस्येतानि जायन्ते विवृहे भरर्षभ

वे योद्धा थी। मगर उनमें लोभ, अशान्ति और लालसा उत्पन्न हो गई थी। राम जी आत्मा हैं। जब आत्मा शरीर (दशरथ) से अलग होती है तो शरीर मृत हो जाता है। श्री सीता जी धरती का अवतार है। धरती को प्रकृति भी कहा गया है। माया जब परमात्मा के अधीन रहती है तो आनन्द रहता है। सीता जी ने राम (परमात्मा) की दो बार अवज्ञा की। पहली तो तब जब भगवान ने उन्हें वनवास जाते समय कौशल्या जी के पास ही रहने को कहा और दूसरी बार तब जब उन्होने सोने के मृग की इच्छा की। जब प्रकृति लालच करती है तो परमात्मा से अलग हो जाती है और तामसी वृतियां उसका हरण कर लेती है। अतः रावण उनको हर ले गया।

दश-दशहरा का तात्पर्य यह भी है कि व्यक्ति शक्ति पूजा के दशो दिन अपनी दशों इन्द्रियों पर नियंत्रण रखें। तब उसके अंदर विशेष प्रकार का सृजन (विसर्जन) हो जाता है। वह उस सुख को प्राप्त कर लेता है जो आत्म बुद्धि प्रसाद जस होता है। पर आजकल तो कुछ युवक श्री गणेश एवं मां दुर्गा के विसर्जन पर जुलूस में शराब पीकर फिल्मी गानों पर नाचते हुये जाते है।

भगवान राम का शारदीय एवं चैत्र, दोनो नवरात्रियों से गहरा संबंध है। भगवान राम ने चैत्र की नवरात्रि में जन्म लिया था तुलसी दास जीन ने कहा भी है

नौभि तिथि मधु मस पुनीता

भगवान को अभिजीत नक्षत्र अतिप्रिय है अतः वे अजेय भी है। दूसरी ओर शारदीय नवरात्रि समाप्त होने पर विजयादशमी को भगवान राम ने रावण पर विजय पाई थी यह एक विचारणीय तथ्य है कि रावण के अधिकतर संबंधियों के नाम शरीर के अंगो या क्रियाओं से संबंधित है। जैसे दशानन (दश चेहरो वाला) या रावण (रूदन करने वाला) मन्दोदरी (क्षीण उदर वाली) मेघनाद (मेघो के गडगड़ाहट जैसी आवाज) कुम्भकर्ण (घड़े जैसे कान) विभीषण (विशेष भीषण) सूर्पनखा (सूपे की नाक वाली) सुवाहू (बड़ी बांहो वाला) ताड़का, अहिरावण, इत्यादि। यानि जब तक हमारा ध्यान शरीर पर लगा रहता है तब तक हम असुर (लय रहित राक्षस) हैं। जब भगवान में ध्यान लगता है तब हम सुर (लयबद्ध) कहलाते है।

वहां दशरथ के सम्बन्धियों के नाम आध्यात्मिक गुणो पर आधारित है जैसे कौशल्या, सुमित्रा (अच्छी मित्र) कैकेई (सम्भवतः मोर-कैकी) राम (आत्मा) लक्ष्मण (तत्वदर्शी) भरत (भक्तिरत) शत्रुघन (इन्द्रियजयी)। भगवान राम के लिये श्री राम रक्षा स्त्रोत में कहा है।

अभिरामस्त्रिलोकानाम् राम श्रीमान्सनः प्रभो

अभी तक हम दश-दशहरा का विश्लेषण कर रहे थे अब "बीस दिबारी" का विश्लेषण करेंगे। प्रकृति के बीस तत्व अचेतन है पांच महाभूत (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल एवं अंतरिक्ष दश इन्द्रियां एवं पांच तन्मात्रायें (शब्द स्पर्श रूप, रस और गंध) इनमें शब्द अन्तरिक्षमय या अनाहद "नाद है" स्पर्श वायु से संबंधित है। रूप अग्नि तत्व से संबंधित है, रस जल से एवं गंध पृथ्वी से। इन तन्मात्राओं से ही महाभूतो का जन्म हुआ है। वैसे तो भगवान राम दीपावली के दिन अयोध्या आये थे इसलिये उत्सव मनाया जाता है। पर कितनी गंदी बात है कि इस समय कुछ लोग जुआ भी खेलते है। प्रतीकात्मक रूप से जब हम इन बीस प्रकृति के तत्वों पर विजय प्राप्त कर लेते है तब अन्तरा में ज्ञान के दीपक झिलमिलाने लगते हैं

रामायण हमें शिक्षा देती है कि इच्छायें कभी पूरी नहीं होती। एक इच्छा से दूसरी इच्छा उत्पन्न होती है। जैसे दशरथ जी ने पहले पुत्र मांगे। उनकी वह इच्छा पूर्ण हो गई। मगर जब उन्होने भगवान राम को युवराज पद देने की इच्छा की तो वह पूर्ण न हो सकी। इसी तरह कैकेई ने भरत को राजा बनाना चाहा तो वे चैदह वर्ष निष्काषित ही रहे और कैकेई को विधवा भी होना पड़ा। सूर्पनखा ने श्री से संबंध बनाना चाहा तो उसकी नाक काट दी गई। सीता ने सोने का मृग चाहा तो उनका अपहरण हो गया। रावण ने सीता से संबंध बनाना चाहा तो वह समूल नष्ट हो गया। भगवान राम ने जब अश्वमेघ यज्ञ किया तो उन्हें सीमा जी नहीं मिली। इस तरह हम देखते हैं कि रामायण कुछ कुछ अतृप्त इच्छाओं का महाकाव्य है।

अब उस कहावत का अन्तिम चरण लिया जाये, वह है "देव उठने की भई तैय्यारी"। इसका तात्पर्य है कि जब हमारे अंदर ज्ञान जागृत हो जाता है तो हमारे अंदर देवत्व जाग उठता है।

स्वरूपानन्द जी द्वारा भगवान हनुमान जी का कार्टून निकालने के निहितार्थ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

यह तो सबको विदित है कि स्वरूपानंद कोई साई बाबा की निन्दा करते रहते थे। फिर साई भक्तो ने यह प्रकरण मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में दाखिल किया था जिस पर न्यायालय में स्वरूपानन्द ने उच्च न्यायालय में हलफनामा दाखिल किया था कि वे भविष्य में साई बाबा की निन्दा नहीं करेंगे।

मगर दिनांक 30.10.15 को ए.बी.पी. न्यूज ने शंकराचार्य स्वरूपानन्द की ओर से निकाला एक कार्टून दिखाया जिसमें भगवान हनुमान जी एक उन्मूलित वृक्ष लिये शिरडी के साई बाबा के पीछे दौड़ रहे है और साई बाबा डर कर भाग रहें है। उसी दिन आई.एस.बी.एन सेवन न्यूज चैनल में इस प्रकरण पर बहस दिखालाई गई जिसमें स्वरूपानंद के कोई शिष्य दावा कर रहे थे कि शिरडी के साई बाबा मालेगांव के थे और उनका नाम चांद मियां था।

शिरडी के साई बाबा का निश्चित जन्म स्थान का कोई साक्ष्य नहीं मिलता है और उनका नाम भी विदित नहीं है। उनका नाम चांद मियां नहीं था, बल्कि वे चांद पाटिल की बारात के साथ शिरडी आये थे और फिर कहीं बस गये। हनुमान जी का कार्टून निकाल कर हनुमान जी का अपमान किया गया है और वह किसी हिन्दु से तो बिल्कुल अपेक्षित नहीं है। भगवान हनुमान जी का किसी भक्त को दर्शन देने का अंतिम वर्णन श्री तुलसीदास जी के समय का है जब उन्होने तुलसीदास जी को भगवान राम और लक्ष्मण जी की ओर इंगित कर यह दोहा पढ़ा था

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीड़।
तुलसीदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुवीर।।

उक्त कार्टून के द्वारा हनुमान जी को एक सामान्य व्यक्ति का गुलाम बतलाया गया है जो उसके कहने पर किसी भी संत के पीछे वृक्ष उखाड़ कर मारने दौड़ जाते है। इस हद तक नफरत तो कम देखने को मिलती है। कार्टून से शायद बजरंग दल को साई बाबा के विरूद्ध भड़काने का प्रयत्न किया गया है। बजरंग बली का कार्टून देख कर बजरंग दल वाले कार्टून बनाने वाले से ही नफरत न करने लगे। वैसे भी विदेशी लोग भारतीय देवी देवताओं के चित्र जूतों में लगा कर या भगवान शंकर का टेटू टांगो में लगा कर कम बदनाम नहीं हैं।

इस कार्टून में हनुमान जी को शंकराचार्य का गुलाम न बतला कर स्वयं स्वरूपानंद को आक्रामक मुद्रा में साईबाबा के पीछे दौड़ता हुआ बतलाने का संकेत था। यह बात अलग है कि साईबाबा अभी जीवित होते तो उनसे डरते या नहीं। शंकराचार्य के द्वारा उक्त कार्टून निकालना उच्च न्यायालय की अवमानना है। इसके लिये स्वयं संज्ञान लेकर स्वरूपानंद को “समन” निकालना चाहिये। वैसे भी शंकराचार्य सन्यासी होते है। श्रीमद्भागवत् गीता के अध्याय पांचवे के श्लोक 3 में कहा गया है

ज्ञेयः स नित्य सन्यासी यो न देष्टि न कांक्षसि।
निद्र्वन्दो हि महावाहो सुखं वन्धात्प्रमुच्यते।।

अर्थात् है अर्जुन, जो न द्वेष करता है और न किसी की आकांक्षा करता है वह सन्यासी समझाने योग्य है। द्वान्दादि दोषो से रहित पुरूष संसार बंधन से मुक्त हो जाता है। श्लोक 10 में कहा गया है

विद्या विनय सम्पन्नों ब्राह्नने गवि हस्तिनि।
शुनि चैव खपाके च पण्डिताः सम दर्शिता।।

अध्याय 20 में कहा गया है:

न प्रहवयेत्प्रियं प्राप्य नो द्विजेत्प्राप्य चा प्रियम।
स्थिर बुद्धिरसम्मूढ़ो ब्रहनविद ब्रहननि स्थितः।।

श्लोक 18 का अर्थ है कि पण्डित, विद्या विनय युक्त ब्राह्नहण, गाय, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में समदर्शी होते है।
अध्याय बीस का अर्थ है ब्रह्नन को जानने वाला ब्रह्नन में स्थित न तो प्रिय को प्राप्त कर हर्षित होता है एवं अप्रिय को प्राप्त कर द्वेष नहीं करता। वह बुद्धिमान स्थिर बुद्धि रहता है अध्याय छः के श्लोक 9 में कहा गया है:

सुह्नन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थद्वेवश्वन्धुषु।
साधुजपी च पापेषु समबुर्विशिष्यते।।

अर्थात सुह्नद मित्र, दुश्मन, उदासीन, मध्यस्थ द्वेषय, बन्धुओ, साधुओं और पापियों में समबुद्धि रखने वाला श्रेष्ठ होता है। ऐसे अनेक गुण पण्डितो, विद्वानों, सन्यासियों के बतलाये गये है जो किसी से नफरत नहीं करते। स्वरूपानंद जी को स्वयं ही किसी से नफरत नहीं करना चाहिये और न ही शिष्यों को नफरत करना सिखाना चाहिये। अन्यथा वे दुःख के समुद इस संसार में डूबते और उतराते ही रहेंगे।
उक्त कार्टून से स्वरूपानंद जी ने

(1) न्यायालय की अवमानना की है
(2) हिन्दु भगवानों का मजाक किया है एवं अपमान किया है
(3) निरर्थक ही बजरंग दल को उकसाने का प्रयत्न कर समाज में वैमनस्यता उत्पन्न करने की कोशिश की है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदरणीय भाई जोशी जी ने ए.बी.पी. न्यूज के 24 घंटे 24 रिपोर्टर (दिनांक 2.11.15) के साक्षातकार में कहा है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कई कार्यकर्ता साईबाबा के भक्त है। अतः साईबाबा की निंदा कर शंकराचार्य करोड़ो हिन्दुओं और लाखों स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं का दिल दुखा रहे हैं।

यह किसी से छुपा नहीं है कि स्वरूपानंद जी कांग्रेस के प्रति नरम दिल एवं रूझान रखते हैं। मोदी सरकार के पूर्व उन्होनें कभी भी साई बाबा की निन्दा नहीं की है। अब उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ कि साई मुसलमान था। (वह साई बाबा को ऐसे ही

सम्बोधित करते हैं) ? हिन्दुओं को उनकी मजार पर नहीं जाना चाहिये। (चाहे अजमेर शरीफ जाते रहें) साई बाबा ट्रस्ट ने केदार जी की बाढ़ में सहायता क्यों नहीं पहुंचाई। जैसे तमाम शंकराचार्य वहां कार सेवा में लगे थे। (ऐसा उनके शिष्य कहते हैं।)

कहीं ऐसा तो नहीं कि वह नरेन्द्र मोदी की आज निंदा कर रहे हो। फिलहाल बुजुर्ग स्वरूपानंद जी को देश के इन निरर्थक भगजाल में उलझना बंद कर देना चाहिये एवं पाकिस्तानियों के हमलों, आतंकवादियों द्वारा निर्दोष भारतीयों के बध, बढ़ती मंहगाई के कारण आम आदमी की जिंदगी दूभर हो जाने का विरोध करना चाहिये। आदरणीय भाई जोशी का यह कथन सार्थक है कि हिन्दुओं को ही तय करने दो कि वे किसको भगवान मानते हैं।

बरारीपुरा पुरस्कार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बहुत से मुर्दे कब्र में से निकलकर पुरस्कार लौटा रहें हैं। वे पुरस्कार इस तरह लौटा रहें है जैसे बासी मिठाई हलवाई को वापिस कर दी जाती है या “एक्सपायरी डेट” की दवाइयाॅ वापिस कर दी जाती हैं। जिन्हें पुरस्कार नहीं भी मिलें वे भी पुरस्कार वापिस कर रहें हैं। कोई विरोध स्वरूप अपना पुरस्कार मुझे नहीं दे रहा हैं। बुझे हुये साहित्यकारों का कतिपय वैज्ञानिको मैं आपको पुरस्कार सहर्ष ले लूंगा। मेरी भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार या राष्ट्रपति जी के कार्यालय में कोई पहचान होती तो एकाध पुरस्कार झटक लेता। अब आप ही आपका पुरस्कार तुझे दे दो। सरकार के पास तो बहुत से पुरस्कार है। वह हर साल बांटती है। नेता लोग भी चुनाव जीतने के लिये झुग्गी झोपड़ियों में शराब और पैसा बांटते है।

दी हुई वस्तु वापिस नहीं की जाती। मेरे करोड़पति साले ने मुझे जिन्दगी में एक ही कमीज दी। वह भी शायद पहनी हुई मगर प्रेस की हुई कमीज थी। मैनें उसे सहर्ष सार्वजनिक रूप से ग्रहण कर लिया। कुछ दिनों बाद वह फट गई तो मैं ने वह वापिस

नहीं की, उससे पोंछा लगाने लगा। तो जब ये विरोधी साहित्यकार छिन्दवाड़ा आते हैं तो संचालक उनका सगर्व परिचय देता है कि अब मैं पदमश्री फलां फलां जी (जिनका नाम भी हम पहली बार सुनते है) से अनुरोध करूंगा कि वे मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण करें। मुझे ऐसा लगता है कि “पदमश्री” से पोछा लगाया जा रहा हो।

सरकार भी बुद्धु है। वह पुरस्कार देते समय अनुबंध क्यों नहीं लिखवा लेती कि इस पुरस्कार को चाहे विश्व युद्ध हो या चाहे भूकम्प आये यानि किसी भी हालत में वापिस नहीं लिया जायेगा वापिस करने वाले को पुरस्कार राशि का दस गुणा जुर्माना एवं छः माह के सश्रम कारावास की सजा दी जायेगी। देखना, आधे साहित्यकार अपना पुरस्कार वापिस ले लेंगें।

न्यूटन ने सेब नीचे गिरने पर एक अविष्कार किया था कि पृथ्वी पर हरेक चीज ऊँचाई से उसके वजन से नहीं गिरती है बल्कि पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण से नीचे गिरती है। यानि सिर पर कबीट गिरने से भी उतनी ही चोट लगेगी जितनी कि बम गिरने से। मुझे मालूम है कि सब वैज्ञानिक न्यूटन के पक्ष में खड़े हो जायेंगे और मैं अकेला रह जाऊंगा। बिल्कुल उसी तरह जैसे एक भेड़ के पक्ष में सारी भेड़ें खड़ी हो जाती है।

किसी साहित्यकार को नहीं मालूम कि वह पुरस्कार क्यों वापिस लौटा रहा है। यदि एक पाकिस्तानी गायक को मुम्बई में नहीं गाने दिया गया, इसलिये वे पुरस्कार वापिस किये जा रहे हो तो ये साहित्यकार और वैज्ञानिक तब चुप क्यों बैठे रहते है जब क्रिकेट में भारत के हारने पर पाकिस्तान के सैनिक हमारे सैनिको को पकड़ कर ले जाते हैं उनका गला रेत देते है उनकी लाशो पर नाचते हैं उनका खून पीते है और उनकी लाशे जानवरों की तरह भारत वर्ष में फेंक देते है। तब उनकी अस्मिता मर जाती है तब वे ये कह अपना पल्ला झाड़ लेते है कि यह मसला राजनीतिक स्तर पर सुलझाना चाहिये, साहित्यिक या वैज्ञानिक स्तर पर नहीं।

मेरे छिन्दवाड़ा में एक प्यारा सा मोहल्ला है बरारीपुरा। प्यारा इसीलिये कि केवल वही मोहल्ला है जिसनें मेरी एक उत्कृष्ट रचना पर मुझे बरारी मोहल्ला रत्न का पुरस्कार दिया था। यह बात अलग है कि फूल मालाओं का बिल मुझे ही चुकाना पड़ा था। लेकिन कम से कम मेरे पास एक तो ऐसी वस्तु हो गई थी जिसे मैं लौटा सकता हूँ। मैं सरकार को चेतावनी दे रहा हूँ कि उन कारणों पर जिनका मुझे भी कारण नहीं मालूम, मैं अपना बरारी मोहल्ला पुरस्कार, बरारी मोहल्लो या सरकार को वापिस लौटा दूंगा। लेकिन मुझे मालूम है कि बरारी मोहल्ला में लठैत मेरे इस पवित्र कार्य पर मेरी ठुकाई कर देंगे। मुझे वापिस हुई वह ट्राफी वापिस लेना पड़ेगा।

हमारे सांसद और विधायक के आसपास तो बहुत सारे टेलीविजन की चैनले चिपकी रहती हैं। मेरा उनसे निवेदन है कि एकाध जुआ मुझे भी दे दें जिससे उस

टी.व्ही. चैनल के सामनें मैं बरारी मुहल्ला साहित्य रत्न वापिस कर दूरदर्शन के सामने ठुकने का मजा लेलूं। लठैत दूरदर्शन के सामने हाथ हिला कर मुझे ठोकते जायें और मैं हाथ हिला कर मुस्कुराता हुआ ठुकता जाऊंगा।   मुझे गर्व है मेरे देश के वैज्ञानिको एवं साहित्यकारों पर कि दाल की हवाई जहाजी कीमतों के विरोध में या भूखो मरते किसानों की आत्मा हत्याओं के विरोध में कुछ नहीं कहेंगे। इतने संवेदनशील हैं हमारे देश के साहित्यकार। वे कश्मीर में तालिबानी या पाकिस्तानी झण्डा फहराने पर पिटने के डर से चुप रहेंगे। नहीं, वे पिटने के डर से चुप नहीं रहते, बल्कि संवेदनशीलता की वजह से चुप रहते हैं। पर एक राजनैतिक पार्टी ने किसी पड़ोसी देश के गायक को गाने से रोक दिया तो सरकार को पुरस्कार वापिस लौटायेंगे, उस राजनैतिक पार्टी को नहीं। यह नहीं कहेंगे कि हे राजनतिक पार्टी, हम सरकार द्वारा दिये गये इस पुरस्कार को तुम्हें वापिस कर रहें हैं क्योंकि तुमनें एक पड़ोसी देश को देश का पैसा नहीं जाने दिया। उधर प्यारे पाकिस्तान को देखो, हमें बुला बुला कर हमारे कार्यक्रम करवाता है और थैले भर-भर के हमारे देश को पैसे ले जाने देता है। हमारी फिल्ममें वहां हर टाकीज में चलती है।

मुझे गर्व है देश के साहित्यकारों और वैज्ञानिकों पर। जब देश में आपात काल लगा था और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छिन गई थी तब वे देश हित में चुप थे। कुछ हिम्मत वाले समाचार पत्रों को छोड़ कर। मुझे क्या करना ? देश की पुरस्कार प्राप्त भेंडे यह अपेक्षा न करें कि मैं अपना बरारीपुरा साहित्य रत्न उन पाकिस्तानी गायक महोदय के पक्ष में लौटा दूंगा। सरकार से भी मेरा अनुरोध है कि उन लौटाये हुये पुरस्कारों में से एकाध मुझे दे दो। मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं उस पुरस्कार को घर के दरवाजे पर लटका कर रखूंगा। फिर सरकार भी वापिस मांगेगी तो मैं नहीं दूंगा।

मैं बार-बार क्यों कहँू कि सरकार बुद्धु है। वह यह भूल जाती है कि कब्रिस्तान जाकर साल में एक बार मोमबत्ती जरूर जला देनी चाहिये। उसे भी सारे पुरस्कार साहित्यकारों और मुझे बुला कर साल में एक बार रात्रि भोज दे देना चाहिये इससे सारे प्रेत चुपचाप कब्रो में पड़े रहेंगें, नहीं तो बाहर निकल कर उनकी उपस्थिति का आभास करवातें रहेंगे।

उल्लू कहां गया ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पेड़ो की शाखाओं की तरह वन विभाग में भी शाखायें निकाली जा रही हैं जैसे वृक्षारोपण, वन संरक्षण, चूहे से लेकर गेंडा एवं मगर, वन संरक्षण, बिगड़े वन सुधार योजना, सामाजिक वानिकी, मृदा संरक्षण इत्यादि। जैसे-जैसे वन विभाग फैलता जा रहा है वन सिकुड़ते जा रहें है। जंगल शहरों में घुलते जा रहें है। रात को या दिन में जानवर जंगल में सोता है और दिन या रात को अपने को शहर में पाता है।

इसी निर्जगली के कारण शहर और जंगल में भेद करने में असमर्थ होने के कारण एक चार फीट उंचा उल्लू शहर में घुस आया। जैसे कालेजो में नये विद्यार्थियों को देखकर रैगिंग गेंग पीछे पीदे पड़ जाती है उसी तरह नाके से शहर के कौव्वे उसके पीछे पड़ गये। उल्लू की जब मौत आती है तो वह नेता, सरकारी नौकर या तांत्रिक के चंगुल में फंस जाता है। उन कौव्वो ने किसी पागल के पीछे पड़े हुये आवारा कुत्तो की तरह उस उल्लू को खदेड़ कर देव वश पंडित ज्वाला प्रसाद तांत्रिक के घर पहुंचा दिया। मौत से बच कर वह उल्लू मौत के मुंह में गिर गया। ज्वाला प्रसाद तान्त्रिक उस दिन वन विभाग के अहसान से दब गये।

शुभ लक्षणों से युक्त उस उल्लू को अचानक घर में देख कर तांन्त्रिक जी उसी तरह अचकचा गये जिस तरह मात्र पांच हजार की लाटरी खुलने पर मैं अचकचा जाउंगा। उस उल्लू के लिये ही उनकी दाहिनी आंख पिछले पन्द्रह दिनों से फड़क रही थी। उस उल्लू में उन्हें एक साथ ही रम्भा, लक्ष्मी और कीर्ति दिखने लगी।

मगर जिस तरह खुली मिठाई पर मक्खियां एवं खुले स्लीपर कंपार्टमेंट में अप-डाउनर घुस जाते हैं उसी तरह उस उल्लू का पीछा करते हुये एक हुजूम उनके घर तक आ गया। उनमें से हरेक आदमी उस उल्लू को मार कर लक्ष्मी चाहता था, मेहनत और ईमानदारी से नहीं।

उनमें से एक ने हिम्मत कर के कहा “तान्त्रिक जी आपके घर में भ्रमवश मेरा उल्लू घुस गया है। आप उल्लू नहीं तो उसका पंख या नाखून ही दे दीजिये मेरी बीबी रो-रो कर उसकी याद में हलाकान हो रही है। मेरी बीबी को उल्लू बहुत प्यारे लगते हैं।”

"इसीलिये तुम्हारी उससे निभ रही है" फिर तेज स्वर में बोली "यह तुम्हारा उल्लू कैसे हो गया ? क्या तुमने उसे फसल की तरह बोया था जो काटना चाहते हो। क्या तुमने उसे आर्डर देकर बनवाया था। लक्ष्मी उसी की होती है जिसके घर छप्पर फाड़ कर गिरती है। बहुत हो गया, भागो यहां से नहीं तो किसी प्रेत को कुत्ते की तरह झुमा दूंगा।"

भीड़ को भगाकर तांत्रिक ने दारू पान किया। फिर उस डरे हुये देहाती पक्षी को भी दारू पिलाई। दारू पीकर वह भोला पक्षी तन गया और उसकी आंखे लाल हो गई। तान्त्रिक उसे प्यार से निहारने लगा। उसका भूरा रंग उन्हें गोमेद और मोती जैसा दिख रहा था। उसकी लाल-लाल आंखो में उन्हें मूंगा और माणिक दिख रहे थे उसके नाखूनों में उन्हें लाटरी के नम्बर दिख रहे थे। उनकी आनन्दमयी समाधि को घंटी ने कैंची की तरह काट दिया। जिस तरह से बेकाबू वाहन में मुश्किल से ब्रेक लगते हैं उसी तरह मुश्किल से गालियों के अजस्र प्रवाह को रोकते हुये वे बाहर आये।

बाहर नगर सेठ सह स्थानीय नेता उनकी मुस्कुराहट के साथ हाथ जोड़े खड़े थे। ज्वाला प्रसाद जी को उल्लू का महत्व बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ। जिसकी अन्टी में जितने उल्लू होते है वह उतना ही लक्ष्मीवान होता है।

नेता गदगद स्वर में बधाई देते हुये हिनहिनाये "धन्य भाग जो लक्ष्मी वाहन हमारे नगर में पधारे। हमारा नगर गौरवायमान हो गया। तांत्रिकजी को अपनी सम्पत्ति सार्वजनिक होकर हाथ से फिसलती हुई मालूम पड़ने लगी। वह नगर सेठ मालूम नहीं कितने लोगो की व्यक्तिगत सम्पत्ति सार्वजनिक बना कर हड़प चुका था। "हें,हें मेरे घर में कोई उल्लू-वुल्लू नहीं है। आप ही पधारे है। उल्लू तो आपके मतदाताओं का नाम है। यहां आपका उल्लू सीधा नहीं होगा "तांन्त्रिकजी ने उसे सेठ के नहले पर अपना दहला फेंका।

नगर सेठ पहले तो हिनहिनाये फिर फुसफुसाये" तो जो रूद्रप्रताप है न विरोधी पार्टी का नेता, वह व्यक्तिगत आक्षेपों पर आ गया है। कहता फिर रहा है मैनें विधवाओं की संस्था बना कर नजूल की जमीन हड़प ली है। आपको तो मालूम है कि मेरी छोटी बहु को समाज सेवा का शौक है। नगर सेठ ने उनकी छोटी बहू को बिसात पर सरकाया"।

"अपने शास्त्रों में विधान है कि दुष्टों को मारने में कोई दोष नहीं है। आप बहू रानी को भिजवा दीजियेगा, उनके हाथ से रूद्र प्रताप का अनुष्ठान करवा दूंगा।" ज्वाला प्रसाद लार निगलते हुये बोले। उन्हें उल्लू सचमुच लक्ष्मी वाहन लगा। उधर नगर सेठ ने सोचा की किसी गणिका को भेज कर रूद्र प्रताप को बर्बाद किया जा सकता है। वे लोग हत्या की योजना भी व्यापारिक अनुबंध की तरह बनाने लगे।

सेठ जी बिल्ली की तरह थे। जब उन्हें खीर खाने नहीं मिली तो उन्होने बगराने का इरादा बना लिया। वे शहर की बन्दूक, थानेदार के खबरची बन गये। दूसरे दिन थानेदार साहब डण्डा ठोकते हुए तांत्रिक के घर पहुंच गये। बोले "इस घर में कोई जंगली जानवर है जो धारा एक से धारा तीनसौ तक दण्डनीय अपराध है"। तांत्रिक समझ गये कि अब उल्लू वश में रखना वश की बात नहीं है। इतने में उल्लू फड़फड़ता हुआ बाहर आ गया। थानेदार साहब पिंजरा लेकर ही आये थे उसे तांत्रिक जी से पकड़वा कर पिंजरे में कैद किया गया। थानेदार जी ने घूरा तो तांत्रिक जी ने उगला "यह तो जानवर नहीं है, पक्षी है"।

"यह जो कुछ भी है तुम्हारी दीवाली "बुक" हो गई, अब दीवाली की रात को तुम मेरे बंगले में उल्लू अनुष्ठान करोगे।"

बालिकाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण, निदान एवं उपचार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

यह एक विडम्बना है कि एक दो प्रान्तों को छोड़ कर भारत के शेष प्रान्तों, विशेषकर उत्तर भारत एवं "बीमारू" राज्यों में लड़कियों का अनुपात लड़को से बहुत कम हैं इसके कारण पुरूषों एवं स्त्रियों की लड़कियों के प्रति पक्षपात पूर्ण रवैया है। चंूकि शादी के समय लड़कियों को लड़का देखना पड़ता है इससे माता पिता को बहुत अपमानित होना पड़ता है। इसलिये लड़कियों की भ्रूण हत्या कर दी जाती है या उन्हें पैदा होते ही क्रूरता पूर्वक मार डाला जाता है। इसका दूसरा मुख्य कारण कहीं कहीं

लड़कियों का आर्थिक उत्पादकता से न जोड़ा जाना है। अतः उनकी बाल्यावस्था में ही शादी कर दी जाती है। इस कारण लड़कियों को अशिक्षित एवं उपेक्षित रखा जाता है। उनका स्थान बालकों से नीचे रखा जाता है और मां बाप उन्हें इतना दबातें है कि उन्हें अजीवन मानकर चलती हैं कि उनका स्थान बालकों से नीचे है। इससे कभी-कभी उन्हें हिस्टीरिया जैसी मानसिक बीमारियां भी हो जाती है या उनकी मस्तिष्क की बीमारी को हिस्टीरिया मान लिया जाता है और उसका इलाज नहीं करवाया जाता।

पी.एन.डी.टी. एक्ट के बाद भी कन्या भ्रूण हत्यायें रूकी नहीं है। आवश्यकता लोगो की लड़कियों के प्रति हेय मानसिकता को बदलना हैं। लड़कियों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का वर्गीकरण निम्न तरह से किया जा सकता है

(1) जन्म के समय

(2) जन्म से पांच वर्ष तक

(3) पांच से दस वर्ष तक

(4) दस वर्ष से पन्द्रह वर्ष तक एवं

(5) पन्द्रह वर्ष से ऊपर

बालिकाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से भी किया जा सकता है

(1) शारीरिक एवं

(2) मानसिक

लेकिन यह लेख प्रथम एवं द्वितीय वर्गीकरण का समन्वित रूप से समावेश करेगा

(1) जन्म के समय की समस्याऐं

जन्म के समय मां के बालिकाओं में हारमोन्स के कारण योनि में रक्त स्त्राव दिख सकता है या उनके स्तन बड़े दिख सकतें है कभी कभी उनके जननांग अपेक्षाकृत बड़े दिख सकते है। ये असमानतायें समय के साथ स्वयं ठीक हो जाती है। अतः इसमें चिंता की बात मां बाप को नहीं होनी चाहिये। यदि "क्लाइटोरिस" बड़ा हो तो उनके लड़के होने का भ्रम हो सकता है। यदि बालिका "उभयलिंगी" प्रतीत होती है तो उसकी प्लास्टिक सर्जरी की जा सकती है।

योनि पर एक झिल्ली रहती है जिसे "हायमन" कहते हैं। यदि वह अछिद्रित है तो बड़ी उम्र होने पर मासिक स्त्राव उसमें बंद हो सकता है जिससे "हीमेटो कालपास" नामक बीमारी हो सकती हैं। इसमें मासिक स्त्राव होता तो हेपर बाहर नहीं निकल पाता। अतः मां बाप को वह एक चिंता का कारण हो जाता है पर एक छोटी सी शल्य क्रिया से इस असमान्यता को ठीक किया जा सकता है।

बालक हो या बालिका हो उन्हें जन्म के समय "बर्थ ट्रामा" हो सकता है जिससे खोपड़ी की हड्डियां क्षतिग्रस्त हो सकती है ये गरदन की तंत्रिकाओं के क्षतिग्रस्त होने से हाथों में पक्षपात हो सकता है।

कुछ जन्मजात बीमारियां जैसे पलको को चिपकाना, हेयर लिप एवं हेयर पेलेट, जबड़ा छोटा होना, मस्तिष्क बड़ा या छोटा होना हायड्रोसिफेलस, गरदम की सिस्टिक हाडग्रोमा जन्मजात सिस्ट बाहनय कान की बीमारियां उंगलियों का अधिक या कम होना इत्यादि अनेक जन्मजात बीमारियों हो सकती हैं जिनमें शल्यक्रिया की आवश्यकता हो सकती है। कुछ मानसिक बीमारियां जीन्स की वजह से भी हो सकती है जैसे मन्गोलिज्म इत्यादि जिनमें विशेष चिकित्सा की आवश्यकता हो सकती है।

पीलिया बच्चों को जन्म के समय ही हो सकता है जो स्वयं या फोटोथेरिपी से ठीक हो जाता है। यह "फिजियोलोजिकल जान्डिस" कहलाता है एवं चिंता का विषय नहीं हैं। यदि मां को कुछ विशेष बीमारियों का संक्रमण है तो वह शिशु को प्रसव के समय या दुग्धपान के समय संक्रमित कर सकता है जैसे गोनोकोकल कन्जक्टाइविटिस "सिफिलिस" एड्स इत्यादि। इन्हें गर्भावस्था में मां के इलाज से रोका जा सकता है। "टिटेनस निओनेटोरम टिटेनस संक्रमण" से होता है।

कुछ ट्यूमटर नियोप्लास्टिक जन्म के समय दिख सकते हैं जैसे नेफोब्लास्टोन (गुर्दे के कैंसर) म्यूकस विसिडोसिस नामक बीमारी से श्लेश्मिक स्त्राव कड़े हो सकते है हाइड्रोसिफिलस में सिर बहुत बड़ा हो सकता है और यह मस्तिष्क की बीमारी है।

जुड़वा बच्चे होना बीमारी नहीं है पर यदि दो बच्चे आपस में जुड़े हों और सिर से या सीने या पेट से तो उन्हें अलग करने की शल्य क्रिया जटिल एवं जोखिम भरी हो सकती है।

कुछ बीमारियों जेनेटिक (गुणसूत्र) हो सकती है इनसे हाइड्रोब्रास्टोसिस फीटेलिया थेलेसीमिया सिकिल सेल एनीमिया अन्य हीमोग्लोबिनो पेथीज इत्यादि। इस तरह हम देखते है कि लड़कियों में जन्मजात बीमारियों के निम्न कारण हो सकते है

(1) जनेटिक

(2) शारीरिक विकृतियां

(3) जन्म के समय आघात

(4) नियोप्लास्टिक

(5) चयापचय संबंधी

(6) हारमोनल

(7) संक्रमण

(8) अन्य

इनमें से अधिकतर बीमारियों को रोका जा सकता है यदि
(1) बच्चे को जन्म देते समय मां की आयु बहुत कम या बहुत ज्यादा न हो।
(2) जेनेटिक कौन्सिलिंग
(3) गर्भावस्था के समय मां को एस्पिरिन, कार्टिसोन, प्रतिरोधक क्षमता कम करने वाली दवाइयां, कैंसर प्रतिरोधक दवाइयां न दी जायें। गर्भावस्था के प्रथम तीन माह में एक्स
(4) अधिक शारीरिक श्रम से बचा जाये।
(5) मां का पोषण अच्छा हो। उसे एनीमिया न हो। विटामिन की कमी न हो।
(6) मां को प्रतिरोधक टीके लगे हो।
(7) गर्भावस्था में मां को तनाव न दिया जाये।
(8) गर्भावस्था में मां को चोट इत्यादि न लगे।
(9) लिंग परीक्षण न किया जाये एवं कन्या भ्रूण हत्या रोकी जाये।
(10) बच्चे दो ही अच्छे। अतः दो के बाद परिवार नियोजन अपनाया जाये।

एक से पाॅच वर्ष तक की बीमारियाँ

इस समय बच्चों में प्रतिरोधक क्षमता धीरे धीरे विकसित हो रही है। अतः उनमें संक्रमण अधिक होता है। इस समय श्वसन सबंधी बीमारियां उल्टी दस्त कुकर खांसी डिप्थीरिया टिटनेस मीजिल्स गलसुये वायरल बुखार इत्यादि होते है। इन्हें यूनीवर्सल इम्युनाइजेशन (सम्पूर्ण टीकाकरण) से रोका जा सकता है। साथ जिनमें बी.सी.जी., पोलियों, डिप्थीरिया, टिटनेस, मम्पस, परट्यूसिस मीजिल्स इत्यादि के टीके शामिल है। साथ ही विटामिन “ए” भी नौ माह से पाँच वर्ष तक दिया जाता है। अतः इसके लिये सामाजिक चेतना आवश्यक है। बी.सी.जी. का टीका एवं पोलियो (ओ.पी.डी.) की प्रथम डोज पैदा होते से ही दी जाती है। बच्चा जब ढेड माह का हो जाता है तब पोलियों डी.पी.टी. मीजिल्स एवं मम्मस की डोज तक दी जाती है फिर बूस्टर डोज दी जाती है। मां बाप को सलाह दी जाती है कि वे क्षेत्रीय ए.एन.एम से एवं आंगनबाडी कार्यकर्ता से निरन्तर संपर्क बनाये रखें।

(3) दस से पन्द्रह वर्ष की उम्र में बालिकाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें

यह समय बालिकाओं में उन्हें युवती बनाने के लिये धीमे परिवर्तन प्रारम्भ हो जाते है। कुछ बालिकाओं की स्तन कलियां कम उम्र में ही बढ़ने लगती है जिससे उन्हें दर्द भी होने लगता है। यह चिंता का विषय नहीं हैं। उन्हें मात्र दर्द निवारक (पेरासिटामाल) से ठीक किया जा सकता है। इस समय उन्हें समझाया जाना चाहिये कि यह एक समान प्रक्रिया है।

इस समय उनकी आवाज हाइपिज्ड (पतली एवं तेज) होने लगती है। उनकी अपनी मित्र मंडली बनने लगती है। मासिक धर्म के समय पेडू में दर्द हो सकता है। इसे

“डिसमेनोरिया” कहते है। यह भी दर्द निवारक औषधियों से नियंत्रित की जा सकती है। अधिक रक्त स्त्राव एवं कुपोषण से उन्हें एनीमिया हो सकता है। इस समय आयरन की गोलियां दी जा सकती है। कभी-कभी मासिक धर्म बढ़ भी सकता है। यह भी एक सामान्य प्रक्रिया हो सकती है। हमें अपनी लड़कियों पर विश्वास करना चाहिये। उन्हें गर्भवती होने के भ्रम में मारना पीटना नहीं चाहिए। हां चिकित्सक को अवश्य दिखा देना चाहिये।

बालिकाओं की रूचि कला एवं पढ़ाई लिखाई में उत्साहवर्द्धन करते रहना चाहिये। वे सामान्यतः कुशाग्र बुद्धि की होती है। यदि उन्हें कुंठाग्रस्त किया गया तो वे मां बाप की मानसिक अशांति का कारण बन सकती हैं वे अपनी कंुठायें मानसिक बीमारियों यथा अवसाद या हिस्टीरिया आदि के रूप में प्रकट करती है जो अजीवन मां बाप को कष्ट देता है अन्यथा तो वे बहुत ऊपर उठ कर मां बाप की प्रसन्नता गौरव एवं सहायता का कारण बनती है।

पन्द्रह वर्ष से ऊपर

इस समय शरीर कुछ हिस्से में चर्बी बढ़ना चालू हो जाती है। ये भाग जांघ, नितम्ब वा स्तन है। हड्डियां तेजी से बढ़ती है व उन्हें केल्शियम की अधिक आवश्यकता होती है। लड़कियों को आयरन, केल्शियम एवं विटामिन्स की अधिक आवश्यकता होती है। स्तन व जननांगों में हारमोन्स के कारण तेजी से वृद्धि होती है। कभी-कभी माइक्रो-एडीनोमा नामक छोटी छोटी गठाने हो जाती है ये हानि रहित होती हैं। इन्हें आसानी से या तो दवाइयों से ठीक किया जा सकता है या आप्रेशन के द्वारा निकाला जा सकता है। ये कैंसर की गठानें नहीं होती।

मगर कभी-कभी स्तनों में कई गठाने हो जाती है जिन्हें सिस्टो सारकोमा फिलाइडिस कहते हैं। इन्हें निकाला जा सकता है। एक सत्रह वर्ष की लड़की के स्तन अनुपात से अधिक बढ़ गये थे। उन्हें निकालने पर “वायोप्सी” में कैंसर निकला। वह लड़की छः माह में ही दिवंगत हो गई। यह उदाहरण डराने के लिये नहीं है, सावधान करने के लिये हैं। स्तन का कोई स्त्राव गर्भावस्था या प्रसव के अभाव में विस्तृत जांच की मांग करता है। मेमोग्राफी एवं एफ.एन. ए.सी कुछ सुगम जांचे है।

यदि लड़कियों को घबराहट अधिक होती है, हाथ पैर कांपते है वजन कम हो रहा हो, कभी-कभी दस्त लगते हो तो “थायरो टाक्सिकाॅसिस” के लिये जांच करवाना चाहिये। ये जांच टी.एस.एच. एवं टी-3 एवं टी-4 नामक जाॅचे होती है। असमान्य होने पर थायरायड नामक ग्रंथि से स्त्राव अधिक निकल रहे होते है उनका इलाज सरल है। इस बीमारी का विलोम “हायपो थायराइडिजम” कहलाता है। ये बीमारियां लड़कियों में अधिक होती है। यदि लड़कियां डिप्रेसिव सायकोसिस (अवसाद) से ग्रसित है तो मानसिक

चिकित्सक से मिलना चाहिये। इसमें कोई हिचक नहीं होनी चाहिये। इनकी दवाइयां अधिक दिनों तक चलती है। बीच में रोकना नहीं चाहिये।

"डायटिंग" एक अन्य समस्या है। लड़कियों को लगता है कि वे मोटी हो रहीं है अतः वे खाना पीना कम कर देती है। यह बीमारी एनोरेक्सिया नरवोसा तक पहंुच सकती है जहां खाना देख कर ही वे उल्टी करने लगती है एवं हाड मांस का पुतला होकर रह जाती है। यह एक मानसिक बीमारी है। इसका इलाज जरूरी है। चेहरे पर "पिम्पल्स" आना एक सामान्य बीमारी है। यह "स्किन हायजिन" एवं एजीथोमायसिन 250 मि.ग्रा. दिन में एक बार इक्कीस दिन तक लेने में ठीक हो जाती है। इसमें चाकलेट, शीतल पेय, काफी, आइसक्रीम इत्यादि नहीं लेना चाहिये।

भारतवर्ष एवं अन्य गरम देशों में माहवारी तेरह या चैदह वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ हो जाती है। लगभग सोलह वर्ष तक तो इंतजार करना चाहिये यदि माहवारी प्रारम्भ ही नहीं होती है तो यह प्रायमरी "एमीनोरिहिया" कहलाता है। इसके लिये प्रोलेक्टिन और ईस्ट्रोजन का रक्त परीक्षण होना चाहिये। चिकित्सक से परामर्श करना चाहिये पहले ही कहा जा चुका है कि हायमन नामक झिल्ली जो योनि द्वारा पर रहती है, अछिद्रित रहती है ऐसे मौको पर भी रक्त स्त्राव नहींे होता है। वह छोटे से आप्रेशन से ठीक हो जाती है। यदि महिला जननांगो का क्षय रोग हो तब भी माहवारी नहीं होती है वह इलाज से ठीक हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि माहवारी चालू नहीं हुई है या कंुवारी लड़कियों की माहवारी चालू होकर बंद हो गई हो तो उन पर शक करने की बजाय उनकी जांचे करवाना जरूरी है। यह सही है कि गर्भवती होते समय ही माहवारी बंद हो जाती है। माहवारी मस्तिष्क की पिट्यूटरी नामक गं्रथि या अण्डाशय की बीमारी के कारण भी नहीं होती है। कई बार तनाव या एनोरेक्सिया नरकोसा (पूर्व में वर्कित) में भी माहवारी बंद हो जाती है। कई बार डिम्ब से अण्डा नहीं निकलता है तब भी माहवारी नहीं होती वह "एनोव्यूलेटरी एमनोरिया" कहलाता है एवं छोटे से आप्रेशन से ठीक हो जाता है। फिर भी पेडू की अल्ट्रा सोनोग्राफी कोल्वोस्कोपी हिस्टिसेस्कोपी लेप्रोस्कोपी या लेप्रोटोमी (पेट का आप्रेशन करवाया जा सकता है। हारमोन्स की जांच हर हाल में होना चाहिये।)

माहवारी के समय पेडू में दर्द प्राथमिक यानि सामान्य रूप से होता है या फिर बीमारी के कारण जैसे संक्रमण या गर्भाशय का ट्यूमर इत्यादि से हो सकता है। अधिकतर बालिकाओं में प्रायमरी यानि बगैर किसी कारण से होता है और दर्द निवारक दवाओं से ठीक हो जाता है। जांचे फिर भी करवाना चाहिये। जब मासिक धर्म चालू होते है तब असामान्य रक्त स्त्राव सामान्य बात है। वैसे माहवारी 28़3 दिन के अन्तराल से आती है और 4 ़ 2 दिन की रहती है। कुछ दिनों पश्चात यह नियमित हो जाती है।

यदि यह नियमित नहीं होती है तब रक्तस्त्राव हो सकता है फिर भी अल्ट्रासोनीग्राफी (ट्यूमर इत्यादि के लिये) हारमोन्स का रक्त में स्तर देखना चाहिये। माहवारी, पिट्यूटरी ग्रंथि एवं डिम्बाशय के हारमोन्स से नियंत्रित होती है। यह अधिक रक्तस्त्राव खुद व खुद व नियमित एवं दर्द रहित होता है। कभी-कभी ये ट्यूमर या एन्डो मेट्रियोसिस के कारण होते है। एवं एनओव्यु ुलेटरी मीनोरेझिया दर्द रहित, अनियमित एवं अप्रत्याशित होते है।

कैल्शियम की कमी इस उम्र में हो जाती है जो सूर्य की रोशनी में न निकलने के कारण भारतीय लड़कियों में सामान्य बात है। इससे हाथ पैरो में दर्द, झिन झिनी, थकावट या टिटेनी के रूप में हो सकती है। इसका इलाज केल्शियम एवं विटामिन डी के द्वारा किया जाता है। कभी-कभी कुछ बालिकाओं में पैरों की नसें फूल जाती है। इससे पिण्डलियों में दर्द होने लगता है। शिराओं में "वाल्व" महिलाओं में कम या कमजोर होते है। यह बीमारी देर तक खड़े रहने से होती है। बालिकाओं को हल्के शारीरिक श्रम के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

बालिकायें उनकी छोटी या बड़ी समस्याओं कभी माता पिता से छुपाती है। उनकी हर शिकायत या परिवर्तन को ध्यान एवं सहानुभूति से सुना जाना चाहिये। चिकित्सक से परामर्श में कोई झिझक नहीं होना चाहिये।

कुछ बीमारियां बालिकाओं या महिलाओं में विशिष्ट होती है। ये बीमारियां उनकी शारीरिक बनावट, हारमोन्स के परिवर्तन ये जीन्स की वजह से हो सकती है। बालिकाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें एक स्वयं में विशद विषय है। जिसे एक लेख में समाहित करना असम्भव है। बालिकाओं को शिक्षित करने से यह समस्या कुछ हद तक तक सुलझाई जा सकती है। उन्हें स्वस्थ रखने के लिये घर का स्वस्थय वातावरण आवश्यक है।

उपसंहार

बालक या बालिका के जन्म के पूर्व ही उनका लिंग निर्धारण हो जाता है। बालक या बालिका के जन्म के लिये मात्र महिलाओं को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। पुरूषों में एक्स और वाय क्रोमोसोम होते है और महिलाओं में एक्स और एक्स क्रोमोसोम होते है। यह वाय क्रोमोसोम पर निर्भर होता है कि संतान लड़का होगा या लड़की। संचेषण के समय यदि वाय क्रोमोसोम महिला के एक्स क्रोमोसोम से मिलता है तो लड़की जन्म लेती है। यह तथ्य पुरूषो को समझना चाहिये।

लड़कियां लड़को से पहिले परिपक्व होती है कुछ मनोवैज्ञानिको का मत है कि लड़कियों की विचार प्रक्रिया में हारमोन्य का अधिक महत्व होता है। माहवारी के समय

वे कुछ अवसाद में रहती है एवं माहवारी के बीच में अधिक प्रसन्न पर ऐसा नहीं है। जहां तक महत्वकांक्षाओं और बुद्धि का प्रश्न है, दोनों में कोई फर्क नहीं रहता। इस विषय में मतभेद है कि स्कूल का ॅलेजो में यौन शिक्षा दी जानी चाहिये या नहीं। लेखक का मत है कि स्वस्थ यौन शिक्षा से नवयुवक एवं नवयुवतियां कई शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से बचे रह सकते हैं। साथ ही साथ माता एवं पिता को भी बालिकाओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है। तभी एक आदर्श समाज का निर्माण हो सकेगा।

हार गया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं तूफां से हार गया।
साहिल तक कई बार गया।
हिम्मत टूट गई मेरी।
हिम्मत तक हर बार गया।
अब तो जो चाहे कह दो
शर्म हया के पार गया।
झुका हुआ सिर है मेरा
मर्जी जिसकी मार गया
आंसू से रूख गीला है

मेरा तो संसार गया
मजबूरी मैं जिन्दा हूँ
वक्त कभी का मार गया

कौन ?

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सगे भाइयों से हम बढ़ कर हैं ये उनको समझाये कौन ?
नहीं लड़ेंगे उनके कहने ये उनको बतलायें कौन ?
भरते है जो पेट देश का वे भूखे रह जाते हैं।
उनके कपड़े फटे हुये हैं उनको गले लगाये कौन ?
हुआ निरंकुश भाव गगन पर उस पर अंकुश कौन रखे ?
ऐसे मदमाते हाथी को अपने वश में लाये कौन ?
जो आते है अतिथि देश में उनको भारत ताज महल
ताज महल को मजदूरो तक बतलाओं ले जाये कौन ?
तनखा जिनकी लाखों में है उनका खर्च नहीं चलता
लाखों में फिर रिश्वत लेंगे उनका खर्च घटायें कौन ?
रिश्वत खोरो सीमा पर भी जरा सैनिकों को देखो
तुम्हें बचाने गोली खाते उनका कर्ज चुकाये कौन ?

जिनके कारण घर घर सा है जो घुल कर बच्चा देतीं।
सिर ऊपर कर तुम जवाब दो उनको भला जलाये कौन ?
ऊपर वालों को नीचे की चीखें नहीं सुनाती हैं।
दर्द हमारा उनके दिल में कैसे और जगाये कौन ?

मेरा भारत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जैसे मरूस्थल में कोई सुंदर झरना बहता है।
इसी तरह से मेरा भारत मेरे अंदर रहता है।।
मुझको ये दुनिया वाले सब मिल कर पागल कहते हैं।
कहते हैं ये आज देश भक्ति की बातें कहता है।।
यदि किसी कमजोर व्यक्ति को कोई व्यक्ति सताता है।
ऐसा लगता है सुंदर सा महल कोप कर ढ़हता है।।
खेत जोतता है गर्मी में और पसीनो से तर है।
उसी कृषक के कंधो पर ये वजन देश का रहता है।।
कहां महल आकर मिलता था कहो किले में कैद हुआ।
उसकी कमी यहां खलती है वहां कभी वह सहता है।।

कभी लौट पायेगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्म के समय,
आॅखे बंद थी।
पर वह,
सर्व व्यापी चेतना में।
निमग्न था।।
धीरे धीरे,
उसकी आंखे खुलती गई,
और धीरे धीरे,
वह समरस चेतना,
विलुप्त होती गई।।
वह सुनने लगा,
चखने नगा,
खाने लगा,
और हाथ पैर चलाने लगा,
इस तरह देखता हुआ,
सुनता हुआ,
चखता हुआ,
हाथ पैर चलाता हुआ,
वह सर्वव्यापी चेतना,

के ब्रम्हाण्ड से,
अण्डे से चूजा के,
निकालने की तरह,
बाहर आता गया ।।
और एक पिंजरे में,
कैद होता गया।।
वह अंधेरी गली में
बिचरने लगा और,
उसे
चेतना समझने लगा।।
जिसमें कभी,
पूर्ण न होने वाली,
इच्छायें थी,
दुखो का समूह था,
तृष्णायें भी,
वह अपने आप से
लड़ने में
आनन्द प्राप्त करने लगा।।
अब लगता नहीं
कि पीछे लौट कर,
पुनः उसी,
सत् चित,
आनन्दमयी,
सर्वव्यापी,
समसर,
चेतना में,
जहां वह वह,
नहीं था,
पहंुच पायेगा।।

गर्म मौसम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ये कैसा मौसम आया ?
सूखे गांव नगर सूखे।
सूर्ख मार्ग डगर सूखे।।
समृद्धि समृद्ध हुई।
भूखे हुये और भूखे।।
सूखो पेड़ो की छाया।
ये कैसा मौसम आया।।
आसमान तक सिकुड़ रहा।
वह धरती पर बिगड़ रहा।।
हुई शिलायें तक कंकड।
दलदल लेकिन अकड़ रहा।।
नहीं भूख ने कुछ खाया।
ये कैसा मौसम आया ?।।
अंगारे से बरस रहे।
खुश होने पल तरस रहे।।
कांटे चुभते है े तन में।
वाक्य नहीं अब सरस रहे।।
हैं सिंहासन गरमाया।

ये कैसा मौसम आया ?।।

भीड़ रोंदती व्यक्ति को।
अभिमान है शक्ति को।।
शासन का मतलब विपृव।
ठुकराता है व्यक्ति को।।

ठुमरी ने हल्ला गाया।
ये कैसा मौसम आया।।

गंगा सूखी रेत हुई।
रेत क्षितिज तक खेत हुई।।
भय पसरा है सभी जगह।
सुन्दरता एक प्रेत हुई।।

शोषण की पसरी छाया।
ये कैसा मौसम आया ?।

जहां कदम एक गलत पड़ा।
तब श्रद्‌धा से प्रेम लड़ा।।
नहीं मूर्ति मंदिर में है।
मंदिर ही हो गया बड़ा ।।

सागर वूदों में पाया।
ये कैसा मौसम आया ?।।

कुनबा संभालना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आज के दौर में कुनबा संभालना यारो।
है सुई के छेद से हाथी निकालना यारो।।
उधार मांगने आये हैं, ले के जायेंगे।
बहुत मुश्किि‍ल है ऐसे शख्श टालना यारो।।
चुनाव आने पर डरते हैं कड़े दिल के भी।
खुदकुशी की तरह है वोट डालना यारो।।
भले ही वे कसूर मरते हैं हदों पर अपनी।
मगर मजबूरी है सरकार पालना यारो।।
जिन्दा रहने का वे रास्ता खुद ढूंढेंगे।

छोड़ दो अपने में बच्चों को ढालना यारो।।

रब की पैदाइश

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सुबह होती है फरमाइश शाम को फिर से फरमाइश।
कर सकं◌ू मांग मैं पूरी नहीं इतनी है गुजाइश।।
अंधेरा हमेशा का है उजाला एक पल का है।
उजाला लड़ सके उससे, अंधेरे की है ये ख्वाहिश।।
इबादत के लिये मंदिर न मस्जिद की जरूरत है।
खुले में भी कबूल होगी फकीरो की है समझाइश।।
घुसते जा रहे हैं शहर जंगल में तो कुदरत भी।
कहर ऊपर से बरसा के तुम्हारी लेगी अजमाइश।।
लगी है खत्म करने जिन्दगी शैतान की सेना।
मगर मालूम नहीं कि जिन्दगी है रब की पैदाइश।।

रहीं हैं।

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बंद कमरे की दीवारें कस रहीं हैं।
और टांगे दन दलों में घंस रही है।।
हवा तो माहौल में बेइन्तिहा है।
गले में सांसे हमारी फंस रही है।।
कहीं जाना हैं कहीं हम जो रहे हैं।
इस भटकने पर फिजायें हंस रही है।।
एक थे हम हम को लड़वाने की खातिर।
बीच कुछ कौमे हमारे बस रहीं है।।
भूल तो तारीख न की थी मगर अब।
वहीं भूले हम सभी को डस रहीं हैं।।

पहाड़ और नदिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तुम पहाड़ से खड़े रहो।
और मिट्टी में गढ़े रहो।।
मैं नदियां वह जाऊंगी,
एक जगह तुम अड़े रहो।।
मैं पी से मिल जाऊंगी,
तुम घमण्ड में अड़े रहो।।
तुम्हें तोड़ सकती हूँ पर,
महिमा मंडित मड़े रहो।।
तुमको बरक जाऊंगी,
बड़ी समझ है बड़े रहो।।
पत्थर दिल में उतर चली,
तुम चोटी पर पड़े रहो।।

वह क्या है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो पाया वो थोड़ा है।
खुद्दारी को छोड़ा है।।
तुमने दिया वो खाया है।
जो छीना वो छोड़ा है।।
नजर तुम्हारी है जिस पर।
तिनका तिनका जोड़ा है।।
कभी राजपथ सा है वह।
कभी राह का रोड़ा है।।
तुम कहते हो वह क्या है।
वक्त उसी ने मोड़ा है।।

कफन में जेब

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अमीरों का है फरमाना
कफन में जेब लगवाना

सही हमने कहा, गड़बड़
तुम्हारा मन से छपवाना
हरेक में अलग रहता है
तुम्हारा एक मयखाना
चिल्ला कर बहुत मुश्किल
है आदर्शो को समझाना
घुलोगे जो नहीं हमसे
पड़ेगा तुमको पछताना
तुम्हारी जेब में पैसा,
है मेरा न हड़प जाना

असहिष्णु भारत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आजकल छद्म धर्म निरपेक्ष लोगों में भारत की सहिष्णुता के विरोध में एक मुहिम चल पड़ी है। वे चीख चीख कर और तरह तरह से कहते हैं कि भारत में असहिष्णुता बढ़ गयी है। यानि कि असहिष्णुता पहले भी थी, अब बढ़ गई है। कुछ लोग इस बढ़ी हुई असहिष्णुता के विरोध में पुरस्कार लौटा रहे हैं तो कुछ व्यक्तव्य दे रहें है। उत्तर प्रदेश के एक मंत्री भारत की इस बढ़ती हुई असहिष्णुता के विरोध में संयुक्त राष्ट्र संघ को सीधे ही पत्र लिख रहे है। इसे कहतें है अपनी जांघ खुद उघाड़ना।

इन लोगों को याद रखना चाहिये कि ये असहिष्णुतायें उन्हीं राज्यों में हुई है। जहां बी.जे.पी. का शासन नहीं है। इसका मतलब है कि संबंधित सरकारें असहिष्णु घटनाओं को रोकने में अक्षम रहीं है पर दोष बी.जे.पी. पर मढ़ा जाता है। दो मुख्य घटनायें असहिष्णुता से जोड़ी जाती है। एक बावरी ढांचा का गिराया जाना और दूसरा दादरी में एक मुस्लिम को जलाया जाना। वे यह भूल जाते है कि जब बावरी ढांचा ढहा था तब कांग्रेस के पी. नरसिंहा राव प्रधानमंत्री थे। उन्हें जरा भी आशंका पर बावरी मस्जिद के चारो तरफ सेना लगा देना चाहिए थी और दादरी घटना उत्तर प्रदेश में हुई है जहां बी.जे.पी. का शासन नहीं है। उनके अनुसार असहिष्णुता तब से बड़ी है जब से केन्द्र में बी.जे.पी. का शासन हुआ है। उनके अनुसार भारत सहिष्णु हो जाता अगर गाये गली गली में बकरों की तरह कटने लगती या बहुसंख्यक समुदाय की लड़कियों का बलात् अपहरण करने की स्वतंत्रता मिल जाती।

भारत उन लोगो की नजरों में असहिष्णु हो गया है जो सामान्य स्थिति से उठ कर अरबपति हो गये है। आज यदि भारत के प्रधानमंत्री को आदमखोर कहा जाता है और भारत का दार्शनिक प्रधानमंत्री चुप रहता है तब उन्हें भारत सहिष्णु नहीं लगता। व्यक्तव्य देने वालों और पुरस्कार लौटाने वालों को बुरा लगता है कि विश्व में भारत का प्रधानमंत्री विदेशो में हिन्दी में भाषण क्यों देता है। यदि भारत में विदेशी लोग निवेश करेंगे तो इन नव धनाढयों की प्रतिष्ठा कम हो जायेगी। इसलिये इनकी नजरों में भारत की असहिष्णुता बड़ी है। भारत इनकी नजरों में सहिष्णु रहता यदि बहुसंख्यको गाली दी जाती और वे विरोध न करते।

ये लोग भारत को असहिष्णु भी कहेंगे और अन्य सहिष्णु देशों में जायेंगे भी नही। एक "सत्यमेव जयते" का कहना कि उनकी पत्नी किरण, असहिष्णुता के कारण भारत छोड़ने की कह रही है। श्रीमान उन्हें ऐसा न करने दें नहीं तो भारत इस अपूरणीय क्षति को सह नहीं पायेगा। आप के इस पक्षपात पूर्ण व्यक्तव्य से भारत की छवि विदेश में बढ़ गई है। शायद आप वहीं है जो "सत्यमेव जयते" के संचालन के लिये साढ़े तीन करोड़ रूपये लेते थे। मगर आपने परदा प्रथा और बहु पत्नि प्रथा पर कोई श्रृंखला नहीं की।

एक और साहब हैं जिन्हें दुव्र्यव्हार के कारण वानखेडे स्टेडियम से निकाल दिया था। उन्हें भारत को असहिष्णु कहने का पूरा अधिकार है। इन लोगो का इस बात पर कोई व्यक्तव्य नहीं आयेगा कि क्यों भारत तब सहिष्णु हो गया था जब कश्मीरी पण्डितो को कश्मीर घाटी से मार कर भगा दिया गया था। क्यों वहां "जीनो साइड" कर दिया गया था। उन्हें भारत तब सहिष्णु लगजा है जब कश्मीर में पाकितान और तालिवान के झण्डे फहराय जाते है और हम उन देश द्रोहियों पर गोलियां नहीं चलाते।

यदि छब्बीस ग्यारह की घटना होती है तब ठीक पर यदि आतंकवादी को फांसी हो जाती है तो भारत एक दम असहिष्णु हो जाता है। ओवेसी के भाई के अनुसार भारत तब सहिष्णु होगा जब आधा घंटे के लिये पुलिस हटा ली जायेगी और वे लोग बहुसंख्य को उनकी औकात बतला देंगे।

और ये छद्म बुद्धिजीवी इन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि ये उत्तर प्रदेश सरकार का विरोध कर रहें है या केन्द्र सरकार का। बस भेड़ो की तरह जिधर एक जाता है उधर ही सब चल पड़ते है। इन सबका कहना है कि भारत में असहिष्णुता बड़ी है। इन्हें लगता है कि भारत में "सिविल वार" छिड़ गया है। गांव गांव में बहुसंख्याओं और अल्प संख्यकों में भयंकर लड़ाई छिड़ गई है। जगह जगह खून की नदियां बह रही है और उनमें कटे हुये सिर तैर रहें है। भारत सहिष्णु तब रहता है जब मकबूल फिदा हुसैन हिन्दुओं की देवियों की नग्न फोटो बनाता है पर तब नहीं जब संगीतकार ए.आर.रहमान के विरूद्ध फतवा जारी हो जाता है। सच तो ये है कि इन छद्म बुद्धिजीवियों को सच कहने और उसका सामना करने का साहस नहीं है। सब सुविधा भोगी हो गये है कोई मंुशी प्रेमचन्द या सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के कद की बराबरी नहीं कर सकता। अंत में मैं कहना चाहूंगा

भेड़िये के हुक्म नामें फलक तक जाने लगे।
जुगनुओं के झुण्ड सूरज तक को धमकाने लगे।।
बेसहारा आदमी को घेर कर वे मेहरवां।
कीमतों सब खंू जिगर गुर्दे की बतलानें लगे।।
क्या सबब है मेहरबानी का पूछा रोक कर।
एक सिक्के की तरफ सब भाग कर जाने लगे।।
गुनाहों के फरिश्ते सब मिल गये हैं और वे।
गलतियों बे कसूरों की मिल के गिनवाने लगे।।
जिन्हें हम समझे मसीहा खंजरों के साथ थे।
खंजरों के नुमाइन्दे भैरवीं गाने लगे।।

मैं, कुत्ता और असहिष्णुता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं शाम को थका मांदा घर पहुंचा तो घर में यदि के द्वारा पाला हुआ झबरा कुत्ता मुझें देख कर भौंकनें लगा। मैं भौचक्का रह गया। पहले वह मुझे देख कर पंूछ हिलाने लगता था गोद में बैठता था और कंू कंू करता था। आज वह गुर्रा रहा था। मैनें प्यार से पूछा क्या हुआ कुत्ते। वह भड़क गया। बोला "मिस्टर श्रीवास्तव पहले तुम मुझे बेटा कह कहते थे पर देख रहा हँू कि दो दिन से कुत्ता कह रहे हो ?"

मैनें समझाया मेरा बेटा आस्ट्रेलिया से लौट आया है। बस कुछ दिन की ही तो बात है। वह वापिस चला जायेगा तो तुम्हें फिर से बेटा कहने लगँूगा। "उसने बिदं्रपता से कहा" अच्छा तुम जैसे मां बाप को औलाद की अनुपस्थिति में बेटे का सहारा हम दें और हमीें को कुत्ता कहते हो। उन्हें नहीं। एक कुत्ते से औलाद के बारे में इस तरह का सम्बोधन सुन कर मेरा माथा चढ़ गया और में गुस्से में बोला "यू ब्लडी पिग्मी" वह भड़क गया। बोला आप असहिष्णु होते जा रहें हैं। मैं आपका घर छोड़ कर चला जाउंगा।"

मैनें खुशी से उसका पट्टा खोल दिया और प्रसन्नता से बोला "जा वे जा कुत्ते। हो सके तो तेरी मैडम को भी ले जा। तुझे खिलाने पिलाते हम हैं तुम यदि हम से ज्यादा सहिष्णु सड़क लगती है तो वहीं घूम। तू घरों में रहने लायक नहीं रहा। सड़को पर रोटी के टुकड़े के लालची आवारा कुत्तो से जान बचाता फिर। हम तुझको को छत, घर की सुरक्षा दें मांस की बोटियां खिलायें और हमीं असहिष्णु हो गये।"

वह झबरा पिल पिला गया उसे घर के बाहर का गला काट संघर्ष और भीड़ में फटने वाले बम और कारों और ट्रकों से कुचला जाना याद आ गया वह कांपने लगा। वह कांपते हुए बोला "पर मालिक इस घर पर मेरा भी हक बनता है। आप मुझे इस तरह नहीं निकाल सकते।" मैं विनम्रता से बोला "मेरे कुत्ते मैं कब तुम्हें निकाल रहा था

?तुम्हीं जाने का कह रहे थे। मेरा सोचना तो यह है कि यह घर मेरी बीबी के साथ कुत्तो, मच्छरो, मक्खियों, ततैयों, छिपकलियों और मेरा भी है।"

बातचीत से वह थोड़ा कुनकुनाते हुआ बोला "आपने यह नहीं पूछा कि यह शब्द असहिष्णता मेरे दिमाग में कैसे आया। मैनें उपेक्षा से जवाब दिया "यह आश्चर्य की बात है नहीं है। जो मुफ्त की खा खा कर मुटा जाता है उसे नये नये चमत्कारिक शब्द सूझने लगते है।" वह बोला पर मुझे ऐसा क्यों महसूस होता है कि जब से आपका बेटा आस्ट्रेलिया से घर आया है मेरी उपेक्षा होने लगी है।"

मैं बोला देखो मित्र यह तो अपनी अपनी महसूसता की गलती है नहीं तो मैं "बीफ को छोड़ कर सारे टुकड़े आपको खिलाता हँू। मेरे घर के भारत को साफ रखने के लिए आपको घर के बाहर के भारत में नित्य क्रिया के लिए ले जाता हँू। हम खुद ही अपने पेट के भारत के अलावा पूरे भारत के लिये असहिष्ण्णु होने जा रहे हैं।" उसके घर में मेरी औकात दिखाते हुए कहा "अच्छा तुम जरा मेरी पीठ खुजला दो। शायद कोई किल्ली लग गई है।

मैं सन्न रह गया। मैने कांपती आवाज से कहा "इस घर में खुजली कहां से आ गई। कहीं तुम कुत्तों की यूनियन में शामिल नहीं हो गये ? पहले एक को खुजली चलती है फिर यूनियन के हरेक कुत्ते को चलने लगती है।" वह गर्व से बोला "हां हो गया हँू और आपको खुशी होगी कि हमारी असहिष्णु यूनियन बन गई है। अगले रविवार हम यहां के मेयर से मिलने जा रहे हैं। मैं हंस कर बोला "कुते-भेड़े कब से बन गये। कुत्तो को तो अच्छे स्वास्थ्य के लिये आपसे लड़ते रहना चाहिये। कुते, जब किसी बाहरी कुत्ते को मोहल्ले के बाहर खदेड़ते हैं तभी एक जुट होते हैं। उसने अंग्रेजी में कहा "वी हेव्ह मेड ए ग्रुप आफ इन्टलेक्चुअल डाग्स हैं। मैं सकपका गया जब कोई अंग्रेजी बोलता है तो मैं सकपका गया। जब कोई अंग्रेजी बोलता है तो मैं सकपका कर "या, या" कह कर उसकी हां में हां मिलाने लगते हैं। अंग्रेजी की वजह से पालतू कुत्तों का दबदबा चल रहा है।

मुझे सकपकाते देख कर उसको आनंद आ रहा था "वह आगे बोला" यदि हम लोगो के पट्टे आधा घंटे के लिये खोल दिये जायें तो हम तुम को बतला देंगें कि आदमियों का हम लोग मिल कर क्या कर सकते हैं।" मैनें गुस्से में कहा कि "तुम लोग नहीं हो, कुते हो। आदमी कभी ऐसा सोचता भी नहीं है। फिर तुम कुत्ता गिरी पर आओगे तो आदमी क्या चुप बैठेंगे। आदमियों के पास तो पागल कुत्तो के काटने के इंजेक्शन भी है। जब तुम आदमियों से बचने के इंजेक्शन बना लो तब मुझ से आॅख मिलाना।

एक मार्ग रूकावट सरकारी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं एक मित्र के पीछे उसकी मोटर बाइक पर बैठा था। आगे एक सरकारी गाड़ी सड़क पर तिरछी खड़ी थी उसी के कारण जाम लगा हुआ था। भारत की प्रगति में इसी कारण जाम लगा हुआ है। हर अफसर तिरछा खड़ा हुआ है। उसके तिरछे देखने से प्रगति की फाइल आगे नहीं बढ़ पाती। जब तक किसी फाइल पर उनकी तिरछी नोटशीट सीधी नहीं होती तब तक वह फाइल आगे नहीं बढ़ती। भले ही प्रधानमंत्री कहते रहें कि भ्रष्टाचार खत्म हो रहा है पर वह शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ता जा रहा है। चपरासियों के घर तक छापा पड़ने पर साढे तीन करोड़ बरामद हो रहे हैं। अखबारों में बड़े अक्षरों में छप रहा है पर प्रधानमंत्री जी अखबार में नहीं पढ़ते या इन खबरों को नहीं पढ़ते। अखबार वाले बेकार ही इन खबरों को छापते हैं।

मेरे दोस्त ने जाम हटाने हार्न बजाया तो तीन सिपाही आ धमके और डांटा "देख नहीं रहे आगे सरकार खड़ी है। अब अगर हार्न बजाया तो ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करने

के लिये घर जाओगे। दोस्त ने पूछा मगर सरकार आगे क्यों नहीं बढ़ रही।" एक सिपाही बोला "सरकार गुटखा खाने बाजू की दुकान पर गई है। दोस्त ने पूछा "मगर उसी दुकान पर क्यों ? सिपाही बोला "क्योंकि उस गुटखे वाली दुकान का एक प्रकरण साहब के न्यायालय में चल रहा है। उसी के बारे में कुछ डिस्कसन" चल रहा है।

ये एक नया विभाग पल्लवित हो रहा है, प्रदूषण नियंत्रण विभाग। यदि आपने प्रदूषण फैलाया तो आप पर जुर्माना कर दिया जाता है। उससे प्रदूषण रूक जाता है। इस विभाग का नाम तो जुर्माना विभाग हो जाना चाहिये। मेरा दोस्त गिडगिड़ाया "मगर मुझे जल्दी आगे जाना है। "पूरा देश इन अफसरों के आगे गिडगिड़ा रहा है। पर ये नहीं चल रहें टस से मस नहीं हो रहे। टस पर ही अड़े हैं। मस पर नहीं सरकते एक कारखाना चाल करने के लिये कई लाइसेंस लेना पड़ते है। धन्य हैं ब्रान्डेड कपड़े, टाटा का नमक, बिड़ला के कारखाने, आई टी की कम्पनियां इत्यादि वस्तुऐं जो भारत में इतने अवरोधों के बाद देश को आगे धकेल रहीं है।

एक कारखाने को देश रूपी सड़क पर चलने के लिये दो तरह के कर देना पढ़ते हैं। प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर। प्रत्यक्ष कर तो "रिश्वत कर और राजनीति कर" के रूप में देना पड़ता है और अप्रत्यक्ष कर, शिक्षा कर, व्यय दर कर, प्रदूषण नियंत्रण कर ज्ञात और न जाने कितने अज्ञात कर हैं। आश्चर्य है कि इतने करों से दबे रहने के बाद भी कम्पनियां आगे सरक रही है।

सरकारी अधिकारियों को रूकने के लिये इन कम्पनियों को रेस्ट हाउस बनाना पड़ते हैं। जो बनते हैं किसी और नाम से है और आते किसी और काम में। उनमें सचिवों से लोकर पटवारियों तक ठहरते हैं या उनके रिश्तेदार ठहरते हैं। फिर ठहरने का मतलब तो आप जानते हीं है। उन के लिफाफो से लेककर गिलाफों तक का इंतजाम अजीम प्रेमजी, टाटा, बिड़ला या रेमण्ड को करना पड़ता है। विदेशी कम्पनियां तक जब अफसरों को खरीदती है तब जनता को उनके उत्पाद बेच पाती हैं।

रिश्वत बहुत ताकतवार हो गई है। किसी की ताकत जो रिश्वत को मना कर दे। रिश्वत की उल्टी गंगा नीचे से उद्‌गम लेती है और ऊपर मंत्री रूपी समुद्र में खत्म होती है। इसीलिये इसे संस्कृत में उत्कोच कहते हैं। इसीलिये इसे उपहार भी कहते हैं। पूरा देश इस बदबू से दुर्गन्धमय हो रहा है। जो रिश्वत नहीं लेते है, उनके बारह महीनों में सत्रह स्थानान्तरण हो जाते है।

अदम्य आकर्षण है रिश्वत सं‌ुदरी में। साथी ही साथ उसमें अहंकार दर्द, मान और अभिमान

भी है। वह उपेक्षा सहन नहीं करती। जिसने उसकी उपेक्षा की वह या तो सचिवालय पहं‌ुच जाता है या प्रान्त के दर्शन टूरिस्ट बस से भी अधिक गति से करने लगता है।

मंत्री लोग उस प्रेमकर की उपेक्षा करने पर को सार्वजनिक रूप से बेचारे अधिकारी को तब तक प्रताड़ित करते है जब तक वह अपना ब्रहनचर्य भंग नहीं कर लेता।

सरकार उसके नौकरों से बहुत अधिक प्यार करती है। जब उनको वेतन तीन अंको का होता है तब वे रिश्वत चार अंको में लेते थे जब उनका वेतन चार अंको का हो तो वे रिश्वत पांच अंको में लेने लगे। जब उनका वेतन पांच अंको में हुआ तो वे रिश्वत छः अंको में लेने लगे। जब उनका वेतन छः अंको का हुआ तो वे रिश्वत सात या आठ अंको में लेने लगे। गोया आप समुद्र की गहराई नाप सकते हैं आसमान की ऊँचाई नाप सकते हैं पर रिश्वत की गहराई या ऊँचाई नहीं। पहले हितग्राही को रिश्वत देने अधिकारी के घर जाना पड़ता था पर अब तो अधिकारी रिश्वत की चलती फिरती दुकाने हो गये है। कोई कोई कार्यालय तो रिश्वत की मंडी हो गये हैं। सरकार इस काम के लिये मंहगे वाहन उपलब्ध करवाने लगी है।

इतने में अधिकारी के वाहन चालक ने हमें शुभ सूचना दी कि अधिकारी को लाभ हो गया है अतः जाम हटने ही वाला है बस आप लोग सरकार को धक्का लगा दें। सरकार धक्के से चल रही है। मेरा मित्र बोला "क्यों ओ.डी.को अपमानित कर रहे हो ? "इसमें ओ.डी. कार की कोई गलती नहीं है। कार देते समय डीलर ने इसकी "ओरिजिनल बैट्री" निकाल ली थी और पुरानी बैट्री लगा दी "वाहन चालक बोला। एक व्यौहारिक आदमी पिनपिनाया "सर आप कोई नई बैट्री क्यों नहीं ले लेते।" आजकल हर सरकारी नौकर को "सर" कहना पड़ता है, क्या जाने वह कब चपरास गिरी पर उतर आये ?

ड्राइवर हंस दिया "सरकार में ऐसे खरीदी नहीं होती। पहले एस्टीमेट मांगा जाता है फिर टेंडर निकाले जाते है तब साहब सबसे कम कीमत के चारो ओर लाल स्याही से गोला बनाते हैं। तब जाकर आर्डर दिया जाता है। तुम लोग जैसा नहीं कि दुकान पर गये और सबसे अच्छी चीज सबसे ज्यादा कीमत में खरीदती है। अच्छा चलो भीड़ तुम धक लगाओ तो सरकार तुम्हें आगे बढ़ने का मौका दे। सरकार सरके तो तुम्हारी फाइलें आगे बढ़े। पीछे खड़े वाहनों को फाइल कह कर संबोधित किया।

शिष्टाचार बनाम चाटुकारिता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुछ दिन पूर्व एक भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री ने एक शिष्टाचार किया। उन्होने स्वयं के कर कमलों के द्वारा उनके पेट के आग्रह पर उनकी ध्वस्त पार्टी के उपाध्यक्ष के चरण कमलों को चप्पले पहनाई। उनका शिष्टाचार धन्य हो गया। जब देश में हो हल्ला मचा तब उन्होने ही इस कृत्य को शिष्टाचार का नाम दिया। वह नौजवान हर सभा में शिष्टाचार करने का मौका देता रहता था इस तरह देश भर में शिष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। जब ऐसे ही शिष्टाचार करते रहना था तो देश से अंग्रेजो को भगाने की क्या आवश्यकता थी। उनका शिष्टाचार तो यहां भारतवासी कर ही रहें थे। उनको भगाने से टूटे से टूटे और चप्पलें फिर भी उठा रहे हैं।

कबिरा बाजार में खड़ा रहता है और किसी भी दुकान का पक्ष नहीं लेता। एक चप्पल पहना रहा है तो एक झाडू लगा रहा है। बढ़ बढ़ कर चाटुकारिता हो रही है। नेताओं के शिष्टाचार और चाटुकारिता में फर्क होता है। अमीर युवती जब कुत्ते का चुम्बन ले तो शिष्टाचार होता है। मगर दूसरी ओर जब कुत्ता उसे चाटता है तब चाटुकारिता होती है। चाटना मतलब चाटुकारिता। मगर दिमाग चाटने को चाटुकारिता नहीं कहते है। वह दिमागी पिटाई लगाना होता है। कर कमलो से चप्पल पहनाने के कारण हर मोहल्ले में कर कमलों का अपमान करवाया जा रहा है। पेट जो न करवाये वह थोड़ा। वृद्धाश्रम् में अपने मां बाप से मिलने का शिष्टाचार न करेंगे, पर अपने लड़के की उम्र की तिजोरी को चप्पल पहनाने का शिष्टाचार जरूर करेंगे।

दिनांक 19.12.15 को महामहिम के सभागार में एक कार्यक्रम चल रहा था। हस्ताक्षर सील को मक्खन लगाये जा रहे थे। अंत में सील को बोलने का मौका दिया गया। सील ने भाषणों के के माध्यम से हस्ताक्षर बनने का प्रयत्न किया तो उससे हस्ताक्षर ने माइक छीन लिया। फिर उद्घोषिका ने कहा कि सबने राज्यपाल महोदय के मार्गदर्शक वचनों को सुना हम उनके बतलायें मार्ग पर चलेंगे। सील को हस्ताक्षर के नीचे ही रहना चाहिये। ऊपर नहीं लगाना चाहिये।

राज्यपाल सोचते ही रह गये कि वे मार्गदर्शन दे भी नहीं पाये और उनके कर्मचारियों ने उन्हें उठा लिया और गर्भगृह में छोड़ दिया। वे थे भी इसी योग्य। उनको मर्जी से न उठने दिया जाता था न बैठने दिया जाता था और न बोलने दिया जाता था। विधानसभा में भी उन्हें आंख बंद कर वहीं पढ़ना पढ़ता था जो मुख्यमंत्री लिख कर देता था। उन्हें मंुह बंद रखने के लिये देश लूटने की आजादी थी।

एक हिन्दी विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश में बना दिया गया था। कुलपति भाषण दे रहे थे कि बेचारे हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को मेडिकल कॉलेज में एडमीशन लेने के लिये एक हिन्दी का मेडिकल काॅलेज खुलना चाहिये। स्वयं राज्यपाल जी का लड़का एक अंग्रेजी के मेडिकल काॅलेज में उन्हीं के अनुमोदन के आधार पर मेडिकल काॅलेज में एडमिशन ले चुका था। वे ईमानदारी पर भाषण दे रहे थे। ईमानदारी अब करने योग्य नहीं रह गई है। इसी विरोधाभास के कारण उनसे माइक छीन कर उचित कार्य किया गया था।

हिन्दी विश्वविद्यालय का कुलपति स्वयं हिन्दी भाषियों को बिचारा कह रहा था। मालूम नहीं कि वह व्यापम की बेईमानियों का पक्ष ले रहा था या हिन्दी भाषियों का अपमान कर रहा था। बहरहाल उसे लग रहा था कि वह कुछ कर रहा था। उसका आव्हान था कि जनता हिन्दी में मेडिकल काॅलेज खोलने पर इंडियन मेडिकल कौंसिल पर दबाव डाले। यानि ये कुछ न करें बल्कि कुछ करने की वाहवाही लूटे।

उस सभा के प्रतिभागियों को महामहिम ने यथा, प्रथा गुलाब जामुन और कचैरी खिला कर शिष्टाचार कर के भगा दिया फिर अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय में चाटुकारिता का दौर चला। यह दौर पाँच बजे तक चला। अन्त में यह शिष्टाचार और चाटुकारिता का दौर समाप्त घोषित कर दिया गया। प्रतिभागियों को स्वादिष्ट खाना खिला कर एवं उस खाने के पैसे काट कर शेष राशि देकर उनका मुंह बंद कर दिया गया।

घरेलू हिंसा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

(प्रश्न बरछी की तरह मन पर लगे
निशा घर में रखने के तन पर लगे)

घरेलू हिंसा अधिनियम सन् 2005 की धारा 498 घरेलू महिलाओं के ऊपर की गई हिंसा से उनको सुरक्षा प्रदान करती है। इसके विस्तृत ब्यौरा जानने के पूर्व हम यह समझ लें कि घर की परिभाषा क्या है घरेलू महिला कौन है, उनके ऊपर की गई हिंसा

क्या है, वह कितने तरह की हो सकती है एवं घरेलू हिंसा के विरूद्ध क्या दण्डात्मक प्रावधान हैं ?

घर वह निवास है जहां व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह आपसी संबंधो के कारण साथ साथ निवास करते हों, घरेलू संबंधी के कारण किसी मकान में रहते हों या एक माता पिता की संतान हों या उनके बीच विवाह हुआ हो या उन्हें गोद लिया गया हो या किसी संयुक्त परिवार के सदस्य के रूप में रह रहे हों। उस घर एवं परिवार के साथ रहने वाली महिलाओं को घरेलु महिला कहा गया है। यह भी संभव है कि उसे घर पर पीड़ित महिलाओं का स्वामित्व भी हो या न हो एवं उस घर में पीड़ित व्यक्ति एवं दोषी व्यक्ति साथ साथ निवास कर रहे हो ?

शारीरिक हिंसा

ऐसा दुराचरण जिससे घरेलु महिला की स्वास्थ्य, सुरक्षा, जीवन तथा सुख से रहने की इच्छा का हनन होता हो, स्वास्थ्य नष्ट करने की चेष्टा, मारपीट, यौन प्रताड़ना, इसी तरह की प्रताड़ना उसके किसी अन्य रिश्तेदार पर करना या हत्या शारीरिक प्रताड़ना में शामिल होगा।

मानसिक हिंसा

मानसिक हिंसा में मानसिक प्रताड़ना, अपशब्द महिला के रिश्तेदारों को अपशब्द कहना, किसी दूसरे रिश्तेदार (जैसे सास, ननद, माॅ, बाप, भाई) के द्वारा महिला पर मानसिक दबाव डलवाना, महिला की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल अपमान, मानसिक या भावनात्मक प्रताड़ना, धमकाना आदि मानिसक प्रताड़ना में आयेगा। इसी तरह उसे उसकी इच्छा के विरूद्ध किसी रिश्तेदार से मिलने को विवश करना या रोकना या किसी अन्य मर्द के साथ मिथ्यारोप लगा कर उसका नाम जोड़ना भी मानसिक हिंसा में आयेगा।

आर्थिक हिंसा

दहेज के लिये प्रताड़ित करना, दहेज के लिये प्रत्यक्ष या परोक्ष दबाव डालना, नौकरी छुड़वाना समान कार्य के लिये पुरूषों से कम वेतन देना, उसके स्वयं के कपड़े लत्तो आदि से बेदखल करना, रहवास की सुख सुविधाओं से वंचित करना या उसके बैंक में रखे पैसो से उसे वंचित करना इत्यादि आर्थिक हिंसा में आते हैं।

राज्य शासन के उत्तर दायित्व

(यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है चलो यहां सं चलें और किसी दर के लिये

मरहूम दुष्यन्त कुमार)

शासन ने घरेलू हिंसा से पीड़ित मलिलाओं के लिये "आश्रय गृहो" की व्यवस्था की हैं। शासन ने उनकी देख रेख के लिये संरक्षक अधिकारी की भी नियुक्ति की है। उसका दायित्व है कि पीड़ित महिला को शासन द्वारा उपलब्ध सहायता की जानकारी दें। वह महिला घरेलू हिंसा के विरूद्ध मजिस्ट्रेट से निषेधात्मक आदेश प्राप्त कर सकती है। वह संरक्षक अधिकारी विधिक सहायता से उस महिला को न्यायिक सहायता प्राप्त करवायेगा एवं दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 498 के तहत दण्ड प्रकरण दायर करवाने में सहायता प्राप्त करवायेगा। वह महिला को बच्चों की अभिरक्षा भी प्राप्त करवायेगा। वह महिला को विधिक सहायता अधिनियम में आर्थिक सहायता भी प्राप्त करवायेगा एवं सेवा भावी महिलाओं की सहायता भी दिलवायेगा। जिन घरेलु हिंसा में प्रकरणों में घरेलु शांति स्थापित होने की संभावना हो तो उस दिशा में भी कार्य करेगा।

यदि कोई रजिस्टर्ड महिलाओं की संस्था महिलाओं के कल्याण की दिशा में कार्य करती है तो उसे अधिकार है कि वह संरक्षक अधिकारी को एवं मजिस्ट्रेट को सीधे ही पीड़ित महिला के संबंध में रिपोट कर सकती है। घरेलु महिला उत्पीड़न के क्षेत्र में मजिस्ट्रेट को निर्बाध शक्तियां प्रदान की गई है। वह पीड़ित महिला को आश्रय स्थान पर पहुंचाने की व्यवस्था करेगा, हिंसा से पीड़ित महिला को जो मानसिक एवं आर्थिक क्षति पहुंची है उसे आर्थिक मुआवजा दिलवायेगा, वह दोषी व्यक्ति को महिला से मिलने पर भी रोक लगा सकता है। बच्चों की अभिरक्षा मां को दिलवा सकता है, दोषी व्यक्ति न तो महिला की संपति में खुर्द-वुर्द करेगा एवं न ही आश्रम गृह से उसे हटाने की कुचेष्टा करेगा। वह सम्मिलित परिवार से दोषित व्यक्ति को निष्कासित कर सकता है। तत्काल भारतीय दण्ड प्रक्रिया सहिता की धारा 128 के तहत महिला को जीवन यापन भत्ता दिलवा सकता है एवं दोषी व्यक्ति व्यक्ति को दण्ड दे सकता है।

यह आवश्यक नहीं कि पीड़ित महिला की ओर से कोई साक्ष्य प्रस्तुत किया जाये क्योंकि वे मिलेंगे भी नहीं अतः मात्र परिस्थिति जन्य साक्ष्य को ही आधार मान कर उक्त निर्णय दिये जा सकते है। कुछ अन्य विशेष प्रावधान जो घरेलु हिंसा रोकने के लिये प्रभावरत है निम्न है

(1) सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829 - इसके अनुसार सती बनने के लिये उत्प्रेरित करने वाले सभी सदस्यों को सजा का प्रावधान है। इस प्रथा को बंद करने के लिये महामना मदनमोहन मालवीय ने भी अथक प्रयत्न किये थे।

(2) दहेज प्रतिरोध अधिनियम 1961 - इस कानून के तहत दोषी व्यक्तियों की जमानत नहीं होती। आज भी दहेज दानव ¬प्रतिवर्ष लगभग 7000 महिलाओं को निगल जाता है। दहेज चाहने वाले व्यक्ति को शासकीय सेवा नहीं मिलती। उसे सारा दहेज वापिस करना पड़ता है। इस दिशा में भा.द.प्र. संहिता की धारा 498 ए प्रभावशील होती है। यदि किसी

महिला की मृत्यु शादी के सात साल के अंदर आपराधिक कारणों से होती है तो उसे दहेज संबंधी हत्या ही मानी जायेगी। उसे दोषी व्यक्ति को भा.द.प्र.सं. की धारा 306 के अन्त्तगत आत्महत्या का उत्प्रेरण भी माना जायेगा।

दूसरा विवाह - यदि एक जीवित पत्नी के रहते हुये पुरूष दूसरा विवाह करता है या किसी दूसरी महिला को भगा कर लाता है तो वह धारा 494 एवं भा.द.प्र.सं. की धारा 498 के अन्त्तगत दोषी माना जायेगा।

मादक द्रव्यों का उपयोग- महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में यदि गांव नगर या मोहल्ला की पचास प्रतिशत महिलायें शराब की दुकान के विरूद्व हस्ताक्षर कर प्रस्तुत करती है तो वह दुकान वहां से हटा ली जायेगी।

यौन अपराधो के विरूद्ध धारायेः- धारा 376 बलात्कार के अपराधी को दण्डित करने के विषय में है। धारा 354 शील भंग करने के विरूद्ध में है। धारा 294 अश्लीलता के विरोध में है। धारा 363, 366 एवं धारा 366 ए अपहरण एवं बलात्कार के संबंध में है। न्यायालय को निर्देश है कि वह ऐसे कूट प्रश्नों की वर्जना करे जिससे वह लज्जा, पीड़ा या उत्पीड़न महसूस करे।

बाल विवाह निरोधक अधिनियमः-राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश में बाल विवाह अधिक होते हैं उसका कारण गलत सामाजिक मान्यतायें दहेज प्रथा एवं अशिक्षा है बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929 एवं 1979 के पास किये गये हैं। इसके तहत दोनों पक्षों को सजा का प्रावधान है।

हिन्दु स्त्री सम्पति अधिकार अधिनियमः- यह अधिनियम 1937 में प्रभाव में आया। इसकी पुर्नव्याख्या सन् 1905 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने की। इसके अनुसार विवाहित या अविवाहित लड़की को भी पारम्परिक संपति पर लड़कियों का भी लड़को के बराबर अधिकार है पर यह आदेश सन् 1905 के प्रकरणों पर लागू होगा। हां, पिता जरूर स्वअर्जित सम्पति पर मनमाना बिल कर सकता है।

हिन्दु विवाह अधिनियमः- (1955) विवरण उपरोक्त वर्णित है विवाहित पुरूष जीवित पत्नि की मर्जी के विरूद्ध न ही दूसरा विवाह करेगा या रखैल रखेगा। मगर तलाकशुदा पत्नि उसकी सम्पति पर बराबर की हकदार रहेगी।

नैतिक व्यापार निवारण अधिनियमः-(1956) गर्भपात संबंधी अधिनियम 1971 भारत में विशेषकर "बिमारू" प्रान्तों में (बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश) पंजाब एवं हरियाण में स्त्री

पुरूषों का अनुपात बहुत विसंगत है, दम्पति या पत्नि को पति या उसके रिश्तेदार गर्भावस्था में शिशु का लिंग जानने के लिये विज्ञान के आधुनिक अविष्कारों जैसे एम्नियोटिक प्लूड विश्लेषण, एम्नियोटिक मेम्ब्रेन बायोप्सी, अल्ट्रा सोनोग्राफी इत्यादि का

सहारा लेने के लिये जोर देते है। ऐसे प्रकरणों को कोई भी पी.एन.डी.टी. समिति, पुलिस या मजिस्ट्रेट को रिपोर्ट कर सकती है ऐसे प्रकरणों में प्रेरित करने वाले रिश्तेदार एवं चिकित्सक दोनो को सजा का प्रावधान है। चिकित्सक को यह लिखना आवश्यक है कि यहां गर्भावस्था में लिंग निर्धारण नहीं होता है। ऐसे विज्ञापनदाताओं को सजा का प्रावधान है जो लड़के एवं लड़कियों में भेद दर्शाते है। ऐसे साधुओं या धार्मिक गुरूओं को भी सजा का प्रावधान है जो लड़का या लड़की होने की भविष्यवाणी करते हैं।

नैतिक व्यावार निवारण अधिनियम 1956 वर्णित है।

फेक्ट्रीज एक्ट 1986-समान योग्यता वाली सभी स्त्रियों को समान पद पर रखने के नियम एवं मातृत्व अवकाश देने का अधिकार देता है।

कान्ट्रेक्ट लेबर एक्ट:-(1976) समान कार्य के लिये महिलाओं को समान पारिश्रमिक देने का अधिकार देता है।

मातृत्व लाभ नियम:-(1961 एवं 1951) वर्णित है समान पारिश्रमिक कानून 1976 उपरोक्त वर्णित है।

उपसंहार

घरेलु महिलाओं पर शारीरिक आर्थिक एवं मानसिक हिंसा रोकने के अनेक कानून भारतीय संविधान में है। पर कई प्रकरणों में पुरूषों पर झूठे आरोप भी लगा दिये जाते है। महिलायें परिवार की धुरी होती है। पर उन्हें समझना भी चाहिये। पति, पत्नि और उनके परिपार को भरसक प्रयत्न करना चाहिये कि परिवार न टूटे।

अन्त में

भ्रूण से ही मारने षडयंत्र रचते है।
आधी दुनिया को पुरूष क्यों खत्म करते है।।

आत्महत्या करने का क्यों शौक है इतना।
मिटाते है उसे ही जो इन्हीं रचते है।।
फूल की बगिया से क्यों नफरत रंगो में है।
चीखते फूलो में आंधी से बरसते हैं।।
इनके अंदर पशु है पर वस्त्र मानव के।
जानवर की तरह पुष्पों पर झपटते हैं।।
इनकी कब होगी प्रगति भगवान ही जाने।
जाने कब पशुओं से मानव में बदलते हैं।।
होता है आश्चर्य जब कुछ पुष्प अपनी ही।
जाति के पुष्पों पे अत्याचार करते हैं।।

क्या सिर्फ ससुराल में ही होती है घरेलू हिंसा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घरेलू हिंसा महिलाओं पर केवल ससुराल में ही नहीं होती बल्कि वह उसके संसार में आने से पहले से ही चालू हो जाती है इसी हिंसा को खत्म करने के लिये पी.एन.डी.टी. एक्ट प्रभाव में लाना पड़ा इसके अनुसार बीमारियों के अलावा गर्भावस्था में लिंग परीक्षण करना कानूनन अपराध है। गर्भावस्था में लिंग परीक्षण केवल अल्ट्रासोनोग्राफी द्वारा ही नहीं होता है बल्कि उसके और भी तरीके हैं जैसे एम्मिनयोसिन्टेसिस, एम्नियोटिका बायोप्सी, इत्यादि। पर अल्ट्रासोनोग्राफी के अलावा अन्य तरीको में गर्भपात का डर भी रहता है। व्यौहारिक सत्य तो यह है कि अल्ट्रासोनिक मशीने अब अशिक्षित लोगो को हाथ में भी आ गई है। कुछ मशीनें तो महिला के घर में भी लाई जा सकती है। वैसे तो प्रशिक्षित से प्रशिक्षित चिकित्सक भी शत प्रतिशत यह नही बता सकता कि गर्भ में लड़का है या लड़की है। मगर लड़की बतलाने पर उन्हें गर्भपात करने का मौका मिल जाता है अतः उनकी दुहरी कमाई हो जाती है।

यह महिलाओं के दिमाग में परवरिश करते समय ही भर दिया जाता है कि बचपन में उन्हें मां बाप के नियंत्रण, में शादी होने पर पति के नियंत्रण में और पति की मृत्यु के पश्चात पुत्र के नियंत्रण में रहना चाहिए। बचपन से ही पुत्रो की अपेक्षा पुत्रियों के पोषण एवं शिक्षा की कम की जाती है। प्रकृति ने हालांकि महिलाओं को पुरूषों के मुकाबले में अधिक सहनशील एवं ताकतवर बनाया है पर पुरूष प्रधान समाज में उन्हें अधिक प्रताड़ित किया जाता है।

अधिकतर बचपन से ही डरा धमका कर उनका यौन शोषण उनके जनक भाई, मामा, सौतेले पिता, सौतेले भाई आदि करने लगते है। तो यह मानना कि उन्हें प्रताड़ित केवल ससुराल में ही किया जाता हैं एक भयंकर भूले है। इस प्रताड़ना एवं यौन शोषण के कारण कुछ लड़कियां तो चुप रहती है कुछ विक्षिप्त हो जाती है और कुछ आत्महत्या कर लेती है। ऐसा प्रकरण संयुक्त परिवारों में अधिक होता है। यदि कोई लड़की आवाज उठाती है तो उसे ही दोषी मान कर सजा का भागी बना दिया जाता है। कुछ लड़कियों का यौन शोषण उसे शादी के झांसे में रख कर किया जाता है जो कि बलात्कार की श्रेणी में आता है। बलात्कार की परिभाषा है कि महिला से बलात् यौन संबध उसकी मर्जी के बगैर या उसे धोखा देकर जैसे नशे खिला कर या शादी का झांसा

देकर या विक्षिप्त महिला से (जो कानूनन स्वीकृति नहीं दे सकती) या जो वयस्क नहीं हैं (चाहे वह उसका पति ही क्यों न हो, या उसे डरा कर किया जाये। यह भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376 के अन्तगत दण्डनीय अपराध है एवं दोषी को 7 साल तक की सजा हो सकती है। इसमें पति के साथ यौन संबंध भी उसकी मर्जी के विरूद्ध आता है।

ऐसे कई प्रकरण भी सामने आये है जहां महिला या लड़की के गर्भवती होने के डर से उससे अप्रकृतिक मैथुन किया जाता है जो धारा 377 के अन्तगत दण्डनीय अपराध है। किसी महिला को
छेड़ना भी दण्डनीय अपराध है जो धारा 354 में दण्डनीय अपराध है। लड़कियों को उनकी पुश्तैनी संपती से भी वंचित रखा जाता है। पिता मात्र स्वअर्जित संपति से ही वसीयत के द्वारा वंचित कर सकता है पर पुश्तैनी संपति पर भी किया जाता है। लड़कियां इस मामलें में भी संबंध टूटने की सम्भावना के कारण चुप रहती है।

ऐसे प्रकरण भी समाचारों में आते है जहां मातायें स्वयं अपनी वयस्क बच्चियों की हत्यायें कर देती है। एक प्रसिद्ध प्रकरण अभी भी चल रहा है यहा शीला मर्डर केस की बात की जा रही है। राजस्थान लड़कियों की भ्रूण हत्याओं के मामले में बहुत बदनाम है। वहां जन्मोपरांत भी बच्चियों को मार दिया जाता है। उन्हें या तो अफीम खिला दी जाती है या उन्हें प्रशिक्षित औरते गला दबा कर मार देती है।

कई शिक्षक अवयस्क लड़कियों के यौन शोषण में पकड़े गये हैं। कुछ शिक्षक ब्लू फिल्म लड़कियों को दिखाते भी पकड़े गये है। कुछ शिक्षक लडकियों को अश्लील इशारे भी करते है। यह एक शर्मनाक हरकत है जिसने गुरू एवं शिष्यायों के पवित्र रिश्ते को बदनाम कर दिया है। कई धर्मगुरू उनकी शिष्यायों के यौन शोषण के अपराध में पकड़े गये है। कुछ पर मुकदमें भी चल रहें है एवं कुछ को सजा भी हो गई है। एक देवी का प्रकरण भी इस सिलसिले में उछला था।

इन सबका कारण नारियों का श्रद्धामय होना है। पुरूष धोखेबाज और हिसंक होता है वह झंुड बना कर भी आक्रमण करता है। मित्रों, प्रेमियों और पतियों द्वारा महिला को यौन शोषण का शिकार बनाना इसके उदाहरण है। पुरूष भेड़ियों की तरह समूह बना कर रहते है। यह भी सही है कि पुरूष चारित्रिक रूप से कमजोर रहते है। संुदरता एवं धन का प्रदर्शन आदमी को डरा देता है जिनके पैर कब्र में लटके हैं वे भी ऐसे घिनौने अपराध करने से स्वयं को नहीं रोक पाते। लड़कियों को बेचने के लिए कई लड़कियो का अपहरण कर लिया जाता हैं। इसमें उसके पड़ोसी और प्रेमी भी सहायता करते हैं।

कार्यालयों में महिला अधीनस्थ कर्मचारियों के अधिकारी उनके यौन शोषण की कुचेष्ठा करते है। विश्वविद्यालयों में विभाग प्रमुख जब तक चाहे लड़कियों को पी.एच.डी. देने से रोक सकता है। कारण केवल उनका समर्पण के लिये विवश करता है। शासन के आदेश है कि हर स्कूल कॉलेज एवं कार्यालयों में स्त्री पुरूष के लिये अलग अलग शौचालय हो मगर कुछ ही कार्यालयों में इसका पालन होता है।

इस तरह से अनेक प्रकार से घरेलु हिंसा शादी के पूर्व महिलाओं पर की जाती है। शादी के बाद तो घरेलु हिंसा का कोई अंत नहीं है। शादीशुदा महिला को शारीरिक मानसिकता एवं आर्थिक हिंसा सहना ही पड़ती है। दहेज के लिये महिलाओं को या तो शारीरिक प्रताड़ना दी जाती है या उन पर समबन्धियों से मानसिक दबाव डलवाया जाता है या उनकी हत्या कर दी जाती है कई बार हत्या को प्राकृतिक मृत्यु का रूप दिया जाता है। हत्या या तो जहर देकर या गला दबा कर कई दिनों भूखा रख या आग लगा कर दी जाती है। अस्पतालों के बर्न वार्ड ऐसी ही नवयुवतियों से भरे रहते है। हालांकि शादी के बाद ससुराल में 7 वर्ष तक हर मृत्यु दहेज के कारण मानी जाती है, परन्तु बच्चों के भविष्य के लिए अधिकतर मायके वाले कानून का सहारा नहीं लेते।

कुछ मां उनकी लड़कियों से उनकी सामर्थ से अधिक घर का काम करवाती है। सांसे तो खैर करवाती ही है। आजकल बहुयें भी उनकी सांसों से भी इसी तरह व्यवहार करने लगी है। कुछ परिवार घर की नौकरानियों से इसी तरह सामथ्र्य से अधिक काम करवाती हैं। कुछ महिलाओं को बंधक बना कर काम लिया जाता है। घर में कुछ सौतेली मांये उनकी लड़कियों से शरीर थका देने वाला कार्य करवाती है। कभी कभी विधवाओं से भी क्रूरता पूर्वक व्यौहार किया जाता है। ये सब घरेलु हिंसा का एक अन्य रूप है।

लड़कियों को पढ़ने से वंचित रखना घरेलु हिंसा का एक रूप है। कक्षा 8 वीं तक या चैदह वर्ष की उम्र तक शिक्षा हर बच्चे को कानूनन आवश्यक है पर कभी कभी उन्हें उनके इस अधिकार से वंचित रखा जाता है। यह एक प्रकार की घरेलु हिंसा है। गोया घरेलु हिंसा के अनेक रूप है। धार्मिक गं्रथ भी इन घटनाओं से भरे पड़े है। बहु पत्नि प्रथा तो इनके रूप हैं ही विवश होकर बहु पति प्रथा भी इनके रूप है। कुछ कहानियों में तो पिता के कहने पर पुत्र ने अपनी मां के भी सिर काट डाले हैं। कहीं कहीं रूप बदल कर ऋषि पत्नियों पर दुराचार देवताओं ने किया पर श्राप पत्नि को दिया गया। लड़कियों के मन में बचपन से ही लड़कियों के मन ने यह भावना भर दी जाती है कि उनका स्थान समाज में लड़को से कम है।

कौन ?

डा. कौशल किशोर
श्रीवास्तव

बार बार वे धोखा देंगे, ये तुमकों समझाये कौन ?
झुठला देंगे हरेक गवाही, ये तुमको बतलाये कौन ?
भरते हैं जो पेट देश का, और भूखे सो जाते हैं,
जिनके कपड़े फटे हुये हैं उनको गले लगाये कौन ?
हुये निरंकुश भाव गगन पर, उन पर अंकुश कौन रखे ?
चढ़ते ही जाते हैं ऊपर नीचे उन्हें गिराये कौन ?
जो आते हैं अतिथि देश में, उनको भारत ताजमहल।
पूरा भारत ही सं◌ुदर है, ये उनको दिखलाये कौन ?
वेतन पाते हैं, लाखों में उनका खर्च नहीं चलता।
रिश्वत लेते हैं करोड़ में, उनकी हवस मिटाये कौन ?
रिश्वत खोरो सीमा पर भी, जरा सैनिको को देखो ?
तुम्हें बचाने वे मरते हैं, उनका कर्ज चुकाये कौन ?
जिनके कारण घर घर सा है जो जननी है दुनिया की
पुरूषों तुम इसका उत्तर दो, आखिर उन्हें जलाये कौन ?
दिल्ली तुम घर घर में फन्दे अब कितने भिजवाओगी ?
भूखे कुनबे लटक रहें है जाकर उन्हें बचाये कौन ?
अल्लाह और राम की खातिर कितने मानव कत्ल हुये
मंदिर मस्जिद तुम जवाब दो ये दंगे करवाये कौन ?

कुछ समस्यायें, कुछ सुझाव

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अनेख अखबार एवं समाचार चैनलों के अनुसार जनता का मोदी सरकार में विश्वास कम होता जा रहा है। जनता पार्टी के बड़े नेता भी कुछ ऐसा ही कह रहें है। भारतीय जनता पार्टी ने यदि समय रहते इसका विशलेषण नहीं किया तो जनता भी अगले चुनाव में आक्रोश व्यक्त करने में नहीं झिझकेगी। भारतीय जनता पार्टी को इस तथ्य का विशलेषण करना चाहिए कि जनता ने उसे वोट विदेशी मुद्रा बढ़ाने के लिए दिया था मंहगाई कम करने के लिये। जनता ने उसे वोट भ्रष्टाचार कम करने के लिये भी दिया था जो अब बोने जोकर के बढ़ कर बड़े राक्षस की तरह हो गया है। वोट उसे राम मंदिर के कारण नहीं मिले थे बल्कि उसने आर्थिक नीतियों के जो सपनें भारत में दिखाये थे इसके कारण उसे वोट मिले थे।

अभी भी समय है कि सरकार सर्वेक्षण करवा कर जनता की अपेक्षाए ॅ जाने न कि गुजरात मा ॅडल के बारे में शोर करें। यह सर्वेक्षण भी स्वतंत्र निकाय से करवाना चाहिये, सरकारी एजेंसियों से नहीं। कांग्रेस सरकार में भ्रष्टाचार जरूर था, पर उस को छिपाया नहीं जाता था पर यहां तो वसं ुधरा राजे, सुषमा स्वराज, शिवराज सिंह इत्यादि पर उंगलियां उठी पर उनपर जांच तक नहीं बिठाई गई। इससे सरकार की बहुत बदनामी हुई है। जनता की भुखमरी “मेक इन इंडिया” से नहीं जाने वाली। क्या सरकार गांव गांव में गरीबो का लंगर नहीं करवा सकती ? आखिर स्कूलों में तो मिड डे मील्य चल ही रहा है। इसी तर्ज पर सर्वेक्षण पर आधारित लंगर चलवाये जा सकते है। ं यहां सर्दी े जाने पर कंबले बांटी जाती है यह कार्यक्रम गर्मियों से ही चालू हो जाना चाहिये। निष्पक्ष सर्वेक्षण करवाना चाहिये कि कितने आदमी भूख से आत्म हत्या करतें हैं या कितने ठंड से मरते हैं।

हर वर्ष लगभग तीन बार परिवारों के सर्वेक्षण होते है। उन्हें मात्र प्रकाशित करने के साथ साथ उन से प्राप्त लोगो की समस्याओं की समीक्षायें होनी चाहिए। उन्हें क्रमबद्ध कर उनकी प्राथमिकतायें निश्चित की जानी चाहिये। फिर मंत्रिमंडल के विशेषज्ञों के साथ बैठ कर समाधानों पर विचार करना चाहिये। जब समस्याओं के समाधानों की क्रमबद्धता निश्चित हो जाये तो उनके क्रियान्वन की व्यवस्थायें होनी

चाहिये। यही सबसे मुश्किल काम है। व्यवस्था आलसी, भ्रष्ट और बेईमान होती है। उस पर लगातार नजर रखनी चाहिए। दोषियों को दण्ड मिलना आवश्यक है एवं ईमानदार, सरकार से प्रतिबद्ध लोगों को पुरस्कार भी मिलना चाहिये।

सरकार के नियंत्रण में मीडिया है पर जनता के नियंत्रण में कुछ नहीं है। इसके बाद भी कुछ दृष्य एवं श्रव्य माध्यम जनता की आवाजें उठाते रहते है जो प्रशंसनीय है। अखबार भी जनता की ताकत हैं। शासन द्वारा उनकी सूचनाओं को ध्यान से देखना चाहिये एवं उनपर त्वरित कार्यवाही होनी चाहिये।

एक समय था जब स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर लोगों ने मुक्त हस्त से दान दिया था, महिलाओं ने गहने तक उतार कर दे दिये थे पर आज प्रधानमंत्री की आर्थिक अपीलों के बावजूद उतना अच्छा प्रभाव देखने में नहीं आता। चंूकि मीडिया सरकार के नियंत्रण में है अतः प्रधानमंत्री जी उनके मन की बात तो कह देतें है पर जिन लोगो के पास मोबाइल तक नहीं है वे उनको मन की बातें कैसे उन तक पहुंचाये ? ये जो करोड़ो मोबाइल फोनों की संख्यायें आती है वे इस लिये कि एक-एक अमीर आदमीं के पास छः-छः मोबाइल है। कारों और मोटर बाईक्स की बिक्री से गरीबी का अंदाज नहीं लगाया जा सकता है आज उच्चमध्यम वर्गियों के पास चार से छः कारे तक है, इससे देश को अमीर नहीं माना जा सकता। अर्थ शास्त्रियों का यह कहना सच है कि अमीरो और गरीबो के बीच की खाई बढ़ती जा रही है।

मेरा ख्याल है कि भारतीय जनता पार्टी को उनके पुराने नेताओं के सुझावों पर मंथन करना चाहिये। मगर “काकस” के कुछ लोग उन्हें पार्टी से निकालने का हल्ला मचाने लगते है। उदाहरण स्वरूप यदि बिहार में शत्रुघन सिन्हा को पहले से ही मुख्यमंत्री घोषित कर दिया जाता तो बिहार में सम्भवतः भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन सकती थी। भारतीय जनता पार्टी कितने नेताओं को पार्टी के बाहर करेगी। अभी यशवंत सिन्हा ने सही कहा है कि यदि पार्टी का ढर्रा इसी तरह चलता रहा तो अगले चुनावों में पार्टी के कांग्रेस से भी अधिक खराब हाल होना है। सरकार को याद रखना चाहिये की पार्टी एक बार प्याज की बढ़ती कीमतों की वजह से औंधे मंुह गिर चुकी है। अब दाल गरीबो की पहंुच से दूर हो गई है। जनता को सड़कों पर विद्रोह करना नहीं आता, मगर चुनावों में वह बदला जरूर लेती है। भूख मिटाना सरकार का प्रशासनिक उत्तरदायित्व है।

ऐसा नहीं है कि मोदी सरकार अच्छा काम नहीं कर रही है। वह बहुत अच्छा काम कर रही है पर यह देखना सरकार का कर्तव्य है कि उन योजनाओं से भूखे व्यक्तियों को खाना मिल रहा है या नहीं। संसद सदस्य चुने जाने के बाद फिर जनता के बीच में नहीं जाते है, जबकि जनता से जीवंत संपर्क बनाना आवश्यक है। आखिर

प्रजातंत्र जनता के लिये ही तो है। सरकार हमसें कहती है कि हमको प्राप्त होने वाली सुविधायें हम कम करें जबकि विधायक और संसद स्वयं की सुविधायें बढ़ाते जा रहे है। इससे जनता के ह्नदय में चोट लगती है यदि वे उनकी सुविधायें कम करने की घोषणायें करें तो जनता को प्रसन्नता होगी।

प्रधानमंत्री मोदी यदि सचमुच में धरती से ऊपर उठ रहे हैं तो उन्हें मालूम होना चाहिये कि एक आम आदमी को सरकारी नौकरी से कितना अपमानित होना पड़ता है। आजादी के 71 वर्ष गुजरने के बाद भी अधिकारियों की इज्जत करना नहीं आया। वे जब आम आदमी से तू कहकर बातें करते है तो कोई आश्चर्य नहीं कि शिक्षित भारतीय अमेरिकन या आस्ट्रेलियन से अपमानित होना सहलें। कुछ शिक्षित लोग तो इसीलिये बाहर जाना पसंद करते हैं कि यहां पढ़े लिखे लोग एक एएसआई या नायब तहसीलदार से गालियां सुनते हैं तो कितना अपमानित होना पड़ता होगा। जनता को तो सरकार से बहुत अपदेश सुनने मिलते हैं। जनता सरकार के कहने पर सड़को पर झाडू तक लगाने लगती है पर सरकार भी जनता के नौकरों को जनता से सभ्यता से बोलना सिखाये।

अल्पसंख्यको को संरक्षण मिलना एक नीति है पर उनको महसूस भी होना चाहिये कि उन्हें वे भारत में संरक्षित है। आज उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी, आमिर खान, शाहरूख खान आदि को क्यों कहना पड़ रहा है कि भारत में असहिष्णुता बढ़ रही है। उन पर मौखिक आक्रमण के बजाय यह पूछा जाये कि वे किस संदर्भ में यह वक्तव्य दे रहें है ?

आज भारत को पाकिस्तान को यह दिखाना चाहिये कि उसके भी रीढ़ की हड्डी है। पाकिस्तान से तब तक बातचीत या क्रिकेट नहीं होना चाहिये जब तक भारत आश्वस्त न हो जाये कि पाकिस्तान प्रयोजित आतंकवाद खत्म हो गया है। सरकार जनता का प्रतिनिधित्व करती है। क्या जनता पाकिस्तान के आगे झुकना चाहती है ? यह सरकार को मालूम होना चाहिए।

विरोधी पार्टियों को लोक सभा से बर्हिगमन नहीं करना चाहिये। सरकार को ऐसा कानून लाना चाहिये। जनता अपने पसीने की कमाई उन्हें गलछर्रे उड़ाने के लिये नहीं देती। उन्हें भी जनता की आवाज प्रभावी ढंग से उठाने के लिये बाध्य करना पड़ेगा। जब सरकार संसद में कानून लाती है तो उन्हें उस पर बहस करना चाहिये, न कि कायरों की तरह बर्हिगमन, जिससे जनता को मालूम पड़े कि उनकी आवाज सरकार तक पहुंचाने वाला भी कोई है।

इंडिया का भारत में संघर्ष

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कार में इंडिया बैठा हुआ था। वह भारत से गुजर रहा था भारत की जनसंख्या लगभग सात हजार रही होगी। इंडिया इसी रास्ते पर सही गति से चल रहा था। उसे मालूम था कि भारत में भारत बहुत ताकतवर होता है पर लोक सभा में पहंुच कर वह इंडिया हो जाता है। इतनें में सही रास्ते से एक मोटर साइकिल पर तीन भारतीय उसके साथ रेस करने लगे। इंडिया ने सोचा शायद भारत उसे लूटने आ रहा है पर ऐसा नहीं था। भारत एक दम इंडिया के सामने आ गया। वही हुआ जिसे हिन्दी के बुद्धिजीवी संघर्ष कहते है। मोटर साइकिल कार से टकरा गई। गिरने के बाद मोटर साईकिल ने दिशा सूचक हाथ दिखाया और हार्न बजा दिया। इस तरह उसने ट्रेफिक के नियमों का पालन कर लिया।

यह दुर्घटना देख कर पूरा भारत जिसकी जनसंख्या सात हजार थी इंडिया को घेर कर खड़ी हो गई। हर घर से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इकट्ठे हो गये। इंडिया भी बाहर निकल आया। भारत ने इंडिया को गाली देना और पीटना चालू कर दिया तो इंडिया ने रोते हुए कहा" गलती इंडिया की नहीं थी, भारत की थी। "भारतीय बोले" क्या उसने दिशा सूचक हाथ नहीं बतलाया था, क्या हार्न नहीं बजाया था ? इंडिया ने कहा" मानलो उसने ऐसा किया भी था तो एक मोटर साईकिल पर तीन लोग क्यों बैठे हुये थे ? क्यों इन लोगो ने हेलमेट नहीं पहनें ? फिर वह मेरी कार से टकराया ही नहीं था। उससे हेन्डिल नहीं सम्हला, देखो वह रांग साइड में गिरा है।

गाँव का एक "बैरिस्टर" बोला "अबे ये कानून इंडिया में चलते है, भारत के और शहरों के गली कूचों में नही। "इंडिया कानून के द्वारा भारत का शोषण करता है। वह बोला "ऐसा करते हैं कि पुलिस स्टेशन चलते है। वहां रिपोर्ट लिखा देते है। जिसकी गल्ती होगी तो न्यायालय तय कर लेगा। भारत कानून से बहुत डरता है। कानून वह मकड़ी का जाला है जिसमें छोटे कीड़े तो फंस जाते है मगर हाथी तोड़ कर फेंक देता है। इसीलिए मकड़ी बड़े जानवरों के लिये जाला नहीं बनाती नहीं तो वे मकड़ी को कुचल दें। एक नवयुवक बोला "क्या फायदा साहब आपकी गाड़ी जप्त हो जायेगी।" वह ऐसे ही साहब को चमका रहा था जैसे लोमड़ी शेर को चमकाने का प्रयास करे।

साहब बोले "आपकी मेरे बारे में फिक्र के लिये धन्यवाद। मगर मेरे पास छः बी.एम. कारें है। मैं फोन करके ड्राइवर को बुला लेता हँू। "मगर भारत में स्वयं का बचाव कियाथा। न तो वाहन चालक के पास ड्राइविंग लाइसेंस ही था और न ही इन्श्योरेन्स के कागज। दरअसल मोटर साइकिल वाला खेतों में तो अच्छी गाड़ी चला लेता था पर सड़को पर नहीं। वहां हरकदम पर कानून बैठा रहता था। इतनें में एक भीड़ आ गई। वह साहब की फैक्ट्रियों में काम करती थी केवल कुछ "इंडियन्स" ने भारत को गुलाम बना रखा था। वे बोले" अरे सर आप। आप तो गलती कर ही नहीं सकते। आपके कपड़े किसने फाड़ दिये। "फिर भारत ने कहा "सालो, तुम साहब को नहीं जानते हो। ये फैक्ट्रियाॅ बंद कर दें तो आधा भारत भूखो मरने लगे। चलो माफी मांगो साहब से।" जो गिरा था वह भी साहब के कदमों में गिर गया। दरअसल इंडिया भी न्यायालय नहीं जाना चाहता था। उसे तारीखो पर तारीख मिलती जिससे उसको लज्जा आती थी। उसके लाखों का नुकसान अलग होता।

साहब बैठ कर जाने लगा तो भारत फिर बोला "साहब कुछ ले देकर मामला रफा दफा कर देते है।" इंडिया काइयां था बोला "ऐसा करो तुम हमारी गाड़ी ठीक करवा दो और में तुम्हारी करवा देता हँू। हिसाब बराबर हो जायेगा।" भारत डर गया क्योंकि साहब की गाड़ी बीस हजार में सुधरती और मोटर साइकिल मात्र दो हजार में। ये कुछ ले दे कर ही रिश्वत की श्रृंखला चालू होती है। मतदाता चुनाव में नेता से एक बार पैसे, शराब, साड़ी, लेपटाप ट्रांजिस्टर आदि क्या मांगता है तो मंत्री विधायक पाॅच वर्ष तक उसका खाते रहते है।

इतने में एक भारतीय बोला "हमारे देश में समाजवाद है। यहां सबको बराबर के अधिकार है। वह कोई छोटा मोटा नेता लगता था। इंडियन बोला "इस हिसाब से तो मुझे भी सबकी पिटाई लगाने और कपड़े फाड़ने का अधिकार होना चाहिये पर आप मुझे ऐसा नहीं करने देंगे।" भीड़ की एक इकाई बोली "काहे का समाजवाद। तीर्थो के मंदिरों में चीफ मिनिस्टर या कोई हीरोइन या जज या कलेक्टर एस.पी. को तो अंदर गर्भ गृह तक जाने देते हैं जैसे भगवान उन्हीं का इंतजार कर रहें हो पर हम गरीबों को बाहर से ही टी.व्ही पर भगवान दिखा कर टरका दिया जाता है। समाजवाद के लिये लड़े हम पर मिला उन्हें।"

ये सब बातें उस सुविधा भोगी के लिये सुनाई जा रही थी। वह तब तक 108 नम्बर पर फोन कर चुका था। वह सेवा शासन ने बहुत अच्छी कर रखी है। करीब दस मिनट में पुलिस की एम्बुलेंस आ गइ। उसमें किंचित घायल को लिटाया गया। वह इंडियन जब जाने लगा तो मोटर साईकिल वाले ने मोटर साइकिल सुधरवाने के पैसे मांगे। जो खुद के कर्मचारियों को तनखा ठीक से नहीं देता था उसने सात सौ रूपये

ढीले कर दिये। तब एक गांव वाले ने "कहा और इलाज के पैसे ?" इंडियन अपनी कार में बैठ कर भाग गया। गांव वालों को बतियाने के लिये एक महीने का मसाला मिल गया। वे फिर दूसरे उत्सव का इंतजार करने लगे।

ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

"एल्जिया" का मतलब होता है दर्द। न्यूरेल्जिया का मतलब होता है तंत्रिका का दर्द। ट्राइजमिनल नर्व मस्तिष्क की पाॅचवी नर्व है। यह मुख्यतः एक संवेदक नर्व है जो चेहरे, दांत, कपाल, सरइनस, जबान की संवेदनायें मस्तिष्क तक पहुंचाती है। इसकी तीन मुख्य शाखायें होती है अतः इसे ट्राइजेमिनल नर्व कहा जाता है। त्वचा की मुख्यतः तीन प्रकार की संवेदनायें होती है दर्द स्पर्श और तापक्रम पर ट्राइजेनिनल न्यूरेल्जिया में तड़ित की तरह क्षणिक असहनीस दर्द होता है।

दर्द का प्रकार: यह दर्द चेहरे के एक ओर यथा दांयी या बांयी ओर होता है। जैसा कि कहा जा चुका है यह दर्द नर्व की तीन शाखाओं में से मुख्यतः बीच वाली शाखा के क्षेत्र में होता है, पलकों से नीचे ऊपरी ओंठ के कोण तक, फिर प्रथम शाखा यानि पलकों के ऊपर वालों की पंक्ति से कपल तक फिर नीचे की या तीसरी शाखा का क्रम आता है जो निचले होंठ से गरदन के ऊपरी हिस्से तक हो सकता है। बहुत ही कम प्रकरणों में यह दर्द चेहरे के दोनो तरफ होता है।

पहले यह असहनीय दर्द क्षणिक ही होता हीै पर दिन में कई बार हो सकता है। उस समय उसी तरफ की आंख से आंसू आ सकते है। फिर दुबारा उठने के लिये जादू कर तरह गायब हो जाता है। अन्यथा बोलना, खाना पीना तक असम्भव हो जाता है क्योंकि आदमी उस तरफ से दाड़ी भी नहीं बना सकता, नहाना असंभव हो जाता है। उस भाग में फफूंद जम जाती है। कभी-कभी दर्द इतना असहनीय हो जाता है कि व्यक्ति अवसाद में जाकर आत्महत्या तक कर लेता है।

ट्रिगर प्वाइंट - चेहरे के वे अंग होते है जिनके स्पर्श मात्र में दर्द बढ़ जाता है ये बिन्दु कपाल, भौंहें, आंखो की बरोजिया, आंखो के कोण नाक की जड़, नाक और होठो के बीच की रेखा, होंठ के कोण, होंठ की श्लेष्मा एवं त्वचा के बीच की पंक्ति, किसी विशेष कोण पर देखना या कोई दांत। कई बार दर्द एक दांत तक सीमित रहता है। मरीज उस दांत को निकलवा देते हैं। दर्द कुछ दिन ठीक रहता है फिर दूसरें दांत पर केन्द्रित हो जाता है। कई ऐसे मरीज भी देखे गये है जिन्होने पूरे दांत निकलवा लिये हैं पद दर्द नहीं गया।

दर्दोत्पदक पदर्थ - कोई ऐसा पदार्थ जो उत्तेजक हो जैसे चाय, काफी, मीठा, कपूर, पिपरमेंट, कोल्ड डिंक्स, खटाई इत्यादि तो उत्तेजक पदार्थ हैं ही तेज गंध भी उत्तेजक हो सकती है। टी.व्ही. देखना या ट्यूब लाइट की रोशनी दर्द बढ़ा देती है।

मौसम का प्रभाव - आसमान में बादल, बिजली का चमकाना, दर्द बढ़ा देता है। वादन जब बरसने लगतें हैं तो दर्द कम हो जाता है। ठंडी हवा दर्द को बढ़ा देती है। इसी तरह ठंडी का मौसम ए.सी. दर्द को बढ़ा देता है। क्रोध का आना भी दर्द बढ़ा देता है। अधिक हंसना भी दर्द बढ़ा सकता है।

लिंग भेद- पुस्तको के अनुसार यह दर्द महिलाओं में पुरूषों से चार गुना अधिक होता है। पर लेखक की दृष्टि में कोई लिंग भेद नहीं मिला।

प्राथमिक एवं प्रभावित ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया-ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया से प्रभावित मरीजों की संख्या अनुमान से अधिक है। प्राथमिक ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया मुख्यतः अधेड़ अवस्था से प्राम्भ होता है। जबकि कम अवस्था में यह बीमारी ब्रेन ट्यूमर के कारण भी हो सकती है। ब्रेन का कोई भी स्थान घेरने वाली बीमारी जो पांचवी तंत्रिका

के पास हो यह दर्द दे सकती है। कभी-कभी कोई असमान्य छोटी धमनी भी इसका कारण मानी जाती है अतः हर ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया में रक्त चाप जरूर देखना चाहिये।

लाक्षणिक बीमारियाँ- दांतो की बीमारियाँ, साइनुसाइटिस चेहरे की हड्पीज, साइनस के कैंसर आँखो के दर्द, माइग्रेन, टेंसन, सिर दर्द, चेहरे की मांस पेशियों के दर्द भी इस बीमारी जैसे लक्षण दे सकते है।

जाँचे - खून की जाँच (सी.बी.सी) एम.आर.आई (स्कल) सी.टी.स्केन नर्वकन्डक्शन टेस्ट इत्यादि जाँचे इस बीमारी में आवश्यक है।

इलाज

ट्राइजेमिनल, न्यूरेल्जिया को संवेदक मिर्गी (सेन्सरी एपीलेजी) भी कह सकते है। इसके चिकित्सकीय इलाज में वे सब दवाइयां काम करती है जो मिर्गी में दी जाती है इलाज को तीन भागो में बांट सकते है

(1) मिर्गी में दी जाने वाली दवाइंया/विशिष्ट दवाइयां

(2) सहयोगी दवाइंया

(3) शल्यक्रिया

विशिष्ट दवाइयां

कार्बामेजापीन -इस बीमारी की विशिष्ट दवाइयों में प्रथम क्रमांक पर आती है। इसे 200 ग्राम से प्रारम्भ किया जा सकता है पर इसकी औसत मात्रा 600 मि.ग्रा. प्रतिदिन है। पहले पहल इतनी ही मात्रा में आराम मिल जाता है पर धीरे धीरे इसकी मात्रा बढ़ाना पड़ती है जो 1200 से 1500 मि.ग्रा. तक हो सकती है। पर जैसे जैसे मात्रा बढ़ती जाती है मांस पेशियों पर से नियंत्रण उठने लगता है अतः एक वस्तु का दो दो दिखना, नजर स्थिर न रहना, कदम बहकना, चक्कर आना प्रारंभ हो जाते है ये दुष्प्रभाव 600 मि.ग्रा. प्रतिदिन के ऊपर आने लगते है ऐसे व्यक्ति को नींद में स्वप्न भी बहुत आते है।

अन्य मिर्गी प्रतिरोधक दवाइयां- फेनीटाइन सोडियम, वेक्लोपेन, वेल्प्रोइक एसिड आदि अन्य दवाइयां है जो कार्बामेंजापीन के बदले दी जा सकती है। बारवी चुरेट भी अन्य औषधि है जो दी जा सकती है।

सहायक दवाइयां

गावापिन - 100 मि.ग्रा. प्रतिदिन से आरम्भ की जा सकती है। इसकी सहायता से जो कार्बामेजापीन 1600 मि.ग्रा. प्रतिदिन तक दी जाती थी उसे 600 मि.ग्रा. प्रतिदिन तक लाया जा सकता है। कुछ

माह बाद इसकी मात्रा बढ़ाना पड़ जाती है अतः दो सौ मि.ग्रा. प्रतिदिन से ऊपर इस सहयोगी दवा से भी उल्टियां, एटेक्सिया (कदम बहकना- स्वयं पर नियंत्रण न रख पाना)

ब्लर्ड विजन- (धंुधला दिखना या दो दो दिखना, नजर का स्थिर न रहना, उल्टियां इत्यादि प्रारंभ हो जाती है।
एन्टीडिप्रेशेन्ट - अवसाद निरोधक औषधियां काबोमेजापिन के साथ दी जा सकती है। इनका असर कुछ दिनों बाद होता है साथ ही जैसे ही इनका असर खत्म होता है दर्द तूफान की तरह हो जाता है। अतः नियम समय से इन्हें एक मिनट भी देरी से नहीं दिया जा सकता।
डायजापाम: यह दवा मिर्गी एवं नींद लाने के लिये दी जाती है। चंूकि इसकी "हाफ लाइफ" सत्रह घंटे होती है अतः दूसरी मात्रा एक या दो घंटे देरी से भी दी जाये तो दर्द अवसाद निरोधक दवाइयों की तरह तूफान की तरह नहीं आता। इस दवा को सामान्य मात्रा से एक चैथाई (1.25 मि.ग्रा.) दिन में तीन बार से प्रारम्भ किया जा सकता है। कार्बामेजापीन 600 मिग्रा. के साथ इसे देने में जरा भी दर्द नहीं होता है। अधिक से अधिक इस दवा की आवश्यकता है। यह दवा लेते समय
इसके लेने का वाद एक या दो घंट सोना आवश्यक है। पर इसके लाभकारी असर के आगे यह कुछ भी नहीं है। इस दवा के सहयोग से ट्रिगर बिन्दु छूने पर दर्द नहीं होता एवं बगैर दर्द के स्नान किया जा सकता है। इसकी मात्रा भी बढ़ानी पड़ सकती है पर 2.5 मि.ग्रा. सुबह दोपहर एवं सोते समय 5 मि.ग्रा. तक देते है। इसे 1000 मि.ग्रा. तक ले लिया था पर बच गया था।
मिथाइल कोवालेमीन: कहते हैं कि इससे नर्व की मायालिन शीथ मजबूत होती है पर कभी कभी इससे दर्द बढ़ता भी देखा गया है।
शल्य क्रिया: इनजेक्शन पांचवी नर्व के गेन्गिलीयान में अल्काहल या फिनाल के इंजेक्शन लगाये जाते है। पर यह एक मुश्किल प्रक्रिया है।
माइक्रो सरजरी: सलमान खान के अमेरिका में जाकर यह सरजरी करवाने के बाद इस बीमारी एवं इसकी सरजरी के बारे में काफी जनजागृति आई है। इस सरजरी में खोपड़ी के पीछे एक छोटा चीरा लगाकर दुखीन की सहायता से असमान्य धमनी एवं नर्व के बीच में टेफ्लान रख दिया जाता है। पर लगभग दस वर्ष पश्चात यह दर्द पुनः होने लगता है एवं पूरे समय कुछ दवाइयां तो खानी ही पड़ती है। इस आप्रेशन में मृत्यु दर एक प्रतिशत है।

शौचालय क्रांति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आदमी धन से बड़ा होता है कद या आदर्शो से नहीं। ऐसा ही एक बड़ा आदमी मेरी झोपड़ी के सामने से एक ब्लड हाउण्ड कुत्ता लेकर निकलता है। बड़ा आदमी कुत्तो से घिरा रहता है। कुत्तो के साथ रहते रहते वह भी कुत्ता हो जाता है। आदमी नहीं रहता। उस कुत्ते के गले में पट्टा था। जिसमें से एक जंजीर निकल कर साहब के हाथ में रहती थी। वह कुत्ता साहब साहब को खींचता हुआ चलता था। मुझे इस दृष्य से कोई ईष्र्या नहीं होती थी। गुस्सा तो तब आता था जब कुत्ता ऐन झोपड़ी के सामने गंदगी की देता था और बगैर "मुझे खेद है", कह कर आगे बढ़ जाता था। मैं साहब का नौकर नहीं था, मगर उनके कुत्ते की गंदगी मुझे साफ करना पड़ती थी। झोपड़ी बंगले में क्या कहती ?

एक बार मैनें हिम्मत करके साहब से कहा "साहब सरकार तो शौचालय बनवा रही है, इस कुत्ते को वहां क्यों नहीं ले जाते या प्रधानमंत्री जी के बंगले की बाउन्ड्री वाल के सामने गंदगी क्यों नहीं करवाते। "क्या बोला छोटा आदमीवे बोले। हमें इंडिया को साफ रखना है। हम जहां रहते है वहां इंडिया है यहां नहीं। वे शौचालय जो प्रधानमंत्री

योजना के तहत बने है तुम गरीब लोगो के लिये बने हैं। हमारे प्यारे ब्लड हाउण्ड के लिये नहीं। ऐसी योजना सरकार के पास नहीं है कि कुत्तो के लिये सुलभ शौचालय बनवाये अतः जब तक ऐसी योजना नहीं बनती तब तक हम लोगो के कुत्ते तुम झोपड़ी वालों के ही सामने गंदगी करेंगे।"

मैं बोला "साहब हम लोगो की भी कोई इज्जत है। हाफ पेंट पहने वह आदमी बोला हा॑ है। तभी तो मैने कुते की जंजीर नहीं छोड़ी नहीं तो वह तुम्हारी चिंदी चिंदी कर देते॓। फिर तुम्हारे लिये यह गर्व की बात होनी चाहिए कि मेरा कुत्ता तुम्हारी झोपड़ी के आगे गंदगी कर रहा है। तुमने देखा नहीं कि हम सामने से पांच सितारा होटल में जाते है पर वे अपनी गंदगी सामने नहीं फेंकते बल्कि होटल के पीछे फेंकते है जहां मजदूरों की झोपड़ियां बनी रहती है। "हाँ हुजूर" मैं बोला जानवर खाते आगे से है पर गंदगी पीछे से करते हैं।"

वह बड़ा आदमी बोला "हमारी बात और है। हम ऊपर से खाते है जैसे ऊपरी आय होती है पर गंदगी नीचे से करते है तुम लोगो के ऊपर। फिर हम गंदगी भी कुर्सी पर बैठ कर करते है। हमारी गंदगी जेट, धोता है। हम हाथ भी गंदे नहीं करते। पर उकडू बैठने वाले झोपड़ी पट्टी वालों को क्या मालूम। तुम गंदे नाले के किनारे रहने वालों गरीबो को क्या मालूम ?"

मैं तिलमिला गया। यह सही है कि मैं गंदे नाले के किनारे रहते हँू। जहां चैबीस घंटे बदबू आती रहती है। इस आदमी की गंदगी तो सहन करता ही हँू इसके कुत्ते की भी करता हँू। हालांकि भारत हमारे कारण है पर ऐश ये करते है। पर ऐश ये करते है हम मेहनत करते है ये उस पर ऐश करते है। मैनें कहा "हुजूर हमने सुना है कि कुत्ते की गंदगी से "हायडेटिड सिस्ट" हो जाती है। बड़ा आदमी बोला आजकल तुम बहुत डाउनलोड करने लगे हो और क्या हो जाता हँू।

दिमाग की "सिस्टे सोमियेसिस" भी हो जाती है मैनें कहा जिससे झटके आने लगते है। हम इतनी गंभीर बीमारीयों का इलाज कैसे करवायेंगे। क्या करोगे इलाज करवा कर ? उन्होने उपदेश दिया। एक दिन मरना सब को है" वे दार्शनिक बन कर बोले।

"इसके बावजूद भी देश में शौचालय क्रांति आई हुई है और आप कुत्ते से मेरे घर के सामने गंदगी करवाते फिर रहे हैं। "मैं बोला वे चुप रहे। मगर उनका कुत्ता हमारी बातें सुन रहा था। वह उसके मालिक से अधिक समझदार लग रहा था। पूरी बाते ध्यान से सुनता रहा और मेरी तरफ देखता रहा। दूसरे दिन वह उसके मालिक को खींचता हुआ मेरे घर के सामने से निकला। उसने मेरे घर के सामने गंदगी नहीं की कहीं और की होगी।

शमा का हठ

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

शादी की शहनाई सुन कर मैं उदास हो जाती हूँ।
बहुत पतिंगे किये राख अब तनहा जलती जाती हूँ।।
जीवन मेरा एक रात का ये तो सोचा ही न था।
पहर आखिरी बचा हुआ धरती में मिलती जाती है।।
रही जिन्दगी परेशान रोशन करने में महफिल को ।
जवां रहीं होती महफिल लेकिन मैं ढलती जाती है
जली एक तीली जो मुझको जला गई जीवन भर।
जलती है दिल में बाती मैं मगर पिघलती जाती हूँ।।
मेरा हठ कि रात मिटा मैं उजियारा फैलाऊंगी।
मुझे रात खाती जाती है मैं ही गलती जाती हूँ।।

जिंदा मजार के

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

तुम क्या गये कि पल हुये सालों हजार के।
हम हो गये नमूने एक जिंदा मजार के।।
जो चल दिये तुम रूठ कर मुढ़ कर नहीं देखा।
मैनें तुम्हें आवाज दी कितनी पुकार के।।
दिल में तुम्हारी याद की डोली लिये हुये।
हम ढँूढते है जिन्दगी में दिन बहार के।।
खो के तुम्हे इतना मैं सिसका रूंध गया गला।
टूट हों जैसे तार सब एक दम सितार के।।
मैेनें तो रूठने का बहाना ही किया था।
दो बोल कह कर देखतीं थोड़े से प्यार के।।
दो दिन ही बहुत थे मुझे तुम साथ जो रहते।
बस चार दिन ही लाये ये रब से उधार के।।
कांटो भरा जंगल भी चमन हो गया होता।
एक बार भी जो देखते उसको निहार के।।
बिगड़ा हुआ था मैं मिला तुमसे तो क्या हुआ।
थोड़ा तो जतन करती तुम मेरे सुधार के।।

मेरा साथी

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

मेरे मन मंदिर में मेरा

देश सदा ही रहता है।
जैसे मरूस्थल में कोई
मीठा झरना बहता है।।
मुझे पागलों में गिनते है
आसपास के लोग सभी।
बगैर छुपाये वह कहता हूँ
जो मेरा दिल कहता है।।
यदि किसी कमजोर आदमी
को कोई भीड़ सताती है।
खूब उबलता है अंदर
और मेरा धीरज ढहता है।।
रखे हुये है वजन देश का
कंधो पर, खेतों में है।
बहुत गालियां सुनता है वह
और बहुत कुछ सहता है।।
लाखों की तनखा है उनको
दो रोटी तक यहां नहीं।
हमें समाजवाद लाना है
मेरा नेता कहता है।।
कहां साथ में वह रहता था
कहां किले में कैद हुआ।
पहले वहां फरिश्ता था वह,
पर अब तोता रहता है।।

माँ का दिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

करने मार्ग प्रकाशित
      माँ को जलना है।
उसी रोशनी में बच्चों को
      चलना है।।
बच्चों को खुश रखने
      आॅसू पीती है।
बच्चे जिसमें झूलें।
      मां वह पलना है।।
गर्मी है मच्छर हैं
      बच्चा रोता है।
मां जागेगी उसको
      पंखा झलना है।
तुम जवान हो इससे।
      उसको फर्क नहीं।
तू उसकी नजरों में।
      छोटा ललना है।।
मां बूढ़ी है उसको
      सदा सहारा दो।
याद रखो तुमको भी।
      एक दिन ढ़लना है।।
उसे सहारा देकर
      उन्नति पाओगे।।
जीवन भर वरना।
      हाथों को मलना है।।

जायेंगे

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

भूखे कुनबे को लेके किधर जायेंगे ?
भीख लेंगे नहीं चाहे मर जायेंगे ?
जिन्दगी से तो नाराज है जिन्दगी।
मर के अब मौत के हम शहर जायेंगे।ं
अच्छे दिन के तो वादे रफू हो गये।
बीते दिन दे दो हालत सुधर जायेंगे।।
खूनी मंजर न नफरत का रोका अगर,
दशहतों के ही शामों सहर आयेंगे।।
पन्ने इतिहास के फिर न खूनी करो।
पढ़ने वालों के झुक खुद ही सर जायेंगे

पुकारा है

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

वर्तमान को बुरा न कहें

वह अस्तित्व तुम्हारा है।
एक बार जो चला गया
फिर मिलता नहीं दुबारा है।।
समय एक बहती नदिया है,
उस पर हम बहती नावें।।
एक लक्ष्य जीवन का करलें,
बनता वहीं किनारा है।।
बाहर के हमलों से,
मन की शक्ति जिन्दा रखती है।
अंदर की शक्ति जीवन के,
रण में एक सहारा है।।
अपने से लड़ने में अपना,
सब कुछ नष्ट करेंगे हम।
अंदर जलता दीपक रखना,
बाहर तो अंधियारा है।।
हमें बचाना है खुद जल के,
जलती हुई मानवता को।
जलती हुई उस मानवता ने
जलनें हमें पुकारा है।।

मेरे हाथ में कलम है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बगिया उजाड़ने की
देखँू मैं कितनी दम है ?

तेरे हाथ में कुल्हाड़ी
मेरे हाथ में कलम है।।
मैं दूसरे कदम पर
आकाश नाप लूंगा।
नापी है अभी धरती
ये पहला ही कदम है
ये गुलिस्तां सभी का
सिर्फ एक का नहीं है।
भवरें हैं तितलियां है
कई गुलों का हरम है।।
हम से अलग हुआ तो,
तू जर्रा जर्रा टूटा।।
मारेंगे वे हथोड़े
तू वैसे भी गरम है।।
मंजिल तुझे मिलेगी,
मेरे कदम पे चल के।
मेरे कदम के पीछे
चलता तेरा सनम है।।
सीनों पे घाव झेले
पीठों पे नहीं मारा।
फौलाद का बदन है
पर दिल बहुत नरम है।।

मेरे हाथ में कलम है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बगिया उजाड़ने की

देखँू मैं कितनी दम है ?
तेरे हाथ में कुल्हाड़ी
मेरे हाथ में कलम है।।
मैं दूसरे कदम पर
आकाश नाप लंूगा।
नापी है अभी धरती
ये पहला ही कदम है
ये गुलिस्तां सभी का
सिर्फ एक का नहीं है।
भवरें हैं तितलियां है
कई गुलों का हरम है।।
हम से अलग हुआ तो,
तू जर्रा जर्रा टूटा।।
मारेंगे वे हथोड़े
तू वैसे भी गरम है।।
मंजिल तुझे मिलेगी,
मेरे कदम पे चल के।
मेरे कदम के पीछे
चलता तेरा सनम है।।
सीनों पे घाव झेले
पीठों पे नहीं मारा।
फौलाद का बदन है
पर दिल बहुत नरम है।।

जमीनी हकीकत

डा. कौशल किशोर
श्रीवास्तव

“मंत्री जी जमीनी हकीकत से वाफिक नहीं हैं” विरोधी पार्टी का सदस्य विधान सभा में चीखा। चिल्लाओ मत मंत्री जी भी चीखे मुझ से ज्यादा जमीनी हकीेकत से कौन वाफिक होगा। मैं सरकारी और जनता दोनो की जमीनी हकीकत से वाफिक हँू” मंत्रीजी ने आत्म विश्वास से जवाब दिया। सभापति चैंक गये। उन्होने पूछा ये सरकारी जमीनी हकीकत क्या होती है और जनता की जमीनी हकीकत क्या है।” मंत्रीजी बोले “जिस ढंग से सरकारी जमीन हड़पी जाये वह सरकारी जमीनी हकीकत है। जैसे मैनें विद्यालयों इंजीनियरिंग काॅलेजो और मेडिकल काॅलेजो के नाम पर 200 एकड़ सरकारी जमीन हड़पी है वह है सरकारी जमीनी हकीकत और पिस्तौल दिखा कर जनता की 500 एकड़ जमीन हड़पा है, वह है, जमीनी हकीकत अब वे ही जमीन के मालिक मेरे खेतों में मजदूरी कर रहें हैं। इस तरह उन्हें रोजगार मुहैया करवाया है। मैनें देश की सेवा की है महोदय।

यह सुन कर विरोधी पार्टी का नेता और सभापति दोनो ही आश्चर्य चकित हो गये। मगर सभापति ने अपना आश्चर्य दबा लिया अन्यथा उन्हें अपदस्थ होने का डर था। मंत्री का भाषण लम्बा होता है। जैसे बजट कई पेटियों में बंद होकर आता है मगर उसमें पन्नों और टंकण के अलावा कुछ नहीं होता। बजट प्रस्तुत करने का केवल एक ही मतलब होता है टेक्स लगाना। बिल्कुल उसी तरह। उसका मतलब निकालना बहुत मुश्किल था। विरोधी पार्टी कहती है कि भाषण में कुछ नहीं है मगर उसमें कुछ क्यों नहीं है यह उनको भी मालूम नहीं रहता। मगर सत्तारूढ़ दल कहता है कि उसमें सब के लिये सब कुछ है मगर वह सब कुछ क्या है यह उसे भी मालूम नहीं रहता। उद्योगपति कहते है कि बजट संतुलित है क्योंकि वे कोयले और रेत से भी सोना बनाना जानते है। गृहणियां कहती है कि सरकारी बजट से उनके घर का बजट भी गड़बड़ा जायेगा। इस तरह पूरे देश में एक बजट बहस चालू हो जाती है। इसी तरह का मंत्री जी का जवाब था।

मंत्रीजी की जमीन अलग थी और हकीकत अलग। मेडिकल काॅलेज के नाम पर वे काॅलोनियां बना रहे थे। वे पशु संरक्षण के नाम पर कुत्ते पाल रहे थे। विरोधी पार्टी ने पटल पर कागजात रखे तो सत्ता दल के लोग हल्ला मचाने लगे। विरोधी पार्टी के लोग भी जोर से हल्ला मचाने लगे। इस तरह जनता के पसीने की कमाई का अनुवाद विधान सभा में हो हल्ला के रूप में होने लगा। मंत्री जी इस आशा में थे कि वे विरोधी पार्टी के हम सफर बर्हिगमन कर जायें तो उनकी पोलें खुलने से बच जायें पर ऐसा नहीं हो रहा था। आज विरोधी पार्टी के नेता भी यह तय करके आये थे कि वे विधान सभा को पूरा समय देंगें। मंत्री ने पूछा कि वे बर्हिगमन क्यों नहीं कर रहें हैं तब उन्होनें

जवाब दिया वे जनता के सेवक हैं मंत्री जी के नहीं। और उनका जमीनी हकीकत से मतलब मंत्री जी के जमीनी हकीकत से नहीं है वरन आसमान पर चढ़ती मंहगाई से है जिससे लोग आत्महत्या कर रहें हैं।

मंत्रीजी ने जवाब दिया "किसान लोग भूखें क्यों नहीं मर जाते ? आत्महत्या तो पाप हैं ये आप लोगो के उकसाने पर ही पाप कर रहें हैं उपवास करके नहीं मर रहें है। यदि उपवास करके मरेंगें तो स्वर्ग भी मिलेगा। आत्महत्या करके तो वे नर्क में ही जा रहे हैं। लगता है विरोधी दल हमारी संस्कृति से परिचित नहीं है। सभापति ने टोका इस विषय में हमारी गौरवशाली विश्वगुरू की संस्कृति क्या कहती है ? मंत्रीजी बोले "इसावश्योपनिषद में कहा गया है असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता। तांस्ते प्रेत्याभिगच्छति ये के चआत्महनो जना। यह श्लोक न तो विरोधी पार्टी के नेता को और न ही सभापति जी को समझ में आया। यह आया तो सत्तारूढ़ दल के सदस्यों को भी नहीं पर वे प्रसन्न्ता से टेबिल ठोकने लगे। इस पर विरोधी पार्टी के नेता चीखे "मंत्री जी सदन को गुमराह कर रहे है। "मंत्री जी बोले" तो सदन गुमराह क्यों हो रहा है ?

विरोधी पार्टी के नेता बोले "यह नहीं जानते कि जनता इनकी नीतियों के कारण इतनी दुखी है।" मंत्री जी ने जवाब दिया "दुख का कोई मापदंड नहीं होता। मैं इसलिये दुखी हूँ कि मेरे पास मात्र तीन इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय ही है जनता तो इसलिए भी दुखी थी कि माता सीता भगवान राम के साथ क्यों रही थी। भगवान बुद्ध के समय भी दुखी थी। उन्होने कहा था कि सारा संसार जल रहा है। कबीरदास जी के समय भी दुखी थी। उन्होने कहा था कबिरा दुखिया सब संसार। वे खुद भी दुखी थे। कहते थे दुखिया दास कबीर है जागत और रोये। अब ये विरोधी महोदय भी कह रहे है कि जनता दुखी है। जनता सुखी क्यों नहीं हो जाती। लगता है उसे सुखी होने से माननीय विरोधी पार्टी के नेता ही रोक रहें है। "विरोधी एवं अविरोधी पार्टी की चें चे. पें,पें से सभापति महोदय झल्ला गये थे। उन्हें बाजीराव मस्तानी फिल्म देखने जाना था अतः उन्होने दूसरे दिन के लिए विधान सभा भंग कर दी।

अंधेरी ही थी

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

मौत कुछ अच्छी उसे
जिन्दगी से लगती थी
उस मजबूर ने इसलिये
खुदखुशी की थी
भीगते भीगत वह दौड़ रहा है
घर को
छाता है नहीं घर पहंुचने की
जल्दी थी
बिजली गिरती है बेघर पे पेड़ के
नीचे
आसमां ने भी उसके साथ
वे दिली की थी
कायदा है चबायें या चबायें जायें
तीसरे कायदे को जगह ही नहीं
दी थी
वहशी पन को घेर रखा है
शराफत ने
चमक काटा जब शराफत ने अंदर
तो अंधेरी ही थी

है प्यादा तो प्यादा लिख

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

थोड़ा लिख या ज्यादा लिख
लेकिन सीधा सादा लिख।
        वे जो कुछ भी लिखवाये
        अपना नेक इरादा लिख ।
तड़क भड़क क्या दिखलाएॅ
प्यादा है तो प्यादा लिख।
        उसने तोड़ा तोड़ दिया
        तेरा क्या है वादा लिख।
जो देहरी पर बैठा है
जो भी है तू दादा लिख।

पानी टप टप करता है

डाॅ. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पानी टप टप करता है
किससे गपशप करता है
कभी मेघ गर्जन करते
धरती का दिल कंपता है
इतना पानी ना मालूम
कहां कहां पर खपता है
इतनी जल्दी गिरता है
समाचार सा छपता है
रिमझिम रिमझिम मीठे स्वर
में वर्षा को जपता है
रिमझिम सा गिरकर पानी
सबके मन को हरता है
कभी बंद हो जाता है
फिर से सूरज तपता है
बिजली संग थर्राता है
नहीं किसी से दबता है
परछिन पर जब गिरता है
तबले जैसा बजता है
गरज गरज बिजली गिरती
मन एक दम से डरता है
वृक्षों पर वर्षा बिजली
से पक्षी दल कंपता है

असली फोटो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

इधर प्रधानमंत्री जी पत्रकारों को सांत्वना दे रहे हैं कि पत्रकार प्रजातंत्र के चैथा स्तम्भ होतंे है और उधर पत्रकारों को पुलिस द्वारा कैद में धड़ा धड़ बोरों की तरह डाला जा रहा है। तंत्र प्रजा को बोलने का मौका ही नहीं दे रहा हैं। दो स्तम्भ चाहते हैं कि चैथा स्तम्भ उन दो गिरते हुए स्तम्भों को सहारा दे। अब एक कार्टूनिस्ट को क्या सूझी कि मुख्यमंत्री और जिलाध्यक्ष का असली फोटो बना दिया। चूंकि बनाने वाले के ऊपर कार्टूनिस्ट की पट्टी लगी थी अतः मुख्य मंत्री और जिलाध्यक्ष को लगा कि उनके कार्टून है। अतः उसे पुलिस की भाषा में धर लिया गया। एक कार्टूनिस्ट को क्या पड़ी थी कि दोनो महानुभावों का असली फोटो बनाये ?

यदि उसने माननीय मुख्यमंत्री का कार्टून बनाया था तो उसे समझना चाहिये कि मुख्यमंत्री को चूंकि मजाक समझ में नहीं आते है अतः वे उसे पसन्द नहीं करते और जिलाध्यक्ष तो आइ.ए.एस. करने के बाद कभी हंसते ही नहीं। वे केवल आइ.ए.एस. करने के पहले और सेवा निवृति के बाद, जो कि उन्हें कभी दी ही नहीं जाती, कभी नहीं हॅसते। पत्रकार तभी तक चैथे स्तम्भ रहते है जब तक वे व्यवस्था के पैरो तले रहें। यानि प्रजातंत्र की गुलाम बनी रहे।

वह पत्रकार यदि मुख्यमंत्री का कार्टून बनाता तो मुख्यमंत्री प्रभावोत्वादक लगते। रंगा खुश हो जाता। हो सकता था कि उसे राज्य सभा का सदस्य बना दिया जाता जैसा कि कुछ पत्रकारों को बना दिया गया है। अंग्रेजो के जमाने में सच बोलना गुनाह है। कुछ लोगो का कहना है कि संविधान में लिखा है कि सौ गुनाहगार छूट जाये पर एक गुनाहगार को सजा नहीं मिलना चाहिए। पर आजकल सौ गुनाहगार एक वे गुनाहगार को सजा दे रहे हैं। नौकरों और सेवको के हाथों में असीमित शक्ति अपने हाथों में ले रखी है। आज न्यायालय वे गुनाह को सजा नहीं देता उसे तो सजा न्यायालय जाने से पहले ही मिल जाती है। हमारे देश के कानून अंग्रेजो के जमानें के हैं पर वे हमारे प्रजातंत्र को चला रहे है। गुलाम प्रजा पर राज कर रहें हैं।

हम फिर उस पत्रकार पर (उन्हें पत्रकार कहना तो गुनाह हो जायेगा) आते हैं। भैया क्या जरूरत थी जनता का पक्ष लेने की ? मुख्यमंत्री का पक्ष लेते और मक्खन

खाते रहते। जनता के पास भूखो मरने से ही फुरसत नहीं हैं, तुम्हें कहाँ से मक्खन खिलाती। आज सफल पत्रकार वही है जो मुख्यमंत्री की एक हाँ में दो हाँ मिलाये। आज पत्रकारों का कर्तव्य है कि मुख्यमंत्री के फोटो खींचें अपनी आत्मा मार कर उनके गुणगान लिखे और घर पर उनके द्वारा प्रदत्त मक्खन खाये। वह यदि भुखमरों या गंदी बस्ती में गया तो उसे याद रखना चाहिये कि राज्यों का जासूसी तंत्र को बस यही कार्य दिया गया है।

पुलिस बेचारी आज मंत्रियों और उनके कुत्तों की नौकर होकर रह गई। सभी सरकारी नौकरों की तरह उसे भी संविधान की शपथ दिलाई जाती है कि वह स्वयं को जनसेवक लिखे और उपरोक्त घटको की जी हूजूरी करें। अतः (निर) अपराधियों को शुक्रवार या शनिवार को धर लिया जाता है जिससे कि रविवार को न्यायालय का अवकाश होने के कारण पत्रकार नामक भयानक अपराधी की रविवार को पिटाई लगाई जा सके। पुलिस को सबसे अधिक कार्य अवकाश के दिनों में ही करना पड़ता है। फिर सोमवार को उसे बेगुनाह साबित करवाने के लिये न्यायालय में पेश कर दिया जाता है। यहां एक वे गुनहगार छूट जाता है और सौ गुनाहगारों को तो पकड़ा ही नहीं जाता जैसा जैक एण्डरसन या विजय माल्या। उन्हें तो राज्य का अतिथि बना कर विदेश नामक सुरक्षित स्थान पर शासन भेज देती है फिर प्रत्यावर्तन नामक नाटक चलता है।

अब समाचार पत्रों में विशेषण देने की क्या आवश्यकता ? एक समाचार चेनल ने दिनांक 6/11/17 को बतलाया कि गोरखपुर का अस्पताल शिशुओं के लिये "ब्लेक होल" है। भाई साहब उसे पहले ही "व्हाइट ड्वार्फ" क्यों बनाया। मैं दयालु हूँ इसलिये उस चेनल का नाम नहीं बतला रहा। फिर मैं उस चेनल का नाम बतला भी दूंगा तो क्या बिगाड़ लूंगा। अरे भाई ! आपका काम प्रतिदिन के समाचार देना है प्रतिमाह की गणना करना नहीं। इस वक्त तो मैं गोरखपुर अस्पताल का पक्ष लूंगा सारे प्रांत से जब अविकसित शिशु वहां भेजे जायेंगे तो उनमें से कुछ ब्लेक होल में जायेंगे ही। यहां पत्रकार महोदय को भौतिक शास्त्र का ज्ञान झड़ाने की कोई आवश्कता नहीं।

आप कहेंगे कि मैं चेन्नई से गोरखपुर क्यों पहुंचा ? तो मरी मर्जी। मैं चेन्नई से कश्मीर भी जा सकता हूँ मेरा भारत है। केवल समाचार माध्यमों का नहीं। अभी अन्त्रराज्यीय "वीसा" लेने का कानून नहीं हुआ है। तो इस लेख का (दरअसल में व्यंग्य का) अंत तो करना ही पड़ेगा। तो जिलाधीश महोदय उस पत्रकार बेचारे ने तो आपका गरिमामय चित्र बनाया था केरीकेचर नहीं। कार्टून यानि केरीकेचर में चरित्र का मिश्रण चित्र में किया जाता है। बड़ी मुश्किल का काम है कार्टून बनाना। मगर पत्रों या चेनलों में उसे बहुत थोड़ी जगह दी जाती है। उस छोटे से चित्र में पूरे प्रान्त में बवाल ला दिया। यही कार्टून की विशेषता है कि बना कर आप दूसरों के चेहरे पर रंग फेकेंगे तो

आप स्वयं अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मार लेते है। यह आखिरी वाक्य तो एक मुहावरा है जो मुझे अचानक याद आ गया और उसने इस रचना में चार चांद लगा दिये।

उस पत्रकार ने यदि मात्र मुख्यमंत्री जी का चित्र छापा होता तो उसकी धर पकड़ न होती पर उसने साथ में जिले के बड़े बाबू का भी कार्टून छाप दिया। घनघोर अपराध हो गया। उसने बड़े बाबू को बड़े बाबू कह दिया। गलती कर दी। यही गलती करके इलस्ट्रेटेड वीकली आज इंडिया बंद हो गया एवं टाइम्स आॅफ इंडिया का परिभ्रमण (सर्कुलेशन) कम हो गया। प्रजातंत्र में बाबू स्तम्भ सबसे अधिक ताकतवर होता है। जब तक चैथा स्तम्भ इस बाबू स्तम्भ से बंध रहेगा तभी तक स्वतंत्र रहेगा अन्यथा उनके वजन से पिच जायेगा।

कार्टूनिस्ट श्री लक्ष्मण प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के कार्टून हर दूसरे दिन बनाया करते थे पर उन्हें कभी जेल में नहीं डाला गया बल्कि समय समय पर पुरस्कृत किया गया। अब लगता है कि स्वयं पर हंसने वाले नहीं रहे। तानाशाही पैर जमाने लगी है। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर भी कई कार्टून बनते हैं। वे उनसे आनन्द लेते है। ये महामना उदार ह्नदय वाले है। चेन्नई के कार्टूनिस्ट ने कोई हत्या कर दी होगी या बलात्कार कर दिया होगा या उसके घर से अश्लील सी.डी. बरामद हुई होगी या उसके घर से ए.के. 47 या माऊजर या बगैर लायसेन्स के पिस्टल बरामद हुई होगी या ऐसा ही कोई जघन्य अपराध उससे हुआ होगा या उसने सेना के कुछ रहस्य पाकिस्तान को दिये होंगे इसीलिये उससे अंदर (अंदर यानि जेल) कर दिया होगा। हो सकता है उससे चेन्नई में सामाजिक सद्भाव बिगड़ रहा होगा। अन्यथा एक जाने माने कार्टूनिस्ट के द्वारा मुख्यमंत्री या डी.एम. का कार्टून बनना तो उनके लिये गौरव की बात है। अब यदि देश में कोई आपको गरिमा मंडित करे और आप उसे जैल में डाल दें तो आपकी चयन प्रक्रिया पर संदेह ही होता है।

देश की अभिव्यक्ति की आजादी खत्म नहीं हुई है। आज भी मंत्री स्तर के लोग विरोधी पार्टी के लोगो को कुत्ता कह रहे है। अब यदि राजनीतिज्ञ एक दूसरे को कुत्ता कहें तो कौन कहता है कि अति स्वतंत्रता खत्म हो गई है मात्र वह सीमित लोगो की रखैल होकर रह गई है।